णमो सिरिवद्धमाणस्स ।

श्रीभूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति ग्रन्थाङ्क १५

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वर--श्रीधनचन्द्रसूरि-भूपेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

पूर्वाचार्यविरचित-

श्रीगच्छाचारपयन्ना ।



संस्कृतछाया सह गुजराती विवेचनयुक्त

संयोजक-जगत्पूज्य सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय भट्टारक श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।

संशोधक-उपाध्याय श्रीगुलाबविजयजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्रीभूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति

आहोर (मारवाड)

श्रीवीरनिर्वाण सं २४७१ विक्रम सं २००२

श्रीराजेन्द्रसूरि सं ३९ मूल्य रु १) ईस्वीसन् १९४५

श्रीभूपेन्द्रसूरि जैन साहित्यप्रकाशकसमितिकी पुस्तकें

ग्रन्थनामावली	फार्मसंख्या
१ सूक्तमुक्तावली भाषाकवितामय-संस्कृत टीकायुक्त	२९
२ जिनेन्द्रगुणमंजरी-चैत्यवंदन-स्तुति-स्तवनादि संग्रह	११
३ श्रीभूपेन्द्रसूरि-जयन्ती हिन्दी कवितामय	०
४ जगवल्लभस्तवनमाला	१०
५ सिन्दूरप्रकरण-समूलहिन्दीभाषायुक्त	८॥
६ शान्तसुधारस भावना-समूलहिन्दीभाषायुक्त	८
७ दृष्टान्तशतक-संस्कृतटीकायुक्त	८
८ चन्द्रराजचरित्र-गद्यपद्यात्मक	२०
९ कामघटकथा-गद्यपद्यात्मक	५
१० षड्दर्शनसमुच्चय-हिन्दीभाषायुक्त	३।
११ अर्बुदादितीर्थमाला	२
१२ प्रभुस्तवनसुधाकर	२३
१३ कल्याणानन्दविलास	४
१४ संवेगद्रुमकन्दली-हिन्दी विवेचनसह	४
१५ गच्छाचारपयन्ना-गुर्जरभाषा विवेचनयुक्त	४८
१६ श्रीभूपेन्द्रसूरि-जीवनचरित्र हिन्दीभाषा	१६
१७ देवर्षिगुणरत्नाकर-चैत्यवन्दनस्तुतिस्तवनादि संग्रह	१६

मुद्रक :
गुलाबचंद देवचंद शेठ
आनन्द प्रिंटिंग प्रेस
भावनगर (काठियावाड)

आदि-वचन

जैन वाङ्मय एक महासागर सदृश छे जेम महासागरनो पार न पामी शकाय तेम जैनसाहित्य-समृद्धिनी तुलना थई शकती नथी

मानवी ए सयोगाधीन प्राणी छे तेने सतत जागृत राखवा माटे आपणा परमोपकारी पूर्वपुरुषोए साहित्यनी अविरत उपासना करी छे सस्कारी साहित्य ए ससारवासी जीवोने माटे सुधा(अमृत) सदृश छे सुधापानथी जेम प्राणी अमरत्वने पामे छे तेम साहित्य-पानथी पण प्राणी निर्भीक बने छे

पचमकाळना प्रभावे प्राणीओनी मतिमदता थवा लागी अने परिणामे जैन वाङ्मयने चार विभागमा वहेंची नाखवामा आयु (१) द्रव्यानुयोग, (२) चरणकरणानुयोग, (३) गणितानुयोग अने (४) कथानुयोग

बालजीवोने कथानुयोग विशेष रुचिकर थाय छे एटले आपणा साहित्यमा कथा-ग्रथो विपुल प्रमाणमा रचाया छे, पण साथोसाथ आचारनु ज्ञान पण अत्यावश्यक छे कह्यु छे के-<u>आचार प्रथमो धर्म</u> । आ श्रीगच्छाचारपयन्नो चरण-करणानुयोगनो ग्रथ छे

कोई पण ग्रथनी प्रामाणिकतानो आधार तेना कर्तापुरुष ऊपर अवलवे छे आ श्रीगच्छाचारपयन्नो पण पूर्वपुरुषप्रणीत छे सामान्य नियम एवो छे के-पयन्नानी रचना गणधरमहाराजा के भगवतना हस्तदीक्षित शिष्य करे छे एटले आ पयन्नानी प्रामाणिकता माटे अश मात्र आशकाने स्थान रहेतु नथी

आ गच्छाचारपयन्नामा साधु-साध्वीना विस्तारपूर्वक आचार-विचार दर्शावेल छे आ पयन्ना ऊपर श्रीमद् आनदविमलसूरिजी-शिष्य श्रीविजयविमलगणिए सस्कृत टीका रची छे

सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय, क्रियोद्धारक, जगत्पूज्य श्रीमद्विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजीनी साहित्यसेवाथी जैनसमाज अज्ञात नथी तेमणे पोतानु समस्त जीवन साहित्य पाछळ न्योछावर करी दीधु हतु "अभिधानराजेन्द्र कोष" जेवो अजोड ग्रथ ए एमनी साहित्योपासनानु अप्रतिम फल छे बालजीवोनी

समजणने माटे तेमणे आ गच्छाचारपयन्नानु गुजराती भाषामा विवरण रच्यु अने आ ग्रथनी विशेष उपादेयता माटे (१) मूळ गाथा, (२) तेनी सस्कृत छाया (३) मूळ गाथानो अर्थ अने (४) विस्तृत विवेचन-आ क्रम राख्यो छे

"गच्छाचार" ए नाम ज ग्रथनी सामग्री शु छे ते आपोआप जणावे छे साधु साध्वीना आचारविशेषनु अने कर्तव्यनु ज आमा मुख्यत्वे विवरण छे ग्रथ रोचक बने ते माटे प्रसगे प्रसगे कथाओ पण आपवामा आवी छे

आ गच्छाचारपयन्नानी हस्तलिखित प्रति स्व० श्रीविजयभूपेन्द्रसूरिजी महाराजना जोवामा आवी तेमणे तेने उपयोगी जाणी मुद्रित करवानी इच्छा करी तेवामा तेओ स्वर्गवासी थया त्यारबाद व्या वा रत्नमालाचार्य श्रीविजययतीन्द्रसूरिजीनी अध्यक्षतामा स्व० श्रीविजयभूपेन्द्रसूरिजीना ग्रथोने प्रकाशित करवा माटे "श्रीभूपेन्द्रसूरि जैनसाहित्यसमिति" नी स्थापना थई तेना कार्य माटे (१) साहित्यरसिक उपाध्याय श्रीगुलाबविजयजी महाराज (२) तपस्वी मुनिराज श्रीहर्षविजयजी महाराज (३) शातमूर्ति श्रीहसविजयजी महाराज अने (४) मुनिश्री कल्याणविजयजी महाराजनी नियुक्ति करवामा आवी

आ समितिए अत्यारसुधी १७ ग्रन्थो प्रगट कर्या छे, आ गच्छाचार पयन्नो ए पदरमो ग्रन्थाङ्क छे अत्यार सुधीना प्रकाशनोनी माफक आ ग्रन्थ पण समाजना आदरनु पात्र थशे आशा छे के-गुणग्राही सज्जनो आ ग्रथनर सविशेष लाभ लई अमारा प्रयास सफळ करे

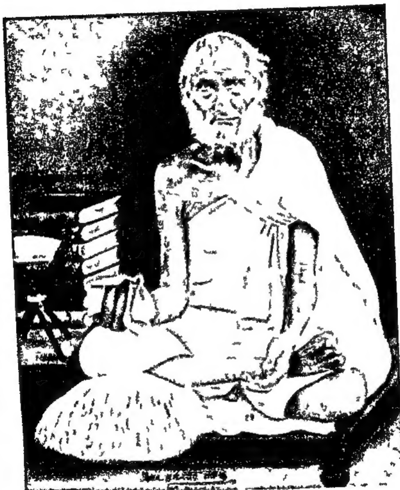
आचार्यश्रीनी जूनी गुजराती भाषाने वाचक ने शिष्ट भाषामा मूकवा माटे भावनगरनिवासी पडित रतिकुमार कृष्णनाथे करेल सुप्रयास माटे आभार मानवामा आवे छे मुद्रणकार्यमा खास काळजी राखवा आनंद प्रेसना मालिक शेठ गुलाबचद दयचद पण धन्यवादने पात्र छ

प्रूफ सुधारवा विगेरेमा पण पूरती काळजी राखवा छता दृष्टिदोष अने प्रेस दोषने कारणे कई खामी रही गई होय तो वाचकवर्ग सुधारी वाचवा कृपा करे.

वि स २००२ आषाढी पूर्णिमा

सचालक—
श्रीभूपेन्द्रसूरिजैनसाहित्यसमिति
वाया-एरणपुरा ग्र पो. आहोर (मारवाड़)

श्रीसौधर्मबृहत्तपाग-छाधिपति-जग-पूज्य-आचार्यदेव—



जन्म-वि स १८८३ पौष सुदि ७ भरतपुर

दीक्षा-वि स १९०४ वैशाख सुदि ५ बड़ा-उदयपुर

श्रीपूज्यपदवी वि स १९२४ वैशाख सुदि ५ आहोर क्रियोद्धार सूरिपद-वि स १९२५ आषाढ वद १० जावरा

श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।

स्वर्गवास-वि स १९६३ पौष सुदि ७ मु० राजगढ

श्री महोदय प्रेस-भावनगर.

विषयानुक्रम–

आचार्यस्वरूपनिरूपण–पहेलो अधिकार

यतिस्वरूप-बीजो अधिकार

साध्वीस्वरूपनिरूपण-त्रीजो अधिकार



मूलगाथानाम् अकारादिक्रम–



॥ वन्दे श्रीवर्द्धमानजिनेश्वरम् ॥

अनन्तलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने नमः ।

श्रीगच्छाचार–पयन्नो ।

[श्रीविजयविमलगणिविरचित टीकाना आधारे]

जैनाचार्य-श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरकृत-

सरल अने रोचक विवेचन युक्त

विवेचन–कर्तानुं मंगलाचरण—

समस्तवस्तुपर्याय–स्तोमसत्यप्रकाशक ।
निर्मोही शिवनारीशो, वीरोऽस्तु ज्ञानदो मम ॥ १ ॥
गच्छाचारप्रकीर्णस्य, टीकां लोकसुभाषया ।
कुर्वे वृत्त्यनुसारेण, चाऽधिकां कुत्रचित्त्वपि ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—सकल पदार्थोना पर्यायसमूहने सत्य स्वरूपे प्रकाशित करनार, मोहरहित, शिववधू-मोक्षरूपी स्त्रीना स्वामी श्रीवीरजिनेश्वर परमात्मा मने ज्ञान दाता थाओ. गच्छाचारप्रकीर्णकनी टीकाना आधारे लोकभाषा–गुजराती भाषामां हुं अनुवाद-विवेचन करुं छुं. आ अनुवादने मनोगम्य तथा सरल बनाववा माटे टीकाना उल्लेख करता पण प्रसंगोचित विशेष विवेचन कर्युं छे

*　　　*　　　*

अनंतलब्धिनिधान श्रीगौतमस्वामी गणधरमहाराजे एकदा चोत्रीश अतिशय धारी, वाणीना पांत्रीश गुणोथी विभूषित श्रीवर्द्धमानस्वामीने सुविहित गच्छसंबंधी पृच्छा करी, एटले दयानिधि, अनंतज्ञानी श्रीवीर भगवंते भव्य प्राणीओने संसार सागरनो पार पमाडवामां नौका–जहाज समान, जन्ममरणरूपी दुःखदावानलने प्रशांत करवामां मेघधारा समान चारित्रधर्मनी प्ररूपणा करीने "गच्छाचारपयन्ना" प्रमाणे सुविहित गच्छनुं स्वरूप कही समजाव्युं ते गच्छाचारपयन्ना स्वपरोपकारक

समजी, अथवा आवा अनुपम ग्रंथनो सर्वसामान्य जनसमूह पण लाभ लई शके ते माटे लोकप्रिय गुजराती भाषामां तेनुं विवेचन करवानो में यथाशक्ति प्रयास कर्यो छे.

मंगलादिनी आवश्यकता—

कोई पण ग्रंथनी शरूआत करता प्रथम मंगल, अर्थसंबंध, नाम अने प्रयोजन ए चार हेतुओ दर्शाववा जोईए. आना संबंधमां कोई एवी शंका करे के–'मंगळ करवानुं कारण शुं ?' तेनो उत्तर ए छे के–'विघ्नोनी उपशांतिने माटे मंगळ करवुं जोईए, मंगळ करवाथी विघ्नपरंपरा विनाश पामे छे. आ उपरांत मंगळ करवानो बीजो हेतु ए छे के–ग्रंथने मंगळरूप मानीने शिष्यवर्ग तेनुं अध्ययन करवा उद्यमशील थाय. त्रीजो लाभ ए पण छे के–शिष्टवर्गनी परंपरानुं अनुकरण पण सचवाय. आपणा पूर्वाचार्य महाराजाओ प्रथम मंगळ करीने ज ग्रंथप्रारंभ करता, एटले अन्य वर्ग पण तेमनी प्रणालिकानुं अनुकरण करवुं ज जोईए—आ बधा हेतुओने लक्षमां राखीने आ ग्रंथकर्ता महापुरुष पोताना इष्टदेव श्रीमहावीर परमात्मा-अपरनाम श्रीवर्द्धमानस्वामीने नमस्कार करवारूप मंगळ करे छे.

वळी श्रोतागणनी ग्रंथ-श्रवण करवामां प्रवृत्ति थाय, तेमनी रुचि वृद्धि पामे तेमज शिष्टाचारनुं पालन थाय ते माटे अर्थसंबंध, नाम अने प्रयोजन ए त्रणे हेतुओ पण दर्शाववा जोईए. प्रस्तुत ग्रंथमां अमुक संबंध-वर्णन आवशे, ग्रंथनुं अमुक अभिधान छे अने ते ग्रंथ सांभळवाथी ज्ञानवृद्धि थवा साथे निर्जरा पण थशे एम श्रोतागणने जणाय तो ते वर्ग तेमां प्रवृत्ति करवा प्रयत्नशील बने.

आटला समाधान पछी पण कोई वळी शंका करे के–अर्थसंबंधादि त्रण हेतुओनी आवश्यकता स्वीकारीए छीए पण मंगळ करवानुं शुं काम छे ? कारण के शास्त्राध्ययन करवुं ते ज महामांगलिक छे तो पछी बीजुं मंगल शा माटे करवुं ? आ शंकानो प्रत्युत्तर ए छे के–श्रेय-कल्याणकारी कार्य हमेशां विघ्नव्याप्त होय छे. कह्युं पण छे के–'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' जे पापकार्यनी प्रवृत्ति करे तेने विघ्न शुं नडवानुं छे ? कारण के पापरूप कार्य ते ज विघ्नरूप छे, एटले विघ्नमां विघ्न शुं नडे ? आथी बराबर स्पष्ट थाय छे के श्रेयकार्यमां विघ्न न नडे ते माटे मंगळ करवुं ज जोईए. प्रस्तुत विषयमां शास्त्रश्रवण ए श्रेय-कल्याणकारी कार्य छे, कारण के तेथी स्वर्गादि संपत्ति यावत् शिवसुखनी प्राप्ति थाय छे. आ उपरांत ग्रंथकर्तानो ए पण आशय होय छे के–आ ग्रंथनुं रचनाकार्य निर्विघ्ने साद्यंत परिपूर्ण थाय, शरीर संबंधी व्याधिओ उपशमी जाय अने प्रफुल्ल चित्तथी ग्रंथनी रचना करी सुखरूप पूर्णाहुति थाय. भाष्यकार पण आ संबंधमां जणावे छे के–

मंगळ करीने ज-इष्टदेवने प्रणाम करीने ज प्रवृत्ति करता मूळ ग्रंथकर्ता पण पूर्वधर पुरुष छे एटले पण मंगळनी आवश्यकता प्रतिपादन थाय छे कह्यु छे के—

शिष्टा शिष्टत्वमायान्ति, शिष्टमार्गानुपालनात् ।
तल्लङ्घनादशिष्टत्व, तेषां समनुपद्यते ॥ १ ॥

' शिष्टमार्गना पालनथी-वडील पुरुषोए फरमावेल नीतिरीतिने अनुसरवाथी शिष्टपणु प्राप्त थाय छे अने तेओनी मर्यादानु उल्लंघन करवाथी लघुता प्राप्त थाय छे' आ कारणथी ज पूर्वाचार्योए मंगळ करवानी प्रणालिका अंगीकार करी छे आवी रीते मंगळनो पूर्ण रीते पुष्टि कर्या पछी हवे संबध, अभिधेय अने प्रयोजन-ए त्रण कारणोनी दृढता करे छे

असंबध ग्रंथ होय तो श्रोतावर्ग तेमा रस ले नहि पंडित पुरुषो पण दश दाडिमादिक असंबध वाक्यनी माफक तेमा प्रवृत्ति करे नहि वळी नाम विनानो ग्रंथ होय तो पण श्रोतावर्ग सांभळे नहि कागडाना दांतनी परीक्षानी जेम ते निष्फळ ज जाय वळी ग्रंथनु कशु प्रयोजन न होय तो मंदबुद्धिवाळा प्राणीओ तेना श्रवणमां तथा अध्ययनमा उद्युक्त ज न थाय, कारण के एटल-टाटानी शाखानु मर्दन करवाना कोइ विचार करे ? अर्थात् न ज करे तेवी रीते प्रयोजन विनाना ग्रंथना श्रवण के अभ्यासमा कोइ पण प्रवृत्ति न ज करे

संबधादिकनी उपयोगिता जणाव्या छता वादी तर्क करे छे के-जेओ अज्ञान छे तेओने वीतरागना वचनमा श्रद्धा होती नथी, वीतराग परमात्माए कह्यु ते साचु ज कह्यु छे तेवा तेमने ख्याल होतो नथी अने आ संशयथी प्रवृत्ति करवामा आवे तो ते संबधादिक विना पण थई जाय अर्थात् ' आ शु कहेशे ? ' एवी जेने जाणवानी इच्छा हशे ते तो संबधादिक विना पण ग्रंथ सांभळशे तेओनु निवारण कोण करवानु छे ? माटे मारा मत प्रमाण तो संबधादिक हकीकत श्रोताओ माटे आवश्यक नथी आ वधी हकीकतना परिहारपूर्वक ग्रंथकर्ता महाशय कहे छे के-शिष्टाचार तो साचवो ज जोइए, कारण के ग्रंथकर्ता जे हेतुथी ग्रंथनी शरुआतमा प्रयोजनादिक देखाडे छे ते शिष्ट अनुकरण छे आ संबधी विशेष अधिकार न्यायग्रंथोथी जाणवो उचित छे

हवे ' गच्छाचार-पयन्ना ' ग्रंथना कर्ता शरुआतमा मंगलादि चारे हेतु ओने दर्शावता पहेली गाथा कहे छे—

नमिऊण महावीरं, तियसिंदनमंसिअं महाभागं।
गच्छायारं किंची, उद्धरिमो सुअसमुद्दाओ ॥ १ ॥

[नत्वा महावीर, त्रिदशेन्द्रनमस्यित महाभागम् ।
गच्छाचार किञ्चिद्-उद्धरामः श्रुतसमुद्रात् ॥ १॥]

गाथार्थ—देवेंद्र-इन्द्रथी नमस्कार करायेल, महाप्रभावशाळी श्रीवीर परमात्माने प्रणाम करीने द्वादशांगीरूप श्रुत-सिद्धांतरूपी समुद्रमांथी साधुसमुदायरूपी गच्छनो ज्ञानाचारादि अथवा गणमर्यादारूप आचार स्वल्पमात्र उद्धरुं छुं. १.

विवेचन—उपर्युक्त गाथामां वीर परमात्माने प्रणाम कर्यो, पण वीर-महावीर एटले शुं? 'महावीर' शब्दनो शब्दार्थ थयो छे के-विशेषे करीने कर्मोने खपाय तेने वीर कहीए. पूर्वाचार्यकृत नीचेनो श्लोक पण ए ज मतलबनुं [illegible] थता कहे छे के—

विदारयति यत्कर्म, तपसा च विराजते ।
तपोवीर्येण युक्तश्च, तस्माद् वीर इति स्मृतः ॥ १ ॥

जे कर्मने विदारे-तोडी नाखे, तेमज तपश्चर्याद्वारा जे विशेष शोभे अने तप तथा वीर्यथी जे युक्त होय तेने वीर कहेवामां आवे छे.

बीजा वीरोनी अपेक्षाए जे महान्-श्रेष्ठ वीर ते महावीर-श्रमण [illegible] नमस्कार कर्या छे. महावीर नाम केवी रीते प्राप्त थयुं ते माटे शास्त्रोमां [illegible] प्रमाणे उल्लेख मळी आवे छे.

ज्यारे वीर परमात्मानो जन्म थयो त्यारे तेमनो स्नात्राभिषेक करवा माटे तेमने मेरुपर्वत पर लई जवामां आव्या. जेम दरेक तीर्थंकरोने [illegible] छे तेम अहींना *कळशो तैयार करवामां आव्या तेवामां इन्द्रने संशय उत्पन्न थयो के-प्रभु तो हजु बाळक छे. आटलो बधो विपुल जळराशि केवी रीते [illegible] करी शकशे? आथी ज श्रमण भगवान परमात्माए अवधिज्ञान द्वारा इन्द्रनो संशय जाण्यो एटले पोताना वाम चरणना अंगूठाथी मेरुपर्वतने दबाव्यो के तरत ज चारे तरफ उत्पात मची गया, जेम के-पर्वतना शिखरो [illegible], मेघगर्जनाओ थवा लागी, समुद्र प्रचंड नादपूर्वक उछळवा लाग्या, [illegible] मारफत [illegible] गया, धरती धणधणी ऊठी एटले प्रभुना जन्मप्रसंगना पवित्र कार्यमां आवो उपद्रव शा? एम विचारता इन्द्र पोताना अवधिज्ञाननो उपयोग मूक्यो [illegible] प्रभुनी ज आ बधी खेल-लीला जणाई. वीर परमात्माना

* स्नात्राभिषेक [illegible], [illegible] अभिषेक थाय छे. एक एक अभिषेकमां [illegible] कळशो होय छे. [illegible] एक करोड ने साठ लाख कळशना थाय. [illegible] २५ योजन ऊंचो, १२ [illegible] अने एक योजनना नाळचाळो होय छे.

अनंत घडनी तेने धारी वता प्रभुने तेणे मुर्तज समाळ्या अने अमतवडी होवाथी तमनु महावीर एवु बीजु नाम प्रसिद्धिमा मूक्यु.

कोई कदाच कहे के-बीजा तीर्थंकरोनो त्याग करीने महावीर भगवंतने ज नमस्कार करवानु कारण शु ? आनो स्पष्ट खुलासो करतां कहे छे के-वीर परमात्मा चालु चोवीशीना अंतिम तीर्थंकर हता अने आपणे तेमना शासनमां होईने तेओ आपणा अत्यंत उपकारी छे तथी तमने नमस्कार करवामां आव्या छे तेओ देवेन्द्र-इन्द्रथी नमस्कार कराय छे अने तीर्थंकरपणारूपी ऐश्वर्यना स्वामी होवाथी महात्मा पण कहेवाय छे तमने नमस्कार करीने पांच समितिनु पालन करनार, त्रण गुप्तिने धारण करनार, छकायनी रक्षा करवामां तत्पर मुनिवरोना समुदायना आचार-गच्छाचारने हु कहीश भगवान महावीरनी पाटे विराजित श्रीसुधर्मास्वामी आदि शिष्योए जे क्रियाकलापनु आचरण कर्यु अने पंचांगीमां जेनु वर्णन करवामां आव्यु छे ते गच्छाचार कहेवाय तेनो प्रकीर्णक-पृथक् करवु ते गच्छाचार-पयन्नो आ अभिधेय-नाम समजवु कोई शंका करे के श्रीमान् भद्रबाहुस्वामी आदि पूर्वपुरुषविरचित गच्छाचारना ग्रंथो छे तो आ नवीन ग्रंथ रचवानु कारण शु ? आना उत्तर आपता जणाय छे के ए ग्रंथो विस्तृत अने विद्वानोने गम्य छे मंदबुद्धिवाळा-अल्पज्ञानी प्राणीओना माटे संक्षेपमा आ ग्रंथरचना करी छे आ रीते ग्रंथनु प्रयोजन पण जणावी दीधुं, कारण के कह्यु छे के-" प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।" प्रयोजन विना मंदमतिवाळा मूर्खजन पण कोई कार्यमा प्रवृत्ति करतो नथी संक्षेपमां रचवानु कारण ए छे के ते सुखपूर्वक भणी शकाय, ग्रंथ संक्षिप्त जाणी सांभळवा वाळा लोको पण उत्सुक बने अने परिणामे ज्ञानलाभ थाय कोई एवी शंका करे के-आ ग्रंथरचना तो नवी छे, सर्वज्ञभाषित नथी मात्र तमा विसंवादपणु-बाधापणु तथा छद्मपणु जाणी लोको तेनो सांभळवा तथा शीखवामां अनादर करशे आ शंकाना परिहार माटे ग्रंथकर्त्ता कहे छे के-आ ग्रंथ श्रुतसमुद्रमाथी उद्धरवामा आव्यो छे-नवीन नथी मात्र तमा विसंवादपणानी संभावना करवी नहि

आ प्रमाणे गाथाना पूर्वार्द्ध-पहेला तथा बीजा पादवडे मंगळ अने उत्तरार्द्ध-त्रीजा तथा चोथा पादवडे नाम, प्रयोजन अने अर्थसंबंध पण दर्शाव्या छे प्रयोजन बे प्रकारना छे एक अनंतरप्रयोजन अने बीजु परंपरप्रयोजन ए बंने पण बब्बे प्रकारना छे एक कर्तानी अपेक्षाए एटले कर्ताने अनंतर तेमज परंपर प्रयोजन अने श्रोता-सांभळनारनी अपेक्षाए अनंतर अने परंपरप्रयोजन कर्ताने अनंतरप्रयोजन एटले शिष्याने संक्षेपथी गच्छाचारनो बोध करवो [१] अने कर्ताने परंपरप्रयोजन एटले बीजाने गच्छाचारना उपदेश आपी सद्गममा

छोड्यो आवी जातना उपकारथी कर्म क्षय थाय छे अने छेवटे मोक्षसुखनी पण प्राप्ति थाय छे [२] शिष्यने अनंतरप्रयोजन एटले ग्रथना मर्मथकी अल्पप्रयासे गच्छाचारनु ज्ञान थाय [१] जेवी रीते श्रीशय्यंभवसूरिए अल्पायुषी पोताना पुत्र मनकने माटे दशवैकालिक सूत्रनी रचना करी, तेना द्वारा सक्षिप्तमा सघळो बोध समजाव्यो अने शिष्यने परंपरप्रयोजन ते गच्छाचार जाणी अनाचार छोडे अने नवी शुद्ध आचरणाथी प्राप्ते तेने शिवसुखनी प्राप्ति थाय [२] ग्रथनु नाम गच्छाचार कर्युं नाम विना प्रयोजन होय नहि, कारण के महात्मा पुरुषो विना प्रयोजने प्रवृत्ति करता नथी

आ पयन्नो गच्छाचार जाणवानो उपाय छे, तेना विना गच्छाचार जाणवामा न आवे तेथी गच्छाचार जाणीने अनाचार वरे ते उपेय छे ग्रथांतरमा तेने प्रतिपाद्य अने प्रतिपादक कहेवामा आवे छे प्रयोजन अने सबधने प्रकारांतरे भिन्नपणुं-जुदापणुं होय छे कह्युं छे के—

समनन्धः प्रोक्त एव स्यात्, एतस्यैतत् प्रयोजनम् ।
इत्युक्तेन तन्नो वाच्यो, भेदेनास्य प्रयोजनात् ॥ १ ॥

श्रुतसमुद्रमाथी 'गच्छाचार-पयन्नो' उद्धर्यु एम कहेवाथी शिष्यने गुरुपरंपरा दर्शावे छे प्रथम श्रीवीर परमात्माए आ गच्छाचार प्रतिपादन कर्यो, श्रीसुधर्मास्वामीए तेने द्वादशांगीमा सूत्ररूपे गुथ्यो बाद श्रीभद्रबाहुस्वामी प्रमुखे तेने बृहत्कल्पादिकमा दाखल कर्यो अने ते ते ग्रंथोमाथी उद्धरीने सक्षेपथी मंदबुद्धिवाळाओ माटे रच्यो एटले परपराए आ ग्रथना कहेनारा सर्वज्ञ परमात्मा ज छे एटले आ प्रकीर्णक अवश्य ग्रहण करवा योग्य-आदरवा योग्य छे आ पयन्नाना मूळश्लोक आर्या छदमा छे, तेथी तेनु लक्षण नीचे प्रमाणे जणावे छे—

यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥ १ ॥

आर्या छंदना प्रथम पादमा बार मात्रा होय, त्रीजामा पण बार होय, बीजामा अढार अने चोथामा पदर मात्रा होय छे आ आर्या छदने प्राकृतमा "गाथा" कहेवामा आवे छे

ससारने असार-दुःखरूप जाणी, मातपिताना वात्सल्यने तिलांजलि दई, ससारजन्य कष्टोने दूर करवा माटे तेमज इहलोक अने परलोक साधवा माटे जेओ साधुपणु अंगीकार करे छे तेओनो जे गच्छ ते सुविहित गच्छ जाणवो ने गच्छमा चोयणा, पडिचोयणा इत्यादि होय अने शिष्यवर्गने शुद्ध आचरणमा प्रवर्तावे आवा सुविहित गच्छमा ज वास करवो योग्य छे, कदापि असदाचारी

भ्रष्ट गच्छमां निवास करवो नहि जे गच्छमां साधु परिग्रह अने आरंभमां आसक्त होय, नित्य अनाचार सेवता होय, गृहस्थो पासे कार्य करावता होय, गृहस्थो साथे आलाप-संलाप करवाने कारणे पडिलेहणादि आवश्यक क्रिया करवामां प्रमादी बनी जता होय तेवा गच्छ असदाचारी-भ्रष्ट कहेवाय तेनो तो सदैव त्याग ज करवो जोईए आ संबंधमां टूंका टूंका त्रण दृष्टांत आपवामां आवे छे

पहेलुं दृष्टांत-कोईएक पुरुष महामहेनते चित्रकळा शीख्यो, परंतु चित्रकाम क्यां अने कयी रीते करवुं तेनुं तेने पूरेपूरुं ज्ञान प्राप्त थयुं नहि एकदा एक चित्रकलाशोखीन राजाए आ चितारीने एक मकानमां सुंदर चित्रकाम करवानो आदेश आप्यो ते मकाननी दिवाल खरबचडी अने खाडा-खडिया वाळी तेमज कोई कोई स्थळे तो ऊंचा-नीची पण हती चितारोए ते भींतने मठारीने साफ कर्या सिवाय ज पोतानुं चित्रकाम शरू कर्युं परंतु ते चित्रामण बेडोळ अने शोभाविहीन थयुं राजाए आवी जोयुं तो तेने चित्रकारनी महेनत माटे मान उपज्युं परंतु तेनी अज्ञानता-कया स्थळे चित्रो सुंदर देखाय तेनी असमजण माटे हास्य उत्पन्न थयुं मतलब के चितारोए कर्युं तो घणुं पण चित्रकामनी पूरती समजणना अभावे तेना प्रयास वृथा थया आ कथानो उपनय एवो छे के-अहीं चितारो ते साधु, अशुद्ध दिवाल-भींत ते भ्रष्टाचारी गच्छ अने चित्रामण ते साधुधर्मनुं पालन अर्थात् अशुद्ध भींत पर करेल चित्रामण वृथा नीवडयुं तेम भ्रष्टाचारी गच्छमां निवास करवाथी अथवा तेनो संसर्ग करवाथी साधुधर्मनुं पालन निष्फळ बने छे, माटे हमेशा भ्रष्टाचारी गच्छनो त्याग ज करवो

बीजुं दृष्टांत-कोईएक शख्सने उतावळमां कांई प्रसंगे बहारगाम जवानुं थयुं तेणे पूरती तैयारी करी प्रयाण कर्युं तो रस्तामां वच्चे नदी आवी नदी तरीने सामे कांठे गया सिवाय तेने छूटको नहोतो नदी पण विशाळ अने ते कांठामां होवाथी एम ने एम चालीने जई शकाय तेम नहोतुं तेणे नदी पार करवा माटे साधन मेळववा आसपास नजर फेंकी तो थोडेक दूर एक नौका पडेली मालूम पडी तेणे तरत ज त्यां जई ते होडीनो उपयोग कर्यो परंतु उतावळने कारण तपास न करी के होडी केवी छे? होडीमां छिद्रो होवाथी थोडे दूर जतां ज पाणी भरावा मांड्युं अने हजु तो कांठे पहोंचे ते पहेलां ज पाणीथी भराई जवाथी होडी डूबी गई अने साथोसाथ ते शख्स पण डूबी गयो आ कथानो उपनय एवो छे के-नदी ते संसार, शख्स ते साधु अने छिद्रवाळी नाव ते भ्रष्टाचारी गच्छ जेम ते शख्स छिद्रवाळी होडीना अवलंबनथी डूबी गयो तेम जे साधु भ्रष्टाचारी गच्छनो आश्रय ले ते जरूर पतित थाय

त्रीजुं दृष्टांत-कोईएक माणसने व्याधि थयो तेणे एक कुशळ गणाता वैद्य

पासे आई उपचार शरू कर्यो औषध आपवानी साथे वैद्ये शिखामणरूप तेने कह्यु के-' भाई, जो मारा कहेवा मुजब पथ्यनु पालन करीश तो ज मारु औषध फायदाकारक थाशे ' केटलाक दिवस बाद ते मानवी पोतानी जिह्वाने वश राखी शक्यो नहि अने अपथ्यनु सेवन करता व्याधि वृद्धि पामी गयो अने प्राते ते यमराजनो अतिथि बन्या आ कथानो उपनय एवो छे के-व्याधि ते कर्म, औषध ते चारित्र, वैद्य ते साधु अने अपथ्य ते भ्रष्टाचारी गच्छ जेम ते व्याधिग्रस्त अपथ्यनु सेवन करवाथी मृत्युने आधीन थया अने वैद्यनु औषध गुण-फायदो करी शक्यु नहि तेम भ्रष्टाचारी गच्छनु सेवन करवाथी चारित्र कोई पण जातनो लाभ करी शकतु नथी, माटे भ्रष्टाचारी गच्छनो कदी पण परिचय न करवो

चोथुं दृष्टांत—कोई एक द्विजपुत्र काशी भणवा गयो काशीमा तेने केटलाक पंडितो मळ्या तेओए तेने सलाह आपी के-' तु प्रथम व्याकरण भणजे अने पछी तने न्यायना अभ्यासमा सुगमता थशे ' ते द्विजपुत्र जवाब आप्यो के-' ना, हु तो प्रथम न्याय ज भणीश, मारे तो सिद्धांतनो अभ्यास करी तेना पार पामी जवु छे ' ते पंडितोए तं भोळा द्विजपुत्रने समजाव्यो के-' भला माणस ! व्याकरण विना न्याय भणीश तो छारना लींपण जेवु थवानु थशे व्याकरण विना शब्दोच्चार पण स्पष्ट नहि थाय अने विद्वानोनी सभामा हासी थशे ' छता पण ते कदाग्रही द्विजपुत्रे पोतानो हठाग्रह छोड्यो नहि अने अभ्यास शरू कर्यो न्यायनो अभ्यास करता चार वर्ष व्यतीत थई गया एवामा पंडितोनी सभा भराई द्विजपुत्र पण पोतानु पांडित्य दर्शाववाना हेतुथी त्या गयो पंडितोए तेनी परीक्षा निमित्ते तने कह्यु के-'पंडितशेखर ! मगळाचरण करो ' द्विजपुत्र न्यायनो पाठ भण्यो हतो पण व्याकरणनु ठेकाणु न हतु तेना मनमा थोडो गभरामण उत्पन्न थयो के व्याकरणना अभ्यास विना हु मगळाचरण केवी रीते करीश ? छता समग्र हिंमत पकडी करीने तेणे मगलाचरणनी शरूआत करता कह्यु के " शब्दरि " आ "शब्दरि" शब्द साभळता ज समग्र विद्वत्सभा हसवा लागी पंडिताए ते द्विजपुत्रने " शब्दरि ' शु छे ते समजाववा कह्यु त्यारे ते बोल्या के-' अर्थरि, धर्तरि विगेरे शब्दोनी माफक ' शब्दरि ' पण हशे तेम मानीने बोल्या छु ' तेना आवा खुलासो साभळी सभाने विशेष हास्य आव्यु अने तेना तिरस्कार करी सभामाथी काढी मूक्यो आ कथानो उपनय एवो छे के-चार चार वर्ष सुधी श्रम करवा छता व्याकरणना अभ्यास विना ते द्विजपुत्रना श्रम वृथा गया तेम कोई पण साधु भ्रष्टाचारी गच्छमा रही गमे तेटलो श्रम करे तो पण ते कदी फळदायक थत नहि

पाचमुं दृष्टांत—कोइएक माणस मकान तैयार करावया मांड्युं पण जल्दी तैयार करावयानी आशाए एम ने एम-पाया विना चणावया मांड्युं. थयुं एवुं के मकान थोडुं तैयार थाय अने तरत ज पडी जाय. आवी रीते त्रण चार वखत बनवाथी तेणे कोइएक सज्जननी सलाह लीधी. सज्जने कह्युं के—'पहेला पाया खोदावी, तेने मजबूत करी अने पछी ते पर मकान चणावो.' ते माणसे तथी रीते करता तेनुं इच्छित पार पड्युं. कथानो उपनय एवो छे के—सारा पाया विना जेम मकान टकी शके नहि तेम सुविहित-सदाचारी गच्छ सिवाय चारित्र टकी शके नहि.

छठ्ठुं दृष्टांत—कोइएक गृहस्थे पोतानी दासीने कह्युं के—'आपणा ओरडामां नीचे मजबूत लींपण करी आवजे.' ओरडा माटे पथराश वगरना हता तेथी त्यां धूळना ढग जाम्या हता. ते मूर्ख दासीए धूळने साफ कर्या वगर ज ते पर लींपण कर्युं. परन्तु थोडुं थोडुं के लीपण सुकाइ गयुं के तरत ज धूळनी साथेसाथ लींपणना पापडेपापडा उखडी गया अने लींपण निरर्थक थयुं. आ कथानो उपनय एवो छे के लींपण ते व्रत, धूळ ते भ्रष्ट गच्छ अने दासी ते साधु. जेम धूळना योगथी लींपण नाश पाम्युं तेम भ्रष्टाचारी गच्छना सहवासथी साधुनुं चारित्र नाश पामे छे.

सातमुं दृष्टांत—कोइएक मूर्ख जलरहित पत्थरवाळी भूमिमां कमळ रोपवा लाग्यो. तेने बीजा सज्जन माणसे कह्युं—'भाई! पत्थरवाळी भूमिमां कदी कमळ न ऊगे.' पण मूर्ख माणसे हठपूर्वक कह्युं के—'हुं तो मारो उद्यम करीश अने अहिं रोपेला कमळनी जरूर सुगंध लइश.' बीजाए तेने समजावता कह्युं-'भला माणस! शा माटे महेनत करे छे? तारो आ प्रयत्न थव्यासुतनो मारक वृथा थशे.' आम्लुं कहेवा छतां मूर्ख मान्यो नहि अने तेणे पोतानो प्रयत्न जारी राख्यो. एम एम वर्षा पर वर्षो वीतता गया छतां परिणाम कंइ न आव्युं—कमळ ऊग्युं ज नहीं. ते मूर्ख माणस कमळनी पाछळ पूर्ण प्रयास करेल होवाथी बीजा उद्यमना अभावे निर्धन-दरिद्री बनी गयो. आ कथानो उपनय एवो छे के—मूर्ख ते साधु, कमळ ते चारित्र, निर्जळ पत्थरवाळी भूमि ते भ्रष्ट गच्छ. चारित्ररूप कमळनी वांछना करतो ते मूर्ख श्रावकधर्मव्रत-पालनरूप बीजा उद्यमने मूकीने चार गतिमां रझळ्यो-भटक्यो.

आठमुं दृष्टांत—कोइ अंध पुरुष पोतानी शोभा वधारवा माटे कानमां कुंडळ, भालमां तिलक, कपालप्रदेश पर चित्रामण करावया लाग्यो. तेनुं आवुं कृत्य जोइने कोई डाह्या पुरुषे तेने तेनुं कारण पूछ्युं. तेणे कह्युं के—'हुं सौंदर्यशाळी बनवा मागुं छुं.' सज्जन पुरुषे कह्युं के—'भाइ, नेत्र विना मुख-मंडन शोभे नहि कारण के मुखनी शोभा तो नेत्र छे. तुं आ वृथा प्रयास त्यजी दे.' उपनय-अंधपुरुष ते

साधु, नेत्र विनानुं मुख ते भ्रष्ट गच्छ, शोभा ते चारित्र जेम नेत्रयुक्त मुख शोभे तेम सुविहित गच्छ होय तो ज चारित्र शोभनीय-प्रशंसनीय बने

नवमुं दृष्टांत–कोई खेडूत उखरभूमिमां बीजनी वावणी करवा लाग्यो त्यारे कोई सज्जन पुरुषे कह्युं के–'आ खारवाळी जमीनमां वावेला बधां बीज बळी जशे अने धान्य नहिं नीपजे' छतां तेणे मान्युं नहिं अने पोतानुं कार्य चालु राख्युं भाग्ययोगे वर्षा पण सारी थई छतां बीजो बधां दग्ध थई गएला होवाथी धान्य पाक्युं नहीं परिणामे बधी महेनत वृथा–निष्फळ नीवडी उपनय–खेडूत ते साधु, उखरभूमि ते भ्रष्टाचारी गच्छ बीज ते चारित्र उखरभूमिमां धान्योत्पत्ति थाय नहिं तेम भ्रष्टाचारी गच्छमां कदी चारित्रशुद्धि थई शके नहिं

दशमुं दृष्टांत–बकरीनी डोक पासे नाना नाना बे स्तनो होय छे तेमांथी दूध झरतुं नथी मात्र ते शोभा पूरता ज होय छे भ्रष्टाचारी गच्छ पण अजागल स्तन जेवो छे तेमांथी कदी चारित्रविशुद्धिरूप दूध प्राप्त थई शकतुं नथी

आ बधा दृष्टांतोद्वारा रहस्य जाणीने उन्मार्गगामी गच्छनो हमेशां त्याग करवो जोईए उन्मार्गगामी साधुओ साथे आलाप-संलाप पण न करवो शुद्ध समाचारीमां वर्तनारा, मूलोत्तर गुण पाळनारा, दोषने आलोचनारा मुनिवरो जे गच्छमां रहेता होय ते सुविहित गच्छ–शुद्ध गच्छ जाणवो आवा गच्छमां चारित्रना रूपी मुनिवरोए निवास करवो योग्य छे, छतां पण जो कोई उन्मार्ग गामी गच्छमां वास करे तो तेओ दुःखी थाय तेनुं संसारपरिभ्रमण वधे आ सत्यथी हवे त्रीजी गाथामां दर्शावता कर्ता कहे छे के–

अत्थेगे गोअमा ! पाणी, ते उम्मग्गपइट्ठिए ।
गच्छम्मि संवसित्ता णं, भमई भवपरंपरं*॥३॥
[सन्त्येके गौतम ! प्राणिनः, ये उन्मार्गप्रतिष्ठिते ।
गच्छे संवसित्वा, भ्रमन्ति भवपरम्पराम् ॥३॥]

गाथार्थ–हे गौतम ! एवा केटलाक वैराग्यवंत जीवो होय छे के जेओ अज्ञानपणे अने जाणपणाना मिथ्याभिमानवडे सन्मार्गने दूषित करवापूर्वक उत्सूत्रप्ररूपणा करे छे तेमज हिंसादिक पांचे आश्रवो जेमां प्रवर्ती रह्या छे तेवा उन्मार्गगामी गच्छमां वसीने चार गतिरूप संसारमां भटक्या करे छे.

---

* आ गाथामां णं वाक्यालंकारना अर्थमां छे बहुवचनमां एकवचन अने दीर्घपणादिक प्राकृत शैलीने लईने छे आ प्रमाणे ज्यां ज्यां विभक्तिनो लोप, ह्रस्वनो दीर्घ, दीर्घनो ह्रस्व तथा चतुर्थीना स्थाने छट्ठी विभक्ति आवे ते प्राकृत भाषाने अंगे जाणवुं तेमां दोष न समजवो

विवेचन—उन्मार्गगामी गच्छमां वसीने प्राणी भवपरंपराने वृद्धिगत करे छे दुर्जननो संग सज्जनने-शाल्यानने पण भ्रष्ट करे छे आ संबंधे नीचेनो कथा समजवा योग्य छे एक ब्राह्मणने अत्यन्त चपल पुत्र हतो नानपणमां ज हमेशा ते जुगारी तथा लंपट पुरुषोनी सोबत करवा लाग्यो तेना पिताने ते पसंद न पड्यु तेणे ना कह्या छतां पण ते जवा लाग्यो, तेथी तेना पिताए चौदमु रत्न दारू वधु अर्थात तेने मारवा मांड्या ते समये तेनी पत्नी पोताना स्वामीने कहेवा लागी के-' हे स्वामिन्! पुत्रने शा माटे मारो छो? ' ब्राह्मणे कह्यु के- ते चोर थशे अने लुच्चाओनी संगतमां रहे छे ' स्त्रीए कह्यु—'ते हमणां शुं समजे ? पुत्र हजी नानो छे मोटो थशे त्यारे आपमेळे समजशे हमणां तेने स्वेच्छापूर्वक रमवा दो ' ब्राह्मणे पोतानी अज्ञान स्त्रीने समजावतां कह्यु के-'हे भोळी ! जो तारो पुत्र अनाचारीना संगमां रहेशे तो आ संसारमां घणीवाला प्रहार विगेरेनु दुःख सहन करशे अने परलोकमां नरकादि दुष्ट गति पामशे जो सज्जननी सोबत करशे तो सद्विद्या प्राप्त करी राजसभाने शोभावशे तेमज परभवमां पण देवगति विगेरे सद्गति प्राप्ति करशे कह्यु छे के—

यदि सत्सङ्गनिरतो भविष्यसि भविष्यसि ।
अथासज्जनगोष्ठीषु, पतिष्यसि पतिष्यसि ॥ १ ॥

आ सत्संगमां रत रहेशे तो गुणवान, आ लोकमां पूजापात्र अने सुखी बनशे जो दुर्जनसंगति करशे तो आ लोकमां राजाना केदखानामां पडशे अने परभवमां पण नरकगतिमां पडशे ' ब्राह्मणना आ प्रमाणे समजाववाथी तेनी स्त्री समजी आ कथानो उपनय ए छे के-साधु जो उन्मार्गगामी गच्छनो आश्रय ले तो साधुपणाथी च्युत थाय-पतन पामे अने संघमां आदरसत्काररहीत बने

आ बीजी गाथामां श्रीगौतमस्वामीने संबोधन छे एटले श्रीमहावीरस्वामी ए श्री गौतमस्वामीने करेल प्रश्ननो जवाब आप्यो छे एम जणाय छे श्रीगौतमस्वामीनो-'हे भगवन ! कल्याणभाजन ! ज्ञानधार ! हे पूज्य ! केटलाएक जीवो उन्मार्गगामी गच्छमां रहे तो तेनु शु थाय ? ' आवी जातनो प्रश्न गाथामां नथी छतां श्रीगौतमस्वामीनो एवो प्रश्न जाणी लेवो, कारण के प्रश्न कर्या वगरनो उत्तर संभवी शकतो नथी वळी आगळ गाथाओमां पण आवो रीत जाणी लेवु एटले के जेवो जेवो उत्तर आवे तेवो तेवो प्रश्न समजी लेवो कोई स्थळे प्रश्न विना पण उत्तर संभवे छे, कारण के केटलेक स्थळे शिष्य पूछे त्यारे गुरु उत्तर आपे अने केटलेक स्थळे पूछ्या विना पण उत्तर आपे

आ पयन्नाना रचनार कोण ?

आ गच्छाचार-पयन्ना रच्यो कोण ? एवो आपणने प्रश्न थाय ते स्वाभा

विष छे तेना खुलासामां आ ज पयन्नामां आगळ उपर नीचेनी गाथा जणावे छे के—

> महानिसीहकप्पाओ, ववहाराओ तहेव य ।
> साहुसाहुणिअट्ठाए, गच्छायारं समुद्धरिअं ॥

एटले के महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहारादिक सूत्रोमांथी साधु-साध्वीओने माटे आ गच्छाचार पयन्नो उद्धृत करवामां आव्यो छे. आ उपरथी एवुं अनुमान थाय छे के कदाच श्रीमद्भद्रबाहुस्वामीना रचेला ग्रंथोमांथी उद्धृत करीने आ पयन्नो रच्यो छे. आ उपरथी एम पण साबित थाय छे के श्रीमद्भद्रबाहुस्वामी पछी कोई पूर्वधराचार्य आ पयन्नानी रचना करी हशे. आम केम बनी शके? एवी शंका थाय तो जणावे छे के-ज्योतिषकरंडक पयन्नो पण आवी ज रीते पूर्वधर आचार्ये रच्यो छे. श्रीमलयगिरिजी महाराज ज्योतिषकरंडकनी प्रथम गाथानी टीकामां कहे छे के-" अयमत्र पूर्वाचार्योपदर्शित उपोद्घातः-कोऽपि शिष्योऽल्पश्रुतः कश्चिदाचार्यं पूर्वगतसूत्रार्थधारकं वालभ्यं श्रुतसागरपारगतं शिरसा प्रणम्य विज्ञपयति स्म, यथा-भगवन् ! इच्छामि युष्माकं श्रुतनिधीनामन्ते यथावस्थितं कालविभागं ज्ञातुमिति, तत एवमुक्ते आचार्य आह-शृणु वत्स ! तावदित्यादि०" 'कोई अल्प बुद्धिवाळो शिष्य श्रुतना सागर समा पूर्वधर आचार्यने प्रणाम करीने विनयपूर्वक कहे छे के-'भगवन्! श्रुतना निधान तुल्य आपनी पासे हुं काळनुं स्वरूप जाणवा इच्छुं छुं.' शिष्ये आ प्रमाणे कह्युं त्यारे पूर्वधराचार्य कहे छे के-'हे शिष्य ! तुं सांभळ, इत्यादि०" आ वचनोद्वारा आपणे जाणी शकीए के जेवी रीते ज्योतिषकरंडक पूर्वधर महापुरुषोए रचेल छे तेवी ज रीते आ गच्छाचार पयन्नो पण पूर्वगत सूत्रार्थने जाणनारा पूर्वाचार्यप्रणीत छे. आ उपरांत ज्योतिषकरंडक पयन्नाना बीजा प्राभृतनी टीकामां ज्यां संख्यानुं वर्णन आपवामां आव्युं छे त्यां ते संख्या मतांतरवाळी होवाने लीधे ते मतभेदनो खुलासो करता जणाव्युं छे के-" इह स्कन्दिलाचार्यप्रवृत्तौ दुष्षमानुभावतो दुर्भिक्षप्रवृत्त्या साधूनां पठनगुणनादिकं सर्वमप्यनशत् । ततो दुर्भिक्षातिक्रमे सुभिक्षप्रवृत्तौ द्वयोः सङ्घयोर्मेलापकोऽभवत् । तद्यथा-एको वलभ्यां, एको मथुरायाम्, तत्र च सूत्रार्थसङ्घटने परस्परवाचनाभेदो जातः । विस्मृतयोर्हि सूत्रार्थयोः स्मृत्वा सङ्घटने भवत्यवश्यं वाचनाभेदो न काचिदनुपपत्तिः, तत्रानुयोगद्वारादिकम् इदानीं वर्तमानं माथुरवाचनानुगतं, ज्योतिष्करण्डकसूत्रकर्त्ता चाचार्यो वालभ्यः, तत इदं संख्यास्थानप्रतिपादनं वालभ्यवाचनानुगतमिति नास्यानुयोगद्वारप्रतिपादितसङ्ख्यास्थानैः सह विसदृशत्वमुपलभ्य विचिकित्सितव्यमिति ।" अर्थात्

"श्री स्कंदिलाचार्यना समयमां दुःषमकाळना माहात्म्यथी भयंकर दुष्काळ पड्यो. दुष्काळने अंगे साधुओनुं पठन-पाठन सहज अल्प थई गयुं अने छेवटे तेओ भण्या हता ते पण लगभग भूली जवा लाग्या. वर्षोमां ज्यारे दुष्काळ दूर थई सुकाळ थयो त्यारे शासननी रक्षा माटे-भुलाई जता श्रुतनुं संरक्षण करवा माटे बे स्थळाए संघ एकत्र थयो. एक वल्लभीपुरमां (हालनुं काठियावाडमां आवेल वळा गाम) अने बीजो मथुरा नगरीमां. वल्लभीपुरमां अध्यक्षता नागार्जुननी हतो ज्यारे मथुरामां प्रमुखपद श्रीमान् स्कंदिलाचार्यनुं हतुं. तेओए बन्ने तेमज श्रुतनुं संरक्षण कर्युं. आ बन्ने आचार्यो समकालीन होवा छतां परस्परने मळी शक्या नहि अने तेने कारणे तेओए करेली वाचनामां मतभेद रही जवा पाम्यो. पाछळथी ज्यारे श्रीमान् देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे आगमोने पुस्तकारूढ कर्या त्यारे आ मतभेदोनुं स्पष्टीकरण करवा तेमणे स्कंदिलाचार्यनी वाचना प्रमाणे आगमो लखाव्या अने *नागार्जुननी वाचनाने विषय टीकामां अवतरित कर्यो. विस्मरण थयेला सूत्रने संग्रहित करवामां आवे त्यारे वाचना भेद थाय ते स्वाभाविक छे. अत्यारे उपलब्ध थता आगमग्रंथोमां अनुयोग द्वारादि आगमसूत्रो माथुरीवाचनाना छे. ज्यारे ज्योतिषकरंडक वल्लभी वाचनानो ग्रंथ छे; एटले संख्या संबंधी तेना वर्णननी साथे अनुयोगद्वारमां दर्शावेल संख्या-वर्णन मळतुं न आवे ए स्वाभाविक छे, कारण के वाचनाभेद होवाथी तेम बनी जाय ते कल्पी शकाय तेवी हकीकत छे. आ उपरथी ते वस्तु खोटी छे एवी शंका या विचिकित्सा कदी पण न करवी. आटला विवेचन उपरथी आपणे समजी शकशुं के जेवी रीते ज्योतिषकरंडक पूर्वधरप्रणीत छे तेम गच्छाचार पयन्ना पण पूर्वधररचित ज छे.

आ विषयनी विशेष पुष्टि करता श्रीमलयगिरिजी महाराज पोते दाखलो आपे छे. श्री मलयगिरिजी नंदीसूत्रनी टीकामां कहे छे के-"तदेवमभीष्टदेवतास्तवादिसम्पादितसकलमाङ्गलिक्यो भगवान् दूष्यगणिपादोपसेवी पूर्वान्तर्गत-सूत्रार्थधारको देववाचको योग्यविनेयपरीक्षां कृत्वा सम्प्रत्यधिकृताध्ययनविषयस्य ज्ञानस्य प्ररूपणां विदधाति-'नाणं पञ्चविहं पण्णत्तं' इत्यादि०" अर्थात्

* युगप्रधान नागार्जुननी अध्यक्षतामां वल्लभी वाचना थई अने तेने अंगे नागार्जुन विशेष प्रख्याति पाम्या. ते वाचनाने "नागार्जुनी वाचना" पण कहेवामां आवे छे. "वाचना" ए शब्द पारिभाषिक छे अने तेनो अर्थ 'गणानुज्ञा' थाय छे. वीर नि. सं. १३०मां श्रीभद्रबाहुस्वामीना समयमां पाटलीपुत्रमां वाचना थई हती. त्यारबाद आ वल्लभी तेमज माथुरी वाचना समकाळे थई हती. नागार्जुन युगप्रधान प्रभाविक आचार्य हता अने वीर नि. सं. ८२५मां तेमनो स्वर्गवास थयो हतो.

"इष्टदेवनी स्तुति-प्रार्थनाथी सुविहितपणुं प्राप्त करनार श्री दूष्य गणिना चरणनी सेवा-उपासना करनार तेमज सूत्र तथा अर्थने जाणनार देववाचक नामना आचार्य योग्य शिष्यनी परीक्षा करीने अध्ययन विषयक पांच ज्ञाननी प्ररूपणा करे छे एटले ए दूष्य गणिना शिष्य हुं देववाचक नंदिसूत्रनी रचना करुं छुं तेमां पांच प्रकारनुं ज्ञान वर्णववामां आव्युं छे इत्यादि" आ प्रमाण नंदीसूत्रना कर्ता तरीके श्री देववाचकनुं नाम मळी आवताथी श्री मलयगिरिजी महाराजे तेमां उल्लेख कर्यो छे आ उपरथी ए सिद्ध थाय छे के नाम मळे तो कर्तानुं अभिधान जणाय अने न मळे तो न जणाय जेम ज्योतिष्करंडकना कर्तानुं नाम उपलब्ध थई शकतुं न होवाथी ते जेम पूर्वधररचित छे तेम जणाव्युं तेवी रीते आ गच्छाचार पयन्नो पण पूर्वधररचित ज जाणी लेवो

वळी आ विषय परत्वे शंका करता कोई प्रश्न करे के-जो तमे एम कहेता हो के आ गच्छाचार पयन्नो पूर्वधररचित छे तो तेमां श्रीगौतमस्वामीना प्रश्न अने भगवंत श्री महावीरस्वामीना उत्तर एम केम घटी शके ? आ वातना खुलासा करता टीकाकार जणावे छे के-आ गच्छाचार पयन्नो सूत्रमांथी उद्धरेल छे अने सूत्राना कर्ता तीर्थंकर परमात्मा ज होय छे, बीजा नहीं कारण के आ संबंधमां सूत्र प्रचलित ज छे के-"अत्थं भासइ अरहा" अरिहंत परमात्मा ज अर्थनी प्ररूपणा करे, गणधर महाराज तेने सूत्ररूपे गूंथे आ रीते पण गच्छाचार पयन्नाना कर्ता श्री तीर्थंकर परमात्मा ज कहीं शकाय भगवान श्रीमहावीर आपणा आसन्नोपकारी अने चालु चोवीशीना चरम जिनपति छे अने श्रीगौतमस्वामी तेमना मुख्य गणधर छे एटले श्री गौतमस्वामीना प्रश्न अने भगवंत महावीरस्वामीना प्रत्युत्तर-रूपी शैली गच्छाचार पयन्नाना कर्ता पूर्वधर महापुरुषे स्वीकारी तेमां लेश मात्र अनुचित नथी, परन्तु खरी रीते तो ते सूत्रमांथी उद्धरेल छे ते वस्तुनी साबितीरूप छे वळी कर्ता पुरुष जणावे छे के आ गच्छाचारनी रचना मारी मति-कल्पनानुसार नथी करी पण भगवंत श्रीमहावीर श्रीगौतमस्वामीने जणावेल तेने अनुलक्षीने ज प्रथ-रचना करी छे श्री पन्नवणा सूत्रना कर्ता आर्य श्यामाचार्ये पण श्रीगौतम स्वामीना प्रश्न अने वीरभगवंतना उत्तर-रूपी पद्धति प्रमाणे ज ते सूत्रनी रचना करी छे आ ज प्रमाणे श्री गच्छाचार पयन्नाने अंगे पण समजी लेवुं

प्रकीर्णक संबंधी विशेष वृत्तांत—

आटलुं स्पष्ट ने बुद्धिगम्य खुलासा पछी पण प्रतिवादी विशेष समाधान माटे चार प्रश्न पूछता जणाय छे के (१) प्रकीर्णक शब्दनो अर्थ शुं ? (२) प्रकीर्णको कया छे ? (३) कया तीर्थंकरना समयमां केटला प्रकीर्णको थया अने (४) प्रकीर्णको रच्या कोणे ? पहेला प्रश्नना जवाब ए छे के-प्रकीर्णक शब्दनो व्युत्पत्ति अने सत्यार्थ एम बे प्रकारे अर्थ थाय छे जे संबंध चालता

होय तेनु संपूर्ण वर्णन करे तेनु नाम व्युत्पत्ति अरिहंत परमात्माए जे श्रुत-सिद्धांतनो उपदेश कर्यो तेने स्वीकारीने जे साधुओ रचना करे ते सर्व प्रकीर्णक कहेवाय एटले के श्रुतमाथी उद्धरीने रचना करे ते प्रकीर्णक अथवा पयन्ना समजवो अथवा श्रुतनो अंगीकार करीने पोतानी विदत्तापूर्वक तेने धर्म देशनादिकमां ग्रंथ पद्धति प्रमाणे उपदेश तेने पण प्रकीर्णक कहेवामा आवे छे बीजा प्रश्ननो उत्तर ए छे के-श्री ऋषभदेव परमात्माना समये ८४०००, श्री अजितनाथादि बावीश तीर्थंकरोना समये संख्याता हजार अने श्री वीर भगवतना समयमा चौद हजार प्रकीर्णको थया आ समयमां रत्नाकर आचार्य एम पण कहे छे के-प्रत्येक तीर्थंकरना समयमा असंख्याता प्रकीर्णका रचाय छे बीजा प्रश्ननो जवाब ए छे के-श्री ऋषभदेवथी प्रारंभीने श्री वीर परमात्मा पर्यंतना तीर्थमा जे जे मुनिवरो सूत्ररचना करवा शक्तिशाली थया तेओ प्रत्येक पयन्ना रच्या वळी प्रत्येकबुद्ध थया तेमणे पण प्रकीर्णको रच्या आ हिसाबे पयन्ना असंख्याता कही शकाय, कारण के चरेक तीर्थंकरना समयमा असंख्याता साधुओ थया अने तेमनु शासन पण असंख्याता समय सुधी चाल्यु आथी ज मतलबना उल्लेख नंदीसूत्रना टीकाकार श्री मलयगिरिजी महाराज जणावता कहे छे के-" अहवा तं समासओ दुविहं पन्नत्तम् इत्यादि " अर्थात् श्रुतज्ञान बे प्रकारनु छे (१) अंगमा रहेलु जेमके आचारांगादि बार अंगो, तेने अंगप्रविष्ठित कहीए अने अंगबाह्य एटले बार अंगोथी जुदु ते अंगबाह्य बे प्रकारनु छे (१) आवश्यक अने (२) आवश्यकथी भिन्न आवश्यकना छ प्रकार छे (१) सामायिक, (२) चउविसत्थो, (३) वंदनक, (४) प्रतिक्रमण, (५) काउस्सग्ग अने (६) पच्चक्खाण आवश्यकथी व्यतिरिक्त (भिन्न) पण बे प्रकारनु छे (१) कालिक अने (२) उत्कालिक प्रथम पोरसी अने छेल्ली पोरसी समये ज भणाय अर्थात् दिवस ने रात्रिना पहेला अने चोथा पहोरमा जे भणाय-भणाय ते श्रुतने कालिक अंगबाह्यआवश्यकव्यतिरिक्त जाणवु काळ (योग्य समय) वर्जीने गमे त्यारे भणाय-भणाय ते श्रुतने उत्कालिक जाणवु आ उत्कालिक अनेक प्रकारनु छे जेवा के १ दशवैकालिक, २ कप्पियाकप्पिय (कल्प्याकल्प्य), ३ चुल्ल (नानु) कल्पश्रुत, ४ महाकल्पश्रुत, ५ उववाइ, ६ रायपसेणी, ७ जीवाभिगम, ८ पन्नवणा, ९ महापन्नवणा, १० पमायप्पमाय, ११ नंदी, १२ अनुयोगद्वार, १३ देवेंद्रस्तव, १४ तंदुलवैयालिक, १५ चंदावेज्झय, १६ सूर्यप्रज्ञप्ति, १७ पोरिसिमंडल, १८ मंडलप्रवेश, १९ विद्याचरणविनिश्चय, २० गणिविज्जा, २१ ध्यानविभक्ति, २२ मरणविभक्ती, २३ आत्मविशुद्धि, २४ वीतरागश्रुत, २५ संलेखणाश्रुत, २६ विहार कल्प, २७ चरणविधि, २८ आउरपच्चक्खाण अने २९ *महापच्चक्खाण विगेरे

---

* पाक्षिक सूत्रमां १६ नंबर ने बदले २८ जणावेल छे तेमां सोळमु सूर्यप्रज्ञप्ति जणावेल नथी, परंतु ते नाम कालिक श्रुतमां जणावेल छे

१. दशवैकालिक—तेमा पाछले पहोरे अध्ययन करवा योग्य दश अध्ययनो छे आ सूत्र चोथा पट्टधर श्रीशय्यंभवसूरिए पोताना मनक नामना पुत्र अने पाछळथी दीक्षित थयेल ते बाळमुनिना अध्ययनार्थ सूत्रोना सारूप रच्येल छे आ सूत्रमा साधुजीवनना नियमो दर्शाववामा आव्या छे. मूळ श्लोक ७००, अध्ययन १० आ सूत्र ऊपर घण टीकाओ छे श्रीतिलकाचार्यनी ७००० श्लोकप्रमाण, श्रीहरिभद्रसूरिनी ६८१० श्लोकप्रमाण तमज श्रीमलयगिरिनी ७७०० श्लोकप्रमाण लघुटीका पण मळ छे पण ३७०० श्लोकप्रमाणनी, बीजी सोमसुदरसूरिकृत ४२०० श्लोकनी अने त्रीजी समयसुदरगणिकृत २६०० श्लोकनी चूर्णि ७८०० श्लोकनी अने निर्युक्ति ४५० गाथानी छे.

२. कल्पाकल्प—कल्प एटले आचार तेमा साधुना तथा स्थविरादिकना आचारनु वर्णन छे

३-४. क्षुल्ल (नानु) कल्पश्रुत अने महा (मोटु) कल्पश्रुत—तेने विषे स्थविरादिकना आचारनु वर्णन छे कल्पश्रुत बे प्रकारना छे-१ क्षुल्लकल्पश्रुत अने २ महाकल्पश्रुत पहेलामा श्रीमहावीरस्वामीना ज कल्पाचारनु वर्णन छे ज्यारे बीजामा चोवीशे तीर्थकरोना आचारनु वर्णन छे

५. उववाई (औपपातिक)—देवगति, नरकगति अने सिद्धिगतिमा उपजवाना अधिकारनु वर्णन छे चानीय नामना गामना ईशान खूणामा छिपलास नामनु चैत्य हतु त्यां ते गामनो राजा जितशत्रु अने श्रावक आनद प्रभु श्रीमहावीरनी देशना सामळवा आव्या ते प्रसगने लगतु वर्णन छे चानीयने केटलाक वैशाली नगरी कहे छे अने जितशत्रु श्रेणिकनो पुत्र कोणिक होवानु अनुमान करे छे मूळ श्लोकसख्या १२०० छे अने तेना पर श्रीअभयदेवसूरिजीनी ३१२५ श्लोकनी टीका छे

६. रायपसेणीय (राजप्रश्नीय)—तेमा प्रथम नास्तिक अने बाद गुरुप्रसगथी आस्तिक थनार प्रदेशी राजाए करेल प्रश्नो अने केशीकुमार गणधरे आपेल उत्तरोनु वर्णन छे प्रदेशी राजा मृत्यु पामीने सूर्याभ नामनो देव थयो अने प्रभु श्रीमहावीरने वदन करवा आव्यो ते हकीकतनु वर्णन छे मूळ श्लोक २०७८ छे श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ३७०० श्लोकप्रमाण छे

७ जीवाभिगम—जीव, अजीवनु विस्तारपूर्वक चमत्कारिक वर्णन छे मूळ श्लोक ४७०० छे श्रीमलयगिरिकृत मोटी टीका १४००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे लघुटीका ११००० श्लोकनी छे चूर्णी १५०० श्लोकनी छे

८. पन्नवणा (प्रज्ञापना)—जीव अने अजीव कोने कहेवाय ? तेने लगतु वर्णन छे. तेना ३६ मा पदमा छत्रीश वस्तुओनु वर्णन विस्तृत रीते करेल छे मूळ श्लोक ७७८७, श्रीमलयगिरिकृत टीका १६००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुटीका ३७२८ श्लोकनी छे

९. महापन्नवणा—जीव तेमज अजीवने ओळखवानो जेमा विस्तृत वृत्तात छे

१०. पमायप्पमाय—आमा प्रमाद अने अप्रमादने लगतु विवेचन कर वामा आव्यु छे जे प्रमाद सेवे तेने अशुभ विपाक-फळ अने न सेवे तेने शुभ विपाक प्राप्त थाय प्रमाद ए मानव जातनो मोटामा मोटो शत्रु होवाथी तेना सबधे विशेष विवेचन करवामा आवे छे

चोराशी लाख जीवायोनिमा भमतो जीव कोई पुण्ययोगे दश दृष्टाते दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त करे छे अने पछी चितामणि रत्न तुल्य नरभव पामीने पण घणाय प्राणीओ प्रमादना वशवर्तीपणाथी तेने वृथा गुमावी बेसे छे प्रमादना पाच कारणो जणावता कह्यु छे के—

मज्ज विसयकसाया, निद्दा विगहा य पचहा भणिया ।
एए पच पमाया, जीव पाडेंति ससारे ॥

अर्थात् मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा—आ पाच प्रकारना प्रमादो प्राणीने भ्रमण कराये छे-ससारमा ज मरणादिकना दु खमा नाखे छे

मद्य—मदिरा, भाग, गाजो, अफीण प्रमुख नशाना जे पदार्थो होय तेने मद्य जाणवु अथवा आठ प्रकारना [1]मदना प्रसगथी पण प्राणी धर्मकर्त्तव्यथी पतित थने छे रात्रिदिवस तेना परवशपणाथी आरम-समारभनी प्रवृत्तिमां रच्यो पच्यो रहे छ अने परिणाम भवोदधिमा भटकया करे छ

विषय—शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श-ए पाच प्रकारना विषयो छे

शब्द—स्त्रीओना मधुरा गीत तथा वार्तालाप सामळी तेना प्रत्ये उद्भवती आसक्तिने अग तेना परिचयनो, तेनी साथे भोग विलास माणवानी अभिलाषा उत्पन्न थाय छे अने तेना परिणामे मनुष्य-जन्म हारी जवाय छे सगीत अने विविध वाजित्रना ध्वनिथी पण आसक्ति वृद्धिगत थाय छे वीणावादनमां आसक्त

[1] जातिमद, रूपमद, कुळमद, ज्ञानमद, बळमद, तपमद, ऋद्धि(ऐश्वर्य) मद अने लाभमद-आ आठ प्रकारना मदो छ, जे प्राणीओने दुर्गतिरूपी ऊंडी खाईमां धकेले छे

थयेल मृग छेवटे पारधीनी जाळमा फसाई मृत्युनु दुःख वहोरी ले छे

रूप-रूपवती स्त्रीओना दर्शनथी अथवा मनोहर अने रमणीय पदार्थोना अवलोकनथी मनमा विकार उपजे छे अने तेना परिणामे भोगविलासनी आशा उद्भवे छे तेनी प्राप्ति माटे अहोनिश झखना रहेवा साथे आरंभ-समारंभ करतो प्राणी प्राते संसार-समुद्रमा रखडे छे दीपकना रूप(प्रकाश)मा मुग्ध बनेल पतंगीयु तेमा झपलावीने पोताना प्राणने कुरबान करी नाखे छे

रस-मीठाई अथवा मिष्ट रसवाळा पदार्थोने खावानी लोलुपताथी, जिह्वास्वादथी कोई पण प्रकारना भक्ष्याभक्ष्यनु भान रहेतु नथी तेमज तेवी वस्तुओ प्राप्ति माटे असत्यादि पापस्थानको पण सेवाय छे अने तेमा अहोनिश झखना रहेती होवाथी धर्मकार्यमा न्यूनता आवी जाय छे मासनी पेशीने विषे आसक्त थतु मत्स्य तेनी माथे लगाडेला लोढाना सळीयानी तीक्ष्ण अणीथी छेवटे मृत्युने आधीन बने छे

गध-सुगधने विषे आसक्त थइने प्राणी तेवा प्रकारनी सुवास प्राप्त करवामा अनेक समारंभो करे छे अने तेमा ज लयलीन रहेवाथी धर्मकार्य पण तेने सूझतु नथी सहेज पण दुर्गंधना-दुर्गंध तेने दुःखदायी थइ पडे छे तेनाथी परिषह सहन थइ शकता नथी तेमज जीव चचळ बनी जाय छे भ्रमर गध प्रत्येनी तीव्र आसक्तिने कारणे कमळमा बीडाई जाय छे अने छेवटे विनाश पामे छे

स्पर्श-स्त्रीआदिकना सुकोमळ स्पर्शने कारणे मन व्यग्र बनता कामोत्पत्ति थाय छे अने तेनी शातिने अर्थ प्राणी अनेक प्रकारना दुर्ध्यान करे छे हिंसादिकमा प्रवृत्त थता अचकातो नथी तेमज तेमा रक्त बनीने छेवट प्राणोनो आहुति आपी दे छे हस्ती केटलो बधो स्पर्शप्रेमी छे के कागळनी बनावेल कृत्रिम हाथणीने जोईने पण तेनी उत्कट काम-इच्छा जोर करे छे, अने तेने स्पर्शतो ते तेनी पाछळ अध बनीने दोडे छे तेवामा तेने पकडवा माटे खोदेला खाडामा पडी बधनमा जकडाय छे

आ प्रमाणे एक एक इन्द्रियना वशवर्तीपणाथी जीवन निरर्थक बने छे

८. पन्नवणा (प्रज्ञापना)—जीव अने अजीव काने कहेवाय ? तेने लगतु वर्णन छे तेना ३६ मा पदमा छत्रीश वस्तुओनु वर्णन विस्तृत रीते करेल छे मूळ श्लोक ७७८७, श्रीमलयगिरिकृत टीका १६००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुटीका ३७२८ श्लोकनी छे

९. महापन्नवणा—जीव तेमज अजीवने आळखवानो जेमा विस्तृत वृत्तात छे

१० पमायप्पमाय—आमा प्रमाद अने अप्रमादने लगतु विवेचन कर वामा आव्यु छ जे प्रमाद सेव तेने अशुभ विपाक-फ्ळ अने न सेव तेने शुभ विपाक प्राप्त थाय प्रमाद ए मानव जातनो मोटामा मोटो शत्रु होवाथी तेना सबधे विशेष विवेचन करवामा आव छे

चोराशी लाख जीवायोनिमा भमतो जीव कोई पुण्ययोगे दश दृष्टाते दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त करे छे अने पछी चिंतामणि रत्न तुल्य नरभव पामीने पण केटलाक प्राणीओ प्रमादना वशवर्तीपणाथी तेने वृथा गुमावी बेसे छे प्रमादना पाच कारणो जणावता कह्यु छे के—

मज्ज विसयकसाया, निद्दा विगहा य पचहा भणिया ।
एए पच पमाया, जीव पाडेंति ससारे ॥

अर्थात् मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा—आ पाच प्रकारना प्रमादो प्राणीने भ्रमण कराये छे-ससारमा जन्ममरणादिकना दु खमा नाखे छे

मद्य—मदिरा, भाग, गाजो, अफीण प्रमुख नशाना जे पदार्थो होय तेने मद्य जाणवु अथवा आठ प्रकारना [1]मदना प्रसगथी पण प्राणी धर्मकर्तव्यथी पतित बने छे रात्रिदिवस तना परवशपणाथी आरभ-समारभनी प्रवृत्तिमा रच्यो पच्यो रहे छे अने परिणाम भवोदधिमा भटक्या करे छे

विषय—शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श-ए पाच प्रकारना विषयो छे

शब्द—स्त्रीओना मधुरा गीत तथा वार्तालाप साभळी तेना प्रत्ये उद्भवती आसक्तिने अग तेना परिचयनी,तेनी साथे भोग विलास माणवानी अभिलाषा उत्पन्न थाय छे अने तेना परिणामे मनुष्य-जन्म हारी जवाय छे सगीत अने विविध वाजित्रना ध्वनिथी पण आसक्ति वृद्धिगत थाय छे योणावाद्यमा आसक्त

---

1 जातिमद, रूपमद कुळमद, ज्ञानमद, बळमद, तपमद, ऋद्धि(ऐश्वर्य) मद अने लाभमद-आ आठ प्रकारना मदो छ, जे प्राणीओने दुर्गतिरूपी ऊडी खाईमा धकेले छे

थयेल मृग जेवटे पारधीनो आत्मा थमाइ मृत्युनुं दुःख वहोरी ले छे

रूप-रूपवती स्त्रीओना दर्शनथी अथवा मनोहर अने रमणीय पदार्थोना अवलोकनथी तनमा विकार उपने छे अने तेना परिणामे भोगविलासनी आशा उद्भवे छे तेनी प्राप्ति माटे अहोनिश हरता रहेवा माटे आरभ-समारभ करतो प्राणी प्राते ससार-समुद्रमा रझले छे दीपकना रूप(प्रकाश)मा मुग्ध थनेल पतगीयु तेमा झपलावीने पोताना प्राणने कुरबान करी नाखे छे

रस-मीठाई अथवा मिष्ट रसवाळा पदार्थोने खावानी लोलुपताथी, जिह्वास्वादथी कोई पण प्रकारना भक्ष्याभक्ष्यनु भान रहेतु नथी तेमज तेनी वस्तुनी प्राप्ति माटे असत्यादि पापस्थानको पण सेवाय छे अने तेना अहोनिश झखना रहेती होवाथी धर्मकार्यमा न्यूनता आवी जाय छे मासनी पेशीने विषे आसक्त थतु मत्स्य तेनी साथे लगाडेला लोढाना मछीवानी तीक्ष्ण अणीथी छेवटे मृत्युने आधीन थने छे

गध-सुगधने विषे आसक्त थइने प्राणी तेवा प्रकारनी सुवास प्राप्त करवामा अनेक समारभो करे छे अने तेमा ज व्यस्त रहेवाथी धर्मकार्य पण तेने सूझतु नथी सहेज पण दुर्गं सना-दुर्गंध तेने दुःखदायी थइ पडे छे तेनाथी परिषह सहन थइ शकता नथी तेमज जीव चपळ बनी जाय छे भ्रमर गध प्रत्येनी तीव्र आसक्तिने कारणे कमळमा बीडाई जाय छे अने छेवटे विनाश पामे छे

स्पर्श-स्त्रीआदिकना सुकोमळ स्पर्शने कारणे मन व्यग्र बनता कामोत्पत्ति थाय छे अने तेनी शातिने अर्थ प्राणी अनेक प्रकारना दुध्यान करे छे हिंसादिकमा प्रवृत्त थता अचकातो नथी तेमज तेमा रक्त बनीने छेवटे प्राणोनी आहुति आपी दे छे हस्ती स्पर्शो थयो स्पर्शप्रेमी छे ते कागळनी बनावेल कृत्रिम हाथणीने जाइने पण तेनी उत्कट काम-इच्छा जोर करे छे, अने तेने भगता त तेनी पाछळ अध बनीने दोडे छे तेथामा तेने पकडवा माटे खोदेला खाडामा पडी बधनमा जकडाय छे

आ प्रमाणे एक एक इद्रियना वशवर्तीपणाथी जीवन निरर्थक बने छे

તા પાંચે ઇન્દ્રિયાની આસક્તિવાળા મનુષ્યે તો સ્વયમેવ પોતાની મતિનો તેમજ સ્થિતિનો સપૂર્ણ વિચાર કરી લેવો ખરેખર એક પવિત્ર યથાર્થ જ કહ્યુ છે કે-

" कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गा, मीना हताः पञ्चभिरेव पञ्च ।

एकः प्रमादी स कथं न हन्यात्, य सेवते पञ्चभिरेव पञ्च ॥२॥"

અર્થાત્ મૃગ, હસ્તી, પતંગીયુ, ભ્રમર અને મત્સ્ય એક-એક ઇન્દ્રિયને વિષે અતિશય ગૃદ્ધપણુ રાખવાથી યમરાજને આધીન બને છે તો પાંચે ઇન્દ્રિયોને આધીન બનીને જે પ્રમાદી જીવન વ્યતીત કરે છે તે કેમ જીવન-સાફલ્યતા પ્રાપ્ત કરી શકે ?

કષાય-કષાયો ચાર છે-ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ

ક્રોધ-બીજા પ્રત્યે તીવ્ર-ઉગ્ર પરિણામના કારણે મુખાદિ અવયવો તપાવવા તેને ક્રોધ કહેવામા આવે છે, તેથી કોઇના પરત્વે ગુસ્સો થાય, રોષ આવે અને આર્તધ્યાન થાય તેમજ તેને અંગે હિંસાદિ કાર્યમા પણ પ્રવર્તે

માન-પ્રાપ્ત અથવા અપ્રાપ્ત વસ્તુનો અહંકાર તે માન તેનાથી પોતાના જ્ઞાતપણાનુ, વાણિજ્ય-વિચક્ષણતા આદિનુ અભિમાન કરે, ધર્મ કરણી ન કરે અને પોતાની પ્રતિષ્ઠા સાચવી રાખવા અનેક પ્રકારના આરંભસમારંભ કરવાપૂર્વક આર્તધ્યાન કરે

માયા-ગુપ્તપણે સ્વાર્થવૃત્તિ સિદ્ધ કરવાની વાંછા તે માયા તેથી કપટ, છતરપીંડી કરી બીજાને ઠગે તેને મૂર્ખ તેનો અલ્પાત્ય લાભ છે અને એ પ્રમાણે યતન કરી રત્નચિંતામણિ સરખો માનવ ભવ કોડીની પ્રાપ્તિ માટે એળે ગુમાવે

લોભ-ધનાદિ સંપત્તિ એકઠી કરી સંગ્રહ કરી રાખવાની મનોવૃત્તિ તે લોભ તેથી અહર્નિશ પરિગ્રહ વધારવામા, વિશેષ ને વિશેષ સંપત્તિ મેળવવામા તલ્લીન રહી ધર્મકરણી ભૂલી જાય

નિદ્રા-રાતદિવસ નિદ્રા લેવામા વ્યતીત કરે, અથવા સમય મળે તો બીજાની નિંદા કરવામા પ્રવૃત્ત થાય પણ ધર્મકૃત્ય ન કરે

વિકથા-જેનાથી આત્માને કઇ પણ લાભ ન થાય તેવી કથા-વાર્તા તે વિકથા વિકથા કરનાર પ્રાણી નથી જાણતો કે પુણ્યયોગે હું મનુષ્યપણુ પામ્યો છુ અને ફોગટ વિકથા કરીશ તો ધર્મકરણી વિના માનવજન્મ નિષ્ફળ જશે યથારુચિ ખાઇ-પીને ફોગટ ગામગપાટા મારવા તે જ તેને પ્રિયકર થઇ પડે છે વિકથા ચાર

प्रकारनी छे-राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथा अत्यारे प्रवर्तती स्थिति तपासशु तो मानवीनो मोटो भाग विकथा करवामां अथवा तो तेने पुष्टि आपता वर्तमानपत्रो वांचवामां व्यतीत थाय छे, जे खरेखर शोचनीय छे मानवे पोतानी पळे-पळनो सदुपयोग करता शीखवु जोइए एटला ज माटे भगवान श्रीमहावीरे श्रीगौतमस्वामीने कह्यु हतु के-'समयं गोयम ! मा पमायए' अर्थात् हे गौतम ! तुं एक समय मात्र पण प्रमाद करीश नहि

राजकथा-अमुक देशनो राजा महाशूरवीर छे तेणे सिंहने एकले हाथे मारी नाख्यो, तेनी घोडेस्वारी जोइ होय तो भल-भलाने आश्चर्य उत्पन्न थाय तेनी पासे हाथी, घोडा तथा पायदळनी संख्या विपुल छे तेना आभूषणो लाखोनी किंमतना छे तेनो राज्यभंडार अमूल्य खजानाथी भरपूर छे ते स्वभावनो अत्यंत क्रूर छे इत्यादि कथा ते राजकथा

देशकथा-अमुक देशमां घणी ऋद्धिसंपत्ति छे लोको घणा ज सुखी अने विलासी छे ते देशमां भोगविलासना साधनो, बाग-बगीचा विगेरे घणा ज छे आ उपरांत पृथ्वी पण रसाळ होवाथी विधविध प्रकारना धान्यो अने फळो प्राप्त थाय छे ते देशमां गामडाओ सुशोभित पहेरवेश सुंदर अने खानपान मिष्ट अने रोचक छे इत्यादि वातो करवामां वखत गुमावे अने धर्मकरणी न करे ते देशकथा

स्त्रीकथा-स्त्रीओ संबंधी विधविध वार्तालाप करी तेना गुणदोषनुं पृथक्करण कर्या करे मोगलजातिनी सुंदरीओ तो गजगामिनी जेवी होय छे दक्षिणी लोकोनी स्त्रीओ सुंदर पहेरवेशवाळी अने नित्य स्नान करनारी होय छे, नागर लोकोनी स्त्रीओ अत्यंत सुघड होय छे एवी विधविध देशनी सुंदरीओनां वर्णन करे आ उपरांत स्त्रीओना शृंगार, अवयवो विगेरेने लगती वात करे ते स्त्रीकथा

भक्तकथा-(भोजनकथा) कोईना जमणवारने लगती वात करे के अमुकना जमणवारमां मिष्टान्न सारुं थयुं हतुं शाक तो तमतमतुं हतुं, पेंडा घणा ज सारा हता विगेरे विगेरे वात करे ते भक्तकथा

उपरनी चारे कथाओ परत्वे विपरीत बोले एटले के निंदा करे ते पण विकथा ज कहेवाय, जेमके राजा तो पापी छे, निर्दय

छे, विषयी छे, अमुक देश तो क्लिष्ट छे, लोको दुराचारी छे, अमुक स्त्री तो आचार वगरनी ने विषयलपटी छे, फलाणी तेमज मोधी ▪ अमुक भोजन तो अस्वादिष्ट छे, मीठाई तो गधाई गयेली छे, शाक सडेलु छे इत्यादि इत्यादि वार्तालापो करवामा रच्योपच्यो रहे ते पण विकथानो ज प्रकार छे

आवी रीते प्रमादना पाचे प्रकारोनु जे सेवन करे छे ते कर्मरूपी अग्निमा हरहमेश बळ्या करे छे, तेने रोग-मतापादि परिताप उपजे छे, मरणादिक महाभय रहे छे अने संसाररूपी कारागारना बंधनमा जकडायु पडे छे आवी घोर विटंबनामाथी मुक्त करावनार जो कोई होय तो श्रीकेवळी भगवंते उपदेशेल धर्म ज छे, तेथी जरूर शत्रु सदृश प्रमादनो परित्याग करी धर्मसेवन करवु जोइए प्रमाद सेवे छे तेने नरकादि महादुःखो, महायातनाओ सहन करवी पडे छे महाभयंकर ताड, पिशाचादिकनु रूप जोवु पडे छे, लाय, हाडका मसुदनी दुर्गंध सहन करवी पडे छे, अतिकडवो कषदायी आहार करवो पडे छे, करसी तथा तलवार जेवा तीक्ष्ण शस्त्र उपरथी चालवु पडे छे अत्यत शीत तथा अत्यंत उष्णता सहन करवी पडे छे, अत्यत बोझो-असह्य भार उपाडवो पडे छे-आवा आवा कष्टो प्रमादना परवशपणथी सहन करवा पडे छे प्रमादनु आवु भयप्रद स्वरूप समजीने जे कोई महाव्रतनु पालन करे, इन्द्रियोने दमे, मनने काबूमा राखे श्रावक धर्म पाळे, शुद्ध समकितधारी बने ते मनुष्य मरण पामीने देवलोकमा जाय अने त्याथी च्यवीने पण सुख-संपत्ति भोगवी, धर्माराधन करी छेवट अक्षयसुखनो भोक्ता थाय

आवी रीते प्रमाद सेववाथी अशुभ फळ अने प्रमादनो परित्याग करवाथी देव लोकादिकनी प्राप्तिरूप शुभ विपाक-फल थाय तेने लगतु जेमा वर्णन छे ते दशमु पमायप्पमाय जाणवु

११. नदी—तेमा महामांगलिक मति,श्रुत,अवधि,मन पर्यव अने केवळज्ञान ए पाच प्रकारना ज्ञानु स्वरूप ▪ आ सूत्र देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणकृत छे मूळ श्लोक ७०० श्रीमलयगिरिकृत टीका ७७३२ श्लोकप्रमाणनी अने श्रीहरिभद्रसूरिकृत टीका २३१२ श्लोकनी छे चूर्णि २००० गाथानी छे, टिप्पण ३००० श्लोकनु छे

१२ अनुयोगद्वार—चार प्रकारना व्याख्यान करवानी पद्धति-रीतिनु तेमा वर्णन छे वळी नय-निक्षेपानु वर्णन अने सिद्धि दर्शाववामा आवेल छे श्लोक १८०० छे मलधारी हेमचंद्रसूरिकृत वृत्ति ६००० अने श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्ति ३५०० श्लोकनी छे श्रीजिनदासगणि महत्तरनी चूर्णि ३००० श्लोकनी छे

१३ देविंदत्थओ (देवेंद्रस्तव)—देवोना स्वामी इन्द्रे जे स्तवना-स्तुति करी ते तमा इन्द्रोना स्वरूपनु वर्णन छे गाथा ३००

१४ तंदुलवेयालिय—जीव गर्भमां आवे त्यारे केवडो होय अने क्रम क्रमे केवी वृद्धि पामे तेने लगतु तेमज जन्मथी मांडीने मरण सुधीनु वृत्तांत छे गाथा ४००

१५. चंद्रवेध्यक—चंद्रमानी गतिनु प्रमाण जेम राधावेधमां चतुराईथी पुतळीनी आंख वींधवामां आवे छे तेम चंद्रनी गति अनुसार अणसण साधवानी क्रियानु वर्णन

१६ सूर्यप्रज्ञप्ति—सूर्यनी गति तथा मांडलादिकनु वर्णन मूळ श्लोक २२००, मलयगिरिकृत टीका ९००० श्लोकप्रमाण अने चूर्णि १००० श्लोकनी छे

१७ पोरिसीमंडल—शंकु तेमज पुरुषना शरीरना प्रमाण जेटली छाया थाय त्यारे पोरिसी थाय अर्थात् जे जे वस्तुओ छे ते ते वस्तुओना पोताना शरीरप्रमाण छाया थाय त्यारे पोरिसी कहेवाय आ प्रमाण उत्तरायणना अंतमां अने दक्षिणायननी आदिमां समजवु आ पोरिसीप्रमाण एक दिवस होय छे, पछी तो आठ आगळना एकसठ भाग करीए अने तेना एक भाग जेटली दक्षिणायने पोतानी छाया ऊपर वधे अने उत्तरायणमा तेटली घटे तेम समजवु आवी रीते मांडले-मांडले पोरिसीनु प्रमाण जे ग्रंथमां आव्यु छे ते पोरिसीमंडल

१८. मंडलप्रवेश—दक्षिण तथा उत्तर दिशामां मंडलोने विषे चालता सूर्य तथा चंद्रनो एक एक मंडल मूकीने बीजा मंडलमां प्रवेश करवो तेने लगतु वर्णन ते मंडलप्रवेश

१९. विज्जाचरणविनिश्चय—विद्या एटले ज्ञान, समकित युक्त ते चारित्र तेनु जे फळ-विनिश्चय तेने लगतु वर्णन अर्थात् विद्याचारणादिकनो वृत्तांत

२० गणिविद्या—बाल, वृद्ध साधुओनो समुदाय ते गण कहेवाय, ते गणना नायक-अधिष्ठाता ते गणि अथवा आचार्य कहेवाय तेनी विद्या ते गणि विद्या आ विद्याद्वारा ज्योतिषशास्त्रादीनु ज्ञान थाय, जेथी अमुक शुभ वार, नक्षत्र, तिथि, मुहूर्त जोईने दीक्षा आदि धार्मिक क्रिया कराची शकाय

२१. ध्यानविभक्ति—आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्लध्यान-आ चार ध्यानने लगतु तेमां वर्णन छे

२२. मरणविभक्ति—मरण एटले प्राणत्याग करवो ते बे प्रकारे थई शके-एक सारी रीते, बीजा दुष्ट अध्यवसायथी आने लगतु वर्णन करवामां आव्यु छे

२३ आयविसोही (आत्मविशुद्धि)—आत्माने कोई पण धार्मिक क्रिया करतां अगर तो बीजी रीत भंग पड्यो होय तेने माटे आलोयण-प्रायश्चित्त विगेरे लई आत्माने शुद्ध करवो तने लगतो अधिकार आ ग्रंथमां छे

२४. वीतरागश्रुत—रागीपणुं त्यजी दइने वीतराग-रागरहित केम थवाय ? तेने लगतुं आमां वर्णन छे

२५ संलेखनाश्रुत—द्रव्य तथा भावथी संलेखना करवानो अधिकार द्रव्य संलेखना एटले चार वर्ष सुधी विविध-जुदी जुदी जातनो तप करे अर्थात् छट्ठ, अट्ठम, चार उपवासादिक तप करे, बे वर्ष सुधी नित्य कर, पछी एकांतरे आयंबिल कर, पछी ॥ महिना सुधी उपवास कर, पछी प्रमाण सहित आय निज करे, जो सुयभन थाय एटले तपश्चर्यामां मामा पड ता थनी छ मास सुधी करे त्यारपछी वार्धिसहित तप करे एटले उपवास तथा पक्षमण एकएकने पारणे करे भावसंलेखना एटले माधादिक कषायो घटाडे-त्याग

२६ विहारकल्प—स्थविरकल्पी प्रमुखना विहारना आचारनुं वर्णन

२७ चरणविधि—जेमां चारित्र पाळवानी विधिनुं वर्णन छे

२८. आउरपच्चक्खाण—रोगोत्पत्ति थाय-व्याधि थाय त्यारे पच्चक्खाण करावयानी विधिनुं वर्णन छ ध्यान अने जाणवा योग्य ६३ वस्तुओनुं वर्णन आमां करवामां आव्युं छे गाथा ८४

२९. महापच्चक्खाण—स्थविरकल्पी तथा जिनकल्पी अंतकाले चार वर्णनी जे संल्पना करे तेने लगती विधिनुं वर्णन गाथा १३४

कालिकसूत्र पण अनेक प्रकारनुं छ जेमके-१ उत्तराध्ययन, २ दशाश्रुतस्कंध, ३ बृहत्कल्प, ४ व्यवहारसूत्र, ५ निशीथ, ६ महानिशीथ, ७ ऋषिभाषित, ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति,९ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, १० चंद्रप्रज्ञप्ति, ११ खुड्डिया(क्षुल्लिका[नामी])-विमाणविभत्ति, १२ महल्लिया(महती [मोटी]) विमाणप्रविभक्ति, १३ अंगचूलिका, १४ वग्गचूलिका, १५ विवाहचूलिका, १६ अरुणोपपात, १७ वरुणोपपात, १८ गरुडोपपात, १९ धरणोपपात, २० वैश्रमणोपपात, २१ वेलंधरोपपात, २२ देवेंद्रोपपात, २३ उत्थानश्रुत, २४ समुत्थानश्रुत, २५ नागपरियावलिका, २६ निर्यावलिया, २७ कप्पिआ (कल्पिका), २८ कप्पवडिंसिया (कल्पावतंसक), २९ पुप्फिया (पुष्पिता), ३० पुप्फचूलिया अने ३१ वह्निदशाग * इत्यादि

१. उत्तराध्ययन—जे सूत्रमां बधा अध्ययनो न्यून नथी, श्रेष्ठ छे ते तेना अध्ययन ३६ छे साधुओने प्रथमपणामां स्थिर राखवानुं उपदेशरूपे अनेक दृष्टान्तो सहित सुंदर संवादो आप्या छ मूळ श्लोक २०००, वादीवेताल श्रीशान्तिसूरिकृत

* पाक्षिक सूत्रमां आशीविषभावना, दृष्टिविषभावना, चारणभावना, महास्वप्नभावना अने तैजसनिसर्ग-आटला नामो विशेष जणाव्या छ २७ थी ३१ सुधीना पांच नामो निर्यावलिका सूत्रना विभागरूप ज छे

मोटी टीका १८००० श्लोकप्रमाण छे ज्यारे विक्रम संवत ११२९ मा श्रीनेमिचंद्रसूरिए लघुटीका १३६०० श्लोकनी बनावी छे श्रीभद्रबाहुस्वामीकृत निर्युक्ति ६०७ गाथानी छे चूर्णि ६००० श्लोकनी छे

२. दशाश्रुतस्कंध—आ सूत्रमा दश अध्ययन छे आ सूत्रना आठमा अध्ययनमाथी उद्धृत करी श्रीकल्पसूत्रनी रचना करवामा आवी छे मूळ श्लोक १८३०, निर्युक्ति ११८ अने चूर्णी २२५ श्लोकप्रमाण छे

३ बृहत्कल्प—जेमा स्थविरकल्प अने जिनकल्प पाळवानो आचार छ उद्देश ३५ छे मूळ श्लोक ४७३ वि स १३३२मा बृहच्छालीय श्रीक्षेमकीर्तिसूरिकृत टीका ४२००० श्लोकप्रमाण छे बृहद्भाष्य १२००० अने लघुभाष्य ८००० श्लोकनु छे चूर्णि १४०२५ श्लोकप्रमाण छे

४. व्यवहारसूत्र—आलोयण-प्रायश्चित्त संबंधी अधिकार छे उद्देशा १०, मूळ श्लोक ६००, श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ३३६२५ श्लोकप्रमाण छे भाष्य ६००० अन चूर्णी १०३६१ श्लोकप्रमाण छे

५. निशीथ—जे मुनिओ साध्वाचारथी च्युत थाय तेनी शिक्षा संबंधी आ सूत्रमा अधिकार छे उद्देशाय २०, मूळ श्लोक ८१५, मोटु भाष्य १२००० श्लोकनु अने लघुभाष्य ७४०० श्लोकनु छे चूर्णी २८००० श्लोकप्रमाण छे

६ महानिशीथ—जिनमंदिर तथा जिनप्रतिमा, अठ्ठाइ महोत्सव, अनुकंपा विगेरेने लगता शिक्षा-उपदेश संबंधी मोटा सूत्रोनु सविस्तर वर्णन छे अध्ययन १३, मूळ श्लोक ४५०० मतांतरे तेनी त्रण प्रकारनी वाचना छे लघुवाचना ४२००, मध्यम वाचना ४५०० अने बृहद्वाचना ११८०० श्लोकप्रमाण छे

७. ऋषिभाषित—श्रीनेमिनाथना समयना २०, श्रीपार्श्वनाथना समयना १५ अने श्रीमहावीर परमात्माना समयना १०-कुल ४५ ऋषिओनु वर्णन छे

८. जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति—जंबूद्वीप संबंधी भौगोलिक वर्णन छे मूळ श्लोक ४१४६, श्रीमलयगिरिजीकृत टीका १२००० श्लोकनी अने चूर्णी १८६० श्लोकनी छे

९ चंद्रप्रज्ञप्ति—चंद्रनो चार (गति) अने मांडला संबंधी अधिकार छे मूळ श्लोक २२०० श्रीमलयगिरिजीकृत टीका ९४११ श्लोकनी छे ज्यारे लघुटीका १००० श्लोकप्रमाण छे

१०. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति—तेमा अनेक द्वीप अने समुद्र संबंधी वर्णन छे आ उपरांत मानुष्योत्तर पर्वत, नंदीश्वरद्वीप, रुचकद्वीप इत्यादि पर रहेल जिनमंदिरोनु वर्णन आपवामा आव्यु छे

११. क्षुद्रिकाविमानप्रविभक्ति—जेमा समथेणिए रहेला विमान अन छूटा विमाननु अल्पसूत्रार्थद्वारा वर्णन करेल छे

१२. महतीविमानप्रविभक्ति —जेमां उपर्युक्त विमानोनु विस्तृत सूत्रार्थथी विवेचन करवामा आव्यु छे

१३. अगचूलिका—आचारागादि जे अगा छ तेनी चूलिका ते अगचूलिका, आ चूलिकामा अगमा जे कह्यु छे तेनो तेमज जे कहेल नथी ते सर्वनो सग्रह छे

१४ वर्गचूलिका—वर्ग एटले अध्ययन आमा अंतगडादिना अध्ययनना सग्रह करवामा आव्या छे

१५. विवाहचूलिका—श्रीभगवती सूत्रनी (विवाहप्रज्ञप्तिनी) चूलिका छे

१६. अरुणोपपात, १७. वरुणोपपात, १८. गरुडोपपात, १९. धरणोपपात, २०. वैश्रमणोपपात, २१. वेलधरोपपात अने २२. देवेंद्रोपपात—जेना अध्ययनथी त ते नामना देव प्रत्यक्ष थाय अने स्मरण करनारनी स्तवना-स्तुति करी तेमनी कार्यसिद्धि करे अरुण, वरुण विगेरे देवोना जेमा सबध छ ते अरुणोपपात, वरुणोपपात इत्यादि सूत्रो जाणवा

२३. उत्थानश्रुत—जेना अध्ययनथी गाम, नगर, कुल अने राजधानी विगेरे उज्जड थाय ते ज्यारे कोई साधु-मुनिराज क्रोधायमानमा आवे त्यारे आ श्रुतनो एक वार पाठ करे त्यारे सर्वत्र त्राय भयभ्रांत थई जाय अने बीजी त्रीजी वार भण त्यारे सघ ग्राम-नगरादिक छोडीने चाल्या जाय-नाशी जाय

२४. समुत्थानश्रुत—ज्यारे उपर्युक्त क्रोधी मुनिराजनु कार्य थइ जवाथी तेमना चित्तनी शांति थाय-प्रसन्नचित्त थाय त्यारे पाछु समुत्थानश्रुत भणे ने तना एक-बे-त्रण वारना पाठथी नाशी गयला लोको पाछा नगरनी इच्छाथी आवीने ग्राम नगरादिकमा निवास करे

२५. नागपरिज्ञावलिका—नागकुमार देवनी परिज्ञा चूर्णिकार जणावे छे क-ज्यारे साधु आ अध्ययन भणे त्यारे सकल्प कर्या विना पण नागकुमार देव पोताना स्थानमा रह्या छता ते साधु-मुनिराजने वादे अने सघ पर कोई पण सकट आवी पड्यु होय तो तेनु निवारण करे

२६. निरयावलिका—तेमा नरकावासानु वर्णन छे नरकमा जनारा मनुष्य अने तिर्यचो विगेरेनु पण वर्णन आपवामा आव्यु छे

२७. सूत्रकल्पिक—सौधर्मादि देवलोकना कल्प सबधी वर्णन छे

२८. कल्पावतंस—विमानना शिखरादिनु वर्णन चूर्णिकार एम पण कहे छे के सौधर्म तथा ईशान देवलोकने विषे जे विमानो छे तेमा अत्यंत तपश्चर्या द्वारा जे देवपणे उपजे तेने लगतु वर्णन आपेल छे

२९. पुष्पिका—गृहस्थावासनो त्याग करी जे संयमभावमा स्थिर थया पछी सुखिया थया तेने लगतो अधिकार छे

३०. पुष्पचूलिका—गृहस्थपणानो त्याग करी साधुत्व स्वीकार्या बाद पासत्थापणे विचरया तदधी अधिकार

३१ वह्निदशाग—अधकवृष्णि राजाना कुळमा उत्पन्न थईने जेओ मोक्षे गया तेओने लगतो अधिकार

आ प्रमाणे उत्कालिक अने कालिक श्रुतनी संख्या गणावता पार आवे तेम नथी आपण पूर्वे जाणी गया ते प्रमाणे श्रीऋषभदेवना समयमा ८४ हजार, वावीश तीर्थंकरना समयमा सख्याता हजार अने श्रीमहावीर परमात्माना समये चौद हजार प्रकीर्णको रचाया छे भगवान श्रीऋषभदेवना चोराशी हजार साधुओ हता माटे तेमना समयमा कालिक अने उत्कालिक श्रुतनी सख्या चोराशी हजारनी थइ, कारण के भगवते उपदेशेल श्रुतनो अगीकार करीने जे रचना करे ते सव प्रकीर्णक कहेवाय अथवा तो पोतानी कुशळता दर्शावया पूर्वक श्रुतने अनुसारे उपदेशने अवसरे रचना करी बोले ते पण प्रकीर्णक कहेवाय आ प्रमाणे श्रीऋषभदेवना समयमा ८४ हजार, वावीश तीर्थंकरना समयमा सख्याता हजार अने श्रीवीरपरमात्माना समयमा चौद हजार प्रकीर्णकोनी रचना थइ

ऊपर जणावेल हकीकतमा मध्यमा केटलाक आचार्योनो मतभेद पण छे केटलाक आचार्यो एम पण जणाव छे के–श्रीऋषभदेवने आश्रयीने जे साधु सख्या कही छे ते सूत्र रचनारी श्रेष्ठ शक्ति धरावनारा साधुओनी समजवी बीजा सामान्य साधुओ तो घणा थया छे वळी केटलाक एम पण जणाव छे के–श्रीऋषभदेवनी विद्यमानतामा ज जणावी तेटली साधुसंख्या थई, पण तेमना निर्वाण पछी जे जे साधुओ तेमना शासनकाळमा थया अने तेमा पण जे श्रेष्ठ शास्त्र रचनारी शक्तिवाळा थया तेओना रचेला ग्रथो ज सूत्रमा अधिकृत करेला जाणवा अने तेना नाम ज श्रीनंदीसूत्रमा सूचवेल छे आवा प्रकारना मतांतर दर्शाववा माटे ज 'अहवा' शब्द सूत्रमा मूकवामा आव्यो छे श्रीऋषभदेवादिक तीर्थंकरना समयमा तेमना जे शिष्यो (१) उत्पातबुद्धि, (२) वैनेयिकी, (३) कार्मणकी अने (४) पारिणामिकी–आ चार बुद्धिना धरनार हता तेमना रचेला जे वचनो ते प्रकीर्णको जाणवा प्रत्येकबुद्ध पण तेटला ज जाणवा

आ संबंधमां कोई आचार्य एम कहे छे के-दरेक तीर्थंकरना समयमां असंख्याता पयन्ना रचाय छे, पण अहीं तो फक्त प्रत्येकबुद्धना रचेला ज प्रकीर्णको जाणवा आ कथन परत्वे कोई शंका करता कहे के-प्रत्येकबुद्धने शिष्य तो न होय तो तमारु कथन सत्य-न्यायथी जणातुं नथी आ शंकाना संबंधमां खुलासो करता गीतार्थ जणावे छे के-परमात्माना शासनरहित काळमां जे प्रत्येकबुद्ध थाय तेने शिष्यनो अभाव होय छे परन्तु जे परमात्माना शासनकाळमां प्रत्येकबुद्ध थाय छे तेने शिष्य करवानो निषेध नथी आ संबंधी नीचेनो मूळपाठ दर्पण करवो स्पष्ट छे "इह तित्थे अपरिमाणा पइन्नगा पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणओ, किं तु इह सुत्ते पत्तेयबुद्धपणीय पइन्नग भाणियव्व, कम्हा जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाण कीरइ, भणिय 'पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव'त्ति० चोयग आह-नणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य निरुज्झए ? आयरिओ आह-तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणओ तस्स सीसा हवन्तीति" अर्थात् "तीर्थमां परिमाण रहित-संख्या रहित पयन्नानी रचना थाय छे, कारण के पयन्नाना रचनारनी संख्या परिमाण रहित होय छे, परन्तु अहीं तो प्रत्येकबुद्धना ज रचेल पयन्नानी संख्या ज सूत्रकार कहे छे आ संबंधमां शंका थतां शिष्य पूछे छे के-'प्रत्येकबुद्धने तो शिष्यनो अभाव होय छे' आ शंकानु समाधान करतां आचार्यभगवंत कहे छे के-'महानुभाव ! तीर्थंकर भगवंतना शासनकाळमां जे प्रत्येकबुद्ध थाय तेने शिष्य करवानो निषेध नथी"

सदाचारी गच्छमां निवास करवानु फल-

आ प्रमाणे आवश्यकव्यतिरिक्त श्रुतनु स्वरूप जाणवुं अने साथोसाथ प्रकीर्णक संबंधी समजुती पण विचारी लेवी असदाचारी-भ्रष्ट गच्छमां रहेवाथी संसार-परिभ्रमण वधे तेम जणाव्यु हवे सदाचारी-सारा गच्छमां वास करवाथी जे फायदा-लाभ थाय ते संबंधी वर्णन त्रण गाथाद्वारा करे छे

जामद्धजामदिणपक्खं, मासं संवच्छरंपि वा ।
सम्मग्गपट्ठिए गच्छे, संवसमाणस्स गोअमा ! ॥ ३ ॥
लीलाअलसमाणस्स, निरुच्छाहस्स वीमणम् ।
पिक्खविक्खइ अन्नेसिं, महाणुभागाण साहूणम् ॥ ४ ॥
उज्जमं सव्वथामेसु, घोरवीरतवाइअं ।
लज्जं संकं अइक्कम्म, तस्स वीरिअं समुच्छले ॥ ५ ॥

[यामार्द्धं याम दिन पक्ष, मास संवत्सरमपि वा ।
मन्मार्गप्रस्थिते गच्छे, सवसमानस्य गौतम ! ॥ ३ ॥
लीलालसायमानस्य, निरुत्साहस्य विमनस्कस्य ।
पश्यतः अन्येषा, महानुभागानां साधूनाम् ॥ ४ ॥
उद्यम सर्वस्यामेषु, घोरवीरतपादिकम् ।
लज्जा शङ्कामतिक्रम्य, तस्य धीर्यं समुच्छलेत् ॥ ५ ॥]

गाथार्थ.—हे गौतम ! अधे प्रहर, एक प्रहर, दिवस, पक्ष, मास के वर्ष पर्यन्त सन्मार्गगामी-सदाचारी गच्छमा रहेनारा सुखशील-आळसु, निरुद्यमी, विमनस्क-शून्य चित्तवाळो साधु पण बीजा प्रौढप्रभावी साधुओने सर्व क्रियाओमा प्रयत्नशील, घोर तपस्वी, दुष्कर वैयावच्चादिक करणी करवामा तत्पर जोईने पोतानी लज्जा-शरम-संकोच अने शंका सर्वथा त्यजी दईने धर्मानुष्ठान करवामा उत्साहवंत बने छे, अर्थात् ' हु पण जिनोक्त क्रिया करु, जेथी दु ख-रूपी दावानळथी मुक्त थाउ ' एवी भावना तेने स्फुरे छे. ३–५

विवेचन—श्रीवीरपरमात्मा श्रीगौतमस्वामीने उद्देशीने कहे छे के-' हे गौतम ! जे साधु सदाचारी गच्छमा रहे छे तेनु आळसुपणु, निरुत्साहपणु अने मननु शैथिल्य दूर थई जाय छे प्रतिक्रमणमा ऊठवा-बेसवानी क्रियाने अंगे आळस आवती होय अगर तो पडिलेहणादि क्रियामा मन्दता आवती होय ते बीजा सदाचारी साधुना अवलंबनथी दूर थाय छे पण गामथी बीजे गाम विहार करवो, अध्ययन करवु विगेरे क्रियाथी निरुद्यमीपणु पण दूर थई जाय छे वळी दीक्षा लीधा पछी चारित्रपालनमा कठिनता नीहाळी मन डामाडोळ थाय, मनमा ' हवे शु करीशु ? ज्योतिष, यन्त्र, मन्त्र अने तथादि करी आजीविका चलावु ' विगेरे विचार करे छता पण तेनु मन दृढ थई जाय, कारण के सन्मार्गगामी गच्छमा रहेनारा साधुओनु यथा समये क्रियापूर्वकनु आचरण नीहाळे, ग्रामानुग्राम विहार, उपवास, छट्ठ, अट्ठम, मासखमण तथा मासखमणादि उग्र तपश्चर्या जुए, आ उपरांत पच्चखाणु, आयंबिल तथा निवि आदि तपश्चर्या वारवार नीहाळे, ज्ञानवृद्धना विनयादिक जुए, वैयावच्चादिक प्रवृत्ति जाणे, आहार-पाणी लावी दया, पग चापवा इत्यादि क्रिया नीहाळे, केवलीभाषित धर्ममा लेशमात्र पण अश्रद्धा न नीरखे, भूलचूकना मिच्छा दुक्कड (माफी) माग, आलोयण-प्रायश्चित्त ग्रहण करे इत्यादि विविध शुद्ध करणी जोईने सुखशील-आळसु साधु विचारे के-' आ पण मनुष्य

छे अने हु पण मानव छु तो शा माटे माराथी शुद्ध चारित्रपालन न थई शके ? ' आवी जातनी विचारणाथी ते उद्यमवंत बने अने मनमां आवेली नब ळाई दूर करवापूर्वक वीर्योल्लासपूर्वक संयमधर्मनुं सम्यक् प्रकारे आराधन करे

आ बाबतमां तर्क उठावता कोई प्रश्न करे के-घोर तपश्चर्या अगर तो उग्र क्रिया करनारा साधुओने जोई काचोपोचो साधु तो नाशी जाय अर्थात् व्रतभंग करे आ बाबतनु समाधान करता जणावे छे के—जे दु खगर्भित वैराग्यवासित आत्मा दीक्षा ग्रहण करे ते तो कदाच पतित थई जाय जे संसारनी असारता या तो अनित्यता नीहाळी नि स्पृही बनीने चारित्र अंगीकार करया पछी कुसंगी थई जाय, पासत्थादिकना पासमां पड्यो रहे तो ते पण सुखशीलियो बनीने पासत्थो बनी जाय अने तेनु निर्वेदपणु चाल्यु जाय, परंतु जो ते शुद्ध गच्छमां रहेता होय तो शुभ योग अने शुभ करणी जोईने तेमां रक्त बने अने शुद्ध चारित्र पाळवा पण उद्यमवंत थाय आ संबंधमां [1]श्रीज्ञातासूत्रना पांचमा अध्ययनमां आपेल शेलकाचार्यनु दृष्टान्त पूण प्रकाश पाडे छे

शेलकाचार्यनी कथा—

द्वारिका नगरीने विषे श्रीकृष्ण वासुदेव राज्य करता हता ते नगरीना ईशान खुणामां रैवतगिरि–रैवताचल (हालनु गिरनार तीर्थ) नामनो पर्वत छे ते पर्वत नैसर्गिक सौंदर्यथी अति रमणीय अने अनेक प्रकारना वृक्ष-लताओथी चित्ताकर्षक छे ते पर्वतनी नजीकमां ज नंदनवन नामनु उद्यान हतु, जे खरे खर इन्द्रना नंदनवनने पण भुलावे तेवु हतु ते द्वारिका नगरीने विषे थावच्च नामना गाथापति-गृहस्थ वसतो हतो ते अत्यंत धनिक अने नागरिक जनोने विषे प्रतिष्ठापात्र हतो तेमने थावच्चा नामनो रूपादि-गुणसंपन्न पुत्र हतो तेने श्रेष्ठीए एक ज दिवसमां रंभा सरखी रूपवती बत्रीश कन्याओ साथे परणाव्यो थावच्चाकुमार ते रामाओनी साथे भोगविलास भोगवतो अने स्वर्गना सुखोना अनुभव करतो दिवसो व्यतीत करी रह्या हतो, तेवामां श्रीनेमिनाथ भगवंत नंदन वनमां पोताना अढार हजार साधुओ अने चाळीश हजार साध्वीओना परिवार सहित पधार्या नंदनवनने विषे रहेला सुरप्रिय नामना यक्षचैत्यमां तेमणे वास कर्यो आ हकीकत वनपालके श्रीकृष्ण वासुदेवने जणावी एटले अत्यंत हर्ष

---

1 आ सूत्रमां त्रीजा आराना अंतभागथी पांचमा आरानी शरूआत सुधीनां एटले श्री महावीरस्वामीना जीवनकाल पर्यन्त थयेल जैनधर्मनी महान् विभूतिओ, आदर्श सतीओ अने प्रभाविक पुरुषोनुं वर्णन आपवामां आव्युं छे अध्ययन १९, श्लोक ५५०० अने श्रीअभयदेव सूरिकृत टीका ४२५२ श्लोकप्रमाण ॥

पामी, वनपालकने वधामणी आपी अतीव आडंबरपूर्वक श्रीनेमिनाथ भगवतने वांदवा नीकळ्या थावच्चा पुत्रने आ समाचार मळता ते पण पोताने योग्य आडंबरपूर्वक प्रभुने वांदवा गयो अने वांदीने योग्य स्थाने बेठो पछी श्रीनेमिनाथ भगवंते भव्य जीवोनो उद्धार करनारी रोचक देशना आपता कह्यु के–" हे भव्य प्राणीओ ! आ संसार असार छे तेने विषे जे सुखोपभोग जणाय छे ते मृगजळनी माफक वृथा छे माता, पिता, भाई, बहेन, स्त्री अने पुत्रादि स्वजन सबंधी सर्वे स्वार्थना ज सगा छे स्वार्थ पूर्ण थता तेओ शत्रुस्वरूप बनी जाय छे वळी विषयसुख तो विष-झेर सदृश छे विष भक्षणथी तो प्राणीना एक ज भव बगडे छे पण विषयसुख तो भवपरंपरा वधारी दे छे, माटे तेनो त्याग करी *चार महाव्रतरूप धर्मनु आचरण करो भगवतनी आज्ञा प्रमाणे जे तेनु यथार्थ पालन करशे ते शिवलक्ष्मीना सुखने प्राप्त करशे जे विषयसुखमा राचीमाची रहेशे ते चोराशी लाख जीवायोनिमा परिभ्रमण करवापूर्वक जन्म-मरणादिक अनेक प्रकारना कष्टो सहन करशे अनंत भवो पछी महापुण्यना प्रभावथी आ दुर्लभ मानवदेह मळ्यो छे तो प्रमादनो परित्याग करीने तेने सार्थक करो त्या " आ प्रमाणे देशना सांभळी पर्षदा तो स्वस्थाने गई, परन्तु लघुकर्मी थावच्चा कुमारनो आत्मा वैराग्यवासनाथी आर्द्र थयो तेने परमात्मानी अमृत-वाणीमा परम सत्यनु दर्शन थयु अने ते ज समये भागवती दीक्षा अंगीकार करवानो दृढ निश्चय करी भगवतने पोतानी इच्छा जणावी भगवंते जणाव्यु के–" असार ससारमाथी सार ग्रहण करवारूप तमारो विचार प्रशसापात्र छे उत्तम कार्यमा कदापि ढील न करवी "

परमात्मानु प्रेरक कथन सांभळी थावच्चाकुमार स्वमंदिरे आव्या अने माताने पोतानी दीक्षाभिलाषा दर्शावी थावच्चाकुमारनी वात सांभळता ज माता धरणी पर ढळी पडी अने मूर्छित थई गई तरतज वायु अने शीतळ जळनो उपचार करता ते अल्प समय सचेत थई त्यारे रुदन करती करती पोताना पुत्रने उद्देशीने कहेवा लागी के–'हे पुत्र ! मारे तो तु एकना एक ज लाडकवायो पुत्र छे वळी हमणा ज तने अति रमणीय बत्रीश कन्याओ साथे परणाव्यो छे ते स्त्रीओ तारु स्मरण करीने मृत्युने वश थशे, माटे तारे दीक्षा लेवानी वात ज न उच्चारवी आपणा गृहमा विपुल धन छे, कमावानी कई पण चिंता करवा जेवु नथी माटे आ देवांगना सदृश रमणीओ साथे यथेच्छित भोग विलास भोगव सतानादिक थया पछी अने आ मळेल भोगविलासनी सामग्रीनो

* श्रीऋषभदेव अने महावीरस्वामी सिवायना बावीश तीर्थंकरने समये चार महाव्रत होय छे, ज्यारे पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरने समये पाच महाव्रत होय छे पांच महाव्रतना नाम आ प्रमाणे–१ प्राणातिपातविरमण, २ मृषावादविरमण, ३ अदत्तादानविरमण, ४ मैथुन विरमण अने ५ परिग्रह सर्वथा त्यागरूप

उपयोग कर्या पछी तुं सुखपूर्वक संयम स्वीकारजे. हुं पण तेटला समयमां स्वर्गवासी थई जईश, तने कांई निषेध नहीं करे. माटे पछी श्रीनेमिनाथ भगवंत पासे प्रव्रज्या ग्रहण करजे. दीक्षा लेवानी वात करवी अने ते पाळवी ते बन्ने वच्चे महद् अंतर छे. तारी वय नानी छे. चारित्र खांडाना धार जेवुं छे अने तेमां पण केशनुं लोचन आदि विविध कायक्लेश उपजावनारी छे, माटे हे पुत्र! तुं दीक्षाना विचार मुलतवी राखो मनुष्यजीवनना भोगविलास भोगववा रूप लहावो ग्रहण कर" माताना आवां स्नेहाळ वचन सांभळी थावच्चाकुमारे कह्युं के-'हे माता! तमे जे सुख भोगववानुं कहो छो ते बधुं असार ने अनित्य छे. ते सुखनुं फळ नरकप्राप्ति छे. वळी आयुष्यनो विश्वास नथी. पछी कोई जाणी शकतुं नथी के कोण पहेला अने कोण पछी मृत्यु पामवाना छे. धन तो चंचळ होवाथी कोई पण स्थळे स्थिर रहेतुं नथी. ज्यां पुण्यरूपी सामग्री पूरी थई के धन पण फरीने चाल्युं जाय छे. माटे हे माता! मारा प्रत्येनी ममता अने मोहनो त्याग करी मने आत्मप्राप्तिना निमित्तरूप संयम स्वीकारवा आज्ञा आपो."

पुत्रना आवा प्रकारना सदाग्रह जाणी माताए विचार्युं के-'पुत्र खरेखर संयमरंगथी वासित थयो छे माटे तेनो भव्य दीक्षा महोत्सवनी तैयारी करुं.' एम विचारीने कृष्ण वासुदेव पासे गई अने सर्व हकीकत जणावी कह्युं के-'हे महाराज! पुत्रना आ महोत्सव प्रसंग तमे मने छत्र, चामरादि उपरांत राज्य सामग्रीथी सहायता करो." कृष्णे कह्युं के 'हे सार्थवाहिनी! तमे लेशमात्र चिंता न करो. तमारा पुत्रनो दीक्षा महोत्सव हुं करीश.' आ प्रमाणे कहीने कृष्ण वासुदेव पोतानी चतुरंगिणी सेना साथे थावच्चा पुत्रना आवासे आव्या. कृष्णने थावच्चा पुत्रना संयमरंगनी परीक्षा करवानुं मन थयुं एटले आवीने तेमणे कह्युं के-"हे कुमार! तमे आवी कोमळ वयमां शा माटे दुष्कर संयम स्वीकारो छो! दीक्षापालन ए तो मीणना दांतोथी लोढाना चणा चाववा जेवुं दुष्कर छे, तमे संसार संबंधी सुख भोगवो. अमे तमारी रक्षा करशुं" थावच्चा-कुमारनो संयमनो रंग कंई पतंगना रंग जेवो अस्थायी के विनश्वर न हतो के जेथी कृष्णना प्रलोभनथी ते चलित थाय. ते रंग तो तेमने मजीठना रंगनी माफक हाडोहाड व्यापी गयो हतो. एटले कृष्णने जवाब आपतां तेणे जणाव्युं के 'हे महाराज! तमो कहो ते ठीक छे पण मारुं मृत्यु आवशे त्यारे तमे मारुं रक्षण करवा समर्थ हो तो हुं तमे कहो तेम करवा तैयार छुं.' कृष्णे जवाब आप्यो के-'मरणसमये कोई पण कोईनुं रक्षण करी शकतुं नथी. तो हुं तारुं रक्षण केम करी शकुं? चक्रवर्ती अने तीर्थंकर जेवाने पण काळने आधीन बनवुं पडे छे तो बीजानी वात शा माटे करवी जोईए?" त्यारे थावच्चा कुमारे कह्युं-"हे राजन्! आप शा माटे एम कहो छो के 'हुं तारुं रक्षण

करीश ! हु जन्म मरणरूपी भयथी भयभीत थयो छु अने तेमाथी मुक्त थवा आ प्रव्रज्या अगीकार करु छु " तेनु आ प्रमाणेनु दृढ मन्तव्य जाणी कृष्ण वासुदेव अत्यत हर्षित थया अने पोताना सेवकने बोलावी आदेश आप्यो के–"आ द्वारिका नगरीमा जाहेर उद्घोषणा करावो के–'जे कोईने थावच्चाकुमारनी साथे दीक्षा लेवी हशे तेनो सर्व बदोबस्त कृष्ण महाराजा स्वय करशे अने कोईना कुटुंबने आधार नहो होय तो तेनु राजा पोते पालन करशे ' " आ उद्घोषणाने परिणामे एक हजार पुरुषो थावच्चानी साथे दीक्षा लेवा उत्सुक थया पोतानी ज्ञातिने भोजन आपी, स्नान करी, सुदर वस्त्र तथा आभूषण पहेरी, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामा बेसी सर्वे थावच्चा पुत्रना आवासे आव्या ते समये कृष्ण वासुदेव आठ जातिना कळशद्वारा थावच्चा पुत्रनो अभिषेक करी, स्वच्छ वस्त्रो अने उत्तम आभूषणो पहेराव्या बाद हजार पुरुषो उपाडे तेवी शामनाथ शिबिकामा बिराजमान करी वाजिंत्रना नादपूर्वक श्रीनेमिनाथ परमात्मा ज्या बिराज्या हता त्या आव्या पालखीमाथी नीचे ऊतर्या त्यारे कृष्ण वासुदेवे तेमने आगळ कर्या अने पोते तेनी पाछळ चाल्या भगवान समीप आवीने कृष्णे कह्यु के–"हे भगवन् ! आ थावच्चा सार्थवाहनो थावच्चा नामनो पुत्र मने अति वल्लभ छे ते जन्ममरणरूपी भयवाळा आ ससारसागरथी उद्वेग पाम्यो छे अने आपनी पासे मोक्षना परवानारूप प्रव्रज्या अगीकार करवा इच्छे छे, माटे हे स्वामिन् ! आप तेमनी विज्ञप्तिनो स्वीकार करो " पछी परमात्माए कह्यु के–" जहा सुहम् " अर्थात् सुख उपजे तेम करो प्रभुनी आज्ञा थता थावच्चाकुमारे पोते पहेरेला आभूषणो एक पछी एक उतारवा शरू कर्या त्यारे ते सर्वे तेनी माताए पोताना वस्त्रना पालवमा अश्रु-झरती आखो सहित ग्रहण कर्या अने छेवटनी शिक्षारूप बे वचनो बोलता कह्यु के–" हे प्रिय पुत्र ! हवे तु लेश पण प्रमाद करीश नहि फरी वार बीजी माता न करवी पडे तेवी रीते चारित्र पालन करजे जेम सिहनु शिशु घणा घेटाओथी पण डरतु नथी तेम तु पुष्कळ परिसहोथी पराभव पामीश नहि " आ प्रमाणे उपदेश-वचन सामळ्या बाद थावच्चापुत्रे हजार पुरुषो साथे पचमुष्टी लोच करी दीक्षा ग्रहण करी बाद परमात्माना मुखथी पाच [1]समिति तथा [2]त्रण गुप्तिनु स्वरूप जाणीने ते प्रमाणे आचरण करता अने अन्य स्थविरो पासे शास्त्राध्ययन करता समय व्यतीत करवा लाग्या उपवास, छट्ठ, अट्ठमादिक तपश्चर्याओ द्वारा कर्मनी

---

१ ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभडमत्तनिक्षेपणासमिति अने पारिष्ठापनिकासमिति २ मनगुप्ति, वचनगुप्ति ने कायगुप्ति

निर्जरा करवा लाग्या आ प्रमाणे अध्ययन अने संयमधर्मनी परिनिष्ठ ध्यामना करतां अनुक्रमे तेओ चौदपूर्वना पारगामी थया

थावच्चापुत्रनी शक्ति हवे तो घणी ज वृद्धि पामी श्रीनेमिनाथ भगवंतने पण तेमनी शक्ति माटे मान उत्पन्न थयुं एकदा थावच्चापुत्रे भगवंतथी जुदा विचरवानी वात करी अन्य देशमां धर्मप्रचार करवा जवा माटे आज्ञा मागी भगवंतनी आज्ञा मळतां तेओ उग्रविहार करतां करतां शैलकपुरे आवी पहोंच्या ते स्थळे सुभूमि भाग नामना उद्यानमां वास कर्यो पछी ते नगरना शैलक नामनो राजा पोताना विचक्षण पंथक आदि पांचसो प्रधानो साथे तेमने वंदन करवा आव्या नगरजनो पण वंदनार्थ आव्या अने मोटी परिषद् थई थावच्चा अणगारे उपदेश आपी संसारनुं स्वरूप यथार्थ समजाव्युं साथोसाथ जीवाजीवादि नव तत्त्वोनुं स्वरूप समजावी धर्मना अबाधित नियमनुं पण दिग्दर्शन कराव्युं आवी सुंदर देशना सांभळी राजा तथा प्रजाजनो पण अत्यंत हर्षित थया राजा बोल्या थयुं के–' उग्रकुळना, भोगकुळना, राजन्यकुळना तेम ज सेनापति अने सार्थवाह प्रमुख घणा दीक्षा अंगीकार करीने विचरे छे, परन्तु मारी एवी शक्ति नथी माटे हे गुरुदेव! मने सम्यक्त्वमूळ श्रावकनां व्रत आपी श्रमणोपासक बनावो " थावच्चा मुनिए तेने पूरती समजण आपी श्रावकधर्मनां बार व्रतो उच्चराव्यां अने तेनी साथोसाथ राजाना पंथक प्रमुख पांचसो मंत्रीओ पण श्रमणोपासक बन्या मात्र नवतत्त्वना विषयना ज्ञाता बन्या शैलकराजा स्व स्थाने गया अने थावच्चा अणगार पण पृथ्वी पर विहार करवा लाग्या

आ बाजु सौगंधिका नामनी नगरीमां सुदर्शन नामना महाश्रेष्ठी वसता हतो ते नगरीमां एकदा चार वेदोना जाण, महामिथ्यात्वी अने तेना शास्त्रोनो पारगामी, सांख्य मतवादी शुक नामनो परिव्राजक पोताना हजार शिष्यो साथे आवी पहोंच्या ते पांच नियम युक्त शौचधर्मनी प्ररूपणा करता हता, तेमज कषायी वस्त्र धारण करता हता परिव्राजकना आश्रममां तेने उतरेल जाणीने नगरीना लोको अने सुदर्शन शेठ पण तेमने वांदवा गया ते समये उपदेश आपतां तेणे सुदर्शन शेठने उद्देशीने कह्युं के–' हे श्रेष्ठी! अमारा मूळ धर्म शौच छे ते बे प्रकारे छे–(१) द्रव्यशौच अने (२) भावशौच द्रव्यशौच एटले पाणी तथा माटीथी अशुचि होय ते दूर करवी अने भावशौच एटले तृण अने मंत्रादिकथी कोई पण मलमूत्रादिकनी अशुचि थई होय ते दूर करवी आ प्रमाणे अशुचि दूर करवाथी जीव विघ्न रहित स्वर्ग प्राप्त करे छे " आ प्रमाणे शुक परिव्राजकनो उपदेश सांभळी सुदर्शन शेठ अत्यंत प्रमोद पाम्या अने परिव्राजकनो धर्म स्वीकार्यो केटलाक समय बाद शुक परिव्राजक अन्य स्थळे गया अने थावच्चा अणगार विचरतां विचरतां हजार मुनिओ साथे सौगंधिका नगरीए आव्या तेने नीलाशोक नामना उद्या

भमा उतरेला जाणीने पौरलोको साथे सुदर्शन श्रेष्ठी पण वंदनार्थे आयो प्रण प्रदक्षिणा आपी, मुनिवरने वांदी बेठो अने देशना सांभळया बाद प्रश्न कर्या के-"हे भगवन् ! तमारो मूळ धर्म शु छे ?" थावच्चा अणगारे जवाब आप्यो के-"हे महानुभाव ! अमारो मूळ धर्म विनय छे तेना बे प्रकार छे-(१) गृहस्थना धर्म पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत-ए प्रमाणे बार व्रतरूप तेमज अग्यार उपासकपडिमारूप छे अने (२) साधुनो पांच महाव्रतरूप, अढार पापस्थानकना परित्यागरूप तेमज बार पडिमारूप विनय धर्म छे आ बने प्रकारनो धर्म सेवे ते आठ* कर्मनी एकसो अठ्ठावन प्रकृतिनो विनाश करी शिवसुखनी प्राप्ति करे " आ प्रमाणे कहीने थावच्चा अणगारे सुदर्शन शेठने प्रश्न कर्यो के " हे श्रेष्ठी ! तमारो मूळ धर्म शु छे ? " त्यारे श्रेष्ठीए कह्यु के-"मारो मूळ धर्म शौच छे " पछी थावच्चा अणगारे कह्यु के-"हे देवानुप्रिय ! कोई माणस लोहीथी खरडायेला वस्त्रने पुन लोहीमा झबोळी धोवे तो ते शु शुद्ध थाय ? " सुदर्शने कह्यु-" ना " पछी थावच्चा मुनिए जणाव्यु के-"अढार पापस्थानकद्वारा थयेल कर्माने काचा पाणी प्रमुखना जीवोनी हिंसा करीने दूर करवाने इच्छे ते कमी शुद्ध थाय ? लोहीथी खरडायेला वस्त्रने जेम स्वच्छ जल अथवा तो क्षारादिकथी धोवामा आवे तो ते शुद्ध बने तेम अढार पापस्थानकद्वारे उपार्जल कर्मनो क्षय करवा माटे अहिंसादिक क्रिया अने तपश्चर्यादि करवा जोईए पाणी तो बहारना मळने पण पूरेपूरु दूर करी शकतु नथी तो आत्माने लागेला कर्मनो नाश कयी रीते करी शके ? " आ प्रमाणे थावच्चा अणगारनो सचोट उपदेश सांभळता सुदर्शनने पोतानी भूलनु भान थयु पोते खोटे मार्गे प्रयाण कर्यु छे अने तेथी तो साध्यनी उलटी ज दिशा ग्रहण करी छे तेवो तेने ख्याल आव्यो पूर्व दिशामा गमन करवु होय अने पश्चिम मा चालवा माटे तो ते कदि पण इष्ट स्थळे पहोंची शके नहीं तेम विचारीने सुदर्शन श्रेष्ठीए विपरीत मार्गरूप शुक परिव्राजकना पक्षनो त्याग कर्यो अने थावच्चा मुनि पासे केवलीभाषित जैनधर्मनो स्वीकार कर्यो समकितना मूळ रूप श्रावक धर्म ग्रहण कर्यो अने जीवाजीवादि नव तत्वनु स्वरूप जाण्यु

आ हकीकत शुक परिव्राजकना कर्णे अथडाता ते स्वय सोगंधिका नगरीए आव्यो अने सुदर्शन श्रेष्ठीने आवासे गयो शुद्ध सम्यक्त्वधारी सुदर्शन शेठे तेनो आदर सत्कार पण न कर्या तेम तेने वंदना पण न करी त्यारे शुक परिव्राजके तेने कह्यु के-" हे श्रेष्ठिन् ! पहेला तो तु अमारी अत्यत भक्तिभावपूर्वक सेवा-शुश्रूषा करतो अने हवे मारामा आ परिवर्तन केम थई गयु ? शुं तने मारो धर्म रुच्यो नहीं ? " त्यारे शेठे कह्यु के-" हे परिव्राजक ! श्रीनेमि

---

* ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, नाम, गोत्र, आयु अने अंतराय-ए प्रमाणे आठ प्रकारना कर्मो छे तेना क्षयथी प्राणी सिद्धिगति प्राप्त करे छे

नाथ भगवतना शिष्य थावच्चा अणगारे मने विनयमूळ धर्मनु सत्य स्वरूप समजाव्युं छे ते हालमा नीलाशोक उद्यानमा विराजमान छे तेमणे मने शुद्ध निष्कलंक धर्मनु भान करावता में तमारो मिथ्या मार्ग त्यजी दीधो छे " आ प्रमाणे सांभळी शुक परिव्राजकने पोताना पांडित्यनुं अभिमान प्रगट्यु अने शेठने कह्यु के-" चालो, हु तमारा गुरु साथे वाद करवा मागु छु जो हु हारी जइश तो तेमने वदन करीश अने नहि तो तेनो पराजय थशे " आ प्रमाणे बोली शेठ साथे ते थावच्चा अणगार पासे आव्यो अने प्रश्न पूछवा लाग्यो के-" हे भगवन् ! तमारे यात्रा छे ? जवणिज्ज छे ? अव्याबाध छे ? फासु विहार छे ?" थावच्चा मुनिए कह्यु के-" सर्वे छे " शुके पूछ्युं-" केवी रीते ?" मुनिए जवाब आप्यो के-" तप, नियम करवो, छकायनी जयणा-रक्षा करवी ते अमारी यात्रा छे पांच इन्द्रिय अने मन अमारे वशवर्ती छे ते अमारु जवणिज्ज छे अमारा शरीरमा कोई पण प्रकारना व्याधिनी पीडा नथी ते अव्याबाध अने स्त्री, पशु अने पडक (नपुंसक) रहित आरामादि-उद्यानादिक स्थानोमा दोष रहित पीठ-फलकादिक लईने विचरवु ते फासु विहार छे " बाद शुक परिव्राजके बीजो प्रश्न करता पूछ्यु के-" हे मुनि ! तमे सरसव खाओ छो के नहि ?" मुनि बोल्या-" खाईए छीए, अने नथी पण खाता " आवो सदिग्ध जवाब सांभळी शुकने कइक आश्चर्य उत्पन्न थयो तेणे कह्यु-" एम केम बने ?" मुनिराजे जवाब आपता जणाव्युं के-" सरसव बे प्रकारना छे-(१) समान वयना ते मित्र सरसव अने (२) धान सरसव मित्र सरसव पंचेन्द्रिय मनुष्यादि माटे भक्ष्य नथी वळी धान सरसवना पण बे प्रकार छे-(१) शस्त्रादिकथी छेदन-भेदन थयेला भक्ष्य अने (२) सचित्त माटे अभक्ष्य छे अने शस्त्रपरिणत छे तेना पण बे प्रकार छे-(१) एक बेंतालीश दोषरहित अने (२) बेंतालीश दोषसहित दोषसहित छे ते माटे अभक्ष्य छे अने जे दोषरहित भक्ष्य छे तेना पण बे प्रकार छे-(१) एक मागेला अने (२) नहीं मागेला आ मागेलाना पण बे भेद छे-(१) एक मळेला अने (२) नहीं मळेला नहीं मळेला माटे अभक्ष्य छे अने जे मळ्या ते भक्ष्य छे माटे में कह्यु छे के-सरसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि-अर्थात् भक्षण करवा लायक अने नहीं भक्षण करवा लायक बन्ने प्रकार छे " आ प्रमाणे सांभळी शुके पुन प्रश्न कर्यो के-" कुलत्थ तमारे भक्ष्य छे के नहि ?" मुनि बोल्या-" खावा ने नही खावा लायक बन्ने प्रकारे छे " शुके साश्चर्य पूछ्यु-" एम केम ?" मुनिवरे जवाब आप्यो के-" कुलत्थ बे प्रकारना छे-(१) स्त्रीकुलत्थ अने (२) धानकुलत्थ तेमा पण स्त्रीकुलत्थ त्रण प्रकारना छे (१) कुलमाता, (२) कुलवधू अने (३) कुलपुत्री आ अमारे अभक्ष्य छे जे धानकुलत्थ छे तेना सरसवनी माफक उपर जणाव्या प्रमाणे भेद जाणी लेवा उपरात जे मळ्या ते अमारे कल्पनीय छे एटले ए कह्यु के अभक्ष्य अने भक्ष्य बन्ने प्रकार छे " आटला

प्रश्नोत्तरथी शुकने संतोष न थयो तेथी तेणे वळी पण पृच्छा करी के-" हे स्थविर ! मासा भक्ष्य छे के अभक्ष्य ?" अणगारे जवाब आप्यो के-" खाया लायक छे अने नथी पण " " एम केम ?" एम पुन पूछता मुनिपुंगवे प्रत्युत्तर आप्यो के-" मासा त्रण प्रकारना छे-(१) कालमासा, (२) अर्थ मासा अने (३) धान्यमासा कालमासा तो श्रावण आदि बार मास छे ते मारे अभक्ष्य छे अर्थमासा बे प्रकारना छे (१) सुवर्ण तोलवाना अने (२) रूपु तोलवाना-आ बने प्रकार अमारे अभक्ष्य छे धान्यमासा फासु-एषणीय मळे ते मारे भक्ष्य छे " आ प्रमाणे सर्व प्रश्नोनो युक्तिसगत उत्तर आपवाथी शुक परिव्राजक विचारमा पडी गयो ने चिंतववा लाग्यो के ' मुनि एकपक्षी उत्तर आपशे एटले तेमने █ कीती लईश तेथी मारी धारणा धूळमा मळी छे तेओ नयना ज्ञाता छे माटे बोलवामां तो पकडाशे नहि माटे बीजी युक्ति कर तेमणे वैराग्यथी चारित्र-ग्रहण कर्यु छे माटे तेओ आत्माने एकला मानता हशे अने तेना अपायमा तेओ भूलथाप खाई जशे माटे तेवो ज प्रश्न करु ' एम विचारी तेणे तमने पूछ्यु के-" हे भगवन् ! तम एक छो के बे ? अनेक छो ? अक्षय छो ? अव्यय छो ? अवस्थित छो ? पूर्व जेवा हता, अत्यारे जेवा छो अने भविष्यमा थशो तेवा छो ? ' शुक परिव्राजकना आवा प्रश्नथी थावच्चा अणगारने तेनी युक्ति अने मूर्खाई बने पर मनमा सहेज हास्य उत्पन्न थयु पशुओ सूर्यनो पराभव करवा इच्छे ते केम बनी शके ? परन्तु तेमणे गभीर थईने जवाब आप्यो के-" हे महानुभाव ! हु एक छु बे पण छु, इत्यादि तें जे प्रश्नो पूछ्या ते सब छु तेनु कारण सांभळ-द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए जीव द्रव्य एकलु छे तेथी हु एक छु ज्ञान अने दर्शन ए बे जीवद्रव्यथी जुदा नथी तेथी हु बे पण छु जीवद्रव्य असख्यातप्रदेशी छे तेथी हु अनेक छु कोई पण प्रदेशनो क्षय थतो नथी तेथी हु अक्षय छु कोई प्रदेशनो विनाश नथी माटे अविनाशी छुं, जीव कोई पण दिवसे नूतन-नवो थतो नथी तेथी शाश्वत-नित्य छुं भूतकाळमा अनेक उपयोग कर्या छे, वर्तमानमा करी रह्यो छु अने भविष्यमा थशे तेनी अपेक्षाए तेवो पण छु " आ प्रमाणे थावच्चा अणगारना युक्तियुक्त अने अकाट्य प्रमाणो सांभळी शुक परिव्राजक तो विचारमा ज गरकाव बनी गयो तर्ण वदी आवो उपदेश के ज्ञान जाण्यु ज न हतु तेमने पोताना अत्यार सुधीना मिथ्या मार्ग माटे खेद उपज्यो अने मुनिवरने विज्ञप्ति करी के-" हे भग वन् ! मने केवलीभाषित धर्म समजावो के जेथी मारु अज्ञानाधकार नाश पामे " थावच्चा अणगारे तने प्रतिबोध पामेलो जाणी सर्वज्ञप्ररूपित सिद्धांतो अने तेनु स्वरूप सक्षिप्तमा जणाव्यु जेथी शुक परिव्राजकने जैनी दीक्षानो शुद्ध मार्ग ग्रहण करवानी इच्छा थई तेणे तरत ज पोतानी जिज्ञासा मुनिवरने जणावी मुनिश्रीए कह्यु के-" जेवी तमारी इच्छा शुभ कार्यमा विलब न करशो " त्यारबाद पोताना गरु जेवा रगवाळा वस्त्रनो त्याग करी, वस्त्रनो

लोच करी पोताना हजार शिष्यो साथे दीक्षा ग्रहण करी शुक परिव्राजक शास्त्राभ्यास करता चौद पूर्वना ज्ञाता थया एटले थावच्चा अणगारे तेमने तेमनी साथे दीक्षा लीधेला हजार शिष्योना आचार्य तरीके स्थाप्या बाद पोतानो अंतिम समय नजीक जाणी थावच्चा अणगार श्रीसिद्धाचळ पर्वते आव्या अने त्यां एक मासनु अणशण कर्युं अणसणमां ज केवळज्ञान प्राप्त करी तेओ छेवटे मोक्षलक्ष्मीना भोक्ता थया

आ बाजु शुक मुनि विचरता विचरता शेलगपुरना सुभूमिभाग उद्यानमां रह्या तेवामां शेलक राजा अने नगरना लोको तेमने वंदनार्थ आव्या शुक मुनिनी वैराग्यवाहिनी देशना सांभळी श्रावकधर्मी बनेल शेलक राजा विशेष वैराग्यवंत थयो अने तेणे शुक मुनिने कह्यु के-" मने संसार प्रत्ये उद्वेग उपज्यो छे तेथी मने दीक्षा लेवानी भावना उद्भवी छे " मुनिराजे कह्यु-" सारा कार्यमां विलंब न करवो " त्यारे शेलक राजाए कह्यु के-' मारे मारा पांचसो प्रधानोने पूछवु जोईए माटे तेनी रजा लई आवु त्यां सुधी आप स्थिरता करो " आ प्रमाणे कही राजमंदिरे आवी तात्कालिक सर्व प्रधानोने बोलावी कह्यु के-" हे प्रधानो ! मने शुकाचार्यनो उपदेश रुच्यो छे अने संसारनी विषम परिस्थितिनु मने खरेखरु भान थयु छे तेथी हु चारित्र ग्रहण करवा इच्छु छु तमारी शी इच्छा छे ते कहो " त्यारे पंथक प्रमुख प्रधानोए कह्यु के-' हे महाराज ! अमे पण संसारथी भय पाम्या छीए पहेला पण तमे ज अमारा आलंबनरूप हता तो हवे पण तमे ज आधारभूत थाओ तमे चारित्र ग्रहण करशो तो साथोसाथ अमे पण संयम धर्म स्वीकारशु ' प्रधानोनो हकीकत सांभळी राजाए फरमाव्यु के-' जेओ संसारथी भयभीत थया हो तेओ पोतपोताना पुत्रोने कुटुंबनो भार सोंपी, शिबिकामां बेसी मारी पासे आवो " आ प्रमाणे सूचन कर्या बाद बधा प्रधानो आव्या एटले राजाए पण पोताना मंडुक नामना पुत्रने राज्यसिंहासने बेसारीने, तेनी आज्ञा लईने महा महोत्सवपूर्वक शुकाचार्य पासे पांचसो प्रधानो सहित प्रव्रज्या लीधी साधुपणानो आचार पाळता सामायिकथी प्रारंभीने क्रमश तेओ अग्यार अंगना ज्ञाता थया तेमने शक्तिशाळी अने गच्छ संभाळवाने लायक जाणी शुकाचार्ये शेलक राजाने पण आचार्यपदवी आपी शेलक राजर्षि बना या अने तेमने पांचसो साधुओनो परिवार सोंपी अलग विचरवानी आज्ञा आपी शुकाचार्य पोतानो अंतिम समय नजीक जाणी श्रीशत्रुंजय तीर्थे आ या अने अनुक्रमे केवळी थई शिवसुखने पाम्या

आ बाजु शेलक राजर्षि पण अत्यंत कठिन तपश्चर्या करवा लाग्या अने पारणे पण लुख्खो सुको आहार करवा लाग्या आम करवाथी परिणाम ए आव्यु के-पूर्व राज्य दशामां सुखपूर्वक रहेला अने मिष्ट तेमज रसवाळो आहार

करेलो तेने बदले आवो रस-कस विनाना आहार करवाथी शरीरमां व्याधि उत्पन्न थया दाहज्वर तथा पीतज्वर थई गया अने तेना महावेदना थवा लागी आवी असह्य वदना सहन करता करता पण शेलक राजर्षि पृथ्वीपीठ पर विचरवा लाग्या व्याधिने कारणे तेमनु शरीर दिवस दिवसे दुर्बळ बनवा लाग्यु आ प्रमाणे विचरता विचरता तेओ शेलगपुर आवी पहोंच्या अने सुभूमिभाग उद्यानमां आवी वास कर्यो पोरलोकोनी साथे मंडुक राजा पण तेमने वादवा आव्या ते समय शेलक राजर्षिना अत्यत दुर्बल देहने व्याधिग्रस्त जोइने ते विचारमां पडी गया तेणे तेमने विज्ञप्ति करी के-' हे भगवंत ! आपनु शरीर व्याधिग्रस्त थयु छे आप जाणो छो तेनी उपेक्षा करी रह्या छो पण शरीर धर्मायतन छे एटले तेनी पण मावजत (हिफाजत) तो करवी पडे माटे आप मारी यानशाळामां पधारो हु वैद्योद्वारा आपनी चिकित्सा करावी निर्दोष ने पथ्य औषधवडे आपने निरोगी बनावु " आ प्रमाणे विनति करी मंडुक राजा स्वस्थाने गया बाद तेना आग्रहने वश थई शेलक राजर्षि पण बीजे दिवसे सूर्योदय थया बाद, पोताना पथक प्रमुख पांचसो शिष्यो साथे यानशाळामां गया अने प्रासुक पीठ, फलकादि महोपकरण लईने रहेवा लाग्या मंडुक राजाए विचक्षण वैद्योने बोलावी कह्यु के-"शेलक राजर्षिनी चिकित्सा करी, तेमनु दोष रहित औषध करो " वैद्योए राजर्षिना व्याधिनु निदान करी कह्यु के-' जो तमो रस-कसवाळा आहारनी साथे मदिरापान करो तो ज तमारो व्याधि विनाश पामे ' राजर्षिए वैद्योना वचन मुजब व्याधिना उपशमनार्थे आहार साथे ते लेवा माड्यु आ प्रमाणेना सुरापानथी तेमनो व्याधि नाश पाम्यो अने शरीरे पण पुष्ट थया, परंतु आ उपचारनु विपरीत परिणाम ए आव्यु के शेलक राजर्षि आ पौष्टिक आहार अने सुरापानमां आसक्त बनी गया कर्मयोगथी धीमे धीमे तेमनु अतिशय रसलोलुपपणु जागृत थयु हवे तेनाथी ते छोडातु नथी जे रसनेंद्रिय अत्यार सुधी कानूमां राखी हती ते हवे लगाम विनाना अश्वनी माफक स्वतंत्र बनी गई धीमे धीमे शेलक राजर्षि संयम-पालनथी पण च्युत थवा लाग्या पासस्थापणाना अंश आववा लाग्या प्रमाद पण तेनामां प्रवेश करवा लाग्यो पीठ, फलक, शय्या-संथारा समय परिपूर्ण थये पाछा आपवा जोईए छता तेम न करता ते भोगववा लाग्या हवे तो मंडुक राजाना परवानगी विना तेओ विहार करवाने पण असमर्थ थया त्यारे पथक सिवायना बाकीना साधुओ एकठा थया अने परस्पर विचारवा लाग्या के-" शेलक राजर्षिए राज्य त्यजी दीक्षा लीधी हती परंतु कर्मयोगे पूर्ववत् पौष्टिक भोजन मळता तेओ तेमां गृद्ध बनी गया छे विहारनी तो वात ज करता नथी अने संयम-पालनमां दूषण लागे तेवु आचरण करी रह्या छे माटे आपणे तेवो प्रमाद करवो उचित नथी कारण के करोडो रत्न आपता पण मनुष्य जीवननी पळ पुन प्राप्त थाय तेम नथी तो तेने

प्रमादरूपी धूळ मात्रथी शा माटे व्यर्थ गुमावशो? आपण सर्वेए प्रात काळे शेलक राजर्षिनी आज्ञा लई अहींथी विहार करवो, पंथक मुनिने तेमनी वैया वच्च करवा मूकी जवा अने आपणी पासे जेना जेना पीठ, फलकादि छे ते तेमने पाछा सोंपी देवा " आ प्रमाणे निर्णय करी, सर्व हकीकत शेलक राज र्षिने जणावी, पंथक मुनिने तेमनी पासे राखी तेओ सर्व भव्यजनोने प्रतिबोधार्थे अन्य देशमां विहार करी गया

पंथकमुनिने पूर्ण विश्वास हतो के शेलक राजर्षिने वहेलुं मोडुं पण आत्मभान थशे अने शुद्ध मार्गे आवशे पंथक मुनि शेलक राजर्षिनी सारी रीते वैयावच्च करवा लाग्या तेमने आहार लावी आपवो, तेमनुं मात्रु परठवी देवुं, संथारो करी आपवो इत्यादि वैयावच्च शुद्ध मनथी करवा लाग्या आहार करीने जेम सिंह पोतानी गुफामां पड्यो रहे तेम हवे तो शेलक राजर्षि अतीव प्रमादी थई गया पडिलेहण, प्रतिक्रमणादिक आवश्यक क्रिया पण लगभग विस्मृत थवा जेवी बनी गई अंकुश विनाना हस्तीनी जेवी शी दशा थाय? चोमासामां कार्तिक चोमासुं आव्युं शेलकराजर्षिनी साथे रहेवा छतां पंथक मुनिना आच रणमां कदापि पण स्खलना न थई तेओ तो तन अने मनथी वैयावच्च करता अने संयमाराधनमां तत्पर रहेता कार्तिक चोमासाने दिवसे चारे प्रकारना आहार करी, सुरापान करी शेलक राजर्षि तो संध्यासमये ज सूई गया चोमासी प्रतिक्रमण करतां पंथक मुनिए चोमासी खामणा खामवाना समये निद्राधीन बनेला शेलक राजर्षिना चरणने पोताना मस्तकद्वारा स्पर्श कर्यो तेथी मारी निद्राभंग थवाथी शेलकाचार्य अत्यंत क्रोधी बनीने बोल्या के-" कोणे मारी निद्रानो भंग कर्यो? अकाळे मृत्युने कोण वांछे छे? आवो पुण्यहीन कोण छे?" त्यारे पंथकमुनिए अत्यंत नम्रतापूर्वक जणाव्युं के-" हे भगवंत! हुं आपनो शिष्य पंथक ज छुं आज चोमासी प्रतिक्रमण करतां आपने खमावतां में मारा मस्तकद्वारा आपना चरणस्पर्श कर्या [illegible] आपनो अविनय थयो होय तो हुं माफी मागुं छुं फरी वार आवुं कार्य नहिं करुं " आ प्रमाणे कहीने पंथक मुनि शेलकाचार्यने वारंवार खमाववा लाग्या पंथक मुनिना आ प्रमाणना वचनथी अने तेमना अत्यन्त विनयशीलपणाथी शेलक राजर्षिनो क्रोध शांत थई गयो तेमने पोताना अविचारीपणानुं भान थयुं पोते शुद्ध स्थविरपणाथी पतित थईने पासत्थापणाने पाम्या तेने माटे अ त्यंत परिताप थवा लाग्या हस्तिना गर्जारव सांभळी सुसुप्त सिंह पण जागृत थई जाय तेम शेलक सचेत बन्या अत्यार सुधीना पोताना प्रमादीपणानुं भान थयुं अने निश्चय कर्यो के प्रात काले मंडुकनी परवानगी लईने, पीठ-फल कादि पाछा सोंपीने अन्यत्र विहार करवो आ प्रमाणे अनाचार पाळ्यो ते मारे माटे योग्य नथी एक वखत भोगविलासोनो त्याग कर्या पछी पुन तेना भोगवटो करवो ते तो वमन करेला भोजननो पुन आहार करवा जेवुं छे आ

प्रमाणे पोताना मनमां मक्कम निर्णय करीने, मडुकने सर्व वस्तु सुप्रत करीने पोते पथक मुनिनी साथे पूर्ववत् उग्र विहार करवा लाग्या आ व्यतिकर अगाउ चाल्या गयेला ४९९ शिष्योना जाणवामा आव्या एटले तेओ पण शैलकाचार्यनी पासे आव्या शैलकाचार्य पूर्वनी माफक उग्र तपश्चर्या शरू करी अने छेवट श्रीपुंडरीक गिरि उपर आव्या त्या पादपोपगम अणशण करी, केवळज्ञान प्राप्त करी छेवट मोक्षलक्ष्मीना भोक्ता थया

आ दृष्टान्तनो मतलब ए छे के-जेम पथक प्रमुख उद्यमी, क्रियाशील अने चारित्रना खपी मुनिने जोईने शैलकाचार्यने पोताना प्रमादीपणा प्रत्ये तिरस्कार आव्यो, पोतानी भूल समजाई अने तेने परिणामे पोतानु सुखशीलपणु त्यजी दईने पुन संयमधर्ममा स्थिर थया आ प्रमाणे सदाचारी गच्छमा वास करवाथी कदाच कर्मवशात् पतित थवानो प्रसग प्राप्त थाय तो पण ससर्गथी अने बीजाने उद्यमवंत देखीने पोताना प्रमादीपणाना त्याग करवानु बने छे, वीर्य उल्लसे छे अने क्रिया प्रत्ये रुचि जाग छे, परन्तु जो भ्रष्टाचारी गच्छमा वास होय तो नीसरणीना पगथियानी माफक एक पगथियेथी चूकता ए तरत ज अध पतन थवा लाग छे, माटे सदाचारी गच्छनु ज शरण अवलम्बन लेवु इष्ट वीर्योल्लास थवाथी शु फळप्राप्ति थाय ते जणावता कहे छे के-

वीरिएण तु जीवस्स, समुच्छलिएण गोअमा ! ।
जम्मंतरकए पावे, पाणी मुहुत्तेण निद्दहे ॥ ६ ॥

[वीर्येण तु जीवस्य, समुच्छलितेन गौतम ! ।
जन्मान्तरकृतानि पापानि, प्राणी मुहूर्त्तेन निर्दहेत् ॥६॥]

गाथार्थ-हे गौतम ! जीवनो वीर्योल्लास वृद्धि पामता ते जीव पूर्वना अनेक भवोमा उपार्जन करेल ज्ञानावरणीय प्रमुख अशुभ कर्मोने अंतर्मुहूर्त मात्रमा-बे घडी जेटला समयमा बाळीने भस्म करी नाखे छे. ६

विवेचन-अज्ञानादिकना कारणे आ आत्मा कर्मबंधन कर्या करे छे आ प्राणी संयोगाधीन छे, कारण के कह्यु पण छे के-A man is the creature of circumstances अनादि काळथी मोहराजाए तेने प्रमादरूपी मदिरा पाई पाईने मस्त बनाव्यो छे के तेने पोताना सारासारपणानु के हिताहितनु भान पतु ज नथी आवी अज्ञानावस्थामा-भोगविलासमा रच्योमाच्यो रही ते कर्मोपार्जन करे छे अने परिणामे तेना माठा फळ भोगवे छे आवी रीते

अनेक भवोमां कर्मसंचय वधतो जाय छे, परन्तु तेनो आत्मा जागृत बनी अपूर्व आत्मोल्लास-वीर्योल्लासपूर्वक धर्मानुष्ठानमां रक्त बने, धर्मरंग रग-रग व्यापी जाय त्यारे ते आत्मा अनेक भवना संग्रहित करेला पापराशिने बे घडी जेटला ज समयमा दग्ध करी शकवा शक्तिमान बने छे एटले दरेक प्राणीए आत्मीय शौर्य न्हिं तजता धर्मानुष्ठानमां कदी पण प्रमादी बनवु नहि संयमधर्मथी पतित थइ पुन गृहस्थावास स्वीकारनार अरणिक मुनिवर अपूर्व वीर्योल्लासथी कयी रीते ऊर्ध्वगति प्राप्त करी ते उदाहरण आ हकीकत जाणवा माटे अतीव उपयोगी छे माताना उद्बोधनथी तेमना पतित थइ गयेल आत्मा पुन जागृत थयो अने स्वकल्याण साध्यु

अरणिक मुनिनु वृत्तांत—

तगरा नामनी नगरीमां दत्त नामनो व्यवहारी वसतो हतो तेनी धन धान्यादिकनी समृद्धि अपार हती भोगविलासमां पण कशी कमी न हती तने भद्रा नामनी शियलवती अने धर्मश्रद्धालु पत्नी हती संसारावस्थाना फळस्वरूप ते दंपतीने अरणिक नामनो रूप, गुण अने कलासंपन्न देवसदृश कांति मान पुत्र हतो ते त्रण सुखपूर्वक रहेता हता तेवामां ते नगरीमां उद्यानमां श्री अर्हन्मित्राचार्य नामना मुनिवर पधार्या गामलोको वंदनार्थे गया त्यारे दत्त श्रेष्ठी पण पोतानी पत्नी तथा पुत्र साथे देशना सांभळवा गया श्रीमित्राचार्ये धर्मोपदेश आपता जणाव्यु के—" हे भव्य प्राणीओ ! आ संसार स्वार्थी छे-कोइ कोइनु नथी आ निःसारभूत संसारमांथी सार ग्रहण करवो ए ज आ मनुष्य जन्मप्राप्तिनु फळ छे भोगविलासो तो अल्प सुख अने अत्यंत दुःख आपनारा छे नरकगतिमां एक श्वासोश्वास प्रमाण समय पर्यंत सुख नथी, त्यां क्षण मात्र जेटलो काळ दुःख सहन करवामां गाळवो पडे छे आवा कपरी छूट तथा दुःखमांथी बचवु होय तो धर्मनु सम्यक् प्रकारे आचरण करो आयुष्य डाभनी अणी पर रहेला जळबिंदुनी जेम अस्थिर छे अने लक्ष्मी पण विद्युतनी माफक चपळ छे शाश्वत सुख देनार कांइ पण होय तो ते सर्वज्ञभाषित-वीतराग प्ररूपित जैनधर्म ज छे माटे तेनु मन, वचन अने कायाथी यथाशक्ति पालन करो के जेथी जन्म-मरणना दुःखमांथी छूटकारो थाय " आ प्रमाणे वैराग्य रसथी भरपूर देशना सांभळी दत्त श्रेष्ठीने वैराग्य उपज्यो तेणे पोतानी मनो भावना भद्राने जणावी, एटले पति ए ज जेनो प्राण छे एवी भद्राए पण पतिना मार्ग स्वीकारवानु कबूल कर्यु पण विचारवानो प्रश्न रह्यो नाना अरणिकनो हजु ते उमर लायक थयो न हतो विचारने परिणामे एवु निर्णीत थयु के अरणिकने पण आ पवित्र मार्गना पथिक बनाववो अने तेनी सारसंभाळ साधु दत्त राखशे शुभ मुहूर्त वधदयापूर्वक त्रणे जणाए दीक्षा लीधी अने

पोतानी संपत्तिनो धर्ममार्गमां सद्व्यय कर्यो. दत्ते निहनी पेठे चारित्र ग्रहण करी तेनुं सिंहवत् पालन करवा मांड्युं. धीमे धीमे शास्त्राभ्यास शरू कर्यो परन्तु ज्ञानावरणीय कर्मना प्रभावे स्मरणशक्ति मंद बनी गई. तेणे विचार्युं के 'हवे पाका घडाए जेम काठा न चडे तेम वृद्धवये शास्त्राभ्यास नहीं थाय' तेणे अरणिकने शास्त्राध्ययन शरू कराव्युं अने तेनी पडिलेहणादि क्रिया पण पोते करवा लाग्या. तेना प्रत्येना ममत्वभावना कारणे गोचरी पण पोते लई आवता. तेमां पण तेने माटे मोदक पेंडा आदि मिष्टान्न लावता. काई पण प्रकारनुं कष्ट अरणिकने न पहोंचे तेथी संपूर्ण काळजी राखता. आ प्रमाणे अरणिक साधुपणामां पण सुख शीलपणे उछरवा लाग्यो. तेनुं सुकुमारपणुं वधतुं गयुं. भद्रा साध्वी पण वार वार आवी समाचार मेळवी जती. दत्तनी साथेना बीजा साधुओ दत्त मुनिने काइ कोईवार कहेता के- "हे दत्तमुनि! आ अरणिकने तमे हवे गोचरी जता शीखवो. ते आचार नहीं शीखे तो भविष्यमां शुं करशे? तमारी तप श्चर्याने दिवसे तो गोचरी माटे तमारे तेने ज मोकलवो." आ उपायमां दत्त मुनि पुत्र प्रत्येना स्नेहथी कहेता के-" हे पूज्यो! हजु ते नानो छे. हमणा तेने शास्त्राभ्यास करवा दो. ए गोचरीमां हजु शुं समजे? गोचरी विगेरे माटे तो हुं ज बस छुं" कालांतरे दत्तमुनि अणशण करी कालधर्म पाम्या त्यारे अर णिक मुनि रुदन करतां करतां कहेवा लाग्या के-" हे पूज्य पिताजी! तमे केम आजे कई बोलता नथी? हवे मने 'पुत्र' कहीने कोण बोलावशे? मारे सारुं मिष्ट भोजन कोण लावी आपशे? मारी सारसंभाळ कोण करशे? तमारा सिवाय मारो संयमनिर्वाह केम थशे? आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्या तेवामां भद्रा साध्वी त्यां आव्या अने तेने समजावता कह्युं के-"वत्स! तारे आम रुदन करवुं उचित नथी. आ संसारनी लीला ज आवी छे, माटे तारे मोहमां मुंझावुं नहीं. कोई सदाकाळ जीवतं रहेतुं नथी, माटे हवे स्वस्थ थईने शुद्ध चारित्र पालन कर" आ प्रमाणे भद्रा साध्वीनी शिखामणथी अरणिक कंईक स्वस्थ थयो अने चारित्र पालन करवा लाग्यो.

एकदा गोचरी जनारा मुनिओए अरणिकने साथे लीधो अने कह्युं के- "चालो, गोचरी केम ग्रहण करवी ते तमने समजावुं" अरणिक साथे चाल्यो पण तेनुं सुकोमळपणुं तेने दुःखदायक थई पडयुं. तेनी गति मंद बनी गई. बीजा साधुओ आगळ चालवा लाग्या अने अरणिक एकलो तेओनी पाछळ पाछळ जवा लाग्यो. बीजा साधुओए विचार्युं के अरणिक हमणा भेगो थई जशे. एटले तेओए गति चालु राखी. सुकुमार अरणिक मंद गतिए चालतो हतो. मस्तक अने चरण उघाडा हता. माथे ज्येष्ठ मासनो प्रखर ताप तपतो हतो. अरणिकने समग्र शरीरे प्रस्वेद थई गयो. तेनाथी ताप सहन न थया एटले एक गोखनी नीचे छायो हतो त्यां अल्प समय विश्राम लेवा उभो रह्यो. भाग्यानुयोगे ब्यु

बन्यु के ते हवेली एक धनाढ्य श्रेष्ठीनी हती ते श्रेष्ठी परदेश गयेल अने तेनी नवयौवनवती स्त्री ते हवेलीमा रहेती हती ते विरहातुर बनेली हती तेनी नजरे राजकुमार जेवा अरणिक मुनि चढ्या पोताना गोखनी ज नीचे तेने ऊभा रहेल जाई तणे अनेक संकल्पविकल्प कर्या तेणे मुनिने पोतानी जाळमा फसाववानो विचार करी पोतानी दासीने समजावीने तेनी पासे मोकली। दासीए आवीने नम्रताथी कह्यु के–

"हे साधुपुरुष! पधारो, अमारु आंगणु पावन करो मारी शेठाणी आपने भोजन वहोराववा इच्छे छे आपने इच्छतो आहार वहोरावशे, माटे पधारो' अरणिके तरत ज ते वचन स्वीकारी लीधुं कारण के हवे आगळ चालवाने तेना चरणो आनाकानी करी रह्या हता सूर्यनो प्रचंड आताप पण तेनी बेचेनीमा वधारो करी रह्यो हतो जेवो अरणिके हवेलीमा पग मूक्यो के दासीए द्वार बंध करी दीधा मुनिने जोई ते व्यवहारीआनी स्त्रीए कह्यु के–"पधारो मुनिराज! आटली नानी वयमा आ चारित्र केम ग्रहण कर्यु? हजी तो तमारे संसारोपभोग करवानो समय छे आवो, अने आ सर्व अढळक संपत्तिनो यथेच्छ उपभोग करो धर्मकरणी ए तो वृद्धावस्थानु कर्तव्य छे आ ऊगती युवानीमा आवो वेष तमने शोभे? हु, मारा दास-दासी विगेरे तमारी सेवामा हाजर ज छीए माटे मारी साथे संसार सुखथी भोगविलास भोगवो अने पछी पाछळथी यथावसरे चारित्र स्वीकारजो धर्म करवाना दिवसो क्या ओछा छे!" आ प्रमाणे प्रलोभन आपी ते युवती हावभावपूर्वक चेष्टा करवा लागी कामदेवना ताता तीर जेवा पोताना नेत्रकटाक्ष मुनि प्रति फेंकवा लागी भोगावली कर्मना उदयथी अरणिक मुनिवर आ प्रेम-पाशमा फसाया चारित्रपालन तेमने खांडानी धार पर चालवा जेवु विषम जणातु हतु तेमणे मनने चलित कर्यु अने व्यवहारीआनी स्त्री साथे गृहसंसार शरू कर्या पोतानी पासेना रजोहरणादि साधु-चिह्नो त्यजी दई गृहस्थनो वेश अंगीकार कर्यो

आ बाजु बीजा साधुओ गोचरी वहोरी जेवामा अरणिकनी तपास करे छे तो तेमनो पत्तो ज न मळ्यो तेओ विचारमा पडी गया अमुक अमुक स्थानोए तपास करी पण गृहस्थ बनेला अरणिकनो पत्तो क्याथी मळे? तेमणे आवी गुरुने वात करी गुरुए पण शोध करावी पण तरुणीना प्रेम-पिंजरमा पूरायेला अरणिकनी प्राप्ति न ज थई बधा मथ्या न पण आ समाचार मळ्या समाचार सांभळता ज ते घेली बनी गई तेनो सुखमा रहेलो पुत्र प्रेम उछरी आव्यो तेणे काइ पण भोगे पुत्रने पाछो मेळववानो मन साथे मक्कम निर्णय कर्यो पण हवे तेनो पुत्र घेर घर भिक्षार्थे भटकता भिक्षु न हता तेनी जीवनदिशा पलटाई गई हती तेनो पुत्र तो हवेलीमा शेठाणीने भोगविलास माणी रह्यो हतो तेनी तेने क्या खबर हती धीमे धीमे तेनी घेलछा वधवा लागी ते

नगरीनी शेरीए शेरीए भटकवा लागी अने 'अरणिक-अरणिक' एम पोकार करवा लागी. नगरना बाळको तेने गांडी समजी तेनी मश्करी करवा लाग्या. छोकराओ तेने ठगवा लाग्या 'अहीं तमारो अरणिक छे' एम कही एक शेरीमाथी बीजी शेरीमा दोडाववा लाग्या. छोकराओने मन आ रमतनो विषय थई पड्यो पण विशाळ नगरनी नारीमा अरणिकनो पत्तो न मळ्यो ते न ज मळ्यो. दिवसो पर दिवसो पसार थवा लाग्या. चार पण व्यतीत थई गया. दैवानुयोगे एकदा अरणिक गोखमा बेसी पोतानी प्रियतमा साथे शेतरंज खेली रह्या हता. तेवामा तेणे माताने पोताना नामनो पोकार पाडती अने आगळ पोताने न जोवाथी गांडी थती न होय तेवी जोई. जोता ज तेने पोतानी पूर्वावस्थानु भान थयु. तेने पोतानी जात ने कार्य माटे धिक्कार उपज्यो. क्षणिक सुख माटे तेणे पोतानो आत्मा वेची नाख्यो हतो तेवु तेने आत्मभान थयु. चिंतामणिनो परित्याग करी तेना बदलामा काचना टुकडाथी पोते संतोष मान्यो हतो तेम पण जणायु. वधारे विचार करवानो अवकाश न हतो. तरत ज गोखथी नीचे उतरी पोतानी माताना चरणमा नमस्कार कर्यो. अरणिकने जोता ज भद्रानी घेलछा दूर थई गई. अत्यंत वात्सल्यथी तेणे पुत्रने पंपाळ्यो अने कह्यु के-"पुत्र! तने आ उचित नथी. भगवंतनो श्रेष्ठ मार्ग मळ्या पछी आ धमधम कारावासमा रहेवानु तने केम पसंद पडे छे? चाल, कर्मानुयोगे थवानु हतु ते थई गयु. हवे चारित्र स्वीकारी ले अने आ गंभीर भूलनु प्रायश्चित्त ग्रहण कर. गुरुमहाराज जरूर तने क्षमा आपी सन्मार्गे चढावशे." अरणिके कह्यु के-"माता! माराथी दीर्घसमय चारित्र पालन नहीं थई शके. माटे बीजो रस्तो बतावो. कहो तो हु अणशण स्वीकारी पापपुंजने दग्ध करी नाखु." माता तेने समजावी गुरुमहाराज पासे लावी अने तेने अणशण स्वीकार्यु. ज्येष्ठ मासना तापने जे अरणिक सहन नहीं करी शकता ते ज अरणिक मुनि अग्नि जेवी धगधगती पत्थरनी शिला उपर पादपोपगम अणशण स्वीकारी काउस्सग्ग ध्यानमा स्थिर रह्या. जेम अग्नि आगळ घृत पीगळी जाय तेम सुकुमार शरीरवाळा अरणिकनो देह अंगारा जेवी शिला ऊपर ओगळी गयो अने अरणिकनो आत्मा शुभ ध्याननी श्रेणीए चढी, काळ करी देवलोक गयो.

आ कथानो सारांश एवो छे के-जेम उष्ण परिसह सहन करी अरणिके पोताना वीर्योल्लासपूर्वक स्थैर्य साध्यु तेम दरेक प्राणीए वीर्योल्लास करवो. जे गच्छमा साधु आत्मा आत्मोल्लासपूर्वक क्रिया करे ते सुगच्छ जाणवो. आ माटे शु करवु ते सूत्रमा जणावता कहे छे के—

तम्हा निउण निहालेउ, गच्छ सम्मग्गपट्ठिअं ।
वसिज्ज तत्थ आजम्म, गोअमा ! सजए मुणी ॥ ७ ॥

[तस्मान्निपुणं निभाल्य, गच्छं सन्मार्गप्रस्थितम् ।
वसेत्तत्र आजन्म, गौतम ! संयतो मुनिः ॥ ७ ॥]

गाथार्थ—[सदाचारी गच्छमां वसतो प्रमादी शिष्य पण जागृत बनी अनेक भवसंचित पापपुंज दग्ध करी नाखे छे] माटे हे गौतम ! ज्ञानचक्षुद्वारा ज्ञाणी जेमां आत्मकल्याण सधाय तेवा सन्मार्गप्रतिष्ठित गच्छनी परीक्षा करी संयममार्गमां प्रयत्नशील साधुए जीवन पर्यंत तेवा सुगुणी गच्छमां ज वास करवो. जे सत्क्रियापात्र होय छे ते ज साधु-मुनि छे ७

विवेचन—मुमुक्षु आत्माए पोतानी आत्मोन्नति माटे सदाचारी गच्छमां ज वास करवो उचित छे जो उन्मार्गगामी-भ्रष्टाचारी गच्छमां वास करे तो तेनुं साधुपणुं रहेतुं नथी, पासत्थादिकना प्रसंगथी चारित्रपालनमां शिथिलता आवी जाय छे अने यथा सरखा पवन मळवाथी कोई कोईने जागृत करी शकतो नथी परंतु जो सदाचारी गच्छमां निवास होय अने पोतामां कदि पण प्रमादनो अंश प्रगटे तो पोतानी साथे रहेला अन्य साधुओनी क्रियातत्परताथी, तेमनी वैयावच्चादिक क्रियाथी प्रमादी बनता साधुने सचेत बनवुं पडे छे अने छेवटे लज्जाळुपणाथी पण संयममां दृढ रहेवुं पडे छे, माटे सुगच्छमां वास करवो ए ज योग्य छे हवे सुगच्छनी तपास केम करवी ? ते प्रश्न उपस्थित थाय छे दरेके दरेक मुनिवरोनी कंई परीक्षा करी शकाती नथी तेथी शास्त्रकारमहाराजा फरमावे छे के गच्छमां आधारभूत आचार्य छे माटे जे आचार्य सद्गुणी, क्रियाप्रेमी अने शासनोन्नतिनी धगशवाळा होय तेवा गच्छ सुगच्छ ज होय माटे तेवा गच्छमां वास करवो एने माटे आचार्यनी परीक्षा केवी रीते थई शके ते माटे जणावता कहे छे के—

मेढी आलंबण खंभ, दिट्ठी जाण सुउत्तमम् ।
सूरी ज होइ गच्छस्स, तम्हा तं तु परिक्खए ॥ ८ ॥

[मेधिरालम्बनं स्तम्भो-दृष्टिर्यानं सूत्तमम् ।
सूरिर्यस्माद् भवति गच्छस्य, तस्मात्तं तु (एव) परीक्षेत ।८।]

गाथार्थ—आचार्य महाराज गच्छने माटे मेढीभूत, अवलंबनस्वरूप, स्तंभनी माफक आधारभूत, नेत्र-दृष्टिनी जेवा उपयोगी अने छिद्र वगरना श्रेष्ठ जहाजनी जेवा होय छे जे गच्छमां आवा आचार्य होय ते सुगच्छ जाणवो माटे आचार्यनी परीक्षा उपर्युक्त भावनोद्वारा करवी ८

विवेचन—बुद्धिमान उत्तम आचार्यना लक्षण बतावता शास्त्रकारमहाराजा जणावे छे के ते मोटो जेवा होय मेडी उपरनुं काष्ठ जेवुं घरमा थाय पछी तेना उपर करवामा आवे छे ते खाणामा झुंझामा रहेला थायने तेनाथी छूटा पाडवा माटे वृषभो पासे घसडाववामां आवे छे आ समये गाडाना मध्यमा एक काष्ठ ऊभुं करवामा आवे छे अने तेनी साथे वृषभानो रास बांधी लेवामां आवे छे पछी वृषभो आघा-पाछा थई शकता नथी अने पोतानुं कार्य करे छे आ ऊभुं करेल काष्ठ ते मेढी कहेवाय छे जेम रीते आ काष्ठथी वृषभो मर्यादामां ज चाले, आघा-पाछा थई न शके तेम आचार्यनी आज्ञारूप रासथी बंधायेल शिष्यसमुदाय पोतपोताना आचारमां-मर्यादामां ज मग्न रहे छे आचार्यना बीजा गुण अवलंबन छे जेम कोई पुरुष मोटा विवरमा पडे तेना हाथ तेने हस्तादिनुं अवलंबन आपवामां आवे तो तेनी रक्षा थाय छे अने पडतो बची जाय छे तेम आचार्य पण भवरूप गर्तामां पडता एवा गच्छने बचावे छे तेमना त्रीजा गुण छे स्तंभभूत प्रासाद विगेरेने आधारभूत स्तंभो छे, ते न होय तो महेल, हवेली विगेरे मकानो टकी शके नहि तेम आचार्य पण गच्छना स्तंभरूप छे तेमनी गेरहाजरीमा गच्छ टकी शके नहीं वळी आचार्यने नेत्र समान कह्या तेनुं कारण ए छे के जेम दृष्टि जीवन शुभाशुभ बतावनार छे तेम गच्छने भावी शुभाशुभ दर्शावनार आचार्य छे तेमने छेल्लुं विशेषण आप्युं छे श्रेष्ठ यान-जहाज छिद्र विनानुं यान-नाव जेम समुद्रना पार पमाडे छे तेम आचार्य संसाररूपी समुद्रथी पार पहोंचाडवाने शक्तिमान् छे आवा आचार्य जे गच्छमा होय ते सुगच्छ जाणवो अने तेवा गच्छमा वास करवो ते ज हितकारी छे आ ग्रंथमा (१) आचार्यस्वरूपाधिकार, (२) साधुस्वरूपाधिकार अने (३) साध्वीस्वरूपाधिकार-ए प्रमाण त्रण अधिकार आपवाना छे तेमा प्रथम आचार्याधिकार जणाय छे सद्‌व्यवहार। आचार्यनुं लक्षण बताव्युं त्यारे शिष्य प्रश्न करतो पूछे छे के-" उन्मार्गगामी आचार्यने कयी रीते जाणी शकाय ? तेना लक्षण कया कया छे ? " तेनो खुलासो जणावता कहे छे के-

भयवं ! केहिं लिंगेहिं, सूरिं उम्मग्गपट्ठियम् ।
वियाणिज्जा छउमत्थे, मुणी तं मे निसामय ॥ ९ ॥

[भगवन् ! कैर्लिङ्गैः, सूरिमुन्मार्गप्रस्थितम् ।
विजानीयात् छद्मस्थ , मुने ! तन्मे निशामय ॥ ९]

गाथार्थ—हे पूज्य ! ज्ञान-दर्शन रहित छद्मस्थ जीव कया कया लक्षण वडे सूरि—आचार्यने उन्मार्गगामी थयेला जाणी शके ते तमो मने समजावो—कहो ९.

विवेचन–ऊपरनी आठमी गाथामां सन्मार्गगामी-सदाचारी आचार्यना लक्षण जणाव्या तेनी साथे अथान्तर यामथी उन्मार्गगामी आचार्यना लक्षणो पण जाणवा आवश्यक छे, कारण के त्यारे ज ते व नेनो मुकाबला (तुलना) थइ शके. छद्मस्थ जीव परलोक संबंधी घणा अनुमानो थायी छे ते माटे तेने दिशासूचन कराव्यु होय तो ते भूलने पात्र न बने आ कारणथी भ्रष्टाचारी आचार्यना लक्षण जाणवानी जिज्ञासा दर्शाववामां आवी छे. नीचेना १०–११ श्लोकथी ते हकीकत जणाववामां आवे छे

सच्छंदयारिं दुस्सील, आरंभे सुपवत्तयम् ।
पीढयाइपडिबद्ध, आउक्कायविहिंसगम् ॥ १० ॥
मूलुत्तरगुणब्भट्ठ, सामायारीविराहयम् ।
अदिन्नालोयण निच्च, निच्च विगहपरायणम् ॥११॥

[स्वच्छन्दचारिण दुःशील-मारम्भे सुप्रवर्तकम् ।
पीठकादिप्रतिबद्ध, अप्कायविहिंसकम् ॥ १० ॥
मूलोत्तरगुणभ्रष्ट, सामाचारीविराधकम् ।
अदत्तालोचन नित्य, नित्य विकथापरायणम् ॥ ११ ॥]

गाथार्थ—(१) स्वच्छंदाचारी–पोतानी मरजी मुजब वर्तनार, (२) दुराचारी, (३) आरंभ–समारंभमां प्रवर्तावनार, (४) पाट–पाटलादि वगर कारणे वापरनार, (५) अप्काय जीवोनो अनेक रीते घात करनार, (६) अहिंसादिक मूळगुण अने पिंडविशुद्धि प्रमुख उत्तरगुणोथी भ्रष्ट थएल–तेनु परिपालन न करनार, (७) दश प्रकारनी सामाचारीनो विराधना करनार, (८) पोताना पापनी गुरु पासे आलोचना नहीं करनार तेम ज (९) राजकथा आदि चार विकथाओमां रक्त रहेनार आचार्यने उन्मार्गगामी जाणवा १०–११

विवेचन–(१) स्वच्छंदाचारी–जिनराजनी आज्ञा प्रमाणे न वर्तता पोतानी मरजी मुजब वर्तन करे ते स्वच्छंदाचारी कहेवाय स्वच्छंदाचारी कदी पण साचा मार्गनो स्वीकार करी शकता नथी तेमज पोतामां तेवी स्थिति नहीं होवाने कारणे तेवा सत्य धर्मनो उपदेश पण आपी शकता नथी एटले तेवा आचार्यना अवलंबनथी स्वश्रेयसिद्धि थई शकती नथी

(२) दुराचारी–ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्या

चार-आ पचाचारना विराधक, तेनु यथार्थ पालन न करनार तेमज उद्‌भट वेष धारण करवा उपरांत विपरीत क्रिया करनारने दुराचारी जाणवा

(३) आरंभादिकमा रक्त—आरंभ, सरंभ अने समारंभ-ए त्रण प्रकार छे पृथ्वीकायादिकने विषे प्रवृत्ति करे ते आरंभ कहेवाय जेमके-सचित्त माटी-पृथ्वी आदिथी पोताना हाथ धोवे, मकान चणाव, खेती करावे, अप्(काचा-सचित्त पाणी)थी स्नानादि करे, वस्त्रादि धोवे, तेउ-अग्निना दीवा बाळे, धूप करे वाउ-वायु, पवन माटे पखा राखे, चामर वींझावे, पोता पासे रहेल मुहपत्ति वडे पवन नाखे, उघाडे मुखे बोले, मुखवडे फूक मारे वनस्पति-लीलोतरी खाय, दातण करे, तांबूल खाय, गाय, घोडा प्रमुखने घास चरावे, तेमज गंडोल, अळोक, अळसीयादिक बेइंद्रिय, मकोडादिक तेइंद्रिय, माखी, मच्छर प्रमुख चौरिंद्रिय, मेना, पोपट प्रमुख तिर्यचपंचेंद्रिय, तेमज गाडा राखे, घोडा राखे, नोकर-चाकर दास-दासीवर्ग राखे, गृहस्थ पासे भार वहन करावे इत्यादिक त्रसकाय विगेरेनो आरंभ करे ऊपर वर्णवेली सर्व क्रियाने विषे प्रवृत्ति करवानो विचार करे ते सरंभ कहेवाय अने विचार कर्या बाद ते-ते जीवोने कष्ट थाय, परिताप उपजे तेवु काय करे ते समारंभ कहेवाय आ प्रमाणे पोते करे अथवा अन्यने प्रेरणा करे तमज आवी प्रवृत्ति करनारने सारा माने अर्थात् तेनी अनुमोदना करे ता तेवा लक्षण-वाळाने उन्मार्गगामी आचार्य जाणवा आ आरंभादिक पापप्रवृत्तिनु मूळ छे कह्यु छे के- " सकप्पो सरंभो, परितावकरो भवे समारभो । आरंभो उद्दवओ, सुद्धन याण तु सव्वेसिं ॥ १ ॥ " अर्थात् जीवादिकने हणवानो विचार करवो ते सकल्प, जीवोने परिताप उपजाववा ते समारंभ अने जीवोनो घात थाय एवु काय करवु ते आरंभ जाणवो सर्व नयोनो जे ज्ञाता छे एटले के जे तत्त्वज्ञ छ ते त्रणे प्रकारनु बराबर स्वरूप जाणीने ज प्रवृत्ति करे

(४) पीठ-फलकादि वापरनार—चातुर्मास व्यतीत थवा छता पण पीठ, फलक अने सथारादिक कारण विना वापरे चातुर्मासमा ते ते वस्तुओनो उप योग करवानु अने ते सिवायनी ऋतुमा कारणे-प्रयोजन होय तो ज वापरवानु श्रीजिनेश्वर भगवतोए उपदेश्यु छे, छता पण तेनो भोगवटो करे तो आज्ञाभंग थाय आ माटे निशीथसूत्रना बीजा उद्देशामा कह्यु छे के—" जे भिक्खू उडुब-द्धिय सेज्जासथारय पर पज्जोसवणाओ उवाइणेइ उवाइणंतं वा साइज्जइ " त्ति । निशीथसूत्रना चूर्णिकार पण कहे छ के-" उडुबद्धगहित सेज्जासथारय पज्जोसवण रातीओ पर उवातिणावेइ तस्स मासलहु पच्छित्त।" अर्थात् जे कोई साधु चोमासा पहेला गृहस्थे अर्पण करेल शय्या अने सथारा पर्युषणाकल्प पछी एटले के

कार्तिकी पूर्णिमा पछी पण राखे अथवा ग्रहण करी राखनारने सहाय करे तो तेने मासलघु प्रायश्चित्त आवे शय्या अने संथारा संबंधी भेद पण जाणवा जेवो छे जे सर्व शरीरप्रमाण होय ते शय्या अने अढी हाथ प्रमाण होय तेने संथारो कहेवाय अगर जे चाले नहीं ते शय्या अने चाले ते संथारो अथवा जो तत्पुरुष समास लईए तो शय्या एज संथारो थाय संथाराना बे भेद छे-(१) परिसाडी-संथारो करता जेमांथी कंई पण पडे-खरे ते अने बीजो (२) अपरिसाडी-जेमांथी कंई पण पडे नहीं परिसाडी संथाराना पण बे भेद छे-(१) झुसिर अने (२) अझुसिर सालना, पराल आदिना पोला ते झुसिर अने बीजो डाभ, तृण विगरेना पोला नहीं ते अझुसिर अपरिसाडीना पण बे भेद छे-(१) एकांगिक अने (२) अनेकांगिक एकांगिकना पण बे प्रकार छे-(१) असंघातिम अने (२) संघातिम असंघातिम एटले एक पाटियानो साध्या वगरनो अने संघातिम एटले बे पाटियानो भेगो साधेलो अनेकांगिक एटले घास प्रमुखनो, अनेक काबीओ(काठा)नो बनावेल आटला प्रकार संथाराना बताव्या ते पैकी कोई एकनो कोई पण प्रकारे समय व्यतीत थया पछी उपयोग करे तो ते साधु मिथ्यात्वी उन्मार्गगामी कहेवाय कारण के कह्युं छे के—" एते सामण्णपर, संथारद्धयद्धि गेण्हए जो उ । सो आणाअणवत्थ, मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ १ ॥ " अर्थात् संथाराना जे जे प्रकारो दर्शाव्या ते पैकी कोई पण मरजीमां आवे ते संथारो ऋतु समय व्यतीत थया छतां पण राखे, लावे अने लावनारने सारो माने तो ते साधु-मुनि जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करे छे, मर्यादानो लोप करे छे, मिथ्यात्वने सेवे छे अने पोताना संयमधर्मनी पण विराधना करे छे निर्णीत करेला समय उपरांत जो संथारो राखवामां आवे तो तेनी गवेषणादिकने कारणे सज्झायना व्याक्षेप थाय, वळी संथारामां दीर्घकाळे जीवोत्पत्ति पण थाय अने तेने सम्यक् प्रकारे जोवे नहीं तो संजमविराधना थाय कदाच जीवोत्पत्तिनी संभावना जाणी संथारो अर्पण करनार गृहस्थ कहे के ते मने पाछा सोंपजो, हुं बीजो आपीश तो पण ते बीजानी गवेषणादिकने कारणे स्वाध्यायमां स्खलना थाय, माटे शेष काळमां संथारो स्वीकारवो ज नहीं जो स्वीकारे तो उपर जणावेल दोषापत्ति आवे कदाच कोईने अज्ञानतामां तेवुं कार्य थई गयुं होय तो तेने माटे शिक्षा जणावतां कहे छे के-परिसाडी अझुसिर संथारो लावे तेने एक लघु मासनो दंड, परिसाडी झुसिर, एकांगिक संघातिम, एकांगिक असंघातिम अने अनेकांगिक-आ चार प्रकार पैकी कोई पण जातनो संथारो ग्रहण करे, बीजा पासे ग्रहण करावे तेमज ग्रहण करनारनी अनुमोदना करे तो तेने लघु चारमासी दंड (प्रायश्चित्त) आवे आ बाबतमां प्रतिवादी तर्फे उठावतां प्रश्न करे छे के-"तमे उपर जणावेल सूत्रमां तो पर्युषण पूर्वे ग्रहण करेल संथाराने पर्युषण पछी शेषकाळे राखवाथी दंड जणावेल छे अने तमे तो शेष काळमां लाववानो दंड

जणायो छो तो ते केम घटी शके ? " आ बाबतनो स्पष्ट जबाब आपता सूत्रकार भगवत कहे छे के-"ए सूत्र तो कारणने आश्रयीने कहेल छे कोई साधु ग्लान होय, अणशन करवानो अभिलाषी होय अने भूमि शरदीवाळी होय तो तेवा कारणोने अगे चोमासा उपरात पण सथारो राखवो पडे तो पण पूर्वे ग्रहण करेल सथारो तो न ज राखवो, बीजो लाववो एम सूत्रनो भावार्थ छे शेष काळमा पण सथारो लाववो एवो तेनो अर्थ ज नथी आ प्रमाणे पीठ, फलक अने सथारादिनु जे स्वरूप कह्यु ते प्रमाणे वर्तन न करे तेने उन्मार्गगामी जाणवा

(५) सचित्त अप्कायनो विराधक पण उन्मार्गगामी जाणवो

(६) मूळ तथा उत्तरगुणनो विराधक-आ उपरात मूल तथा उत्तरगुणनो विराधक होय तेने पण भ्रष्टाचारी आचार्य जाणवो सर्वथकी प्राणातिपात विरमण, मृषावादविरमण, अदत्तादानविरमण, मैथुनविरमण, परिग्रहनो त्याग अने रात्रिभोजनविरमण ए छ मूळगुण छे अने पाच समिति, त्रण गुप्ति तथा स्नान न करवु, मुख तथा हस्तादि न धोवा, शरीरनी शोभा न करवी, वस्त्र धोवा तेमज रगवा नही, बेतालीश दोष रहित गोचरी लाववी, गृहस्थ पासे काम न करावयु विगेरे विगेरे उत्तरगुण छे आ बन्ने प्रकारना गुणोथी जे रहित होय तेने उन्मार्गगामी जाणवा

(७) सामाचारीदूषक-पचागीमा बताबी साधुओने रात्रि तेमज दिवसमा जे क्रिया करवानी कही छे, जे मर्यादा बाधी छे ते प्रमाणे न करे, आघी-पाछी करे, ओछी-वधती करे ते सामाचारीना विराधक कहेवाय अने तेने पण उन्मार्गगामी जाणवा

(८) आलोयण नहीं लेनार-पोते जे पापप्रवृत्ति करी होय अथवा तो निरतर जे दोष लागता होय ते गुरु समक्ष प्रकट करी गुरु जे आलोयण-प्रायश्चित्त आपे ते स्वीकारी लेवु जोईए प्रायश्चित्तने अगे जे तपश्चर्यादि करणी करवा नो कहे ते करवी जोईए, छता पण ते प्रमाणे न करे तेने भ्रष्टाचारी जाणवा अत्रे आलोयणनो प्रसग होवाथी तेने लगतु वर्णन व्यवहारवृत्ति तथा जीतकल्प प्रमुख ग्रथने अनुसारे करता कहे छे के-आलोयण आपनारना बे* प्रकार छे-(१) आगमव्यवहारी अने (२) श्रुतव्यवहारी आगमव्यवहारी छ प्रकारना छे-(१) केवलज्ञानी, (२) मन पर्यवज्ञानी, (३) अवधिज्ञानी, (४) चौद पूर्वी, (५) सपूर्ण दशपूर्वी अने (६) नवपूर्वी आ बधा प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा छे एटले जे प्राणीने जेवो अतिचार लाग्यो होय ते सपूर्ण जाणे तेमनी पासे आवी कोई पण व्यक्ति पोताने लागेला अतिचारो पैकी काई अतिचार कहेता भूली जाय अगर तो छुपावे ते समये ते पोते विचारे के-आने हु तेनो मूल कहीश अने

* आ ज ग्रथमा आगळ पाच प्रकार पण दर्शावेल छे

ते स्वीकारीने आलोयण लेशे तो तेने तेनी भूल कहे अने आलोयण आपे घणो विचारे के-आ पोतानी भूल कबूलशे नही अने सत्य बोलशे नही, तो तेवी व्यक्तिने काइ पण कहे नही तेमज आलोयण पण न आपे बीजा श्रुतव्यवहारी छे ते छेदादि ग्रंथने जाणनारा होय छे पोतानी पासे आलोयण लेवा आवनारने तेओ त्रण वखत पूछीने खात्री करे छे के तेणे कंइ कपट तो कर्युं नथीने आलोयण लेनार कांई मे साभळ्यु पण अवधार्यु नथी बीजी वार कहे साभळ्यु, पण निद्रानो समय थयो होवाथी बराबर उपयोग रह्यो नथी त्यारे त्रीजी वार पूछे अने उपयोगपूर्वक बराबर कहे त्यारे छेदादिग्रन्थने अनुसारे तेने आलोयण आपे जो आलोयण लेनार कपट राखे, भूलचूक के मायाप्रपंच करे तो तेने समजाववा निशीथचूर्णीना बीजामा उद्देशानु नीचे प्रमाणे दृष्टान्त कही संभळावे—

कोई राजाने सर्व लक्षणयुक्त एक अश्व हतो ते दोडवामा अत्यंत वेगवाळो अने नदी, पर्वत आदि उल्लंघन करवामा अत्यंत चतुर तेमज शक्तिशाळी हतो ते घोडाना आवा गुण-सामर्थ्यथी अन्य कोई पण राजा आ राजाने जीती शकवा समर्थ थतो नही उलटु आ राजाए बीजा अनेक राजाओने जीतो खंडिया राजा बनाव्या, अने तेमनी पासे पोतानु कार्य कराने कोई पण राजानी आ राजा सामे थवानी के तेनी आज्ञानु उल्लंघन करवानी हिम्मत चालती नही आवी परिस्थितिथी खंडिया राजाओ हृदयमा घणो ज परिताप पामवा लाग्या कोई पण हिसाबे आ दुःख निवारण करवानो निर्णय न थयो एक राजाए बी सामंत राजाओने एकठा करी तेनो उपाय पूछयो त्यारे केटलाके कह्यु के-" जो अश्वना विनाश करवामा आवे तो आपणी मनसिद्धि थाय, कारण के ते अश्वना उत्तम लक्षणोने अंगे ज ते राजा आपणो पराभव करे छे, परन्तु ते अश्वनो घात करवो ते सरळ के सुगम कार्य नथी, कारण के ते अश्वने तो किल्लामा पूरी राखवामा आवे छे अने ते चोतरफ फरता घणा ज माणसोनो पहेरो रहे छे तेथी आ अत्यंत कठिन काम कोई करी शकशे नहि " तेवामा एक बहादुर पुरुष राजा समक्ष आवीने कहेवा लाग्यो के-"हे राजन् ! ते अश्वने तो कोई रीते त्याथी दूर करी शकाय तेम नथी, परन्तु जो तमे आज्ञा करो तो हु तेने मारी नाखुं " एवी राजाए कह्यु-" भले तेम करो एम करवा थी पण आपणो हेतु सरशे ते घोडो तेनो पण नहीं रहे अने बीजाना उपयोगमा पण नहीं आवे माटे कोइ पण प्रकारे तेनो घात करवानो उद्यम कर " राजाज्ञा साभळी ते पुरुष अश्वना स्वामी राजानी पासे गयो अने तेनी सेवा-भक्ति करवा लाग्यो तेनी अत्यंत सेवाभक्ति, सहृदयता अने आज्ञांकितपणु जोई राजाने पण तेना पर विश्वास आव्यो एटले तेणे योग्य वेतन आपी नोकरीमा राखी लीधो हवे ते पुरुषे पोतानी कार्यसिद्धि माटे धीमा-धीमा

कांटा जेवा तीर बनाव्या अने ते तीरोने तेणे नाना बाणद्वारा घोडाने गुप्त रीते मार्या ते बधा तीरो झीणा कांटानी जेम अश्वना अंगमां प्रवेश करी गया तेथी घोडाने शल्यनी माफक दुःख थवा लाग्युं दुःख दिवसे दिवसे वधवा लाग्युं गुप्त वेदना सहन न थवाथी ते दुबळ बनवा लाग्यो राजाए एकदा तपास करी तो अश्वनी कांति अने अंगमोहमां परिवर्तन जोयुं तेणे राज वैद्यने बोलावी कह्युं के " हमेशां आ अश्व लीलुं खडुं भक्षण करे छे छतां दुर्बल केम बनतो जाय छे ? माटे तेनी व्याधिनी परीक्षा करी तेनी बराबर चिकित्सा करो " वैद्ये उपचार करवा मांड्या पण मूळ व्याधि बराबर न समजवाथी तेना बधा औषधोपचार निष्फळ नीवड्या विचक्षण वैद्य विचारमां पड्यो गयो तेणे पोताथी बने तेटला उपायो अजमावी जोया बाद मनमां निर्णय कर्यो के-" अश्वने धातुविकारनो व्याधि तो नथी ज, इच्छानो व्याधि छे तेना शरीरमां जरूर शल्य होवुं जोइए " छेवटे तेणे छेल्लो उपाय अजमाव्यो अश्वना समग्र शरीरे लीली माटीनुं विलेपन कराव्युं एटले जे जे स्थळे झीणा तीरनुं शल्य हतुं ते ते स्थानो एकदम अंदरनी उष्माने कारणे सुकाई गया, एटले वैद्ये ते ते स्थळोए जरा जरा खोदी त्यांथी झीणा झीणा तीर बहार खेंची काढ्या अने पछी रोहिणी औषधीद्वारा ते बधा व्रण रुझावी दीधा आ प्रमाणे युक्तिथी वैद्ये अश्वने निरोगी-निःशल्य बनाव्यो आवी ज रीते बीजा अश्वनो पण नुकसान जाणवो तेमां विशेष ए के-तेना शरीरमां रहेल झीणा तीर नीकळ्या नहि अने अंते ते अश्व वेदनायुक्त मरण पाम्यो

आ दृष्टांतनो उपनय आ प्रमाणे समजवो-चेतनरूपी राजा छे तेनो मनरूपी अश्व छे ते चारित्ररूपी लक्षणोथी युक्त छे तेना प्रभावथी मोहराय चेतनने जीती शकता नथी परन्तु चेतनराज मोहराजाने दुःख देवा लाग्या अने शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शादि जे मोहराजानुं राज्य छे ते उजाड करवा लाग्या वळी तेना मोटा कषाय अने नव नोकषायरूपी सामंतोने पण हेरान करी मूक्या समकितमोह मिथ्यात्वमोह अने मिश्रमोहरूपी त्रणे पराक्रमी पुत्रोने पण हणी नाख्या आथी मोहराजा अत्यंत कोपाय मान थया परन्तु लक्षणयुक्त अश्वना प्रभावथी तेनुं कांई पण जोर चाल्युं नहीं पछी मोहराये सर्व सुभटोने एकठा कर्या अने पोतानुं दुःख कही संभळाव्युं त्यारे एक सुभटे कह्युं-" हे महाराज ! ते अश्वने तो जब कोनी पच्चक्खाणरूप किल्लामां पूर्यो छे माटे तेनुं कोई पण रीते अपहरण थइ शके नहीं, छतां तमारी आज्ञा होय तो हुं तेने मारी नाखुं " मोहराजाए तेनी आज्ञा करवाथी ते सुभट चेतनराजनो सेवक थयो अने गुप्तपणे मूळगुण तथा उत्तरगुणना अतिचाररूप झीणा-झीणा तीर मारवा लाग्यो आथी अश्व शल्ययुक्त थयो चेतन राजे विचार्युं के-" हुं तप-जपरूपी अनेक लीलां जव अश्वने आपुं छुं छतां ते

दुर्बळ केम थने ?" तेथी चेतनराजे आचार्यरूप वैद्यने बताव्यो अने तेमणे पण परीक्षा करी कह्यु के-" तेने मिथ्यात्वरूप मोहनो व्याधि नथी पण अतिचाररूप शल्य छे" पछी श्रण वखत पृच्छा करवारूप आलोयण आपी अने शल्य काढी नाख्युं तेमज जे व्रण पड्या हता ते तपरूप औषधवडे रुझावी दीधा आथी मनरूप अश्व पुनः निरोगी थयो अने तेना प्रभावथी चेतनराय पर मोहराजानु कई पण जोर चाली शक्यु नहीं आथी ज रीते थोडा अश्वना शल्य नीकळ्या नहीं तेथी ते मृत्यु पाम्यो अर्थात् चारित्र नष्ट थयुं एटले चेतनरायने मोहराजाए चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकाव्यो हे साधु ! जो तु पण कपट राखीश-शल्य राखीश तो तारा मनरूपी अश्वने रुग्ण रहित बनावीने मोहराजा मरावी नाखशे, तारायी मोक्षप्राप्ति थइ शकशे नहीं, जन्ममरणादिक दुःखो भोगववा पडशे माटे सम्यक्प्रकारे आलोचना कर-प्रायश्चित्त स्वीकार

आलोचना कोनी पासे लेवी ?

ऊपर पोताने लागला अतिचार संबंधी प्रायश्चित्त लेवानी आवश्यकता दर्शावी हवे आलोयना कोनी पासे लेवी ते बाबत जणाववा कहे छे के-आलोयण पोताना गच्छना आचार्य पासे लेवी कह्यु छे के—"आयरियाइ सगच्छे, संभोइयइयरगीअपासत्थे । सारूवीपच्छाकड-देवयपडिमाअरिहसिद्धे ॥१॥" अर्थात् (१) स्वगच्छना आचार्यादिक पासे (२) एक ज सामाचारीवाळा अन्य गच्छना आचार्यादिक पासे, (३) गीतार्थ पासत्था पासे, (४) गीतार्थ सारूपी पासे, (५) गीतार्थ पच्छाकड पासे, (६) देव पासे, (७) जिनप्रतिमा पासे अने छेवटे (८) अरिहंत, सिद्धभगवंतनी साक्षीए आलोयणा लेवी 'श्रीव्यवहारसूत्रनी टीकामां आ संबंधी विशेष वर्णन आपवामां आव्यु छे तेमां ते क्रमथी कह्यु छे के-आलोयणा स्वगच्छना आचार्य पासे लेवी तेना अभावमां उपाध्याय पासे, ते न मळे तो प्रवर्तक पासे ते न मळे तो स्थविर पासे अने ते पण न मळे तो गणावच्छेदक* पासे आलोयण लेवी उचित छे आम पांचे अनुक्रमे लेवा आचार्य होवा छतां उपाध्याय पासे, अने उपाध्याय होवा छतां प्रवर्तक पासे प्रायश्चित्त ग्रहण न कराय दैवानुयोगे स्वगच्छना ऊपर जणावेल पांच पैकी कोईनो पण सहयोग न होय तो पोताना गच्छनी सामाचारी पाळता बीजा आचार्यादिकनी पासे आलोयण लेवी तेमां पण प्रथम आचार्य, तेना अभावमां उपाध्याय इत्यादिक पांचे प्रकारो समजी लेवा आ प्रमाणे अन्य गच्छनो पण संयोग न थाय तो गीतार्थ पासत्था पासे आलोयणा लेवी ते पण न मळे तो गीतार्थ सारूपी× पासे लेवी लिंगमात्र स्वीकारीने गृहस्थपणे जे रहेल होय तेने

* गणना अमुक विभाग(थोडा साधुओ)ने लइने गच्छनी पुष्टि माटे तथा उपधिनी गवेषणा निमित्त विचरे तेने गणावच्छेदक कहेवामां आवे छे

× वर्तमान काळे गीतार्थ पासत्था, सारूवी के पच्छाकड विगेरे पासेथी प्रायश्चित्त ग्रहण करवानु प्रचलित जणातु नथी

गीतार्थ मानवी कहेवाय तेनो पण अभाव होय तो गीतार्थ पच्छाकड पासे लेवी जेणे प्रथम चारित्र स्वीकार्युं होय अने पछी मूकी दीधु होय, गृहस्थपणे रहेलो होय तमज शास्त्रनो बोध होय तेने गीतार्थ पच्छाकड कहेवाय जो गीतार्थ पासत्था ए गीतार्थ मानवो पासे आलोयण लेवानो प्रसंग आव तो तेमना आदरसत्कार करवा तथा वादणा देवापूर्वक सर्व मर्यादा साचववी, छता पण पासत्थादिक पोते मनमा एम विचार करे के-मारामा तो कोई पण प्रकारनो गुण नथी माटे हु आ भाट वदावु ? अने तेम विचारीने वादवाना निषेध करे तो तेओने बेसवा माटे आसन आपी, प्रणाम करी आलोयणा लेवी गीतार्थ पच्छाकड पासे आलोयण लेवी पडे त्या तेने थोडा समयनी सामायिक उचरावीने, साधुवेष पहेरावीने विधिपूर्वक आलोयण लेवी कदाच पासत्थादि वंदावयानी अभिलाषा करे तो तेमने एकातमा वदन करवु, पण जनसमूह देखता वदन करवुं नहीं कारण के तम करवाथी शासननी हीलना थाय

हवे उपर कह्यो तेवो कोइ पण योग न मळे तो देव पासे आलोयण लेवी कोरटकादिक चैत्य, गुणशीलादिक चैत्यमा भगवान् मुनिसुव्रतस्वामी तथा श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रमुख तीर्थंकर अगर तो गणधरभगवतो समवसर्या होय अने त्यांय साधुओने जे प्रायश्चित्तो आप्या होय ते स्थाना चैत्यना अधिष्ठायक देव साभळ्या होय तथी तेवा देव पासे पण आलोयणा लेवी ते सम्यग्दृष्टि देवनी आराधनार्थे अट्ठम तप करवो अने तपश्चर्याना प्रभावथी आसन चलायमान थवाथी ज्यारे ते प्रगट थाय त्यारे तने पोताना अतिचार जणावीने जे प्रायश्चित्त आपे ते ग्रहण करवु कदाच ते अधिष्ठायक देव च्यवी गयो होय अने तेने स्थाने बीजा देव उत्पन्न थयो होय तो अट्ठम तप करवाथी ते आव अने कहे क-"हु महाविदेह क्षेत्रमा तीर्थंकर भगवतने पूछीने आवु" पछी आज्ञा लईने महाविदेहमा जाय अने तीर्थंकर भगवंते जे आलोयण दर्शावी होय ते साधुने जणावे अने ते प्रमाणे आचरण कर आ प्रमाणे पण न बने तो अरिहंत परमात्मानी प्रतिमा पासे एटले क जिनचैत्यमा जई, पोताना पाप प्रकाशी, पोते प्रायश्चित्त आपवानु जाणतो होय तो आपमेळे सूत्रोक्त विधिपूर्वक अगीकार करे परन्तु जिनचैत्य पण न होय तो अरिहंत या सिद्धनी साक्षीए आलोयण ले एटले के पूर्वदिशा अगर तो उत्तर दिशा सन्मुख ऊभो रही, पोताना पाप प्रकाशी, सूत्रानुसार प्रायश्चित्त स्वीकारे आ पद्धति मर्यादाए ग्रहण करवानी छ पोते जाणकार होय अने ऊपर दर्शावेल आचार्यादिकनो योग होवा छता आपमेळे कपट राखी आलोयण स्वीकारे तो ते मिथ्या जाणवी, कारण के कपटपूर्वकनी क्रिया निष्फळ ज छ पछी आलोयणनी महत्ता दर्शावता कहे छ क-"सल्लुद्धरणनिमित्त, खित्तमि अ सत्तजो अणमयाइ । कालेण बारवरिसा, गीयत्थगवेसण कुज्जा ॥१॥" अर्थात् पोताना पापरूपी शल्यने निर्मूळ करवाने माटे सातसो योजन सुधीमा आचार्यादिक

होय तो रह्या जाय अने चार परम पवित्र तथा गीतार्थनी पासे शुभ आवी रीते शास्त्रोक्त विधिथी जे आलोचना करे ते शुद्ध आलोयण कहेवाय.

(९) विकथा-रहित-ए नवमुं लक्षण दर्शावता कहे छे के-ते दमशा विकथा करवामां आसक्त रहे; चार प्रकारनी शुभ कथा छे, अने तेनाथी विपरीत विकथा सात प्रकारनी छे स्थानांगादि सूत्रोमां तेनुं वर्णन करवामां आव्युं छे "चउव्विहा कहा पन्नत्ता, तंजहा-अक्खेवणी १, विक्खेवणी २, संवेयणी ३, निव्वेयणी ४। वीतराग परमात्माए चार प्रकारनी कथा कहेली छे (१) अक्खेवणी, (२) विक्खेवणी, (३) संवेयणी अने (४) निव्वेयणी. (१) अक्खेवणी आक्षेपणी कथा एटले जे कथाथी आत्मा संसार परत्वना मोह त्यजी दई तत्वनी वात ग्रहण करे-तत्वनी वातमां लयलीन बने ते (२) विक्खेवणी-विक्षेपणी कथा एटले जे कथा सांभळवाथी आत्मानुं मन-चित्त कुमार्गथी पाछुं हटे-कुमार्ग छोडी देवा तत्पर बने ते (३) संवेयणी-संवेदिनी कथा एटले जे कथा सांभळवाथी आत्माने मोक्षनी अभिलाषा थाय ते (४) निव्वेयणी-निर्वेदिनी कथा एटले आत्मानुं मन संसार परथी उतरी जाय ते हवे ते प्रत्येक कथाओना भेदो दर्शावता प्रथम आक्षेपणी कथाना प्रकार कहे छे के-"आयारे १ ववहारे २, पन्नत्ती ३, चेव दिट्ठीवाए य ४। एसा चउव्विहा खलु, कहा उ अक्खेवणी नाम ॥ १ ॥" आक्षेपणी कथाना चार भेद छे-आचार, व्यवहार, प्रज्ञप्ति अने दृष्टिवाद. आचार एटले आत्माने साधुओनो आचार बताववो, एटले के साधुए लोच करवो, उघाडे पगे विहार करवो, जोई-तपासीने (ईर्यासमिति पूर्वक) चालवुं, उघाडे मुखे न बोलवुं, प्राण जाय तो पण सचित्त पाणी न पीवुं इत्यादि आचार दर्शाववो ते आ प्रमाणे कहेवाथी आत्मा सम्यक्त्व पामे अने बीजा मिथ्यात्वीना पाशमां न फसातां आवी क्रियावाळा शुद्ध गुरु होय तेने ज माने. बीजो भेद व्यवहार एटले साधुनो व्यवहार दर्शावे छे-कोई दोष लाग्यो होय अने प्रमादथी देवो भूली जवाय अने रात रही जाय तो पक्खमासीनो दंड आवे, कोई गृहस्थादि पासे पग धोवाय अगर तो मसळावे तो निशीथसूत्रमां कहेल चारमासी दंड आवे, एवी ज रीते गृहस्थनी भाषा बोले अगर तो गृहस्थ पासे बीजा वंदन कराय तो पण दंड आवे-आ प्रमाणे कहेवाथी आत्मानुं मन मिथ्यात्वथी उतरी जाय अने शुद्ध संयमना पालक साधु प्रत्ये अनुराग प्रगटे. त्रीजो भेद पन्नत्ती छे, एटले के कोई आत्माना मनमां शंका उपजे अने ते गुरुने पूछे तो तेने मधुर वचनोथी जवाब आपे, तेने जीवाजीवादि तत्वोमां श्रद्धा उपजे अने मनमां पाको निर्णय थाय के साधु हितकारक कहे छे अने मनमां लेशमात्र पण रोष नथी आ प्रमाणेना वर्तनथी श्रोताजन बहु

दृढ थाय छे चोथो भेद दृष्टिवाद छे एटले के श्रोता समजु-ज्ञानवंत होय तो तेने जीवाजीवादिक तत्त्वोनुं सूक्ष्म वर्णन समजावे-कहे जेथी श्रोताना मनमा आश्चर्य उत्पन्न थाय के आवुं सूक्ष्म-तलस्पर्शी ज्ञान वीतराग परमात्मा सिवाय कोण कही शके ? आ प्रमाणे तेने समकित प्रत्ये दृढ अनुराग थाय आ चार भेदो आक्षेपणी कथाना छे वळी आ आचार्यो आ चार भेदोना अर्थ ते ते नाम प्रमाणे ना सूत्रो कहे छे आचारांग, व्यवहारसूत्र, प्रज्ञापना अने दृष्टिवाद आदि शब्दथी बीजा पण भेदो जाणवा, परंतु मुख्यपणे आ चार भेद कह्या छे हवे आक्षेपणी कथानो रस वर्णवता कहे छे के—" विज्जाचरणं च तवो, पुरिसक्कारो य समि-इगुत्तीओ । उवइस्सइ खलु जहियं, कहाइ अक्खेवणीइ रसो ॥ १ ॥ " अर्थात् भावरूप अंधकार-अज्ञानना नाश करनार ज्ञान ते विद्या, संचित कर्मनी निर्जरार्थे जे तपश्चर्यादि करवामां आवे ते तप, कामरूपी शत्रुने हणवा माटे जे उद्यमशीलपणुं ते पुरुषार्थ, पांच समिति अने त्रण गुप्ति-आवा प्रकारनी जे कथा करवी-उपदेश आपवो ते आक्षेपणी कथानुं रहस्य छे

विक्षेपणी कथाना चार भेद दर्शावता कहे छे के-

" पुव्विं ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ, ससमयगुणे दीवेइ, परसमयदोसे उवदंसेइ एसा पढमा १ । पुव्विं परसमयं कहित्ता तस्सेव दोसे उवदंसित्ता पुणो ससमयं कहेइ गुणे उवदंसेइ एसा बिइया २ । मिच्छावायं कहित्ता सम्मावायं कहेइ, परसमयं कहित्ता तेसु चेव परसमएसु जे भावा जिणप्पणीएहिं भावेहिं सह विरुद्धा असंता चेव विअप्पिआ ते पुव्विं कहित्ता दोसा य तेसिं भणिऊण पुणो जिणप्पणीयभावसारिसा घुणक्खरमिव कहवि सोभणा भणिया ते कहेइ, अहवा मिच्छावाओ नत्थियवाओ सम्मावाओ अत्थियवाओ, तत्थ पुव्विं नाहियवाईण दिट्ठीओ कहित्ता पच्छा अत्थियपक्खवाईण दिट्ठीओ कहेइ, एसा तइया ३ । सम्मावायं कहित्ता मिच्छावायं कहेइ, सोवि एवं चेव नवरं पुव्विं सोभणे कहेइ, पच्छा इयरे त्ति चउत्था ४ । " अर्थात् पोतानो धर्म संभळावीने तेना गुणनुं वर्णन करे के-आ जैनमत जेवो बीजो कोई पण श्रेष्ठ धर्म नथी ते अहिंसामय छे, ते विनयमूळ धर्म छे, एनी सदुपासना करनार स्वर्ग अने प्रांत मोक्षलक्ष्मीनो भोक्ता बने छे इत्यादि आ प्रमाणे प्रथम स्वधर्मनी श्रेष्ठता दर्शावी परमतना दोष दर्शाववापूर्वक कहे के-जैनधर्म सिवायना बीजा धर्मो दोषयुक्त छे परधर्मीओ काचा-सचित्त पाणीवडे स्नान करी असंख्याता जीवोने हणी नाखे छे, पंचाग्नि तप करी तेमां तेउकायना अनेक जीवोनो संहार करे छे

तपश्चर्या करे छे पण ते अज्ञान कष्ट छे, कारण के अनंत जीवोना स्थानभूत अनंतकाय-कंदमूळ अने अभक्ष्य फळो खाय छे तेमज राक्षसनी पेठ रात्रिभोजन पण करे छे एवी रीते अन्य दर्शनोना दूषणो देखाडी स्वधर्मनी पुष्टि करे ते प्रथम भेद

पुव्वि परसमय अन्य मतानी वात करी तेनु मिथ्यापणु सिद्ध करी बतावे विष्णुमार्गी कहे छे के-विष्णुए ज आ जगत रच्यु-उत्पन्न कर्यु जगतना जीवोने ते उत्पन्न करे छे अने मृत्यु पण एज पमाडे छे परन्तु आ कथन मृषा छे जो विष्णु प्रथम जीवोने जन्मावी सुखो आपे अने पाछो मृत्यु पमाडतो होय तो तेने बाळहत्या-जनहत्याना दोष लागे बाळहत्या-जनहत्या करनार तो आ लोकमां महापातकी-महाघातकी गणाय छे एवी व्यक्तिनु नाम पण केम लेवाय ! अने तेनी पूजनादि क्रिया सभवी ज केम शके ? विष्णुनु जगत्कर्तृत्व कदी घटी शकतु ज नथी आवी रीते विष्णु मतनो निरास कर्या पछी ब्रह्मवादी संबधी कहेवु के-सर्व जीवात्मा ब्रह्म स्वरूप छे ते पण खोटु छे, कारण के तेम मानवाथी तप-जपादिक क्रिया अने धार्मिक करणी निष्फळ बने छे जो बधा ज ब्रह्मस्वरूप होय तो सर्वनी सरखी बुद्धि होवी जोईए अने एक-बीजी व्यक्तिनी वच्चे जे भिन्नता-विचारभेद अने असमानता जोवामा आवे छे ते कदी होई शके नहीं आ रीते ब्रह्ममतने मिथ्या जणावी, सांख्य, मीमांसकादि दर्शनोनु निष्फळपणु दर्शावी स्वमत-जैनमतनी पुष्टि करवी स्याद्वाद सिद्धांतनी अपूर्वता जणाववी अने स्वमतनु अविसंवादपणुं प्रगट करवु-आ बीजो भेद

मिच्छावाय कहित्ता सम्मावाय कहेइ मिथ्यावादनु कथन करीने पछी सम्यग्वादनु निरूपण करवु परदर्शननी वात करीने ज्यां जे जे स्थाने दोषापत्ति होय ते दर्शावे अने तेनी साथोसाथ जैनदर्शनमा जणावेल विशिष्टता देखाडे दाखला तरीके भागवतमा एक कथा उल्लेख छे के पंडित लोक धनिक लोको पास शा माटे जाय ! वस्त्र लेवा माटे त्यारे जणाववामा आवे छे के शु वस्त्रो रस्तामा नथी मळता के धनिक वर्ग पासे जवु पडे ? रस्तामां जे वस्त्रना टुकडा पड्या होय ते ग्रहण करी, तेने धोई तेनी कंथा बनावीने पहेरवी आ दृष्टांतनो जैन सिद्धांतानुसार विरोध दर्शाववा के रस्तामा पण पडेला वस्त्रो ग्रहण करवाथी अदत्तादाननो दोष लागे, वस्त्र धोवाथी जीवहिंसा थाय अने कंथामा जीवोत्पत्ति थवाथी तेनी जयणा न रहे आ प्रमाणे दोष देखाडी तेने अनुरूप जैन-आम्नाय समजाववो जैन साधुओ वस्त्रादि मागवा माटे जता नथी ते तेनु निःस्पृहपणु जाणवु आ कारणथी वस्त्रादिनी भिक्षा माटे गृहस्थवर्ग पासे जवानु कल्प्य गण्यु छे आवी रीत मिथ्यामतनु वर्णन करी, तेनी निरुपयोगिता दर्शावी आस्तिक मतनी सिद्धि करे ते त्रीजो भेद

सम्मावाय कहित्ता मिच्छावाय कहेइ पहेला सम्यग्वाद कहीने पछी नास्तिक मत कहे तेनी हकीकत ऊपरना त्रीजा भेदनी जेवी ज समजवी, परन्तु पहेला जैन मतनु श्रेष्ठपणु दर्शावी पछी बीजा दर्शनोनी वात करे तेमज दोषस्थान वर्णवे-आ चोथो भेद

संवेदनी कथाना चार भेद छे-(१) आयसरीरसंवेयणी-आ शरीर अशुचि जन्य छे ते शरीर शुक्र अने रुधिर आदिथी बधायेल छे वळी आ शरीरने विषे पण मास, चरबी, भेद, हाडका, मज्जा, चामडी, नसो, रोमा वलि, नख, दांत, आंतरडा विगेरे दुर्गंधमय अवयवो छे वळी आ शरीरने विषे मळ, मूत्र भरेला छे आवा शरीरने धोवाथी पण शुं ते शुद्ध थाय? हाडकाने वारंवार धोवाथी जो ते शुद्ध थाय तो आ शरीरने वारवार धोवाथी शुद्ध थाय पण ते असंभवित छे, कारण के हाडकु कदापि शुद्ध थतु नथी आवी रीते वर्णन करी श्रोतानी शरीर प्रत्येनी रुचि ओछी करे, शरीर नवथी आचारने ज श्रेष्ठ मानता होय तो ते भ्रमणा टाळी, सवेग उपजे तेवी कथा करवी ते प्रथम भेद (२) परसरीरसंवेयणी-जेवी रीते पोताना शरीरनु अशुचिमय वर्णन कर्यु तेवी रीते पारकाना शरीरनी वात करवी मृत्यु पछीना शब विषे वर्णन करता साभळनारने सवेग उपजे तेवु वर्णन करवु ते बीजो भेद (३) इहलोयसंवेयणी-आ मनुष्योना शरीर असार छे, अनित्य तेमज अध्रुव छे केळना थभ सरखो आ कायानी शोभा शा माटे करवी ? कोई हमेशा माटे रहेवानु नथी तो पछी नाशवत शरीरनी विभूषा शी ? आ प्रमाणे वात करी सवेग उपजाववा प्रयत्न करवो ते त्रीजो भेद (४) परलोयसंवेयणी-परलोक संबधी दुःख-दर्शन करावी श्रोताने सवेग उपजाववो देवोने पण परस्पर इर्ष्या होय छे, तेओ एक-बीजानो उत्कर्ष सहन करी शकता नथी वळी क्रोध, मान, माया अने लोभने वश पडीने दुःखी थइ रह्या छे लोभने वशी भूत थईने अनेक प्रकारनी चिंताओ करे छे अने मननी समाधि रहेती नथी देवगतिमा पण आवा प्रकारनु दुःख छे तो बीजी त्रण गतिनी तो वात ज शी करवी ? मनुष्य अने तिर्यंचगतिमा प्रत्यक्ष दुःख नजरे जोवाई रह्या छे आ त्रण गतिमा सुखनु बिन्दु पण नथी वळी नरकगतिना दुःखनु तो वर्णन ज शा माटे करवु ? नरक एटले तो दुःखनो सागर आ रीते कथा कहीने श्रोताने सवेग-ज्ञानगर्भित वैराग्य उपजाववो ते चोथो भेद

निर्वेदनी कथा पण चार प्रकारे छे (१) इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए चेव दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति-आ लोकमा जे कुपथगामी बने छे अगर तो दुष्कर्म करे छे तेने ते ते अशुभ कर्तव्यो आ ज लोकमा सतापदायक थाय

छे जेम-कोई चोरी करे, परस्त्रीगमन करे अथवा विषयलंपटी बने तो तेने लगता अशुभ पापथी आ ज लोकमां दुःखविपाक भोगववो पडे छे, कारण के राजा शिक्षा करी कारागृहमां नाखे, लोको अपमान-तिरस्कार करे, अपकीर्ति प्रसरे, अन्यनो विश्वास ओछो थई जाय अने धनहानि थाय आ प्रमाणे श्रोताने समजावी पापकार्यथी पाछो वाळे, पापकृत्य करवाथी भवभीरु बनावे ते प्रथम भेद (२) इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए दुहविवागसंजुत्ता भवंति-आ भवमां करेला अकृत्यो परलोकने विषे अतिशय दुःखदायक थाय छे आवा प्रकारना पापोदयने कारणे जीव नरकमां पडे नरकनां महादुःखो सांभळतां पण शरीरे कमकमाटी छूटे तो ते दुःखो सहन तो शी रीते थइ शके ? नरकमां क्रूर, जंगली पशुओ फाडी खाय, क्षुधा लागे, परमाधामी देवो कर वतथी कापे, तृषानी इच्छा थाय त्यारे उकाळेलुं तप्त शीशुं पीवरावे, शीतनी इच्छा थाय त्यारे करवत जेवा पांदडावाळा वृक्ष नीचे लई जाय परस्त्रीगमन करनार शख्सने तपावेला लोहस्तंभ साथे आलिंगन करावे आ प्रमाणे परलो कमां दुःखदायी स्वरूपनुं वर्णन करी श्रोताने पापकार्यथी निवृत्त करे ते बीजो प्रकार (३) परलोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति-पूर्वभव मां करेला दुष्ट पापकारी कार्योथी आ लोकमां दुःखपरंपरा प्राप्त थाय छे, तिर्यंचो केटलुं कष्ट भोगवे छे ? गमे तेटलुं दुःख थाय तो पण वाचाद्वारा कही शके छे ? मालीक ओछुं-वधतुं खावापीवानुं आपे अगर तो विशेष वहतो बोजो वहन करावे तो पण कोइनी पासे फरियाद करी शके छे ? सदैव परा धीन दशामां ज रहेवुं पडे छे आ उपरांत केटलाक मनुष्यो जन्मथी ज व्याधि वाळा, ठुंठा लूला, लंगडा अने पागळा थाय छे ते पण पूर्वभवमां पापकृत्यनुं ज परिणाम छे चंडालादि नीच कुळमां जन्म थवो, दरिद्री अवस्था प्राप्त थवी, आदर-सत्कार न मळवो भूख अगर तो तृषानुं दुःख सहन करवुं विगेरे विगेरे वर्णन करी श्रोताने पापकार्यथी पाछो वाळवो ते त्रीजो प्रकार (४) परलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए चेव दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति-पूर्वभवमां एकत्र करेल पापपुंज परलोकमां अत्यंत कष्टकारक थाय छे बांधेला पापकर्मने योगे जीव नरकमां जाय, त्यां नरकभूमिना अवर्णनीय अने असह्य संकटो सहन करे, क्रूर पक्षीओ देहने फोली खाय, कुंभीपाकमां पकावे वैतरणी नदीमां उतारे, धगधगता अग्निकुंडमां फेंके, क्रूरी पशुओना डंख देवराव, शरीरना सरसव जेटला टुकडा करी नाखे-आ प्रमाणे अवर्णनीय दुःख सहन करीने पण आयु पूर्ण थये पाछो तिर्यंच योनिमां जन्मे, त्यां पण पारावार कष्ट सहन करी धर्म भावनाना अभावमां पाछो दुर्गतिमां जाय जो तेने धर्मभावना स्फुरे नहीं अगर तो पुण्यसंचय न थाय तो आ भवपरंपरा चालु ज रहे आ प्रमाणे वर्णन करी श्रोताने वैराग्यवासित बनावे ते चोथो प्रकार

आ वर्णनमां कथन करनार व्यक्तिनी अपेक्षाए इहलोक अने परलोक समजवा प्ररूपणा करनार-व्याख्याता मनुष्य होवाथी मनुष्यलोक ते इहलोक अने बाकीनी त्रणे गति (देव, तिर्यंच अने नरक) परलोक समजवी ऊपर वर्णवेली चारे प्रकारनी कथाओ प्ररूपनारनी अपेक्षाए (१) अकथा, (२) कथा अने (३) विकथा थई शके छे ते कई रीते समजी शके ? ते समयमां जणावता कहे छे के-" मिच्छत्तं वेयन्तो, अन्नाणी ज कहं परिकहेइ ॥ लिंगत्थो व गिही वा, सा अकहा देसिया समए ॥ १ ॥" अर्थात् मिथ्यात्वमोहनीयना उदयवाळो एटले के मिथ्यात्वी तेमज अज्ञानी एवो कोई पण लिंगधारी एटले के साधुनो वेष धारण कर्यो होय परन्तु समकित जेने स्पर्श्युं नथी ते तेमज गृहस्थ जे कंई पण कथा करे-कहे तेने सिद्धान्तने विषे अकथा कहेल छे द्रव्य लिंगी-मात्र वेषधारी कोने कही शकाय ? ते समजवाने माटे अंगारमर्दकाचार्यनुं कथानक शास्त्रकार महाराज जणावे छे

अंगारमर्दकाचार्यनुं दृष्टान्त—

कोई एक नगरने विषे एक आचार्य महाराज पोताना शिष्य-परिवार साथे स्थिरता करी रह्या हता तेवामां एक दिवसे तेमना एक शिष्यने रात्रि समये स्वप्नुं आव्युं स्वप्नामां तेणे जोयुं के-एक महाशूकरनी पाछळ पांच सो हस्तिओ चाल्या आवे छे शिष्य आ स्वप्नुं रहस्य समजी शक्यो नहीं तेणे आ स्वप्ननो अर्थ समजवा स्वयं घणा विचार कर्यो परंतु तेनी बुद्धि तारतम्य समजवा निष्फळ नीवडी छेवटे तेणे ते हकीकत पोताना गुरुने जणावी तेनुं रहस्य पूछ्युं विचक्षण गुरुए तात्कालिक उपाय आपता जणाव्युं के-" हे सुज्ञ शिष्य ! आजे आ नगरमां पांच सो शिष्यना परिवार साथे एक आचार्य आवशे पांच सो शिष्य ते हस्तिओ सदृश जाणवा अने महाशूकर समान आचार्य जाणवा पांच सो शिष्यो भव्य छे, ज्यारे तेओनो गुरु आचार्य अभव्य छे "

गुरुमहाराजे स्वशिष्यने आ प्रमाणे जणाव्या बाद गोचरीना समये पांच सो शिष्यना परिवारयुक्त अंगारमर्दकाचार्य ते नगरमां आवी पहोंच्या तेनी रहेणीकरणी, क्रियायुक्तता अने विधि-विधान नजरे देखी एक स्वप्नवाळा शिष्यने मनमां विचार आव्यो के-आवा चारित्रधारी अने क्रियाशील गुरु अभव्य केम होई शके ? तेणे तेमना आहार-विहार विगेरे प्रत्येक क्रियानुं सूक्ष्म रीते निरीक्षण करवा मांड्युं छतां पण तेने तेना कोई पण दोष या तो अतिचार मालूम पड्यो नहीं तेणे पोताना हृदयनी वात स्वगुरुने जणावी पूछ्युं के-" गुरुवर्य ! तेमनो आचार-विचार तो शुद्ध मोक्षमाराधक साधु जेवो छे तो

तेमने अभव्य कई रीते कही शकाय ?" गुरुने पोताना शिष्यनी आ वात सांभळी, वाद हेतुथी अनुमान बांधवाना तेनी उतावळ माटे मनमां वक्र हास्य आव्युं परन्तु तेने दबावी दई गुरुए तेने कह्युं के-" हे वत्स ! तारे जो खरेखर खात्री ज करवी होय तो हुं कहुं ते प्रमाणे कर. ए प्रमाणे करवाथी तारी भ्रमणा ने शंका बधी दूर थई जशे. केटलाक कोलसा लावी तेने रात्रि समये गुप्त रीते तेमना स्थंडिल-मातरुं करवाना मार्गमां पाथरी दे, पछी जागृत रहो जे थाय तेनुं बराबर निरीक्षण करजे." शिष्य गुरुना आ वचननो भावार्थ समजी शक्यो नहीं, कोलसा मात्रथी परीक्षा कवी रीते थशे ? ते पण समजायुं नहीं, छतां पण गुरुवचन पर पूर्ण विश्वास राखी तेणे ते प्रमाणे कर्युं.

अल्प रात्रि व्यतीत थता अगारमर्दकाचार्यना शिष्यो पैकी एक शिष्य लघुनीति (पेशाब) करवा उठ्यो. आगळ चालता कोलसा पर पग पडवी पडले कोलसो दबावाथी चरड एवो शब्द थयो. ध्वनि थतां ज ते शिष्ये विचार्युं के आ भूमि जीवव्याप्त जणाय छे. आगळ चालीश तो विशेष जीवहिंसा थशे, माटे जीवहिंसा करवा करतां लघुनीतिनुं कष्ट सहन करवुं ते ज श्रेयस्कर छे. आवो विचार करी ते शिष्य पाछो फरी गयो अने लघुनीति कर्या सिवाय ज सूई गयो. बाद थोडो समय पसार थतां बीजो शिष्य जागृत थयो अने प्रथम शिष्यनी माफक आगळ आ, कोलसानो ध्वनि सांभळतां ज पहेला शिष्यनी माफक विचारणा करी, पाछो आवी सूई गयो. आ प्रमाणे थोडो समय पसार थयो हशे तेवामां अगारमर्दकाचार्यने लघुनीति करवानी शंका थई तेने ऊभा थता जोई पहेला स्वप्नवाळा शिष्यना कर्ण विशेष सावचेत थया अने तेणे छे ते एकाग्रतापूर्वक जोवा लाग्यो. अगारमर्दकाचार्य आगळ चालता कोलसा पर पग पड्यो अने चरड-चरड एवो अवाज थवा लाग्यो पडले जे तेमना हृदयमां हतुं ते वाणीद्वारा बहार आवी गयुं. चरड-चरड अवाज सांभळी तेओ बोल्या के-" बापडा आ जीवो तो आ प्रमाणे ज मृत्युने वश थवा लायक छे." आ वचन पेला शिष्ये सांभळ्या. अगारमर्दकाचार्य तो मातरुं करी आवी निश्चिन्तपणे सूई गया. पेला स्वप्नवाळा शिष्यने खातरी थई के- आ आचार्य खरेखर अभव्य ज छे. गुरुए कह्युं हतुं ते अक्षरशः सत्य ज नीवड्युं. आ आचार्य द्रव्यथी बधी क्रिया करे छे अने विधिविधान साचवे छे पण भाव थी कंइ पण करता नथी. तेमनुं हृदय सगडीलिया पाषाण सदृश अनार्द्र ज जणाय छे. आवा आत्मानो कदी उद्धार न ज थई शके. तेने पूरेपूरी खातरी थई चूकी के आ आचार्य अभव्य छे. ते वात पोताना शिष्योना उद्धार करी शकशे नहीं. पाषाणना जहाजनो नायक पोताना साथीओने तारे के डुबाडे ? आम विचारी परोपकार भावनाथी ते शिष्ये रात्रिनो सब व्यतिकर अगारमर्दकाचार्यना शिष्य समूहने जणाव्यो. शिष्योए पोते जाते नियमे पण पूर्वनी पेठे परीक्षा करी, पोताना गुरुनुं आवुं दयाविहीन पाषाणहृदय निरखी शिष्यसमुदाय चेती गयो. तरत ज

तेमनो त्याग करी ते मध पेठे कल्पवाळा शिष्यना गुरुना शिष्यो थईने रह्या

आवा अंगारमर्दकाचार्य जेवा द्रव्यलिंगी पण मिथ्यात्वी ज जाणवा तेमनी कोई पण प्रकारनी कथा अकथा ज जाणवी श्रीआवश्यकसूत्रनी चूर्णीमां पण "चारित्र दंसणा रहुं।" ए पदना विवरणमां जणाव्युं छे के-पासत्था पण मिथ्यादृष्टी ज जाणवा तेओ लिंगमात्र धारण करे छे परन्तु तेमनुं हृदय वैराग्यरसथी लेपायेलुं होतुं नथी तेना द्वारा कहेवायेल पूर्वोक्त चार प्रकारनी-आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी तथा निर्वेदनी-कथाओ पण अकथा ज जाणवी गृहस्थने माटे जणावता कहे छे के ब्राह्मणादि इतर जातीय गृहस्थे कहेल कथा पण अकथा जाणवी

हवे प्रतिवादी आ बाबतमां शंका करतां प्रश्न करे छे के-"तमे ऊपर कहेल व्यक्तिनी कथाने अकथा शा माटे कहो छो?" शास्त्रकार तेनो जवाब आपतां जणावे छे के-"विशिष्टफलाभावात्" अर्थात् कथाना विशिष्ट फळनो अभाव होवाथी कथानुं फळ छे संवेग-वैराग्य जे कथा सांभळवाथी वैराग्य उद्भवे, संसारनी असारता जणाय, इत्यादि संपत्तिनी क्षणभंगुरता समजाय तो ते कथाने साची कथा कही शकाय द्रव्यलिंगी पासत्थादिकना कथनथी वैराग्य प्रगटतो नथी, कारण के जेओ पोते पत्थरना नावमां बेसीने तरवानी आकांक्षा राखे छे ते अन्यने कई रीते तारी शके?

हवे बीजो कथा संबंधी भेद दर्शावता कहे छे के-"तवसंजमगुणधारी, जं चरणरया कहन्ति सब्भावम्। सव्वजगज्जीवहियं, सा उ कहा देसिया समए॥२॥" जे बाह्य अने अभ्यंतर-ए प्रमाणे बार प्रकारना तपनुं आचरण करनार, सत्तर प्रकारना संयमनुं पालन करनार तेमज संयमने विषे रक्त एवा कोई पण साधु, विश्वना समग्र प्राणिओने हितकारक-परोपकारक जे कथा कहे ते कथाने श्रुतसागरने विषे कथा कहेली छे आ प्रमाणे कथा कहेवाथी तेमज सांभळवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे, प्राणी सम्यग् बोध प्राप्त करे छे अने उपदेशदाता साधु पण शुद्ध आचारी होवाथी श्रोताजनने ते प्रमाणे सम्यग् अनुकरण करवानुं मन थाय छे

हवे त्रीजो विकथानो भेद दर्शावता कहे छे के-"जो संजओ पमत्तो, रागद्दोसवसगओ परिकहेइ। सा उ विकहा पवयणे, पन्नत्ता धीरपुरिसेहिं॥३॥" कोई रागद्वेषयुक्त (मध्यस्थता विनाना) प्रमादी साधु जे कथा कहे तेने तीर्थंकर परमात्माए प्रवचन विषे-सिद्धान्तने विषे विकथा कहेली छे आ प्रमाणे त्रणे प्रकारो समजी ते प्रमाणे आचरण करवा प्रयत्न करवो आ संबंधमां विशेष एटलुं जाणवुं के-कथानो उपदेशक के सांभळनार जो राग द्वेषथी युक्त होय तो ते कथातर बनी जाय छे एटले कथा पण विकथारूपे

थनी जाय ■ अहीं प्रसंगोपात्त जणावेल गाथाओ श्रीदशवैकालिक निर्युक्तिनी छे.

आपणे पूर्वे जोई गया छीए के आचार्य जो विकथा करे तो ते उन्मार्ग गामी कहेवाय छे ते विकथानुं स्वरूप अने प्रकारो संबंधी वर्णन करता जणावे छे के–"विकहा सत्तहा पन्नत्ता तंजहा–इत्थिकहा १ भत्तकहा २ देसकहा ३ रायकहा ४ मिउकालुणिया ५ दंसणभेइणी ६ चरित्तभेइणी ७॥" विकथा सात प्रकारनी छे—१ स्त्रीकथा, २ भोजनकथा, ३ देशकथा, ४ राजकथा, ५. मृदुकारुणिकी, ६ दर्शनभेदिनी अने ७ चारित्रभेदिनी कथा

१. स्त्रीकथा— स्त्री संबंधी कथा करवी स्त्रीनी प्रशंसा करता कहे के-अमुक जातिनी स्त्री तो अतिशय रूपवती होय छे, तेनो देह केळना स्तंभ जेवो घाटीलो अने पातळो छे, शरीर पुष्प जेवुं सुकोमळ छे, चन्द्रना मंडळ सरखुं तेनुं कांतिमान मुख छे, कमळना पत्र जेवी अगर तो मृगना नेत्र जेवी तेनी आंखो छे, तेनो कटिप्रदेश सिंहनी केड जेवो पातळो छे, स्तन कळश जेवा उन्नत-ऊंचा ने पुष्ट छे, विलासी हाथीनी जेवी मदगति छे–आ प्रमाणे स्त्रीनी प्रशंसा करे तो पण ते विकथा छे प्रशंसा न करता निंदापूर्वक कहे छे के–आ स्त्रीनी गति तो ऊंट जेवी वक्र छे, कागडानी माफक वाणी कर्कश छे, गर्दभ जेवो अशुभ स्वर छे, कदरूपा स्वरूपवाळी छे, आवी अपशुकनियाळ स्त्रीनुं मुख कोण जुए ! आ प्रमाणे निंदा करे तो पण ते विकथा ज छे

आ प्रमाणे स्त्रीकथा करवाथी पोताने तेमज सांभळनारने मोहनी प्रगटे, कामविकार जागृत थाय छे, मननी लागणीओ चळ-विचळ थने वळी अन्य कोई सांभळे तो तने विचार थाय के–साधु संसारनो त्याग करी वैरागी बन्या छता स्त्रीकथा करे छे, स्त्रीनी वार्तामां आसक्ति धरावे छे माटे आ साधु कुशील जणाय छे वळी आवी कथा करवाथी विशेष समय तेमां व्यतीत थवाने कारणे स्वाध्यायनी हानि थाय, संयमनी हानि थाय अने ब्रह्मचर्यनी *नव वाडमां पण भंग पडे सांभळनारनुं पण मन विपरीत मार्गे

* जेम उद्यान अगर बगीचानुं रक्षण करवा माटे कांटानी अगर तो बीजी कोई वाड करवामां आवे छे तेम शास्त्रकारोए ब्रह्मचर्यरूपी उपवनना रक्षण माटे नव प्रकारनी वाडो (गुप्ति) कही छे ते आ प्रमाणे—

१ स्त्री, पशु के नपुंसकनो निवास होय त्यां वसवाट न करवो–रहेवुं नहीं
२ स्त्रीनी कथा न करवी अगर तो स्त्रीनी साथे एकांतमां वात न करवी
३ स्त्रीओना आसन पर एटले शयन, आसन, पाट–पाटला ऊपर ज्यां स्त्री बेठी होय ते स्थान पर बे घडी जेटलो समय व्यतीत थया पहेलां बेसवुं नहीं
४ स्त्रीओनां अंगोपांग जोवा के चितववां नहीं
५ भींत, पडदा के छोडाना ओथे स्त्री-पुरुष कामक्रीडा करता होय त्यां बेसवुं नहीं
६ पूर्वे करेल कामभोगनुं–काम–क्रीडानुं स्मरण न करवुं
७ स्निग्ध–रसकसवाळो आहार न करवो
८ क्षुधा शांत थाय तेथी विशेष आहार करवो नहीं
९ शरीरनी विभूषा–शोभा करवी नहीं, शृंगारथी टापटीप करवी नहीं

प्रेराय तो तेना दोषना भागीदार थवाय माटे स्त्रीकथानो मदतर त्याग करवो

२. भोजनकथा—चार प्रकारना आहार छे अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तेने लगता गुण अथवा अवगुण वर्णवे ते भोजनकथा जेमके खीरमा खांड अने घी पूरता प्रमाणमा नाख्या होय तो अमृत समान स्वादिष्ट लागे छे पूरणपोळीमा अजम्म तथा मसालो सारो नाख्यो होय तो तेना स्वाद कदी भूलातो नथी कडीना लाडु, मेसुर तथा मोहनथाळ विगेरेना जमणमा ये चार थाय अने जुदा जुदा शाकना पर्या होय तो श्रेष्ठ भोजन गणाय छे ग्यर तथा मारु फुद्राजु भोजन उत्तम छे आ प्रमाणे विधविध पकवानोना नामनिर्देशपूर्वक प्रशंसा करे अगर तो निंदा करता कहे के-अमुक व्यक्तिना जमणवारमा कांई मजा ज नहीं, स्वाद विनानु जमण, मरचा, मीठु अने मसालो पूरता प्रमाणमा नहीं, कढीमा खटाश ज नहीं, चटणी, रायतु विगेरे वर्या ज नहीं-आ प्रमाणे निंदा करे ते पण विकथा ज छे

साधुओ जो आ प्रमाणे भोजनकथा करे तो आहारनी लालसा वधे, रसना इंद्रिय वधु सचेत थाय, छकायनी विराधनाना अनुमोदक थाय तमज स्वाध्याय हानि व मयमहानि थाय त उपरांत आ उपरांत लोकोमा अपवाद थाय ते जुदो साभळनार लोक कहे क-'साधु थया छ पण खावा-पीवानी तृष्णा शमी नहीं स्वादिष्ट भोजन करवा माटे ज साधुना भेख लीधा जणाय छ इत्यादि इत्यादि' स्वहित इच्छुक साधुओए आ भोजनकथानो पण परित्याग करवो

३. देशकथा—कोई पण देशनी प्रशंसा अथवा अपभ्राजना न करवी मालव देश त' मनोहर छे, सारा सारा धान्य त्या निपजे छे पंडव देशना लोकोनु शु वर्णन करु ? त लोको तो महाबुद्धिनिधान अने डाह्या छे गुर्जरदेशना लोको तो उद्भटवेषधारी छ, कपटी छ, लाट देशना लोको तो पशु जेवा जड छे, काश्मीर देशना लोको बहु सुखी अन समृद्धिशाळी होय छ, कामरु देशना लोको अत्य त रूपवाळा होय छे-आ प्रमाणे देशना गुणावगुण कहेवा नहीं

साधु जो आ प्रमाण देशकथा करे तो पोताना परिवारमा ते ते देशना साधुओ होय तेने माठु लाग, अथवा ते त देशना लोको साभळे तो आवी वात करनार साधु उपर द्वेष उत्पन्न थाय, तेओनु मन तेमना उपरथी उतरी जाय, अरस्परस पडोशी देशवाळाने क्लेश थाय माट आ विकथानो त्याग करवो

४. राजकथा—राजानी प्रशंसा अथवा निंदा न करवी आ राजा तो पराक्रमी छ भीम जेवु तो तेनु बाहुबळ छे प्रजा पर युधिष्ठिरनी माफक वात्सल्य धरा वनार छ शत्रु लोको समक्ष चोराने दंड आपवामा अतीव कृपाळु छे तेनुं तेज

इन्द्र जेवुं छे, राजनीतिमां विचक्षण छे अगर तो निंदा करतां कहे के-आ राजा तो दुष्ट छे, परस्त्रीलंपट छे, प्रजा पासेथी कर-वेरा ले छे, तेनुं मुख तो कागडा जेवुं श्याम छे, शरीर बेरूपुं छे शत्रुने आवता भाळीने बिलमां भराई जाय छे, कायर छे, काचा काननो छे, विषयासक्त छे विगेरे विगेरे

आ प्रमाणे वातचीतथी लोको जाणे के आ साधु राजाना छिद्र शोधनार छे, कोई राजाना आ गुप्त चरपुरुष छे वळी राजा जाणे तो कोपायमान थाय कदाच आ प्रमाणे राजानुं वृत्तांत सांभळीने राजसुख इच्छुक कोई पण व्यक्ति पर भवमां राजा थवानुं नियाणुं पण करे आवी आवी वात करवाथी कर्मबंध पण थाय माटे आ विकथाने तो सदंतर देशवटो ज देवो

५. मृदुकारुणिकी कथा—मृदु-करुणा उपजावे तेवुं न बोलवुं जेमके हे महा पुरुष ! तमे अमारो केम त्याग करो छो ! अमे तो अनाथ छीए, तमारे आश्रये आव्या छीए, तमारा सिवाय अमारो कोई उद्धार नहीं करे अमे तो बळता अग्निमां पडया छीए. हे पुत्र ! हे वत्स ! तुं क्यां गयो ! तुं अमारी सार-संभाळ ले आ प्रमाणे करुणाजनक वचनो बोलवा ते विकथानो पांचमो प्रकार छे

आ प्रमाणे करुणाजनक कहेवाथी अन्य लोको हांसी करे छे, आपणा मनमां निर्बळता घर करी जाय अने पुरुषार्थ करवामां प्रयत्न मनमां न थाय आवा माना वचा मुख्य वचनो कदापि उच्चारवा नहीं

६. दर्शनभेदिनी कथा—दर्शन एटले समकित शुद्ध देव, गुरु अने धर्म उपर अविचल श्रद्धा तेनुं नाम बोधिबीज अथवा सम्यक्त्व तेनो घात करनारी कथा ते दर्शनभेदिनी कथा कोई कुतीर्थी अगर तो मिथ्यात्वीना चमत्कार देखी व्यामोहित थई जवुं, तेनी प्रशंसा करवी, कोई अन्यमति न्यायशास्त्रनुं अल्प अध्ययन करीने वाचाळतापूर्वक वात करतो होय तो तेथी विस्मय पामी विचारे के-'जैनशास्त्रमां तो आवुं कशुं वर्णन नथी आ तो कोई महापंडित जणाय छे तेना शास्त्रमां तो तत्त्वोनी सूक्ष्म सूक्ष्म हकीकतो वर्णवी जणाय छे', जिन वचनमां शंका करवी, इतर दर्शननो प्रभाव अगर तो चमत्कार निहाळी तेनो स्वीकार करवानी भावना उद्भववी, मिथ्यात्वीओनो संसर्ग करवो-आ बधा कारणो समकितनो घात करनारा छे आ प्रमाणे वर्तवाथी समकितना अतिचार लागे अने छेवटे अनाचार पण आदरे वळी लौकिक वासनाओ वधे अने सन्मार्गथी अधःपतन थाय माटे छठ्ठी विकथाथी पूरेपूरा सावचेत रहेवुं

७ चारित्रभेदिनी कथा—जे कथा सांभळवाथी चारित्रना परिणाम नष्ट थाय ते चारित्रभेदिनी कथा कहेवाय जेमके कोई कहे के-'आ पांचमा आरामां तो चारित्र पाळवुं घणुं कठिन छे' वळी कोई कहे के-' केवलिमणोद्धिचौ

दस-दसनवपुव्वीहिं संपयं रहिए । सुद्धमसुद्ध चरणं, को जाणइ तस्स भावं वा ॥१॥" साम्प्रतकाळे केवळज्ञानी नथी, मन पर्यवज्ञानी नथी, अवधि ज्ञानी पण नथी तेमज चौद पूर्वधर के दश या नव पूर्वधर महापुरुष पण नथी तो कोण जाणी शके तेम छे के साधु शुद्ध चारित्र पालन करे छे के अशुद्ध ? वळी तेना अतगत भाव केवा छे ते पण कोण जाणी शके छे ? परंपरानु चारित्र केवु हतुं अने अत्यारे केवु छे ? तेनो तफावत पण कोण समजावे ? कारण के घणा गच्छो अने अनेक मतो प्रचलित थइ गया छे माटे आमा साचा या जूठानी खबर पडी शके तेम नथी वळी स्वमतव्यनी विशेष पुष्टि करता कहे छे-" जह मचाओ पडियस्स, देहपीडा सुधोविया होइ । गिरिसिहराओ महती, तहणतभवो तओ भट्ठा ॥ २ ॥ काले पमायबहुले, दसणनाणेहि वट्टए तित्थम् । वुच्छिन्न च चारित्त, तो गिहिधम्मो पर काउ ॥ ३ ॥" अर्थात् पूर्व कहेला कारणोथी शुद्ध चारित्र तो पाळनारा नथी अने छता चारित्रथी पतित थाय तो अनता भवमा भ्रमण करवु पडे, कारण के कोइ एक शय्या माचा (खाटला) ऊपरथी पडी जाय तो तेने ओछु वागे-अल्प पीडा थाय, पण जो कोइ पर्वतना शिखर उपरथी पडी जाय तो प्राणघातक दुःख सहन करवु पडे वळी आ पाचमा आरामा प्रमाद विशेष छे अने दर्शन ते समकित अने ज्ञान-मति अने श्रुत ए बे ज्ञानवडे प्रवर्त छे श्रीमहावीरस्वामीवडे प्ररूपित चारित्र हमणा पाळी शकातु नथी तो तेवा चारित्र करता गृहस्थधर्म उत्तम छे, कारण के ऊपर कह्यु तेम माचा परथी पडनारने अल्प कष्ट थाय छे अने गिरिशिखर ऊपरथी पडनारने अतिशय कष्ट थाय छे तेम गृहस्थ धर्मथी जो पतित थवाय तो अल्प अतिचार लाग अने जो सर्वविरतिथी चुकाय तो अनंत भव पर्यन्त ससारसागरमा परिभ्रमण करवु पडे टूकमां एम अथातु कहवु के आ काळमा तो श्रावकना व्रत पाळवा तेज उत्तम अने श्रेष्ठ मार्ग छे तेनाथी देवलोकनी प्राप्ति थाय छे

आ प्रमाणे कहेवाथी कोई चारित्र लेवानो जिज्ञासु होय तो ते नाशी जाय, पूर्वे कदापि दीक्षा लीधेल होय तो पण ते चचळ चित्तवाळो थाय अने विचारे के-चारित्रमा दोष तो बहु लाग छे माटे न करता तो दीक्षा छोडी देवी सारी आ प्रमाणे ऊचे चढवानो प्रयत्न करतो प्राणी पण अध पतन पामे आवो विचार अज्ञानीने आवे जो ज्ञानी होय तो ते विकथा करनारनी जाळमा न सपडाय ते तो श्रीभगवतीसूत्रना पाठनो विचार करे श्रीभगवतीसूत्रमा कह्यु छे के बहुसनियड्ढो-ते दोषीलो ज होय अर्थात् जे दोषने आलोवे, पापनी गर्हा करे ते साधु चारित्रपात्र ज गणाय परन्तु जे अज्ञानी, अस्थिर मनवाळो अने दुःखगर्भित वैराग्यवाळो होय ते आ चारित्रभेदकनी कथाथी विपरीत मार्गे वळी जाय माटे तेवी कथा कदापि पण न करवी

हे गौतम ! आ सात प्रकारनी विकथा करतो प्राणी वृथा कर्मबंध करे छे राग-द्वेषथी लेपाय छे, अनेक प्रकारनी वातो करतो पोताना मतव्यनी पुष्टि करवा माटे सदा तत्पर रहे छे अने पोतानु कर्तव्य भूली जाय छे आवा लक्षणवाळाने तारे उन्मार्गगामी जाणवो गुणवंत आचार्य पण परनी साक्षीए पोताना अतिचारादिक दोषोनी आलोयणा लेवी, पोताना पाप प्रकाशी शुद्ध थवु ते नीचेनी गाथाथी स्पष्ट थशे

छत्तीसगुणसमण्णा-गएण तेणवि अवस्स कायव्वा ।
परसक्खिया विसोही, सुट्ठुवि ववहारकुसलेण ॥ १२ ॥

[षट्त्रिंशद्गुणसमन्वागतेन तेनापि अवश्यं कर्त्तव्या ।
परसाक्षिका विशोधिः, सुष्ठ्वपि व्यवहारकुशलेन ॥ १२ ॥]

गाथार्थ–छत्रीश गुण युक्त तेमज अतिशय व्यवहारकुशळ आचार्य महाराजे पण अन्य आचार्योनी साक्षीए स्वदोषनी निःशल्यपणे आलोचनारूप विशुद्धि करवी-प्रायश्चित्त ग्रहण करवु १२

विवेचन–आचार्यना छत्रीश गुण कहेला छे तथा गुणयुक्त अने पांच प्रकारना व्यवहारमां विचक्षण आचार्य पण बीजा आचार्य अथवा गीतार्थ प्रमुख पासे पोताना पापनु प्रकाशन करी आलोयणा ग्रहण करवी आवा गुण युक्त आचार्यने पण प्रायश्चित्त ग्रहण करवानु विधान जे-शास्त्रोमा छे तो सामान्य साधुनी तो वात ज शी करवी ? आचार्यना छत्रीश गुण वर्णवतां कहे छे के–

"देस १ कुले २ जाति ३ रूवी ४, संघयणी ५ धिइजुओ ६ अणाससी ७ ।
अविकत्थणो ८ अमाई ९, थिरपरिवाडी १० गहिअवक्को ११ ॥ १ ॥
जिअपरिसो १२ जिअनिद्दो १३, मज्झत्थो १४ देस १५ काल १६ भावन्नू १७ ।
आसन्नलद्धपइभो १८, नाणाविहदेसभासन्नू १९ ॥ २ ॥
पंचविहे आयारे २०-२४ जुत्तो, सुत्तत्थतदुभयविहिन्नू २५ ।
आहरण २६ हेउ २७ उवणय २८-नयनिउणो २९ गाहणाकुसलो ३० ॥ ३ ॥
ससमयपरसमयविऊ ३१, गंभीरो ३२ दित्तिम ३३ सिवो ३४ सोमो ३५ ।
गुणसयकलिओ ३६ जुत्तो, पवयणसारं परिकहेउ ॥ ४ ॥

१ देश–साडापचवीश जे आर्य क्षेत्र कहेवाय छे तेमा जन्मेलो होय-आर्य देशमां जन्म्यो होय तो ते आचार्य लोकोने प्रतिबोध थाय एवु वर्णन करी शके आर्य देशनो भाषा जाणे अने तेथी रूप वाग्धाराथी जनसमूहने सहेशी वैराग्यवासित

वनाथी शके. २. कुल–श्रेष्ठ कुळवाळो होय पितानो जे वंश ते कुल कहेवाय उत्तम कुळमा उत्पन्न थयेल प्राणी पोताने शिरे जे बोजो आवे तेने सरलताथी ते वहन शीलताथी वहन करे तेम आचार्य जो उत्तम कुळमा जन्मेल होय तो आचार्य पणामा गच्छनी सारसभाळरूपी जे भार तेने सम्यक् प्रकारे वहन करे ३. जाति–उत्तम जातिवाळो होय मातानु गोत्र ते जाति कहेवाय उत्तम जातिनी माताना कुक्षीमा जन्म धारण करवाथी–जातिवान होवाथी विनय, विवेक, सरलता आदि गुणो स्वाभाविक ज प्राप्त थाय अने शासननु रूडी रीते पालन करे ४ रूपी–रूपवत होय पाचे इन्द्रियो सरस अने देखावडी होय हाथ, पग अने उदरादिक अवयवो कांतिवाळा तथा घाटीला होय रूपवत व्यक्तिमा आदेय वचनपणु होय [illegible] पहेले लोको तेनु वचन शीघ्र स्वीकारे छे रूपवतमा तेम गिर रीते ज गुणसमृद्ध होय छे ५ सघयणी–दृढ सघयणवाळो होय शरीरनो बांधो जो मजबूत होय तो व्याख्यानादि देवामा, उग्र विहार करवामा तेमज धार्मिक महोत्सवोमा ग्लानि न अनुभवे, प्रमादने परवश न पडे अने उत्तम प्रकारे शास्त्राध्ययन करी सारी वाचना आपी शके ६. धृतिमत–चित्तनी स्थिरतावाळा होय शास्त्रना गहन तत्वो अथवा अर्थो न समजाय तो पण तेमा भ्राति न लावे, तेमा पोतानी अल्पबुद्धिने कारणभूत माने ७ अनाकांक्षी–कोई पण प्रकारनी कोई पण पासेथी वाछा न राखे जेम अन्य मतावलबीओ–द्विजो विगेरे पोताना भक्तजन या तो यजमान पासेथी सुदर भोजन अने वस्त्रादिनी अपेक्षा राखे छे तेम आचार्यमहाराज कशी पण तृष्णा न ज राखे ८ अविकत्थणो–बहु न बोले वाचाळता न दाखवे पारकी वातो विशेष न करे आ प्रमाणे वर्तवाथी लोको पर तेमनी प्रमाणिकपणानी सुदर छाप पडे ९. अमायी–कपट न राखे माया–प्रपचने दूर करे कोईना कावत्रामा–मायाजाळमा या तो षड्यत्रमा–राजखटपटथी दभमा सामेल न थाय आ प्रमाणे वर्तवाथी लोकोनो सविशेष विश्वास थाय अने तेने कारणे शासनोद्योतना अनेक कार्यो निर्विघ्ने परिपूर्ण थाय १०. स्थिरपरिपाटी–जेटलु जेटलु पोते शास्त्रावगाहन कर्यु होय तेटलु तेटलु उपस्थित–स्थिर होय का" पण व्यक्ति सूत्रार्थनो गर्भ तेवा प्रश्न करे तो शीघ्र जवाब आपी तेना मननु समाधान करे ११. गृहीतवाक्य–तेमनी आज्ञा सव माने, तेना कहेला बोल सव झीले तेवा समर्थ होय–प्रतिभाशाळी होय १२ जितपर्षदा–पर्षदा–सभाने जीतनार होय राजा प्रमुखनी सभामा जवानो प्रसग प्राप्त थाय तो मनमा क्षोभ न पामे 'हु शु करीश ?' तेवो विचार न लावता धर्मचर्चा करी राजाने प्रतिबोधवाने समर्थ होय अगर तो व्याख्यानादि करवामा घणा कुशळ होय के समग्र सभा

रंजित थाय अने आचार्यना गुणानुवाद करे वादविवाद करवानो प्रसंग प्राप्त थाय तो पण क्षोभ न पामे अने शास्त्रवचन व युक्ति-प्रयुक्तिओथी सत्य धर्मनुं स्थापन करी प्रतिवादीने परास्त करे १३. जितनिद्रा—अल्पनिद्रावाळा होय आपणामां ध्याननिद्रा कहवाय छे ध्यानने अल्प ज निद्रा होय छे लेशमात्र अवाज थाय के तरत ज ध्यान शीघ्र जाग्रत बनी जाय एवी रीते आचार्यनी निद्रा पण अल्प ज होय सूत्रादिकनो अर्थगवेषणामां चित्त राखे, तेनुं वारंवार परिशीलन कर्या करे एटले पण अल्प निद्रा होय १४. मध्यस्थ—तटस्थ वृत्ति धारण करवावाळा होय सर्व शिष्यो परत्वे समभाव राखी सर्वनी सारसंभाळ सरखी रीते ज राखे १५. देशज्ञाता—मरुधर, मेवाड अने गुजरादि राज्यो संबंधी संपूर्ण ज्ञान धरावनार होय ते ते देशने अनुलक्षीने मधुओने विचरवानी आज्ञा आपे १६. कालज्ञ—समयने जाणनार होय आ वर्षमां चोमासामां शुं थशे ते शास्त्रज्ञानथी जाणे अने तेने अनुसरीने स्वपरिवारने विचरवानी अनुमति आपे १७. भावज्ञ—सामा माणसना अभिप्रायने जाणनार होय, अथवा क्षयोपशमादि भावना पण जाणनार होय आ गुणने आधारे सुखपूर्वक देश-विदेशमां विहार करी शके १८. हाजरजवाबी—कोइ अन्यतीर्थी परीक्षार्थे प्रश्न करे तो तेने हृदयस्पर्शी सचोट जवाब आपे तेवा बुद्धिमान होय १९. अनेक देशभाषाओने जाणनार-जुदा जुदा देशोनी भाषा जाणे मारवाडी, गुजराती, हिंदी इत्यादिक भाषा जाणनार होय विहार दरमियान अनेक भव्यप्राणीओने दीक्षा आपी होय एटले ते ते देशोना शिष्योने सरलताथी शास्त्राध्ययन करावी शके तमज ते ते देशोमां विचरवाना प्रसंग ते ते लोकोनी भाषामां उपदेश आपे वाथी अनेकगुणो लाभ थाय २०-२४ पंचाचारयुक्त—पांच प्रकारना आचार युक्त होय ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार ए पांच आचार छे ज्ञानाचार एटले ज्ञाननुं सम्यक् प्रकारे आराधन करे, दर्शनाचार एटले शुद्ध रीते समकित पाळे, चारित्राचार एटले पांच समिति अने त्रण गुप्ति ए अष्टप्रवचनमातानुं रूडी रीते पालन करे-अतिचार न लगाडे, तपाचार एटले ब अभ्यंतर अने छ बाह्य ए बार प्रकारना तपनुं सारी रीते आराधन करे अने वीर्याचार एटले यथायोग्य धर्मक्रियामां पोतानो पुरुषार्थ दाखवे, प्रमाद न सेवे, आवश्यक क्रिया उमंगपूर्वक करे आ प्रमाणे पंचाचार युक्त आचार्यनुं वचन ग्रहणीय बने छे २५ सूत्रार्थतदुभयज्ञाता—सूत्रनो, अर्थनो अने तदुभय एटले सूत्रार्थ बनेनो ज्ञाता होय सूत्रनो उच्चार तथा परंपरा मुजब अर्थ-ए सर्व हकीकतना ज्ञाता होय आ उपरांत उत्सर्ग अने अपवाद

य थते मागना प्ररूपक होय २६. आहरणक–दृष्टान्त आपवामां विचक्षण-कुशळ होय, पहेला तत्त्वनी वातथी लोकोने गळे बोध उतरी शकतो नथी, व्याख्यान निरस जणाय छे परन्तु तेनी साथोसाथ कथा-वृत्तान्त कहेवामां आवे तो लोकोने मनरंजन थवा साथे ज्ञान पण थाय छे सरस प्रतिपादक शैली साथे कथा-निरूपण थाय तो लोकोने व्याख्यान के उपदेश श्रवणनो उत्साह वधे छे दृष्टान्तपूर्वक समजाववाथी अल्प प्रयासे लोकोना हृदयमां सुंदर असर उपजावी शकाय छे २७. हेतु–हेतुपूर्वक समजाय-उपदेश आपे हेतु बे प्रकारना छे—(१) कारकहेतु अने (२) ज्ञापकहेतु घडानो बनावनार कुंभार छे, एटले जे घडा घडे ते कुंभार अथवा प्रजापति कहेवाय, एम कारण दर्शावी समजावे ते कारकहेतु कहेवाय अंधकारमां रहेल घटादिकने जणावनार दीपक छे, दीपक तेने प्रगट करे छे तेवी रीते हेतुओने समजावे ते ज्ञापकहेतु कहेवाय २८. उपनयज्ञ–कोइ पण प्रकारनी कथा-वार्ता कहीने तेनो उपनय घटावे-सरखामणी करी बतावी सारांश-रहस्य समजावे २९. नयनिपुण–नैगमादि सात नयोना ज्ञाता नयज्ञ होय तो एकान्त वात न करे, अनेकान्त-स्याद्वादनु स्वरूप यथार्थ समजावी शके अने नयना भेदोने आश्रयीने व्याख्या करवाथी तेमनो कोइ पण प्रकारनो दोष न बाधा शके छवीशमा गुणथी प्रारंभी ओगणत्रीशमा गुण सुधी जे गुणो दर्शाव्या तेनाथी श्रोताजनने जेम ज्ञान थाय तेवी रीते बनावे प्रथम दृष्टान्त कहे, पछी तेनो हेतु समजावे, पछी तेना उपसंहार करे एटले संक्षेपमां सारांश समजावे अने कथामां प्रसंग आवे त्यारे नयनुं सुंदर स्वरूप समजावी तेने कथाना प्रवाहमां घटावे ३०. स्थापनाकुशळ–जे वात करे तेनी स्थापना करवामां, तेने स्पष्ट समजाववामां अने श्रोताजनना गळे उतारवामां कुशळ होय ३१. स्वपरसमयवित्–पोतानो मत जैनमत अने अन्य मतो-परतीर्थिक मतो, ए सर्व मतना जाणनार होय पोताना सिद्धान्तनु स्वरूप सुंदर रीते वर्णवी शके तेमज चार्वाक, बौद्ध, सांख्य, मीमांसक अने वैदिक मतवादीओ पोतानो मत पूछे तो पण तेना मतनुं पण स्वरूप कही शके अर्थात् षड्दर्शनना ज्ञाता होय ३२. गंभीर–गंभीर हृदयवाळा होय तुच्छ स्वभावनो त्याग करे कोइ पण व्यक्ति गमे तेवो प्रश्न करे, तो पण गभराय न करता, आक्रोश न करतां शांतिथी धैर्यपूर्वक जवाब आपे ३३. दीप्तिमान–अत्यंत तेजस्वी होय तेमनुं भव्य मुख जोतां ज वाद करवा आवनार अगर तो अन्य मतवादीओ क्षोभ पामी जाय आ व्यक्तिने नहीं जीती शकाय एम मनमां निर्णय करी ले अने गुपचुप थई अन्य वातो करवा लागे ३४. शिवकर–महामारी, भूत-प्रेत

दिकना उपद्रव, शाकिनी डाकिणीना विघ्नोनो विनाश करवामां शक्तिमान होय, जनसमूहनु कल्याण करवावाळा होय ३५ सौम्य-शांत दृष्टिए जोनार, वैरीजन प्रत्ये पण शांतिथी-स्नेहथी निहाळनार तेमज आचार्यने जोता पण सामा माणसने प्रेम उत्पन्न थाय ३६. गुणशतकलित-उदार, सहनशील, शांतिमान, कृतज्ञ, शास्त्राध्ययनरक्त इत्यादि इत्यादि सेंकडो गुणोथी विभूषित होय आवा प्रकारना छत्रीश गुणोवडे युक्त आचार्य प्रवचननो सार एटले रहस्य यथार्थ कही शके आवा गुण सहित आचार्यमहाराजे पण पोताना पापनु-अतिचारनु अन्य गीतार्थ आचार्य महाराज पासे प्रकाशन करी प्रायश्चित्त ग्रहण करवु

आचार्यना छत्रीश गुण दर्शाव्या बाद तेमना बीजा विशेषण-पांच प्रकारना व्यवहारना ज्ञाता-नु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-" आगम १ सुय २ आणा ३ धारणा ४ य जीय ५ च होइ ववहारो। केवलिमणोहिचोद्दस-दसनव-पुव्वी अ पढमओ ॥ १ ॥ " १ आगमव्यवहारी, २ श्रुतव्यवहारी, ३ आज्ञाव्यवहारी, ४ धारणाव्यवहारी अने ५ जीतव्यवहारी-आ पांच प्रकारना व्यवहारी होय छे केवळज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, चौदपूर्वी, दशपूर्वी तेमज नव पूर्वी-ए प्रथम एटले आगमव्यवहारी कहेवाय छे तेओ प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा होवाथी प्रायश्चित्त लेवा आवनार व्यक्तिने जेवा अतिचार लाग्या होय ते जाणीने जेवो घटे तेवो दंड-प्रायश्चित्त आपे छे श्रुतव्यवहारी छेदग्रन्थोनो ज्ञाता होय अथवा वर्तमानकाळमा जेटलु श्रुत वर्ततु होय तेनो पारगामी होय तेवा आचार्यनी पासे आलोयण स्वीकारे आज्ञाव्यवहारी एटले गीतार्थ बीजा देशमा विचरता होय तो तेनी पासे साधुने मोकलीने, गुप्त रीते आलोयण मंगावीने ते प्रमाण प्रायश्चित्त ग्रहण करे धारणाव्यवहारी-पूर्वे कहेला त्रणनो अभाव होय अने आलोचना लेवानी होय त्यारे गीतार्थ पासे रहेल, तेनी वैयावच्च करेल, अनेक वार तेने आलोचना अपावेल होय ते सांभळेल होय तेवा साधुने कहे के-मने आलोयण आपो' ते जे प्रायश्चित्त जणाय ते गीतार्थ आप्या बराबर धारीने तपश्चर्यादिए आलोचन करे ते धारणाव्यवहार अथवा तो कोई वृद्ध साधु होय, दीर्घ चारित्र पर्यायवाळा होय अने गीतार्थ पासे रहीने अनेक वार तेने आलोयण आपतां समये ते अवधारेलु होय तेवा मुनि समीपे पण आलोयण लेवी ते धारणाव्यवहार जीतव्यवहार-काळना प्रभावे जाणी उग्र तपश्चर्या करवा असमर्थ एवा साधुओने मर्यादामां ज-ते पाळी शके तेवी रीते आलोयण आपवी के जेथी तेवी साधुपणा उपरनी श्रद्धा टकी रहे काळप्रभावथी चारित्रमा दोषो तो घणा लागे अने उग्र तपश्चर्या थई शके नहीं एटले साधु विचारे के-" दोषापत्ति तो घणु थाय छे, तप, जप थता नथी माटे हवे चारित्र पाळवु शा कामनु? आवी विचारणाथी आचारमा शिथिल अने यावत् चारित्रनो त्याग करवा प्रेराय

माटे आचार्य साधुने नवला जाणीने तेने उचित आलोचना आपवी अथवा तो श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणे जीतकल्प रच्या छे तेमां जे प्रमाणे तपश्चर्या करवानु विधान दर्शाववामा आव्युं छे तेने अनुसरवुं ते पण जीतकल्पव्यवहार कहेवाय

आवी रीते उपर जणावेल पांचे व्यवहारना ज्ञाता होय, पोते अनेक प्राणि आने प्रायश्चित्त आप्युं होय तथा आचार्य पण अन्य गीतार्थ पासे पोताना दोषा अतिचारोनु प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं जोइए, कारण के ज्यां कोइ वैद्यने व्याधि थया होय तो ते अन्य वैद्य पासे औषधोपचार करावे छे अने तेम करवाथी तेनो रोग पण नाश पामे छे तेवी रीते दोषित थयेल आचार्य अन्य वैद्य सदृश अन्य गीतार्थ पासे प्रायश्चित्त ग्रहण करे त्यारे तेनु पापरूपी शल्य विनाश पामे छे अहीं जे वैद्यनु दृष्टांत आप्यु तेने ज पुष्ट करवा माटे सूत्रकार महाराज जणावे छे के-

जह सुकुसलो वि विज्जो, अण्णस्स कहेइ अत्तणो वाहिं ।
विज्जुवएसं सुच्चा, पच्छा सो कम्ममायरइ ॥ १३ ॥

[यथा सुकुशलोऽपि वैद्यो-ऽन्यस्य कथयति आत्मनो व्याधिम् ।
वैद्योपदेश श्रुत्वा, पश्चात् स कर्म आचरति ॥ १३ ॥]

गाथार्थ-जेवी रीते अतिशय कुशळ वैद्य पण पोतानो व्याधि बीजा वैद्यने जणावे छे अने ते अन्य वैद्ये दर्शावेल व्याधिना प्रतिकाररूप कर्मने आचरे छे तेवी रीते आलोचना ग्रहण करनार सूरि पण पोताना पापनु अन्य उपाध्याय-महाराज पासे प्रकाशन करे अने तेमणे जणावेल तपश्चर्यादि क्रिया विधिपूर्वक अंगीकार करे.

विवेचन-वैद्य विचक्षण होय, वैद्यकशास्त्रादिकमां प्रवीण होय अनेक प्रकारना औषधो-भस्म, अवलेह, चूर्ण विगरेमा प्रवीणता धरावता होय, अनेक व्यक्तिओना व्याधिओनु निवारण कर्यु होय, अनुभवी होय, दरेक रोगनी चिकित्सा करवानी प्रणालिकामा पारंगत होय, निदान करवामां निपुण होय-आवो कुशळ वैद्य पण जो बीमार पडे, मांदो थाय तो ते तरत ज अन्य वैद्यनी सलाह ले छे, पोताना व्याधिनो सर्व व्यतिकर कहीने तेना कहेवा मुजब अने पोतानी पासे विविध प्रकारना उत्तम औषधो होवा छतां तेना कहेला औषधो ग्रहण करे छे अने परिणामे पूर्ववत् स्वास्थ्य प्राप्त करे छे तेम अनेक आलोचना आपनार, शास्त्रादिकमा कुशळ एवा आचार्य पण पोताना दोषअतिचारनी आलोचना अन्य गीतार्थ पासे ज लेवी ए ज हितकर अने कल्याणनो मार्ग छे

हवे सद्गुरुनु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-

देसं खित्तं तु जाणित्ता, वत्थं पत्तं उवस्सयं ।
संगहे साहुवग्गं च, सुत्तत्थं च निहालई ॥ १४ ॥

[देशं क्षेत्रं तु ज्ञात्वा, वस्त्रं पात्रं उपाश्रयम् ।
संगृह्णीत साधुवर्गं च, सूत्रार्थं च निभालयति ॥ १४ ॥]

गाथार्थ-देश, क्षेत्र, द्रव्य, काळ अने भावने जाणीने वस्त्र, पात्र अने (स्त्री, पशु के पंडक-नपुंसक वगरनो) उपाश्रय संग्रहे तथा साधु-साध्वीना समूहनुं सारी रीते संरक्षण करे तेमज सूत्रार्थनुं चिंतवन करे तेने सारा-मोक्षमार्ग-वाही आचार्य जाणवा.

विवेचन-सारा आचार्य देश, क्षेत्र, द्रव्य, काळ अने भावने सारी रीते जाणे, अने जाणीने वस्त्र, पात्र, वसति तथा साधु-साध्वीना समूहने संग्रहे-तेनुं परिपालन करे. माळवादि देशोनुं स्वरूप जाणे क्षेत्र संबंधी विचार करे के क्षेत्र केवुं छे के रसाळ एटले के सर्व प्रकारनी वस्तुओ मळी जाय तो रसाळ अने न मळे तो लूखुं समजवुं, अथवा तो जैनधर्म प्रत्ये श्रद्धालु छे के अश्रद्धालु ते पण जाणे विविध क्षेत्रमां बौद्ध, सांख्यादिक कया कया धर्मनो विशेष प्रचार छे तेनुं ध्यान धराय ग्लानादिक साधुओने वसवा लायक छे के नहीं अगर तो ग्लानादिकने योग्य आवश्यक पदार्थो प्राप्त थइ शकशे के नहीं ते जाणे वळी द्रव्य एटले आहारादि वस्तुओ मळी शकशे के नहीं तेना विचार करनारा होय काळ संबंधी विचारणा करतां सुकाळ के दुष्काळनो विचार करनारो भाव एटले भिन्न भिन्न क्षेत्रवासी जनो उदार छे के कृपण, साधुओने जोईने रंजित थाय तेवा छे के गुस्से थाय तेवा छे ते संबंधी ध्यान धराय ऊपर जणावेल व्यतिकरना ज्ञाता आचार्य वस्त्र, पात्र अने उपाश्रय (साधुओने योग्य निवासस्थान) संग्रही राखे-तेनी व्यवस्था करी मूके कोइ क्षेत्रमां वस्त्रादिक मळे, कोइ क्षेत्रमां न पण मळे त्यारे तेनो संग्रह करी राख्यो होय तो साधुओने उपयोग माटे आपी शकाय जो आ प्रमाणे व्यवस्था न करी होय तो साधु सीदाय

देशस्वरूपना ज्ञाता आचार्य शीत शरीरवाळा साधुने सौराष्ट्रादि शीतप्रधान देशोमां न मोकले मरुधरादि देशोमां मोकले वळी वायुप्रधान देहवाळाने मेवाड देशमां विचरवानी आज्ञा न आपे कारण के ते देशमां मकाइ अने चोखानो आहार मळतो होवाथी वायुप्रकृतिवाळा साधुने माफक न आवे, तथा शरीरवाळाने माळव देशमां मोकले क्षेत्र संबंधी विचारणा करे के उज्जैनी नगरीमां अन्य मतनुं प्राबल्य विशेष छे, माटे त्यां ओछा पांडित्यवाळा शिष्यने न मोकले, कारण के तेम करवाथी शासननी लघुता थाय तेथी अल्पज्ञ शिष्योने मारवाड, गुजर,

सौराष्ट्र आदि देशोमां मोकले मृत्रप्रमुख द्रव्यादिकना जाणकार होय ग्लाना दिकने आ वस्तुनी जरूर छे आ वस्तु तेमने उपयोगी थ पडशे तेम जाणे वळी साधु स्थूलशरीरी होय तो तेमने घृतादिक पुष्टि करनारा द्रव्यो विशेष न आपे एवी रीते क्षेत्रना पण विचारक होवा जोइए अमुक देशमां सुकाळ थशे के दुष्काळ पडशे ते पण जाणनार होवा जोइए, कारण के दुष्काळवाळा देशमां विचरे तो गोचरी पण न मळे, मरणमां मणहाडुं पडे अने धर्मसाधन के स्वाध्यायादि न थाय एवी रीते काळने विचारीने शिष्यादिक परिवारने विचरवानी आज्ञा आपे साधु प्रत्ये लोकोना स्वभाव-श्रद्धाने जाणी ते प्रमाणे विहारनी अनुमति आपे दूरना स्थळोमा विहार थोडो कराय परन्तु गुर्जर, सौराष्ट्रादि देशोमा साधुओ प्रत्ये अत्यन्त प्रीतिभाव के बहुमानभाव होय तेवा स्थळमां साधुओने विचरवानी आज्ञा आपे आ प्रमाणे सुगुरु पांच प्रकारना यथास्थित ज्ञाता होय

वस्त्र, पात्रादिकनो संग्रह करे पण ते प्रच्छन्न-गुप्त राखे, गृहस्थने न जणावे आनु कारण दर्शावता कहे छे के-भद्रिक-भोळो गृहस्थ होय तो धर्म पण कदाच विचारे के-साधु पासे घणा वस्त्र-पात्रादिक होय तो तेमां दोष नहीं होय परन्तु विचक्षण गृहस्थ तो समजे के आटला बधा वस्त्र-पात्रना उपकरण राखे छे ता साधु शा माटे थया ? आटला बधा परिग्रहधारीने साचा साधु कई रीते कही शकाय ! आवी अश्रद्धा न उत्पन्न थाय माटे शास्त्रकार महाराज कहे छे के-आचार्ये आ संग्रह गुप्त राखवो आ हकीकत प्रत्ये शंका दर्शावता प्रतिवादी प्रश्न करे छे के-" आचार्य आवो संग्रह गुप्त राखवो तेनो कोई पण शास्त्राधार छे ? " तेनो जवाब आपता श्रीस्थानांगसूत्रना सातमा स्थानकनो टीकाना उल्लेख करी जणाव छे के-" आयरियउवज्झायाण गणसि सत्तसंगहठाणा प० त०-आयरियउवज्झाए गणंसि आण वा धारणं वा सम्म पउंजित्ता भवति १, आयरियउवज्झाए गणंसि अहाराइणिआए किति-कम्मं वेणइअं सम्मं पउंजित्ता भवइ २, आयरियउवज्झाए गणंसि जे सुअपज्ज वजाए धारेति ते काले काले सम्मं अणुप्पवाएत्ता भवइ ३, आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहे वेआवच्चं अब्भुट्ठित्ता भवति ४, आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छिअचारी आविहवइ णो अणापुच्छित्तचारी ५, आयरियउवज्झाए गणंसि अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाएत्ता भवइ ६, आयरियउवज्झाए गणंसि पुव्वुप्पण्णाइं उवगरणाइं सम्मं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवति ७ ॥ "

अर्थ-आचार्यउपाध्यायना गणमा-गच्छमा ज्ञानादि संग्रहना सात हेतुओ दर्शा वेला छ, ते आ प्रमाणे-१—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा रूडी रीते आज्ञा तथा धारणा करे पटले के-' हे साधु ' आ प्रमाणे तमे करजो ' एवी रीते गुरुना आदेशथी ते प्रमाणे ज करे तेम ज ' हे साधु ! आ वात न करवी '

पम आज्ञा आपे तेने धारी राखे-ते प्रमाणे ज वर्ते २—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा जेओ गुणमा अथवा तो दीक्षापर्यायमां ज्येष्ठ होय तेना प्रत्ये वांदणां, विनयादि उचितता साळवे एटले के तेमने विधिपूर्वक वंदन करे, वैयावच्च दिक करे ३—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा जे साधुओ सूत्र भणवाने योग्य थया होय तेओने अवसरे सूत्र संबंधी शिक्षा आपे, अध्ययन करावे, समयने प्रमादमा व्यर्थ व्यतीत थवा न दे ४—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा व्याधिथी पीडित ग्लान साधु होय अगर तो लघु शिष्य होय तो तेने गोचरी लावी देवी, हाथ-पग दाबवा, औषधोपचार करवो इत्यादिक प्रकारे वैयावच्च कर नार होय ५—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा शिष्यने बहार गोचरी, स्थंडिल तथा विहारार्थ जवु होय तो आज्ञा लईने गुरुनी संमतिपूर्वक ज जाय परंतु पूच्छ्या विना एक पगलु पण भरे नहीं ६—आचार्यउपाध्यायना गच्छमा न मळे तेवा वस्त्र, पात्रादिक उपकरणोने सम्यक् प्रकारे लावे, ज्यां त्यांथी मेळवीने एकत्र करे अने आचार्यने सोंपे ७—आचार्यउपाध्यायना गणने विषे पूर्व प्राप्त करेल वस्त्र, पात्रादिक उपकरणोनु चोरादिकथी सारी रीते रक्षण करे अने सारी रीते गोपवे आ स्थळे जणावेल सातमा प्रकारनी गच्छाचारनी टीकामा जणाव्यु छे के-'सारक्खिचा'-सरक्षितापायेन चौरादिभ्य, 'संगोविचा'-सगोपिताऽल्पसागारिककरणेन मलिनतारक्षणेन चेति। अर्थात् चोर प्रमुख चोरी न जाय तेम उपकरणोने सारी रीते साचववा अगर तो कोईने चोरवा, तोडवा के फाडवा देवा नहीं तेमज गृहस्थ देखी न जाय तेवा प्रकारे गोपवीने राखे अने तेने जेम तेम वापरीने मलिन न करे

आ रीते श्रीस्थानांगसूत्रना पाठथी सावित थयु के आचार्य गृहस्थ जोई शके तेमज जाणी पण न शके तेवी रीते वस्त्र पात्रादिक उपकरणो गुप्त राखवा हत वखतो प्रसंग आव्याथी वस्त्र संबंधी विशेष विवेचन कर्यु छे

वस्त्र संबंधी निरूपण—जे वस्त्र प्राप्त थाय ते वस्त्रना प्रथम त्रण भाग करवे एटले त्रण पुट बराबर करे, पछी एक-एक पुटमा त्रण त्रण भाग करवे एटले के पवी रीते नव विभाग थाय ते जे नव गुणा थया ते पैकी चार खूणाना चार भाग देव संबंधी जाणवा, छेडाना बे भाग मनुष्यने लगता जाणवा, ऊपर नीचेना जे बे भागो असुर संबंधी जाणवा अने मध्यमा जे एक भाग बाकी रह्यो ते राक्षसने लगतो जाणवो तेनो स्थापना यत्र नीचे प्रमाणे जाणवो

देव	असुर	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	असुर	देव

ऊपर जणावेल हकीकतनो संबंध दर्शावनारी गाथा नीचे प्रमाणे छे "चउरो दिव्विआ भागा, दुव भागा य माणुसा। आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ १ ॥" एटले के-देवोना चार, मनुष्यना बे, असुरना पण बे

अने राक्षसना मध्यनो एक एम नव विभागो जाणवा आ नवे विभाग श्याम वर्ण, अंजन तथा कादवथी खरडायेल होय, उंदरे करडया होय, कमारीए खाधा होय, अग्निथी बळी गया होय, तूटी गया होय, धोबीवडे धोवाता छिद्र पडी गया होय, जीर्ण (जूना) थइ गया होय, अथवा जाडो धागो (दोरो) आवी गयो होय तो तेना शुभ या अशुभ विविध प्रकारना फळनी प्राप्ति थाय छे तेना फळ-स्वरूपनुं दिग्दर्शन करावता जणावे छे के-"दिव्वेसु उत्तमो लाभो, मणुस्सेसु अ मज्झिमो। असुरेसु अ गेलन्न, मज्झे मरणमाइसे ॥ १ ॥" अर्थ-देव संबंधी विभागमां जो वस्त्र अंजनादिवडे खरडायुं होय अगर तो उंदर विगेरेवडे करडायुं होय तो (चारित्रपालननो) श्रेष्ठ लाभ थाय, मनुष्य संबंधी विभागमा ते प्रमाणे थयुं होय मध्यम-अल्प लाभ थाय अने असुरना विभागवाळा विभागमा ते प्रमाणे थयुं होय तो व्याधि उत्पन्न बीमारी आवे, अनेक प्रकारना रोगो थाय जो मध्यनो राक्षसवाळो विभाग ते प्रमाणे खरडायो के करडायो होय तो ते वस्त्र पासे राखवाथी अवश्य मृत्यु ज थाय एटले साधुए नव भाग पैकी असुरना बे अने राक्षसनो एक एम त्रण भागथी दूषित वस्त्र ग्रहण न करवुं कदापि कोई साधु आवु वस्त्र स्वीकारे तो तेने संपूर्ण चारमासीनुं प्रायश्चित्त आवे, कारण के तेवो साधु आत्मानी विराधना करनारो तेमज श्रीजिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानो भंग करनारो थाय छे, माटे निर्दोष, शुद्ध अने सुलक्षणवाळुं वस्त्र ज ग्रहण करवु

वस्त्र संबंधी विशेष समजण आपता शास्त्रकारमहाराजा पुनः जणावे छे के-आवुं वस्त्र न ग्रहण करवुं कृत्स्न (आखुं) वस्त्र चार प्रकारनु कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यकृत्स्न, २ क्षेत्रकृत्स्न, ३ काळकृत्स्न अने ४ भावकृत्स्न १ द्रव्यकृत्स्न-बने बाजुना छेडा दशीयुक्त एटले संपूर्ण तेमज प्रमाणथी अधिक होय २. क्षेत्रकृत्स्न-जे क्षेत्रमा वस्त्र अति किंमती तेमज दुर्लभ होय ३ काळकृत्स्न-अमुक अमुक काळमा मळ्युं वस्त्र न मळे अथवा तो दुर्लभ होय जेमके उनाळामां काषायिक-रंगेलुं वस्त्र दुर्लभ होय शीत ऋतुमा कंबल-धाबळा विगेरे दुर्लभ होय तेमज वर्षाऋतुमा केशरमिश्रित-रंगित वस्त्र दुर्लभ होय ४ भावकृत्स्नना बे प्रकार छे (१) वर्ण अने (२) मूल्य वर्ण एटले पांच प्रकारना वर्णवाळु, जेमके मयूरनी ग्रीवा-डोक सरीखुं श्यामवर्णी, पोपटनी पांख सरखु नीलवर्णी, इन्द्रगोपकनी जेवु रक्तवर्णी सुवर्ण सरखु ते पीतवर्णी अने शंख सरखु ते श्वेतवर्णी-आ प्रमाणे जो वर्णकृत्स्न अने द्रव्यकृत्स्न वस्त्र साधु स्वीकारे तो ते साधुने उत्कृष्ट चार लघुमासी मध्यम एक लघुमासी अने जघन्य पांच कल्याणकोनुं प्रायश्चित्त आवे मूल्यकृत्स्नना पण त्रण प्रकार छे-(१) जघन्य, (२) मध्यम अने (३) उत्कृष्ट अढार रुपियानी किंमतनु होय ते जघन्य, एक लाख रुपियानी किंमतनु होय ते उत्कृष्ट अने ते बनेनो वचगाळानु एटले के अढार रुपिया

करता वधारे अने लाख रुपिया करतां न्यून किंमतनुं होय ते मध्यम जाणवुं हवे आ रुपियो केवा प्रकारनो जाणवो ते जणावे छे के-द्वीप संबंधी बे रुपियानो उत्तरापथनो एक रुपियो जाणवो ए रुपियो पाटलिपुत्रनो जाणवो दक्षिणापथना बे रुपियानो कांचीपुरीनो एक रुपियो थाय अने कांचीपुरीना बे रुपियानो पाटलीपुत्रनो एक रुपिया थाय आ रुपिया आश्रयीने किंमतनो मध्य जाणवो हवे आ प्रमाणे ओछी-वधती किंमतनुं वस्त्र साधु स्वीकारे तो तेने केटलो केटलो दंड आवे ते जणावता कहे छे के-अढार रुपियानी किंमतनुं वस्त्र साधु स्वीकारे तो लघुमास प्रायश्चित्त आवे, वीश रुपियानुं ले तो चार लघुमासनी प्रायश्चित्त आवे, पचास रुपियानुं ग्रहण करे तो चार गुरुमासी दंड आवे, अढीसो रुपियानी किंमतवाळुं वस्त्र ग्रहण करे तो छ लघुमास प्रायश्चित्त आवे पांचसो रुपियानी किंमतवाळुं स्वीकारे तो छ गुरुमास प्रायश्चित्त आवे, हजार रुपियानी किंमतवाळुं वस्त्र ले तो तेने छेद[1] आपवो, दश हजार रुपियानी किंमतनुं वस्त्र ग्रहण करे तो मूळ दंड करवो एटले के पुन नवुं चारित्र आपवुं जो पचास हजार रुपियानी किंमतवाळुं वस्त्र ग्रहण करे तो [2]अनवस्थाप्यनो दंड करवो अने जो लाख रुपियानी किंमतनुं वस्त्र ग्रहण

---

१ पहेला अपराधनी शुद्धि करवी ते प्रायश्चित्त, अथवा विशेष प्रकारे चित्तनी विशुद्धि करवी तेनुं नाम प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त दश प्रकारनो छे १ आलोचना, २ प्रतिक्रमण, ३ मिश्र, ४ विवेक, ५ कायोत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद, ८ मूळ, ९ अनवस्थाप्य अने १० पारांचित

आलोचना एटले करेला पापनो गुरु आदि समक्ष प्रकाश करवो प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त एटले थयेल पाप पुन नहीं करवा माटे 'मिच्छा मि दुक्कड' देवो मिश्र एटले करेल पापनो गुरु समक्ष प्रकाश करवो तेमज मिथ्या दुष्कृत पण आपवुं विवेक प्रायश्चित्त एटले अकल्पनीय अशनपानादि विगेरेनो विधिपूर्वक त्याग करवो कायोत्सर्ग एटले कायाना सावद्य व्यापारनो परित्याग करी शुभ ध्यान करवुं तप प्रायश्चित्त एटले करेल पापना दंडरूपे नीवी, आयंबिल, उपवासादि तप करवो छेद एटले महाव्रतनो घात-खंडन थवाथी चारित्रपर्यायनो छेद करवो जेमके कोई एक साधुने चारित्र ग्रहण कर्याबाद पंदर-वीश वर्षनो समय व्यतीत थई गयो होय अने ते साधु प्रायश्चित्तनो भागी थाय तो तेना अमुक वर्षना दीक्षापर्यायनो छेद करी एटले के घटाडी नाखे तेने छेद आलोयण कहेवाय [illegible] त पंदर वर्षना दीक्षापर्यायने बदले घटाडीने बार, दस, आठ वर्षनो, जेम आलोयण आपनारने योग्य लागे तेम, दीक्षापर्याय ओछो करे मूळ प्रायश्चित्त एटले महाअपराध थवाथी चारित्रनो संपूर्ण छेद करी पुन नूतन चारित्र आपवुं ते

२ अनवस्थाप्य-करेला अपराधनुं प्रायश्चित्त ग्रहण न करे त्यां सुधी महाव्रत न उच्चराववा आ प्रायश्चित्त उपाध्यायने ज होय उपाध्याय कोई पण प्रकारनो महाअतिचार लगाडयो होय तो आ आलोयणा स्वीकारवी पडे एटले के उपाध्यायपदेथी दूर करी, सामान्य गृहस्थ बनावी, आचार्यना मनमां आवे तेटलो समय तेवा गृहस्थवेषमां राखे अने पछी योग्य समये नूतन दीक्षा आपे ते अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त कहेवाय

करे तो पाराचित[1] नामनुं प्रायश्चित्त आपवुं प्रतिवादी आ प्रायश्चित्त परत्वे शंका उठावता कहे छे के-किंमती आवा वस्त्र माटे आटलो बधो दंड शा माटे ? तेना जवाब आपता शास्त्रकार कहे छे के-जो किंमती वस्त्र देखवामां आवे तो चोरने चोरी करवानुं मन थाय, आत्मविराधना थाय, परिग्रह-ममताभाव वृद्धिगत थाय अने वीतरागनी आज्ञानुं उल्लंघन कर्युं कहेवाय आ संबंधमां एक राजानुं नीचे लखेल दृष्टान्त विशेष प्रकाश पाडे छे-

कोई एक राजाने एक आचार्यनो सुयोग थयो आचार्यना हृदयंगम उपदेशथी राजानी धर्मरुचि वधी क्रमे क्रमे राजा सम्यक्त्वनी काटिमां आव्यो एकदा राजाने भावना थई के-"गच्छना दरेक साधुओने रत्नकंबल वहोरावुं" आ प्रमाणे विचार थता ज तेणे आचार्य समीप जई रत्नकंबल वहोराववाना पोतानो विचार जणाव्यो आचार्ये राजाने निषेध कर्यो अने जणाव्युं के-"मूल्यवान वस्त्र-रत्नकंबल ग्रहण करवानो अमारो आचार नथी" आचार्यनुं आवुं कथन छतां पण राजाए अतीव आग्रह कर्या पछी एक रत्नकंबल राख्युं आ प्रमाणे रत्नकंबल लईने जतां एक चोरे जोयुं ते चोरनुं मन रत्नकंबल प्रत्ये ललचायुं अने कोई पण प्रकारे ते चोरी लेवाना मनसूबा कर्या मध्य रात्रिना समय थयो अने सर्वे लोको निद्रावश थई गया हता त्यारे चोर वसतिमां आव्यो अने आचार्यने कह्युं के-"रत्नकंबल आपो, नहीं तो मारी नाखीश" त्यारे आचार्ये कह्युं के-'ते रत्नकंबलना तो बे टुकडा करी नाख्या छे" चोरने आ वात पर विश्वास न आवतां तेणे कह्युं के-"देखाडो" आचार्ये बे कटका देखाडया त्यारे चोरे फरी कह्युं के-"ए बन्ने कटका सांधीने आपो, नहीं तो तमारो शिरच्छेद करीश" मृत्युभयथी आचार्ये ते रत्नकंबलना बन्ने टुकडा सांधी आप्या अने चोर ते लईने चाल्यो गयो आ प्रमाणे बहु मूल्यवाळुं वस्त्र पासे राखवाथी मरणांत उपसर्ग उत्पन्न थवानो भय रहे छे आ प्रमाणे अनेक कष्टना कारणभूत जाणीने तीर्थंकर परमात्माए अढार रुपियाथी विशेष किंमतनुं वस्त्र राखवानो साधुने माटे निषेध कर्यो छे

आ प्रमाणेनो अधिकार श्रीसोमप्रभसूरिकृत 'यतिजीतकल्प' नामना प्रकरण उपर श्रीसाधुरत्नसूरिए रचेल टीकामां जणावेल छे

---

१ पाराचित-साध्वीना शीलनो भंग करवाथी, राजराणी साथे अनाचार सेववाथी अथवा शासनने उपघातक कार्यना दंड माटे आ प्रायश्चित्त अपाय छे आ प्रायश्चित्त आचार्यने ज होय छे उत्कृष्टमां उत्कृष्ट प्रायश्चित्त आ छे आ प्रायश्चित्तमां गुप्त वेषे बार वर्ष सुधी गच्छ बहार रही, वेषनो त्याग करी कोई पण तीर्थनो उद्धार या तो समर्थ राजवीने प्रतिबोध पमाडवानुं, शासनप्रभावना करवानुं कार्य बजाववानुं होय छे बाद पुन दीक्षा लई गच्छमां आवे श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिए आ प्रायश्चित्तना पालनरूपे उज्जैनना महाकाळ तीर्थनो उद्धार कर्यो हतो अने वीर विक्रमादित्य नृपने प्रतिबोध पमाड्यो हतो

वस्त्रगवेषणा—

गच्छवासी एटले स्थविरकल्पी साधु वस्त्रनी गवेषणा कई रीते करे ? ते संबंधी विधि दर्शावता जणाय छे के-ज्यारे कोई पण साधुने कामळी प्रमुख कोई पण वस्त्रनी जरूरत होय त्यारे ते साधु गच्छमां रहेला प्रवर्तकने कहे के-" मारे अमुक प्रकारनु वस्त्र जोईए छीए " आ हकीकत सांभळी प्रवर्तक आचार्यमहाराजने जणावे के-" अमुक साधुने वस्त्रनी जरूरत छे " आ प्रमाणे सांभळी आचार्य गच्छमां अभिग्रहधारी जे साधु होय तेने बोलावे अने जरूरियातनी वस्तु सूचवी ते लाववा माटे सूचन करे "जे कोई पण साधुने वस्त्र, पात्रादिक वस्तुनी ज्यारे जरूरत होय त्यारे मारे लावी आपवी " आ प्रमाणे जे साधु अभिग्रह धारे तेने अभिग्रहधारी साधु कहेवाय कदाच गच्छने विषे तेवा अभिग्रहधारी साधु न होय तो आचार्यमहाराज बीजा साधुने कहे के-" अमुक साधु माटे अमुक वस्त्र लावी आपो " आ अभिग्रहधारी अथवा तो अन्य साधु कई रीते वस्त्र-याचना करे ते संबंध जणावता कहे छे के-सूत्रपौरुषी अने अर्थपौरुषी करीने गोचरी माटे जाय गोचरी अर्थे जतां ज वस्त्रनी गवेषणा करे गोचरीमां वस्त्र न मळे तो बीजे पहोरे अर्थपौरुषीमां लेवा जाय ते समये पण न मळे तो सूत्रपौरुषीमां पण लेवा जाय एटले के सूत्रपौरुषीनो समय थई जवा छतां ते न करे अने वस्त्र लेवा जाय आ समय पण कदाच वस्त्रादिकनी प्राप्ति न थई तो आचार्यमहाराज सर्व संघाडाने उद्देशीने कहे के-" तमे गोचरी अर्थे जाओ त्यारे वस्त्र मागीने लावजो " आ प्रमाणे अलग-अलग संघाडाओए याचना करवा छतां पण वस्त्रादिकनी प्राप्ति न थाय त्यारे आचार्य सर्व साधुओने एकत्र करीने कहे के-" तमे गोचरी अर्थे जाओ त्यारे वस्त्रनी याचना करजो " आ प्रमाणे एक पछी एक उपायमां आचार्यमहाराज उपयोग करे परन्तु पोते याचना करवा न जाय जो जाय तो चार गुरुमासी प्रायश्चित्त आवे अने ते उपरांत श्रीवीतराग परमात्मानी आज्ञाभंग आदि अनेक दोषापत्ति आवे लोकव्यवहारमां पण आचार्यनी लघुता थाय बीजा साधुओ जो गीतार्थ होय तो सर्व वस्त्र अर्थे जाय परन्तु जो एक ज गीतार्थ होय अने बीजा साधुओ अगीतार्थ होय तो गीतार्थने अग्रेसर-मुख्य बनावीने वस्त्र लेवा जाय कदाच मानो के एक मात्र आचार्यमहाराज सिवाय बीजा बधा साधुओ अगीतार्थ होय तो अगीतार्थने विषे पण जे लब्धिसंपन्न होय एटले वाक्चतुरतामां कुशळ होय, सामा माणसना भाव पारखनार होय तेने आचार्यमहाराज कहे के-" हे साधु ! तमे आ प्रमाणे निपुणताथी बोलीने वस्त्रनी याचना करजो " एवी रीते अगीतार्थने पण वस्त्र याचवानी आज्ञा आपे परन्तु आचार्यमहाराज स्वयं वस्त्रनी याचना करवा कदापि न जाय वस्त्र याचना संबंधी आ विधि विस्तृत छे परन्तु ग्रंथ विस्तारना भयथी अहीं संक्षेपमां ज जणावी छे, विस्तारपूर्वक विधि निशीथचूर्णीना पांचमा उद्देशामां बतावेल छे त्यांथी जोई लेवी

जे स्थाने चातुर्मास रह्या होय त्यां चातुर्मास पूर्ण थया बाद बे मास पर्यन्त वस्त्रादिक उपकरणो मागवा नहीं कदाच त्यांथी विहार करी अन्यत्र गया होय तो पण बे मास सुधीमां याचना करवी नहीं वळी जे स्थानमां शुद्ध चारित्रपात्र क्रियाशील मुनिवरनु चातुर्मास थयु होय तेवा क्षेत्रमां तेमज पांचे करेल चातुर्मासना स्थानथी पांच गाउना विस्तारमां जे क्षेत्र होय त्यां पण वस्त्रपात्रादिकनी याचना करवी नहीं, कारण के अगत्यना कारण सिवाय तेवी याचना करवानो शास्त्रकाराए निषेध करेल छे आम छतां पण जे स्थळे पासत्थादिक चातुर्मास रह्या होय त्यां उपकरणोनी याचना करवानो निषेध फरमावेल नथी चातुर्मास सिवायना शेष काळमां जे स्थाने मासकल्प थयु होय ते स्थळे पण खास प्रयोजन सिवाय बे मास पर्यन्तना समयमां उपकरणो न ग्रहण करवा आ संबंधी विशेष वर्णन जाणवामां इच्छुके श्रीनिशीथसूत्रना चौदमा उद्देशानी चूर्णी जोवी

उत्सर्गमार्ग प्रमाणे तो वस्त्रने थीगडु न देवानु फरमाव्यु छे कारण के कह्यु छे के-"जे भिक्खू वत्थस्स एगं पडिआणिअं देइ देन्तं वा साइज्जइ।" अर्थात् जे साधु वस्त्रने एक थीगडु आपे अगर तो अन्य मुनि थीगडु देतो होय तेनी अनुमोदना करे तो तेने दोषापत्ति थाय साधुए सुतरना बे अने ऊननु एक-एम त्रण वस्त्रो राखवा वर्षाऋतुमां ऊननु वस्त्र वापरवु परन्तु वर्षाऋतु सिवायना शेष समय मां एकलु ऊननु वस्त्र न वापरवु अंदर एक सुतराउ वस्त्र पण साथे राखवु अने तेनी ऊपर ऊननु वस्त्र ओढवु आ प्रमाणे जो साधु न वर्ते तो अविधिना दोष आवे, कारण के फक्त एकला ऊनना वस्त्रना परिधानथी शरीर ऊपर थता प्रस्वेदथी अगर तो शरीरना संलग्नपणाथी जूं विगेरे जीवोनी उत्पत्ति थाय अने परिणामे दोषोत्पत्ति समय

साधुनु वस्त्र जो फाटी जाय तो कारणप्रसंगे त्रण थीगडां देवाय परंतु आ थी उपरान्त चोथु थीगडु आपे तो प्रायश्चित्त आवे श्रीनिशीथसूत्रमां कह्यु पण छे के-" जे भिक्खू वत्थस्स परं तिण्हं पडिआणिआणं देइ देन्तं वा साइज्जइ।" अर्थात् जे भिक्षु-साधु वस्त्रने त्रण थीगडां उपरांत चोथु थीगडु आपे अगर तो देनारनी अनुमोदना करे-प्रोत्साहन आपे तो प्रायश्चित्त आवे आ सम्बन्धमां विशेष हकीकत जणावतां कहे छे के-आचार्य के रोगी वस्त्रने रंगे तेमज धोवे तो पण आलोयण आवे कारणवशात् रंगवानु अगर धोवानु बने तो त्रण खोबा जेटला जळनो उपयोग करवो, परन्तु तेथी विशेष जळ वापरे तो प्रायश्चित्त आवे

"जे भिक्खू अविहीए वत्थं सिव्वइ, सिव्वंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थस्स एगं फालिअ गंठिअं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थस्स परं

तिण्ह फालिअगंठियाणं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थं अविहीए गंठेइ, गंठेंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू वत्थं अतज्जाएण गंठेइ, जे भिक्खू अइरेग वत्थं गवेसइ गवेसंतं वा साइज्जइ, जे भिक्खू अइरेगगहिअं वत्थं परेण दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ, धरेंतं वा साइज्जइ।" [निशीथसूत्रप्रथमोद्देशके]— अर्थात् जे साधु अविधिपूर्वक वस्त्रने सीवे अगर तो सीवनारने सारो जाणे तो तेने आलोयण आवे जेवी रीते गृहस्थो वस्त्रना बने पडखाने भेळवीने सीवे छे तेवी रीते सीवे तो अविधिपूर्वक सीव्युं कहेवाय तेवी रीते न सीववुं जे साधु वस्त्र फाटया पछी तेने विशेष फाटतुं अटकाववा माटे फाटेला छेडानी गांठ वाळे अगर तो गांठ वाळनारनी अनुमोदना करे तो पण प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं पडे आम छतां पण अपवाद मार्गे जणाववामां आव्युं छे के-कारणवशात् बीजुं वस्त्र उपलब्ध न थाय तो निरुपाये त्रण गांठ वाळी शकाय, परन्तु ते उपरान्त वधारे गांठ वाळीने राखे तो दोष लागे वळी जे साधु अविधिए वस्त्रनी गांठ वाळे अने गांठ वाळनारनी अनुमोदना करे तो तेने अतिचार लागे जे साधु श्वेत वस्त्रनी साथे रक्तवर्णुं वस्त्र सीवे अगर तो नवी-नवी जातना-वस्त्रोनी साथे सीवे तो पण दंड लागे जे साधु पोतानी जरूरीयात करतां वधारे वस्त्र याचे अगर तो याचनारनी प्रशंसा करे तो पण तेने दोष लागे कदाच कोई साधुए विशेष वस्त्र ग्रहण कर्यां होय-राख्यां होय तो तेणे ते वस्त्रो पोतानी पासे दोढ मास करतां विशेष समय न राखवां राखे अगर तो राखनारने सारो कहे तो आज्ञा भंगनो दोष लागे उपर जणावेल आज्ञानो अमल न करतां भंग करे तो पण मासनो गुरुदंड आवे आ वस्त्र संबंधी विशेष हकीकत श्रीनिशीथसूत्रना प्रथम उद्देशामां जणावेल छे

पात्रविवरण-

जे साधु एक रुपियाथी ते त्रण रुपियानी किंमतनुं पात्र ग्रहण करे तो 'लघुमास' नुं प्रायश्चित्त आवे अने चार रुपियानी किंमतथी प्रारंभी अढार रुपियानी किंमत सुधीनुं स्वीकारे तो 'गुरुमास'नी आलोयणा आवे आ उपरांतनी किंमतनुं पात्र ग्रहण करे तो जेम जेम विशेष किंमत तेम तेम दंड-प्रायश्चित्त पण विशेष विशेष समजी लेवुं पात्रना प्रकारो वर्णवता कहे छे के-

"तुंबयदारुअमट्टिअ-पाय उक्कोसमज्झिमजहन्न। उप्परिवाडी गहणे, चाउम्मासा भवे लहुगा ॥ १ ॥" अर्थात् पात्रो त्रण प्रकारना छे-(१) तुंबक-तुंबडाना,(२) दारुक-काष्ठना (लाकडाना) अने (३) मृत्तिक-माटीना आ त्रण प्रकारना पण त्रण त्रण भेदो छे-(१) उत्कृष्ट, (२) मध्यम अने (३) जघन्य आ पात्राने विपरीत रीते ग्रहण करवाथी चार लघुमासी प्रायश्चित्त आवे काष्ठनुं उत्कृष्ट पात्र नंदिपात्र, मध्यम मात्रक अने जघन्य टोप्परक जाणवुं माटीनुं उत्कृष्ट पात्र गोळो, मध्यम पात्र

घडो अने जघन्य पात्र कुल्हडु (कुड़ं) जाणवुं आ प्रमाणे तेना नव भेदो थया आ प्रत्येकना पण त्रण त्रण भेदो छे (१) यथाकृत, (२) अल्पपरिकर्म अने (३) बहु परिकर्म (१) यथाकृत-जेनु मुख पूर्वे करेल होय तेने लेपादि करीने कृत्रिमरूपे मळे तथा पडिमाथी निवृत्त थयेल कोई पण श्रावक अथवा तो निह्नवे करेल होय अने ते आपे ते यथाकृत कहेवाय (२) जे पात्रनु मुख अर्धांगुल प्रमाण छेदवु पडे ते अल्पपरिकर्मित कहेवाय अने (३) जेनु मुख अर्धांगुलथी विशेष छेदवु पडे तेने बहुपरिकर्मित कहेवाय आवा प्रकारना जे पात्रो छे तेने विपरीत प्रकारे ग्रहण करे तो चार लघुमासीनुं प्रायश्चित्त आवे उपलक्षणथी लघुमास तथा पांच अहोरात्रिनु प्रायश्चित्त पण जाणवु

पात्र कई रीते ग्रहण करवु ?

यथाकृत पात्र ग्रहण करवाने माटे जाय त्यारे तेनी गवेषणा निमित्ते त्रण वार परिभ्रमण करतु जाय आवु करवाम छता तेम न बनता अल्प परिकर्मित उत्कृष्ट पात्र ग्रहण करे तो चउमासी लघुदंड आवे, अगर जो बहुपरिकर्मित पात्र प्रथमथी ज स्वीकारी ले तो पण चउमासी लघुदंड आवे यथाकृत पात्रने माटे त्रण वार पर्यटन करवा छता पण उपलब्ध न थाय तो अल्पपरिकर्मित पात्रनी गवेषणा करे अने ते समये प्रथम ज बहुपरिकर्मित पात्र मळी जाय अने ते ग्रहण करी ले तो पण चउमासी लघुदंड आवे आवी ज रीते मध्यम पात्रना संबंधमा जाणवु परन्तु दंड परत्वे चार मासी लघुदंडने बदले त्रण लघु मास दंड जाणवो आवी ज रीते जघन्य पात्र परत्वे पण जाणवु परन्तु दंड पांच अहोरात्रिना जाणवो

पात्र संबंधी आटलु विवरण जणाव्या पछी कहे छे के-जे प्रकारनु पात्र लेवा नीकळ्या होय अने तेने बदले बीजा पात्रनु ग्रहण करे तो पण नीचे जणाव्या मुजब प्रायश्चित्त आवे उत्कृष्ट पात्रनी गवेषणा अर्थे नीकळ्या बाद तेना संबंधी गवेषणा कर्या विना ज मध्यम पात्र ग्रहण करे तो पंचमासी दंड अने जघन्य ग्रहण करे तो पांच अहोरात्रिनो दंड आवे, मध्यम पात्र लेवा नीकळ्या बाद त्रण वखत गवेषणा कर्या विना ज उत्कृष्ट पात्र ग्रहण करे तो चार लघुमासी अने जघन्य पात्र ग्रहण करे तो पांच अहोरात्रिनो दंड आवे, जघन्य पात्र लेवा नीकळ्या बाद गवेषणा कर्या विना ज उत्कृष्ट पात्रनो स्वीकार करे तो चार लघुमास दंड आवे अने जो मध्यम पात्र स्वीकारे तो पंच मासी प्रायश्चित्त लागे आ संबंधे विशेष अधिकार श्रीयतिजीतकल्प प्रकरणनी टीकामा दर्शावेल छे

उत्सर्गमार्गने अंगे श्रीनिशीथसूत्र आ संबंधे विशेष शु जणावे छे ते पण संक्षेपमां तपासी लइए " जे भिक्खू पायस्स एगं तुडिअं तड्डेइ, तड्डेंतं वा साइज्जइ । जे भिक्खू पायस्स परं तिण्ह तुडिआण तड्डेइ, तड्डेंतं वा साइज्जइ।"

आ प्रमाणे साधुने निमित्ते करे-करावे तो तेवी वसति साधुने कल्पे नहीं आ प्रमाण उपर जणावल पृष्ठवंश विगेरे सात अने पटक विगेरे सात-ए प्रमाणे चौद दोषवर्जित वसति साधुए शोधवी-पसद करवी हवे उत्तरोत्तरगुणवसतिना उपघातो जणावे छे के–"दूमियधूमियवासिय-उज्जोवियबलिकडा अवत्ता य। सित्ता सम्मट्ठावि य, विसोहिकोडीगया वसही ॥४॥" १ दूमिय–खडी प्रमुखथी भींत विगेरेने धोळ करावे, थठारी मठारी शोभायमान करे, २ धूविय–धूपित एटले वसतिने धूपद्वारा सुवासित करे, दुर्गंधमय वसति जाणी धूप, अगरादि उखेवीने सुवासित करवी ३. वासित-पुष्प प्रमुख पदार्थोने-पीछाथीने दुर्गंधी दूर करवी, ४.उज्जोविय–वसतिमा अंधकार जाणी प्रकाश करवा माटे दीपक विगेरे स्थापन करे अगर तो प्रकाश माटे नवा जाळिया करावे, ५ बलिकडा–प्रथम वसति भोगवनारने भातनो बलि अर्पण करे अने पछी वसतिमा वास करे, ६ अव्यक्त छाण, माटी, जळ अगर तो गारावडे आंगणाने लिंपे अगर तो पवन आवतो होय तेने अटकाववा माटे सचित्त वस्तुओ नाखे ७ सित्ता–धूळ न उडे ते माटे पाणीनो छटकाव करावे, ८ सम्मट्ठा–कचरो काढीने साफ करी होय-स मार्जित थयेल होय अगर तो झाडो थयल होय ते साधु निमित्ते साफ करावेल होय-आ आठ प्रकारो साधुने निमित्ते जे वसतिमा कर्या होय ते वसतिमा साधुए निवास न करवो आ प्रमाणे घडशालादिक वसतिने विषे पण मूलोत्तर गुणनो विचार जाणवो

वसतिने अंग उपर जणाव्या ते दूषणो उपरांत श्रीआचारांगसूत्रने विषे कालातिक्रांत विगेरे दोषो दर्शाव्या छे, जेनु संक्षिप्त स्वरूप नीचे प्रमाणे छे– "कालाइक्कंत १ उव-ट्ठाण २ अभिक्कंत ३ अणाभिकंता ४ य। वज्जा ५ य महावज्जा ६, सावज्जा ७ मह ८ प्पकिरिया ९ य ॥१॥" १ कालातिक्रान्त-जे स्थाने चातुर्मास रह्या होय तथा बाकीना समयमा (शेष काळमा) जे वसतिमा मासकल्प कर्यो होय ते वसतिमा साधुए न रहेवु एटले के चातुर्मास करेल स्थानमा चातुर्मास उपरांत एक दिवस पण न रहेवु, जो रहे तो कालातिक्रान्त वसतिना भोगवनार गणे अने दुढ-प्रायश्चित्त आवे आवी ज रीते मासकल्प उपरांत एक दिवस वधु रहे तो पण ते दोष लागे २ उपस्थापना-जे वसतिमा चातुर्मास करेल होय ते वसतिमा आठ मास वर्ज्या विना तेमज मासकल्प कर्यु होय ते वसतिमा बे मास पहेला आवे तो उपस्थापना दोष लागे एटले के जे स्थानमा चोमासु कर्यु होय ते स्थानमा आठ महिना व्यतीत थया पूर्वे आवे तो वास न करवो तेमज मासकल्प कर्यु होय तो बे महिनानो समय पसार थया बाद आवंु आ प्रमाणे न वर्ते तो उपस्थापना दोष लागे अने आलोयण आवे

काइ काइ आचार्य एम कहे छे के-जे वसतिमां चातुर्मास करेल होय ते स्थानमां बे चातुर्मास जेटलो बीजो समय व्यतीत थई गया बाद रहेवुं ते प्रमाणे न वर्ते तो पण उपस्थापन दोष लागे ३ अभिक्रांत-जेटली वसतिनुं बीजाए सेवन करेल होय ते अभिक्रांत वसति कहेवाय, तेथी दोषव्याप्त वसतिमां साधु रहे तो ते अभिक्रांत दोषनो भागी थाय ४ अनभिक्रान्त-आधाकर्मी दोषवाळी वसतिमां बीजा कोइए वास करेल होय ते ५ वर्ज्या-कोई गृहस्थे पोताना निमित्ते मकान बनाव्युं होय ते साधुने वसति माटे आपे अने पोते पोताना माटे नवुं बनावे तो ते वसतिमां रहेनार साधुने वर्ज्या दोष लागे अगर तो कोइ गृहस्थे पोताने माटे तंबू ऊभो कराव्यो होय अने ते तंबू साधुने वर्षास माटे आप्या पछी पोताने माटे बीजो नवो तंबू ऊभो करावे तो पण साधुने आ दोष लागे छे ६ महावर्ज्या-अन्यतीर्थिक, संन्यासी, बावा, पाखंडी निमित्ते आरंभ करीने जे वसति बनावी होय तथी वसतिमां साधु जो वास करे तो आ दोष लागे, ७ सावद्य-कोई पण एक साधुने निमित्ते करेल वसतिमां रहे तो आ दोष लागे, ८ महासावद्य-सर्व साधुओने माटे करेल वसतिमां पोते पहेलो ज रहे तो आ दोष लागे ९ अल्पक्रिया-जे वसतिमां पूर्वे कही गयेल मूळगुण, मूळोत्तरगुण अने उत्तरोत्तरगुणना जे दोषो वर्णव्या ते न होय, तेमज कालातिक्रांतादि दोष रहित होय अने गृहस्थे पोताने माटे बनावीने तेमां साधु निमित्ते कंई पण आरंभ समारंभ न कर्यो होय अगर तो कंई पण वस्तु आघी-पाछी न करी होय, काजो पण न लीधो होय तेथी वसति अल्पक्रिया वसति जाणवी आवी वसतिमां निवास करता साधुने कोई पण प्रकारनो दोष न लागे अहीं 'अल्प' शब्द अभाववाचक छे, एटले अल्पक्रियानो अर्थ क्रियारहित अगर तो सर्व दोष रहित वसति जाणवी आ जणावेल नव प्रकारनी वसति पैकी छट्ठी नवमी 'अल्पक्रिया' वसतिनी पसंदगी करवी. आ वसति मळे त्यां सुधी आठ प्रकारनी वसतिनो उपयोग पण न करवो आ प्रमाण उत्सर्गमार्ग जाणवो

हवे अपवादमार्ग दर्शावता कहे छे के-अल्पक्रिया नामनी नवमी वसति न मळे तो प्रथम कालातिक्रांत वसति ग्रहण करवी, ते प्रथम वसति पण न मळे तो बीजी उपस्थापना वसति स्वीकारवी ते बीजी न मळे तो त्रीजी, त्रीजी न मळे तो चोथी, चोथी न मळे तो पांचमी, पांचमी न मळे तो छट्ठी, छट्ठी न मळे तो सातमी अने सातमी न मळे तो आठमी वसति ग्रहण करवी, परंतु प्रमाद रागथी वसतिनी गवेषणा कर्या विना रहे तो गुरु आवे-प्रायश्चित्त लेवुं पडे जे आचार्य आवा प्रकारनी वसतिनो संग्रह करे तेने सदाचार्य जाणवा

त्यारपछीनुं नवुं विशेषण जणावतां कहे छे-साहुवग्गं, साधुओना समुदा

यत्न संग्रह करे ते आधारभूत, पिंड,पात्र, संयमप्रेमी साधुओ होय तेने राखे, तेनु रक्षण करे, तेनी साचवणी पात्र तथा वस्त्रादिकनी सारसंभाळ राखे, औषध विगरेनी तपास राखे परन्तु जे हीनाचारी होय, संयमथी पतित थयेला होय तेवा साधुने न राखे पण पोतानी प्रतिष्ठा के वाहवाह माटे ज्यांत्यांथी जेवांतेवा शिष्योनो समुदाय एकठो न करे

हवे सदाचार्यनुं छेल्लुं विशेषण जणावता कहे छे के-सूत्रार्थनुं चिंतवन करनार एटले के-आचारांग, सुयगडांगादि सूत्रोना अर्थ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, संग्रहणी,वृत्ति तथा टिप्पनादिक जे पूर्वाचार्योए रच्या छे तेने अवधारे-जाणे-सूत्रार्थ चिंतवे अने शिष्यपरिवारने पण ते आपे-समजावे, परन्तु दुर्विनीत शिष्य होय तेने न भणावे-न शीखवे आवा लक्षणवाळा जे आचार्य होय ते सदाचार्य एटले के मोक्षमार्गदर्शक जाणवा आनाथी विपरीत रीते वर्तनारा अनाचारी जाणवा तथा अनाचारी सूरि शिष्यना वेरी शत्रु समान जाणवा शत्रु सदृश आचार्यना लक्षणो कया होय ते बे गाथावडे दर्शावता कहे छे के—

संगहोवग्गहं विहिणा, न करेइ अ जो गणी ।
समणं समणिं तु दिक्खित्ता, सामायारिं न गाहए ॥१५॥
बालाणं जो उ सीसाणं, जीहाए उवलिंपए ।
न सम्ममग्गं गाहेइ, सो सूरी जाण वेरिओ ॥ १६ ॥

[संग्रहोपग्रहं विधिना, न करोति च यो गणी ।
श्रमणं श्रमणीं तु दीक्षित्वा, सामाचारीं न ग्राहयेत् ॥ १५ ॥
बालानां यः पुनः शिष्याणां, जिह्वया उपलिम्पेत् ।
न सम्यग्मार्गं ग्राहयति, सः सूरिर्जानीहि वैरी ॥ १६ ॥]

गाथार्थ.-जे आचार्य आगमोक्त विधिपूर्वक ज्ञानादिक उपकरणो तेमज शिष्यनो तेमना संरक्षणपूर्वक संग्रह न करे, तेमने आहारपाणी प्रमुख के ज्ञान प्रमुखनी प्राप्ति थाय तेवो आश्रय न आपे, साधु-साध्वीओने दीक्षा आपी तेमने अष्ट प्रवचनमातानुं पालन करवानी समजण पडे तेवी सामाचारी निःस्वार्थपणे न शीखवे, वळी बाळ-अज्ञ-अबोध शिष्यो प्रत्ये, गाय जेम वाछरडाने जीभवडे चाटे-चुंबन करे तेम मोहपूर्वक चुम्बनादिक चेष्टा करे, यथार्थ मोक्षमार्ग न बतावे-न समजावे अने कोइ साधु विराधता होय तो तेनु निवारण करे-आवा लक्षणवाळा सूरि-आचार्यने जैनशासनना शत्रु जाणवा. आवा आचार्यो मोक्ष मार्गभंजक होय छे. १५-१६

१ बालक, २ वृद्ध, ३ नपुंसक, ४ क्लीब, ५ जड[1], ६ व्याधिग्रस्त, ७ स्तेन-चोर, ८ राजद्रोही, ९ उन्मत्त-यक्ष विगेरेना वळगाडथी गांडा थएल, १० अंध,[2] ११ दास, १२ दुष्ट, १३ मूढ-विवेक रहित, १४ ऋणार्त्त, १५ जुंगित[3] (हलका कुळनो), १६ अवबद्ध-ऋणादिकथी परवश पडेल, १७ भृत्य अने १८ शिष्यनिष्फेटिका मातापितादिनी आज्ञा विना-आ अढार प्रकारना पुरुषोने दीक्षा न आपवी स्त्रीओमा आ अढार प्रकार उपरांत बे भेद (आगळोक्त तथा वीरा) विशेष जाणवा १९ गर्भ वती अने २० स्तनपान करता बाळकवाळी तेमने पण दीक्षा न देवी, छतां कारणवशात् दीक्षा देवी ज पडे तो अपवाद तथा उत्सर्गमार्गनो विचार करवो

१ बालक—छ सात वर्षनो होय ते बालक कहेवाय आवा लघुबाळने दीक्षा आप तो जैनशासननी हीलना थाय, संयमविराधना थाय, स्वाध्यायनी हानि थाय तेमज आत्मघात पण बने बाळस्वभावसुलभ चपळ चित्तना कारणे विशेष हलन-चलनथी अगर तो आघा-आघाथी जीवोनी विराधना थाय, संयमनी पण विराधना थाय, लोकमां पण अपभ्राजना-निंदा थाय लोको कहे के-"आवा लघु बालकने दीक्षा आपी पण ते बालक तेमा शुं जाणे? खावा-पीवाथी आ बालक दु:खी थाय तो पण आ साधुओने दया आवती नथी आ साधुओ तो निर्दय बनीने पोताना स्वार्थने माटे शिष्योनुं जूथ वधारे छे " लोकनिंदाना भय उपरांत दीक्षित बालकना मातपिता तेनी पासे आवे त्यारे पण ते तेमां मुग्ध प्रलोभन आपता नथीने ! वगेरे शंकाथी ते लघुशिष्यनी बराबर तपास राखवी पडे, अने तेने परिणामे स्वाध्यायनी हानि थाय जो बालकना माता-पिता रोषा वेशमां आव्या होय तो दीक्षा-गुरुने हणवानो-मारवानो पण प्रयत्न करे अने तेथी आत्मविराधना पण थई जाय आ बधा दोषोनो विचार करी बालदीक्षा न आपवी ते ज उचित छे आ संबंधमां बालदीक्षाना हिमायती कोई कहशे के-"अतिमुक्तने छ वर्षनी उमरे अने श्रीवज्रस्वामीने पण लघुवयमां ज दीक्षा क्म आपी?"आनो प्रत्युत्तर ए छे के-' तेमने दीक्षा आपनारा आचार्य आगमव्यवहारी तेम ज ज्ञानी हता कोई बालकने श्रेष्ठ लक्षणवंत जाणी,तेना द्वारा शासननी प्रभावना-उद्योत थशे एम विचारी श्रेष्ठ आचार्य दीक्षा आप तो तेमां दोष न जाणवो-ए अपवाद मार्ग छे कारण के तेवो उल्लेख पंचकल्पभाष्य तथा चूर्णीमां करेल छे कोईनी देखादेखीथी बालदीक्षा न आपवी ए उत्सर्गमार्ग छे अयमत्ता मुनि तथा श्रीवज्रस्वामीनुं संक्षिप्त वृत्तांत नीचे प्रमाणे छे—

---

[1] त्रण प्रकारना जड छे भाषाजड, शरीरजड अने इन्द्रियजड

[2] दृष्टिविहीन अथवा तो स्त्यानर्धि निद्राना उदयवाळो पण जाणवो

[3] त्रण प्रकारना जुंगित छे जातिहीन, कर्महीन अने अंगहीन चांडालादि अस्पृश्य ते जातिहीन, कसाई, माछीमार विगेरे कर्महीन अने अवयवथी हीन ते अंगहीन जाणवा.

अतिमुक्तक कुमारनी कथा–

भारतवर्षना विशाळ नगरोमां पोलासपुरनुं स्थान महत्त्वनुं गणातुं राजवी श्रीविजय अने राणी श्रीमती पोतानी प्रजाने स्वसंतान सदृश गणीने तेनुं सारी रीते पालन करता वंशपरंपराथी चाल्या आवता जैन धर्मना संस्कार उभय दंपतीमां एटला बधा सुदृढ हता के शासननी प्रभावना निमित्ते अवारनवार धार्मिक महोत्सवो योजाता कोई पण दरिद्र नजरे पडतां के तेनुं श्रवण थतां ज राजवी तेना दारिद्र्य निवारणनो मार्ग योजतो अने ए रीते समग्र प्रजा राजवीनी राज्यप्रणालिकाथी संतुष्ट रहेती पोलासपुरनी यश-पताका पण देश-देशांतरमां विजयध्वजनी माफक, राजवीना गुणगान गाती फरकवा लागी हती

आ संस्कारसंपन्न दंपतीना जीवनमां समग्र रीते सुख होवा छतां एक मात्र खामी हती 'सोनानी थाळीमां लोढानी मेख' ए उक्तिनी माफक संसारसुख भोगवतां बहु वर्षो व्यतीत थई गयां छतां संसारसुखना फळस्वरूप संतान तेमने प्राप्त थयुं न हतुं कर्मना अगम ने अकळ सिद्धांतोना जाणकार तेओ तेथी न तो ग्लानि अनुभवता के चिंतामग्न रहेता उलटुं प्रतिदिन तेओनो धर्म-भावना ने धर्मकरणी वृद्धिगत भावने प्राप्त थती कर्मराजा केवा केवा तमाशा योजे छे अने पराधीन जगजीवो नटनी माफक आ संसार-रंगभूमि ऊपर केवा नाच-नृत्य करे छे ते समभावपूर्वक उभय निहाळतां संतसमागम अने तेमना उपदेशनुं श्रवण ए पण तेमनुं अहर्निश आवश्यक कर्तव्य बनी गयुं हतुं

छेवटे भाग्ययोगे तेमना संसारजीवननी उणप-कमी पण दूर थई राणी श्रीमतीए दिव्य कांतिवाळा पुत्ररत्नने जन्म आप्यो पुत्रजन्मनी वधामणीमां राजवीए द्रव्यने जळप्रवाहनी माफक वहेतुं मूक्युं राजाने पितावत् गणनारी प्रजाए पण पूर्ण उत्साहथी आ आनंद-प्रसंगमां पोतानो साथ पूर्यो राजकुमारनुं नाम अतिमुक्तक राखवामां आव्युं शुक्लपक्षनी द्वितीयाना चन्द्रनी माफक ते प्रतिदिन वृद्धि पामवा लाग्यो बालसुलभ काली घेली वाणीथी अने विविध क्रीडा-कुतूहलथी ते राजकुमार सौ कोईने आनंद उपजावी पोता प्रत्ये आकर्षी लेतो

भाग्यवान आत्माओनी पूर्व तैयारी ज अनेरी होय छे तेमना आचार-विचार अने वर्तन विलक्षण रीते भिन्नभिन्न नजरे पडे छे एकादो प्रसंग सांपडतां तेओ पोतानुं उच्च स्वभाव चढवानुं अधूरुं रहेतुं कार्य पुनः शरू करे छे अने सर्प जेम कांचळीनो त्याग करे तेम संसारसुखभोगोनो क्षणमात्रमां त्याग करे छे दारूगोळाथी भरपूर तोपने एक मात्र चीनगारीनी ज जरूर रहे छे, चीनगारी प्राप्त थतां ज ते पोतानुं कार्य शरू करी दे छे तेम पूर्वजन्मना संस्कारी आत्माओने निमित्त मळतां ज पोतानुं मोक्षमार्ग प्रतिनुं प्रयाण लंबावे छे बाळवय ए निरी

क्षण वय छे आ वयमां बाळक दरेके दरेक पदार्थोनुं निरीक्षण करी तेमांथी शिक्षण ग्रहण करे छे, अमुक प्रकारनुं तेनुं वलण निश्चित थती जाय छे एटले ज लोकोक्ति छे के-" कुमळा छोडने जेम वाळीए तेम वळे "

अतिमुक्त कुमारनी वय हवे छ वर्षनी थवा आवी हती छतां तेमनी निपुणता, चालाकी अने वाक्कुशळता दीर्घअनुभवी वृद्ध पुरुष जेवी हती एकदा ते पोतानी उम्मरना बाळको साथे क्रीडा करी रह्यो हतो तेवामां गणधर श्रीगौतमस्वामी मंद मंद पगलां भरतां इर्यासमितिपूर्वक ते बाजु ज आवी रह्या होय तेम जणायुं श्रीगौतमस्वामी नजरे आवतां ज तेणे भावपूर्वक नमस्कार कर्यो उभयना नेत्रो मळतां ज अतिमुक्तकथी सहसा बोलाई जवायुं के-" हे भगवन् ! हुं तमारा जेवो थइश " पूर्वभवनी तैयारी विना, कुदरतना कोई अगम्य संकेत वगर आवुं वचन शुं शक्य छे ? खरेखर ज्ञानीना रहस्यपूर्ण वचनो अने कर्मराजनी गहनता अज्ञ जनथी परखाती नथी बाळकनी इच्छानो जवाब आपतां श्रीगौतमस्वामीए कह्युं के-" वत्स ! तारी हजु लघुवय छे चारित्र तो खाडानी धार जेवुं उग्र छे चारित्रपालन एटले मीणना दांतथी लोढाना चणा चाववा जेवुं छे "

कुमारे प्रत्युत्तर आपतां कह्युं के-" भगवन् ! जो के हुं शिशु छुं छतां मारो आत्मध्वनि कहे छे के-हुं जरूर तमारा जेवो थईश आप मारे त्यां गोचरी अर्थे पधारो आपने अनुकूल अन्नपान तैयार छे आपनां पुनित पगलां करी मारा प्रासादने अने साथोसाथ मारा हृदयरूपी आवासने पवित्र बनावो " अतिमुक्तना आग्रहथी श्रीगौतमस्वामी तेनी साथे गया अने उचित आहार वहोरी पाछा पधार्या

श्रीगौतमस्वामी गणधर महाराजना गमन बाद अतिमुक्तना हृदयमां मंथन शरू थयुं विचारधारा वेगपूर्वक शरू थई गई एक ज मात्र लक्ष्यबिन्दु तेमनी नजर सामे तरवरवा लाग्युं-हुं गौतमस्वामी जेवो कई रीते थवुं ? एवुं पवित्र विचारी करवामां कंई मुश्केली नथी, हवाई तरंगो तो मन कल्प्या ज करे छे परन्तु तेनो अमल करवामां ज मानवनी महत्ता छे श्रीगौतमस्वामी जेवा बनवानो विचार करवामां कंई मुश्केली नहोती परन्तु चारित्र स्वीकारी, शुद्ध रीते तेनुं पालन करी, साधुजीवनना परीषहो सहन करी तेमना जेवा थवुं ए कंई नानीसूनी वात नहोती परन्तु मक्कम मन शुं नथी साधी शकतुं ? मनना आवेग ने आवेगमां अतिमुक्त ऊभो थयो अने शीघ्र गतिए श्रीगौतमस्वामीनी पाछळ गयो तेमने पोतानी चारित्र स्वीकारनी मनोभावना जणावी श्रीगौतमस्वामी तेने प्रभु श्रीमहावीर समीप लई गया प्रभुए मात-पितानी संमति लई आववा कह्युं अतिमुक्ते मातपिता पासे आवी सर्व हकीकत जणावी पोतानी मागणी मूकी के-" मने परमात्मा श्रीमहावीर देव पासे प्रव्रज्या अपावो "

मात-पिताने मन अतिमुक्तकनी मागणी धगधगता ओलवा जेवी हती. विद्युत्पात क्षणमात्रमां बाळीने भस्म करी मूके तेम राजकुमारना आ विचारथी राजदंपतीनो आशा-महेल भांगीने भूक्को थई गयो हतो. एकना एक लाडकवाया पुत्र पर तेमणे केटलाय मनोरथ-महेल चण्या हता, ज्यारे पुत्रनी दिशा तो अनोखी ज मालूम पडी. सत्तासंपन्न राजवीने आभ फाटवानु थई कारण महातु, उत्कृष्ट पुत्रना आत्मप्रतिनिधित्व अने पूर्वसंस्कारित्व माटे मान उपज्युं, हृदय प्रसन्नता अनुभववा लाग्युं छतां पुत्रनो संयम-रंग पतंगना रंग जेवो क्षणजीवी छे के मजीठना रंग जेवो दृढ छे ते तपासवा माटे तेमणे कह्युं के:-

"वहाला पुत्र! आ तुं शुं बोले छे? अंधपुरुषनी लाकडी समान अने निराधारना आधार तुल्य तुं अमारो लाडकोडमां उछरेलो एकनो एक ज पुत्र छे. तुं तो अमारी आंखनी कीकी छे. कीकी नष्ट थइ जतां जेम आंख निरुपयोगी थई जाय छे तेम तारा विना अमने पण आ राज्यवैभव नकामो थइ पडशे. अमारी वृद्धावस्थामां पण तारा सिवाय अमारी सारसंभाळ कोण लेशे? आ विशाळ राज्य अमे कोने सुप्रत करशुं? दीक्षाग्रहणनो समय अमारो छे के तारो? तेनो तो जरा विचार कर. अमारा केश श्वेत थया छे अने तुं तो विकास पामता कुसुम सरखो छे माटे उतावळ न कर. आ राज्यवैभव भोगवीने पछी तारु मनोवांछित साधजे."

"वहाला तात तथा जननी! विशिष्ट ज्ञान वगर केम जाणी शकाय के तमे वृद्ध छो अने हुं बाळक छुं? शुं यमराज वयानु क्रमेसर निरखी आमंत्रण मोकले छे? पशु जेम आपणे जोइए छीए के पण जेवा शक्तिहीन थइ गया छे, नेत्र जेवा पडी रह्या छे अने गात्र जेवा गळी जवा लाग्या छे एवा वृद्धने पहेलो मूकी, जेने संसारने निहाळ्या पूरा पांच चोमासा पण नथी थया, अरे! जेमां पेशानी वाळाक पण मनोहरताने धारण करवा लागी होय छे अने जे हजु दुनिया कई चिडियानुं नाम छे ए जाणतो पण नथी एवा बाळकने शुं यमराज नथी उपाडी लेतो? माटे ज नाना-मोटाना के वयना विचार नकामा छे.

वळी पूज्य पिताजी! विचारो के कोण पुत्र छे ने कोण माता के पिता छे? संसारभ्रमणमां आ जीवने एवा केटलाय संबंधो थई गया तेनी कंई नोंध छे? आ जे माता छे ते भूतकाळमां पिता, भाई के पुत्रना संबंधथी केटलीय वार जोडाई चूकेल छे. धर्मराजनी जाळमां सत्यनी सरखाई शोधी पण जडे तेम नथी. वीतरागना वचन मुजब सर्व आत्मा पवित्र तुल्य छे. ए सिवाय न तो माता के न तो पिता, नथी तो प्रिया के नथी तो संतान, अने तेथी ज रीते तो मा के न तो बहेन शरण आपनार थई शके छे. ज्यां पोते ज पराधीन छे त्यां बीजाने शरणभूत थाय पण केवा प्रकारे! एक आत्मा कोटि द्रव्यनुं दान करवाथी पण शकता ना! शरण तो ते महात्मानुं लेवुं घटे के जेणे त्रण लोकमां परम ऐश्वर्यता साधी छे. एवी ऐश्वर्यतानी साधना अर्थे हे शिरछत्र!

हुं आपनी अनुज्ञा चाहुं छुं आपना हार्दिक आशीर्वाद वगर मारुं ईप्सित कार्य सधाय तेम नथी, तेथी आप उभय राजीखुशीथी मने रजा आपो तमे सारी रीते समजो छो के आप वडिलोनी अनुज्ञा विना भगवंत इन्द्रभूति मारो स्वीकार करे तेम नथी वळी विनयप्रधान जैनधर्ममा मारा जेवानुं स्वच्छंदी वर्तन तल मात्र चाली शके तेम पण नथी अम करवुं ते मारो पुत्र तरीकेनो धर्म पण नथी, माटे आप अंतरना उमळकाथी हर्षपूर्वक मने अनुज्ञा आपो "

मातापिता पण अरिहंतदेवना उपासक हता संसारनी परिस्थितिने समजनारा हता तेथी तेओए महोत्सवपूर्वक पुत्रने श्रीमहावीरस्वामीने हस्ते प्रव्रज्या अपावी कुमार पण गुरुश्रीनुं बहुमान करवापूर्वक शास्त्रना अध्ययनमां तेम ज क्रियाकलापमा तद्रूप बन्यो अंतरना उल्लासथी साधुधर्मनुं पालन करवा लाग्या वयमा बाळ छता ज्ञानथी अबाळ (पंडित) बन्यो स्खलना वगर चारित्रधर्मनी दिवसानुदिवस विशुद्धिने धारण करी गुरु साथे विहरवा लाग्यो आम छता बाल्यस्वभावसुलभ केटलीक स्खलनाओ-त्रुटीओ थ. जती

एकदा प्रात काळमा क्षुधातुर थवाथी कोई शेठीआ घरमा अतिमुक्तक मुनि गोचरी लेवा गया त्या 'धर्मलाभ' शब्दनो उच्चार करी ऊभा त्यां शेठनी पुत्रवधूए हास्य करता प्रश्न कर्यो के-" हे क्षुल्लक मुनिवर ! आटली जल्दी उतावळ केम करी ?" तेनी आवी अपूर्व ने मार्मिक वाणी सांभळी चमत्कार पामेला कुमारे जवाब आप्यो के-'यज्जानामि तन्न जानामि' शेठनी पुत्रवधूने आ वाक्यनुं रहस्य न समजायुं एटले तेणे पुन प्रश्न कर्यो-" आपे शुं कह्युं ? मने बराबर समजावो ' " भगिनी ! तमारा प्रश्ननो आशय तो ए हतो के 'मने आटली नानी वयमा दीक्षा लेवानी उतावळ केम थइ आवी ?' में जणाव्युं के 'यज्जानामि' एटले मृत्यु गमे ते समये जरूर आववानुं छे ए वात हुं जाणुं छुं परन्तु 'तन्न जानामि' एटले जे नथी जाणतो ते एटलुं ज के ए क्यारे कई अवस्थामां आवशे ? बाल्यकाळ पछी मारुं आवशे के वृद्धावस्थाने ते पसंद करशे ? अने क्यां आ स्थिति होय त्यां पछी उतावळनो प्रश्न ज केवो ? मारी पासे एवुं कोई विशिष्ट ज्ञान नथी के जेथी मृत्युना आगमननी चोक्कस तिथि वार अवधारी शकाय तेथी उतावळ कहेवाय पण केम ?"

शेठनी पुत्रवधूए बाळसाधुना आ रहस्यपूर्ण वचनो श्रवण करी सम्यक्त्व मूळ बार प्रकारना व्रतयुक्त श्रावकधर्म ग्रहण करीने शुद्ध अन्नपानादिवडे मुनिश्रीने प्रतिलाभ्या

एकदा वर्षाऋतुमां धरती पर चोतरफ जळ पथराई रह्युं छे, विजळीओना चमकार ने वादळाना गडगडाट पछी मुशळधार वरसाद वरसी रह्यो छे जाणे

सृष्टिसुंदरी हर्षभर्युं स्नान करी रही होय तेवुं चित्र नजर समुख खडुं थाय [illegible] जनता पाताना आश्वासमांथी वर्षाकाळनुं आ हृदयगम दृश्य निहाळी रही [illegible] पौषधशाळाना मकानमांथी बाळसाधु अतिमुक्तकनी दृष्टि पण आ तरफ स्वाभाविक रीते खेंचाय छे घडीभर स्वाध्याय बाजु पर मूकी उपाश्रयमांथी नीचे उतरे छे अने पाणीना वहेता जता प्रवाह पर नजर मंडाय छे वरसाद अटकता जाणे कारागृहना बंधनमांथी छूट्या होय एम नानी वयना केटला य बाळको घरमांथी बहार आवी, पाणीना नाना नाना खाबोचीयामां कागळनी होडीओ बनावी सागरमां वहाण हंकार्या तुल्य आनंद माणी रह्या छे आ दृश्य जोता ज अतिमुक्तक मुनिवर पण बाळवयनी ऊर्मि जागृत बनता ज समान वयना शिशुओना साथे शरत करी काचलीनी होडी तरावयामां लीन बने छे पोते कई कक्षामां वर्ते छे, पोते सचित्तना त्यागी साधु छे ए वात तद्दन स्मृति बहार जाय छे आ समये ज्ञानी सिवाय कोण जाणी शके तेम छे के जळमां काचलीनुं नाव तरावनार आ बाळसाधु अल्प काळ पछी संसारसागरमां आत्म-नाव तरावी आत्मसिद्धि प्राप्त करनार छे ' अज्ञानी जनता तो उघाडी आंखे जोई रही छे के-मुनिपणाने न छाजे, एवं दूषण लागे तेवुं अतिमुक्तकनुं वर्तन छे

उपाश्रयनी बारीएथी जोई रहेला श्रीगौतमस्वामीनी दृष्टि अकस्मात् आ लघु शिष्य पर पडी तरत ज तेओश्री त्यां जई पहोंच्या गुरुश्रीने जोता ज अतिमुक्तक शरमाया उभय प्रभु श्रीमहावीरदेव समीपे गया

त्यां प्रवेश करी ईर्यापथिका पडिकमवा लाग्या त्यां अतिमुक्तक साधुए 'दगमट्टी दगमट्टी' ए पदना अर्थमां पुष्कळ विचारणा करी पोते साधु जीवनना दृष्टीने अभराई ऊपर चडाव्या, नाव तरावयामां हमणां ज पाणी तथा माटीना जीवोने जे किलामणा पहोंचाडी छ [illegible] आखु य दृश्य चक्षु सामे खडुं करी एनी साचा मनथी क्षमापना आरंभी खरु ज कह्यु छे के–
'मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयो' ।' कर्मबंध के मुक्तिनुं कारण मनुष्य मात्रने पोतानुं एक मन ज छे

'दगमट्टी'नी विचारणामां ने विचारणामां ज अतिमुक्तक मुनि तल्लीन बनी गया विचारधारा वधी एकाग्र बनी गई के पोतानी आसपास शुं चाली रह्युं छे तेनुं पण तेमने भान न रह्युं पश्चात्तापना पावक विशेष प्रदीप्त थयो अने ए पावकनी ज्वाळामां कर्मसमूह दग्ध थवा लाग्यो छेवटे क्षपकश्रेणीनुं अवलंबन ग्रहण करी, सकल कर्मनो क्षय करी अल्पकाळमां केवळज्ञान प्राप्त कर्युं समीपस्थ देवोए तेमनो केवळज्ञान महोत्सव कर्यो जे तीव्र कर्मो कोटि जन्म सुधीना तीव्र तपथी बाळी शकाता नथी ते अर्धी क्षणमां आत्मभावनारूपी तीव्र तपबळ ने समतानुं अवलंबन लई बाळी शकाय छे.

बाद अतिमुक्त केवळीए पृथ्वीतळ पर विहार कर्यो, घणा भव्य जीवोने उपदेशवारिथी सिंचित करी, अधोगतिमा पडता अटकावी तेओनो उद्धार कर्यो. आवी रीते विचरता विचरता, जुदा जुदा गाम-नगरामां फरता फरता ययपुर समीप आवी त नगरना बहारना उद्यानमा समवसर्या जितशत्रु राजा बेहु जन समुदायुक्त आवी, प्रदक्षिणा दइ, वदन करी, धर्मश्रवण करवा बेठो मुनिमा मुखद्वारा उपदेशधारा वहवा लागी- 'ज्या लगी आ देह स्वस्थ छे अने वृद्धावस्था आवी नथी तेमज इन्द्रिया शिथिल थइ नथी ने आयुष्यनो अंत आव्यो नथी त्यां सुधीमा आत्मकल्याण अर्थे हे भव्यो! जरूर यत्न करो आग लागया पछी कुवो खोदवा जेम मूरखतानु कारण छे तम आ स्थिति पलटाया पछी-बाजी हाथमाथी गया पछी-उद्यम शु कामनो ? अने तमा पोताना मानो छो ते तमारा रहेवाना नथी लक्ष्मी चचळ छे, क्षणभगुर छे, आयुष्यनो भरोसो नथी, देह व्याधिग्रस्त क्यारे थशे ते जाणी शकाय नहीं, पुत्र पत्नी आदि परिवार पण स्वार्थपरायण छे आवा असार ससारमाथी साररूप सयमनु ज ग्रहण करवु ते सर्व श्रेष्ठ छे"

प्रतिज्ञापालन अने अतिशयताने वरेला अतिमुक्त केवळीनी देशना फळवती बने एमा शु आश्चर्य ! केटला य भव्यात्माओए साधुधर्मनो स्वीकार कर्यो घणाओए बार व्रतयुक्त श्रावकधर्मनो स्वीकार कर्यो आत्मकल्याणनी आवी केटली य परपरा प्रवर्तावी माते अतिमुक्तकुमारे मुक्तिपुरीमा पगलां कर्या

श्रीअतकृतदशाग सूत्रना छट्ठा वर्गमां पदरमो १५ मो अधिकार छे तेमां अतकृतकेवळी थइने मोक्षे गयानु कहेलु छे तस्य पवळीभाग्य बालवयमा भाग वती दीक्षा स्वीकारी, इरियावही पडिक्कमतां ज जेमणे केवळज्ञान प्राप्त कर्यु ते महात्मा अतिमुक्तकुमारने अनेकशः वदन हो'।

श्रीवज्रस्वामीनुं वृत्तांत-

सुप्रसिद्ध मालव देशमा तुबवन नामनु नगर हतु ते नगरने विषे धन नामनो व्यवहारविचक्षण अने श्रद्धालु श्रावक वसतो हतो तेने धनगिरि नामनो सद्गुणी पुत्र हतो भरसभागमने कारणे धनगिरिनु मन प्रथमथी ज वैराग्य प्रति ढळेलु हतु परन्तु युवावस्थाना आंगणामां प्रवेश करतां ज पिताना आग्रहथी सुनदा नामनी सुशील सुकन्या साथे पाणिग्रहण कर्यु सुनदाना भाइ आर्य समिते ससारनी विलक्षणता निहाळी संयम स्वीकार्यु हतु

"कार्येषु मंत्री करणेषु दासी" नी माफक पत्नीनो ससार सुखपूर्वक चालवा लाग्यो धनगिरि साथे ससारसुख भोगवता सुनदा सगर्भा बनी तिर्यग्जृभक देवना (जे देव अष्टापद पर्वत पर श्रीगौतमस्वामीना मुखद्वारा पुंडरीक अध्ययन सांभळ्युं हतु तेनो) जीव स्वर्गथी सुनदानी कुक्षिमा अवतर्यो उत्तम गर्भना प्रभावथी सुनदा धर्मकरणीमा अतिशय आसक्ति धरवा लागी तेने उत्तम प्रकारना दोहदो उत्पन्न थवा लाग्या, जे सर्व धनगिरिए पूर्ण कर्या.

पोतानी भार्याने सगर्भा निहाळी धनगिरिनो अत्यार सुधी सुषुप्त रहेलो वैराग्यभाव जागृत थयो. एकदा प्रसंग जोई तेणे पोतानी प्रियाने कह्युं के-" हे सुलक्षणी! तारुं अने तारा गर्भनुं कल्याण थाओ. तारा जीवनना आधाररूप संताननी तने प्राप्ति थई चूकी छे. हुं हवे मारुं आत्महित साधवा तारा भाई आर्यसमिते जेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी छे ते श्रीसिंहगिरि पासे सर्वविरति स्वीकारीश."

सुनंदाए घणा आग्रहपूर्वक आजीजी करी छतां अमृतपानना इच्छावाळा धनगिरिए तेणीनां वचनरसमां आदर न कर्यो. पत्नीने विशेष समजावतां छेवटे तेणे अनुमति आपी अने धनगिरिए चारित्र ग्रहण कर्युं.

योग्य समये सुनंदाए एक सुंदर अर्भकने जन्म आप्यो. पूर्वजन्मना संस्कारने योगे तेनी देह-कांति देव सरखी देदीप्यमान हती. पुत्रमुखनुं अवलोकन करी सुनंदा अतिशय हर्ष पामी. घडीभर तो पोताना पतिनुं वियोगदुःख पण भूली गई. कुळना विभूषणरूप आत्मजने निरखी कई माताने हर्षाश्रु न आवे? पण भावीना गर्भमां शुं छुपायुं छे तेनी सामान्य मानवीने शी खबर पडे छे? सुनंदा पोताना संतानप्राप्तिना सुख उपर मनोरथना किल्ला चणवा मंडी पडी. पण तेने खबर न हती के लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः? अगर तो विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान् नैव चिन्तयति।

जन्मसमये पासे रहेली कोई एक सखीए तेने उद्देशीने कह्युं के-" वहाला तनुज! तारा पिताए जो संयम न स्वीकार्युं होत तो तारो जन्मोत्सव एक राजकुमारना जन्म जेवो उजवात." आ शब्दो कर्णपट पर अथडातां ज शिशु चमक्युं. सखीए उच्चारेला शब्दो पर विशेष ऊहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पोतानो देव-भव स्मृतिपटमां आव्यो अने, बाळकनी मनोवृत्ति तरत ज बदलाई गई. देव भवथी दिव्य सुखो जेणे भोगव्यां होय तेने आ संसार असार न जणाय ने? तेने देवसुख आकर्षण करवा लाग्युं परन्तु संयम पालन विना देवसुख क्यांथी प्राप्त थाय? विचारणाने अंते तेणे चारित्र-ग्रहणनो निरधार कर्यो परन्तु जन्म धारण कर्याने मात्र गणत्रीना ज दिवसो व्यतीत थया हता. आ स्थितिमां शीघ्र चारित्र-स्वीकार कई रीते थई शके अने एक मात्र आधाररूप पोतानी माता रजा पण केम आपे? आकाशपुष्पनी माफक तेनी आशा मनमां ने मनमां ज शमी गई.

तेणे विचार्युं के माताने कंटाळो आपुं तो ते नक्की मारो त्याग करशे, नहीं तो एकना एक पुत्र परत्वेनो तेनो मोहभाव घटशे नहीं. तेणे बालोचित रुदन शरू कर्युं. रुदन सांभळी सुनंदा तेनुं रंजन करवा लागी, तेम छतां

राखवा विधविध प्रयत्न करवा लागी, परन्तु बालक रुदन बंध न थयुं जे जाणी जाईने रुदन करतु होय ते क्याथी समजे ? बालक थोडो वार शांत थतु परन्तु पाछु तेनु रुदन शरू थई जतु सुनंदा आ जातना प्रतिदिनना कल्पांत थी कंटाळी गई धीमे धीमे बालक छ महिनानो थयो, परन्तु एटलो समय सुनंदाने तो छ वर्ष जेटलो दीर्घ थई पडयो

भाग्यानुयोगे श्रीसिंहगिरि पोताना धनगिरि तथा आर्यसमित प्रमुख शिष्यो साथ आ ज नगरमां आवी चढया गोचरीसमय थता धनगिरिए गुरु-आज्ञा मागी ज्ञानातिशयथी भावी जाणी गुरुए धनगिरिने जणाव्युं के-" आजे तमोने जे गोचरी प्राप्त थाय ते लावजो सचित्त के अचित्तनो विचार न करशो " धनगिरि मुनि गोचरी माटे परिभ्रमण करता करता सुनंदाना गृहे ज आवी चढया सुनंदा पोताना प्रतिदिन रुदन करता पुत्रथी परिताप पामी हती धनगिरिने जोता ज तेनो स्वाभाविक क्रोध प्रगटी निकल्यो अने कह्यु के-' हुं तो तमारा पुत्रथी कंटाळी गई छु हवे तमे तेने लई जाव अने पाळो-पोषो " आ प्रमाणे बोलीने आवेश न आवेशमां तेणे पुत्रने वहोरावी दीधो धनगिरि तरत ज गुरु पासे आवी पहोंच्या पुत्रना वजनथी धनगिरिनो हाथ नमी जतो हतो ते जोई गुरुए कह्यु के-" आ पुत्र वज्र जेवो मजबूत ने शक्तिशाळी थशे माटे तेनु वज्रस्वामी एवु नाम राखो " लालनपालन माटे गुरुए तेने साध्वीओने सोंप्यो अने साध्वीओए पण शय्यातरीओ(उपाश्रय आपनार श्राविकाओ)ने सोंप्यो तेओ पुत्रवत् तेनु लालनपालन करवा लागी अने क्रमशः वज्रस्वामीनी वय त्रण वर्ष लगभगनी थई साध्वीओ अगियार अंगनी आवृत्ति करता तेने पयाम चितथी अवधारी लेवाथी वज्रस्वामी पण तीव्र प्रज्ञाशक्तिना प्रभावे अगियार अंगना ज्ञाता बनी गया खरेखर कह्यु छे के-' बुद्धिर्यस्य बलं तस्य । '

अमुक समय पसार थया बाद श्रीसिंहगिरि प्रमुख साधुओ पाछा ते ज नगरमां आवी चढया पुत्र सोंपता तो सोंपाई गयो परन्तु त्यारबाद सुनंदाना पश्चात्तापनो पार न रह्यो कोई पण हिसाबे पुत्रने पाछो मेळववा तेणे महेनत करवा मांडी पण पाणी वलोववानी माफक ते सर्व वृथा थयु छेवटे गुरु सन्मुख आवी पोतानो पुत्र पाछो माग्यो संघ पासे पण वात मूकाई अने तेमां निष्फळ नीवडता छेवटे सुनंदाए राजदरबारमां पण फरियाद करी राजवीए योग्य तोड काढतां फरमाव्यु के-" राजसभा भरवी अने तेमां पुत्रने वने वच ऊभो राखवो जे तरफ पुत्र जाय तेनो कबजो जाणवो " सुनंदाने आ पसंद पड्यु कारण के ते जाणती हती के-लघु-बाळ पुत्रने मिष्ट भोजन के द्रव्य आदिना प्रलोभनथी ते पोता तरफ आकर्षी लेशे अने पोतानी धारणा पार पडशे सुनंदाए तरत ज विविध तरेहना सुंदर रमकडा अने अन्य मनगमता पदार्थो दर्शावी प्रलोभन आपवामां कशी कचाश न राखी छतां वज्रस्वामीए तेनी सामे

नजर सरखी पण करी नहीं गजेन्द्र पर आरोहण करनार शुं गर्दभ पर बेसे ? छेवटे धनगिरिए वचन रजोहरण बताव्या ते तरत ज तेमना तरफ दोडी गयो अने राजवीए सिंहगिरिनी तरफेणमां अभिप्राय आप्यो सुनन्दाए पण छेवट समजी लई दीक्षा लीधी धीमे धीमे वय वधवानी साथे शास्त्राभ्यास करतां, वज्रस्वामी पण व्याकरण, काव्य, सिद्धान्त अने तत्व विगेरेमां घणा ज निष्णात थया

वज्रस्वामी एकदा गोचरी लेवा जता हता त्यारे तेना पूर्व मित्र देवे तेमनी बुद्धिनी परीक्षा करी रस्तामां देवे सूक्ष्म वेदर्भीआ विकुर्वी पोते माणसानुं रूप धारण करी पोतानी पर्णकुटीमां वहोरवा पधारवा माटे आग्रह कर्यो वज्रस्वामी इर्यासमितिपूर्वक गया अने जोयु तो सार्थवाहना पग भूमिने स्पर्शता न हता नेत्रो पण निर्निमेष हता बुद्धिशाली वज्रस्वामीने मालूम पड्युं के-आ सार्थवाह नथी, पण कोई देवे आ बधी जाळ रची छे तेमणे तरत ज शांत शब्दोमां कह्युं के-"महानुभाव अमने देवपिंड न कल्पे" वज्रस्वामीनुं वचन सांभळी देव अत्यंत विस्मित थयो अने स्वस्वरूप प्रगट थई श्रीवज्रस्वामीने वैक्रिय लब्धि आपी आवी ज रीते बीजे प्रसंगे घेवरथी परीक्षा करतां देवे प्रसन्न थई आकाशगामिनी विद्या आपी हती

एकदा वज्रस्वामीमां रहेल जवाहीर गुरुनी नजरे चढ्युं वात एम बनी के तेओ स्थंडिलभूमि गया हता अने अन्य सर्व शिष्यो गोचरी गया हता वज्रस्वामी बधा उपकरणोने क्रमबद्ध गोठवी पोते वचमां बेठा अने समर्थ-शाळवत्ता गुरु स्वशिष्योने वाचना आपे तेम मोटे सादे अगियार अंगनी वाचना उपकरणोने उद्देशीने आपवा लाग्या गुरुमहाराज वसति नजीक आव्या तेवामां तेमणे मेघ जेवा गंभीर ध्वनि सांभळ्यो सांभळतां ज तेमनां कर्णो चमक्या छिद्रद्वारा जोतां श्रीवज्रस्वामीनुं उक्त आचरण निरखी अत्यंत हर्ष पाम्या बालमुनि श्रीवज्रस्वामी क्षोभ न पामे ते माटे तेमणे दीर्घ स्वरे निसीहि उच्चारी शब्द सांभळतां ज वज्रस्वामीए शीघ्र सर्व उपकरणो जेम हतां तेम गोठवी दीधां अने बहार आवी गुरुमहाराजनी चरणरज दूर करी

वज्रस्वामीनी आवी प्रज्ञाशक्ति अने विनयशीलपणुं जोई आ बालसाधुनी कोई अवज्ञा न करे तेमज तेमनी शक्तिनो अन्यने ख्याल आवे ते माटे तेमणे एक उपाय शोधी काढ्यो बधा शिष्योने बोलावी कह्युं के-"अमो आसपासना गामडांमां विचरीए छीए अल्प समयमां पाछा आवशुं, माटे तमो सर्व अत्र रहो अने धर्मध्याननी वृद्धि करो" शिष्योए प्रश्न कर्यो के-"आपनी गेरहाजरीमां अमने वाचना कोण आपशे ?" गुरुए शांत रीते जवाब आप्यो के "श्रीवज्रस्वामी तमने वाचना आपशे" गुरु सत्य कहे छे के आपणो श्रवण भ्रम छे एम विचारी तेओए पुनः पूछ्युं छतां गुरुए प्रथमनो मात्र ज जवाब आपवाथी सर्व कोई आश्चर्यना सागरमां लीन बनी गया वज्रस्वामीनी वय बधा

अने क्यां वाचना आपवा जेम अगीयथ थार्य ? क्यां दीर्घ चारित्रपर्यायवाळा साधुओ अने क्यां एक बालसाधु ! आवी शंका धरावता छतां गुरुए कहेल मिथ्या न होय तेवी भावनाथी तेओए ते सयथी विशेष पृच्छा न करी प्रभाते श्रीवज्रस्वामीए पछी उमदा रीते वाचना आपी के मंद बुद्धिवाळा साधु पण महेलाईथी समजी शके. श्रीवज्रस्वामी वाचना आपता त्यारे शिष्योने एवो भ्रम थई गयो के गुरुमहाराज वाचना आपवा माटे पाछा आव्या के शुं ? शिष्यो श्री वज्रस्वामीनी मुक्त कंठे प्रशंसा करवा लाग्या अल्प समयबाद ज्यारे श्रीसिंहगिरि आव्या त्यारे तेओए कह्युं के-" हवेथी हमेशा श्रीवज्रस्वामी ज अमोने वाचना आपे तेवो बंदोबस्त करो तेमनी समजावटथी जेम मेघागमन समये मयूर नृत्य करे तेम अमारा हृदयरूपी मयूरा स्पमरपूर बने छे "

वज्रस्वामीनो अभ्यास वधता वधता पूर्वोनो थई गयो ते समये दश पूर्व सुधीनुं शास्त्राध्ययन शेष रह्युं हतुं अने तेनुं संपूर्ण ज्ञान श्रीभद्रगुप्तसूरिने हतुं एवखा श्रीसिंहगिरिने विचार स्फुर्यो के-श्रीवज्रस्वामीने भद्रगुप्तसूरि पासे मोकलीए अने सकल शास्त्रपारगत बनावीए. गुरु आज्ञा थता ज तेओए विहार कर्यो अने रात्रि थई जता तेओ नगर बहार रातवासो रह्या आ बाजु भद्रगुप्त सूरिने स्वप्न आव्युं के तेमना हाथमांथी दूधपूर्ण पात्र कोईए लई लीधुं अने तेनुं पान करी प्रमोद अनुभव्यो श्रीवज्रस्वामीए आगमन-हेतु दर्शावी अभ्यास कर्यो अने अल्प समयमां ज पारगतपणुं प्राप्त करी गुरु समीपे आवी पहोंच्या गुरुए दश पूर्वमां निष्णात थया जाणी आचार्यपद आपी गच्छनो भार पण तेमना शिरे नाख्यो.

एकदा वज्रस्वामी विहार करता करता पाटलीपुत्र नगरे आव्या त्यां विघाप्रभावथी कदरूपी काया बनावी सुन्दर देशना आपी देशना सांभळ्या बाद नगरजनो टीका करवा लाग्या के देशनाने अनुरूप रूप नथी बीजे दिवसे कामदेव सदृश रूप बनावी देशना आपी आ व्यतिकर सांभळी ते नगरना धनश्रेष्ठीनी रुक्मिणी नामनी कन्याए मनथी निरधार कर्यो के " परणुं तो वज्रस्वामीने ज नहीं तो काष्टभक्षण (मृत्यु) श्रेष्ठ छे " धनश्रेष्ठीने आ वात काने आवता ज तेमणे श्रीवज्रस्वामीने कह्युं के-"हुं आपने एक करोड रत्न कन्यादानमां आपीश माटे मारी आजीजी स्वीकारो " बाद श्रीवज्रस्वामीए रुक्मिणीने समजावी अने पोताना साध्वीसंघमां एक लायक व्यक्तिनो उमेरो कर्यो

एकदा ते प्रदेशमां भयंकर दुष्काळ पड्यो प्राणीओ दुःखी थवा लाग्या अने सकळ संघ पण भूखमरा तेमज अनेक आपत्तिओने कारणे त्रासी उठ्यो साधु-समुदायमां पण भूखमराए स्थान जमाव्युं आ आफतमांथी बचाववा माटे श्रीसंघे वज्रस्वामीने विज्ञप्ति करी श्रीवज्रस्वामीने स्वकीय फोरववानो प्रसंग प्राप्त थयो तेमणे तरत ज पोतानी शक्तिथी विशाळ पट विकुर्व्यो अने तेना ऊपर सकळ संघने बेसाडी महापुर नामना नगरमां पहोंचाड्यो

महापुर नगरमा बौद्धोनु साम्राज्य चालतु हतु बौद्ध लोको जैनोनी सारी रीते निन्दा तथा ईर्ष्या करता धीमे धीमे ते नगरना राजाना कर्णमा झेर रेडवामा आव्यु अने कोई पण प्रकारे जैनोने हेरान करवानो मनसूबो कर्यो पर्युषण पर्व आवता राजकीय मालीओने गुप्त रीते कहेवराव्यु के " जैनोने एक पण फूल न आपशो " पर्युषण जेवा पवित्र दिवसोमा एक पण पुष्प न मळवाथी श्रीसंघनु मन संताप अनुभववा लाग्यु श्रीमने वज्रस्वामीने आ वृत्तांत जणाव्यो शासनप्रभावना अर्थ श्रीवज्रस्वामी आकाशमार्ग माहेश्वरी नगरीए गया अने त्या तेमनो मित्र तडिग नामनो माळी रहेतो हतो तेणे वीश लाख पुष्प ते ज समये अर्पण कर्या क्षुद्रहिमवंत पर्वत परथी लक्ष्मीदेवीनु सहस्रपत्रवाळु कमळ जिनपूजा माटे लाव्या आ चमत्कार जोई बौद्ध लोको भोठवाणा पडी गया अने राजा पण जैन धर्मावलंबी बन्यो आ प्रमाणे तेओश्रीए जैनशासननी महाप्रभावना करी

एकदा वज्रस्वामीने श्लेष्म रोग थयो तेथी सूंठना कटको उपयोगमा लई, तेमाथी थोडो वापरी बाकीनो साजे वापरवा माटे कानना भाग पर राखी मूक्यो दैवयोगे तेनी विस्मृति थई गई साजे पडिलेहण करता मुहपत्ति द्वारा ते कटको नीचे पडयो तुरत वज्रस्वामी समजी गया के हवे पोतानु आयुष्य ओछु छे

पछीथी बीजो भयंकर द्वादशवर्षीय दुष्काळ पडयो श्रीवज्रस्वामीए अणशण करवानो विचार कर्यो अने एक पर्वत पर गया अणशण करी स्वर्ग संचर्या एटले तेमना प्रत्येना भक्तिभावथी इन्द्रमहाराज त्या आव्या अने पोताना रथने चारे तरफ फेरवी वृक्ष तथा गहन वनने सरखा कर्या ते पर्वतनु नाम त्यारथी रथावर्त पडयु छे अत्यारे दक्षिण मालवामा विदिशा(भेलसा)नी पासे आ पर्वत आवेलो होवानु मनाय छे

तेमना स्वर्गगमननी साथोसाथ ज (१) दशपूर्व (२) चोथु संहनन अने (३) चोथु संस्थान–ए त्रण वस्तुओ विच्छेद पामी तेमनाथी वज्रशाखा शरू थई तेमनो समय संयमप्रधान हतो अने पुष्पनी खातर तेमणे वमर करी ते परथी फलितार्थ ए थाय छे के चैत्यपूजा ए धर्मनु अति आवश्यक अंग छे

२. वृद्ध–जेनी वय ७० वर्ष उपरांतनी होय तेने वृद्ध कहेवाय केटलाक आचार्यो एम पण कहे छे के जेनी इन्द्रियो शिथिल–निबळ–शक्तिहीन थई गई होय ते ६० वर्ष उपरांतनी उम्मरवाळा होय तो पण वृद्ध जाणवो तेनी वैयावच्च करवी पडे, ते साधु आचारनु सारी रीते पालन करी शके नहीं वळी तेनामा स्वाभाविक रीते हृदय–अभिमान होय के हु वृद्ध छु, बीजा तो लघु छे, तेओने हु केम नमस्कार करु? इत्यादि इत्यादि आम छता पण कोई दृढ–मजबूत

संघयणवाळो होय अने साधुना आचार-विचार बराबर पाळी शके तेम जणातुं होय तो अपवादरूपे तेवा वृद्धने पण दीक्षा आपी शकाय आ संबंधमां विशेष वर्णन पंचवस्तुभाष्यमां जणावेल छे

३. नपुंसक-जे पुरुषमां पण न होय अने स्त्रीमां पण न होय तेने नपुंसक जाणवो ते बीजा साधुओने दुराचारी बनावे, संयमनी विराधना करे, लोकोमां हांसी करावे माटे तेवा नपुंसकने दीक्षा न आपवी कदाच अजाणतां अपाई गई होय तो तेने काढी मूकवो कदाच ते स्वयं न चाल्यो जाय तो तेने भाव बोले-समजावीने पण काढवो कदाच ते नपुंसक राजा पासे पोताने काढी मूकवा संबंधी फरियाद करे अने राजा तेनो पक्ष लइ तेने गच्छमां राखवा आग्रह करे त्यारे सुज्ञ आचार्य अगर तो मुनिराजे राजाने समजाववा माटे कहेवुं के-"आपना कोशागारमां कोई दुष्ट माणस होय तो आप तेने माटे शुं पगलां भरो ? राजा जवाब आपे के तेने तरत ज काढी मूकुं राजानो आवो जवाब सांभळी सुज्ञ साधु कहे के-आ नपुंसक अमारा ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी भंडारने लूंटनार-दोषित करनार छे माटे तेने अमारे बहिष्कृत करवो ज जोइए " आ प्रमाणे छेवटे राजाने पण समजाय कदाच वैयावच्चादि कोई कारण प्रसंगने अंगे नपुंसकने दीक्षा देवी पडे तो कार्य सधाय त्यां सुधी राखे, पण तेने क्रिया कल्प वगेरे पण न शीखवे पछी काढी मूके न चाल्यो जाय तो योगीनो वेष पहेरावी अन्यत्र मूकी आवे आ संबंधी विशेष विवरण आवश्यक चूर्णीमां तथा वृत्तिमां 'पारिट्ठावणिया'ना अधिकारमां आपवामां आवेल छे

४. क्लीब-स्त्रीना निमंत्रणथी स्त्रीना अंगोपांगादिना दर्शनथी, स्त्रीओ साथेना मिष्ट वार्तालापथी जेने काम उत्पन्न थाय, स्त्री साथे भोग भोगववा तीव्र अभिलाषा उद्भवे, कामना वेगने रोकी शके नहीं-विह्वल बनी जाय परन्तु कामभोगने भोगवी शके नहीं ते क्लीब जाणवो ते स्त्रीओनी पाछळ अंध थइने फर्या करे, शासननी हेलना करावे, लोकोमां निंदानु पात्र बने माटे तेवा क्लीबने दीक्षा न आपवी कदाच अपवाद तरीके दीक्षा आपी होय तो पण काढी मूकवो

५. जड-त्रण प्रकारना जड छे-१ भाषाजड, २ शरीरजड अने करण जड (१) जे भाषा बराबर न बोली शके ते भाषाजड कहेवाय तेना पण त्रण भेद छे-(अ) जलमूक (आ) मन्मनमूक अने (इ) एलकमूक जळमां कोई डूबवा मांडे त्यारे जेवो 'बुडबुड' ध्वनि थाय तेवो भाषक बोले ते जलमूक जे बोलतां थकां वच्चे हबकी जाइने-गचवाइ बोले तेने मन्मनमूक जाणवो तेम ज जे बकराओनी माफक अव्यक्त बोले, तेनुं वचन न समजाय, फक्त शब्द मात्र करे तेने एलकमूक जाणवो आवा जडने दीक्षा न आपवी कदाच वैयावच्चादिना कारण दीक्षित कर्या होय तो पण तेने काढी मूकवो आ संबंधी

विशेष स्वरूप पंचकल्पभाष्यमा अने आवश्यक सूत्रनी वृत्तिमां आपवामा आवेल छे (२) शरीरजड-शरीरे विशेष स्थूल होय, हृष्टपुष्ट होय, तथा पाका चूका अवयववाळो होय तो ते विहारमा जल्दी चाली शके नहीं, गोचरी जावामा पण उपयोगी न नीवडे तेम ज आवश्यक क्रिया करता वादणा देवाना समये उठ-बेठ न करी शके माटे तेवा शरीरजडने दीक्षा न आपवी पोल पकला होय अने सहवासी तरीर वांजा साधुनी असर न होय तेव समये तेने दीक्षा आपे परन्तु कार्य पूर्ण थये तेने काढी मूकवो (३) कारणजड-साधुना आचारने अंगे जे जे क्रिया बतावीए ते भूली जाय, स्मरणमा न रहे, पडिलेहण न करी शके, प्रतिक्रमणादि आवश्यक क्रिया वारवार भूली जाय, बतावीए त्यारे लक्ष न राखे-आवा शख्सने दीक्षा न आपवी कारणवशात् आपी होय तो कार्यनी समाप्ति थये तेने काढी मूकवो

६, व्याधिग्रस्त—अतिसार, भगंदर, कोढ, शूळ, दीर्घज्वर, जीर्णज्वर इत्यादि व्याधिवाळाने दीक्षा न आपवी तेथी संयम तथा स्वाध्यायादिकनी हानि थाय

७, स्तेन (चोर)-चोरी करे, गाममा लोकोना खीसा कातरे तेवा स्तेन (चोर)ने दीक्षा न आपवी, छता कोई चोर पोतानु व्यसन मूकी दे, चोरी न ज करे, चोरी न करवानी प्रतिज्ञा करे तो तेने कारणवशात् दीक्षा आप परन्तु जेनु चोरी करवानु व्यसन न ज छूटे तेने कदापि दीक्षा न आपवी

८, राजद्रोही-राजानो गुन्हेगार होय, राजानो भंडार लूट्यो होय, राजानो घात कर्यो होय, राजपुत्रनो द्रोह करनार होय, अगर तो कोई पण प्रकारे राजदंडने पात्र होय तेने दीक्षा न आपवी

९, उन्मत्त-जेना शरीरमा भूत, प्रेत अगर तो यक्षादिकनो प्रवेश थयेल होय तथा महामोहनीयनो जेने उदय होय, मिथ्यादृष्टि होय, जेनु मन परवश-पराधीन होय तेने दीक्षा न आपवी

१०, अंध-जे अंध होय, थीणद्धी निद्रावाळो होय, काणो होय, ठुठो होय, नकटो होय तेने दीक्षा न आपवी थीणद्धी निद्राना उदयथी हस्ती प्रमुखना दांत मचो याद, जीवोनी हिंसा करे, माणुओनो पण घात करी नाखे वळी आंधळो होय ते जीवदया न पाळी शके, लोकमा निंदा थाय अपवादथी थीणद्धी निद्रावाळाने दीक्षा आपी होय तो तेने दूर करवो-काढी मूकवो अपवाद मार्ग प्रमाणे दीक्षा आपी शकाय परन्तु आंधळाने तो सर्वथा दीक्षा न ज आपी शकाय जो आपे तो विराधक गणाय आ संबंधी विशेष हकीकत पंचकल्प भाष्य विगेरे ग्रंथोद्वारा जाणवी

११. दास—दासीनो पुत्र होय, काळमां वेचातो लीधो होय, थान (जामीन) सरीखे राखेलो होय अगर तो कोईनो देवादार होय तेवा दास चाकरने दीक्षा न आपवी कदाच दासना मालीक कहे के-दीक्षा आपो तो दीक्षा आपवी पण ते अपवाद मार्ग जाणवो।

१२. दुष्ट—बे प्रकारना दुष्ट छे-(१) कषायदुष्ट अने (२) विषयदुष्ट महा क्रोध करे, अभिमानी होय, माया-प्रपंचमां पूरा होय ते कषायदुष्ट जाणवो आ संबंधमां एक संक्षिप्त दृष्टांत आपे छे कोई एक आचार्यने एक कषायदुष्ट शिष्य हतो एक वखत गोचरी माटे जतां ते शिष्यने सरसवनी स्वादिष्ट भाजी मळी गोचरी लई पाछा वळतां तेणे मनमां विचार कर्यो के-आजे तो आ भाजी हुं ज खाइश साधुना नियम प्रमाणे उपाश्रये आवी तेणे लावेल सर्व गोचरी गुरुने बतावी गुरुए ते सरसवनी बधी भाजी पोताना आहारार्थे लई लीधी ते समये तो शिष्यथी कंई पण बोली शकाय नहीं पण ते क्रोधी शिष्ये मनमां संकल्प कर्यो के आ गुरुए मारी लावेली स्वादिष्ट गोचरी आरोगी छे माटे तेना दांत पाडी नाखुं तो ज हुं खरो आ प्रमाणे मानसिक प्रतिज्ञा करी ते गुरुने हेरान करवाना छिद्र जोवा लाग्यो, परन्तु दांत पाडी नाखवानो प्रसंग प्राप्त न थाय धीमे धीमे आ शिष्यनी दीलचाल अने तेना मनोभाव गुरुना जाणवामां आव्या तेणे पोतानी पासे बीजो शिष्य राख्यो अने तेने भलामण पूर्वक कह्युं के-पेला कषायदुष्ट शिष्यने मारी समीपे न ज आववा देवो एवामां गुरुए अंतसमय नजीक जाणी पोते अणशण स्वीकारवानो निरधार कर्यो अने पासे रहेला अन्य शिष्यने सूचना आपी के-" हुं जीवुं त्यां सुधी ते कषायदुष्ट शिष्यने मारी पासे न लाववो तेमज न आववा देवो " आ प्रमाणे कहीने गुरु तो सूई गया आ बाजु पेलो कषायदुष्ट शिष्य कोई कारण प्रसंग बीजे गाम बीजा संघाडामां गयो आ समय दरमियान गुरु काळधर्म पामी गया शिष्यो तेमना देहने वोसिरावी आव्या पेलो शिष्य आवतां तेणे आ समाचार जाण्या तेना उद्वेगनो पार न रह्यो तेने गुरुना स्वर्गवासनो शोक नहोतो थतो, मात्र पोतानी प्रतिज्ञा अधूरी रही गई तेनो शोक थतो हतो कोई पण हिसाबे पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवाना निरधारथी तेणे अन्य शिष्यने पूछ्युं के-" कया स्थळे गुरुनी कायाने वोसरावी छे ? " भयभीत बनेला शिष्योए जे स्थाने गुरुना शरीरने वोसिराव्युं हतुं ते स्थान दर्शाव्युं पछी ते कषायदुष्ट शिष्य शीघ्र ते स्थळे गया अने गुरुना शरीर ने दांत शोधी काढीने पाडी नाख्या अने पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करी—आवा कषायदुष्टने दीक्षा न ज आपवी (२) जे परस्त्रीमां लंपट होय, विषयासक्त होय ते विषयदुष्ट कहेवाय तेमने दीक्षा न आपवी

१३. मूढ—अज्ञानी होय, परवश होय, वस्तुने वस्तुस्वरूपे न जाणे, अतिशय स्नेह राखे, शून्यमनस्क होय तेने दीक्षा न आपे

१४. ऋणार्त—जे कोई राजादिकना देवादार होय, जेने माथे घणाखरु देवु होय तेने दीक्षा न आपवी आवो व्यक्तिने दीक्षा आपवाथी लोको निंदा करे के—देवाळिया थई गया, घरमां खावानुं कंई न रह्यु एटले हवे दीक्षा लीधी वळी घणा लेणदार शासनो एकत्र थइने वेर छुटवी ले, हासी करे माटे दीक्षा न आपवी

१५. जुंगित—त्रण प्रकारना जुंगित छे १ जातिजुंगित, २ कर्मजुंगित अने ३ शरीरजुंगित (१) जे हलकी—नीच जातिना होय ते जातिजुंगित कहेवाय भंगी, चंडाळ, कोळी, चमार, वणकर, भील, दरजी विगेरे (२) कर्मजुंगित—स्त्रीना पोषक महेशा प्रमुख, मयूर, कुकडादिना पालक—पोषक, वांस ऊपर चढीने नृत्य करनार, शिकारी कूतरा प्रमुख राखनार तेमज वागुरी—जाळ नाखनार विगेरे (३) शरीरजुंगित—हाथ, पग, नाक तथा कानरहित तेमज पांगळा, कूबडा, ठींगणा तथा काणा, ठुंठा विगेरे बधाना भेदमां नपुंसकनो पण उल्लेख करेल छे परन्तु अहीं जणावेल नथी, परन्तु ते पण समजी लेवा जाति तथा कर्मजुंगित बन्नेने दीक्षा न देवी, कारण के ते हलका कुळना होवाथी लोकमां निंदा थाय, आहारादिक न मळे तेमज तेना कारणे श्रेष्ठ जातिना शिष्यो प्राप्त न थाय त्रीजा प्रकार तो सर्वथा निषेधने पात्र ज छे

१६. अबद्ध—कोई विद्या भणवा अगर तो शास्त्र जाणवा तथा अमुक समय पर्यंत उदरपूर्ति करवा माटे गुरुने कहे के—हुं अमुक समय पर्यन्त दीक्षा लइश अने शास्त्राध्ययन करीश, पछी चारित्र मूकी दइश आवा धनार्थीने पण दीक्षा न आपवी कारण के आवा देखाववी लोको भ्रममां पडे के साधुओ तो आवा ज वर्तनवाळा हशे, लोकोने निंदा करवानु कारण मळे

१७. भृत्य—जे कोई रुपियाने माटे धनिक गृहस्थनी नोकरी करतो होय तेने दीक्षा न आपवी तेनो स्वामी आज्ञा आपे तो आपवी

१८. शिष्यनिष्फेटिका—मात पितानी आज्ञा सिवाय नमाहीन जे दीक्षा अपाय ते शिष्यनिष्फेटिका (शिष्यनी चोरी के अपहरण) कहेवाय आवी रीते शिष्य चोरी करी दीक्षा आपे तो शासनहीलना थाय, संयमथी पतित कराय, संयमनी विराधना थाय, राजदरबारमां फरियाद थतां भय उत्पन्न थाय, आत्मविराधना थवानो पण प्रसंग आवे माटे शिष्य अपहरण करी

दीक्षा न देवी अपवाद तरीके शिष्यहरण करवुं पडे तो तेनी विधि श्रीनिशीथचूर्णी प्रमुख ग्रन्थमां ■ आवा प्रकारनी शिष्यनिष्फेटिका तोसलिपुत्र आचार्ये आर्यरक्षितसूरिनी करी हती जे संबंधी संक्षिप्त वृत्तांत नीचे प्रमाणे छे

श्रीआर्यरक्षितसूरिनु वृत्तांत—

दशपुर नामना सर्व ऋद्धिसिद्धिसंपन्न नगरमां उदायन नामना समर्थ अने प्रतापशाळी राजवी राज्य करतो हतो तेने पंडित-शिरोमणि अने वफादार सोमदेव नामनो पुरोहित हतो सोमदेवने सुशील अने संस्कारी रुद्रसोमा नामनी सद्गुणी पत्नी हती जेना द्वारा तेने आर्यरक्षित अने फल्गुरक्षित नामना पुत्ररत्नोनी प्राप्ति थइ हती जन्मथी ज बुद्धिशाळी आ बधु-बेलडीने सुशिक्षित बनाववा सोमदेवे पूरो प्रयत्न कर्यो अने पोतामां रहेल सर्व ज्ञान तेने विषे ठाल्व्युं, परन्तु ज्ञानसागरमां तरवानी इच्छावाळा आर्यरक्षितने आटला मात्रथी तृप्ति न थइ तेणे मातापितानी संमति मेळवी विशेष विद्याभ्यास माटे पाटलीपुत्र नगरे प्रयाण कर्युं

पाटलीपुत्र ते समये आर्यावर्तना प्रथम पंक्तिना शहेरोमां अग्रस्थाने हतुं षड्दर्शनना ज्ञाता विद्वान पंडितो त्यां रहेता अत्यारे जे स्थान काशीनुं छे तेवुं स्थान ते समये पाटलीपुत्रनुं हतुं सारा आचार्यना हाथ नीचे रही आर्यरक्षिते वेदोपनिषद्नो अभ्यास कर्यो अने पोताना उत्कृष्ट प्रज्ञा तेमज शीघ्र ग्राह्य-बुद्धिथी तेणे पोताना सहाध्यायीओ तेम ज आचार्यना पण वाद मेळवी लीधो अभ्यास संबंधी कार्य पूर्ण थता ते स्वजन्मभूमि प्रत्ये पाछो फर्यो सोमदेवने मन आ प्रसंग महोत्सवरूप हतो पण तो पोतानो पुत्र अने विद्याभ्यास करी पाछो आवतो हतो, तेना बहुमानने माटे तेने लागणी उत्पन्न थइ राजाने आ समाचारनी जाण थता पोताना पुरोहितपुत्रना आदरसत्कारार्थ राजा पण हाथी पर बेसी सामे गयो अने बहुमानपुरस्सर राज-रियासत साथे तेनो नगर प्रवेश कराव्यो आर्यरक्षितने माटे पण जीवनमां आ अमूल्य पळ हती

सोमदेव पुरोहित हतो छता रुद्रसोमा जैनधर्मानुयायी हती साध्वी समूहना संसर्गथी जैनमत माटे अपूर्व सद्भाव उपज्यो हतो धीमे धीमे अभ्यास करता तेणी जीवाजीवादिक तत्त्वोना स्वरूपने समजनारी श्राविका बनी हती सोमदेव आ जाणतो हतो छता ते पण स्वधर्म प्रत्ये समभाववाळो होवाथी वचे न आवतो आर्यरक्षितनो पुर-प्रवेश थयो त्यारे ते सामायिक लइने बेठी हती आर्यरक्षिते स्वगृहे आवीने माताने विनयपुरस्सर प्रणाम कर्यो परन्तु सांसारिक व्यापारनो त्याग करी सामायिकमां बेठेल रुद्रसोमा तो पोताना एक ध्यानमां ज लयलीन रही आर्यरक्षितने माताना आवा वर्तनथी कइक खेद उपज्यो तेने विचार थयो के-मारा पांडित्यने

कारणे राजाए अने पौरजनोए मारो सविशेष आदर सत्कार कर्यो त्यारे माता मारा माटे पोताना मुखमांथी आशीर्वादनो एक अक्षर सरखो पण उच्चारती नथी तेने खबर न हती के सामायिक एटले सावद्य व्यापारनो त्याग एक मात्र धर्मध्यान सिवाय तेमां व्यवहारोपयोगी कार्यनो निषेध होय छे सामायिक पूर्ण थया बाद योग्य समये आर्यरक्षिते माताने हर्ष नहीं थवानुं कारण पूछ्युं

रुद्रसोमाए जाण्युं के पुत्रने सन्मार्ग चढाववानो आ उचित समय छे एटले नम्र वाणीथी कह्युं के-" पुत्र ! दुर्गतिदायक तारा अभ्यासथी के पांडित्यथी हुं शी रीते संतुष्ट थाउं ! " माताना आ वचनो सांभळतां ज आर्यरक्षित चमक्यो तेणे माताना कथनमां कंई ऊंडो मर्म समजायो

विशेष पृच्छा करतां रुद्रसोमाए कह्युं के-" पुत्र ! आ भौतिक ज्ञान तने बहुमान अपावशे, तारी कीर्ति फेलावशे परन्तु साचुं ज्ञान तो ते ज छे के जे आत्मानी उन्नति करे आत्माने सन्मार्गना पथे वाळे जैनदर्शनना अभ्यास विना तारु ज्ञान अपूर्ण ज रहेवानुं जेम जळ विनानुं सरोवर शोभे नहीं तेम दृष्टिवाद विनानुं तारुं ज्ञान शोभशे नहीं " दृष्टिवाद ए शुं कहेवाय तेम पूछतां माताए कह्युं के-" आपणा नगरने विषे तोसलीपुत्रनामना जैनाचार्य छे, तेनी पासे जजे अने ते तने सर्व वस्तु समजावशे " " प्रात काले जईश" एम कहीने मातानो आदेश आर्यरक्षिते मस्तके चढाव्यो

माता साथेना वार्तालाप पछी आर्यरक्षितनुं मन चकडोळे चढ्युं तेणे विचार्युं के-" आटला वर्षोनी विद्याप्राप्ति माटेनो परिश्रम माताती दृष्टिए तो वृथा ज नीवड्यो कई माता पोताना पुत्रना हितने माटे उत्कंठित न होय ? खरेखर माताए मने सन्मार्गे लाववा ज आ प्रयास कर्यो छे, कारण के माता कडवुं औषध बाळकने पीवडावे छे ते तेना स्वास्थ्यने माटे ज माताए जणावेल तोसलिपुत्र आचार्य पासे जवुं अने तेनी पासे अवश्य अभ्यास करवो पण तोसलिपुत्र पासे केवी रीते जवुं ? केम बोलवुं ? जैनाचार्यना शुं आचार-विचारो ने विधिप्रणालिका हशे ! " आ प्रमाणे विचार-मंथनमां ज तेणे अर्धी रात्रि व्यतीत करी अने ते ज विचारमां तेने निद्रा पण आवी गई प्रात विधि आटोपी लईने जेवामां गृहमांथी बहार निकळे छे तेवामां पोताना पितानो मित्र शेरडीना साडानव सांठा लईने सामो मळ्यो आ शुभ शुकन थया जाणी आर्यरक्षित आगळ वध्यो अने उपाश्रय पासे आवी पहोंच्यो केवी रीते ऊपर जवुं अने शुं करवुं ! तेनो विचार करे छे तेवामां ढड्ढर नामनो श्रावक गुरुने वंदन निमित्ते आव्यो अने तेनी पाछळ-पाछळ आर्यरक्षित पण गयो

ढड्ढरनी माफक तेणे पण तोसलीपुत्र आचार्यने वंदन कर्युं नवो आगंतुक जाणी आचार्ये तेने तेनुं नाम, गोत्र अने कुळ संबंधी पृच्छा करतां जणायुं के-

राजाए जेनो बहुमानपुरस्सर नगर-प्रवेश कराव्यो हतो ते ज आ पुरोहित पुत्र आर्यरक्षित छे. बाद तेना आगमननुं कारण पूछतां आर्यरक्षिते माता साथेनो संपूर्ण वार्तालाप कही संभळावी दृष्टिवाद भणाववा माटे प्रार्थना करी. सोमली पुत्र आचार्य पण आ सांभळी ज्ञानोपयोग दीधो. ज्ञानदृष्टि द्वारा तेमने जणायुं के-श्रीवज्रस्वामी पछी आर्यरक्षित प्रभावक आचार्य थशे. एटले तेने शांत वाणी द्वारा जणाव्युं के-"आर्यरक्षित ! तारो उत्साह प्रशंसापात्र छे. तारी तेजस्विता पण आ अभ्यासनी लायकात पूरवार करे छे, परंतु अमारी शास्त्राज्ञा प्रमाणे जे जैनी दीक्षा स्वीकारे तेने ज दृष्टिवादनो अभ्यास करावी शकाय."

आर्यरक्षितने तो कोई पण प्रकारे विद्याभ्यासनी लगनी लागी हती अने तेनी पछवाडे पूज्य मातानी प्रेरणा हती. एटले विशेष विचार कर्या वगर तेणे गुरुने पोतानी दीक्षा लेवानी संमति दर्शावी. आचार्यश्रीए विचार्युं के-"आर्यरक्षित हमणां ज पाटलीपुत्रथी सुपंडित पदवी लई आवेल छे, प्रजानो पण तेना परत्वे पूरेपूरो चाह छे. पुरोहितपुत्र छे अने तेने कारणे राजवीने पण बहुमान्य छे. एटले जो तेने दीक्षा आपीने अहीं ने अहीं राखीश तो तेमना प्रत्ये प्रेम धरावनारा विघ्नकारक थशे." आ प्रमाणे विचारी तेणे आर्यरक्षितने ते वात जणावी कह्युं के-"दीक्षा लईने आपणे अहींथी गुपचुप अन्यत्र विहार करवो पडशे." आर्यरक्षिते ते पण स्वीकार्युं अने योग्य मुहूर्तमां आर्यरक्षित संसारी मटी मोक्षमार्गना मुसाफर थया. जैनशासनमां आ प्रमाणे आ पहेल-वहेली ज शिष्यनिष्फेटिका बनी.

जाणे पूर्वे तैयारी ज होय तेम आर्यरक्षिते अल्प समयमां ज पूर्वोनो अभ्यास अवधारी लीधो. विशेष विद्याभ्यास माटे तोसलीपुत्रे तेमने श्रीवज्रस्वामी पासे मोकलवानो विचार कर्यो अने आज्ञा पण आपी. आ बाजु श्रीवज्रस्वामीने स्वप्न आव्युं के-पायसथी भरेल पात्रद्वारा में कोई पण अतिथिने पारणुं कराव्युं परंतु पात्रमां शेष अल्प ज पायस बाकी रह्युं. आर्यरक्षित तेमनी सेवामां हाजर थया अने अभ्यास कराववा माटे प्रार्थना करी. श्रीवज्रस्वामीए तेमने अध्ययन करावतां तेओ नवपूर्वना ज्ञानी थया.

आ बाजु आर्यरक्षितना चाल्या जवा बाद नगरमां क्लेश सळभळाट मच्यो परंतु आर्यरक्षितनी संमतिथी ज आ बनाव बनेल होवाथी तेनो विशेष ऊहापोह न थयो. रुद्रसोमाए पुत्रवात्सल्यथी दृष्टिवादनो अभ्यास करवा कही नाख्युं परंतु लांबा समयना विरहथी तेनुं वात्सल्य आर्यरक्षितनी झंखना करी रह्युं हतुं. रुद्रसोमाने आर्यरक्षितने मळवानी उत्कंठा थई एटले फल्गुरक्षितने तेमने तेडवा माटे मोकल्यो.

फल्गुरक्षिते आवी आर्यरक्षितने मातृस्नेहनुं स्मरण कराव्युं. आर्यरक्षिते

जणाव्युं " आ क्षणभंगुर संसारमां स्नेह ने मोह केवा ? हाथिए बहार काढेला दांत शुं पाछा अंदर जाय छे ? आ संसार ज आवी विचित्र घटनाओथी भरपूर छे मोहराजा आ जीवने विविध रूपे नचावे छे अने आपणे नटनी माफक आ संसार-रंगभूमि उपर नाचीए छीए " बाद फल्गुरक्षितने पण प्रतिबोधी प्रव्रज्या ग्रहण करावी

नव पूर्वनो अभ्यास तो सरलताथी कर्या बाद आर्यरक्षिते दशमा पूर्वनी शरूआत करी, परन्तु अत्यार सुधी न जणायेल तेवो श्रम हवे तेमने जणावा लाग्यो कठिन भांगाओ, दुर्गम गमक, दुष्कर पर्याय अने समान शब्दोना अर्थ शीखतां तेमनी बुद्धि हवे थाकवा लागी, छतां पण दृढ मनोबलथी अध्ययन शरू राख्युं परन्तु कंटाळो प्रतिदिन वधवा लाग्यो एकदा तेमणे श्रीवज्रस्वामीने एकांतमां पूछ्युं के-" हे भगवन् ! हजु मारे केटलुं अध्ययन करवुं शेष रह्युं छे ? ' वज्रस्वामीए तेमनो हृदयगतभाव जाणी लई एटलुं ज कह्युं के-' तेनो विचार न करो, अभ्यास शरू राखो मनने बहार न चलवा द्यो " आ प्रमाणे केटलोक समय व्यतीत थया बाद पुनः पूछ्युं त्यारे श्रीवज्रस्वामीए ज्ञानवाणी द्वारा जणाव्युं के—" हजु सरसव प्रमाण भण्या छो अने मेरुपर्वत प्रमाण बाकी छे अध्ययनमां कंटाळो न लावो " लज्जाने लीधे आर्यरक्षिते अध्ययन शरू तो राख्युं परन्तु मन पाछुं हठतुं जतुं जणायुं केटलेक माताने मळवा जवाना आशयथी तेमणे श्रीवज्रस्वामी पासे विहार करवानी आज्ञा मागी श्रीवज्रस्वामीए ज्ञानदृष्टिथी जोयुं तो तेमने जणायुं के आर्यरक्षित हवे विशेष अभ्यास करी शकशे नहीं, कारण के स्वप्न पण मिथ्या न थाय समग्र पायसमांथी शेष बाकी रह्युं हतुं एटले आर्यरक्षित समग्र दशे पूर्वनो सारा हाथ लाभ प्राप्त करी शकशे नहीं मारुं आयुष्य हवे अति अल्प छे अने आर्यरक्षित पुनः आ स्थळे आवशे ते पहेलां तो हुं काळधर्म पामी जइश ' मात्रिभाव जाणी श्रीवज्रस्वामीए तेमने आज्ञा आपी आर्यरक्षित विहार करी पाटलीपुत्र आव्या अने दीक्षागुरु तोसलीपुत्र आचार्यने मळ्या त्यांथी विहार करी जन्मस्थान दशपुर आव्या राजाए अत्यंत बहुमानपूर्वक सामैयुं कर्युं केटलाक समयनी स्थिरता दरमियान तेमणे पोताना माता, पिता, स्वजनसंबंधीवर्ग तेम ज केटलाक भव्य प्राणीने पारमेश्वरी दीक्षा आपी

श्रीवज्रस्वामीना काळधर्म पाम्याना समाचार आर्यरक्षितने मळतां तेमने पोताना अपूर्ण रही गयेल अभ्यास माटे पश्चात्ताप थयो, परन्तु ज्यारे पोते प्रथम वार ज तोसलीपुत्र आचार्यने मळवा जता हता त्यारे ज साडानव शेरडीना साठा मळ्या तेनुं तारतम्य हवे तेमने समजायुं साडानव साठा ए सूचन करता हता के साडानव पूर्व पर्यंतनुं ज्ञान तमने प्राप्त थशे

पूर्वना अभ्यासने लीधे आर्यरक्षितनी शक्ति अनेक दिशाओमां विस्तृत

थई हती तेमनु ज्ञान-बळ अनेक शंकाना समाधान करवा शक्तिमान नीवडतु. एकदा महाविदेह क्षेत्रमां श्रीसीमंधरस्वामीने वंदन करवा गयेल शक्रेंद्रे प्रभुने पृच्छा करी के-" हे स्वामिन् ! आपना जेवु निगोदनुं सूक्ष्म स्वरूप भरतक्षेत्रने विषे कोइ जाणे छे ? " परमात्माए श्रीआर्यरक्षितसूरिनु नाम आप्यु. एटले तेमने जोवानी इच्छाथी इन्द्र वृद्ध ब्राह्मणनु रूप धारण करी मथुरानगरीमां आव्या अने गुरु समीपे जई निगोदनु स्वरूप पूछयु. एटले भगवतना कथन मुजब ज सूरिश्रीए यथास्थित निरूपण कर्यु. इन्द्र तेमनी आवी शक्तिथी अत्यंत रंजित थयो. बाद विशेष परीक्षा माटे तेमने स्व आयुष्य संबंधी पृच्छा करी त्यारे गुरुश्रीए चिह्न, आकृति अने लक्षण विगेरे ज्ञानथी जाणीने सागरो पमनु आयु जणाव्यु. आ सांभळी अत्यंत हर्ष पामेला शक्रेंद्रे श्रीसीमंधरस्वा मीए कहेल सघ व्यतिकर तेमने समजाव्यो अने पोताना आगमननी निशानी तरीके वसतिनु द्वार फेरवी दीधु. बहार गयेला शिष्यो ज्यारे आव्या त्यारे तेओ विस्मय पाम्या अने उपाश्रयनु द्वार शोधवा लाग्या. त्यारे गुरुना दर्शाववाथी शिष्योए प्रवेश कर्यो. ज्यारे गुरुए तेओने इन्द्र-आगम संबंधी व्यतिकर कही समजाव्यो त्यारे शिष्योना आत्मामां आश्चर्यनी अवधी ज न रही. तेमना जीवननु सर्वश्रेष्ठ कार्य ते शास्त्रज्ञानने चार अनुयोगमां विभक्त कर्युं- द्रव्यानुयोग, चरणकरणानुयोग, गणितानुयोग अने धर्मकथानुयोग× श्रीआर्य रक्षितसूरिना समय पूर्वे साधुओ साधु पासे अने साध्वीओ साध्वी पासे आलो चना ग्रहण करती परन्तु त्यारबाद साध्वीओए पण साधु पासे ज प्रायश्चित्त ग्रहण करवानो नियम कर्यो.

श्रीआर्यरक्षितसूरि शासनप्रभावना करी स्वर्गे संचर्या. तेमना शिष्यो पकी दुर्बलिकापुष्पमित्र, फल्गुरक्षित अने विंध्यमुनि विगेरे महाप्राज्ञ अने विलक्षण मुनिवरो हता.

आ अढार प्रकारो पुरुषने दीक्षा देवा संबंधी विचारवाना छे. ऊपर जणावेल अढार प्रकारना पुरुषोने दीक्षा न आपवी. आ अढार प्रकारो स्त्रीसंबंधी पण जाणवा. परन्तु स्त्री नपुंसक कोने जाणवी ते संबंधी जणावता कहे छे के-जे पुरुष नपुंसकने सेवे तथा सेवाने तेमज पुरुषनो वेश धारण करी सेवे तेम ज सेवावे तेने स्त्री नपुंसक जाणवी. ने स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेद एम बन्ने वेदनी उदवाळी होय छे. स्त्रीओने माटे ऊपर जणावेल अढार भेद उपरांत बीजा पण बे भेद होय छे. जे नीचे प्रमाणे-

१९ गर्भवती-गर्भवंती स्त्रीने दीक्षा न देवी. कारण के असतीपोषणनो

× आ चार अनुयोगमा विभक्त करवानी तेम ज निगोदना सरल स्वरूप संबंधी हकीकत कटलाक आचार्यो श्रीकालकाचार्यना नामे चढावे छे. ते तत्त्व केवलिगम्य छे.

दोष लागे, बाळकने त्यजी देवु पडे तेमज ऊंचा उदरने जाइने लोको निंदा करे

२० सवत्सा—जे स्त्रीने बाळक धावतु होय तेने दीक्षा न आपवी अतराय दोष लागे, लोको अवर्णवाद बोले

हवे नपुंसक सबधी वर्णन करता शास्त्रकार जणावे छे के-नपुंसको सोळ प्रकारना छे, ते पैकी दीक्षा माटे दश योग्य नथी, ज्यारे छ योग्य छे जे दश अयोग्य छे ते नीचे प्रमाणे जाणवा—

॥ पडए १ वाइए २ कीवे ३, कुभी ४ ईसालुए ५ सिया-सउणी ६ तक्कम्मसेवी य ७, पक्खियापक्खिए ८ इय ॥ ४ ॥ सोगधिए अ ९ आसत्ते १०, दस एए नपुसगा । सकिलिट्ठ त्ति साहूण, पव्वावेउ अकप्पिया ॥ ५ ॥

१ पडक, २ वातिक, ३ क्लीव, ४ कुभिक, ५ ईर्ष्यालु, ६ शकुना, ७ तत्कर्मसेवी, ८ पाक्षिकापाक्षिक, ९ सौगधिक अने १० आसक्त-आ दश प्रकारना नपुंसको अशुभ परिणामवाळा होवाथी दीक्षा आपवा योग्य नथी

१. पडक—जे पुरुष पुरुषाकार लिंगधारी होय परन्तु जेनो हावभाव, गति विगेरे स्त्री जेवा होय ते पडक-नपुंसक कहेवाय तेना छ भेद छे-(अ) महिला स्वभाव-चालवानी गति मद होय, चालता चालता पाछु वाळी जुवे, शका पूर्वक चाले, शीतळ अने कोमळ शरीर होय, स्त्रीनी माफक हाथ हलाववा पूर्वक चाले, स्त्रीनी पेठ हाथना लटका-मटका-चेनचाळा करे, पेट ऊपर तिरछो डमणो हाथ राखे, तथा डाबा हाथनी कोणी पेट ऊपर स्थापन करी हथेली ऊपर मुख राखी ऊभो रहे, पोताना वस्त्रने वारवार हाथथी स्पर्श करे, शरीरे वस्त्र धारण न करेल होय तो हाथवडे छाती, हृदय विगेरे ढाके, बोलवाना समये आखना भवा ऊचा-नीचा करे, स्त्रीना घरेणा पहेरवानु विशेष मन करे, पुरुषोनी सभामा बेसता भय पामे-सकोच थाय, स्त्रीनी सभामा बेसे तो आनद पामे, स्त्रीना काम जेवा क-राधवु, पीरसवु, खाडवु, साधवु विगेरे काम करवामा कुशळ होय ते महिलास्वभाव (आ) स्वरभेद-स्त्री जेवो अगर तो पुरुष जेवो स्वर न होय (इ) वर्णभेद-स्त्री तथा पुरुषथी भिन्न वर्ण होय (ई) पुरुषचिह्न मोटु तथा जाडु होय (उ) स्त्री सरखा कोमळ वाणी होय अने (ऊ) स्त्रीनी माफक पशाब करे एटले के 'छरछर' ध्वनि करता स्त्रीना पेशाबनी माफक मातरु करे तेमज तेना पशाबमा फीण न होय-आ छ प्रकार पडक-नपुंसकना लक्षण जाणवा

२. वातिक—जेनु लिंग कारणे अगर तो वगर प्रयोजने पण स्तब्ध-शात होय, स्त्रीनी साथे भोग भोगवता दीर्घ समये मैथुन कर्म करवा लायक थाय

३. क्लीब-तेना चार प्रकार छे (१) नग्न स्त्रीने निरखीने जेनु मन क्षोभ पामे, मनना वग शकी न शके ते दृष्टिक्लीब, (२) जे स्त्रीना ध्वनि मात्र सांभळी मनने वश न राखी शके ते शब्दक्लीब, (३) जे स्त्रीना स्पर्श सहन न करी शके ते अश्लिष्ट क्लीब अने (४) स्त्रीथी बोलाववा मात्रथी जे मैथुनना मनवाळा ते आमंत्रित क्लीब.

४. कुभिक-जेने मोहनीयना प्रबल उदयथी धातु निकळवाना समये लिंग तथा अंड बंने कुंभनी माफक फुली जाय-विकारवंत बनी जाय ते

५. ईर्ष्यालु-कोई बीजाने स्त्री साथे भोग भोगवतो जोईने तेनी ईर्ष्या करे

६. शकुनी-चकला, पारेवानी माफक वारंवार मैथुन सेवन कर्या करे तेम ज हमेशा विषयमां ज आसक्त रहे

७ तत्कर्मसेवी-पोताना लिंगमांथी वीर्य निकळ्या पछी, जेवी रीते कुतरा पोताना लिंगने चाटे छे तेमी माफक स्वलिंगने चाटे

८. पाक्षिकापाक्षिक-शुक्लपक्षमां काम भोगनो तीव्र अभिलाष होय परंतु कृष्णपक्षमां शांत होय अगर तो कृष्णपक्षमां मदनाभिलाषावाळो होय परन्तु शुक्लपक्षमां शांत होय एटले के एक पक्षमां नपुंसक अने एक पक्षमां पुरुष अर्थात् जे पक्षमां उदय ते पक्षमां अत्यंत वेदोदय होय ते पाक्षिकापाक्षिक वळी एटलाय मास तथा छ मासमां ये पखवाडिया स्त्री तथा पुरुषवेदना उदयवाळा होय छे, तेमज नपुंसकवेदना पण होय छे ते पाक्षिकापाक्षिक

९. सौगंधिक-पोताना लिंगने सारु जाणीने तेमज लिंगने आंगळी लगाडीने सूंघे ते

१०. आसक्त-भोग भोगवतां वीर्य स्खलित थई गयु, हवे बीजी वार भोग करवानी शक्ति नथी त्यारे पोते स्त्रीने आलिंगन आपीने रहे

आ दशे प्रकारना नपुंसको दीक्षा आपवाने लायक नथी

कोई शंका करता कहे छे के-पुरुषमां पण नपुंसक कह्या अने अहीं पण नपुंसक कह्या तो ते बंने वच्चे शो तफावत छे ? आनो जवाब जणावता कहे छे के पूर्वे तो पुरुषना जेवी आकृतिना नपुंसक कह्या छे अने अहीं तो नपुंसक जेवा आकृतिना नपुंसको बताव्या छे सिवाय सघळी पण एम ज जाणी लेवु

हवे दीक्षाने लायक नपुंसको जणावता कहे छे के-" वद्धिए १ चिप्पिए २ चेव, मंतओसहिउवहए ३-४ । इसिसत्ते ५ देवसत्ते ६, पव्वावेज्ज

नपुंसए ॥ ६ ॥" १ वर्द्धितक, २ चिप्पित ३-४ मन्त्रौषधिसमुपहत, ५ ऋषिशापित अने ६ देवशापित-आ छ प्रकारना नपुंसकोने प्रव्राजित करवा.

१ वर्द्धितक-राजाना अंतःपुरमां चोकी करनार(कञ्चुकी)नी बाल्यवयमांथी ज अहगालकने छेदी नाखवामां आव्या होय ते कृत्रिम नपुंसक वर्द्धितक जाणवा

२. चिप्पित-जन्मता थता ज जेना अंड आंगळीथी मसळी नाख्या होय ते आ बन्ने जणावेल भेदमां चारित्र नपुंसकवेदनो उदय थाय तो शामाटे दीक्षा आपवी जोइए? ए शंकाना निरसन माटे कहे छे के-तेओमां वेदमोहनो उपशम थइ जाय छे एटले तेओ कृत्रिम नपुंसक छे पण सक्लिष्ट(अशुभ)परिणामी नथी माटे दीक्षाने लायक छे

३-४ मन्त्रौषधिसमुपहत-मन्त्रना प्रभावथी पुरुषवेद हणायाने कारणे नपुंसक वेद थयो होय जेवा वेदघातक मन्त्र, जप होय छे जेना योगथी कुलटी प्रमुख समागममां दाट ता लिंग निसत्त्व बनी जाय अने कृत्रिम नपुंसक बने एवी ज रीते औषधी वगेराथीने पण नपुंसक बनाव्यो होय आ बन्ने प्रकारना नपुंसको दीक्षाने लायक छे

५. ऋषिशापित-कोई तपस्वी ऋषिए शाप आपता कह्यु होय के-" मारी तपश्चर्याना प्रभावथी तु नपुंसक थइ जा " ए प्रमाणे जे नपुंसक बनेल होय ते पण प्रव्रज्या लइ शके छे

६. देवशापित-देव शाप आपीने नपुंसक बनावेल होय

आ रीते विचारता अढारमांथी भेदो दीक्षा देवाने योग्य नथी आ सम्बन्धमां अपवाद अने उत्सर्गमार्ग जाणवा होय तो निशीथचूर्णी पञ्चकल्पभाष्य चूर्णी, व्यवहारचूर्णी प्रमुख पंचांगीना सूत्रो तथा ग्रन्थो जोवा

जे आचार्य सामाचारी न भणावे ते शत्रु समान जाणवा आचार्य जिह्वा द्वारा चेलाने चाटे, लाड लडावे तेने पण वैरी सदृश ज जाणवा ते सम्बन्धे विशेष वृत्तान्त जणावता कहे छे-

जीहाए विलिहंतो, न भद्दओ सारणा जहिं नत्थि ।
दंडेण वि ताडतो, स भद्दओ सारणा जत्थ ॥ १७ ॥

[जिह्वया विलिहन्, न भद्रकः सारणा यत्र नास्ति ।
दण्डेनापि ताडयन्, स भद्रकः सारणा यत्र ॥ १७ ॥]

गाथार्थ-जे आचार्य शिष्योने स्नेहपूर्वक चुंबन करे छे, परन्तु हितमार्ग

मा प्रवृत्ति करावनार तथा स्वकर्तव्यनु स्मरण करावनार सारणा, वारणा, चोयणा अने पडिचोयणा न करावे–न समजावे ते आचार्य श्रेष्ठ नथी–कल्याणकारी नथी, परन्तु जे सद्गुरु समीपे रहेता छता सारणा, वारणादिक थता होय अने कदाचने दंड आदिवडे ताडना करे तो पण ते श्रेष्ठ–हितकारी छे १७

विवेचन–सुवर्णनी सांकळ शा कामनी ? शृंखला सोनानी होय छता पण ते बंधनकारक ज छे कोई आचार्य शिष्य प्रत्ये गमे तेटलो वात्सल्यभाव धरावता होय, स्नेहभाव राखता होय, मस्तक पर चुंबनादिवडे प्रेम दर्शावता होय छता पण जो ते शिष्यने संयममार्गमां प्रवर्तावे नहीं, सारणा, वारणा, चोयणा अने पडिचोयणारूप धर्मकृत्य समजावे नहीं तो ते आचार्य शुभेच्छक न गणाय सारणा, वारणा इत्यादिक क्रिया जो न थाय तो साधु प्रमादी बने, सुखशीलिया थाय अने धीमे धीमे अधःपतनना मार्गे आगळ वधे सारणा–हितकारी कार्यमां प्रवर्तावे, उपदेश आपे के–'तारे गमन करती वखते इर्यासमितिपूर्वक चालवु, आ काय तें खोटु कर्यु, तेनु स्मरण राखजे अने फरी तेवु अकार्य न करीश' वारणा–विपरीत मार्गथी निवर्तवारूप 'हे साधु ! आवु अशुभ काय हवेथी करशो नहीं, आ काय तमारे करवा लायक नथी, आ कार्यथी तमारुं अहित–अकल्याण थशे ' आ प्रमाणे पापकारी कार्यथी पाछो वाळे ते वारणा चोयणा–'तमारा जेवाने आम करवुं अयुक्त छे' एम जे कहेवु ते चोयणा हा त 'हे साधु ! आवु अकार्य न करशो, एम में कह्या छता तमे कर्यु तो तमे दोषना भागी थया, चारित्रमा स्खलन थयु, अतिचार लाग्यो, तमारा जेवाए तो आवु अकार्य–अशुद्ध आचरण न करवु जोईए.' आ प्रमाणे वारंवार करती प्रेरणा ते पडिचोयणा

आवी चारे प्रकारनी प्रणालिका जे गच्छमां नथी ते आचार्य हितसाधक न जाणवा वळी जे आचार्य दंडे–ताडन–तर्जनादि करे परन्तु सारणा, वारणादिक करे ते आचार्य सारा जाणवा ते ताडनादिक करे छे ते पण शिष्यना हितने माटे, वळी चारित्रमा विराधना थवा देता नथी ताडन–तर्जन करे तो पण सारणादिक करता होय तेवा आचार्य समीपे रहेवुं परन्तु लाड लडावता होय, रमत करावता होय परन्तु चारित्रना आधाररूप सारणादिक न होय तो तेवा आचार्यनी पासे न रहेवु ए आ गाथानो भावार्थ छे ऊपर पंदर तथा सोळमी गाथामां आचार्य शिष्य–शत्रु क्यारे कहेवाय ते जणाव्यु, हवे शिष्य गुरुनो वैरी कवी रीते बने ? ते जणावे छे–

सीसो वि वेरिओ सो उ, जो गुरुं न विबोहए ।

पमायमइराघत्थ, सामायारीविराहयम् ॥ १८ ॥

[शिष्योऽपि वैरी स तु, यो गुरुं न विबोधयति ।
प्रमादमदिराग्रस्तम्, सामाचारीविराधकम् ॥ १८ ॥]

गाथार्थ-निद्रा, विकथादिक प्रमादरूपी मदिरावडे जेनुं ज्ञान आवृत्त थई गयुं छे तेवा तेमज सामाचारीना विराधक गुरुने हितोपदेश द्वारा जे धर्ममार्गमां स्थापन न करे ते शिष्य पण शत्रु सदृश ज छे १८.

विवेचन-सत्तर तथा सोळमी गाथामां शत्रुसदृश आचार्य संबंधी वर्णन कर्युं, हवे आ गाथामां शिष्य शत्रु जेवो क्यारे बने-शिष्यने शत्रु क्यारे जाणवो ? ते संबंधी निरूपण करवामां आव्युं छे जो आचार्य अथवा गुरु निद्रा, विकथादिक पांच प्रकारनी प्रमादरूपी मदिरामां आसक्त होय, तेमां ज रच्यापच्या रहेता होय तो तेने साचो उपदेश आपवो, ज्ञानमार्गनी प्रेरणा करवी तेमज श्रीवीतराग परमात्माए प्ररूपेल सामाचारीनुं यथार्थ पालन न करे तो तेने पंचाचार, प्रतिक्रमण अने पडिलेहणादि क्रियामां प्रवर्तावी, बीजाने पण प्रवर्तावया प्रेरणा करवी-आ प्रमाणे जो शिष्य गुरुने सन्मार्ग न लावे तो ते शिष्य शत्रुसदृश जाणवो आपणे आ ज ग्रंथमां शेलकाचार्यनी कथामां (पृ ३० थी ४१) जोई गया छीए के प्रमादी अने क्रियाशून्य बनेला शेलकाचार्यने तेमना पंथक नामना शिष्ये पुनः संयममार्गमां स्थिर कर्या हता जो आ प्रमाणे शिष्य स्वगुरुने पुनः स्थिर न करे तो ते शिष्य पण शत्रुसदृश ज मनाय माता-पितानो प्रत्युपकार करी शकातो नथी तेम ज धर्मगुरु के विद्यागुरुनो पण प्रत्युपकार कोई पण प्रकारे करी शकातो ज नथी मात्र जो गुरुने स्वधर्ममां स्थिर करे, तेने पतित थतां अटकावे अने मोक्षमार्गना पथिक बनावे तो ज कईक अंशे तेमना उपकारनो बदलो वळी शके श्रीस्थानांगसूत्रमां(स्था० ३ उद्देशो १, सू० १३०) आ संबंधी विवेचन करतां जणाव्युं छे के-" तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो ! तं०-अम्मापिउणो १, भट्टिस्स २, धम्मायरियस्स ३, संपातोऽवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपाग सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मा पिउस्स दुप्पडियारं हवइ । " त्रण जणा दुष्प्रतिकार छे एटले ते त्रणनो प्रत्युपकार करवो ते अति कठिन छे १ मातपितानो, २ भर्ता-स्वामी-मालीकनो, आपणने सुखी करे तेनो अने ३ धर्मपिता-धर्मगुरुनो, जेणे आपणने समकित पमाड्युं होय तेनो

(१) कोई पुरुष पोताना मातपितानुं सहस्रपाक तेलवडे मर्दन करे, पछी करीने

तेनो संताप-कष्ट दूर करे, पछी सुगंधी पदार्थवडे उद्वर्तन करे-पीठी करे, पछी शुद्ध सुगंधी जळवडे त्रण वखत स्नान कराये, पछी उत्तम आभूषणो अने श्रेष्ठ वस्त्रो पहेरावे, पछी मनपसंद पडे तेवो स्वादिष्ट अढार व्यंजन (पदार्थ) युक्त भोजन करावे, तेमनी जिंदगी पर्यत पगचंपी इत्यादिक वैयावच्च करे, पोताना स्कंध पर बेसाडी चाले अर्थात् तेमने लेशमात्र पण दुःखी न थवा दे छतां पण शास्त्रकार भगवंत कहे छे के ते पुत्र मातपिताना उपकारनो बदलो वाळी शकता नथी परंतु जो ते पुत्र मातपिताने केवलिप्ररूपित धर्म समजावे, तेमां स्थिर करे, धर्मक्रियामा अनुमोदन आपे तो ते पुत्र मातपिताना करेला उपकारनो बदलो वाळी शके, कारण के कह्यु छे के-धर्मस्थापनस्य महोपकारकत्वात्। अर्थात् धर्मप्राप्ति करावयाथी महाउपकार थाय छे आ प्रथम दुष्प्रतिकार जाणवो

(२) कोई एक श्रेष्ठी पोताना दरिद्री गुमास्ताने-नोकरने पोतानी संपत्तिथी धनवान बनावे, पछी ते भृत्य क्रमे क्रमे अनेक प्रकारे धनप्राप्ति करी अतुल समृद्धिवाळो बने अने विविध प्रकारना भोगविलासो भोगवे त्यारबाद जे प्रथम श्रेष्ठी हतो ते कर्मप्रभावे निर्धन-दरिद्री बनी जाय अने विचारे के-' मारो नोकर विपुल धनराशिवाळो थया छे माटे ते मने मदद आपशे '-आ प्रमाणे धारणा करीने पोताना पूर्वना गुमास्ता पासे जाय त्यारे ते नोकर विचारे के-'हु दरिद्री हता त्यारे आ शेठना ज प्रतापथी धन-संपत्तिवाळो थयो छु माटे आ सब संपत्ति तेमने आपी दउ !' आ प्रमाणे विचारी सब मालिकी शेठने अर्पण करी दे तो पण पोताना शेठना उपकारनो बदलो न वाळी शक परन्तु जो ते शेठने श्रीजिनेश्वरभगवंतभाषित धर्म पमाडे तेने समकिती बनावे तो तेना उपकारनो बदलो वाळी शके आवी ज रीते स्त्री पोताना पतिने धर्म पमाडे, प्रधान राजाने धर्म पमाडे इत्यादिक बीजो दुष्प्रतिकार जाणवो

(३) कोई शुद्ध चारित्रपात्र, त्रियातत्पर, पांच महाव्रतोनु यथार्थ पालन करनार साधु हाय, तेमी पासे कोई पण भव्य प्राणी आवी चडे अने तेमनी पासेथी वीतराग धर्मनु वचन सांभळीने तेनी सद्दहणा करीने, तेनो रूडी रीते स्वीकार करीने, तेनु यथार्थ रीते पालन करीने तेमज पोताना आयुष्यने क्षये मृत्यु पामीने चार निकाय पैकी (भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक) कोई पण एक निकायमा देव तरीके उपजे बाद अवधिज्ञानथी जाणतां तेने जणाय के-मारा धर्मगुरु अमुक देशमा छे, परंतु त्यां दुष्काळ पडत होवाथी तेमने पोताना गुरुने लेशमात्र कष्ट न पडे ते माटे तेमने त्यांथी उपाडीने सुभिक्ष-सुकाळवाळा देशमा मूके अथवा तो भयंकर अटवीमा भूल्या पडया होय त्यांथी उपाडीने वसतिवाळा स्थानमा मूके अगर तो तेमना शरीरमा घणा समयनो व्याधि होय ते दूर करीने तेमने निरोगी बनावे तो पण ते धर्माचार्य करेला

उपकारनो बदलो वळी शके नहीं, परन्तु कदाच ते धर्मगुरु संयमथी पतित थया होय, तेमनी धर्मश्रद्धा ओछी थती जती होय, उन्मार्गनुं सेवन करी रह्या होय त्यारे देवलोकथी आवीने, केवलीभगवन्तप्ररूपित धर्म कहीने तेमां तेमने पुन स्थिर करे तो पूज्य करेला तेमना उपकारनो बदलो वळी शके.

आ संबंधमां विशेष जोता जणावता कहे छे के-मातापिता विगेरेनो प्रत्युपकार थई शके छे परन्तु धर्मगुरुना तो आ लोक अने परलोकमां पण पूरेपूरो प्रत्युपकार थई शकतो नथी, एटले ज आ संबंधमां गुरु सविशेष दुष्प्रतिकार्य छे श्रीउमास्वातिवाचक-महाशये श्रीप्रशमरतिग्रन्थमां कह्युं छे के—" दुःप्रतिकारौ माता-पितरौ स्वामी गुरुश्च लोकेऽस्मिन्। तत्र गुरुरिहामुत्र च, सुदुष्करतर-प्रतीकारः ॥" एटले के मातापिता, पोषण करनार शेठ तथा धर्मगुरु आ लोकने विषे दुष्प्रतिकार छे, तेमां पण धर्मगुरु तो आ लोक अने परलोकमां पण दुःखे करीने प्रतिकार करवा योग्य छे अर्थात् मातापिता विगेरेने जो धर्ममां स्थापन करीए तो आ लोकमां अनृणी थवाय परन्तु गुरुना अनृणी आ लोकने परलोकमां पण थई शकवुं मुश्केल छे

आटला माटे ज आ अढारमी गाथामां कह्युं छे के-जो आचार्य उन्मार्गगामी थया होय, विपरीत क्रिया करता होय तो तेना शिष्ये तेमने पुन धर्ममार्गमां स्थापन करवा, तेमने स्थिर न करे तो तेवा चेलाने वैरी-शत्रु सदृश जाणवो आ अढारमी गाथामां गुरुने प्रतिबोध आपवानो शिष्य माटे निर्देश कर्यो, परन्तु शिष्ये पोताना प्रमादी गुरुने केवी रीते समजाववा ते माटे नीचेनी गाथा दर्शावता कहे छे के-

तुम्हारिसा वि मुणिवर !, पमायवसगा हवंति जइ पुरिसा ।
तेणन्नो को अम्हं, आलंबण हुज्ज संसारे ? ॥ १९ ॥

[युष्मादृशा अपि मुनिवर !, प्रमादवशगा भवन्ति यदि पुरुषाः ।
तेनाऽन्य. कोऽस्माकमा-लम्बन भविष्यति संसारे ? ॥ १९ ॥]

गाथार्थ-हे स्वामिन् ! हे गुरुदेव ! आपना जेवा पुरुष पण जो प्रमादवश थई जाय तो पछी आ अपार संसारसागरमां पडता मंदभागी एवा अमने नौका समान आप सिवाय बीजा कोनो आधार ? अर्थात् अमने भवदुःखमांथी कोण छोडावशे ?

विवेचन-आपणामां कहेवत प्रचलित छे के-" जेनो नायक आंधळो तेनु

कटक (सैन्य) कृपामां" आ उक्ति बराबर प्रमादी गुरुने लागु पडे छे जो उत्तम पुरुष-गच्छनायक पुरुष प्रमादवश थई जाय त्यारे तेमनो बोध कशुं पण फळ निपजावी शके नहीं अने तेमना आचारविचार जोई केटलाक शिथिल बनतां शिष्यो पण विशेष पतित थाय, माटे सारा शिष्यनी ए फरज छे के तेणे गुरुने प्रतिबोधवा-समजावी पुनः शुद्ध मार्गमां स्थापित करवा समजाववामां प्रसंगे शिष्य कहे के-" हे गुरुदेव ! तमे तो आ चार गतिरूप अगाध भवसागर मांथी अमारो उद्धार करवामां जहाज समान छो जहाज जे समुद्रमां अवलंबन रूप छे जो जहाज तूटे अगर डूबे तो तेना आश्रये रहेला पथिको पण पीडा पामे अगर तो डूबी जाय एवी रीते जो आप प्रमादवश बनशो तो पछी अमारे कोनु शरण स्वीकारवु ?" आ प्रमाणे विविध मिष्ट वचनथी गुरुने प्रतिबोधवा प्रयत्न करवो परन्तु कठिन के कडवु वचन न कहेवं स्तुति के प्रार्थनापूर्वक कहेवामां आवे तो तेनी गुरु प्रत्ये शीघ्र सारी असर थाय छे तेमनी स्तुति केवी रीते करवी अगर तो गुरुना केवी रीते गुण दर्शाववा ते सबधी वर्णन करता कहे छे के-

पुढवींविव सव्वसह, मेरुव्व अकंपिरं ठियं धम्मे।
चंदुव्व सोमलेसं, तं आयरियं पससन्ति ॥ १ ॥

अप्परिसाविं आलो-यणारिहं हेउकारणविहिन्नुम् ।
गंभीरं दुद्धरिसं, तं आयरियं पससंति ॥ २ ॥

कालन्नु देसन्नु, भावन्नु अतुरिअ असभंतम् ।
अणुवत्तयं अमायं, तं आयरियं पससंति ॥ ३ ॥

लोइयसामइएसु, सत्थेसु जस्स नत्थि वक्खेवो ।
ससमयपरसमयम्मि अ, तं आयरियं पससंति ॥ ४ ॥

बारसहिं वि अंगेहिं, सामाइयमाइपुव्वनिबद्धे ।
लद्धट्ठं गहियट्ठं, तं आयरियं पससंति ॥ ५ ॥

आयरियसहस्साइं, लहइ अ जीवा भवेहिं बहुएहिं ।
कम्मेसु य सिप्पेसु य, धम्मायरणेसु नो कहवि ॥ ६ ॥

जे पुण जिणोवइट्ठे, निग्गंथे पवयणंमि आयरिया ।
संसारमुक्खमग्गस्स, देसगा ते हु आयरिया ॥ ७ ॥

देवा वि देवलोए, निग्गंथं पवयणं अणुसरंता ।
अच्छरगणमज्झगया, आयरिए वंदया इति ॥ ८ ॥

जह दीवो दीवसय, पइप्पए दिप्पई य सो दीवो ।
दीवसमा आयरिया, अप्प च पर च दीवन्ति ॥ ९ ॥
देवा वि देवलोए, निच्च दिव्वोहिणा वियाणंता ।
आयरियमणुसरता, आसणसयणाणि मुञ्चन्ति ॥ १० ॥

अर्थात् पृथ्वीनी पेठे सर्व प्रकारना मानापमान सहन करे, धर्मने विषे मेरुपर्वतनी माफक अकंपित-अडग-दृढ रहे, चन्द्रनी सरखी सौम्यता-शीतळता आपे, कोइनी पण रहस्यमय वात अन्यने न करे, आलोयण देवा योग्य श्रीजैन शासनना सूत्रने विषे दर्शावेला हेतु तथा कारणो जाणे अगर तो संयम आराधननी विधि जाणे, सागरनी समान गांभीर्य गुणधारक होय, पाखंडी-मिथ्यात्वीओने दुर्धर एटले के परवादी जो वाद करवा आवे तो जीती शके एवा, पूर्वे वर्णवेल सुकाळ अगर तो दुष्काळ विगेरेने जाणनार होय, विविध देशोने जाणे, मनुष्यना भावो जाणे, वगर विचार्युं काय न करे, भ्रान्ति रहित होय, श्रीतीर्थंकरपरमात्मानी आज्ञामां पोते वर्तता होय अने पारकाने वर्तवा प्रेरणा करता होय, माया-कपट रहित होय, लौकिक सर्व व्यवहार तेमज स्वशास्त्र अने परदर्शनना जाणनार होय, सामायिकादि चौदपूर्व संयुक्त द्वादशांगीश्रुतना ज्ञाता होय अने तेना अर्थने जाणनार तेमज परंपरा प्रमाणे पृच्छा करीने अथवा निर्णय करनार होय-आवा प्रकारना गुणवाळा आचार्यनी श्रीतीर्थंकर परमात्मा पण प्रशंसा करे छे अन्य प्रकारना आचार्य जेवा के शिल्पाचार्य, धर्माचार्य एम घणीतेर कळा शिखववावाळा तथा लुहारीकाम, सुतारीकाम विगेरे हुन्नर शिखवाडवावाळा आचार्यो तो हजारो भवोमां भमे छे परन्तु धर्माचार्य एटला बधा भवोमां भ्रमण न करे श्रीजिनेश्वरप्ररूपित निर्ग्रंथ मार्गनुं प्ररूपण करनार होय एटले के एवो उपदेश आपनारा होय, जेम के-कोइ हिंसादि पांच आश्रवोमां रक्त रहेशे ते संसाराब्धिमां डूबशे अने पांचे आश्रवोनो जे त्याग करशे तेमज भगवंतना फरमान मुजब तप अने धर्मानुष्ठान करशे ते मोक्षमार्गनी प्राप्ति करी शकशे वळी अप्सराओनी मध्यमां सुखविलास भोगवता देवो पण निर्ग्रंथ प्रवचननी प्रशंसा करे छे के-आ वीतरागप्ररूपित धर्मना अनुसरणथी अमे आवी दिव्य देव-ऋद्धि पाम्या आ उपरान्त आचार्यनो पोता प्रत्ये थयेल उपकार जाणी ज्यां आचार्य विचरता होय त्यां सपरिवार आवीने तेमने ते देव वांदे छे अने ए रीते शासनप्रभावना करे छे आवा गुणशाळी आप आचार्य छो वळी आप जळहळता दीपक समान छो जेम एक दीपक अन्य सेंकडो दीवाने प्रकाशित करे तेम आप पोते दीपो छो अने शिष्य समुदायने दिपावो छो अर्थात् आ लोकमां जैनधर्मने प्रकाशीने दीपो छो अने परलोकमां देवगति प्राप्त करो छो तेवी रीते अन्य भव्य प्राणिओनो उद्धार करी परलोकमां तेमने देवगतिना भाजन बनावो छो वळी देव अवधिज्ञान युक्त होय छे अने ज्यारे तेना विचारवामां अगर तो देवभवमां

उपकारी आचार्य आप त्यारे जे पोताना सिंहासनादिनो त्याग करी, सात-आठ डगला आगळ चाली वंदन करे छे तेवा समर्थ शक्तिशाळी आचार्यपदमां आप बिराजो छो माटे आप जेवा स्वपरउपकारीए प्रमादवश बनवुं उचित न नथी हे प्रभो! आ आप प्रमादाचरण करशो तो अमारो उद्धार कोण करशे ? (१-१०) आ दश गाथा वंदकवेय्यक प्रकीर्णकनी छे आ प्रमाणे मधुर वाणीथी शिष्ये प्रमादी बनता आचार्यनुं शिथिलपणुं दूर कराववं

हवे उत्तम आचार्य अने अधम आचार्य बन्नेना तफावतनुं वर्णन चार गाथाओ द्वारा दर्शावयामां आवे छे-

नाणम्मि दंसणम्मि य, चरणम्मि य तिसु वि समयसारेसु ।
चोएइ जो ठवेउं, गणमप्पाणं च सो अ गणी ॥ २० ॥

[ज्ञाने दर्शने चरणे च, त्रिष्वपि समयसारेषु ।
नोदयति यः स्थापयितुं, गणमात्मानं च स च गणी ॥ २० ॥]

गाथार्थ–श्रीजिनशासनमां प्रधान–श्रेष्ठ स्वरूप ज्ञानाचार, दर्शनाचार तथा चारित्राचार तेमज तपाचार अने वीर्याचारने विषे पोताना साधुसमूहने, पोताने तेमज श्रोतासमूहने स्थिर करवा जे खंतभरी प्रेरणा करे तेने ज श्री-तीर्थंकर तथा गणधर प्रमुख आप्तजनोए आचार्य कहेल छे.

विवेचन–आठ प्रकारनो ज्ञानाचार छे, दर्शनाचार पण आठ प्रकारनो छे, 'च'कार शब्दथी बार प्रकारनो तपाचार पण समजवो, आठ प्रकारनो चारित्राचार छे अने बीजा 'च'कार शब्दथी छत्रीश प्रकारनो वीर्याचार जाणवो आ प्रमाण आचार तो पांच थया अने मूळ गाथामां तो 'तिसु वि' शब्दथी त्रणनी ज संख्या दर्शावी छे तो कोइन शंका उद्भवे के त्रणने बदले पांचनी संख्यानुं ग्रहण केम कर्युं ? आ शंकानो उत्तर ए छे के-ग्रंथकारे त्रणमां अंतर्गत ज तपाचार अने वीर्याचारने गणाव्या छे अलग पाड्या नथी माटे मूळ गाथामां गणावेल शब्द 'तिसु' त्रणवाचक बराबर घटित ज छे आवा त्रण प्रकारना सिद्धांतना सारभूत एटले जैनदर्शनमां जेना जेवी बीजी कोइ नथी तेवा ते त्रण प्रकारोमां जे पोताना आत्माने, पोताना साधुसमुदायने तेमज 'च' शब्दथी श्रोतासमूहने पण प्रवर्तावे-प्रेरणा करी आचरणमां उत्साहवंत बनावे तेवा आचार्यने तीर्थंकरभगवंताए उत्तम आचार्य जणावेल छे

हवे प्रथम ज्ञानाचारनुं स्वरूप दर्शावतां कहे छे के-" काले १ विणए २

बहुमाणे ३, उवहाणे ४ तहा अनिह्नवणे ५। वंजण ६ अत्थ ७ तदुभए ८, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥" १. काळ–अंगप्रविष्ट अने अनंगप्रविष्ट एम बे प्रकारनां जे सूत्र छे तेनी सज्झाय माटे जे काळ जणाव्या होय ते समये ज स्वाध्याय करवो परंतु अकाळे सज्झाय न करवी. जो अकाळे स्वाध्याय करवामां आवे तो प्रायश्चित्त लागे. आ संबंधमां शंका करतां कोई कहे के–" ज्ञाननुं पठन-पाठन करवामां काळ-अकाळनो विचार शा माटे करवो? ए तो प्रतिदिन पठन करवायोग्य ज छे एटले तेने माटे काळ-अकाळनो प्रतिबंध न होई शके " आना जवाबमां जणाववामां आवे छे के–अकाळे करेल स्वाध्याय निष्फळ नीवडे छे. वर्षाऋतुमां क्षेत्र खेड्युं होय तो ते क्षेत्र सारो पाक निष्पन्न करी शके परन्तु वर्षाऋतुमां प्रमादी बनी, खेडूत कार्तिक मासमां क्षेत्र खेडवा मांडे तो तेमां कशो लाभ न थाय तेम अकाळे करेल सज्झाय पण निष्फळ ज नीवडे. आ उपरांत अकाळे स्वाध्याय करवाथी मिथ्यात्वी देव छळ करे, बुद्धिबळ घटे, विद्या फळ न आपे, आयुष्य ओछुं थाय, तीर्थंकर भगवंतनी आज्ञानो भंग थाय इत्यादि दोषापत्ति आवे. आ संबंधमां एक संक्षिप्त दृष्टान्त जणावतां ग्रंथकार कहे छे के–एक साधु हता. तेमणे शास्त्राभ्यास ठीक कर्यो हतो परंतु तेओ हमेशां अकाळे ज स्वाध्याय करता. एकदा नगरनी देवीने आ हकीकतनी जाण थतां तेणे विचार्युं के–कोई मिथ्यात्वी देव आवी चडशे तो साधुने पीडा करशे माटे तेमने समजाववा जोईए, परन्तु साधु स्पष्ट कहेवाथी मानशे नहीं एम विचारी नगरदेवीए एक भरवाडणनुं रूप धारण कर्युं अने संध्यासमय छाशनुं वासण मस्तक पर लई ज्यां आगळ पेला साधु सज्झाय करी रह्या हता ते स्थाननी आसपास " कोई छाश ल्यो, कोई छाश ल्यो " ए प्रमाणे ऊंचे स्वरे बोली परिभ्रमण करवा लागी. आ प्रमाणे वारंवारना शब्दोच्चारथी साधुना स्वाध्यायध्यानमां व्याघात थवा लाग्यो एटले तेमने स्वाभाविक क्रोध उद्भव्यो. तेमणे आवेशपूर्वक पेली भरवाडणने कह्युं के–"हमणां तारी कोण छाश लेशे? शुं आ संध्यासमय छाश वेचवानो काळ छे? छाश क्यारे वेचाय तेनुं पण तने भान नथी? अत्यारे तने कोण ग्राहक मळशे? तारी महेनत वृथा जशे " आ प्रमाणे सांभळी देवीस्वरूप भरवाडणे कह्युं के–" हमणां तमे अध्ययन करवा मांड्युं छे तो शुं ते योग्य छे? अध्ययन करवानो आ समय होई शके? शुं आ अकाळे करातो सज्झायनुं फळ मळशे?" साधुने पोतानी भूल समजाई. देवीए तरत ज प्रत्यक्ष थईने साधुने समजावतां कह्युं के–" हुं नगरदेवी छुं. तमने समजाववा माटे मारे आ रूपांतर करवुं पड्युं. अकाळे स्वाध्याय करवाथी मिथ्यात्वी देवना उपद्रवनो भय रहे छे, अकाळे मरण पण थाय छे, माटे हवेथी अकाळे सज्झाय न करशो " साधु देवी-वचनथी समज्या अने त्यारबाद काळे ज स्वाध्याय ध्यान शरू

राखवु २. विनय—जे श्रुत-सिद्धांतनु अध्ययन करावे ते गुरुनो विनय करवो, ते आवे त्यारे ऊभा थवु, तेमनुं पाद-प्रक्षालन करवुं, तेमनी आज्ञानो तरत ज अमल करवो इत्यादि ३. बहुमान—जे सूत्र भणावे तेने पोताना हृदय गत भाव जणावी, तेमने उच्च आसने बेसारी शास्त्राभ्यास शीखवो ते प्रमाणे करवाथी विद्या तथा विद्यादाता गुरुनु पण बहुमान थाय छे अने तेने परिणामे सुखपूर्वक विद्या प्राप्त थाय छे ४. उपधान—उपधान तप करवो सूत्रो भणवा माटे जे जे प्रकारना तप शास्त्रमां जणावेल होय ते तप करीने भणवु तेनु बीजु नाम जोग पण कहेवाय ■ जे जे शास्त्राध्ययनोने माटे आगाढजोग अने अनागाढजोग कह्या होय ते ते अध्ययनोना पठन निमित्ते जोग करीने पछी सूत्र भणे-शीखे तो तेनु ज्ञान जल्दी प्राप्त थाय छे उपधान कर्या विना अभ्यास करे तो विराधक थाय ५. अनिह्नव—गुरुने ओळववा नहीं जेमनी पासे शास्त्राभ्यास कर्यो होय तेनु ज नाम ग्रहण करवु परन्तु भण्या होईए कोईकनी पासे अने नाम लईए अन्य कोईनु तो दोष लागे, माटे गुरुनुं सत्य नाम जाहेर करवु ६. व्यंजन—शास्त्राभ्यासमां अगर तो मूलमां जे अक्षरो होय तेनो भेद-फेरफार न करवो जे प्रमाणे भाषाबद्ध होय ते प्रमाणे ■ उच्चार करवो परन्तु तेमां परिवर्तन न करवु दृष्टांत तरीके ' धम्मो मंगलमुक्किट्ठं ' एवो पाठ छे तेने बदले तेवा ज भाववाळो पाठ फेरवीने बोले के ' पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं ' तो दोष लागे एटला माटे आवो व्यंजननो फेरफार कदापि न करवो ७. अर्थ—अर्थभेद न करवो एटले सूत्रनो जे अर्थ थाय तेथी विपरीत-ऊलटो अर्थ न करवो दृष्टान्त स्वरूप श्रीआचारांगसूत्रना पाठ छे के—" आवंती (यावती) लोगंसि विप्परामुसन्तीति "—अर्थात् केटलाएक पाखंडी लोको छ कायना जीवोने अनेक प्रकारे हणी रह्या छे, एटले के जेटला पाखंडी मिथ्यादृष्टी लोको छे ते ज छकायना हणनारा छे आ प्रमाणे आ सूत्रनो अर्थ होवा छतां तेनो विपरीत अर्थ करतां कहे के—अवंतीदेशमां जे लोको छे ते एक-बीजाथी दूर रहे छे आ प्रमाणे उल्टो अर्थ करे तो दोष लागे ८. तदुभय—सूत्र अने अर्थ बन्नेनो विपरीत अर्थ करे दा त धर्मो मङ्गलमुत्कृष्ट, अहिंसापर्वतमस्तके—एटले धर्म ए उत्कृष्ट मंगल ■ अने अहिंसा ते पर्वतमस्तक (शिखर) छे आमां बन्नेनो भेद (फेरफार) कई रीते थया ते आपणे तपासीए प्रथम तो पाद प्राकृत होवा छतां तेने फेरवीने संस्कृतमां कर्यु अने अर्थ पण शुद्ध संस्कृत कहेवाथी पाठभेद थया बीजा पादमां पाठभेद अने अर्थभेद बन्ने ■ माटे कदापि आ प्रमाणे फेरफार न करवो; कारण के व्यंजननो

फेरफार थाय पदले अक्षर फरी जाय, अक्षर फरी जाय पदले अर्थ फरी जाय अने आ प्रमाणे अर्थभेद थाय तो क्रियाभेद पण थाय, क्रियामां परिवर्तन थतां मोक्षनो अभाव थाय, मोक्षनो अभाव थतां संयम-ग्रहण निष्फळ नीवडे आ प्रमाणे परंपराए आचारहीन बनी जवाय, पेथलिंगमथतभाषित मार्गना लोपक थइ जवाय अने महापातक लागे माटे कदापि अर्थ तथा सूत्रनो भेद न करवो

दर्शनाचार पण आठ प्रकारनो कह्यो छे-" निस्संकिय १ निक्कंखिय २-निव्वितिगिच्छा ३ अमूढदिट्ठी अ ४। उववूह ५ थिरीकरणे ६, वच्छल्ल ७ पभावणे ८ अट्ठ ॥ २ ॥ " १. निःशंकित-देशशंका अने सर्वशंका रहित देशशंका एटले जीव तो बधा सरखा ज छे, तो सूत्रमां भव्य अने अभव्य एम बे प्रकारना जीवो केम कह्या? सरखा स्वरूपमां भेद न होवो घटे-आ प्रमाणेनी जे शंका ते देशशंका कहेवाय शास्त्रकार कहे छे के-आ देशशंका न करवी, कारण के जीवनुं लक्षण तो एक ज छे परंतु स्वभावनु विचित्रपणु होवाथी भव्य अने अभव्य बन्ने प्रकार घटी शके छे स्त्रीओ घणी होय परंतु केटलीयेक वांझणी होय छे ज्यारे केटलीयेक संतानवाळी होय छे सर्वशंका एटले शु? ते दृष्टांतथी कहे छे के-जैनसूत्रो तो बधा प्राकृत भाषामां छे माटे कोण जाणे कोणे ते बनाव्या हशे? ठट्टा मश्करा जेवा लागे छे शास्त्रमा जणावेल अंगुलना असंख्यातमा भागनु शरीर, समयनु प्रमाण इत्यादिक बुद्धिमां न उतरे तेवी हकीकत छे-आवी शंका ते सर्वशंका कहेवाय आवी शंका कदापि न करवी, केम के तेम करवाथी जैनशासन परत्वेनो प्रेम अल्प थई जाय छे वळी विचारवु के-गणधरमहाराजाओ परोपकारी अने एक मात्र परहित साधवामां तत्पर हता तेमने अंशमात्र पण स्वार्थ न हतो तेमणे जाण्युं के संस्कृत भाषा बाळजनोने, स्त्रीवर्गने, मंदबुद्धिवाळा तेमज अल्पबुद्धियाळा प्राणिओने समजवामां कठिन पडशे-आवडशे नहीं माटे सुगम एवी प्राकृत भाषामां ज सूत्रग्रंथोने गुंफित कर्या संस्कृतभाषाना तो तेओ पारगत हता परंतु आ उपकारक बुद्धि लक्षमां राखीने ज तेओए प्राकृतभाषामां ज सूत्ररचना करी छे वळी देशशंका अने सर्वशंका बीजी रीते पण जणावता कहे छे के-पाणीमां असंख्याता जीव कह्या छे ते हशे के नहीं? एवी शंका ते देशशंका अने जैनधर्म आ ज छे के बीजो पण हशे? एवी शंका ते सर्वशंका जाणवी आ बन्ने प्रकारनी शंकाओ रहित जीव अरिहंत परमात्मानुं शासन पामीने दर्शनाचारनुं शुद्ध रीते आचरण करी शके छे-आ प्रमाणे समकिती अने सम्यक्त्वनो अभेद दर्शाव्यो २. निष्कांक्षित-अन्य मतनी वांछा रहित वांछा-कांक्षा बे प्रकारनी छे-(१) देशकांक्षा अने (२) सर्वकांक्षा देशकांक्षा एटले बुद्धधर्म पण सारो जणाय छे, कारण के तेमां पण दयाधर्मनुं प्ररूपण करवामां आव्युं छे-आ प्रमा

भेनी इच्छा ते देशकांक्षा मयकांक्षा एटले वेदधर्म, शिवधर्म, बुद्धधर्म इत्यादि सर्व धर्मो सारा छे कारण के बधा धर्मना मोक्षमार्ग कह्यो छे-आ सर्वकांक्षा जाणवी आ बने प्रकारनी कांक्षा रहित वर्तन राखवु वळी विचारवुं के-केवळी भगवतना मार्ग (जैनधर्म) सिवाय कोई बीजा मतमां मोक्ष नथी ॥ पंदर प्रकारे जे सिद्ध थया छे ते सर्व समभावभावित आत्मा थईने मुक्ति स्थानमा बिराज्या छे अने तेवा समभावभावित आत्माए उपदेशेलो धर्म ते फक्त जैनधर्म ज छे माटे ते सिवायना अन्य सर्वकोई धर्मो मिथ्यात्वी मार्ग छे

३. निर्विचिकित्सा-धर्मफळना संदेह रहित, तथा साधु-साध्वीना मलिन गात्रनी दुगच्छा न करनार प्रतिक्रमण, पडिलेहणादिक धार्मिक अनुष्ठान करु छु, परन्तु ते क्रिया कठिन छे अने तेनु शु फळ प्राप्त थशे ? फळ प्राप्त थशे के नहीं ! कारण के परलोकथी आवीने कोई एम कहेतु नथी के अमुक क्रियाना फळथी मने आवी शुभ गति प्राप्त थई बीजा धर्मना पण पाप करनारा लोको सुखी जणाय छे अने आपणे तो आवी कष्ट क्रिया करीए छीए छता सुख भासतु नथी वळी आटला वर्षो सुधी आ पडिलेहण, प्रतिक्रमणादिक क्रियाओ करी छतां तेनु कशु फळ प्राप्त थतु जणातु नथी-आ प्रमाणे फळनो संदेह कदापि न करवो तेमज साधु या साध्वीजी 'आ तो स्नानादिक करता नथी तेथी मलिन गात्रवाळा छे, दंतधावन पण करता नथी तेथी तेमनुं मुख दुर्गंधवाळु होय छे' आ प्रमाणे तेमनी दुगच्छा पण कदापि न करवी ते निर्विचिकित्सा

४. अमूढदृष्टि-मिथ्यात्वीना अज्ञान तपस्यादिक कष्ट तथा चमत्कार देखी व्यामोहित न थनार अन्य मतना कोई बाल तपस्वीने उग्र तपश्चर्या (अज्ञान कष्ट) करतो निहाळी तेना प्रत्ये आदरभाव न दाखवे तेमज तेवा कोई सन्यासी, बावा इत्यादिकना मंत्र-तंत्रना चमत्कार देखी व्यामोहित न थाय एटले के स्वधर्ममा ज स्थिर रहे 'आ इतर धर्म पण सारो छे माटे आपणे तेनु पण अनुकरण करीए आ इतर धर्म प्रभाववाळो जणाय छे तो तात्कालिक फळनी अपेक्षाए ते धर्मनु सेवन करवुं सारु छे' एम पण न विचारे जो ते प्रमाणे स्वधर्ममां स्थिर न रहे तो समकित चाल्यु जाय अन्यधर्मी तपस्वीओनी तपस्या ए खरेखर समजणपूर्वकनी तपश्चर्या नथी, ते तो अज्ञान तप मात्र छे तथाप्रकारना देहदमनपूर्वक जो वीतरागमार्गनु अनुकरण करे तो अज्ञान तपद्वारा थती सिद्धि करता अनेकगणु पुण्य उपार्जन करे अज्ञान तप अने जयणापूर्वकना तप वच्चे भेद अने सरसव जेटलुं अंतर छे

५. उपबृंहक-सम्यक् धर्म पाळवावाळा साधर्मिक बधुना गुणनी प्रशंसा करवी कोई पण साधर्मिक बंधुए अट्ठाइ महोत्सव कर्यो होय, सारी तपश्चर्या करी होय, प्रतिष्ठादि महोत्सव आरम्भ्यो होय, साधर्मिक वात्सल्य कर्यु होय, दीक्षामहोत्सव

पोइयो होय-आवा आवा धार्मिक शुभ प्रसंगोए ते ते कृत्य करनारनी प्रशंसापूर्वक कहेवुं के-" धन्य छे तमने तमे तमारी संपत्तिनो आवा पुण्यकार्यमां सदुपयोग कर्यो तमारा जेवा महानुभावथी ज शासनशोभा वधे छे ' आ प्रमाणे गुणानुवाद करवाथी ते ते कृत्य करनारनी भावना वृद्धि पामे छे तथा हृदय प्रफुल्लित बने छे ६. स्थिरीकरण-साधर्मीबंधुने धर्ममां स्थिर करवो कोइ दीन माणस आजिविका चलावी शकतो न होय अने दुःखने कारणे ' बीजो धर्म पाळुं तो सुखी थईश-मने मदद मळशे ' एवी आशाथी स्वधर्म त्यागतो होय तो तेने धंधो-रोजगार आपी, सहाय आपी स्वधर्ममां स्थिर करवो आधुनिक जमानामां घणा लोको स्वधर्मनो त्याग करी मुस्लीम अगर तो क्रिश्चियन धर्म स्वीकारे छे तेमने तेम करता अटकावी स्वधर्ममां स्थिर करवा अथवा तो काई शंका करीने धर्मनो त्याग करवा इच्छतो होय तो तेने पण उपदेश आपीने सम्यक्त्वमा दृढ बनाववो ७ साधर्मिक वात्सल्य-साधर्मी बंधु प्रत्येनी प्रीतिथी पोतानी शक्ति प्रमाणे तेना पर उपकार करे, भोजन करावे, पहेरामणी आपे, बक्षीस आपे, सहाय आपे ८. प्रभावना-धर्मना उपदेशद्वारा, धर्मकथाद्वारा धर्मनो प्रचार करे, लोकोने सत्य धर्म समजावे, रथयात्रादि महोत्सवो योजे, तीर्थनी स्थापना करे इत्यादिक प्रकारोथी सम्यक्त्वने दिपावे आ जणावेल आठ प्रकारो पैकी प्रथम चार अभ्यंतर दर्शनाचार छे ज्यारे छेल्ला चार बाह्य दर्शनाचार छे

चारित्राचार पण आठ प्रकारनो दर्शाव्यो छे-"पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ३ ॥" प्रणिधान एटले चित्तनी चंचळता रहित अने जोग एटले आहारादिक व्यापार अर्थात् आहारादिक कार्य करवामां चंचळता रहित व्यापारवाळो आ वाचनमां शंका दर्शावता कहे छे क-आवी व्यक्ति तो अविरतसम्यग्दृष्टि पण होय आ दोषापत्ति टाळवा माटे कहे छे के १-५. पांच समिति अने ६-८ त्रण गुप्ति युक्त होय. १. ईर्यासमिति-मार्गमां जतां-आवतां जीवोनी रक्षा अर्थे साडात्रण हस्तप्रमाण आगळ नजर राखीने उपयोगपूर्वक चाले २ भाषा समिति-निरवद्य-पापरहित, कोइ पण जीवने दुःख न थाय तेम विचारपूर्वक बोले, जेमतेम अव्यवस्थित न बोले तेमज उघाडे मुखे न बोले ३. एषणासमिति-बेंताळीश दोष रहित गोचरी ले, वस्त्र, पात्र पण विधिपूर्वक ग्रहण करे ४. आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति-वस्त्र-पात्रादिक जग्या जोइ, प्रमार्जी ले-मूके ५. पारिष्ठापनिकासमिति-लघुनीति तथा वडीनीति तेमज श्लेष्मादिक शुद्ध

भेदो स्वमतिअनुसार समजी लेवा बत्रीश कोळिया लेवा ते प्रमाणोपेत भाजन कहेवाय, तेथी वधारे एक पण कवळ ले ता ते अतिमात्राहारी कहेवाय एकत्रीश कवळ सुधी ज ऊणोदरिका जाणवी आवी ज रीते पाणी पीवामा पण ओछु पीवु ते पाणऊणोदरिका (३) भावऊणोदरिका-क्रोध, मान, माया अने लोभ विगरेना उदय समये तेने वश न थता तेनो त्याग करवो ३. वृत्तिसंक्षेप-वृत्तिनो संक्षेप करवा जे द्रव्यादिक राख्या होय तेमा घटाडो करवो, चौद नियमादिक धारवा-आ श्रावकने माटे समजवु साधुने माटे तो गोचरीनी वृत्ति छे तेथी तेनो ज संक्षेप करवो श्रीउववाइसूत्रमा कह्यु छे के-' भिक्खायरिया अणेगविहा प० तं०-दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए ।' भिक्षाचर्या अनेक प्रकारनी कहेली छे-(१) द्रव्याभिग्रह, (२) क्षेत्राभिग्रह, (३) कालाभिग्रह अने (४) भावाभिग्रह (१) द्रव्याभिग्रह-द्रव्यनो अभिग्रह करवो ते-लेपकृत द्रव्यनु प्रमाण करवु एटले लेप लागेला भाजन वडे आप ता लेवु, घी आदिथी खरडित (लेप लागल) लेवु बीजु न लेवु तेमज अखरडित लेवु इत्यादिक अभिग्रह ते द्रव्याभिग्रह (२) क्षेत्राभिग्रह क्षेत्रना अभिग्रह पूर्वक गोचरी करवी, अमुक संख्याना घरे ज वहारवा माटे जवु, तेथी विशेष संख्यावाळा घरे भिक्षार्थे न जवु इत्यादिक विविध प्रकारे क्षेत्रना अभिग्रहपूर्वक गोचरी ग्रहण करवी ते (३) कालाभिग्रह-कालनो अभिग्रह करवो ते बीजा पहोर पहला मळे तो आहार लेवो तथा त्रीजा पहोरे मळे तो ज आहार लेवो ए रीते मनमा चिंतवेला समये आहार मळे तो ग्रहण करवो, परन्तु ते समय व्यतीत थई गया बाद आहार न ग्रहण करवो ते कालाभिग्रह (४) भावाभिग्रह एवा अभिग्रह करवो के संगीत करतो थको, अगर तो हसतो थको, अगर तो रुदन करतो छतो कोई पण मनुष्य अगर तो तथाप्रकारनी स्त्री आहार वहोरावे तो ज ग्रहण करवो अथवा तो कोई सौभाग्यवती स्त्री, आभूषण पहेरेली स्त्री अगर तो तिलकवाळी स्त्री आहार वहोरावे तो ज ग्रहण करवो इत्यादि विविध प्रकारे अभिग्रह धारण करी तेनी पूर्ति थाय त्यारे ज आहार ग्रहण करवा ते भावाभिग्रह आ भावाभिग्रह चरमजिनपति श्रीमहावीर परमात्माए कर्यो हतो के राजकुमारी होय, हाथपगमा बेडी होय, रुदन करती होय, त्रण दिवसनी भूखी होय, मस्तक मुंडन करेल होय तेवी स्त्री अडदना बाकळा वहोरावे तो ज आहार ग्रहण करवो अने आपणे जाणीए छीए तेम चंदनबाळाए परमात्माना ते भावाभिग्रह पूर्ण कर्यो हतो ४ रसत्याग-विगयादि रसनो त्याग करवो आ रसत्याग अनेक प्रकारनो छे श्रीऔपपातिक-सूत्रमां कह्युं छे के-" णिव्विगिए पणीयरसपरिचाई आयंबिलिए आयामसित्थभोई अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लुहाहारे । " निवि, आयंबिल, अरसाहार,

निरसाहार, अताहार, पताहार, लुखाहार इत्यादि चीकणा रसनो त्याग करवो ते निवि, आयंबिलमा जळमा बोळीने आहार करवो ते आयंबिलआयाम सित्थभोजन, रसरहित ते अरसाहार, जेनो रस बगडी गयो होय ते विरसाहार, छेल्लुं वल्युं-चल्युं तथा खरडायेलुं भोजन करवुं ते अंताहार, तुच्छ आहार लेवो ते लुखाहार ५. कायक्लेश-कायाने कष्ट उपजे तेवी क्रिया, वीरासने तथा उभडक बेसवुं, एक ज आसन पर स्थिर, कायोत्सर्गमां, तडकामां, ठंडीमां अने वस्त्रविहीन रहेवुं, खरज आव्या छतां खणवुं तथा थुंकवुं नहीं, लोच करवो, शरीरनी कोई पण प्रकारनी शुश्रूषा न करवी इत्यादिक कायक्लेश जाणवो ६. संलीनता-इन्द्रियादिकने गोपववी तेना चार प्रकार छे १ इंद्रिय संलीनता-पांचे इंद्रियोना त्रेवीश विषयोमां राग-द्वेष न करे प्रशंसात्मक निंदात्मक शब्द सांभळी, स्वरूपवान या कदरूपुं रूप जोईने, कडवो या मीठो रस चाखीने, सुगंध दुर्गंध सुंघीने, शीत तथा उष्ण स्पर्श करीने तेने सारा नठारा न कहे तेमज खराब पण न कहे, तेने विषे हर्ष या तो शोक धारण न करे २ कषायसंलीनता-क्रोध, मान, माया अने लोभादिना प्रसंग-उदयसमये तेने उपशमावे ३ जोगसंलीनता-अशुभ कार्यमां मन, वचन तथा कायाना योगने रोके परन्तु शुभ कार्यमां योगोने प्रवर्तावे ४ विविक्तचर्यासंलीनता-आराम, उद्यान, उपवन, चैत्य प्रमुख ज्यां स्त्री, पशु के नपुंसक न होय तेवा एकांत स्थानमां रहे तेमज शय्या-संथारादिकना दोषो दूर करे

आ प्रमाणे छ प्रकारनो बाह्य तप जाणवा आ तप करनारने अन्य लोको जाणी शके छे माटे तेने बाह्य तप जाणवो आ तप अन्यतीर्थिक पण करे छे, पण विपरीतपणे करे छे-विधिपूर्वक करता नथी

हवे छ प्रकारना अभ्यंतर तप कहे छे के-“पायच्छित्तं १ विणओ २, वेयावच्चं ३ तहेव सज्झाओ ४। झाणं ५ उस्सग्गो ६ वि य, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ ६ ॥” १. प्रायश्चित्त-जे अतिचार लाग्या होय ते दूर करवा माटे गुरुए कहेल तप करवा ते २. विनय-गुरुने वांदणादिक देवारूप विनय तप, तेथी कर्म-मळ दूर थाय छे ३ वैयावच्च-विनयवाळो होय ते ज वैयावच्च करे भात-पाणी लावी आपवा, पगचंपी करवी, गुरुप्रमुख वडील जनना काम करवा ४. सज्झाय-शुभ मनथी शास्त्रपाठोनो स्वाध्याय करवो ५. ध्यान-धर्म तथा शुक्लध्यान ध्याववा ध्यान ध्याववाथी त्यागबुद्धि थाय छे ६. कायोत्सर्ग-कायाने वोसराववी अर्थात् काया परत्वे ममत्वभाव दूर करवो

आ छ प्रकारनो शब्दार्थ जणाव्या पछी हवे तेनुं विवेचन करता टीकाकार जणाय छे के-१. प्रायश्चित्त-प्रायश्चित्त दश प्रकारना छे " आलोयणारिहे १ पडिक्कमणारिहे २ तदुभयारिहे ३ विवेगारिहे ४ विउस्सग्गारिहे ५ तवारिहे ६ छेदारिहे ७ मूलारिहे ८ अणवट्ठप्पारिहे ९ पारंचियारिहे १०।" १ आलोचना-प्रायश्चित्त-गोचरी आदिमा जे दोषो लाग्या होय ते मननी शुद्धिपूर्वक गुरुमहाराज समक्ष जाहेर करवा अने गुरु जे आलोचना फरमावे ते करवी २ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त-जे अतिचारादिक दोषो लाग्या होय ते शुद्ध मनथी गुरु समक्ष प्रकाशवा अने गुरु कहे के 'मिच्छामि दुक्कड' आपो त्यारे शुद्ध हृदयथी मिथ्या दुष्कृत आपवो ३ तदुभयप्रायश्चित्त-आलोचना पण करवी अने प्रतिक्रमण पण करवु ते ४ विवेकप्रायश्चित्त-अशुद्ध भात-पाणी प्रमुखनो त्याग करवो ५ कायोत्सर्गप्रायश्चित्त-कायोत्सर्ग करवो ते ६ तपप्रायश्चित्त-ऊपर जणावेलां पाचे प्रकारोथी जे दोषोनी शुद्धि न थाय ते माटे गुरुमहाराज तपप्रायश्चित्त आपे छे ते प्रमाणे तप करे तो लागेला दोषो दूर थाय तपमा निवि अगर आयंबिल करवाना होय छे ७ छेद प्रायश्चित्त-तपश्चर्याद्वारा पण जो दोषोनी शुद्धि न थाय तो तेने माटे पाच दिवसनो छेद आपे एटले दीक्षापर्यायमा एटला दिवस ओछा करे ८ मूळप्रायश्चित्त-छेद प्रायश्चित्तथी पण ज्यारे दोषोनु निरसन न थाय त्यारे नवी ज दीक्षा आपे अने नवदीक्षितनी माफक तेनो चारित्रपर्याय गणाय एटले के पूर्वे गमे तेटलो दीक्षापर्याय पाळ्यो होय ते सर्व निष्फळ बने ९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त-ज्यां सुधी आपेल आलोयणनो तप पूरो न करे त्यां सुधी व्रतपालन न गणाय ते १० पारांचिकप्रायश्चित्त-पूर्वे कहेला प्रायश्चित्तोथी पण शुद्धि न थाय तो छेल्लु पारांचिकप्रायश्चित्त आपवामा आवे छे आ प्रायश्चित्तमा बार वर्षे सुधी गुप्त वेषे रही शासनप्रभावनानु महाकार्य करवानुं अगर तो राजाने प्रतिबोधवानु होय छे कोई आचार्यना घातकने, राजाने हणनारने अगर तो उत्सूत्रप्ररूपकने आ जातनु प्रायश्चित्त आपवामा आवे छे २. विनय-पूज्य व्यक्ति तरफ मन, वचन अने शरीरथी नम्रभाव दर्शाववो विनय सात प्रकारनो छे " णाणविणए १ दसण २ चरित्त ३ मण ४ वय ५ काय ६ लोगोवयारविणए ७।" १ ज्ञानविनय, २ दर्शनविनय, ३ चारित्रविनय, ४ मनविनय, ५ वचनविनय, ६ कायविनय अने ७ लोकोपचारविनय [१] ज्ञानविनय पाच प्रकारनो छे-१ मतिज्ञाननो, २ श्रुतज्ञाननो, ३ अवधिज्ञाननो, ४ मन पर्यवज्ञानना अने ५ केवळज्ञानना विनय-आ पाचे प्रकारना ज्ञाननुं विपरीत वर्णन न करवु ते ज्ञान विनय [२] दर्शनविनय बे प्रकारनो छे-१ शुश्रूषाविनय एटले के समकिती जीवनी शुश्रूषा करवी, समकितीना साम जईने आदर अने सन्मान आपवु, हाथ जोडी

प्रणाम करवा, उठीने जाय त्यारे सात-आठ डगला वळाववा जवुं इत्यादि अनेक प्रकारे जाणवुं २ अनाशातनाविनय-ते पिस्तालीश प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे-१ अरिहंतनी आशातना करवी, २ अरिहंते कहेल धर्मनी, ३ आचार्यनी, ४ उपाध्यायनी, ५ स्थविरनी, ६ कुलनी, ७ गणनी, ८ साधुनी, ९ क्रिया वादीनी, १० संभोगी एक सामाचारीनी, ११ मतिज्ञाननी, १२ श्रुतज्ञाननी, १३ अवधिज्ञाननी, १४ मन पर्यवज्ञाननी अने १५ केवळज्ञाननी-आ पंदरेनी आशातना टाळवी अने भक्ति करवी भक्ति एटले बाह्यप्रतिपत्ति अर्थात् ऊभा थवादिक विनय साचववो, ए ज प्रमाणे ए पंदरेनुं बहुमान करवुं एटले ए निर्जराने अर्थे प्रीतिपूर्वक क्रिया करवी, तेवी ज रीते ए पंदरेना वर्ण वाद-तेनी प्रशंसा करवी, कीर्ति फेलाववी आ प्रमाणे पीस्तालीश प्रकारे बीजो भेद जाणवो [३] चारित्रविनय पांच प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे—१ सामायिक, २ छेदोपस्थापनीय, ३ परिहारविशुद्धि, ४ सूक्ष्मसंपराय अने ५ यथा ख्यात चारित्रनो विनय करवो आ पांचे चारित्रनी विपरीत प्ररूपणा न करवी ते तेनो विनय कर्यो कहेवाय छे [४] मनविनय बे प्रकारनो छे-१ अप्रशस्तमन-विनय अने २ प्रशस्तमनविनय अप्रशस्तमनविनय बार प्रकारनो कहेल छे-" जे य मणे सावज्जे १ सकिरिए २ सकक्कसे ३ कडुए ४ निट्ठुरे ५ फरुसे ६ अण्हयकरे ७ छेयकरे ८ भेयकरे ९ परितावणकरे १० उद्दवणकरे ११ भूतोव-घाइए १२ तहप्पगारं मणं नोपधारेज्जा, से त अप्पसत्थमणविणए ॥" १ सावद्य हिंसादिकमां मन वर्ते ते, २ सक्रिय-कायिकादिक पांच क्रियामां मन वर्ते ते, ३ कर्कश-कठोर, ४ कटुक-बीजाने तथा पोताने कडवुं लागे, ५ निष्ठुर-कोमळ नहीं तेवुं, ६ परुष-स्नेह विनानुं, ७ अशुभ कर्माश्रवमां रक्त, ८ छेदक-हस्ता दिक छेदन करवानुं मन, ९ भेदक-नासिकादिनुं भेदन करवानुं मन, १० परि तापकारक-जीवोने संताप-संकट उपजाववानुं मन, ११ उपद्रवकारी-कोइने मारणांतिक कष्ट उपजाववुं अगर तो धन हरण करी उपद्रव करवानुं चित्त अने १२ भूतोपघात-प्राणिओना वधनी इच्छा आवी रीते असंयतनी माफक जे मन ते अप्रशस्तमनविनय कहेवाय अने आ बार प्रकार रहित जेनुं मन होय ते बीजो प्रशस्तमनविनय जाणवो [५] वचनविनय-ऊपर मन संबंधे जे बार प्रकारो दर्शाव्या ते यथालिखित वचनविनय संबंधी पण जाणी लेवा [६] कायविनय बे प्रकारे छे-१ अप्रशस्तकायविनय अने २ प्रशस्तकायविनय अप्रशस्तकायविनय सात प्रकारनो छे—" अणाउत्त गमणे १, अणाउत्त ठाणे २, अणाउत्त निसीदणे ३, अणाउत्त तुयट्टणे ४, अणाउत्त उल्लंघणे ५, अणा-उत्त पल्लंघणे ६, अणाउत्त सव्विंदियकायजोगजुंजणता ७, से त अप्पसत्थकाय

विणए ।" १ उपयोग विना जेमतेम चाले, २ ज्यां त्यां ऊभा रहे, ३ बेसवानी जग्याए पूंज्या-प्रमार्ज्या विना बेसे, ४ पूंज्या विना शयन करे, ५ उपयोग रहित उल्लंघन करे या फाळ मारीने जाय, ६ वारंवार आ प्रमाणे उल्लंघन करे अने ७ इन्द्रियोने विषयादिकमां प्रवर्तावे-आ प्रमाणे अप्रशस्तकायविनय कहेवाय आ ज सात प्रकारनो बराबर उपयोग राखी प्रवृत्ति करे ते प्रशस्तकायविनय कहेवाय [७] लोकोपचारविनय सात प्रकारनो छे-" अब्भासवत्तिय १, परछंदाणुवत्तिय २, कज्जहेउ ३, कयपडिकिरिया ४, अत्तगवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया ७ ॥" १ अभ्यासवर्तिता-समीप रहेवुं ते, २ पराभिप्रायवर्तन-बीजा साधुनो जे प्रमाणे अभिप्राय होय ते प्रमाणे वर्तवुं (एवी ज रीते गृहस्थ सबंधी पण समजी लेवु) ३ कार्यहेतु-ज्ञानाध्ययनादि कार्य निमित्ते आहार-पाणी वहोराववा ते ४ कृतप्रतिक्रिया-आमणे मने ज्ञान दान आप्युं छे एवी बुद्धिथी आहार-पाणी वहोराववा ते ५ आर्त्तगवेषणा-दु:खी प्राणीने वार्ता सभारे ६ देशकालज्ञता-जेवो देश होय तेने अवसरोचित वर्तन राखे ७ सर्व अवसरे सर्व प्रयोजनोने विषे सघळीओने अनुकूळपणे वर्तीने रहे ३. वेयावच्च-आहार-पाणी विगेरे लावी आपवा, व्याधिप्रसंगे शरीर दाबवुं, चोळवुं वि० दश प्रकारे कहेल छे " आयरियवेयावच्चे १, उवज्झाय २, सेह ३, गिलाण ४, तवस्सि ५, थेर ६, साहम्मिय ७, कुल ८, गण ९, संघवेयावच्चे १० ।" १ आयरियवेयावच्च-आचार्यनी, २ उपाध्यायनी, ३ नूतन दीक्षा लेनार शिष्यनी, ४ ग्लान, रोगी, निर्बळ तेमज अपंग साधुनी, ५ अट्ठमादिक तपस्वीनी अने ६ स्थविरनी वेयावच्च स्थविर त्रण प्रकारना छे-(अ) वयस्थविर-वृद्ध, (ब) चारित्रस्थविर एटले वीश वर्ष जेटला चारित्रपर्यायवाळा अने (क) श्रुतस्थविर एटले श्रीस्थानांगसूत्रना ज्ञाता ७ साधर्मिक-एक सामाचारी पाळता साधु-साध्वीनी वेयावच्च कारण प्रसंगे बीजा सामाचारीवाळा साधु-साध्वीनी पण वेयावच्च करवी ८ एक आचार्यना समुदायनी, ९ अनेक आचार्योनो समुदाय एटले के गण तेनी अने १० घणा गणानो समुदाय ते संघ तेनी वेयावच्च करवी आ दश प्रकारे वेयावच्च जाणवी आ प्रमाणे वेयावच्च करवाथी कर्मनी सारी रीते निर्जरा थाय छे कोई स्थळे चैत्यवेयावच्च पण जणावेल छे एटले के जिनप्रतिमानी वेयावच्च करवी ४. सज्झाय-पांच प्रकारे कहेल छे-वायणा १, पडिपुच्छणा २, परियट्टणा ३, अणुप्पेहा ४, धम्मकहा ५ ।" १ वाचना-नवीन नवीन शास्त्रपाठ करे २ पृच्छना-तेमां उद्भवेली शंका पूछे, ३ परावर्तन-करेल अभ्यासनुं वारंवार पुनरावर्तन करे, ४ अनुप्रेक्षा-पोते जे शास्त्राभ्यास कर्यो होय तेनो

अर्थ (रहस्य) विचारे अने ५ धर्मकथा-पोते समजेल शास्त्र बीजाने समजावे-व्याख्यानादिक वांचे अने प्रतिबोध पमाडे ५ ध्यान-चार प्रकारे छे " अट्टज्झाणे १, रुद्दज्झाणे २, धम्मज्झाणे ३, सुक्कज्झाणे ४ ॥ " १ आर्त्त ध्यान-शोक, दुःख, आक्रन्द अने विलाप करवो ते आर्त्तध्यानना चार प्रकार छे १ अनिष्टसंयोगार्त्तध्यान-पोताने गमे नहीं तेवानो संयोग थाय त्यारे तेने दूर करवानो विचार कर्या करवो स्त्री कुभार्या मळी होय, पुत्र कुपुत्र नीवड्यो होय, ते प्रतिदिन दुःख आपता होय त्यारे विचारीए के 'आ दुःख मांथी हुं क्यारे छूटीश ?' अथवा तो खराब गाममां वसवाट थया होय अगर तो शब्दादि पांच विषयोनो अशुभ संयोग मळ्यो होय त्यारे तेओना वियोग नो विचार करे ते २ इष्टवियोगार्त्तध्यान-स्त्री, पुत्र, धाम तेमज शब्दादि विषयो सारा प्राप्त थया होय त्यारे विचार्युं के 'आ सर्वनो वियोग न थाय तो सारुं' अने भाग्ययोगे वियोग थई गयो तो तेनुं स्मरण कर्या करवुं एटले के 'मारी भार्या सुलक्षणी हती, पुत्र विचक्षण ने कमाउ हतो' ते प्रमाणे याद कर्या करवुं ते आर्त्तध्याननो बीजो प्रकार छे ३ रोगचिन्तार्त्तध्यान-वात, पित्त अने श्लेष्मना संनिपातरूप निमित्तथी उत्पन्न थतो शूळ, मस्तकपीडा, ज्वर, अतिसार, संग्रहणी इत्यादि अनेक प्रकारना रोगो थया होय त्यारे 'आ रोगो क्यारे शमी जशे ? कया कया औषधोपचारथी आ व्याधिओ नाश पामशे ? आ रोगो मने क्यांथी थया ?' इत्यादि प्रकारे चिंता कर्या करे ते त्रीजो प्रकार. ४ अग्रशोचार्त्तध्यान-कामादिकथी व्याकुळ बनेला प्राणिओ देवेन्द्र, चक्रवर्ती विगेरेनी ऋद्धि भवान्तरमां प्राप्त करवाना हेतुपुरस्सर नियाणुं बांधे, भविष्यमां पौद्गलिक सुख मळे ते माटे नियाण करे ते चोथो प्रकार आर्त्त ध्यानना चार लक्षण छे-१ कंदणया-मोटो पोकार करे, २ सोयणया-दीन थईने बेसी रहे, ३ तिप्पणया-रुदन कर्या करे अने ४ विलवणया-विलाप कर्या करे, क्लिष्ट भाषण करे, अट्टहास्य करे इत्यादि रौद्रध्यान-महाअशुभ परिणाम तेना पण चार प्रकार छे १-हिंसानुबंधीरौद्रध्यान-प्राणिओना वध, बंधन, परिताप-कष्ट संबंधी अथवा अमुक प्राणीने मारी नाखुं तो मारी कार्यसिद्धि थाय तेम विचार कर्या करवो २ मृषानुबंधी रौद्रध्यान-असत्य बोलीने बीजाने फांसा मां फसावबाना, धारबानु धन हरी लेवाना विचार कर्या करवो ३ अदत्तानुबंधी रौद्र ध्यान-द्रव्यनी या अन्य पदार्थनी चोरी करवानो सतत विचार कर्या करवो लोभ कषायना उदयने कारणे व्यग्र चित्तथी धन-प्राप्तिना विचारो कर्या करवा ४ रक्ष णानुबंधी रौद्रध्यान-प्राप्त थयेल द्रव्यादिक वस्तुओना संरक्षणनो विचार कर्या करवो 'चोर जो मारुं धन चोरी जशे तो मारी नाखीश, बीजा कोई लूंटी जशे तो फरियाद करीश' इत्यादि विचार कर्या करवो आ रौद्रध्यान चार प्रकार आ प्रमाणे छे-" ओसन्नदोसे १ बहुदोसे २ अन्नाणदोसे ३ आमरणंतदोसे ४ । "

१ आसन्नदोष-घणु करीने हिंसा, असत्य, स्तेय विगरेमा रक्त रह्या करे, २ बहुदोष-घणा हिंसादिक कार्यमा वर्तती रहे, ३ अज्ञानदोष-कुशास्त्रना सांभळवाथी, शीखवाथी हिंसादिक अधर्म पण धर्मबुद्धिथी करे दाखला तरीके अश्वमेधादि यज्ञोमा हिंसानु साम्राज्य होवा छता तेने धर्म जाणीने करे ४ आमरणांतदोष-कालकसूरिया कसाईनी माफक जिंदगी पर्यन्त जे हिंसादिक कार्यमा ज लयलीन रहे, मनमां लेशमात्र पण दया न राखे आ बन्ने प्रकारना (आर्त्त अने रौद्र) ध्याननो त्याग करवो, कारण के ते बन्ने अगाध संसार-सागरमा प्राणीने परिभ्रमण कराये छे आ ध्याननो त्याग करी साधुए तो धर्म अने शुक्लध्याननु ज अवलम्बन लेवु आ स्थळमा शंका करता प्रतिवादी कहे छे के-' तमे आर्त्त अने रौद्रने ध्यान शामाटे कहो छो ? तेने ध्यानना भेदमां शा माटे गणाव्या ? अभ्यंतर तपमा तो ध्यान करवानु जणाये छे तो आर्त्त अने रौद्रनो तो त्याग करवानो होवाथी तेनो समावेश अहीं शा माटे कर्यो ?' आनो जवाब आपता शास्त्रकार जणावे छे के-ध्यान एटले चित्तनी एकाग्रता आर्त्त, रौद्र तेमज धर्म, शुक्ल ए चारेमां चित्तनी एकाग्रता थाय छे माटे ध्यान शब्दनी व्याख्यानुसारे तेने गणवा तो जोईए, पण प्रथमना बे अशुभ होवाथी ते त्याज्य छे वळी केटलाक मदबुद्धिवाळा प्राणिओ ध्यानने विषे रहेल तफावत जाणी शकता नथी वळी अन्यमति आवा ध्यानवाळा प्राणिओमा धर्म जाणी तेमनी सेवा करे छे तेमना बोधने माटे पण विवेचन करवु पडयु छे हवे धर्मध्याननु स्वरूप दर्शावता कहे छे के-धर्मध्यानना चार प्रकार छे "आणाविजए १,अवायविजए २,विवागविजए ३,संठाणविजए ४।" १ आज्ञाविचय जिनराजनी आज्ञानुं रहस्य विचारवु, तेना गुणानी प्रशंसा चिंतववी दा त खरेखर जिनेश्वर परमात्माए अनावद्य निवृत्ति घणी ज रुडी रीते दर्शावी, जैनधर्म जेवा उत्कृष्ट कोई धर्म नथी, तेना आगमग्रंथो खरेखर श्रेष्ठ अने सत्य तत्त्वोथी भरपूर छे, इत्यादि अगर तो वीतराग परमात्मानी आज्ञा ते ज धर्म छे एवी भावनापूर्वक तेमनी आज्ञाओनो विचार करवो २ अपायविचय-रागद्वेष, विकथा, प्रमाद, परीषह इत्यादिकथी पतित न थवाय ते माटे चिंतन कर्या करवु अथवा मिथ्यात्वथी आवृत्त थयेला प्राणिओ तेवा उन्मार्गथी कयी रीते दूर रहे तेनो विचार करवो ते ३ विपाकविचय-शुभाशुभ कर्मनु फळ भोगव्या सिवाय छूटतो नथी ते संबंधी विचार करवो ते अने ४ संस्थानविचय-चौद राजलोकनो आकार तेमज द्वीप समुद्रोनु स्वरूप चिंतववु ते धर्मध्यानने ओळखावनारा चार लक्षणो छे, ते आ प्रमाणे-" आणारुई १ निसग्गरुई २ उवेदसरुई ३ सुत्तरुई ४ ॥ " १ आज्ञारुचि-सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य इत्यादि पंचागीमा कहेल तत्त्वनी श्रद्धा, २ निसर्गरुचि-जेने स्वभावथी ज तत्त्वनी श्रद्धा प्रगटी एटले के उपदेश विना ज तत्त्वज्ञान थयु, ३ उपदेशरुचि-

मुनिराज समीप धर्मोपदेश सांभळीने तत्त्वनी श्रद्धा थइ ते अने ४ सुतरुचि-सूत्रो वांचवाथी, तत्त्वनी प्रतीति थइ ते हवे धर्मध्याननां चार आलंबन दर्शावता कहे छे के-" वायणा १, पिच्छणा २, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४ ।" आनुं वर्णन अगाउ आवी गयुं छे जेम महेल पर चढवा माटे आलंबननी जरूर पडे तेम मुक्तिरूपी महेलमां जवा माटे आ चार आलंबना छे हवे धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा एटले विचारणा जणावे छे-" अणिच्चाणुप्पेहा १ असरणाणुप्पेहा २ एकत्ताणुप्पेहा ३ संसाराणुप्पेहा ४ ।" १ अनित्यानुप्रेक्षा-धर्म विना सर्व अनित्य छे, २ अशरणानुप्रेक्षा-संसारमां जैनधर्म सिवाय बीजा कोइनुं शरण साचुं नथी ३ एकत्वानुप्रेक्षा-आ जीव एकलो ज छे, संसारमां पोतानुं बीजुं कोइ नथी ४ संसारानुप्रेक्षा-आ जीव संसारमां अनादिकाळथी परिभ्रमण करे छे अथवा आ संसार चार गतिरूप छे हवे कर्म रहित जीव जे शुक्लध्यान करे छे तेनुं वर्णन करता कहे छे के-ते शुक्लध्यान पण चार प्रकारे छे " पहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्तवियक्के अवियारी २, सुहुमकिरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्नकिरिए अनियट्टी ४ ।" १ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार शुक्लध्यान-चौद पूर्वना श्रुत संबंधी अर्थ, व्यंजन अने योगना परस्पर संक्रमण करवे विचार करवापूर्वक द्रव्य, पर्याय अने गुणोना संचार संबंधी विचार अर्थात् परनो आश्रय लीधा सिवाय निर्मळ अने शुद्ध आत्मस्वरूपनुं सतत चिंतन अथवा जीव अने अजीवना स्वभाव तेमज विभावने पृथक् पृथक् करवापूर्वक द्रव्य अने पर्यायनो भिन्न भिन्न विचार करता पर्यायनो गुणमां अने गुणनो पर्यायमां संक्रमण करवारूप सतत विचार टूंकमां कहीए तो द्रव्यानुयोगमां ज जेमनुं मन प्रमुख रक्त रहे ते २ एकत्ववितर्कअप्रविचार-अर्थथी व्यंजनमां अने व्यंजनमांथी अर्थमां अथवा मन, वचन अने कायाना योगमांथी एक-बीजामां नहीं जवारूप ध्यान अर्थात् पवन न लागता दीपकनी पेठ स्थिर थवारूप ध्यान ३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाती-मन अने वचननो संपूर्ण रोध करी फक्त कायव्यापारनुं जे ध्यान ते वेगथी चालता चक्रने कोइ अटकावे तो जेम किंचित् चलनस्वभाव रहे छे तेम किंचित् कायचाल रहे छे अप्रतिपाती शब्द लगाडवानो हेतु ए छे के-पाछा पडवाना स्वभाव नथी आ ध्यान मोक्षे जवाना अवसरे ज प्राप्त थाय छे ४ समुच्छिन्नक्रियाअनिवृत्ति-कायानी जे सूक्ष्म श्वासोश्वासरूप क्रिया हती ते रुंधीने, मेरु पर्वत निष्कंप रहे छे तेम त्रणे योग रुंधीने शैलेशी अवस्थाने प्राप्त थइने अ, इ, उ, ऋ अने लृ ए पांच ह्रस्व स्वरो बोलता जेटलो समय लागे तेटला काळ पर्यंतनुं ध्यान शुक्लध्यानना चार लक्षणो छे-" विवेगे १, विउस्सग्गे २, अव्वहे ३, असम्मोहे ४ ।" १ विवेक-आत्माने

शरीरथी भिन्न जाणवा अने सर्व संयोगथी विमुक्त मानवो २ व्युत्सर्ग-आत्माने कोईनो संग नथी एम विचारीने देहरूपी उपाधिनो त्याग ३ अव्यथ-देवादिकनो उपसर्ग थाय तो पण चलायमान न थाय अने ४ असंमोह-देवादिकनी माया-प्रपंचथी सूक्ष्म पदार्थना विषयमां शंका लावीने मूढ न थई जाय हवे शुक्लध्यानना चार आलंबन जणावता कहे छे के-" खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४।" १ क्षमा, २ निर्लोभता, ३ सरलता-माया रहित पणु अने ४ मान रहित होय एवी ज रीते चार अनुप्रेक्षा जणावे छे के-" अवायाणुप्पेहा १, असुभाणुप्पेहा २, अणंतवत्तियाणुप्पेहा ३, विपरिणामाणुप्पेहा ४।" १ अपायानुप्रेक्षा-हिंसादिक पापकृत्यथी कर्मबंध थाय, तेथी जीवने कष्ट थाय छे, २ अशुभानुप्रेक्षा-संसार मिथ्या छे, ३ अनंतवृत्तितानुप्रेक्षा-संसारनी परंपरानो पार नथी अर्थात् जीव आ संसाररूपी उदधिमां भमता भव करे छे अने ४ परीणामानुप्रेक्षा-जे विषयादिको छे ते क्षण क्षण पलटा-स्वभाववाळा छे एवो सदा विचार करवो ते ६. कायोत्सर्ग-कर्मक्षयार्थे शरीरनो त्याग अर्थात् देह परथी ममत्वभाव त्याग करवो ते बे प्रकारनो छे-१ द्रव्यव्युत्सर्ग अने २ भाव व्युत्सर्ग द्रव्यव्युत्सर्ग चार प्रकारे कहेल छे "सरीरविउस्सग्गे १, गणविउस्सग्गे २, उवहिविउस्सग्गे ३, भत्तपाणविउस्सग्गे ।" १ शरीरनो अने २ गच्छनो त्याग करवा पहेलां स्थविरकल्पीपणानो त्याग करी जिनकल्पीपणुं ग्रहण करवुं, ३ उपधिनो त्याग करे एटले जिनकल्पीपणु स्वीकारे अने अभिग्रह पण करे अने ४ भात-पाणीनो त्याग करे भावव्युत्सर्ग त्रण प्रकारनो छे " कसायविउस्सग्गे १, संसारविउस्सग्गे २, कम्मविउस्सग्गे ३।" १ चार प्रकारना क्रोधादि कषायोनो त्याग, २ चारे गतिनो त्याग एटले नारक गतिना हेतुरूप मिथ्यात्वादिकनो त्याग करवो, तिर्यंचगतिना हेतुरूप कारणनो त्याग, मनुष्य पणु प्राप्त थाय तथा निमित्तोनो त्याग तमज जेनाथी स्वर्गति प्राप्त थाय तेवा पुण्यकर्मनो पण त्याग ते संसारव्युत्सर्ग जाणवो ३ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र अने अंतराय-ए आठ प्रकारना कर्मो बांधवाना हेतुरूप कारणोनो त्याग भावव्युत्सर्गना आ त्रण भेद पैकी कोई शंका करता पूछे छे के-बीजो संसारव्युत्सर्ग अने त्रीजो कर्मव्युत्सर्ग शा माटे जुदा जुदा दर्शाव्या? संसारना व्युत्सर्ग करवाथी आपोआप कर्मव्युत्सर्ग थई जाय छे अथवा कर्मव्युत्सर्ग थवाथी स्वयमेव संसारव्युत्सर्ग थई जाय छे आ शंकाना समाधान माटे शास्त्रकारमहर्षि जणावे छे के-ते बंने भेदो अलग दर्शावीने कार्य तथा कारणनुं भिन्नपणुं दर्शाव्युं छे

आ प्रमाणे अभ्यंतर तप छ प्रकारनो दर्शाव्यो. लोकोना जाणवामां आ तप आवतो नथी, मिथ्यात्वी—अन्यतीर्थिको आवा प्रकारना तपनुं सेवन करी शकता नथी तेमज मोक्षप्राप्तिना अंतरंग कारणभूत होवाथी तेने अभ्यंतर तप कहेवामां आवे छे.

हवे वीर्याचारना त्रण भेदो कहे छे—"अणिगूहियबलवीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो। जुंजइ य जहाथाम, नायव्वो सो वीरियायारो ॥७॥" पोतानुं बल एटले शरीरनुं सामर्थ्य अने वीर्य एटले मननो उत्साह या तो बाह्य सामर्थ्य अने अभ्यंतर सामर्थ्यने गोपव्या विना तीर्थंकर परमात्माए उपदेशेल छत्रीश प्रकारना आचारमां (ज्ञानाचार ८, दर्शनाचार ८, चारित्राचार ८ अने तपाचार १२=३६) पोतानी शक्ति प्रमाणे प्रवर्ते, उद्यमशील रहे, उपयोगवंत रहे, चेतनने आघा-पाछा न थवा दे ते वीर्याचार जाणवो. आ प्रमाणे छत्रीश प्रकारना आचारमां पोतानुं (१) बल अने (२) वीर्य गोपव्या विना (३) यथाशक्ति प्रवर्तन ए त्रण प्रकारो थया. आ पांच प्रकारना आचारने पोते पाळे अने बीजाने पळावे ते सुआचार्य जाणवा. आ पांच प्रकारना आचारमां जे चारित्राचार कह्या ते शुद्ध पिंडादिकना ग्रहणथी थाय छे, माटे तेनुं स्वरूप दर्शावता कहे छे के—

पिण्डं उवहिं सिज्जं, उग्गमउप्पायणेसणासुद्धम् ।
चारित्तरक्खणट्ठा, सोहिंतो होइ स चरित्ती ॥ २१ ॥

[पिण्डमुपधिं शय्यां, उद्गमोत्पादनैषणाशुद्धम् ।
चारित्ररक्षणार्थं, शोधयन् भवति स चारित्री ॥ २१ ॥]

गाथार्थ—चार प्रकारनो पिंड, उपधि (संयम–चारित्र पाळवामां उपयोगी उपकरणो) अने शय्या (वसति)–आ त्रणे वस्तुने उद्गम, उत्पादन अने एषणावडे शुद्ध, चारित्रनी रक्षा माटे ग्रहण करे ते ज साचो चारित्रवान छे.

विवेचन—१ अशन, २ पान, ३ खादिम अने ४ स्वादिम–ए चार प्रकारनो पिंड छे. उपधिना बे प्रकार छे–(१) औघिक अने (२) औपग्रहिक. औघिक उपधि त्रण प्रकारे छे–१ जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट. १ मुहपत्ति, २ पात्रानी पूंजणी ते पात्रकेसरिका, ३ गुच्छक एटले पात्र ऊपर बांधवानो पात्रबंध अने ४ पात्रने मूकवानो वस्त्रखंड–आ प्रमाणे जघन्य उपधि जाणवी. मध्यम उपधि छ प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे–१ पटल, २ रजस्त्राण–पात्रा राखवानी झोळी, ३ पात्राने बांधवानी झोळी, ४ चोळपट्टो, ५ मात्रक एटले नंदिपात्र अने ६ रजोहरण–

आचा उत्कृष्ट उपधि चार प्रकारे छे-१ पात्रा अने २-४ त्रण वस्त्रो (बे सूतरना अने एक ऊननु) आ प्रकारनी औधिक उपधि स्थविरकल्पी मुनिने होय बीजी औपग्रहिक उपधि पण जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी छे १ पीठ-पाछल राखवानु पाटियु, २ पादप्रोञ्छन, ३ दण्डक-प्रमार्जन, ४ डगल (माटीनु), ५ सोय, ६ नखहरणी (नख कापवानी नरणी) अने ७ कर्ण शोधनी-कानमाथी मेल काढवानी कानखोतरणी-आ सात प्रकारनी जघन्य जाणवी मध्यम नव प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ संथारो, २ संथारा ऊपर पाथरवानो उत्तरपट्ट, ३ दांडा, ४ मात्रु करवानु भाजन, ५ स्थण्डिलनु भाजन, ६ मल-श्लेष्मनु भाजन, ७ योगपट्ट-उपधि ऊपर बांधवानु वस्त्र, ८ संथारापट्ट-शरीरे बांधवानु वस्त्र अने ९ चिलिमिली-मच्छरादिकथी रक्षा करवाना पडदो उत्कृष्ट औपग्रहिक उपधि बे प्रकारनी छे-१ स्थापनाचार्य अने २ पांच प्रकारना पुस्तको आनो लगतु विशेष वर्णन बृहत्कल्प तेमज यतिजीतकल्पनी टीकाद्वारा जाणवुं जे उपधि पासे ज रहे, गृहस्थना मागवी लवी-देवी न कल्पे ते औधिक उपधि अने जरूर पडये गृहस्थ पासेथी मागी ले अने पछी पाछी पण आपे ते औपग्रहिक उपधि जाणवी शय्या-वसति-रहेवानु स्थानक आ १ पिंड, २ उपधि अने ३ शय्या उद्गम, उत्पादन अने एषणाना दोष रहित स्वीकारवा उद्गमना सोळ दोष छे अने ते गृहस्थथी उत्पन्न थाय छे, उत्पादनना पण सोळ दोष छे अने ते साधुथी ज उत्पन्न थाय छे अने एषणाना दश दोष तो साधु अने गृहस्थ बनेथी थाय छे आ दश दोष पैकी बे शंकित अने अपरिणत साधुथी लागे छे अने बाकीना आठ गृहस्थथी लागे छे आ प्रमाणे बेतालीश दोष रहित पिंड, उपधि अने वसति ग्रहण करे ते आचार्य चारित्रवंत जाणवा हवे बेतालीस दोष कया कया ते जणावे छे—

सोळ उद्गम दोष-"आहाकम्मु१द्देसिय २, पूइकम्मे ३ य मीस जाए य ४ । ठवणा ५ पाहुडियाए ६, पाओयर७कीय८पामिच्चे ९ ॥ १ ॥ परियट्टिए १० अभिहड ११-ब्भिन्ने १२ मालोहडे य १३ अच्छिज्जे १४ । अणिसिट्ठ१५ज्झोयरए १६, सोलस पिंडुग्गमे दोसा ॥ २ ॥" १ आधाकर्म-केवळ साधुने माटे ज छकाय जीवनी विराधनावडे अशनादिक आहार तैयार करवानी क्रिया आ प्रमाणेनी पापक्रियाथी तैयार थयेल आहार दोष अने दोषवानना अभेद विवक्षाए दूषित गणाय ए ज प्रमाणे आगळना दरेक दोषोमां पण समजी लेवुं २ औद्देशिक सर्व साधुओने उद्देशीने करवामां आवेल ३ पूतिकर्म-शुद्ध आहारमां अशुद्ध आहारनो संयोग, शुद्ध आहारमां आधाकर्मिक आहारनो एक पण कण मिश्र थाय तो ते पूतिकर्म थई जाय ४ मिश्रजात-शरूआतथी ज गृहस्थ अने साधु बनेने माटे भेगो बनावेल ५ स्थापना-घेटलोक समय

साधुने अर्थे आहारादि राखी मूकवा ६ प्रामृतिका साधुनो लाभ लेवा माटे विवाहादिनो काळ आगळ-पाछळ राखवो ७ प्रादुष्करण-साधुने वहोराववाना स्थानमां वस्तुने प्रगट करवा माटे दीपक करे, बारी-बारणां होय तो उघाडे ८ क्रीत-साधुने वहोराववा निमित्ते द्रव्यादिथी वस्तुओ खरीदवी ९ प्रामित्य-वहोराववा माटे वस्तु उधार लावे १० परिवर्तित-साधुने वहोराववा निमित्ते वस्तुनो अदलो-बदलो करे ११ अभ्याहृत-साधुने वहोराववा निमित्ते ज्यां साधु वसता होय त्यां सामो आहार लई जाय अथवा बीजा गामथी मगावे, एक स्थानथी बीजे स्थाने लई जाय १२ उद्भिन्न-माटी विगरेथी छांदेल घडाने खोलीने आहार आपे १३ मालाहृत-भोंयरामांथी, कोठारमांथी अगर तो माळ उपरथी लावीने आपे १४ आच्छेद्य-पोताना पुत्रादिकनी साधुने वहोराववानी अनिच्छा छतां तेना पासेथी बळजबरीथी ग्रहण करीने आपे १५ अनिसृष्ट कोइपण पदार्थनी मालीकी घणाओनी होय छतां तेओनी अनुमति विना आपे अने १६ अध्यवपूरक-गृहस्थे पोतानी रसोईनी शरूआत कर्या पछी 'साधु आवशे' एम विचारी साधुने निमित्ते विशेष रसोई रांधवी

उत्पादनना सोळ दोष-" धाई१दूई२निमित्ते३, आजीव४वणीमगे५ तिगिच्छा ६ य। कोहे ७ माणे ८ माया ९, लोभे १० य हवन्ति दस एए ॥१॥ पुव्विपच्छासंथव ११, विज्जा १२ मंते य १३ चुण्ण१४जोगे १५ य। उप्पायणाइदोसा, सोलसमे मूलकम्मे १६ य ॥२॥" १ धात्री-धाईपने रमाडीने आहार लेवो २ दूती-एक बीजाना संदेशा परस्पर कहीने आहार लेवो ३ निमित्त-भूतकाळ तथा भविष्यकाळ संबंधी निमित्त कहेवुं ४ आजीविका-दातार पुरुषनी पासे पोतानी जात्यादिकना प्रकाश करवो ५ वनीपक-अन्य भिक्षुकनी माफक लोकने गमती प्रशंसा करे या दातार व्यक्तिने जे साधुपुरुष पूज्य होय तेनो पोते भक्त छे तेम दर्शावे ६ चिकित्सा-कोई पण प्रकारनी व्याधि दूर करीने अशनादि स्वीकारे ७ क्रोध-घेवरीया* साधुनी माफक

* हस्तीकल्प नगरमां एक मुनि मासक्षमणने पारणे गोचरी माटे नीकळ्या फरता फरता एक ब्राह्मणने त्यां मृत्युभोजन हतुं त्यां जइ चड्या मृत्युभोजनमां घेवर करवामां आव्या हता मुनिए त्यां जई 'धर्मलाभ' आप्यो परंतु जैनमुनि प्रत्येना द्वेषथी द्विजे तेमने आहार वहोराव्यो नहीं एटले मुनि क्रोधपूर्वक बोल्या के-" कांई नहीं, बीजी वारना मृत्युभोजन समये वहोरावजे ' आ प्रमाणे रोषपूर्वक कहीने मुनि चाल्या गया थोडा दिवसोने आंतरे ते ज ब्राह्मणने त्यां बीजुं मरण थयुं अने तेना मृत्युभोजन समये दैवयोगे ते ज मुनि आवी चड्या, परंतु ते समये पण ते द्विजे तेमने आहार वहोराव्यो नहीं एटले विशेष क्रुद्ध थई तेमणे कह्युं के-" कांई नहीं, त्रीजा मृत्युभोजन समये वहोरावजे " भाग्यवशात् बन्युं एवुं के ते द्विजने त्यां त्रीजुं मरण पण थयुं अने तेना मृत्युभोजन समये पुनः ते ज मुनि अचानक त्यां

माध करीने आहार ग्रहण करे ८ मान-सेवियाx क्षुल्लक साधुनी माफक मान-

---

आवी चढया ते समये पण ते द्विजे वेगथी आहार वहोराव्यो नहीं एटले रोषपूर्वक मुनि पाछा जता हता एवामां द्वारपाळनी तेमनी पर नजर पडी तेणे बराबर मुनिने ओळखी लीधा तरत ज तेणे पोताना मालीक पासे जई कह्यु के-" आ साधु ते ज मुनि छे, जमना कथन प्रमाणे बराबर मृत्यु थया करे छे माटे तमे तेमने घेवर आपी संतोषो " द्विज द्वारपालनुं वचन मान्युं अने बहुमानपूर्वक मुनिने पात्रा वाळी घेवर वहोराव्या आ प्रकारे क्रोध करीने पिंड ग्रहण करवो ते दूषित छे घेवर वहोराव्याने अंगे ते मुनि घवरीया मुनि तरीके प्रसिद्ध थया

x कोशलदेशना गिरिपुष्पित नगरमां कोइएक उत्सव निमित्ते गृहे-गृहे सेवनुं भोजन थयुं हतुं ते समये ते नगरमां रहेला साधुओए विचार्यु के-" आजे गोचरीमां सेव मळशे, पण कोई साधु पोतानी शक्तिथी घी, साकर विगेरेथी युक्त सेव मेळावीने लावीने आहार करावे तो ते श्रेष्ठ गणाय " आ वात सांभळी एक क्षुल्लक साधुए अभिमानपूर्वक प्रतिज्ञा करी के-" हुं घृत-साकरथी मिश्रित सेवनो आहार लावी हमणां ज तमने भोजन करावुं छुं " बाद ते फरतां फरतां इन्द्रदत्त नामना शेठने घेर गया त्यां तेनी प्रियंगुमती नामनी स्त्रीए कह्युं वहोराव्युं नहीं त्यारे साधुए तेने मानपूर्वक कह्युं के-" तारे घेरथी आहार ग्रहण करवुं ज छूटको " प्रियंगुमतीए क्रोधपूर्वक कह्यु के-" आहार न वहोरावुं तो ज हुं स्त्रीजाति खरी " आ प्रमाणे वात बनी पडतां क्षुल्लक साधुए कह्यु के-" हुं खरो साधु हईश तो तारे त्यांथी ज घी-साकरयुक्त सेवनुं यथेच्छ भोजन ग्रहण करीश " आ प्रमाण कहीने ते साधु घर बहार चाल्यो गयो तपास करतां इन्द्रदत्त सभामां छे तेवा समाचार मळ्या सभामां जईने साधुए पूछयु के-" अहीं कोई इन्द्रदत्त श्रेष्ठी छे? " त्यां हाजर रहेल अन्य व्यक्तिओए कह्यु के-" ते कृपणनुं शुं काम छे? " कृपण शब्द सांभळी बाळमुनि चमक्या पर तुं प्रतिज्ञानुं पालन तो करवुं ज हतुं, एटले पुन कह्युं के -' मारे तेमनुं काम छे परंतु ते आधातजनक छ अधम पुरुष जेवो न होय तो तेनी पासे मांगणी करुं " बीजाओए कह्यु के-" ते तेवा ज छे ' आ प्रमाणे पोतानी प्रतिज्ञा लीलाम थतुं नीहाळी इन्द्रदत्तने चानक चडी एटले एकदम मुनि समीप आवी कह्युं के-" हुं तमे कहो ते करीश, परंतु प्रथम तमे मने छ प्रकारना अधम पुरुषोनी वात करो ' क्षुल्लक मुनिए १ श्वेतांगुली, २ बकोड्डायी ३ तीर्थस्नातक, ४ किंकर, ५ हदाक अने ६ गृध्राखरिंखी-ए छ प्रकारना दृष्टांत कह्या एटले इन्द्रदत्तने पोतानी श्रेष्ठता साबित करवा इच्छा जाग्रत थई अने ते मुनि साथे गृह प्रति चाली नीकळ्यो मार्गमां क्षुल्लक मुनिए तेना स्त्री साथे थयेल सर्व वृत्तांत कही समळाव्यो इन्द्रदत्ते तेनो योग्य रस्तो शोधी काढयो गृह पासे आवी पहोंचतां मुनिने बहार राखी, घरमां दाखल थई पोतानी स्त्रीने कह्यु के- जल्दीथी घी साकर विगेरे मेडा परथी लाव ' स्त्री जेवी नीसरणी मुकी मेडा पर चडी के तरत ज इन्द्रदत्ते नीसरणी लई लीधी आ बाजु मुनिए प्रवेश करी घी-साकर युक्त सेवनो आहार ग्रहण कर्यो एवामां स्त्री जुए छे तो ज मुनिने पोते निषेध कर्यो हतो ते ज मुनिने आहार वहोरावता देखी तेणे इन्द्रदत्तने न वहोराववा आग्रह कर्यो एटले बालमुनिए पोताना नासिका पर आंगळी मूकी चूप रहेवा सूचव्युं अने साथोसाथ गर्भित रीत सूचन पण कर्युं के-में तारुं नाक काप्युं छे आ प्रमाणे मानपूर्वक आहार ग्रहण करवो ते दूषित छे सेव वहोरी लाववाथी ते मुनि त्यारथी 'सेविया मुनि' तरीके प्रसिद्धि पाम्या

अभिमान करीने आहार स्वीकार ९ माया-आषाढाभूतिनी+ माफक कपट करीने आहार ले १० लोभ-§ सिंहकेसरिया मुनिनी माफक सारा आहारनी

+ राजगृहीमां कोई आचार्यना परिवारनी साथे आषाढाभूति मुनि पण विहार करता करता आवी चढ्या एकदा गोचरीअर्थे आषाढाभूति विश्वकर्मा नामना नटना घरमां दाखल थया अने 'धर्मलाभ' कह्यो ऊभा रह्या गोचरीमां मोदक मळ्या ते लई बहार गया पछी तेमने विचार थयो के-'आ मोदक तो आचार्य ग्रहण करशे' एटले बीजा मोदकनी इच्छाथी रूप परिवर्तन करी, एक आंखे काणो थाय तेवो वेष धारण करी पुनः आव्या अने बीजो मोदक ग्रहण कर्यो बहार निकळी विचार्युं के-'आ तो उपाध्याय ग्रहण करशे' एटले त्रीजा मोदकनी इच्छाथी कुबडानुं रूप धारण करी आव्या अने त्रीजो मोदक वहोर्यो वळी 'आ तो संघाटक ग्रहण करशे' एम विचारी रूप परिवर्तन करी चोथी वार आव्या अने मोदक वहोर्यो आ बधुं दृश्य गोखमां बेठेला विश्वकर्मा नटे नीहाळ्युं तेने विचार आव्यो के-आवो माणस जो नट थाय तो मने सारी द्रव्यप्राप्ति थाय, एटले तेमने फसाववानी इच्छाथी ते एकदम नीचे आव्यो, पुनः आग्रह करीने बधा मोदक वहोरावी दीधा अने वारंवार पोताना घरे लाभ देवानो आग्रह कर्यो मुनिराजना जवा बाद नटे तेमनी कुशळताना वखाण करी पोतानी पत्नी तथा बे पुत्रीओने कह्युं के-" कोईपण उपाये तमे तेने वश करजो " वारंवारना आषाढाभूतिना आवागमनथी अने पुत्रीओना आ हावभावथी मोहवश आषाढाभूति साधु-मार्ग चूक्या अने नट-पुत्रीओ साथे संसार-व्यवहार शरू कर्यो तेमनी कुशळताथी विश्वकर्माने सारा द्रव्यनी प्राप्ति पण थई राजा पासे पण आषाढाभूतिनुं मान अत्यंत वध्युं गयुं विश्वकर्माए पोतानी पुत्रीओने चेतवणी आपी हती के-"तमे कदि मदिरापान करशो नहीं, नहीं तो आषाढाभूति तमारो त्याग करशे " एकदा बन्युं एवुं के-आषाढाभूतिने राजसभामां नाटक करवानुं आमंत्रण मळ्युं ते प्रसंगनो लाभ लई बने नट पुत्रीओए यथेच्छ सुरापान कर्युं तेना घेनमां वस्त्रविहीन बनीने माळ उपर जईने सूई गई आ बाजु राजसभामां परराष्ट्रना दूत आववाथी विघ्न पड्युं अने नाटक-समारंभ मुलतवी रह्यो आषाढाभूति घेर आवता पोतानी पत्नीनी स्थिति जोई आश्चर्यना गरकाव थई गया तेणे पोतानी मुनि अवस्था याद आवी, पोतानी भूल समजाई अने पाछे चाली नीकळ्या विश्वकर्माने आ हकीकतनी खबर पडता ज तेणे पोतानी पुत्रीओने ठपको आपतां कह्युं के-" जाव, हवे आषाढाभूति पासे जीवननिर्वाह माटे कंईक याचना करो " आषाढाभूति पासे कांई हतुं ज नहीं परंतु पत्नीओनी मागणी स्वीकार्या सिवाय छूटको न हतो छेल्ले एक नाटक भजवी तेनी रकम स्त्रीओने आपवानो विचार करी तेमणे भरत चक्रवर्तीनुं नाटक भजववा निर्णय कर्यो राजा पासे पांचसो राजपुत्रोनी मागणी करी नाटकनी शरूआत सुंदर करी अने प्रेक्षको हेरत पामी गया छेवटे भरत महाराजाना आरिसाभुवनमां आवतां आंगळीमांथी मुद्रिका नीकळी पडतां जे भावना भावी हती तेवी ज भावना भावतां आषाढाभूतिने तत्क्षणे केवळज्ञान उत्पन्न थयुं पांचसो राजपुत्रोने पण केवळज्ञान उपज्युं देवोए आषाढाभूतिनो केवळज्ञान-महोत्सव कर्यो आवी रीते मायाथी आहार ग्रहण करवो ते पण दूषित छे

§ चंपानगरीमां आवेला कोई एक मुनिए एकदा गोचरीअर्थे मनमां अभिग्रह कर्यो के

इच्छाथी गृहस्थ श्रीमंत लोकोना घरे गोचरीए जाय ११ पूर्वपश्चात्संस्तव-आहार ग्रहण कर्या पूर्वे अने आहार ग्रहण कर्या पछी पण दातार पुरुषनी प्रशंसा करे के-"तमने धन्य छे तमे साधुओनी रूडी भक्ति करनारा छो इत्यादि' १२ विज्जा-विद्या शीखवा माटे साधना बतावे १३ मंत्र-देवाधिष्ठित मंत्र शीखवे १४ चूर्ण-नेत्रांजनादिक चूर्ण दई आहार स्वीकारे १५ योग-अभ्युदय करनार, सुख अर्पनार तथा द्रव्यसमूह प्राप्त करवा माटेनो योग दर्शावे अने १६ मूलकर्म-दश प्रकारना प्रायश्चित्त पैकी आठमुं मूल नामनुं प्रायश्चित्त जेथी प्राप्त थाय ते गर्भपात कराववा माटे औषध करे अथवा वनस्पतिनुं छेदन करी जोवाने आपे अने 'आ मूळियाना जळथी स्नान करवाथी संतानप्राप्ति थाय' तेवा उपदेश आपे तेने आ प्रायश्चित्त प्राप्त थाय छे

एषणाना दश दोष-"संकिय१मक्खिय२निक्खित्त३-पिहिय४साहरिय५दायगु६म्मीसे७। अपरिणय८लित्त९छड्डिय१०, एसणदोसा दस हवंति ॥१॥" १ शंकित-आधाकर्मादिक दोषनी शंकावाळा अशनादि स्वीकारे २ म्रक्षित-सचित्तादिथी खरडित (चोपडेल) ३ निक्षिप्त-सचित्त पदार्थ पर स्थापन करेल ४ पिहित-सचित्तादिकथी ढांकेल ५ संहृत-सचित्तवस्तुवाळा भाजनमांथी ते सचित्त पदार्थो बीजा भाजनमां काढी नाखी प्रथमना भाजनद्वारा आहार वहोरावे ते ६ दायक-शास्त्रमां दान आपवा माटे निषिद्ध करायेल बाळक, गर्भवती स्त्री, सचित्त पदार्थवाळी, खांडती, दळती, कांतती वगेरे स्त्री उठी दान आपे ते अथवा तो आंधळो कंपती स्त्री उठी दान आपे ते ७ उन्मिश्र-सचित्त वस्तुओ युक्त ८ अपरिणत-अचित्त नहीं बनेल भावथी तो खुलसादि होय

'जो आजे सिंहकेसरिया मोदक मळे तो ज पारणुं करवुं' आ प्रमाणे निर्णय करी एक गृहथी बीजे गृहे परिभ्रमण करवा लाग्या परन्तु वांछित भिक्षा मळी नहीं सिंहकेसरीया मोदक मेळववाना एक मात्र तल्लीनताने कारणे केटलो समय पसार थई गयो छे तेनुं पण तेमने भान न रह्युं संध्यासमय थई जवा आव्यो छतां तेमने मनोवांछित मोदक प्राप्त न थई कोईएक शुद्ध श्रावके तेमनी आवी स्थिति नीहाळी मनमां निर्णय कर्यो के-मुनिए मोदकनो अभिग्रह कर्यो जणाय छे अने ते प्राप्त न थवाथी समयनुं पण भान वगर तेओ एक घरथी बीजे घेर भमी रह्या छे श्रावके तरत ज सिंहकेसरीया मोदक तैयार करावी मुनिने पोताने गृहे आमंत्रण आप्युं मुनि पण छेवटे मोदक मळवाथी हर्षित थया विचक्षण श्रावके तेमने समयनुं भान कराववा माटे कह्युं के "मुनिराज, पुरिमड्ढना पच्चक्खाणने केटलो समय छे?' आ शब्द सांभळतां ज मुनिए आकाश प्रत्ये दृष्टि करी तो चंद्र अने तारा गगनपटमां प्रकाशित थई गया हता रात्रि पडी गई हती हवे ज तेमने पोतानी विह्वळ स्थितिनुं साचुं भान थयुं गोचरीसमय वीती जतां मोदक परठववो ज रह्यो तरत ज ते मोदक लईं परठववा गया अने परठवतां परठवतां आत्मनिंदा करतां केवळज्ञान प्राप्त कर्युं आ प्रमाणे लोभथी पण भिक्षा ग्रहण करवी ते पण दूषित छे

अगर तो दातार पोताना भाव विना आपे ते पण अपरिणत जाणवु ९ लिप्त लेपद्रव्यथी खरडायेल भाजन अगर हस्तद्वारा अपाय ते अने १० छर्दित-आहार वहोरावती वखते दातारना हाथमाथी छांटो भूमि ऊपर पड्या छता स्वीकारे तो आ दोष लागे

हय प्रसगथी ग्रासैषणाना पण पाच दोषो दर्शावे छे–"संजोयणा १ पमाणे २, इगाले ३ धूम ४ कारणे ५ पढमा। वसहिबहिरंतरे वा, रसहेउ दव्वसजोगा ॥ १ ॥" १ सयोजना-रसनी लोलुपताथी कोइ द्रव्यमा रस वधारवा माटे बीजु द्रव्य नाखे दा त दूधना रस वधारवा तमा साकर नाखे २ प्रमाण-बत्रीश कवलथी विशेष खाय ३ इंगाल-रागपूर्वक आहार करे ४ धूम्र-आहार द्वेषपूर्वक खाय अने ५ कारणिक-कारण विना पदले क्षुधावेदनादि छ कारण सिवाय भोजन करे प्रथम भेद सयोजना बे प्रकारनो छे १ अतरसयोजना अने २ बहिर्सयोजना उपाश्रय आवीने सयोजना करे ते अतरसयोजना अने वसति बहार दूध मळ्या पछी साकरनी इच्छाथी परिभ्रमण कर्या करे ते बहिर्सयोजना आ प्रमाण सुडतालीश दोषोनु विशेष विवरण पिंडनिर्युक्तिनी टीका विगरेद्वारा जाणवु जेवी रीते आ दोषो पिंडने आश्रयीने जणाव्या तेवी ज रीते उपधि तमज वसतिनी अपवाद पण जाणी लेवा

हवे आ सुडतालीश दोष पैकी क्या क्या दोष मोटा अने लघु छे ते दर्शावे छे–मूळकर्म मोटो महादोष छे, तेनु प्रायश्चित्त १८० उपवासद्वारा थाय अन्य प्रथमा नवी दीक्षा पण जणावल छे तेनाथी ओछा दोषवाळा-आधाकर्म औदेशिकना भेदो पैकी छेल्ला त्रण, मिश्रना छेल्ला बे भेद-पाखडमिश्र अने यतिमिश्र, बादरप्राभृतिका, सप्रत्यवअपायअभ्याहृत, लोभ पिंड, अनतकायमा निक्षिप्त, पिहित, सहृतमिश्र, अपरिणत, छर्दित, सयोजना, अगार, वर्तमान तथा भविष्यकाळ सबधी निमित्त, आनु प्रायश्चित्त मूळ प्रायश्चित्तथी उपवास पर्यंत जाणवु तेनाथी ओछा दोषवाळा-कर्मौदेशिकना पहेला भेद, मिश्रना प्रथम भेद, धात्री, दूती, भूतकाळनु निमित्त, आजीविका, वनीपक, बादर चिकित्साकरण, क्रोध तथा मानना पिंड, सबधी सस्तव, विद्या, चूर्ण, बे प्रकारनु प्रकटीकरण, द्रव्यक्रीत, आत्मक्रीत, लौकिक प्रामित्य, परावर्तित, बीजा गामथी लावेल ते प्रत्यपाय, पिहितउद्भिन्न कपाटउद्भिन्न, उत्कृष्ट मालापहृत, सब प्रकारनु आच्छेद्य, सब प्रकारनु अनिसृष्ट, पुरःकर्म, पश्चात्कर्म, खरड सबधी गर्हित, समस्तम्रक्षित प्रत्येक वनस्पतिमा निक्षिप्त, पिहित, सहृतमिश्र, अपरिणत, छर्दित, प्रमाण रहित भोजन, सधूम, कारण विना भोजन करे—आनु प्रायश्चित्त उपवासथी आयंबिल पर्यन्त जाणवु तेनाथी ओछा दोषवाळा-अध्यवपूरकना छेल्ला बे भेद, कृतकना चारे भेदो, भक्तपानपूतिक, मायापिंड, अनतकायव्यव

हित, निमित्त, पिहित विगेरे—आनु आयंबिलथी पच्चक्खाण पर्यन्त प्रायश्चित्त जाणवु तेनाथी ओछा दोषवाळा—औद्देशिक उद्दिष्टना चार भेद, उपकरणपूतिकर्म, घणा काळना स्थापनानुं प्रकटकरण, लोकोत्तर परावर्तित, अप्रामित्य, परभावक्रीत, पोताना गामथी मांथे लावेल आहार, दर्दराद्भिन्न, जघन्यमालापहृत, प्रथम अध्यवपूरक, सूक्ष्मचिकित्सा गुणसंस्तवकरण, मिश्रकर्दम, लवण तथा खडीथी म्रक्षित अल्प दायक दोष, प्रत्येक वनस्पतिमां परंपर रहेल, मिश्रमां अंतर रहेल—आनु प्रायश्चित्त पच्चक्खाणथी पुरिमड्ढ पर्यन्त जाणवु तेनाथी ओछा दोष वाळा—चार प्रकारनी स्थापना सूक्ष्मप्राभृतिका स्निग्ध सहजम्रक्षित, प्रत्येक मिश्रमां परंपर रहेल—आनु प्रायश्चित्त पुरिमड्ढथी विगयना त्याग पर्यन्त जाणवु हजु पण आचार्यना गुणो दर्शावता कहे छे के—

> अप्परिस्सावी सम्मं, समपासी चेव होइ कज्जेसु ।
> सो रक्खइ चक्खुं पि व, सबालवुड्ढाउलं गच्छं ॥ २२ ॥

> [अपरिश्रावी सम्यक्, समदर्शी चैव भवति कार्येषु ।
> स रक्षति चक्षुरिव, सबालवृद्धाकुलं गच्छम् ॥२२॥]

गाथार्थ—अन्यनी गुप्त वातने प्रकाशित न करनार तेमज आगम व्याख्यानादिक सर्व कार्योमां समदृष्टि राखनार आचार्यमहाराज, जेम चक्षु खाडादिकमां पडता जीवोने बचावी शके छे तेम बाळ तथा वृद्ध साधुओथी युक्त गच्छने दुर्गतिरूपी खाडामां पडता राखी शके छे

विवेचन—जेवी रीते पोतानु गुह्य काढ़ी न कहे नहीं तेम बीजाए कहेल रहस्य प्रकाशित न करे जेवी रीते जलना द्रहनी चतुर्भंगी श्रीआचारांग सूत्रमां कही छे तेना त्रीजा भंग तुल्य आचार्यभगवंत जाणवा ते चतुर्भंगी आ प्रमाणे समजवी—१ शीता-शीतोदाना द्रह जेमां पाणी आवे छे अने पाणी बहार वहे पण छे, जेथी नदी नीकळे छे २ पद्मद्रह जेमां नवीन पाणी आवतु नथी पण बहार नीकळे छे ३ लवणसमुद्र के जेमां पाणी आवे छे परन्तु बहार नीकळतु नथी अने ४ मनुष्य लोकनी बहार रहेल समुद्रो के जेमां बहारथी पाणी आवतु पण नथी अने तेमां रहेल पाणी बहार जतु पण नथी आ चतुर्भंगी आचार्य आश्रयीने आ रीते घटावी शकाय—१ सूत्र आश्रयीने प्रथम भंग सरखा कारण के पोते श्रुत भणे अने बीजाने पण भणावे २ कषायनी अपेक्षाए बीजा भंग तुल्य कारण के कषायनो उदय न होय त्यारे कर्मग्रहणनो अभाव होय छे अने कायोत्सर्गादिक तपश्चर्याथी कर्मनो क्षय करे छे ३ आलोचनानी अपेक्षाए त्रीजा भांगा सरखा कारण के पोते आलोचना जाणे छे परन्तु बीजाने जणावता

नथी तेमज ४ कुमार्गने आश्रयीने चाला भंग करवा रूप के तेमने कुमार्गमां जवाना अने निष्फळपानो अभाव ज छे केवळ सूत्रने आश्रयीने पण चार भांगा घटावी शकाय १ स्थविरकल्पी २ तीर्थंकरभगवंतो ३ यथालंदिक (जेओने काइ वातनो निर्णय न थयो होय तो आचार्यादिकने पूछीने निर्णय करे ते) अने ४ प्रत्येकबुद्ध-तेमने कोइने कांइ कहेवु पण नथी (उपदेश आपवो नथी) अने काइने कांई पूछवापणु पण नथी वळी सारा आचार्य सर्व कार्योने विषे यथास्थित देखनारा होय व्याख्यान, साधुओनी बारीक तपास इत्यादिक शास्त्रोक्त कार्योमां पोते प्रवर्ते अने अन्यने प्रवर्तावे जेम नेत्र विना पोतानु तेमज परनु रक्षण न थइ शके तेम बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी इत्यादिक साधुओथी व्याप्त गच्छनु रक्षण करवामां सुआचार्य नेत्र सरखा छे. आ प्रमाणे सारा आचार्यनु स्वरूप दर्शावी हवे अधम आचार्यनु स्वरूप वर्णवे छे, कारण के पीतळनी धातु ज जो न होत तो सुवर्णनी किंमत कइ रीते आंकी शकाय?

सीयावेइ विहारं, सुहसीलगुणेहिं जो अबुद्धीओ ।
सो नवरि लिंगधारी, संजमजोएण णिस्सारो ॥२३॥

[सीदयति विहारं, सुखशीलगुणैर्योऽबुद्धिकः ।
स नवरि लिङ्गधारी, संयमयोगेन निस्सारः ॥ २३ ॥]

गाथार्थ-सुखशीलपणु तथा शिथिलपणु आदि गुणोवडे जे नवकल्पी तेमज गीतार्थरूप विहारने शिथिल करे छे ते आचार्य संयमयोगवडे निःसार अने केवळ द्रव्य लिंगधारी छे

विवेचन—तत्त्वज्ञान रहित अने आचारनो अनभिज्ञ आचार्य मार्गाचारथी भ्रष्ट थाय छे अने पासत्थादिकना सुखशीलपणाथी नवकल्पी तेमज गीतार्थ प्रमुखमां विहार करता नथी श्रीबृहत्कल्पसूत्रमां विहारनु वर्णन जणावतां कह्युं छे के-" से गामंसि वा जाव पुडभेयणंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथाण हेमन्तगिम्हासु एगं मासं वत्थए ॥" जे गाम, नगर यावत् शब्दथी पुर, पाटण इत्यादिक किल्लायुक्त होय अने किल्लानी बहार वसति न होय तेवा गाम-नगरादिकमां शियाळामां (मागशर, पोष, माह अने फागण) तेमज उनाळामां (चैत्र, वैशाख, जेठ अने असाड) एक एक मास पर्यंत ज स्थिरवास करवो कल्पे, वधी विशेष समय रहेवु कल्पे नहीं "से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथाण हेमंतगिम्हासु

दोमासे वत्थए, अतो एक्क मास बाहिं एक्क मास, अतोवसमाणाण अतोभिक्खायरिया बाहिंवसमाणाण बाहिंभिक्खायरिया।" जे गाम, नगर यावत् राजधानी प्रमुखने फरतो किल्लो होय अने ते किल्लानी बहार पण वसति होय तो ते गाम-नगरादिकमां शियाळा तेमज उनाळामां साधुओने बे मास पर्यन्त रहेवु कल्पे एक मास किल्लानी अंदर अने एक मास किल्लानी बहार रहे वळी जे मासमां किल्लामां रह्या होय ते मासमां किल्ला अंदरनी वसतिमां गोचरी करे, बहार न जाय, अने बहार रह्या होय त्यारे त्यां ज गोचरी करे, किल्लानी अंदर गोचरी लेवा न जाय परन्तु एक मासमां किल्लानी अंदर तेमज बहार बन्ने स्थळे गोचरी करी होय तो ते गाम-नगरादिकमां एक मास ज रहेवु कल्पे विशेष नहीं साध्वी संबंधी पण शियाळा तेमज उनाळामां आ प्रमाण जाणवु विशेष ए के-जेनी बहार वसति न होय तेवा कोटवाळा नगरमां बे मास अने बहार पण वसति होय तो बे-बे मास मळीने चार मास रहेवु कल्पे अने गोचरी पण बे मास कोटमां अने बे मास कोट बहारनी वसतिमां करे "कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पुरत्थिमे णं जाव अंगमगहाओ एत्तए १, दक्खिणे णं कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव कोसंबीओ एत्तए २, पच्चत्थिमे णं जाव थूणाविसयाओ एत्तए ३, उत्तरे णं जाव कुणालाविसयाओ एत्तए ४, एत्तावता व कप्पइ एत्तावता व आयरियखेत्ते णो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं जत्थ णाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति।" साधु या साध्वीने पूर्व दिशामां अंग तथा मगधदेश सुधी विचरवु कल्पे, दक्षिण दिशामां कौशांबी नगरी सुधी, पश्चिम दिशामां थूणानी सीम सुधी अने उत्तर दिशामां कुणालानी सीम पर्यंत विहार करवो कल्पे आटलु ज आर्यक्षेत्र होवाथी तेमां विचरवु परन्तु तेथी विशेष क्षेत्रमां नहीं कारण के ते अनार्यक्षेत्र छे अपवादमार्गथी तो जणाव्यु छे के-ज्यां ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी वृद्धि थती होय तो आर्यक्षेत्र उपरांत पण विहार करवो आ प्रमाणे बृहत्कल्पसूत्रमां पहेला उद्देशामां जणावेल छे आ बाबतमां शंका करतां कोई कहेशे के-आ मासकल्पी विहार तो चोथा आरामां हतो हमणां तो नथी तेने जवाब आपतां श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजा पोताना पंचवस्तुक ग्रंथनी टीकामां 'निरंतरनी क्रिया' नामना द्वारमां पडिलेहण तथा प्रमार्जनाना अधिकारमां जणावे छे के-" अवलंबिऊण कज्जं, जं किंचि समायरन्ति गीअत्था। थोवावराहबहुगुण, सव्वेसिं तं पमाणं तु ॥ १ ॥" आगमना ज्ञाता गीतार्थ आचार्य कोई महाकारण अंगे अल्प दोष अने बहु गुणनो संभव जाणीने जे आचरण करे ते सर्व जिनमतानुयायीओए प्रमाणभूत मानवु जोईए कहेवानो आशय ए छे के-कोई एक गच्छमां विद्वान् साधु भणवामां उद्यमवाळा

छे. हवे जो ते मासकल्पी विहार करे तो तेना अध्ययनमां अंतराय पडे तेथी गीतार्थ आचार्य तेने मास उपरांत रहेवानी अनुज्ञा आपे. आ आचरणमां दोष अल्प छे अने गुण विशेष छे एटले तेने प्रमाणभूत मानवुं कारण के श्रीजिनेश्वर भगवंतनो मार्ग तो उत्सर्ग तेमज अपवादरूप छे पण तेनो अर्थ एवो नथी के मासकल्पी विहार न करवो. अपवाद तो कारणरूप छे, अने तेने जो ते गीतार्थ वारंवार अंगीकार कर्या करे तो ते जोईने अन्य गीतार्थो पण तेनुं अनुकरण करे अने उत्सर्गमार्गनुं उत्थापन थाय. आ उपरथी साबित थाय छे के-श्रीहरिभद्रसूरिजीना समयमां (स्वर्गवास वी. सं. १०८५) पण मासकल्पी विहार हतो.

हवे गीतार्थनिश्राए विहार करवा संबंधी वर्णन करता कहे छे के—
" गीअत्थो य विहारो, बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ। इत्तो तइयविहारो, नाणुन्नाओ जिणवरेहिं ॥ १ ॥" १ गीतार्थ जेणे सूत्रनो अर्थ रूडी रीते जाण्या छे ते जिनकल्पी मुनिना पोतानी इच्छामां आवे ते प्रमाणे विहार, २ गीतार्थ निश्रित एटले आचार्य उपाध्याय आदिनी आज्ञामां रहीने, गच्छमां वसीने करवामां विहार. आ बने प्रकारना विहार उपरांतना त्रीजो एटले स्वच्छंदाचारी, अगीतार्थ, पासत्थादिकनी जेम विचरे ते विहारना श्रीजिनेश्वरभगवंतोए निषेध करेल छे. निर्युक्तिनी गाथाद्वारा गीतार्थ विगेरेनुं स्वरूप वर्णवता कहे छे—" गीअं मुणितेगट्ठं, विदियत्थं खलु वयंति गीयत्थं। गीएण य अत्थेण य, गीयत्थो वा सुयं गीयं ॥ १ ॥" गीत अने मुणित शब्दनो अर्थ एकज छे एटले जे छेदसूत्रादिनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणे ते गीतार्थ कहेवाय, अथवा गीत अने अर्थथी जे युक्त होय ते गीतार्थ. गीत एटले शुं? श्रुत-सूत्र " गीएण होइ गीई, अत्थी अत्थेण नायव्वो। गीएण य अत्थेण य, गीयत्थं तं वियाणाहि ॥ १ ॥" आना रहस्यार्थ संबंधमां चतुर्भंगी जणावे छे-१ सूत्रने जाणे छे पण अर्थने जाणता नथी, २ अर्थने जाणे छे पण सूत्रने जाणतो नथी, ३ सूत्रने जाणे छे तेमज अर्थने पण जाणे छे अने ४ सूत्र तेमज अर्थ बन्नेने जाणता नथी. आ चार भागामां चोथो भांगो तो शून्य छे. वस्तुस्वरूप नथी. जे त्रीजा भागाने धारण करे छे ते ज गीतार्थ छे. एकलुं जे सूत्र मात्र छे ते गीती कहेवाय, जे एकला अर्थ जाणे ते अर्थिक कहेवाय अने जे सूत्र तेमज अर्थ बन्ने जाणे ते गीतार्थ कहेवाय. गीतार्थ अने गीतार्थनिश्रित विहार संबंधी कहे छे के-" जिणकप्पिओ गीयत्थो, परिहारविसुद्धिओ वि गीयत्थो। गीयत्थे इड्ढि दुगं, सेसा गीयत्थनीसाए ॥ १ ॥" जिनकल्पी, परिहारविशुद्धि चारित्रवाळा, 'अपि' शब्दना ग्रहणथी पडिमाधारी तथा यथालंदकल्पी कारण के तेओ जघन्यथी नव पूर्वनी आचार नामनी त्रीजी वस्तु पर्यंतना ज्ञाता होय छे, अने गच्छमां ऋद्धिमंत एटले आचार्य तथा उपाध्याय-आटलाने गीतार्थ विहार होय

छे, बाकीना साधुओने गीतार्थनिश्रित विहार होय छे " आयरियगणी इड्ढी, सेसा गीता वि होन्ति तन्नीसा । गच्छगयनिग्गया वा, ठाणनिउत्ताऽनिउत्ता वा ॥ १ ॥ " आचार्य अने उपाध्याय गच्छमां ऋद्धिमत-श्रेष्ठ छे अने बाकीना साधुओ गीतार्थ होय तो पण समस्त आचार्य-उपाध्यायनी आज्ञामां ज विचरवु बाकीना साधुओ कोण ते संबंधी गाथाना त्रीजा तथा चोथा पादमां जणावे छे के-गच्छमां रहेल, कोई कारणे गच्छमांथी बहार निकळी एकला विचरनारा, कोई कारणे प्रवर्तक, स्थविर, गणावच्छेदक इत्यादि पदवीधर साधुओने आचार्य उपाध्याये स्थानकमां राख्या होय ते तेमज पदवी विनाना साधुओ-आ सर्वे आचार्य-उपाध्यायनी आज्ञामां ज विचरे तेओ केवी रीते विचरे ? ते संबंधमां जणावे छे के-" आयारपकप्पधरा, चोद्दसपुव्वी अ जे य त मज्झा । तन्नीसाइ विहारो, सबालवुड्ढस्स गच्छस्स ॥ १ ॥ " १ आचारप्रकल्पधर-निशीथ अध्ययनना जाणकार ते जघन्यगीतार्थ, २ चौदपूर्वी-चौद पूर्वना ज्ञाता ते उत्कृष्टगीतार्थ अने ३ आ जघन्य तथा उत्कृष्टगीतार्थनी मध्यना ते मध्यम गीतार्थ तेओ व्यवहारसूत्र, दशाश्रुतस्कंधना ज्ञाता होय छे-आ त्रण प्रकारना गीतार्थोनी निश्रामां बाल तथा वृद्ध साधुवाळा गच्छे विहार करवो कल्पे आ त्रण प्रकारना गीतार्थोने पण स्वच्छंदपणे विहार करवो योग्य नथी आचार्यनी निश्राए ज विहार शामाटे करवो ? ते शंकाना समाधानमां जणावे छे के-" एगविहारी अज्जाय-कप्पिओ जो भवे चवणकप्पे । उवसपन्नो मंदो, होहिइ थोसहुतिट्ठाणो ॥ १ ॥ " एकलविहारी अगीतार्थ जाणवो तेमज तेने चारित्र थी भ्रष्ट थवाने अग ज्ञान दर्शन तथा चारित्र ए रत्नत्रयीने त्यजी देवाना भाव थाय छे अने पासत्थादिकपणे विचरवाथी बुद्धिदोष पण थाय छे आ गाथा निर्युक्तिनी छे तेथी तेना पर विवरण करता कहे छे के-" मुत्तूण गच्छनिग्गय, जीयस्स वि एक्कगस्स मासो उ । अविगीए चउगुरुगा, चवणे लहुगा य भगहा ॥ १ ॥ " गच्छथी निकळेला जिनकल्पी साधु सिवायना गीतार्थ जो एकला विचरे तो एक मास लघुदंड, अगीतार्थ एकला विचरे तो चारमासी गुरुदंड अने जे मनमां पासत्थादिकपणे विचरवानी इच्छा मात्र करे तेने चारमासी लघुदंड आवे, अर्थात् आ गाथामां गच्छनी निश्रा सिवाय विचरवानो सदंतर निषेध कर्यो छे आ संबंधमां बृहत्कल्पवृत्तिनी पीठिकानी गाथा ' गीअत्थो अ विहारो० ' अने तेनो अर्थ ऊपर (पृ १४७) जणावी गया छीए वळी ओघनिर्युक्तिमां पण तेनो ते ज गाथा जणावी विशेष जणाव्यु छे के-" संजमआयविराहण, नाणे तह दसणे चरित्ते य । आणालोवु जिणाण, कुव्वइ दीह च संसारम् ॥ २ ॥ "

एकला विचरवाथी प्रथम तेमज आत्मानी विराधना थाय, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्नत्रयीनुं खंडन थाय, तीर्थंकरभगवंतनी आज्ञानो लोप थाय तेमज दीर्घ काळ पर्यन्त संसारपरिभ्रमण वधे आ सर्व कई रीत थाय ? " मज्झओ छक्काया, आया कंठट्ठिजीरगेलन्ने । नाणे नाणायार, दंसणचरणाइवुग्गाहे ॥ ३ ॥" एकलविहारीने उपयोग सरखो न रहे तेथी छकायनो आरंभ जाणवाथी संयम विराधना, इन्द्रियो चळवळाट वधवाथी काई स्थळे मार खाय, लालची वधारे पडतो आहार करवाथी अजीर्ण थाय, व्याधिग्रस्त थाय तो कोण उपचार करे ? वळी अनर्थ करतो होय तो कोण अटकावे ? आ प्रकारे आत्मविराधना थाय, वळी आठ प्रकारनो ज्ञानाचार रूडी रीते न पाळे, चरक, परिव्राजकादि मिथ्यात्वीओ भ्रमित थनायान समकितथी भ्रष्ट करे तेथी दर्शनाचार पण शुद्ध न रहे अने चारित्र तो शुद्ध पळे ज नहीं, माटे कदापि एकला न विचरवुं सुखशीलिया साधु थयो होय ? तेना लक्षण संबंधी उपदेशमालामां जोवा ग्रन्थमां विस्तारथी वर्णुं छे के—

" बायालमेसणाओ, न रक्खई धाइसिज्जपिंड च । आहारेइ अभिक्खं, विगईओ सन्निहिं खाइ ॥ १ ॥ सूरप्पमाणभोई, आहारेई अभिक्खमाहारम् । न य मंडलीइ भुंजइ, न य भिक्खं हिंडई अलसो ॥ २ ॥ कीवो न कुणइ लोयं, लज्जइ पडिमाइ जल्लमवणेइ । सोवाहणो य हिंडइ, बंधइ कडिपट्टयमकज्जे ॥ ३ ॥ गाम देस च कुलं, ममायए पीठफलगपडिबद्धो । घरसरणेसु पसज्जइ, विहरइ सकिंचणो रिक्को ॥ ४ ॥ नहदंतकेसरोमे, जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ । वाहेइ अ पलियंकं, अइरेगपमाणमच्छुरइ ॥ ५ ॥ सोवइ य सव्वराइं, नीसट्ठमचेयणो न वा सरइ । न पमज्जंतो पविसइ, निसीहिआवस्सियं न करे ॥ ६ ॥ पाय पहे न पमज्जइ, जुगमायाए न सोहए इरियं । पुढविदगअगणिमारुय–वणस्सइतसेसु निरविक्खो ॥ ७ ॥ सव्व थोव उवहिं, न पेहए न य करेइ सज्झाय । सद्दकरो झंझकरो, लहुओ गणभेयतत्तिल्लो ॥ ८ ॥ खित्ताईय भुंजइ, कालाईयं तहेव अविदिन्नम् । गिण्हइ अणुइयसूरे, असणाई अहव उवगरणं ॥ ९ ॥ ठवणकुले न ठवेई, पासत्थेहिं च संगयं कुणइ । निच्चमवज्झाणरओ, न य पेहपमज्जणासीलो ॥ १० ॥ रियई य दवदवाए, मूढो परिभवइ तह च रायणिए । परपरिवायं गिण्हइ, निट्ठुरभासी विगहसीलो ॥ ११ ॥ विज्जं मन्तं जोगं, तेगिच्छं कुणइ भूइकम्मं च । अक्खरनिमित्तजीवी, आरंभपरिग्गहे रमइ ॥ १२ ॥ कज्जेण विणा उग्गह–मणुजाणावेइ दिवसओ सुयइ । अज्जियलाभं भुंजइ, इत्थिनिसिज्जासु अभिरमइ ॥ १३ ॥ उच्चारे पासवणे, खेले सिंघाणए अणाउत्तो ।

संथारगउवहीणं, पडिक्कमइ वा सपाउरणो ॥ १४ ॥ न करेइ पहे जयणं, तलि-
याणं तह करेइ परिभोगं। चरइ अणुबद्धवासे, सपक्खपरपक्खओमाणे ॥ १५ ॥"
चपळताथी बेंतालीश दोष रहित आहार न ले, साधुना मोटा दोष पैकी प्रथम
जे धात्रीपिंड न त्याग, शय्यातरना पिंड ल्याय, वारंवार विगयना आहार करे,
रात्रिने विषे चार आहार ग्रहीने खाय, सूर्योदयथी मांडी सूर्यास्त सुधी
वारंवार आहार करे साधुनी मंडलीमां आहार करवा बेसे नहीं, कारण
के तेमां तो जेवा आहार आवे तेवा खावो पडे, आळसना अंगे गोचरीए न जाय
त्याग करतां दुःख थतां पण आणी त्याग न करे, लाजथी पाडवाण न करे तेम
उतावळे करे पात्रा झोळी वगेरेनी पडिलेहणा करे, विना कारण कल्पित पोटली,
दश, गाम कुळ भाग ए पर्ही जातनो ममत्वभाव धराय, तेम समयमां पण
पाट-पाटलादिक सह गृहस्थावस्थामां भोगवेल भाग याद करी प्रमत्त थाय,
साबु-सपु इत्यादिक पदार्थ नाख, नख, दांत, वाळ, शरीरना रोम तथा शरीरने
वरावर साफसुफ राखे, अकारणिक समग्रे स्नान करे, गृहस्थनी माफक भोगविलास
करे, संथारा उत्तरपट्टा उपरांत शय्या पाथरे अने शय्या पण प्रमाणथी
मोटा पाथरे, समग्र रात्रि सुई रहे प्रमादी थईने निःशंक ऊंघी रहे, वसति
मांथी निकळतां 'आवस्सही' अने प्रवेश करतां 'निसीहि' न कहे, मार्गमां के
वसतिमां चलतां पग प्रमार्जे नहीं ईर्यासमितिपूर्वक (धुसरा प्रमाण आगळ दृष्टि
राखीने) न चाले, पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति अने त्रसकाय-ए छकायना
जीवनी रक्षा न करे, उपधिनी थोडी पण पडिलेहण न करे, स्वाध्याय न
करे विकाले पहेले पाछिल अथवा अकाल ऊंचे स्वरे स्वाध्याय करे कलह-
कंकास करे जेथी अन्यने स्वाध्यायमां अंतराय थाय, गच्छना विषे भेद पडाववामां
हुशियार, बे गाउथी विशेष दूर आहार लेवानो निषेध छे छतां जाय, पहेली पोर
सीमां लावेला आहार चोथी पोरसीमां वापरे, अणदीठो आहार ले, सूर्योदय
थया अगाउ आहार तेमज उपकरण वहोरे, स्थापनाचार्यमां रहे नहीं, पासत्थानी
सेवा करे, निरंतर दुष्ट बुद्धि राखे, कुशील-प्रमादीओमां प्रमादी रहे, उतावळो चाले,
मूढ होय, आचार्यादिकनो पराभव करे-तेमनी आज्ञामां न रहे, वारंवार निंदा
करे, कषाय-क्लेश करे, कठोर भाषा बोले, विद्या मंत्र, तंत्र, चूर्ण तथा
चिकित्सा करे, कामण-टूमण करे, चीठी-दोरा करे छोकरा रमाडे, निमित्त
जोइ आपे, आरंभ-परिग्रह करे, कारण विना अवग्रह मांगे, दिवसे पण शयन करे,
साध्वीए लावी आपेल आहार करे, ज्यां स्त्री बेठी होय त्यां बेसे घडी थया
अगाउ बेसे, स्थंडिल, मात्रु, बडखो (कफ) तथा श्लेष्म विगेरे जयणा रहित
परठवे, संथारा उपधि उपर बेठा बेठो क्रिया करे अगर शरीर ढांकी प्रतिक्रमण
करे, मार्गमां चालता जयणा न पाळे चंपलना पहेरी चाले, वर्षाऋतुमां पण विहार
करे, एक ज गाममां वारंवार चोमासा करे, पोताना या पारका पक्ष पर ममत्व

राखे,-आ बधा लक्षणो पासत्थाना छे आवा प्रकारनी नवकल्पीनी तेमज गीतार्थनी विहारमर्यादान जे आचार्य पाळता नथी ते केवळ वेषधारी साधु ज छे जेम घाणीने नाखी दीधेल शेलडी नि सत्त्व बनी जाय छे तेम आवा आचार्य संयमभ्रष्ट होवाथी निःसार छे हजु पण तेवा आचार्यना विशेष लक्षणो दर्शावता कहे छे—

कुलगामनगररज्जं, पयहिय जो तेसु कुणइ हु ममत्तं ।
सो नवरि लिंगधारी, संजमजोएण निस्सारो ॥ २४ ॥

[कुलग्रामनगरराज्यं, प्रहाय यस्तेषु करोति हु ममत्वम् ।
स नवरि लिङ्गधारी, संयमयोगेन निस्सारः ॥ २४ ॥]

गाथार्थ-जे कुळ (घर), गाम, नगर अने राज्यसाह्यबी त्यजी दईने पुन तेने विषे ज ममत्वभाव धरावे-' ते सर्व मारा ज छे ' एम माने तो ते आचार्य संयमयोगवडे निःसार-शून्य छे, मात्र साधुवेषने ज धारण करनार छे.

विवेचन-कुळ एटले घर, रहेवानु स्थान, जेमा कर आपवा पडे अथवा बुद्धिने हीन करे ते गाम, जेमा अढार प्रकारे कर न लेवाय ते नगर, जेमा राजा रहे तेमज ज्या सभाग होय ते राज्य कहेवाय आ उपरांत टीकाकार बीजा पण जणावे छे के-धूळना किल्लावाळु ते खेडग, खोटु नगर ते कर्बट, जेनी चारे बाजु अढी गाउ सुधीमा बीजु गाम न होय ते मडंब (कृत्रिम), जळमां थईने जे स्थळे जवातु होय ते जळपत्तन (द्वीप), स्थळमा थईने माग जता होय ते स्थळ-पत्तन, लोढा प्रमुख धातुओनी ज्या खाण होय ते आकर, जेमा स्थान तेमज जळमार्गे जवाय ते द्रोणमुख, ज्या विशेष वणिक वसता होय ते निगम,-आ सर्वना त्याग करीने साधु थया बाद तेना विषे ममत्वभाव-आसक्ति राखे तो तेवा आचार्यने पण द्रव्यलिंगी ज जाणवा हवे सारा आचार्यना लक्षणो दर्शावता कहे छे के—

विहिणा जो उ चोएइ, सुत्तं अत्थं च गाहई ।
सो धन्नो सो अ पुण्णो अ, स बंधू मुक्खदायगो ॥ २५ ॥

[विधिना यस्तु चोदयति, सूत्रमर्थं च ग्राहयति ।
स च धन्यः स च पुण्य एव, स बन्धुर्मोक्षदायकः ॥ २५ ॥]

गाथार्थ—जे आचार्य शिष्यसमूहने करवालायक सारणा वारणादिकमा प्रेरणा करे छे तेमज सूत्र ने अर्थ भणावे छे ते ज आचार्य धन्य, पवित्र, बंधु समान अने मुक्तिदायक छे

विवेचन—सूत्रार्थ विधिवडे शिष्यादिकने प्रेरणा करवी ते विधि कहे छे ? ते माटे कहे छे के—"धम्ममइएहिं अइसुंदरेहिं, कारणगुणोवणीएहिं। पल्हायंतो अमण, सीसं चोएइ आयरिओ ॥ १ ॥" धर्मबुद्धिथी मिष्ट भाषावडे शिष्यादिकना मनने हर्ष उपजावीने प्रेरणा करे—शुद्ध धर्मक्रिया करवा कहे सूत्र भणवानी विधि व्यवहारसूत्रना उद्देशामां आ प्रमाणे जणावी छे—"णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए अवंजणजायस्स आयारपकप्पे णाम अज्झयणे उद्दिसित्तए १, कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा वंजणजायस्स आयारपकप्पे नाम अज्झयणे उद्दिसित्तए २ वीसवासपरियाए समणे निग्गंथे सव्वसुआणुवादी भवती त्यादि० ॥" जेने मूछ, दाढी के काखमां रोम नथी तेवा लघु शिष्यने तेमज जेने स्तन उगन्या नथी तेवी लघु साध्वीने आचारांग सूत्र न भणाववुं जेने त्रण वर्षनो दीक्षापर्याय थयो होय तथा सुयोग्य शिष्यने आचारांग भणाववुं चार वर्षनी दीक्षावाळाने सुयगडांग, पांच वर्षवाळाने दशाकल्प अने व्यवहारसूत्र, आठ वर्षवाळाने ठाणांग अने समवायांग, दश वर्षवाळाने भगवती, अगियार वर्षवाळाने खुड्डियाविमानप्रविभक्ति, महल्लियाविमानप्रविभक्ति, अंगचूलिया, वंगचूलिया अने विवाहचूलिया, बार वर्षवाळाने अरुणोपपात, वरुणोपपात, गरुडोपपात, धरणोपपात, वेश्रमणोपपात अने वेलंधरोपपात, तेर वर्षवाळाने उत्थानश्रुत, समुत्थानश्रुत, देवेंद्रोपपात, नागपरियावलिका, चौद वर्षवाळाने महासुमिणभावना, पंदर वर्षवाळाने चारणभावना, सोळ वर्षवाळाने आशीविषभावना, सत्तर वर्षवाळाने दृष्टिविषभावना, ओगणीश वर्षवाळाने दृष्टिवाद अंग अने वीस वर्षना चारित्रपर्यायवाळाने सर्व सूत्र भणाववुं आ तो सूत्र भणाववामां समय कह्यो परंतु ते संबंधी उपधान—जोगनी जे विधि कहेली छे ते प्रमाणे योग वहन करावीने सूत्र भणाववुं आ प्रमाणे सूत्राभ्यास कराव्या पछी अनुक्रमे निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, संग्रहणीवृत्ति अने टिप्पनिका—ए पंचांगी प्रमाणे अर्थ भणाय, परन्तु पोतानी मतिकल्पनाथी न भणावे जे पंचांगीने न माने ते मिथ्या दृष्टि गणाय श्रीभगवतीजीना पचीशमा शतकना त्रीजा उद्देशामां कह्युं छे के—
'सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ। तइओ अ निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ १ ॥" प्रथम सूत्रनो अर्थ कहवाय, बीजो निर्युक्ति युक्त कहवाय अने त्रीजो बाकीना एटले भाष्य, चूर्णी अने टीका सहित भणावे वळी श्रीनंदिसूत्र तेमज आवश्यकनिर्युक्तिमां जणावेल विधि प्रमाणे भणावे आवा जे आचार्य होय ते ज धन्य, पुण्यवंत—पवित्र, कुमतिनुं निवारण करी सुमतिमां जोडनार कह्युं तेमज शिवसुखना कारणभूत ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति

करावनार होवाथी मोक्षदाता पण छे हवे पण लक्षण-गुण संबंधी विशेष वर्णन करता जणाय छे के—

स एव भव्वसत्ताण, चक्खूभूए वियाहिए ।
दंसेइ जो जिणुद्दिट्ठं, अणुट्ठाणं जहट्ठिअं ॥ २६ ॥

[स एव भव्यसत्त्वानां, चक्षुर्भूतो व्याहृतः ।
दर्शयति यो जिनोद्दिष्ट-मनुष्ठानं यथास्थितम् ॥ २६ ॥]

गाथार्थ—श्रीजिनेश्वर परमात्माए प्रकाशित रत्नत्रयी अनुष्ठान यथास्थित दर्शावे छे ते ज आचार्य भव्य प्राणिओने चक्षु समान कहेल छे.

विवेचन-नेत्रहीनने सर्व विश्व अंधकारमय भासे छे, तेने मार्ग सूझतो नथी सर्व कार्योमां सर्वप्रथम नेत्रनी ज जरूर पडे छे एटले सर्व इन्द्रियोमां तेने अग्रस्थान मळ्युं छे सुआचार्य तीर्थंकर परमात्माना सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूपी रत्नत्रयीना दर्शावनारा होवाथी तेमने चक्षुनी उपमा आपी छे हवे नीचेना श्लोकमां बे पादवडे गुणी आचार्यने तीर्थंकर सदृश अने पाछळना बे पादमां आज्ञाभंगी आचार्यने नीच पुरुष-कापुरुष सदृश दर्शावे छे—

तित्थयरसमो सूरी, सम्मं जो जिणमयं पयासेइ ।
आणं अइक्कमंतो सो, काउरिसो न सप्पुरिसो ॥ २७ ॥

[तीर्थंकरसमः सूरिः, सम्यग् यो जिनमतं प्रकाशयति ।
आज्ञामतिक्रामन् सः, कापुरुषः न सत्पुरुषः ॥ २७ ॥]

गाथार्थ—जे आचार्य जिनेश्वर मत-अनेकांत दर्शन प्रकाशे छे ते तीर्थंकर समान छे अने जे (जमालीनी माफक) परमात्मानी आज्ञानुं उल्लंघन करे छे ते अधम पुरुषनी गणनामां आवे छे.

विवेचन—गुणी युक्त आचार्यने तीर्थंकर सरखा शा माटे कह्या ? तीर्थंकर परमात्माने तो चोत्रीश अतिशय होय छे तेमनी अतुल ऋद्धिनी पार कल्पना पण थई शकती नथी तो आचार्यने तेमनी उपमा कई रीते आपी शकाय ? आवी शंका करनारने शास्त्रकार कहे छे के-जेम तीर्थंकर अर्थ प्रकाशे तेम ज आचार्य अर्थ करे छे, वळी केवळज्ञान प्राप्त थया पछी जेम तीर्थंकर गोचरीए जता नथी तेम आचार्य पण भिक्षार्थे जता नथी इत्यादि अनेक प्रकारोनी साम्यताथी आचार्यने तीर्थंकर

तुल्य कही शकाय श्रीमहानिशीथ सूत्रना पांचमा अध्ययनमां भावाचार्यने तीर्थंकर सदृश कह्या छे—" से भयवं ! किं तित्थयरसंतिअं आणं नाइक्कमिज्जा, उदाहु-आयरियसंतिअं ? गोयमा ! चउव्विहा आयरिया भवंति, तं०-नामायरिया ठवणायरिया दव्वायरिया भावायरिया, तत्थ णं जे ते भावायरिया ते तित्थयरसमा चेव दट्ठव्वा, तेसिं संतिअं आणं नाइक्कमेज्ज "त्ति० हे भगवन् ! तीर्थंकर संबंधी आज्ञा न उल्लंघवी के आचार्य संबंधी ? हे गौतम ! नामाचार्य, स्थापनाचार्य, द्रव्याचार्य अने भावाचार्य एम चार प्रकारना आचार्य कह्या छे ते पैकी भावाचार्य तीर्थंकर सदृश होइ तेमनी आज्ञानुं कदापि उल्लंघन न करवुं, कारण के तेवा आचार्य सात नय, चार निक्षेप, उत्सर्ग अने अपवादमार्गना ज्ञाता तथा निश्चय अने व्यवहारना जाण होय छे

सावद्याचार्यनी कथा—

जे तीर्थंकरनी आज्ञानुं उल्लंघन करे ते आ लोकमां तो अधम पुरुष कहेवाय छे अने परलोकमां पण दुःखदायक स्थिति भोगववा उपरांत तेने अनंत संसारमां परिभ्रमण करवुं पडे छे आ संबंधमां महानिशीथना पांचमा अध्ययनमां सावद्याचार्यनुं वृत्तांत जणावेल छे, ते आ प्रमाणे-गौतमस्वामी श्रीमहावीर परमात्माने पूछे छे के-'हे भगवंत ! सावद्याचार्य संसारमां अनंता काळ सुधी शा माटे भम्या ?' परमात्मा तेनो वृत्तांत जणावता कहे छे के-' हेगौतम ! श्रीऋषभदेवथी प्रारंभी जे वर्तमान चोवीशी छे तेनी पूर्वे अनंती चोवीशीओ थइ गयेल छे तेवी कोई अनंतमी चोवीशीमां धर्मश्री नामना चोवीशमा तीर्थंकर बराबर मारा जेवा थया तेमना तीर्थमां सात आश्चर्यो थया, तेमां असंयतिनी पूजा पण एक आश्चर्य थयुं असंयतिओ श्रावकोने उपदेश आपी, द्रव्यव्यय करावी जिनचैत्य करावे अने पछी तेमां पोते वसवाट करे साधुओए जिनचैत्यमां वास करवो उचित नथी, कारण के तेथी महाआशातना थाय व्यवहार तथा कल्पभाष्यमां जणाव्युं छे के—साधुओए उत्कृष्ट चैत्यवंदन करवा जेटलो समय ज चैत्यमां गाळवो, तेथी विशेष समय रोकावुं नहीं तेमना समयमां घणा असंयतिओ चैत्यवासी बनी गया आ बाजु ग्रामानुग्राम विहार करता करता घणा शिष्योना परिवारयुक्त कुवलयप्रभ नामना उग्र विहारी अने तपस्वी आचार्य त्यां आवी चढ्या, एटले चैत्यवासी ओए तेमने वंदन करीने विज्ञप्ति करी के-'आप अहीं चातुर्मास करो, तथी अतीव उपकार थशे तमारा उपदेशथी घणा नूतन चैत्यो बंधाशे' आचार्ये कह्युं के-'आ सावद्य कार्य छे तेमां हुं वचन मात्रथी पण संमति न आपुं तो उपदेश देवानी वात ज शी करवी ?' हे गौतम ! आ प्रमाणे कहेवाथी ते कुवलयप्रभाचार्ये तीर्थंकरनाम कर्म उपार्जन कर्युं, अने एक भव जेटलो ज तेमनो संसार शेष रह्यो बधा चैत्यवासीओए आ वचन सांभळीने ते आचार्यनुं नाम 'सावद्याचार्य" राख्युं सावद्या

चार्यने तेथी लेश मात्र पण द्वेष न थयो अने त्यांथी विहार करी गया एकदा ते वेषधारी चैत्यवासीओमा सुसाध्य समधर्मा परस्पर विवाद उद्भव्यो पहेले एवं कह्यु-' श्रावक न होय तो साधु चैत्यनी संभाळ राखे, समरावे तेमज चैत्यमा का० करवा योग्य होय ते करवामा तेने दोष नथी ' बीजाए कह्यु-' आ प्रमाणे करवाथी मोक्षप्राप्ति नथी शुद्ध संयमना आराधनथी ज मोक्ष मळे छे ' त्रीजाए कह्यु-' पूजा, सत्कार, बलिविधान अने वैयादि चिकित्सा करीने चैत्यनी उन्नत बधारथी अने तेथी ज मोक्षप्राप्ति थशे ' आ प्रमाणे विवादनो अंत न आव्यो त्यारे सर्वेए नक्की कर्यु के-आपणे सावद्याचार्यने बोलाववा अने तेओ जे कहे ते प्रमाण मानवु सावद्याचार्य ते समये दूर देशमा हता छता तेओना आग्रहथी सात मास पर्यंत उग्र विहार करीने त्या आवी पहोंच्या चैत्यवासीओ सामे गया अने बहुमानपूर्वक वंदन कर्यु ए समये एक साध्वीए पण प्रदक्षिणा आपीने सावद्याचार्यने वंदन कर्यु तेवामा तेनु मस्तक तेमने अडी गयु चैत्यवासीओए आ संघट्टानो दोष नजरे निहाळ्यो

एकदा चैत्यवासीओनी पर्षदामा सूत्रार्थ करता ते सावद्याचार्य महानिशीथ ना पांचमा अध्ययननी आ गाथानी व्याख्या-" जत्थित्थीकरफरिसं, अंतरिय कारणे वि उप्पन्ने । अरिहा वि करिज्ज सयं, तं गच्छं मूलगुणमुक्कं ॥ १ ॥" करता पूर्वे विचार्यु के-मने वंदन करता साध्वीनो संघट्टो थयो छे अने ते आ सर्वे चैत्यवासीओए नजरे निहाळ्यो छे आ गाथानो जेवो अर्थ छे तेवो ज अर्थ कहीश तो पूर्वे तो मने सावद्याचार्यनु उपनाम आप्यु छे पण हवे तो बीजुं ज कइ उपनाम आपशे जो जेवो छे तेवो अर्थ कहीश नहीं तो अरिहंतपरमात्मानी आज्ञाभंगनो दोष लागशे, तो हवे मारे शु करवु ? छेवटे तेणे निर्णय कर्यो के-जे थवानु होय ते थाय पण खोटो अर्थ तो न ज करवो बाद तेणे अर्थ करता कह्यु के-' महाकारण आवी पडये छते पण जे गच्छमा साधु स्त्रीना हस्तनो स्पर्श करे छे ते गच्छ मूलगुण रहित (भ्रष्ट) जाणवो ' आ कथन सांभळी चैत्यवासी ओए कह्यु के- हे आचार्य ! तो तमो पण मूलगुण रहित ज छो, कारण के साध्वीए तमने वंदन करता तनो स्पर्श थइ गयो [illegible] ' आ सांभळी सावद्याचार्ये विचार्यु के-हवे शुं उत्तर आपवो ? आचार्यपणामा त्रण योग अने त्रण करण वडे कोई पण पापस्थानक सेववु घटे नहीं आ प्रमाणे तेमने विचारमा पडेला जोईने चैत्यवासीओए कह्यु के-'केम बोलता नथी ? शु विचारमा पडी गया छो ? ' त्यारे सावद्याचार्य मनमा विचारीने कह्यु के-' अयोग्यने सूत्रार्थ न समजाववो आमे घडे निहित्तं, जहा जलं तं घडं विणासेइ । इअ सिद्धन्तरहस्सं, अप्पाहारं विणासेइ ॥ १ ॥ जेम काचा घडामा नाखेलु जळ घडानो ज विनाश करे [illegible] तेम अल्पबुद्धिवाळा प्राणीने कहेल सूत्रार्थ तेनो ज नाश करे छे अर्थात् जड प्राणियोने सूत्रार्थ न समजाववो ' आ सांभळीने चैत्यवासीओए

वधु के-' आवु अव्यवस्थित जे समस्त जिनागम शुं बोलो छो ? सत्य हकीकत
कहो, नहीं तो अहींथी चाल्या जाओ ' पोतानो आ प्रमाणे अपयशवाद थतो
जाणीने सावद्याचार्ये अनंतसंसारना हेतुभूत वचन उच्चार्यु के-' एगंत मिच्छत्त,
जिणाण आणा अणेगंतम् । उत्सर्ग अने अपवाद एम बे प्रकारनो जिनागम कह्यो
छे एकांतवादमां मिथ्यात्व छे, जिनेश्वरनो आदेश तो अनेकांत छे माटे एकांत
आग्रह न करवो ' सावद्याचार्यना आ वचनथी चैत्यवासीओए मान्यु के-खरेखर
एम ज हशे अनेकांतधर्मवाळा जिनागममां साध्वी-संघट्टाने माटे एकांत निषेध नहीं
होय तेओए सावद्याचार्यनी आगमज्ञाता तरीके घणी ज प्रशंसा पण करी परन्तु
आचार्ये तो एक मिथ्या वचन कहेवाथी अनंतसंसार-परिभ्रमण वृद्धि पमाडयु
तीर्थंकरनामकर्मने उपार्जन करनार आचार्ये पण मात्र उत्सूत्र-प्ररूपणाथी अनंत
संसार भमे छे, अहो ! उत्सूत्रभाषणनी भयंकरता कयी ? बाद त दोषने आलोच्या
विना मृत्यु पामवाथी सावद्याचार्य मरीने व्यंतर निकायमां उपज्या त्यांथी
च्यवीने वासुदेवना पुरोहितनी विधवा पुत्रीनी कुक्षिमां उपज्या. कलंकना
भयथी पुरोहिते पुत्रीने घरमांथी काढी मूकी. क्यांई पण स्थळे तेने आश्रय न
मळ्यो एटले तेणी श्वपाक(मद्य-मांस वेचनार)ना घरे दासी तरीके रही. त्यां
तेने गर्भ-प्रभावथी मद्य, मांस, मदिरा पीवामां दोहद उपज्या मद्य-पान पीनारा
घणा लोकोना वाडामां आवतां मद्य-मांस ते खावा लागी छतां तेनी तृप्ति न
थई एटले शेठना घरमांथी वासण तथा वस्त्र चोरी-चोरीने तेना द्रव्यद्वारा
मांसभोजन करवा लागी. आ वातनी तेना मालिकने खबर पडता तेणे राजाने
फरियाद करी राजाए तेने गर्भवती जाणीने चांडालने सोंपी अने कह्युं के-
' प्रसव थया बाद तेने मारी नाखजे ' चांडाल लोकोनी पण ए मर्यादा छे
के-गर्भवती स्त्रीने मारवी नहीं पुरोहितनी पुत्री पण पुत्रने जन्म आपीने त्यांथी
शीघ्र नासी गई राजाए चांडालने पाछला द्रव्य आपीने पुत्रने उछेराव्यो कालक्रमे
ते चांडाल मृत्यु पामता आ बाळकने तेना स्थान पर नियुक्त कर्यो आ प्रमाणे
चांडालनो बीजो भव थयो (२) त्यांथी मृत्यु पामीने त्रीश सागरोपमना आयुष्यथी
सातमी नारकमां उपज्यो (३) त्यांथी निकळी अंतर्द्वीपमां ' एकोरुक ' जातिमां
उपज्यो (४) त्यांथी मृत्यु पामी पाडो थयो (५) त्यांथी छवीस वर्षना थया
बाद मरण पामी मनुष्य थयो (६) त्यांथी मरी वासुदेव थयो. (७) मरीने सातमी
नरके गयो (८) त्यांथी निकळी मांसाहारी गजकर्ण मनुष्य थया (९) त्यांथी
सातमी नारकना प्रतिष्ठान नामना नरकावासमां उपज्यो (१०) त्यांथी मरी पाडो
थयो (११) त्यांथी बालविधवा ' वधवी ' नामनी ब्राह्मणीनी कुक्षिमां उपज्यो
त्यां गर्भ पाडवा माटे अनेक औषधोपचार करवाथी अनेक रोगोथी व्याप्त अने
कोढियो थयो शरीरमां कीडा पडी गया आ प्रमाणे महादुःखी थई,
सातसो वर्ष, बे महिना अने चार दिवसनुं आयु भोगवी मृत्यु पाम्या
(१२) त्यांथी व्यंतरदेव थया (१३) त्यांथी चांडालनो स्वामी मनुष्य

थयो (१४) बाद सातमी नरके गयो (१५) त्यांथी भाडु करवावाळाने घेरे बळद थयो (१६) भाडानो भार वहन करावता तेनी कांध सडी गइ तेथी मालिके तेने काढी मूक्यो कागडा तेने चुंटवा लाग्या, कीडाओ खावा लाग्या अने कूतराओ बचका भरवा लाग्या आवी दुःखद स्थितिमां ओगणत्रीश वर्षनुं आयु पूर्ण करीने एक श्रेष्ठीने घेरे महारोगी पुत्र तरीके जन्म्यो (१७) त्यां अतिशय झाडा अने उलटी आदिना दुःखने भोगवता मनुष्य भव पूरो कर्यो आ प्रमाणे चौद राजलोकमां अनंतो काळ परिभ्रमण कर्या बाद पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य तरीके उपज्या त्यां लाकोनी देखादेखीथी तीर्थंकरपरमात्माने वांदवा गयो प्रतिबोध पामी चारित्र स्वीकार्युं अने चालु चोवीशीना श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकरना समयमां ते सिद्ध थया' आ हकीकत सांभळी गौतमस्वामीए भगवंत महावीरने प्रश्न कर्यो के-" हे स्वामिन् ! शामाटे सावद्याचार्ये आटलुं बधुं दुःख भोगव्युं ?" " हे गौतम ! तेणे उत्सर्ग अने अपवादथी आगममार्ग छे एम कह्युं तेथी जो के सिद्धांतमां अपवाद अने उत्सर्गमार्ग अनेकांत स्वरूपे कहेल छे छतां पण (१) सचित्त जळ, (२) अग्निकायनो परिभोग तथा (३) मैथुनसेवनना तो एकांत निषेध ज छे आ आज्ञाना भंगथी अनंत संसारी थयो " " हे भगवन ! शुं सावद्याचार्ये मैथुन सेव्युं हतुं ?" "हे गौतम ! तेणे मैथुन सेव्युं नथी परंतु साध्वीनो संघट्टो थयो त्यारे तेणे पोतानो पग खेंची लीधो नहीं, जेम हतो तेम ज राख्यो तेथी ते सेव्या सदृश ज गणाय " " हे भगवन ! सावद्याचार्ये तो तीर्थंकरनाम-कर्म उपार्ज्युं हतुं अने एक ज भव बाकी हतो तो शा माटे आटलो अनंत संसार भम्यो ? " " हे गौतम ! पोताना प्रमादथी बन्युं छे के- चोद्दसपुव्वी आहारगा वि, मणनाणिवीयरागा य । हुंति पमायपरवसा, तयणंतरमेव चउगइ-आ ॥ १ ॥ चौदपूर्वी, आहारक शरीरधारी, चार ज्ञानना धणी अने वीत राग एटले उपशांतकषायी पण प्रमादना परवशपणाथी चार गतिमां भम्या छे माटे आचार्ये तो सदा अप्रमत्तपणे ज रहेवुं " वळी श्रीभगवतीसूत्रना अढारमा शतकना सातमा उद्देशामां मद्दुअ श्रावकने उद्देशीने कह्युं छे के-" जे णं मद्दुआ ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अन्नायं वा अदिट्ठं वा अस्सुयं वा अपरिन्नायं वा बहुजणमज्झे आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ, उवदंसेइ, से णं अरिहंताणं आसायणाए वट्टइ, अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, केवलीणं आसायणाए वट्टइ, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ । हे मद्दुअ श्रावक ! जे कोई अर्थ, हेतु, प्रश्न तथा एक-वचन जाण्या विना, जोया विना, सांभळ्या विना, तेना संपूर्ण ज्ञान विना बहु लोकोनी मध्यमां कहे, प्रकर्षपणे जणावे, प्ररूपे, 'आ अर्थ आम ज छे' तेम

देखाडे, साक्षात् देखाडे ते अरिहंतनी, अरिहंतप्ररूपित धर्मनी, केवळीनी अने केवळीप्ररूपित धर्मनी आशातना करे छे " वळी श्रीनंदिसूत्रमां कह्युं छे के—
"इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहिता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु १। इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग पडुप्पन्नकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं अणुपरिअट्टंति २। इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहिता चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति ३। इच्चेइय दुवालसंगं गणिपिडग तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता चाउरंत संसारकंतारं वीइवइंसु ४। इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग पडुप्पन्नकाले परित्ता जीवा आणाए आराहिता चाउरंत संसारकंतारं वीइवइंति ५। इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता चाउरंत संसारकंतारं वीइवइस्संति ६ ॥"
द्वादशांगीना भणनार छतां पण आज्ञाना विराधक थवाथी अनंत संसारमां भम्या १, वर्तमानकाळमां पण आज्ञा-विराधक चार गतिमां भमे छे वर्तमानकाळमां संख्याता ज होय माटे मूळमां परित्ता शब्द कह्यो छे २, भविष्यकाळमां भमशे ए त्रीजो भेद ३, आज्ञापूर्वक चार अंगनुं अध्ययन करतां केटलाय भव्य जीवो मोक्षे गया ४, वर्तमानकाळमां पण संख्याता जीव आज्ञाने आराधीने मोक्षे जाय छे ५ अने भविष्यकाळमां पण अनंता जीवो मोक्षे जशे ६ " अरिहंतनी आज्ञा विराधवामां केटलुं भयंकर जोखम रहेलुं छे तेनो आ श्लोकद्वारा विचार करी मोक्षाभिलाषी आचार्य, उपाध्याय तेमज प्रवर्तके आगमनो अर्थ यथार्थ जणाववा पण पोतानी मतिकल्पनानो उपयोग न करवो केम आचार्य भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करे ते जणावे छे—

भट्ठायारो सूरी १, भट्ठायाराणुविक्खओ सूरी २।
उम्मग्गठिओ सूरी ३, तिन्नि वि मग्ग पणासंति ॥ २८ ॥

[भ्रष्टाचारः सूरिर्भ्रष्टाचारापेक्षकः सूरिः ।
उन्मार्गस्थितः सूरिस्त्रयोऽपि मार्ग प्रणाशयन्ति ॥ २८ ॥]

गाथार्थ—ज्ञानाचारादिक आचार जेना शिथिल थई गया छे ते भ्रष्टाचारी अधमाचार्य, आचारभ्रष्ट थयेला साधु-साध्वीओनी उपेक्षा करनार मंदाचार्य तेमज उन्मार्गमां रहेल-उत्सूत्र प्ररूपनार अधमाधम आचार्य-आ त्रणे प्रकारना आचार्य मोक्षमार्गनो विनाश करनारा छे

विवेचन—जेना नायकमां ज शिथिलपणुं होय तेना आश्रित जनोमां स्वाभाविक रीते ज मंदता आवी जाय छे. आपणामां कहेवत प्रचलित छे के—'जेना नायक आंधळो तेनुं कटक कूवामां' एटले के गच्छना अग्रणीए तो ज्ञानाचारादिक आचारोमां सतत प्रयत्नशील ज रहेवुं जोईए. तेमने क्रियावंत जोईने कदाच मंद पडेला साधु-साध्वीओ पण फरीथी स्वधर्ममां स्थिर थई जाय छे. आ गाथाना प्रथमा आगळ त्रण प्रकारना आचार्य जणाव्या हवे तेने सेवनारनी शी स्थिति थाय ते जणावता कहे छे के—

उम्मग्गठिए सम्मग्ग—नासए जो उ सेवए सूरी ।
निअमेणं सो गोअम !, अप्पं पाडेइ संसारे ॥ २९ ॥

[उन्मार्गस्थितान् सन्मार्ग—नाशकान् यस्तु सेवते सूरीन् ।
नियमेन स गौतम !, आत्मानं पातयति संसारे ॥ २९]

गाथार्थ—उन्मार्गगामी अने सद्मार्गनो नाश करनार आचार्यने जे सेवे छे—तेमना कहेल अनुष्ठानोने जे करे छे ते हे गौतम ! पोताने आ संसारसागरमां रखडावे छे.

विवेचन—सन्मार्गना लोपक आचार्य पासेथी आत्मकल्याणनी शी रीते आशा रखाय ? ते पोते तो पतित थयेला ज छे अने पोतानी उपासना करनारा, पासे रहेनाराओने पण पतित बनावे छे, माटे पत्थरना जहाज तुल्य तेओ स्वयं संसारसागरमां डूबे छे अने अन्यने पण डुबाडे छे. उपरनी ज हकीकतनुं दृष्टांतद्वारा समर्थन करता कहे छे के—

उम्मग्गठिओ एक्को वि, नासए भव्वसत्तसंघाए ।
तं मग्गमणुसरंते, जह कुत्तारो नरो होइ ॥ ३० ॥

[उन्मार्गस्थित एकोऽपि, नाशयति भव्यसत्त्वसंघातान् ।
तन्मार्गमनुसरन्तः, यथा कुतारो नरो भवति ॥ ३० ॥]

गाथार्थ—जेम नबळो तरवावाळो पोताने तेमज पोताना आश्रित बनेला जनोने नदी विगेरे जलाशयमां डुबाडे छे तेम कुमत—कदाग्रहथी भरपूर आचार्य पोताने अनुसरनारा भव्य प्राणिओने संसारसागरमां रखडावे छे.

विवेचन—जे बरोबर तरवानुं जाणतो न होय ते पोतानी पाछळ लागेला प्राणिओनो विनाश करे छे तेम उत्सूत्र भाषण करनार, कदाग्रही आचार्य पोताना आश्रित साधुओने तेमज सकळवर्ग श्रावकजनोने अनंता भवोमां रखडा-

यमाना हेतुभूत थवाथी स्वरेखर तेना विनाशभूत थाय छे उन्मार्गे गमन कर नारनु शु अहित थाय छे ? ते दर्शावता कहे छे—

उम्मग्गमग्गसंपट्ठिआण, साहूण गोअमा ! नूणम् ।
ससारो अ अणतो, होइ य सम्मग्गनासीण ॥ ३१ ॥
[उन्मार्गमार्गसम्प्रस्थितानां, साधूनां गौतम ! नूनम् ।
ससारश्चानन्तो, भवति सन्मार्गनाशिनाम् ॥ ३१ ॥]

गाथार्थ—उन्मार्गे वर्तनारा अने सन्मार्गनो नाश करनारा साधुओने हे गौतम ! जरूर ससारमा अनती वार परिभ्रमण करवु पडे छे

विवेचन—गोशालाए प्ररूपेलो मत, दिगंबरोए प्रवर्तावेल मत ए उन्मार्ग कहे वाय तेवा उन्मार्ग चालनारा निह्नवोनो संसारमां भमता भमता पण पार आवे नहीं एकला परिभ्रमण मात्रथी ज बस नहीं परन्तु अनेक प्रकारना दु खो-कष्टो सहन करवा पडे शुद्धमार्गना छेदनारा साधुओ पण अनतससारी थाय छे आ संबन्धमा श्रीमहानिशीथसूत्रमा कहेल सुमतिभद्र मुनिनु वृत्तात जाणवा योग्य छे भगवत श्रीमहावीर गौतमस्वामीने उद्देशीने कहे छे के- हे गौतम ! आवा साधु आचार्यो मात्र लिंगधारी-साधुवेशने धारण करनारा ज जाणवा ' कदाच कोइ प्रमादपणाथी जिनेश्वरभाषित क्रिया न आचरी शके परन्तु जो भव्य जनोने यथार्थ जिनमार्ग दर्शावे तो ते पोताने कया मार्गमा स्थापे ? ते जणावता कहे छे के—

सुद्ध सुसाहुमग्गं, कहमाणो ठवइ तइअपक्खम्मि ।
अप्पाण इयरो पुण, गिहत्थधम्माउ चुक्क त्ति ॥ ३२ ॥
[शुद्ध सुसाधुमार्गं, कथयन् स्थापयति तृतीयपक्षे ।
आत्मानमितरः पुनो, गृहस्थधर्माद् भ्रष्ट इति ॥ ३२ ॥]

गाथार्थ—शुद्ध साधुमार्गनी प्ररूपणा करनार पोताना आत्माने सविग्न-पाक्षिक नामना त्रीजा (साधु अने श्रावकनी अपेक्षाए) पक्षमां स्थापे छे अने तेथी विपरीत–उत्सूत्रभाषक गृहस्थ अने साधु उभय धर्मथी भ्रष्ट थाय छे.

विवेचन—पहेलो साधु धर्म, बीजो गृहस्थ धर्म अने त्रीजो सविग्नपाक्षिक नो धर्म छे पोते शरीरनी अशक्तिथी अथवा प्रमादशीलताथी शुद्ध अनुष्ठाननु आचरण न करी शकता होय परन्तु ते प्रत्येना अतरग भावथी शुद्ध धर्मनु प्ररूपण करता होय तो तेने त्रीजा पक्षमां गणवो तेथी विपरीत प्ररूपणा करनार

पासत्थो माणवो प्रसंगवशात् त्रणे पक्षनु वर्णन करता कहे छे के—" सुज्झइ जई सुचरणो, सुज्झइ सुस्सावओ वि गुणकलिओ । ओसन्नचरणकरणो, सुज्झइ संविग्गपक्खरुई ॥ १ ॥ संविग्गपक्खियाणं, लक्खणमेयं समासओ भणियं । ओसन्नचरणकरणा वि, जेण कम्मं विसोहंति ॥ २ ॥ सुद्धं सुसाहुधम्मं, कहेइ निंदइ य नियमायारम् । सुतवस्सियाण पुरओ, होइ य सव्वोमराइणिओ ॥३॥ वंदइ न य वंदावइ, किइकम्मं कुणइ कारवे नेव । अत्तट्ठा न वि दिक्खइ, देइ सुसाहूण बोहेउं ॥४॥ ओसण्णो अत्तट्ठा, परमप्पाणं च हणइ दिक्खंतो । तं छुहइ दुग्गईए, अहिययरं बुड्डइ सयं च ॥५॥ सावज्जजोगपरिवज्जणाउ, सव्वुत्तमो जई धम्मो । बीओ सावगधम्मो, तइओ संविग्गपक्खमहो ॥ ६ ॥ सेसा मिच्छादिट्ठी, गिहिलिंगकुलिंगदव्वलिंगेहिं । जह तिन्नि उ मुक्खपहा, संसारपहा तहा तिन्नि ॥७॥" शुद्ध चारित्रनो धारक साधु, गुणवान् श्रावक अने कर्मना उदयथी चरणसित्तरी के करणसित्तरी पाळवामां शिथिल थयेल परन्तु यथायुक्त शुद्ध प्ररूपणा करनार संविग्नपाक्षिक शोभे छे (१) संविग्नपाक्षिकनुं लक्षण संक्षेपथी आ प्रमाणे कह्यु छे के—जे चरण अने करणसित्तरीथी पतित थया छतां शुद्ध मार्गनो उपदेश करवाथी कर्मक्षय करी रह्या छे (२) शुद्ध धर्मनो उपदेश आपी पोतानी निंदा करता कहे के—' हुं आचरुं छुं ते तो मिथ्या मार्ग छे, शुद्ध साधुधर्म माराथी पाळी शकातो नथी ' (३) बीजा पोते न वंदावे परन्तु शुद्ध साधुने पोते वांदे तेमज स्वउपदेशथी कोई प्रतिबोध पामी दीक्षानो अभिलाषी थाय तो स्वयं दीक्षा न आपे पण शुद्ध साधुओने सोंपे (४) कारण के जो ते पोते पोताना स्वार्थने अर्थे अन्यने प्रतिबोध आपी दीक्षा आपे तो ते संविग्नपाक्षिक तेने संसाररूपी महागर्तामां नाखे छे अने स्वयं पण संसारसागरमां अनेक वार बूडे छे (५) सर्व पापकारी कार्यना निषेधरूप १ यतिधर्म सौथी उत्तम छे २ गृहस्थनो धर्म अने ३ संवेगपक्षनो मार्ग ए त्रण मोक्षमार्ग जणावेल छे (६) आ त्रण मार्गथी विपरीत १ गृहस्थलिंगी, २ चरकादि कुलिंगी अने ३ पासत्थादिक द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि छे, संसारमां परिभ्रमण करावनारा छे (७) छेल्ला गाथामां श्लोकना अर्थ परथी शंका करता पूछे छे के—'गृहस्थलिंगी अने कुलिंगी तो संसारमां भमाडे ते तो ठीक परन्तु पासत्थो तो भगवंतनो वेष धारण करनार छे ते केम भमाड‍नार थाय ?' तेनो जवाब आपता कहे छे के—"संसारसागरमिणं, परिब्भमंतेहिं सव्वजीवेहिं । गहियाणि य मुक्काणि य, अणंतसो दव्वलिंगाइं ॥८॥" संसारसागरमां परिभ्रमण करता सर्व जीवोए (मनुष्य भव पामेला जीवो, अव्यवहारी जीवो नहीं) अनंती वार द्रव्यलिंगो धारण कर्या अने मूक्यां

पण दीधा, परन्तु ज्यां सुधी सम्यक्त्वरूपी जहाज प्राप्त न थयुं त्यां सुधी जीवोनो उद्धार थाय नहीं एटले पासत्थानो मार्ग ए संसारमार्ग छे, मोक्षनो मार्ग नथी शंका–मोक्षना त्रण अने संसारना त्रण एम छ मार्ग तमे कह्या, परन्तु जे प्राणि साधुपणे घणा काळ सुधी विचर्या बाद कर्मना वशवर्तीपणाथी शिथिल थईने पासत्थापणे रहे छ तेने कया पक्षमां गणवा ? उत्तर–"सारणचइया जे गच्छ-निग्गया य विहरंति पासत्था। जिणवयणबाहिरा वि य, ते उ पमाणं न कायव्वा ॥९॥" मार्गनुं उल्लंघन करीने जे पासत्थापणे विचरे छे ते जिनमार्गथी भ्रष्ट थयेला जाणवा, तेमनुं कोई पण वचन प्रमाणभूत न मानवुं. आ संबंधमां दृष्टांत आपता कहे छे के–किल्ला, मंदिर विगेरे अनेक रमणीय स्थानोथी शोभित तुंगिया नगरीमां क्षमावंत, दयावंत, इन्द्रियोने जीतनार, पांच समिति तथा त्रण गुप्तिना धारक, अढार हजार शीलांगना धरनार–ब्रह्मचर्य पाळनार, ममता अने कलह रहित, पक्षरहित रहेनार, मिथ्यात्वमथीने छेदनार, आराधना साध करनार, पापरूप लेप रहित, शाखनी माफक निरंजन–राग रहित, जीव जेम कोई स्थळे न रोकाय तेम अप्रमत्त विहार करनार–आ प्रमाणे अनेक गुणवाळा एक साधु मध्याह्नसमये गोचरी अर्थे भमता भमता एक श्रावकने घेर गया मुनिने आवेला जोई श्राविका घणा हर्ष पामी अने वहोराववा अर्थे आहार लेवा रसोडामां गई तेवामां नजर करतां द्वार नीचुं जोईने मुनिवर आहार ग्रहण कर्या विना ज चाल्या गया श्राविका बहार आवी जुए छे तो साधु न मळे, तथी ते घणो ज अफसोस करवा लागी तेवामां एक बीजा साधु आवी चढ्या तेमने आहार वहोरावीने श्राविकाए तमने पहेला साधुना सघळा वृत्तांत कही 'तेमणे न वहोरयानुं अने तमे वहोरयानुं' कारण पूछ्युं जवाबमां ते बीजा साधुए कह्युं के–'जगतमां दंभी लोको घणा छे तेओ भोळा लोकोने ठगे छे आ प्रमाणे एक घरे वहोरे अने एक घरे न वहोरे एटले जगतमां जश प्रसरे के 'अमुक साधु तो घणा ज शुद्ध चारित्रपात्र छे,' परन्तु हुं तो ढोंगने तिरस्कारं छुं एटले जे स्थळे जेवी गोचरी मळे तेवी ग्रहण करी लउं छुं' बीजा मुनिनी आवी वात सांभळी श्राविका घणी दुःखी थई विचारवा लागी के–'साधु-साधु थईने पण सर्व मर्यो एक-बीजानी निंदा करे छे' आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां त्रीजा साधु आवी चढ्या तेमने पण गोचरी वहोरावीने श्राविकाए उपर्युक्त बने साधुओनी हकीकत कही कारण पूछ्युं जवाबमां त्रीजा मुनिए कह्युं के–'हे श्राविका ! तमारा रसोडानुं द्वार नीचुं छे अने प्रकाश आवतो नथी तथी प्रथम साधुए आहार वहोर्यो नथी, कारण के कह्युं छे के–" नीयदुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए। अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥१॥" जे घरमां द्वार नाचुं होय, अंधकार होय, कोठार होय ते घरमां साधुए गोचरी माटे न जवुं, कारण

के तेया गृहमा आवथी बराबर देखातु न होवाथी [illegible]
नथी ' भाविकाए तेमने पुन पुछयु के–' तो पछी [illegible]
ग्रहण कर्यो ? ' मुनिए उत्तर आप्यो के–'हु तो मार [illegible]
साध्वाचार पळातो नथी मारु जीवितव्य निष्फळ छे [illegible]
ते मुनिना आचार पाळे छे अने महातपस्वी पण छे ' [illegible]
साधु पण गया आ ज दृष्टात धन्यकुमार चरित्रमा [illegible]
पटलो ज छे के–ऊपर जे बीजा साधु छे ते त्या [illegible]
कथानो उपनय ए छे के–प्रथम साधु शुक्लपाक्षिक [illegible]
पाखो बने बाजु श्वेत होय छे तेम शुक्लपाक्षिक [illegible]
निर्मळ होय छे बीजा साधु कृष्णपाक्षिक [illegible]
बने बाजु श्याम होय छे तेम कृष्णपाक्षिक साधु [illegible]
होय [illegible] त्रीजा संविग्नपाक्षिक साधु [illegible]
ऊपरथी मलिन होय छे पण अदर श्वेत होय छे [illegible]
चारहीन होय छे पण तेनु अत करण निर्मळ [illegible]
गाथाना अर्थमा तेने त्रीजी कोटिमा बताबेल छे [illegible]
शकाय तो तेणे शु करवु ? ते बताबी [illegible]

जइ नवि सक्क काउ, सम्म [illegible]

तो सम्म भासिज्जा, जह [illegible]

[यदि नापि शक्य कर्तुं, सम्यग् [illegible]

तत' सम्यग् भाषते, यथा [illegible]]

गाथार्थ–कदाच कोई साधु [illegible]
पूर्वक सर्वज्ञभाषित क्रियाकलापने [illegible]
जे सत्य कथन कर्यु छे ते प्रमाणे [illegible]

विवेचन—कर्मोदयने कारण [illegible]
त्रिकरण शुद्धिपूर्वक पालन न करी [illegible]
प्ररूपेल तत्त्वस्वरूपने यथार्थ [illegible]
स्वात्मकल्याण साधी शके छे [illegible]
मानहानि थवाना भयथी [illegible]
वृद्धि थाय पोते प्रमादी [illegible]
साधुने शु फलप्राप्ति थाय ? [illegible]

ओसन्नो वि विहारे, कम्म सोहेइ सुलभबोही य ।
चरणकरण विसुद्ध, उववूहिंतो परूविंतो ॥ ३४ ॥

[अवसन्नोऽपि विहारे, कर्म शोधयति सुलभबोधिश्च ।
चरणकरणं विशुद्धं, उपबृंहयन् प्ररूपयन् ॥ ३४ ॥]

गाथार्थ—साधु योग्य क्रियाकलाप करवामां पोते शिथिल होय छतां निर्दोष चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनी प्रशंसा करनार तेमज अंशमात्र वांछा रहित तेनी शुद्ध प्ररूपणा करनार ज्ञानावरणीयादि कर्मने पातळां करे छे-क्षय करे छे अर्थात् सुलभबोधि थाय छे.

विवेचन—चरणसित्तरी अने करणसित्तरीना भेदोनी क्रमपूर्वक बे गाथा-
" वय ५ समणधम्म १० संजम १७, वेयावच्च १० च बंभगुत्तीओ ९ । णाणाइतिय ३ तव १२ कोह-निग्गहाइ ४ य चरणमेयम् ॥ १ ॥ पिंडविसोही ४ समिई ५, भावण १२ पडिमा १२ य इंदियनिरोहो ५ । पडिलेहण २५ गुत्तीओ ३, अभिग्गहा ४ चेव करण तु ॥२॥" ५ व्रत, १० यतिधर्म, १७ प्रकारनो संयम, १० प्रकारनी वैयावच्च, ९ ब्रह्मचर्यनी गुप्ति ३ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, १२ प्रकारनो तप, ४ क्रोधादि निग्रह-आ प्रमाणे चरणसित्तरीना ७० भेद थाय छे ४ प्रकारनी पिंडविशुद्धि, ५ समिति, १२ भावना, १२ प्रतिमा, ५ इन्द्रियोना निरोध, २५ प्रकारनी पडिलेहण, ३ गुप्ति ४ अभिग्रह-आ प्रमाणे करणसित्तरीना ७० भेद थाय छे हवे क्रमपूर्वक तेनुं संक्षिप्त स्वरूप कहे छे-पांच व्रत-१ मन, वचन अने कायाथी हिंसानो त्याग एटले पोते न करे, न करावे तेमज करनारने सारो न कहे ते सर्वथी प्राणातिपातविरमण, २ एवी ज रीते मृषावाद विरमण-जूठुं न बोलवु, ३ अदत्तादानविरमण-चोरी न करवी, ४ मैथुन विरमण-स्त्रीससर्गनो त्याग अने ५. परिग्रहविरमण धन, धान्यादिकनो त्याग दश यतिधर्म-१ क्षमा-क्रोधने जीते, २ मुक्ति-लोभ न राखे, ३ आर्जव-कपट न राखे, ४ मार्दव-अहंकारनो त्याग, ५. लाघव-परिग्रह(अधिक उपकरण)नो त्याग, ६ सत्य बोले, ७ संयम-जयणापूर्वक वर्ते, ८ तपश्चर्या करे, ९ सुविहित साधुओने पोताना वस्त्रादिक वहोरावे अने १० ब्रह्मचर्य पाळे सत्तर प्रकारनो संयम-१ पृथ्वीकायनी रक्षा करे ते पृथ्वीकायसंयम, २-५. एवी रीत अप्काय(जळ), तेउकाय(अग्नि) वाउकाय (पवन) अने वनस्पतिकाय (लीलोतरी)नी जयणा, ६-९. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय तेमज पचेंद्रियनी जयणा, १० अजीवसंयम-पच्चुस्तक तथा पंचवर्णना उपभोग न करे, कदाच करे तो जय

नाचूर्यक करे अथवा सुवर्णादिकनो त्याग, ११ प्रेक्षा-ऊभा रहेता, बेसता, शयन करता नेत्रद्वारा तपासवुं-जावु, १२ उपेक्षा-ते बे प्रकारनी छे [१] कोई साधुने चारित्रमा शिथिल देखे तो तेने प्रेरणा करे पण तेने अशुद्ध क्रिया करता जोई उपेक्षा न करे तेमज कोई गृहस्थ आरंभनु काय करे तो तेने प्रेरणा न करे, १३ प्रमार्जना-भूमिनी, पोताना चरणनी तथा वसतिनी प्रमाजना, १४ परिष्ठापना-अशुद्ध गोचरी आवी गइ होय तो तेने तेमज लघुनीति अने वडीनीतिने विधि पूर्वक परठवे, १५-१७ मन, वचन अने कायानो सयम-मिथ्या कार्यमा मन न परोवे, पापकारी वचन न बोले तेमज आरंभना कायमा सहयोग न दे वाचकवर्य उमास्वातिवाचके प्रशमरति ग्रंथमा कह्यु छे के—" पञ्चाश्रवाद्विरमण, पञ्चेन्द्रियनिग्रहः कपायजयः। दण्डत्रयविरतिश्चे-ति संयमः सप्तदशभेदः ॥ १ ॥" पांच आश्रवनो त्याग, पांच इन्द्रियोनो निग्रह, चार कषायनो जय, मनदंड, वचनदंड अने कायदंड-ए त्रण दंडनो त्याग-ए सत्तर प्रकारनो संयम छे परमार्थथी तो बने प्रकारो सरखा छे दश प्रकारनी वैयावच्च-१ आचार्यनी, २ उपाध्यायनी, ३ स्थविरनी, ४ तपस्वीनी, ५ ग्लान साधुनी, ६ लघु अथवा तो नूतन दीक्षितनी, ७ कुलनी, ८ गणनी, ९ संघनी अने १० साधर्मिकनी वैयावच्च नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति-१ स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित स्थानमा वसवु, २ स्त्री साथे कथा न करवी, एकली स्त्रीओनी ज सभा होय तो तेवी सभामा धर्मकथा पण न करवी, ३ जे स्थाने स्त्री बेठी होय ते ते स्थळे बे घडी पूर्वे न बेसवु, ४ स्त्रीओनी इन्द्रियो जोवी नहीं, ५ भींतने आतरे स्त्री-पुरुष कामक्रीडा करी रह्या होय त्यां न रहेवु, न सांभळवु, ६ गृहस्थपणामा पूर्वे भोगवेला भोगो याद न करवा, ७ मद्य ह विगयादिक स्निग्ध आहार न करवा, ८ घणो पडले बत्रीश कोळिया उपरांत आहार न करवो, ९ शरीरनी विभूषा-टापटीप न करवी त्रण ज्ञानादिक-ज्ञान, दर्शन अने चारित्र बार प्रकारे तपनु वर्णन अगाउ पृष्ठ (१४६) पर आवी गयेल छे क्रोध, मान, माया अने लोभ-ए चार कषायोनो निग्रह-आ प्रमाणे चरणसित्तरीना सित्तेर भेद हवे करणसित्तरीना भेदो कहे छे ४ पिंड विशुद्धि-१ वस्त्र, २ पात्र, ३ वसति अने ४ चार प्रकारनो (अशन पान, खादिम अने स्वादिम) आहार दोष रहित ग्रहण करे पांच समिति (ईर्या, भाषा, एषणा, आदानभंडमत्तनिक्षेपणा अने पारिष्ठापनिका) रूडी रीते पाळे, बार प्रकारनी भावना भाव-१ अनित्य-संसारने अनित्य विचारे, २ अशरण-संसारमा कोइ कोईनुं नथी, ३ संसार-अनंता भव कर्या अने अशुभ कर्मबंधथी करवा पडशे, ४ एकत्व-हुं एकलो आव्यो छु अने एकला जवानु छ, ५ अन्यत्व-आ दृश्यो देखाती वस्तुओ अन्य छे, मारी नथी, ६ अशुचि-संसारमां कांई शुचि-पवित्र स्थान नथी, ७ आश्रव-पापथी जीवने कर्मबंध थाय छ, ८ संवर-पापने

अरक्षाधवाना मार्गनी विचारणा, ९ निर्जरा-कर्मोनो क्षय करवानी भावना, १० धर्मस्वाख्यातता-वचलिखपित धर्मनु स्वरूप, ११ लोकभावना-चौद राजलोकनु स्वरूप अने १२ बोधिभावना-समकित संबंधी भावना भिक्षुनी बार प्रतिमा-१ एकमासिकी-एक दात आहार अने एक दात पाणी लेवु, २ बे मासनी तेमां बे बे दात, ३ त्रण मासनी तेमां त्रण त्रण दात, ४ चार मासनी ५ पांच मासनी, ६ छ मासनी, ७ सात मासनी, ८ पहेला सात रात्रिदिवसनी, ९ बीजा सात रात्रिदिवसनी, १० त्रीजा सात रात्रिदिवसनी, ११ एक अहोरात्रिनी अने १२ एक रात्रिनी पांचे इंद्रियोने दमे-वश करे अने तेना विषयो पर राग-द्वेष न करे

पचीश प्रकारनी पडिलेहणा-" दिट्ठिपडिलेह एगा, छउड्ढपक्खोडतिगतिगंतरिआ । अक्खोडपमज्जणया, नव नव मुहपुत्तिपणवीसा ॥ १ ॥" १ दृष्टिपडिलेहणा-मुहपत्ति खोलीने जोवु २-७ स मुहपत्तिने ऊंचे पकडी राखीने त्रण वार आ बाजु अने त्रण वार पेली बाजु खंखेरवी-झाटकवी, ८-२५ पछी हथेलीने अडे नहीं तेवी रीते नव अक्खोडा करवा अने पछी हथेलीने स्पर्शीने प्रमार्जना करता नव पक्खोडा करवा ए प्रमाणे मुहपत्तिनी पचीश प्रतिलेखना जाणवी शरीरनी पचीश प्रतिलेखना आ प्रमाणे-"पायाहिणेण तिअतिअ, वामेयरबाहुसीसमुहहिअए । असुड्ढाहोपिट्ठी, चउछप्पयदेहपणवीसा ॥ २ ॥" डाबी भुजानी त्रण, जमणी भुजानी त्रण मस्तकनी त्रण, मुखनी तथा हृदयनी त्रण-त्रण, डाबा तथा जमणा पडखानी बच्चे, डाबा तथा जमणा पगनी त्रण त्रण कुल २५ त्रण गुप्ति-१ मनगुप्ति, २ वचनगुप्ति अने ३ कायगुप्ति चार अभिग्रह १ द्रव्याभिग्रह-द्रव्यनो नियम, २ क्षेत्राभिग्रह-क्षेत्रनु प्रमाण, ३ कालाभिग्रह-कालनु प्रमाण अने ४ भावाभिग्रह-अन्य व्यक्तिना भाव (परिणाम)नो विचार करवो ए प्रकारे चरणसित्तरीना सर्व भेदो ७० थया हवे संविज्ञपक्षीनु कर्तव्य दर्शावता जणावे छे के—

सम्मग्गमग्गसंपट्ठिआण, साहूण कुणइ वच्छल्लम् ।
ओसहभेसज्जेहि य, सयमन्नेण तु कारेइ ॥ ३५ ॥

[सन्मार्गमार्गसंप्रस्थिताना, साधूना करोति वात्सल्यम् ।
औषधभेषज्यैश्च, स्वय अन्येन तु कारयति ॥ ३५ ॥]

गाथार्थ-संयममार्गनु सावधानपणे सेवन करता साधुजनोनुं संविज्ञपाक्षिक मुनि औषध-भेषजवडे वात्सल्य पोते करे अने बीजा पासे पण करावे.

विवेचन-सर्वज्ञ महात्मा पुरुषोए सेवेला अने प्रकाशित करेला संयम धर्मने विषे जे साधुओ प्रवर्तमान होय तेवा साधुने कर्मवशात् कोइ पण प्रकारनो व्याधि थयो होय तो तेमनी समाधिने माटे तथा 'शरीर धर्मायतन छे'

ए हेतुने लक्षमा राखीने औषध अथवा भेषज आपीने शाता पमाडे एक द्रव्य धातु औषध कहेवाय अने जेमा अनेक द्रव्यो मिश्रित थया होय ते भेषज कहेवाय अथवा बहारना उपयोगमा आवे ते औषध अने अंतरमा भोग्य वस्तु शरीर वपराय ते भेषज कहेवाय ए बे तो मुख्य गणाव्या, परन्तु तदुपरांत अनेक प्रकारे साधुओने साता उपजे तेवा कार्यो करे अने ' महामुनिनी भक्ति करवाथी कर्मना निर्जरा थशे ' ए प्रमाणे अन्यने पण उपदेश दईने पासे पण औषधादि कराव अने पोते अनुमोदना करे आवा प्रकारनु [illegible] भक्तिभावथी वात्सल्य करनार संविग्नपक्षी जाणवो, परन्तु आवी रीते पारका वात्सल्य करनार थोडा ज होय छे ते दर्शावे छे—

भूए अत्थि भविस्संति, केइ तेलुक्कनमिअकमजुअला ।
जेसिं परहिअकरणिक्क–बद्धलक्खाण वोलिही कालो ॥३६॥

[भूताः सन्ति भविष्यन्ति, केचित् त्रैलोक्यनतक्रमयुगलाः ।
येषां परहितकरणैक–बद्धलक्षाणां व्यतिक्रामति कालः ॥ ३६ ॥]

गाथार्थ–स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळवासी लोकोए जेमना [illegible] नमस्कार करेल छे एवा केटलाक श्रेष्ठ जीवो भूतकाळमा थई गया, [illegible] काळे विद्यमान छे अने भविष्यकाळमा थशे के जेओनो काळ [illegible] अन्यनु हित करवा मात्रना लक्षपूर्वक व्यतीत थाय छे

विवेचन–राधावेध साधवानी इच्छावाळानुं एकमात्र [illegible] पूतळीना हलन–चलनमा ज मग्न होय छे, पोतानी [illegible] विशाळ सभासमूह प्रत्ये तेनु दुर्लक्ष होय छे तेवी रीते [illegible] रस धरावता श्रेष्ठ साधुपुरुषोनु मनमात्र परमार्थमा ज [illegible] दीक्षापर्यायमा मोटा होय छता पण रत्नत्रयीनु आराधन [illegible] अल्पपर्यायवाळा मुनिनी पण वैयावच्च निरभिमानपणे [illegible] आवा निःस्वार्थ भाववाळी अने परहिताभिलाषी [illegible] होय छे, केटलाक तो एवा साधुओ होय छे के जेना [illegible] दुःखने अनुभव छे

तीआणागयकाले, केई होहिंति गोयमा ! सूरी ।
जेसिं नामग्गहणे वि, होइ नियमेण पच्छित्तं ॥३७॥

[अतीतानागतकाले, केचिद् भविष्यन्ति गौतम ! सूरयः ।
येषां नामग्रहणेऽपि, भवति नियमेन प्रायश्चित्तम् ॥ ३७ ॥]

गाथार्थ–हे गौतम ! भूत, भविष्य अने वर्तमानकाळमां एवा केटलाक आचार्यपद नामधारक साधुओ होय छे के जेमना नामस्मरण मात्रथी प्रायश्चित लागे अर्थात् तेमनो परिचय करवाथी तो प्राप्त थती दु:खपरंपरानुं वर्णन शुं करवुं !

विवेचन–श्रीमहानिशीथसूत्रना पांचमा अध्ययनमां कह्युं छे के–" इत्थ चायरियाण, पणपण्णं होंति कोडिलक्खाओ । कोडिसहस्से कोडी–सए य तह एत्तिए चेव ॥ १ ॥ एतेसिं मज्झाओ, एगे निव्वुडइ गुणगणाइण्णे । सव्वुत्तम भंगेणं, तित्थयरस्साणुसारिगुरू ॥२॥" पंचावन लाख क्रोड, पचावन हजार क्रोड, पांचसो क्रोड अने पचावन क्रोड एटला आचार्यो पैकी केटलाक आचार्यो आ संसाररूपी समुद्रमां डूबशे अने सर्व रीते उत्तम एवा तीर्थंकरभगवंतना मार्गने जेओ अनुसरशे तेओ तरी जशे एवा तरी जनारा आचार्योने ज खरेखरा गुरु जाणवा बीजा आचार्यो तो पोते डूबनारा अने बीजाने डूबाडनारा होवाथी तेनुं नामस्मरण पण पापकारी छे तो तेवा आचार्योनो परिचय कराय ज केम !

जओ–सयरी भवन्ति अणविक्खयाइ, जह भिच्चवाहणा लोए ।
पडिपुच्छाहिं चोयण, तम्हा उ गुरू सया भयइ ॥ ३८ ॥

[यत'–स्वेच्छाचारीणि भवन्ति अनपेक्षया, यथा भृत्यवाहनानि लोके ।
प्रतिपृच्छाभिश्चोदनाभिः, तस्मात्तु गुरुः सदा भजते ॥ ३८ ॥]

गाथार्थ–जेम नोकर–चाकर तथा हाथी, घोडा अने वृषभादिक शिक्षा विना स्वेच्छाचारी बनी जाय छे तेम शिष्य पण स्वच्छंदाचारी बनी जाय छे माटे गुरुए प्रतिपृच्छादिद्वारा शिखामण आपी तेमने हमेशां काबूमां राखवा

विवेचन–हस्तीने पण अंकुशनो अंकुश छे प्राणीनो स्वभाव ज एवो छे के तेने स्वच्छंदता प्रिय थइ पडे छे, परन्तु तेने सन्मार्गे चालवामां आय, केळववामां आवे तो ते सुंदर परिणाम निपजावी शके छे आपणे जाणीए छीए के अश्व, वृषभ विगेरेने प्रथम पलोटवा पछी ज वाहनमां जोडे छे, परन्तु तद्दन नवीन ज पकडेल अश्वने जोड्यो होय तो ते गाडाने के घोडागाडीने अवळे मार्गे लइ जइ भागी नाखे छे तेनी माफक शिष्यने पण स्वच्छंदाचारी विचरवा न देवा तेमने पण पृच्छा, प्रतिपृच्छादिकथी पोताना अंकुशमां राखवा अने हितशिखामण आपवी आ आ प्रमाणे आचार्य न करे तो शिष्य उन्मार्गे चढी जइ दुर्गतिमां जाय अने तेना पापना भागीदार आचार्य पण बने आवा प्रकारनी

प्रेरणा आचार्य न करे तो तेवा आचार्यने शु फळ प्राप्त थाय ? ते जणावे छे—

जो उ पमायदोसेणं, आलस्सेण तहेव य ।
सीसवग्गं न चोएइ, तेण आणा विराहिया ॥ ३९ ॥

[यस्तु प्रमाददोषेणा-लस्येन तथैव च ।
शिष्यवर्गं न प्रेरयति, तेनाज्ञा विराधिता ॥ ३९ ॥]

गाथार्थ–जे आचार्य, उपाध्याय अने गणावच्छेदकादिक प्रमाद अथवा आळसथी शिष्यवर्गने संयमानुष्ठान माटे प्रेरणा करता नथी ते जिनाज्ञाना विराधक जाणवा.

विवेचन–वडीलवर्गनुं काम हमेशां सत्कार्यनी प्रेरणा करवानुं छे आचार्य, उपाध्याय विगेरे गच्छनी मुख्य व्यक्तिओ पोतानी निश्रामां रहेल शिष्य समूहने सारणा, वारणा, चोयणा, पडिचोयणादिक प्रेरणा कर्या ज करवी जेथी शिष्यवर्ग प्रमादी के शिथिल न बने परंतु आचार्य प्रमुख प्रमाद, आळस, भय शोक, कुतुहल विगेरे तेर काठियाना पाशमां फसाईने प्रेरणा न करे, बेदरकारी दर्शावे तो तेवा आचार्य प्रमुख जिनाज्ञाना विराधक होईने अनंतसंसारी थाय छे आ प्रमाणे गुरुना लक्षणो दर्शावी बाद तेनो उपसंहार करी, हवे गच्छना लक्षण वर्णवता कहे छे—

संखेवेण मए सोम !, वण्णियं गुरुलक्खणम् ।
गच्छस्स लक्खणं धीर !, संखेवेणं निसामय ॥ ४० ॥

[संक्षेपेण मया सौम्य !, वर्णितं गुरुलक्षणम् ।
गच्छस्य लक्षणं धीर !, संक्षेपेण निशामय ॥ ४० ॥]

गाथार्थ–हे सौम्य गौतम ! आ प्रमाणे संक्षेपथी में गुरुना लक्षणो कह्या हे धीर ! हवे हुं गच्छनुं लक्षण कहीश ते तुं एकाग्रपणे सांभळ

आचार्यस्वरूपनिरूपण नामनो
प्रथम अधिकार समाप्त

॥ यतिस्वरूपनामा द्वितीयोऽधिकारः ॥

गीअत्थे जे सुसंविग्गे, अणालस्सी दढव्वए ।
अक्खलियचरित्ते सययं, रागद्दोसविवज्जिए ॥ ४१ ॥

निट्ठविअअट्ठमयट्ठाणे, सोसिअकसाए जिइंदिए ।
विहरिज्जा तेण सद्धिं तु, छउमत्थेण वि केवली ॥ ४२ ॥

[गीतार्था य सुसंविग्नः, अनालस्यी दृढव्रतः ।
अस्खलितचारित्रः सततं, रागद्वेषविवर्जितः ॥ ४१ ॥
निष्ठापिताष्टमदस्थानः, शोषितकषायो जितेन्द्रियः ।
विहरेत्तेन सार्धं तु, छद्मस्थेनापि केवली ॥ ४२ ॥]

गाथार्थ—जे गीतार्थ संवेगवान, वैयावच्च करवामां आळस रहित–उद्यमी, दृढव्रती, निर्दोष चारित्रवाळा, निरंतर राग–द्वेष रहित, आठमद रहित, पातळा पडी गयेल कषायवाळा अने जितेन्द्रिय होय तेवा छद्मस्थ गुणशाळी साधुनी साथे केवळी भगवंत विचरे छे

विवेचन—पहेला अधिकारमां आचार्यनां लक्षणो दर्शाव्यां परंतु आचार्य होय तो ज गच्छ कहेवाय माटे हवे गच्छ–यतिओना समुदायनुं वर्णन करे छे जे गुरुसूत्रना अर्थने बराबर जाणे अथवा सूत्र तथा अर्थ उभयना सारी रीते ज्ञाता होय ते गीतार्थ कहेवाय गीतार्थनी विशेष समजण माटे श्री बृहत्कल्पभाष्यपीठिकानी बे गाथा " गीअं मुणितेगट्ठं, विदिअत्थं खलु वयंति गीयत्थम् । गीएण य अत्थेण य, गीअत्थो वा सुअं गीअं ॥ १ ॥ गीएण होइ गीई, अत्थी अत्थेण होई नायव्वो । गीएण य अत्थेण य, गीअत्थं तं विआणाहि ॥ २ ॥ पृ १४७ ऊपर दर्शावाइ गइ छे आवा गीतार्थ अने अतिशय संवेगवाळो, वैयावच्चादिकमां अप्रमादी, निष्कळंक उत्तरगुणवाळो, व्रति

चार रहित चारित्रवाळा अर्थात् शुद्ध मूळगुणवाळा, आठ*मद रहित, चार कषाय–क्रोध, मान, माया अने लोभ तथा नव नोकषाय–हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, स्त्री, पुरुष अने नपुंसक वेद जेमणे पातळा–क्षीण करी नाख्या होय, तेमज पांच इन्द्रियोना त्रेवीश विषयोने जेणे जीत्या होय तेवा प्रकारना गीतार्थ साधु छद्मस्थ होय एटले केवळज्ञान प्राप्त न कर्युं होय छतां पण तेमनी साथे केवळज्ञानी मुनि विचरे तेमज काम करे छद्मस्थ साधु तो केवळी साथे विचरे तेमां विशेषता नथी पण जे त्रण जगतना भावोने पोतानी हथेलीमां रहेला जळबिंदुनी जेम समये समये जाणे छे तेवा केवळी भगवंत पण उपर्युक्त गुणवाळा गीतार्थ मुनि साथे विचरे ते ज खरेखर आश्चर्य कारक घटना छे हवे केवा साधुओ साथे विहार न करवो ते जणावे छे—

जे अणहीअपरमत्थे, गोअमा ! संजए भवे ।
तम्हा ते वि विवज्जिज्जा, दुग्गइपथदायगे ॥ ४३ ॥

[येऽनधीतपरमार्था, गौतम ! संयता भवन्ति ।
तस्मात्तानपि विवर्जयेत्, दुर्गतिपथदायकान् ॥ ४३ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! संयममां वर्तता छतां जेणे शास्त्रनो परमार्थ जाण्यो नथी अने तेने परिणामे जे प्राणिओने दुर्गतिना मार्गे दोरी जाय छे तेवा अगीतार्थ साधुथी सदंतर वेगळा ज रहेवुं.

विवेचन—आगमना रहस्य केटला प्रकारना छे ते नयथी श्रीआचारांग सूत्रना चोथा अध्ययनमां कह्युं छे के-“ जे आसवा ते परिस्सवा १, जे परिस्सवा ते आसवा २, जे अणासवा ते अपरिस्सवा ३, जे अपरिस्सवा ते अणासवा ४ ॥ ” जेनाथी आठ प्रकारनां कर्मो बंधाय ते आश्रव कहेवाय, अने काणा घडामांथी जेम पाणी झरे तेम कर्म झरे तेने परिश्रव कहीए जे आश्रव छे ते परिश्रव छे, १, जे परिश्रव छे ते आश्रव छे २, जे अनाश्रव छे ते अपरिश्रव छे ३ अने जे अपरिश्रव छे ते अनाश्रव छे ४ तेनो परमार्थ ए छे के-(१) गृहस्थ जेम माला, पुष्प, चन्दन, विलेपन, स्त्री तेमज भोगोपभोगना पदार्थोने सुखनुं कारण जाणी तेमां ज रक्त रहे तो ते आश्रव छे, ज्यारे तत्त्वना जाणनाराने

* १ जाति–हुं ऊंची जातिनो छुं, २ कुल–हुं श्रेष्ठ कुळमां जन्म्यो छुं, ३ रूप–मारुं सौन्दर्य अतिशय छे, ४ बल–हुं अतिशय बळवान छुं ५ लाभ–मारे घणो लाभ छे, ६ श्रुत–हुं सर्व शास्त्रमां पारगामी बनी गयो छुं, ७ तप–मारा जेवो कोई तपस्वी नथी अने ८ ऐश्वर्य–मारी जेटली कोईने ऋद्धिसिद्धि नथी—आ प्रमाणे अभिमानना आठ स्थानक छे

कर्मबंधना ते ज कारणो असारभूत जणाय छे अने विरक्ति पामे छे पटले निर्जराना स्थानक थाय छे (२) जैन मुनिनो तप, चारित्र तथा दशविध चक्रवाल सामाचारी इत्यादिक निर्जराना कारण छे परन्तु कोइक अशुभ अध्य वसायवाळाने अशुभ कर्मना उदयथी मिथ्या परिणाम थाय तो ते सवर घणो करे छे तो पण मन व्याकुळ होवाथी आश्रव करे छे (३) जेमा अनाश्रव थाय-कर्मबंध न थाय तेवा महाव्रतादिकने विषे पण अशुभ कर्मोदयथी अध्य वसाय बदलाय त्यारे ते तेने कर्मबंधनु कारण थाय दृष्टांत सरोष-प्रसन्नचंद्र राजर्षि प्रसन्नचंद्र राजर्षि काउस्सग्ग ध्यानमा स्थित रह्या छे तेवामा दुर्मुख नामनो दूत त्याथी निकळ्यो अने बोल्यो के-'तमारा बाळपुत्रनु राज्य शत्रुथी लेवामा आव्यु छे' आ वचन साभळता ज पोतानी मुनि अवस्थानु विस्मरण थइ जवाथी तेन ते ज स्थितिमा शत्रुराजा साथे मानसिक युद्ध करवा लाग्या आ प्रमाणे पचमहाव्रतधारी होवा छता अशुभ अध्यवसायथी तेमने कर्मबंध थयो (छेवटे तो पाछी विचारधारा बदलाइ अने क्षण मात्रमा सकल कर्मनो क्षय करी केव ळज्ञान प्राप्त कर्यु) (४) कर्मबंधना कारण होवा छता कर्मबंध न थाय दा त शासननी हीलना अटकाववा माटे कणेरनी कामडी वेरवनार लघु शिष्य अथवा शासननी उन्नति करवा माटे करातो प्रयास परन्तु तेमां पोतानी पूज्यता के महत्तानो अंश मात्र रह्यो होय तो अवश्य पापबन्ध थाय आवा प्रकारना आगमना रहस्यने जे जाणे नहीं तेने अगीतार्थ जाणवो वळी उप्पन्ने इ वा १ विगमे इ वा २ धुवे इ वा ३। आ त्रिपदीनो अर्थ बराबर जाणे उत्पत्ति चार प्रकारनी छे-१ जीवथी जीवनी उत्पत्ति, जेम मातापिताथी पुत्रनी उत्पत्ति, २ जीवथी अजीवनी उत्पत्ति, जीवता माणसना शरीरथी नख, केशनी उत्पत्ति ३ अजीवथी जीवनी उत्पत्ति, काष्ठ(लाकडा)थी घुणानी उत्पत्ति अथवा छाणथी इयळनी उत्पत्ति तेमज ४ अजीवथी अजीवनी उत्पत्ति, प्रयोग वडे पाषाणमांथी सोनानी उत्पत्ति विनाश पण चार प्रकारनो छे १ जीवथी जीवनो विनाश, सर्पदंशथी माणसनु मृत्यु, २ जीवथी अजीवनो विनाश-नोळिया ना सचारथी दूध अथवा घीमडाना योगथी लोटनु विणसी जवु, ३ अजीव थी जीवनो विनाश, झेरथी प्राणी मृत्यु पामे अने ४ अजीवथी अजीवनो नाश, छ शथी दूधनो नाश ध्रुवपणु पण आ प्रमाणे जाणवु-सोनाना कंकण भागीने केयूर बनाववाथी तेमा कंकणनो विनाश थयो, केयूरनी उत्पत्ति थइ परन्तु सोनु तो ध्रुवपणे रह्यु ज छाशना योगथी दूधनु दही थयु तेमा दूधनो विनाश ने दहीनो उत्पत्ति थइ परन्तु जे स्निग्धपणाना पुद्गलो हता ते तो ध्रुवपणे रह्या ज अथवा जीव मेरुपर्यंत, देवलोकना विमानो विगेरेथी शाश्वत नयना मतथी ध्रुवपणु साबित ज छे आ प्रमाणे त्रिपदीनो गंभीरार्थ छे हवे उत्सर्ग अने अप वाद संबंधी वर्णन करता कहे छे के—'उस्सग्गसुअ किंची, किंची अववाइअ

मरे सुत्त । किंची तदुभयसुत्त, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥१॥" उत्सर्ग, अपवाद अने तदुभय पहले उत्सर्ग अपवाद अने अपवाद उत्सर्ग-ए प्रमाणे आगमना चार प्रकार छे वळी आगमना रहस्य पण ए चार न जोडाय ते माटे उत्सर्ग उत्सर्ग अने अपवादापवादिक ए बे भेद मेळवतां कुल छ भेद दर्शावे छे १ गोचरी करवा निकळेला साधुने बे घरनी वचमां येमवुं न कल्पे ते उत्सर्ग, २ ग्लान साधुओने येमवुं कल्पे ते अपवाद, ३ रात्रिने विषे अथवा विकाळे साधु साध्वीओने शय्या-संथारो ग्रहण करवो न कल्पे परन्तु जो दिवस पूर्वे जो ते पडिलेहीने राख्यो होय तो ग्रहण करवो कल्पे ते उत्सर्गअपवाद, ४ केळां प्रमुख काचां फळ जो विधिपूर्वक छेदन-भेदन करायेल होय ते कल्पे पण अविधिए छेदन-भेदन करायेलां न ल्या ते अपवादउत्सर्ग, ५ प्रथम पोरसीमां ग्रहण करेल गोचरी चोथी पोरसी पर्यन्त न राखवी, कदाच रही गई होय तो तेने पोते वापरे नहीं, बीजाने वपरावे नहीं अने वापरनारनी अनुमोदना करे नहीं करे तो चारमासी प्रायश्चित्त लागे ते उत्सर्गउत्सर्गिक, ६ जे सूत्रमां अपवाद दर्शावीने तेओने विषे वळी अर्थथी आज्ञा थाय ते अपवादापवादिक आ हकीकतने लगतुं विशेष वर्णन श्रीबृहत्कल्पनी वृत्तिमां जणावेल छे वळी आ सूत्रनी छ भंगी निशीथचूर्णीना सोळमा उद्देशामां पण वर्णवेल छे आ प्रमाणे गीतार्थ शास्त्र-रहस्यना जाण होय वळी सात नयना गंभीरार्थने पण जाणवावाळा होय- "नेगम १ संगह २ ववहार ३-ज्जुसुए ४ चेव होइ बोधव्वो। सद्दे ५ अ समभिरूढे ६, एवंभूए ७ अ मूलनया ॥१॥" १ नैगम-सामान्य विशेषना भेद पाडीने न बोले २ संग्रह-सर्व वस्तुओने सामान्य रूपे ग्रहे ३ व्यवहार सर्व द्रव्योनो भेद पाडीने करे ४ ऋजुसूत्र वर्तमान काळमां जेवुं होय तेवुं ग्रहे ५ शब्द-वर्तमानमां जे वर्ते छे तेने ज प्रमाण माने ६ समभिरूढ-वस्तुनुं बीजी वस्तुमां संक्रमण थाय ७ एवंभूत-शब्दने अर्थवडे विशेष प्रकारे दर्शावे अने अर्थने शब्दवडे विशेष वर्णवे-आ प्रमाणे मूळ सात नय छे तेना दरेकना १००-१०० भेदो पडे छे सात सो भेदो थाय छे बीजा मत प्रमाणे पांच सो भेद जणाव्या छे-नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र-आ चारना चार सो भेद तथा शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए त्रण एक होवाथी तेना सो गणतां पांचसो वळी छ सो, चार सो अने बसो भेद पण दर्शावेला छे, ते आ प्रमाणे-संग्रह अने व्यवहारने एक गणवाथी छ सो, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र अने शब्द ए चार एक होवाथी १०० अने बाकीना त्रणना त्रण सो-कुल ४०० नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र ए चार द्रव्यास्तिक नयना १०० अने शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत पर्यायास्तिक नयना १०० कुल २०० ज्यारे चरण, धर्म, संख्या अने द्रव्य-आ चारे अनुयोग संयुक्त हता त्यारे परस्पर विसंवाद दूर करवा माटे आ प्रमाण गणत्री थई शकती परन्तु ज्यारथी

श्रीआर्यरक्षितसूरि (वृत्तांत माटे जुओ पृ. १०६) ए अनुयोग विभक्त कर्या त्यारथी थाता आश्रयी नय-वर्णन करतुं सर्व नयोनो समावेश बेमां थाय छे-व्यवहारनय ने निश्चयनय अथवा द्रव्यनय अने भावनय वा ज्ञान अने चारित्र आ सर्वनयोना प्रकारना सार शुं ? ते जणाववा कहे छे के—" सव्वेसिं पि नयाणं, बहुविहवत्तव्वय निसामित्ता । तं सव्वनयविसुद्धं, जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥ " सर्वे प्रकारना नयो घणा प्रकारना छे ते सांभळीने अवधारीने जे चारित्रपात्र साधु होय तेने ज सर्व नयविशुद्ध जाणवो, अर्थात् चारित्रनय अने ज्ञाननयमां ज सर्वे नयोनो समावेश थइ जाय छे. श्रीआवश्यकनिर्युक्तिमां आ सात नयने समजावतुं एक दृष्टांत आप्युं छे ते आ प्रमाणे-देवदत्त नामनो कोई पुरुष कुहाडी लइने अटवी तरफ चाल्यो, तेवामां तेने कोई अन्य पुरुष मळ्यो तेणे पूछ्युं-'क्यां जाओ छो ?' देवदत्ते जवाब आप्यो-'पायलां (एक जातनुं लाकडानुं माप) माटे जाउं छुं' आ जवाब ते अविशुद्ध नैगमनय जाणवो. बाद अटवीमां लाकडुं कापता बीजो कोई पूछे छे-'शुं करो छो ? शुं छेदो छो ?' ते बोल्यो-'पायलां कापुं छुं' आ विशुद्धनैगम. बाद ते लाकडाने छोली रह्यो छे तेवामां कोइक बीजाए पूछ्युं-'शुं छोलो छो ?' तेणे जवाब आप्यो-'पायलो छोलुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम. वळी कोइक बीजाए तेने पायलो खोदता जोइने पूछ्युं-'शुं खोदो छो ?' तेणे जवाब आप्यो-'पायलो खोदुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम. पछी तेने समारता देखीने कोइक पूछ्युं-'शुं समारो छो ?' त्यारे जवाब आपता कह्युं के-'पायलो समारुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम. आ प्रमाणे पायलो तैयार करीने ते बेठा छे तेवामां कोइए पूछ्युं-'शुं लइने बेठा छो ?' तेणे कह्युं-'पायलो लइने बेठो छुं' आ प्रमाणे नामनिर्देशपूर्वक कहेवुं ते विशुद्धतर नैगम छे. छेल्ला प्रकार विशुद्ध छे अने ते प्रथम नय कहेवाय. आ प्रमाणे पायलाने पायलो जणाववो ते बीजो व्यवहार नय छे, एटले के ज्यांसुधी पायलो न थयो होय त्यांसुधी तेने पायलो न माने परंतु पायलो थया पछी ज माने ते बीजो नय. ते पायलो धान्यथी भरेल होय अगर तो माप मापवाना काममां आव्यो होय त्यारे संग्रहनय. पहेला बे नयमां तो पायलो थयो एटले पायलो कह्यो परंतु संग्रहनय तो ज्यारे ते पायलानुं कार्य करतो थयो एटले के धान्यादिकनुं मान कर्युं त्यारे पायलो कहे छे. ऋजुसूत्र तो जे पायलो छे तेने अने तेना द्वारा मपाता धान्यादिकने पण पायलो माने छे. छेल्ला त्रण शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत-ए त्रण नय तो पायलाना अधिकार ज्ञानवाळाने पण पायलो जणाय छे, आ भावनय छे. वळी श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमां जणावेल बीजा दृष्टांतद्वारा आ ज विषय जणाय छे-देवदत्त नामना पुरुषने कोईए पूछ्युं के-'तमे क्यां रहो छो ?' तेणे जवाब आप्यो-'लोकमां रहुं छुं' आ अविशुद्धनैगम. प्रश्नकार पुनः पूछ्युं-'अधोलोक, तिर्छालोक अने

ऊर्ध्वलोक-एम त्रण लोक छे ते त्रणमां तुं वसे छे ?' त्यारे तेणे कह्युं-'तिर्च्छा लोकमां रहुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम नये फरी पूछयुं- तिर्च्छालोकमां तो जम्बूद्वीपथी प्रारंभीने स्वयंभूरमण समुद्र सुधी असंख्याता द्वीप समुद्र छे ते सर्वमां तुं रहे छे ?' देवदत्ते कह्युं-'हुं जंबूद्वीपमां रहुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम 'जंबूद्वीपमां तो भरत, ऐरवत, महाविदेहादि क्षेत्रो छे ते सर्वमां तुं वसे छे ? जवाबमां तेणे कह्युं के-'हुं भरतक्षेत्रमां रहुं छुं' विशुद्धतर नैगम नये वळी पूछयुं-'भरत ना बे छे दक्षिणार्द्ध अने उत्तरार्ध तो ते बन्नेमां तुं रहे छे ?' तेणे कह्युं-'दक्षिणार्द्ध भरतमां रहुं छुं' विशुद्धतर नैगम तेणे फरी पूछयुं-'दक्षिणार्द्ध भरतमां तो अनेक नगर, ग्राम तथा सन्निवेशादि छे ते सर्वमां तुं रहे छे ?' तेणे जवाब आप्यो-'हुं पाटलीपुत्र नगरमां रहुं छुं' विशुद्धतर नैगम तेणे पुन पूछयुं-'पाटलीपुत्र नगरमां तो सेंकडो घर छे ते सर्वमां तुं रहे [illegible] ?' देवदत्ते जवाब आप्यो-'देवदत्तने घरे वसुं छुं' विशुद्धतर नैगम प्रश्नकार वळी पूछयुं-'देवदत्तना घरमां तो अनेक कोठा (ओरडा) छे ते सर्वमां तुं रहे छे ?' देवदत्ते जवाब आप्यो-'हुं मध्यगर्भमां रहुं छुं' आ विशुद्धतर नैगम नय जाणवो जेना घरमां वसे ते तेनुं ज घर होय ते व्यवहार, पूर्वे पूछया तेम नय प्रश्न पूछीने छेवटे पूछे के तारा घरमां तुं सर्वत्र वसे छे ? त्यारे जवाबमां ते जणावे के गादीतकिया पर के ढोलिया पर बेसुं छुं-आ संग्रहनय ऋजु सूत्रद्वारा तो जेटला आकाशप्रदेशने अवगाहीने रह्यो होय तेटला मात्रमां ज वसनार कहे अने पोताना आत्मभावमां वसतो कहे ते भावनय एटले शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत जाणवा ए ज प्रमाण सप्तभंगीनुं स्वरूप जाणे, ते आ प्रमाणे-१ स्यादस्ति-द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव ए चार पोतानी अपेक्षाए स्यादस्ति, २ स्यान्नास्ति-पारकानी अपेक्षाए स्यान्नास्ति, ३, स्यादस्तिनास्ति-बन्नेनी अपेक्षाए, ४ स्यादवक्तव्य-बन्नेना एक काळनी अपेक्षाए, ५. स्यादस्ति-अवक्तव्य-एक समयमां अस्ति छे पण कहेवामां न आवे, ६ स्यान्नास्तिअवक्तव्य-एम ज नास्ति छे पण कही न शकाय अने ७ स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्य आ प्रमाणे सात नय, सप्तभंगी, चार निक्षेपा इत्यादिकना रहस्यने जाणे ते गीतार्थ कहेवाय हवे गीतार्थना उपदेश सर्वने हितकारक थाय छे ते संबंधे बे गाथा दर्शावे छे—

गीअत्थस्स वयणेण, विसं हालाहल पिवे ।
निव्विकप्पो य भक्खिज्जा, तक्खणे ज समुद्दवे ॥ ४४ ॥

परमत्थओ विस तो त, अमयरसायणं खु तं ।
निव्विग्घ ज न त मारे, मओऽवि अमयस्समो ॥ ४५ ॥

[गीतार्थस्य वचनेन, विष हालाहल पिबेत् ।
निर्विकल्पश्च भक्षयेत्, तत्क्षणे यत् समुद्रापयेत् ॥४४॥

परमार्थतो विष न तद्–मृतरसायन खलु तद्विष ।
निर्विघ्न यद् न तद् मारयति, मृतोऽपि अमृतसमः ॥४५॥]

गाथार्थ—गीतार्थ पुरुषना वचनथी बुद्धिमान तरत मरण निपजावनारु हलाहल झेर पण निःशकपणे पी जाय अने तेवो पदार्थ पण खाई जाय कारण के परमार्थथी तो ते झेर झेर नथी परन्तु निर्विघ्नकारी अमृत समान रसायण ज होय छे कारण के ते विष खानारने मारतु नथी, अने कदाच मरण निपजे तो पण ते अमर ज मनाय छे.

विवेचन—गीतार्थ साधुपुरुष हलाहल तालपुट विष विगरे पीवानु कहे तो पण शकारहितपणे पी जवु ते झेर न जाणवुं पण अमृत जाणवु कारण के गीतार्थ तो महाउपकारी छे अने तेना उपदेशद्वारा कराती क्रिया अजरामर स्थानने–शाश्वतसुखने आपनार छे, माटे तेना वचनमा कदापि शका न करवी आवा गीतार्थ साधु अने सयमी केवा होय ? केवा लक्षणवाळाने तेवा जाणी शकाय ? तेने माटे चोभगी दर्शावे छे–"संविग्गा नाम एगे नो गीअत्था १, नो संविग्गा नाम एगे गीयत्था २, संविग्गा णाम एगे गीयत्थावि ३, नो संविग्गा णाम एगे नो गीयत्थावि ४ ॥१॥ १ चारित्रवान छे पण गीतार्थ नथी, २ गीतार्थ छे पण चारित्रपात्र नथी, ३ चारित्रपात्र छे अने गीतार्थ पण छे, ४ गीतार्थ पण नथी अने चारित्रपात्र पण नथी पहेलो भागो कामनो नथी, कारण के कह्यु छे के–"पढम नाण तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए। अन्नाणी किं काही, किंवा णाही सेयपावग ॥१॥" पहेलु ज्ञान अने पछी दया ए प्रमाणे सयममा वर्ते साधुमार्गना अजाण शु हित साधी शकशे ? ज्ञान थया विना जीवदया केवी रीत पाळी शकाय ? ज्ञान होय तो ज सयममार्गमा यथेच्छ रीते प्रवृत्ति करी शकाय माटे ज प्रथम ज्ञान अने पछी चारित्र कहेल छे वळी 'जो हेउवाय सिद्धतविराहगो अन्नो ॥१॥" जे हेतु तमज परपक्षने जाणे तने आगमिक–आगमज्ञाता कहीए परन्तु जे पोताना सूत्रनी प्ररूपणा करे अने बीजो उपाय न जाणे तेने सिद्धांतनो विराधक कह्यो छे, मतलब के जाण्या विना क्रिया करे, तेनी प्ररूपणा करे पण ते सबधी ज्ञान न होय तो विराधक गणाय

वळी पूर्वे वर्णवेला छ प्रकारना अपवादादिक सूत्रो न जाणतो होय तो ते केवी रीते चारित्रनुं पालन करी शके ? वळी "सावज्जण देसण काउ ॥ १ ॥" जे 'आ वचन सावद्यकारक छे अने आ निरवद्य छे' ते जाणी शकता नथी तो तेओ उपदेश देवाने-व्याख्यान वांचवाने कई रीते अधिकारी थई शके ? माटे ज्ञान-प्राप्ति विना बाल्युं उपदेश देवा ते साधुने माटे वर्ज्य छे आगमना रहस्यथी अज्ञात गच्छनो त्याग करीने विचरे ते पोते संसारमां डूबे छे अने बीजा भव्य प्राणिओने पण डूबाडे छे भवरूपी अंधारा कूवामांथी पोते बहार निकळता नथी अने बीजाने निकळवा देता नथी विशेष शुं कहीए ! छ-छ मासनी अति दुष्कर तपश्चर्या करता छतां पण जो ते अगीतार्थ होय तो, विषनो जेम त्याग करीए तेम तेनो त्याग करवो, सर्पथी जेम दूर नासीए तेम तेनाथी दूर भागवुं, लुच्चा पुरुषनो संसर्ग न करीए तेम तेना संग न करवो वळी अकुलीन वधु भयंकर स्मशान, महादुष्ट पिशाच तथा बळता अरण्यनी माफक तेनो त्याग ज करवो इष्ट छे आ प्रथम भांगो अशुद्ध छ-अस्वीकार्य छ बीजा भांगो पण निष्फळ छे, कारण के सूत्र भणे, अर्थ जाणे, नूतन अध्ययन कर्या करे परन्तु चारित्र-पालन विनानुं ते सर्व निष्फळ छ कारण के तथा तो फक्त कळशोष ज थाय ॥ कोई कहेशे के-तेवी अभ्यासी तो मळे छे न ? तो शास्त्रकार कहे छे के-धर्मना नामे जेना घरना आहार-पाणी वापरे छ तेने त्यां ऊन, पाटो विगेरे वहने भार वहन करवो पडे छे माटे चारित्र विना ज्ञान कई पण कामनुं नथी आ संबंधमां कहुं छ के-"जहा खरो चंदणभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स। एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स भागी न हु सुग्गईए ॥१॥" गधेडो पोतानी पीठ पर चंदनना भार वहन करे छ पण चंदननी शीतळतानो-सुगंधनो तेने लाभ मळतो नथी तेम घणुं भणेल होवा छतां ज्यां सुधी चारित्रपालन करतो नथी त्यां सुधी ते सद्गतिरूपी शीतळतानो लाभ मेळवी शकतो नथी वळी "आउज्जनट्ठ चरणहीणो ॥" नाच-तानमां प्रवीण एवा नटी जो वाजिंत्र लोकोने रूप न बताडी शके, पोताना अवयवोनो हावभाव न दर्शावे अने नृत्य तथा संगीत न करे तो ते लोकोने रीझवे के पोतानी निंदा करावे ! तेवी ज रीते साधु पण नटीनी माफक वेशो रहे, कोई पण आवश्यक क्रिया न करे एटले चारित्र न पाळे तो मोक्षसुखने प्राप्त न करे पण उलटी पोतानी, पोताना गच्छनी निंदा करावे अने संघनी हीलना थाय वळी तरिया जाणे छ के हाथ-पग हलाववाथी ज नदीमां तरी शकाय परन्तु नदीमां पड्या पछी हाथ-पग न हलावे तो जेम बूडी जाय तेम संसाररूप नदीना प्रवाहमां पड्या पछी चारित्रपालनरूपी क्रिया (तरवानी क्रिया) न करे तो ते गीतार्थ पण संसार-नदीमां डूबी जाय, एटले एकलुं ज्ञान काम न आवे

साथोसाथ क्रिया पण जोईए. जेम महाकष्टपूर्वक शालि निपजाव्या होय, तेने कोठारमां भरी मूक्या होय, आ तेनो उपभोग न करे तो ते संग्रह निष्फळ निवडे तेम ज्ञानवडे हेय, उपादेय अने ज्ञेयने जाणीने ते प्रमाणे आचरे नहीं तो ज्ञान पण शालिसंग्रहनी माफक निष्फळ छे. आवो संविग्नपक्षी पोते भले अन्य साधुने वंदाय नहीं पण पोते वांदे तो भविष्यमां ते सुलभबोधि थाय.

त्रीजो भांगो श्रेष्ठ छे. गणधर भगवंत अने चौदपूर्वधारीओ आ भांगामां समावेशित थाय छे. वर्तमानकाळे तो जेटलुं ज्ञान छे तेमां सूत्रार्थ जाण्या होय, तेनुं ग्रहण कर्युं होय, परमार्थ जाण्या होय तेने गीतार्थ कहीए. 'पांचमो आरो तो दुसम छे, छेवट्ठुं संघयण छे माटे शुं करीए?' एम शिथिल बनी जीवन गोपवे नहीं, पण चारित्रमां छतुं बल-वीर्य फोरवे तेने संविग्न कहीए. कह्युं छे के-

"को, धा जइण सया ॥२॥" तीर्थंकर परमात्माए कह्या प्रमाणे सर्व करवामां अशक्तिमान होय पण यथाशक्ति (पोताना सामर्थ्य प्रमाणे) चारित्र-पालन करे एटले के आहारपाणी लेवामां अने आरोगवामां शूरा, शरीरे पुष्ट बनवामां प्रधान अने प्रतिक्रमण-पडिलेहणादि क्रियाओ करवामां शिथिल न होय परंतु चारित्र पालन करवामां दृढ प्रतिज्ञावाळो होय, शास्त्र प्रमाणे जयणा पूर्वक वर्ते, इर्ष्यारहितपणे उपशांत होय अने लोकदेखाव माटे क्रिया न करे ते ज साचा यति-साधु छे. जयणा करता छतां पण क्वचित् प्रमादना योगथी, दुसमकाळ, हीनबुद्धि अने छेवट्ठा संघयणना कारणथी दोष लागी जाय तो पण तेने चारित्रपात्र समजवा, पण विराधक न समजवा, कारण के पोताना बळ-वीर्य प्रमाणे चारित्र पाळे छे, दोष लगाडवाना इच्छुक नथी, सूत्रोक्त अपवाद सेवे छे तेने आलोवे ■ आ संबंधमां दृष्टांत जणावता कहे छे के-कांटावाळा मार्गमां चालतां घणी ज सावचेती राखे तो पण चूकी जाय तेम चारित्र-मार्ग कष्टप्राप्त छे. कोईक अपवादमार्गनुं पण सेवन करी शाय छे, कारण के काउस्सग्ग ऊभा ऊभा करवानुं कथन छे छतां असमर्थ होय तो बेसीने करे अने तेम पण करवाने अशक्तिमान होय तो सूता सूता पण करे. आ प्रमाणे करवाथी ते चारित्रमां विराधक गणाता नथी. आ संबंधमां विशेष वर्णन श्राद्धप्रतिक्रमण चूर्णमां करेल ■

चोथो भांगो लिंगधारीने ज होय छे, जे वेषमात्र धारण करीने पेट भरे छे तथा लिंगियाने गुरु मानवाथी तो मिथ्यात्व लागे. आ चार भांगा पैकी त्रीजा भांगावाळा ज साधु खरेखर गीतार्थ छे अने तेमना वचननुं मरणांत कष्ट आवे तो पण पालन करवुं ज. आ प्रमाणे गीतार्थनी महत्ता जणावी, हवे अगीतार्थनो उपदेश केवो दुःखदायक थाय छे ते जणावे छे—

अगीयत्थस्स वयणेणं, अमियंपि न घुंटए ।
जेण नो तं भवे अमयं, जं अगीयत्थदेसियं ॥ ४६ ॥

परमत्थओ न तं अमयं, विसं हालाहलं खु तं ।
न तेण अजरामरो हुज्जा, तक्खणा निहणं वए ॥ ४७ ॥

[अगीतार्थस्य वचनेना-मृतमपि न पिबेत् ।
येन न तद् भवेदमृत, यदगीतार्थदेशितम् ॥ ४६ ॥

परमार्थतो न तदमृत, विष हालाहल खलु तत् ।
न तेनाजरामरो भवेत्, तत्क्षणात् निधन व्रजेत् ॥ ४७ ॥]

गाथार्थ—अगीतार्थना वचनवडे कोई अमृत पण न पीवे कारण के ते पोते ज दोषित होवाथी ते अमृत वास्तविक अमृत होतु नथी. परमार्थथी तो ते अमृत पण हलाहल विष जेवु होय छे, जेथी अजरामर थवातु नथी तेमज मृत्युने पण दूर हटावी शकातु नथी—तत्काळ मृत्यु ज निपजे छे.

विवेचन—ऊपरनी गाथामा दर्शावेला चार भागा पैकी चोथा भांगावाळो साधु अगीतार्थ जाणवो तेना द्वारा उपदेशातो तपश्चर्यादि क्रिया पण, खरेखर तो ते अमृतस्वरूप छे ता पण, झेर सदृश ज बने छे तेना द्वारा तपनु पच्च-क्खाण पण न लेवु तो पछी तेनी पासे व्रतादि उच्चरवानी तो वात ज क्याथी संभवे ? दूधना गुण तो तेना ते ज होय छे, परन्तु ज्यारे ते सापना उदरमा जाय छे त्यारे झेररूपे परिणमे छे तेम तपस्या, व्रत इत्यादिक धार्मिक अनुष्ठानो तो अमृतस्वरूप छे परन्तु ज्यारे ते अगीतार्थद्वारा उपदेशाय छे त्यारे झेर सदृश बनी जाय छे तेनाथी अजरामर पद-मोक्षनी प्राप्ति थती नथी परन्तु अनंत ससारमा भ्रमणरूप मृत्यु ज थाय छे श्रीउपदेशमालामा कह्यु छे के-" ज जयइ अगीयत्थो, ज च अगीयत्थनिस्सिओ होइ । वट्टावेइ य गच्छ, अणतससारिओ होइ ॥ १ ॥ कह उ जयतो साहू, वट्टावेइ य जो उ गच्छं तु । सजमजुत्तो होउ, अणतससारिओ भणिओ ॥ २ ॥ दव्व खित्त काल, भाव पुरिसपडिसेवणाओ य । न वि जाणइ अगीओ, उस्सग्गववाइय चेव ॥ ३ ॥ अहठियदव्व न याणइ, सचित्ताचित्तमीसिय चेव । कप्पाकप्प च तहा, जोग वा जस्स ज होइ ॥ ४ ॥" जे अगीतार्थ होय अने पोताना गच्छने चलावे ते तेमज अगीतार्थनी निश्राए पण जे रहे ते अनतससारी थाय छे गच्छने चलावतो उद्यमवत अगीतार्थ अनंत संसारी केम थाय ? ते प्रश्ननो जवाबमा कहे छे के—द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, पुरुष, प्रतिसेवणा (कारणे दोष लगाडवो)-आ छ प्रकार अगीतार्थ न जाणे,

तेमज अपवाद अने उत्सर्ग मार्ग न जाणे, जेवा द्रव्य होय तेवा यथास्थित न जाणे, सचित्त, अचित्त अने मिश्र न जाणे, 'आ कल्पे अने आ न कल्पे' ते पण न जाणे, ज्ञान पण न जाणे-आ प्रमाणे ते पोते ज अज्ञानी होवाथी स्वयं अनंत संसारमा परिभ्रमण करे छे अने पोताना आश्रितने पण परिभ्रमण करावे छे आवा अगीतार्थनो संग न करवा ते जणावता कहे छे—

अगीयत्थकुसीलेहिं, संग तिविहेण वोसिरे।
मुक्खमग्गस्सिमे विग्घे, पहम्मि तेणगे जहा ॥ ४८ ॥

[अगीतार्थकुशलैः, सङ्ग त्रिविधेन व्युत्सृजेत्।
मोक्षमार्गस्येमे विघ्नाः, पथि स्तेना यथा ॥ ४८ ॥]

गाथार्थ—मन, वचन अने कायाथी अगीतार्थ तथा कुशीलियानो संग सदा त्यजी ज देवो, कारण के चोर अथवा डाकुओ जेम मुसाफरीमां विघ्नकारक छे तेम ते पण मोक्षमार्गमा हानिकारक छे.

विवेचन—पांच प्रकारना अगीतार्थ छे पासत्थो, ओसन्नो, कुशीलियो, संसक्त अने यथाच्छंदक जेम भाजवानी मध्य दांडी ऊंची करता आपोआप बन्ने बाजुना त्राजवा ऊंचा नीचा थाय ज छे तेम अहीं मूळगाथामां अगीतार्थ कुशील मध्यमा ग्रहणवाथी स्वयमेव पूर्व अने पश्चिमना बे-बे अगीतार्थो ग्रहण कराई ज जाय छे आ पांचे प्रकारना अगीतार्थोनो संग त्रिविधे त्रिविधे (मन, वचन, कायाथी करवु, कराववुं अने अनुमोदवुं) कदापि करवो नहीं श्रीमहानिशीथसूत्रना छठ्ठा अध्ययनमा कह्यु छे के-आखी जेमी पूरी गई छे तेवी स्थितिमा लाख वर्ष रहेवु सारु परन्तु अगीतार्थनी पासे एक क्षण (दश सेकंड) के अडधी क्षण पण न रहेवु कांई शंका करवापूर्वक पूछे के-पोताना गुरु पासत्थी पासत्था थई गया होय तो शिष्ये शु करवु ! आ संबंधमा श्रीउपदेशमालानी २७६मी गाथानी हेयोपादेय नामनी टीकामा कह्यु छे के— " गीयत्थ संविग्ग, आयरिय मुयइ वलइ गच्छस्स। गुरुणो य अणापुच्छा, ज किंचि वि देइ गिण्हइ वा ॥ १ ॥ " मोक्षना अभिलाषी संविग्नगीतार्थ आचार्यने विना कारण छोडे, गच्छनो त्याग करे तेमज आज्ञा विना कंई पण दे अगर तो ले तो दोषभागी थाय परन्तु आ अगीतार्थनो त्याग करवामा दोषनो लेशमात्र संभव नथी श्री स्थानांगजीना त्रीजा स्थानकमा पण कह्यु छे के—प्रमादी आचार्यनो त्याग करवो आवा अगीतार्थ साधुओने चोर, लूटारा सरखा जणाव्या छे एक नगरथी बीजा नगरे जता रस्तामा डाकुओ मळे तो ते विघ्न करे अने संपत्ति होय तो

लूंटी ले तेम आ अगीतार्थ साधुरूपी चोरो मोक्षमार्गरूपी नगरमा पहोंचता उपद्रव करे छे अने शुद्ध धर्मरूपी आत्मिक संपत्ति लूंटी लइ अगाध संसार सागरमा रखडावे छे माटे आवा विघ्नकारक अगीतार्थनो संग सदा वर्जवो

पज्जलियं हुयवहं दट्ठु, निस्संको तत्थ पविसिउं ।
अत्ताण निद्दहिज्जाहि, नो कुसीलस्स अल्लिए ॥ ४९ ॥

[प्रज्वलित हुतवहं दृष्ट्वा, निःशङ्क तत्र प्रविश्य ।
आत्मानं निर्दहेत्, नैव कुशीलमालीयेत् ॥ ४९ ॥]

गाथार्थ—धगधगती अग्नि–ज्वालामा निःशंकपणे प्रवेशीने पोताना देहने भस्मसात् करी नाखवो सारो परन्तु कुशील–अगीतार्थनो संग न ज करवो.

विवेचन—अग्निमा पात करवाथी एक ज वखत मृत्यु प्राप्त थाय छे ज्यारे कुशीलिया पासत्थादिकना संसर्गथी अनंत संसारमा अनंत वार जन्म-मरण करवा पडे छे, अत्यंत दुःख-कष्टपरंपरा सहन करवी पडे माटे ज कह्यु छे के–एक वार मरण पमाडे तेवो अग्नि सारो श्रीमहानिशीथ सूत्रना चोथा अध्ययनमा कह्यु छे के—“ जीवे सम्मग्गमाइण्णे, घोर वीर तवं चरे । अचयंतो इमे पञ्च, कुज्जा सव्वं निरत्थयं ॥ १ ॥ पासत्थोसन्नहाछंदे, कुसीले सबले तहा । दिट्ठीए वि इमे पञ्च, गोयमा न निरिक्खए ॥ २ ॥ ” हे गौतम ! कोई व्यक्ति सन्मार्गमा रहीने तीव्र तपश्चर्यादि धर्मकरणी करे परन्तु जो ते पासत्थो, ओसन्नो, कुशीलियो, यथाच्छंदक अने सबलो–ए पांचनो संसर्ग करे तो तेनी धर्मकरणी निष्फळ छे ते पांच प्रकारना लिंगिया तो दृष्टिमात्रथी जोवा लायक नथी तो तेना परिचयनी तो वात ज शा माटे करवी ? कुशीलियाना संग संबंधमा श्री महानिशीथना चोथा अध्ययनमा भगवंत श्रीमहावीरस्वामीए गौतमस्वामीने सुमतिनु जणावेल दृष्टान्त अतीव विचारणीय छे

अगीतार्थना संगथी महानिष्ट फल पामेल सुमतिनु वृत्तांत–

कुशस्थल नामना नगरमा नागिल अने सुमति नामना बे भाईओ रहेता हता तेओ जीवाजीवादि नव तत्त्वना ज्ञाता हता धनैश्वर्य संपत्ति पण सारा प्रमाणमा मेळवी हती, परन्तु कोइक समये अंतरायकर्मना उदयथी तेमनु धन नाश पाम्यु आम छता पण तेओनी धर्मश्रद्धा अचल हती व्यापारमा कूड कपट करता नहीं, असत्य बोलता नहीं, दानादिक चार प्रकारना धर्मनु यथार्थ पालन करता, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्यादि कइ करता नहीं, स्वजन—संबंधीओमे धर्मो

परदेश आवता—आ प्रमाणे उद्यम करवा छतां अशुभ कर्मना उदयथी तेमने धन प्राप्त न ज थयुं आवी रीते केटलाक वर्षो व्यतीत थई गया पछी स्त्री-पुत्रादि पण तेमनो अनादर करवा लाग्या तेमना प्रत्ये कुटुंबीजनोमां सत्कार पण ओछो थई गयो एकदा पश्चातमां ते बन्ने भाईओ विचारवा लाग्या के—" जा विहवो ता पुरिसस्स, होइ आणापडिच्छओ लोगो। गलिओदयं घणं, विज्जुला वि दूरं परिच्चयइ ॥१॥" ज्यां सुधी पुरुष पासे धन होय त्यां सुधी तेनी आज्ञा पुत्र-परिवारादिक माने परन्तु धनविहीन स्थितिमां तो तेनी अवज्ञा थाय जेम जळयुक्त मेघ होय तो वीजळी तेनो संग करे छे, परन्तु जळ रहित स्थितिमां ते पण तेनो त्याग करी जाय छे बाद नागिले कह्युं— "पुरिसेण माणधणवज्जिएण, परिहीणभागधिज्जेण । ते देसा गंतव्वा, जत्थ सवासी न दीसन्ति॥ १ ॥" आदरभाव तथा धन रहित अने हीनभाग्यवाळा पुरुषे पोताना देशनो त्याग करीने जे देशमां पोताना गामनो वसनारो कोई न होय तथा गाममां वसवाट करवो जोइए " आ वचन सांभळी सुमतिए कह्युं—" जस्स धणं तस्स जणो, जस्सत्थो तस्स बंधवा बहवे । धणरहिओ उ मणूसो, होइ समो दासपेसेहिं॥ १ ॥" जेनी पासे धन छे तेने घणो परिवार छे, धनवानना बंधुओ पण घणा थाय छे परन्तु जे धन रहित छे तेने तो सेवाभाव स्वीकारवो पडे छे माटे आपणे देशांतर जइए आ नसीब मारा मळ्या तो ठीक, नहीं तो चारित्र अंगीकार करशुं ' आ प्रमाणे परस्पर विचारीने बन्ने भाईओ कुशस्थळनो त्याग करी चाली निकळ्या

मार्गमां चालता तेमणे पांच साधु अने एक श्रावकने चालता जोया पछी नागिले कह्युं—" भाई! साधुनो साथ मळ्यो छे तो आपणे तेमनी साथे जइए " सुमतिए संमति दर्शावी आ प्रमाणे चालता हजी एक मुकाम पूरो थयो नहीं तेवामां नागिले सुमतिने कह्युं के— हरिवंशना तिलकसमा बावीशमा तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमिए एकदा फरमाव्युं हतुं ते मुजब आपणे जेमनी साथे चाली रह्या छीए तथा साधुओ कुशीलिया होय छे कुशीलिया साधुने दृष्टिमात्रथी निरखवा पण योग्य नथी तो तेमनो संग तो केम ज कराय? आ साधुओ कुशीलिया जणाय छे माटे आपणाथी हवे क्षणमात्र पण तेमनी साथे रहेवाय नहीं " आ प्रमाणे कहीने, सुमतिनो हाथ खेंचीने नागिल तेने बीजी बाजु लई गयो त्यां आगळ शुद्ध भूमि तपासीने बन्ने बेठा त्यारे सुमतिए जणाव्युं के— हे भाई! गुरुने, माता, पिता, ज्येष्ठ भाई अने मोटी भगिनीने उत्तर न आपवो (सामुं न बोलवुं) एवी आज्ञा छे तो हे वडील बंधु! हुं हवे तमने शुं कहुं? ऊपर कहेला शास्त्रनो जे कह तमे (तहत्ति) प्रमाणभूत मानवुं ते खरुं छे के खोटुं छे?

ते संबंधी विचार न करवो. आम कहीने सुमतिए नागिल प्रत्ये कड्वु कहेतु हतु छतां पोतानी शक्या नहीं इंगिताकार जाणवामां कुशल नागिल विचार्यु के-सुमतिने कड्वु कहेवु छे, पण लज्जाथी कही शकतो नथी ने वृथा कषाय करे छे. हमणां तेना मध्ये शांत थवा दो. हमणां हुं कहीं तेने हित-शिक्षामण आपीश तो ते मानशे नहीं. वळी विशेष विचार करतां तेणे जाण्युं के-तेना मननो शंका हमणां ज टाळवी सारी छे, कारण के ते भोळा हृदयनो होवाथी पापबन्धन जाणी शकतो नथी. आ प्रमाणे विचारी तेणे सुमतिने फरी कह्युं के-" भाई! हुं तने दोष आपतो नथी. कर्मनो ज दोष छे. कारण के सगाभाईने पण शिक्षा वचन आपतां विपरीत लागे छे अने बोध पण थतो नथी. आ सर्व राग, द्वेष, अने मिथ्या आग्रह-मिथ्यात्वनी ज चेष्टा छे.' नागिलनुं आवुं वचन सांभळी सुमतिए कह्युं-' भाई! तुं सत्यवादी अने सूत्रनो सांभळनार छे, पण तुं ते साधुओना अवर्णवाद करे छे ते योग्य नथी. ते साधुओ तो छट्ठ, अट्ठम तथा मासक्षमणादि तपक्रिया करे छे, वीरासन, उत्कटुकासन प्रमुख कष्टक्रिया करे छे. वळी अनेक प्रकारना अभिग्रह करे छे. आवा साधुओने तुं कुशीलिया कहे छे तो तारे शुं कहेवुं जाणवुं?" नागिले जवाबमां कह्युं-" भाई! घणो बाह्य तपस्याथी तुं ठगाईश नहीं. बाळ तप अने आ उत्सूत्रप्ररूपणमां शो फरक छे? मारे शुं तेओना पर द्वेष छे के हुं एमना अवर्णवाद करुं? तीर्थंकर भगवंतनी आज्ञा मुजब ज हुं कहुं छुं के-आवा कुशीलिया जोवा योग्य नथी." सुमतिए आ प्रमाणे सांभळी कईक उत्तेजित थई कह्युं-' जेवो तुं बुद्धिहीन छे तेम तारा तीर्थ कहेनारा तीर्थंकर पण बुद्धिहीन हशे." आ कथन सांभळतां ज नागिले सुमतिना मुख आगळ पोताना हस्त आडो धरी बोलवानो निषेध कर्यो अने कह्युं-" भाई! आम न बोल. तेथी तो तीर्थंकर परमात्मानी आशातना थाय. मने तारे जेम कहेवुं होय तेम कहे पण तीर्थंकरनी निंदा कदापि न करीश.' आ सांभळी सुमतिए नागिलने पूछ्युं-' आ साधुओ कुशीलिया होय तो जगतमां कोई सुशील साधु छे के नहीं?' आ प्रमाणे रोषित सुमतिने शांत करतां नागिले कह्युं-"भाई! एम न बोल. तीर्थंकर परमात्माना शासननो हालमां ज कर. जिनेश्वर भगवंतनुं वचन कदापि उल्लंघनीय नथी. हमणां शासनमां तो अनेक शुद्ध चारित्रपात्र मुनिपुंगवो विद्यमान होय छे. ते साधुओ कुशीलिया होवानुं कारण तुं सांभळ—अधिक उपकरण राखवां ते परिग्रह छे. साधुओए तो परिग्रहपरिमाण नामनुं व्रत स्वीकार्यु होय छे, छतां आ साधुओए बीजी मुहपत्ति राखी छे. एक मुहपत्ति खोवाई जाय अगर तो फाटी जाय तो बीजी उपयोगमां आवे तेवा विचारथी तेओए राखी छे, परन्तु शुद्ध संयम-पालन करनार साधुने कदी पण उपकरणनी चिंता भोगववी पडती ज नथी. आ तेमनुं उन्मार्ग आचरण छे. वळी ते हमणां ज साधु के जेमणे वस्त्रयाचना ते साधुए कार्य

करवा निमित्ते अहोरात्र्या सिवायज भस्म लीधी वळी पेला मर्यादित कालवाळा मुनिए सूर्य न ऊग्या छतां 'सूर्योदय थइ गयो, चालो आपणे जईए' एम कहीने मृषावादनु सेवन कर्युं ते तो तु जाणे ज छे वळी पेला साधुए रात्रिसमये अग्निकायनो उद्योतमां कपडां साव्यां, प्रात काळमां लीला वनस्पति अने बीज चांप्या-आ बधी उपयोगशून्य क्रिया ज तेमनी चारित्रहीनता सूचववा माटे पर्याप्त छे सुविहित साधुए तो छकायना सूक्ष्म बादर जीवोमां जयणापूर्वक चालवु, रहेवुं विगेरे क्रिया करवी जोईए आ साधुओ पैकी एक पण तेवा शुद्धाचारवाळा जणाता नथी छकायनु मर्दन करनार साधु करता गृहस्थ पण सारो, माटे हे भाई सुमति! आवा कुशीलिया साधुने जाणीने वंदन करवानी वात पण केम थई शके? आवा साधुना संसर्ग के वंदनथी आपणु पण चारित्र भ्रष्ट थाने अने अनंत संसार भ्रमण थशे" आ प्रमाणे नागिले समजाव्या छतां सुमति बोल्यो के—"माटे तो तेमनी पासे दीक्षा लेवी छे तु जेवा धर्म कहे छे तेवा धर्म आजे कोण पाळी शके तेम छे? माटे हवे मन रोकाय नहीं" आ प्रमाणे कहीने सुमति गया अने दीक्षा लीधी दीक्षा लीधाने पांच मास व्यतीत थया तेवामां चार वखतो भयंकर दुकाळ पडया अने आलोयण, प्रतिक्रमण कर्या विना ते कुशीलिया साधुओ काळधर्म पामीने वाणव्यंतरजातिना भूत, यक्ष, राक्षस अने पिशाचना वाहन तरीके उत्पन्न थया त्यांथी च्यवीने म्लेच्छ थया त्यां मांसाहार करीने सातमी नरकमां उपज्या त्यांथी निकळीने त्रीजी चोवीशीमां समकित पामशे समकित पाम्या पछी त्रीजे भवे चार जणा मोक्षे जशे पण पांचमो जे ते कार्यमां अग्रेसर हतो ते पश्चात मिथ्यादृष्टि ने अभव्य होवाथी मोक्ष नहीं पामे

आ प्रमाणे सांभळी गौतमस्वामीए पूछ्युं के-'हे भगवन्! सुमति मरीने क्यां उपज्या?" भगवते कह्यु-'परमाधामी देव थया" गौतमस्वामीए पुन पूछ्युं-'हे भगवंत! क्या कारणथी जीव परमाधामी देव तरीके उपजे?' भगवंते कह्यु-"जे प्राणी तीव्र राग, द्वेष तथा महामिथ्यात्वनु सेवन करे छे तथा शास्त्रना गंभीरार्थने समज्या विना उत्थापना करे छे ते परमाधामी देव थाय छे नागिले कुशीलिया संबंधी कह्या छतां सुमतिए कह्यु-'ते कुशीलिया नथी, जो तेओ कुशीलिया होय तो जगतमां सुशील कोण होई शके? माटे तो तेनी पासे दीक्षा लीधी छे'-आ प्रमाणे कह्यु ते उत्थापना करी वळी तेणे नागिलने कह्यु के- तु जेवा निर्बुद्धि छे तेवा तीर्थंकर भगवंत पण बुद्धिहीन हशे ' आ प्रमाणे आशातना करवाथी दीर्घ तपश्चर्या करवा छतां पण तेना चीकणा कर्म छूटयां नहीं अने परमाधामी देव थया बाद गौतमस्वामीए पूछ्युं के—हे स्वामिन्! सुमति परमाधामी देवमांथी क्यां उपजशे? भगवंत कह्यु—हे गौतम! अनाचारनी प्रशंसा करवाथी अने सन्मार्गनु उत्थापन करवाथी ते मंदभागी सुमतिए अनंत संसार उपार्जन कर्यो तथा जन्म-मरणनो छेडो नथी तेना

करेला कर्मो तने जणावुं ? अनंत पुद्गलपरावर्त सुधी ते चार गतिरूप संसारमां रखडशे, छतां पण तने संक्षेपथी कहुं छुं ते तुं सांभळ-परमाधामी देवमांथी च्यवीने ते जळमनुष्य थशे आ जळमनुष्य क्यां थाय छे ? तेने केवां संतापदायक कष्टो भोगववां पडे छे ते तुं ध्यानपूर्वक समजी ले आ जंबूद्वीपनी फरतो चारे बाजु लवणसमुद्र वींटळायेलो । ते लवणसमुद्रने जे स्थळे सिंधु तथा गंगा नदी मळे छे तेनी दक्षिणमां पंचावन योजन दूर वेदिकानी मध्यमां हाथीना कुंभस्थळना आकारवाळुं साडाबार योजनप्रमाणवाळुं पडिसंतापदायक नामनुं स्थान छे ते स्थानमां अत्यंत भयंकर, अंधकारवाळी अने घडियाळना जेवा आकारवाळी सुडतालीश गुफाओ छे ते गुफामां निरंतर चारचार जळचर मनुष्य रहे छे ते मनुष्यो वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा, महाबलिष्ठ, पराक्रमी, साडाबार हस्तप्रमाण देहमानवाळा, संख्याता वर्षना आयुष्यवाळा, मद्य, मदिरा अने मांसमां अत्यंत लोलुपी, स्त्रीमां आसक्त, खराब वर्णवाळा, अस्निग्ध रूक्ष शरीरवाळा, हस्तीना जेवा मुखवाळा, सिंहना जेवी भयंकर दृष्टिवाळा, यमराजना जेवा घोरामणा, मजबूत पीठवाळा तेमज अत्यंत अभिमानी होय छे तेमना अंतरंडगोळी(अंडकोशनी गोळी)ने ग्रहण करीने, ते गोळीने चमरी गायना श्वेत वाळथी गुंथीने जे माणस पोताना कानमां पहेरी राखे ते समुद्रना अगाध जळमां जाय तो पण कोई पण मगरमच्छ, महामत्स्य, जळघोडा विगेरे शिकारी प्राणियो लेशमात्र उपद्रव करी शके नहीं ते अंडगोळकना प्रभावथी ते हिंसक प्राणियो नजीक आवी शकता नथी अने तेथी ते अंडगोलकने धारण करनार मानवी इच्छा प्रमाणे जळमां विचरी कांतिवंत-रत्न ग्रहण करी शके छे आ अंतरगोळकना कारण ज जळमनुष्यने अतीव कष्ट भोगववुं पडे । तेओ एटला बधा पराक्रमी होय छे के तेमनी पासेथी अंडगोलक सहेलाईथी मेळवी शकातुं नथी पकडे तेने अतीव कष्टमां पाडीने, तेने शक्तिहीन करीने पछी तेमनी पासेथी अंडगोलक मेळवी शकाय छे ते समये ते जळचर मनुष्यने नारकीना जेवुं घोर कष्ट भोगववुं पडे छे हे गौतम ! अंडगोलकने कोण ग्रहण करे ते हवे तने जणावुं छुं लवणसमुद्रने विषे ते पडिसंतापदायक स्थानथी एक सो एकत्रीश योजन दूर रत्नद्वीप नामनो द्वीप छे तेमां वीस, ओगणीस, अढार, आठ अने सात धनुष्यना प्रमाणवाळा, घंटीना आकारवाळी वज्रयुक्त वज्रशिलाओ छे ते शिलाओने उघाडीने, पूर्वसिद्ध क्षेत्रना स्वभावथी तेने सिद्ध करीने, ते शिलाओने मांस-मदिरा अने मधुथी लिप्त करे छे आ जळचर मनुष्यो मांस-मदिरामां अत्यंत आसक्त होय छे तेने वश करवा माटे रत्नद्वीपवासी लोको मांस अने मदिराना कुंडा भरीने पडिसंतापदायक स्थानमां जाय । जेवामां जळचर मनुष्यो रत्नद्वीपवासी मानवीओने जुवे छे के तरत ज तेने मारवा दोडे छे रत्नद्वीपना लोको मांस-मदिराना कुंडा त्यां मूकी दईने

रत्नद्वीप तरफ पाछा वळी जाय छे जळचर मनुष्यो ते कुंडाने जोईने त्यां थंभी जाय छे अने तेमांना पदार्थ खाई जाय छे खाई लीधा पछी पण तरत ज रत्नद्वीपवासी प्राणियोनी पाछळ दोडे छे एटले तेओ पाछा मांस-मदिराना कुंडा मूकी दूर नासी जाय छे आ प्रमाणे करता करता तेओ रत्नद्वीप समीप जळचर मनुष्योने खेंचा जाय छे ते लोकोए वज्रशिलाओमां पण मांसना लोचा चोंटाडेला होय छे, माछलीओ राखी मूकी होय छे, मधनुं चारे बाजु लेपन करेल होय छे रत्नद्वीप पासे आवता ज आ शिलाओ जळचर मनुष्यनी नजर पडे छे एटले तेओ मांस-मदिरानी आसक्तिथी ते शिलामां दाखल थाय छे आ शिलाओनो आकार फाडेला मुख जेवो होय छे जळमनुष्यो ते मांस-मदिराने खाईने अत्यंत प्रसन्नपणे सुखपूर्वक तेमां रही आराम छे आ प्रमाणे दश-पंदर दिवस व्यतीत थाय छे तेटलामां रत्नद्वीपना मनुष्यो बाण, खड्ग, भाला प्रमुख शस्त्रोथी सज्ज थईने ते शिलाओ फरता सात-आठ वरसत वींटळाई वळे छे बीजा केटलाक ते शिलाओमां रहेला जळचर मनुष्योने एकत्र कराय छे आ जळचर मनुष्य पैकी एक पण वज्रशिलाना घंटीमांथी छटकी जाय तो ते रत्नद्वीपवासी समग्र प्राणियोनो संहार करी नाखे बाद यंत्रद्वारा वज्रशिलामय घंटीना एक एकटा करीने ते जळचर मनुष्योने दळवा लागे तेओना हाड एटला मजबूत होय छे के-आ प्रमाणे एक वर्ष पर्यंत सतत पीसाया छतां हाथ फाटी जाय नहीं के पीसाय पण नहीं शरीरना बधा सांधाओ शिथिल थई जाय त्यारे घंटीनी पाछळ आगळानुं हाडकुं जोईने रत्नद्वीपवासी मनुष्यो अत्यंत आनंद पामे पछी बळदोना पाछळ छोडी दई, घंटीनी शिलाओ अळगी करी ते जळचर मनुष्योनां अंडगोळ जई ले पछी ते अंडगोलक पुष्कळ द्रव्यवडे वेची नाखे वज्रशिलानी मध्यमां एक वर्ष पर्यंत पीसाता ते जळमनुष्योने नारकीय भयंकर यातनानो अनुभव थाय छे ''

आ प्रमाणे हृदय-विदारक वर्णन सांभळी गौतमस्वामी पुनः भगवंतने पूछे छे के- हे भगवंत ! आ प्रमाणे एक वर्ष पर्यंत वज्रशिलानी घंटीमां पीसावा छतां आहार-पाणी विना ते जळचर मनुष्यो केम जीवता हशे ?'' भगवंत जवाब आप्यो के- 'हे गौतम ! करेला कर्मना स्वभावथी तेओने आवुं कष्ट सहन करवुं पडे छे, अर्थात् करेला कर्मो भोगववा माटे तेओ एक वर्ष पर्यंत जीवता रहे छे' आ संबंधी विशेष अधिकार प्रश्नव्याकरणनी टीकामांथी जाणी लेवो. गौतमस्वामीए पूछयुं के-" हे भगवंत ! सुमतिनो जीव जळचर मनुष्यमांथी मरीने क्यां क्यां उपजशे ? " भगवंते कह्युं के-' जळमनुष्यपणामां उपार्जेला कर्मोना कारणे तेना भ सात भवो कर्या बाद तेनो जीव १ शिकारी श्वान थशे, पछी २ कागडाना भव करशे, पछी ३ वाणव्यंतर ४ लींबडाना वृक्षमां, ५ मनुष्यनी स्त्री, ६ छठ्ठी नारकीमां, ७ कोढियो मनुष्य, ८ यूथाधिपति हस्ती, ९ त्यां मैथुनमां आसक्त थईने अनंतकाय (साधारण वनस्पति), १० बाद अनंतकाळ परिभ्रमण

करीने नैमित्तिक, ११ सातमी नरक, १२ महामत्स्य, १३ सातमी नरक, १४ बळद, १५ मनुष्य, १६ वृक्ष कोकिल, १७ जलोक १८ तंदुल मत्स्य, १९ सातमी नरक, २० गधेडो, २१ श्वान, २२ कीडा, २३ उंदर, २४ अग्निकाय, २५ कुंथुओ, २६ मधुकर, २७ चकलो, २८ उधइ, २९ वनस्पतिकाय, ३० चीरल्ल, ३१ छठ्ठी नरक, ३२ हस्ती, ३३ वेमामंडिय नामना नगरमां उपाध्यायना घर पासे लींबडाना वृक्षरूप वनस्पतिकायमां उपजशे, ३४ कुब्जा स्त्री, ३५ नपुंसक मनुष्य, ३६-३७ दरिद्री मानवी, ३८ पृथ्वीकाय, ३९ मनुष्य, ४० मनुष्यभवमां बाळतपस्वी, ४१ वाणव्यंतर, ४२ पुरोहित, ४३ सातमी नरक, ४४ मत्स्य ४५ सातमी नरक, ४६ बळद, ४७ मनुष्य तरीके महासमकिती अविरति चक्रवर्ती, ४८ पहेली नरक, ४९ श्रेष्ठी, ५० साधु, ५१ अनुत्तर विमानमां देव, ५२ चक्रवर्ती थइ, कामभोगोनो त्याग करी दीक्षा अंगीकार करशे अने तीर्थंकर भगवंते उपदेशेला चारित्र प्रमाणे तेनुं यथार्थ पालन करी मोक्षे जशे हे गौतम! आ प्रमाणे जे साधु-साध्वीओ तथा श्रावक-श्राविका पाखंडीनो प्रशंसा करे, निह्नव अथवा तो उत्सूत्रप्ररूपकनी पुष्टि करे, तेवानी साथे बोले-चाले, तेवाने भणाय, तेओने वसति आपे, तेवाए रचेला शास्त्रने प्ररूपे, तेओना कायक्लेश, तप, संयम, ज्ञान अने विज्ञानना वखाण करे ते पण सुमतिनी माफक परमाधामी थाय" विशेष वृत्तांत महा निशीथना चोथा अध्ययनथी जाणवुं

आ प्रमाणे सुमतिनी भवपरंपरा सांभळी गौतमस्वामीए नागिलनी गति संबंधी पृच्छा करी एटले भगवंते जणाव्युं के-'कुशीलियानो संग त्यजी दइने ते नागिल सिंह तथा चित्ताओ वगेरेथी व्याप्त ते भयंकर अटवीमां परमात्माना वचनने परम हितकारी समजी जीव रहित पृथ्वीपीठ पर पादपोपगमन अनशन स्वीकारीने रह्यो. तेनी तेवी स्थिति जाणीने, ते भव्य जीव जाणीने वावीशमा तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमि तेना पर उपकार करवानी बुद्धिथी आकर्षाइ त्यां पधार्या अने मेघ जेवी गंभीर गिरावडे उपदेश आप्यो ते उपदेशने सद्दहतो, शुभ अध्यवसायपूर्वक क्षपकश्रेणीए चढीने नागिल अंतकृत्केवली थया अने मोक्ष गयो हे गौतम! कुशीलिया अगर तो पासत्थानो संग पेंतु भवभ्रमण कराय छे ते सुमति अने नागिलना दृष्टान्त परथी सारी रीते समजी शकाय छे, माटे अग्निमां झंपापात करवो सारो परन्तु कदापि पासत्थानो परिचय न करवो" हवे कया गच्छने साचो गच्छ न जाणवो ते सूचवे छे—

पजलंति जत्थ धगधग–स्स गुरुणा वि चोइए सीसा।
रागदोसेण वि अणु–सएण तं गोयम! न गच्छम् ॥ ५० ॥

[प्रज्वलन्ति यत्र धगधगायमान, गुरुणापि नोदिते शिष्याः ।
रागद्वेषेणापि अनुशयेन, स गौतम! न गच्छ' ॥ ५० ॥]

गाथार्थ-हे गौतम ! 'तमारा जेवाने आम करवु उचित नथी' ए प्रमाणे गुरुए प्रेरणा-सूचना कर्या छतां पण जे गच्छमां शिष्य रागी, द्वेषी अने जाज्वल्यमान अग्निनी माफक क्रोधी होय तेमज दीक्षा लीधा संबंधी पश्चात्ताप करे ते गच्छ वास्तविक नथी.

विवेचन-आचार्यनी फरज छे के-शिष्य उन्मार्गे चालतो होय, चारित्रनी शुद्धि न जाळवतो होय तो तेने सूचना करवी-हितशिखामण आपवी परन्तु शिष्य शिखामण अंगीकार न करता गुरु प्रत्ये द्वेष करे, उल्टा क्रोधी बने अने मनमां विचारे के-साधुपणु तो पळातु नथी, माथु न मुंडाव्यु होत तो सारु हतु, सुखपूर्वक भोजन करत अने आ प्रतिक्रमण, पडिलेहण तथा वैयावच्चादिक कडाकूट मटी जात आवा अविचारी शिष्योवाळो गच्छ सुगच्छ न कहेवाय पोतानी भूल होय अने गुरु शिखामण आपे तो पोतानी भूल कबूल करी गुरुनो उपकार मानवो ए ज सुविहित शिष्यनी फरज छे पश्चात्ताप न करता 'पोते क्यां दीक्षा लीधी ?' एवो कुविचार मनमां लाववो ए पोतानी अधमगतिनी निशानी छे आवा रोषी अने अविनीत शिष्यो स्वपरनु हित साधी शकता नथी, माटे तेवा शिष्योवाळा गच्छने सारो गच्छ न समजवो आ संबंधमां कोईक कहे के-गच्छमां वसवु ज नहीं, कारण के क्रोधादिकना प्रसंगथी कर्मबंध थाय माटे एकलविहारी थवु शु खोटु छे ? तो तेनो जवाब ए छे के-कदाच वचनभेदना कारणथी राग-द्वेष या तो क्रोध उद्भवे तो पण गच्छनो त्याग करवो उचित ज नथी, कारण के एकला विचरवाथी स्वच्छन्दता आवी जाय छे, द्रव्य चारित्र पण जतु रहे अने महाअनर्थनु कारण प्रगटे माटे आ गच्छमां रहे तो आलोयणादिकथी अगर तो हितशिखामणथी शुद्धि थाय तेथी गच्छनो तो कदापि त्याग न करवो पण सारा गच्छमां ज निवास करवो गच्छमां रहेवाथी शु फायदो थाय छे ते जणावता कहे छे के-

गच्छो महाणुभावो, तत्थ वसंताण निज्जरा विउला ।
सारणवारणचोअण-माईहिं न दोसपडिवत्ती ॥ ५१ ॥

[गच्छो महानुभाव-स्तत्र वसतां निर्जरा विपुला ।
स्मारणावारणाचोदना-दिभिर्न दोषप्रतिपत्तिः ॥ ५१ ॥]

गाथार्थ-गच्छ महाप्रभावशाळी छे कारण के तेमां निवास करवाथी महा निर्जरा थाय छे तेमज सारणा, वारणा अने प्रेरणादिकवडे नवा दोषोनी उत्पत्ति थती नथी

विवेचन–सुविहित साधुओनो समुदाय ते गच्छ कहेवाय. परस्परना आलंबनथी शुद्ध संयम-क्रियामां चित्त संलग्न रहे एटले बहु निर्जरा-कर्मक्षय थाय. वळी निरंतर सारणादिकथी पण जागृति रहे एटले नवीन कर्मबंध न थाय. सारणा एटले स्मरण कराववु–स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पडिलेहण, चैत्यवंदन, ध्यान इत्यादिक न कर्यां होय तो याद करी आपवां. वारणा–संयमक्रियामां स्खलना करता होय तेने उद्देशीने कहे के–आ काम करवु तमने घटतु नथी, मातरुं प्रमुख बराबर परठवजो–आ प्रमाणे कहेवु ते वारणा. चोयणा–चारित्र अंगीकार कर्या छतां न करवा योग्य कार्य करे तो तेने उपदेश आपे, कठोर तेमज मिष्ट वचनथी समजावे अने पडिचोयणा–वारंवार समजावे अने विशेषमां कहे के–आ प्रमाणे जो तमारुं अनुचित वर्तन रहेशे तो प्रायश्चित्त आवशे, माटे महामूल्यवंत चारित्रधर्म बराबर शुद्धिपूर्वक पाळो. आ प्रमाणे गुरु आदिकना सारणा-वारणादिकथी संयम-पालनमां जागृति रहे अने कर्मबंध न थतां कर्म निर्जरा थाय ते निर्जरा केवा साधुओने थाय ते संबंधी चार गाथा दर्शावता कहे छे के–

गुरुणो छंदणुवत्ती, सुविणीए जिअपरीसहे धीरे ।
नवि थद्धे नवि लुद्धे, नवि गारविए विगहसीले ॥ ५२॥
खंते दंते गुत्ते, मुत्ते वेरग्गमग्गमल्लीणे ।
दसविहसामायारी, आवस्सगसंजमुज्जुत्ते ॥ ५३ ॥
खरफरुसकक्कसाए, अणिट्ठदुट्ठाइ निट्ठुरगिराए ।
निब्भच्छणनिद्धाडण–माईहिं न जे पउस्संति ॥ ५४ ॥
जे अ न अकित्तिजणए, नाजसजणए नाकज्जकारी अ ।
न पवयणुड्डाहकरे, कंठग्गयपाणसेसे वि ॥ ५५ ॥

[गुरोः छंदानुवर्तिनः, सुविनीता जितपरीषहा धीराः ।
नापि स्तब्धा नापि लुब्धा, नापि गौरविता विकथाशीलाः ॥५२॥
क्षान्ता दान्ता गुप्ता, मुक्ता वैराग्यमार्गमालीनाः ।
दशविधसामाचारी-आवश्यकसंयमोद्यताः ॥ ५३ ॥
खरपरुषकर्कशया, अनिष्टदुष्टया निष्ठुरगिरा ।
निर्भत्सननिर्घाटना-दिभिः न ये प्रद्विषन्ति ॥ ५४ ॥

ये च नाकीर्तिजनका, नायशोजनका नाकार्यकारिणश्च ।
न प्रवचनोड्डाहकरा, कण्ठगतप्राणशेषेऽपि ॥ ५९ ॥]

गाथार्थ–आचार्यना आशयने अनुसरनार, विनयी, परीषहने जीतनार, धैर्यशाली, निरभिमानी, लोलुपता रहित, गारव रहित, विकथानो त्याग करनार, क्षमावान, जितेन्द्रिय, गुप्तिव्रत (ब्रह्मचारी,) निर्लोभी–सतोषी, वैराग्यवासित, दशविध सामाचारी तथा आवश्यक करणी तेमज संयमयोगोमा सावधान, खर (आकरी), परुष (कठोर), कर्कश (करवत जेवी असह्य), अनिष्ट तेमज दुष्ट वाणी द्वारा अगर तो तिरस्कार के गच्छबाह्य करवा छतां जे लेशमात्र द्वेष न करे, अपकीर्ति न करे, अकार्य न करे तेमज प्राणनो संशय आवी पडे तो पण शासननी हीलना थाय तेवु कार्य न करे तेवा शिष्यो–साधुओ निर्जरा करे छे.

विवेचन–बावीश प्रकारना परिषहो छे, तेना बे विभाग छे १ शीतपरीषह अने २ उष्ण परीषह आचारांगसूत्रनी निर्युक्तिमां कह्यु छे के–" इत्थीसक्कार-परीसहा य, दो भावसीयला एए। सेसा वीस उण्हा, परीसहा होन्ति णायव्वा ॥१॥" स्त्रीपरीषह अने सत्कारपरीषह ए बने परीषह शीत–ठंडा छे एटले ते शरीरादिकने कष्ट उपजावता नथी परंतु चारित्रमां शिथिलता पमाडे छे ज्यारे बाकीना वीश परीषहो उष्ण छे एटले ते चारित्र तथा शरीरने दुःख उपजावे छे जो चारित्रथी चलायमान थाय तो दुःख अने न चलायमान थाय तो दुःख नथी परंतु शरीरने तो दुःख छे ज वळी आ संबंधी बीजी गाथा दर्शावे छे के–
"जे तिव्वपरिणामा, परीसहा ते भवन्ति उण्हाओ । जे मंदपरिणामा, परीसहा ते भवे सीया ॥ २ ॥" जेनाथी राग–द्वेषादिक अधिक थाय ते उष्णपरीषह अने जेनाथी मंदपणुं थाय ते शीतपरीषह आवा परीषहने जीतनार शिष्य कर्म निर्जरा करी शके छे गारव त्रण प्रकारना छे–१ रस, २ ऋद्धि अने ३ साता 'मारा प्रभावथी सरस आहार मळे छे' तेवु गौरव करवुं ते रस–गारव, 'मारा उपदेशथी श्रावको बोध पाम्या, साधुओनी संख्या वधी' आ प्रमाणे कहेवु ते ऋद्धिगारव अने 'मारा प्रभावथी शय्या, वसति वगेरेथी सुख प्राप्त थाय छे' तेवुं गौरव लेवु ते सातागारव आ त्रण प्रकारना गारव रहित मुनि कर्मक्षय करी शके छे वळी [1]स्कंदकाचार्यना पांच सो शिष्य अगर तो स्कंदक मुनिनी जेम क्षमाशील

---

१ वीसमा तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी पासे स्कंदक नामना राजपुत्रे दीक्षा लीधी अल्पकाळमां सतत शास्त्राध्ययनथी तेओ आगमज्ञ थया तेमने पांच सो शिष्योना आचार्य बनाववामां आव्या एकदा पोताना बनेवीने प्रतिबोधवा माटे कुंभारकटनगरे जवानी गुरु समक्ष आज्ञा मागी गुरुए ज्ञान–

बळमां जोई कह्यु के-त्यां जवाथी तमारा सवनो नाश थशे स्कंदकमुनिए पुन प्रश्न कर्यो-लाभ थशे के हानि ? गुरुए कह्यु के-तमारा सिवाय सर्वने लाभ थशे स्वशिष्योने लाभ जाणी तेओ विहार कर्यो कुमारकटनगर आव्या त्यांना राजा दंडकनो प्रधान पालक पूर्वे ज्यारे स्कंदक राजपुत्रनी राजधानीमां गयल त्यारे कुमारे तेने वादमां पराभव पमाड्यो हतो त्यारथी ते तेमना प्रत्ये रोषे भरायेलो हतो स्कंदकने सपरिवार आवेला जाणी वेरनो बदलो लेवानो तेणे मनसूबो कर्यो जे उपवनमां ते उतरवाना हता ते स्थानमां पोताना गुप्त माणसोद्वारा रात्रिमां ने रात्रिमां ज शस्त्रो भूमिमां दटाव्या बीजे दिवसे राजवीने उन्धु समजाव्यु के-हे राजन्! आ साधुओ नथी पण स साधुओना छूपा वेशधारीनी नीचे महासुभटो छे तेओ प्रपंच ओर तमारु राज्य ग्रहण करवा इच्छे छे जो ते हकीकतनी खात्री करवी होय तो तेओ ज्यां उतर्या छे त्यां तपास करावो आपने सतावेला शस्त्रो मळी आवशे राजाए ते प्रमाणे तपास करावी अने साधुओनु आ कारस्थान छे एम समजी प्रधानने उचित शिक्षा करवानो हुकम आप्यो पालकने जोइतु हतु ते मळी गयु तेणे तरत ज घाणी मगावीने साधुओने तेमा पीली नाखवानो आदेश आप्यो स्कंदक मुनिने आ समय गुरुना वचनो याद आव्या. स्कंदक मुनिए पालकने कह्यु के-पहेला प्रथम मने पीली नाख जेथी मारे मारा शिष्योनु दुःख जोवु न पडे प्रधानने तो तेमने ज विशेष कष्ट आपवु हतु एटले शिष्योने एक पछी एक तेमनी नजर समक्ष पीलवा मांड्या दृढ शिष्यो अजब क्षमा धारण करी राजहुकमने मान आपता रह्या ४९९ तो पीलाई गया छेल्ला एक बालसाधु बाकी रह्या त्यारे स्कंदकमुनिए पुन विज्ञप्ति करी के-आ बालसाधु पहेला मने पीली नाख, तेमनु दुःख मारी नजरे नहीं जोवाय प्रधाने आवी नम्रतावाळी मागणी पण नामंजूर करता स्कंदकमुनिनो अत्यार सुधी शांत रहेलो क्रोध उछळी आव्यो तेणे त्यां ने त्यां ज नियाणु कर्यु प्रधाने बाळसाधुने अने छेवटे स्कंदकमुनिने पीली नाख्या नियाण ना प्रभावे स्कंदकमुनि अग्निकुमार निकायमां देव थया पूर्वभवना द्वेषथी तेमणे ते समस्त नगरी बाळी दीधी आजे ते दंडकारण्यना नामे ओळखाय छे जीवनना अंतभागे स्कंदकमुनिनो रोष शांत न रही शक्यो, परन्तु तेमना ५०० शिष्योए तो अजब शांति अने क्षमा धारण करी स्वहित साध्यु

२ श्रावस्ती नगरीना कनककेतु राजाना तेओ पुत्र हता वैराग्यभीना बनी तेओए संयम स्वीकार्यु दीक्षा लीधाबाद स्कंदक राजकुमारे पृथ्वी-पर्यटन शरु कर्यु विहार करता करता तेओ पोताना बहेन-बनेवीना राजनगर नजीक आवी पहोंच्या राजा-राणी आ समये राजमहेलना अगासीमां बेठा वार्ता-विनोद करी रह्या हता अचानक राणीनी नजर पोताना भाई उपर पडी साधुवेषमां रहेला पोताना भाईने राणी ओळखी शक्या नहीं भाई प्रत्येना भ्रातृस्नेहथी राणीना नेत्रमांथी आंसुना बे-चार बिन्दु सरकी पड्या राजाए ते जोतां ज तेना मनमां शंकाए स्थान लीधु राजाए वातनो खुलासो कर्या सिवाय ज मानसिक निर्णय करी लीधो के-साधुना वेषमां आवेल आ नवीन आगन्तुक राणीनो पूर्वनो प्रेमी हशे सर्व झेर करतां प्रेमनु झेर विशेष कातिल होय छे आवेशमां ने आवेशमां तत्काळ त्यांथी ऊभा थई राजाए चांडालने बोलाव्या अने स्कंदक मुनिनी जीवता ज चामडी उतारी लेवानो आदेश आप्यो चांडालो मुनिराज पासे गया अने राजानो आदेश समजाव्यो क्षमाशील मुनिराज हकीकत सांभळीने लेशमात्र उचकाट सिवाय बोल्या-"तमे तमारु कार्य खुशीथी बजावो कहो हु कवी रीते

करावे त्यारे मिथ्या दुष्कृत देवो अने मनमां ' मने धिक्कार हो ! ' एम चिंतववु ८ तथाकार-गुरुमहाराज जे कहे तेने ' तहत्ति ' कहीने स्वीकारवु ९ अभ्युत्थान-गुरुमहाराज आवे त्यारे ऊभा थइने आदर आपवो, तेमनुं बहुमान करवुं तेमज ग्लानादिक साधुनी वैयावच्च करवी, तेने आहार पाणी लावी आपवां १० उपसंपत्-पोताना आचार्य पासेथी बीजा आचार्य अगर तो उपाध्याय पासे रहेवु होय तो कहे-'हुं आटला समय पर्यंत आपनी पासे रहीश' श्री उत्तराध्ययनसूत्रमां ऊपर प्रमाणे दश प्रकारनी सामाचारी जणावी छे परन्तु पंचवस्तुक तथा प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथोमां बीजी रीते पण दर्शावी छे, ते आ प्रमाणे—

" पडिलेहणा १ पमज्जण २-भिक्खि३इरिया ४ लोय ५ भुंजणा ६ चेव ।

पत्तगधुवण ७ वियारा ८, थंडिल ९ आवस्सयाइया १० ॥१॥" १ पडिलेहणा विधिपूर्वक उपधिनी पडिलेहणा करवी पडिलेहणा करतां जे दोष वर्जन करवा जणाय छे ते-प्रातःकाळमां तेमज चोथा प्रहरमां इरियावही करीने मुहपत्ति पडिलेहवी पछी काया पडिलेहवी बाद रजोहरण तथा गुह्य उपकरण पडिलेहवां बाद ग्लानसाधु तथा नवीन लघुशिष्यनां उपकरण, पोतानां वस्त्रो, उत्तरपट्टो, संथारो, पछी गुरुनो संथारो-एम अनुक्रमे पडिलेहवां आ संबंधमां चार प्रकार कहे छे-(१) ऊर्ध्व-उत्कट आसने बेसी, नीचेना छेडा पर्यंत वस्त्र ऊंचां करीने पडिलेहवुं पण वस्त्रने भूमि पर स्पर्श करवा देवुं नहीं (२) स्थिर-वस्त्रना त्रण भाग करीने स्थिर दृष्टिथी जोवु (३) त्वरित-वस्त्रनी एक बाजु तपासी बीजी बाजु तपासतां उतावळ न करवी, एम के तेम करवाथी जीवजंतुनी जयणा न सचवाय (४) स्पर्श-वस्त्रने सर्व बाजु स्पर्श करीने बराबर एक ध्यानथी तपासवु आ प्रमाणे सारी रीते वस्त्र न तपासे तो पीडा, कुंथुआ प्रमुख त्रसजीवनी नाश थाय जो जीवजन्तु मालूम पडे तो विधिपूर्वक पूंजी तेने एकांत स्थानमां मूके. आ पछी पप्फोडा करवा तथा नीचेना चार दोषोनो त्याग करवो (१) अणच्चाविअ-वस्त्रने चाळवु नहीं तेमज शरीरने हलाववु नहीं (२) अवलिअ-वस्त्रने वाळवु नहीं. (३) अननुबंधि-निरंतर एक बाजु ज जोवु नहीं (४) मोसलि-तिरछो अगर तो ऊंधो संघट्टो करवो नहीं बाद छ पुरिमा करे-एक बाजु त्रण त्रण वार जुये बाद नव पप्फोडा करे ते त्रण त्रण आंतरे हाथ ऊपर झटका आपे-आ प्रमाणे हस्तनुं प्रमार्जन करवाथी जीवनी रक्षा थाय आ संबंधमां छ दोष जणावे छे-(१) आरभड-ऊपर कहेल विधि करतां विपरीत करे अथवा पप्फोडा विगेरे आघा-पाछा करे, एटले के पहेलां आघा पडिलेहे पछी बीजु पडिलेहे अने पाछु अन्य काम करे (२) संमर्दना-पडिलेहण करेल वस्त्र अणपडिलेहेलां वस्त्र साथे मूके, तेनी ऊपर बेसे अने मर्दन करे (३) अस्थानस्थापना-पडिलेहेल उपधि गुरुना अवग्रहमां मूके. (४) प्रस्फोटना-धूळ विगेरेथी मिश्रित वस्त्रने झापटे (५) विक्षिप्त-पडिलेहीने ज्यां त्यां नाखी मूके. (६) वेदिका

दोष-तेना पांच भेद छे, ते आ प्रमाणे-(१) ऊर्ध्ववेदिका-ढींचण ऊपर हाथ राखी पडिलेहे, (२) अधोवेदिका-ढींचण नीचे हाथ राखी पडिलेहे (३) पक्षवेदिका-पक्ष हाथ ढींचणनी मध्यमां अने एक बहार राखी पडिलेहे (४) दुहउ(उभउ)वेदिका-बन्ने ढींचण वच्चे हाथ राखी पडिलेहे (५) अताडिया (अतउदिका)-बन्ने ढींचणने मध्यमां राखीने पडिलेहे पडिलेहण संबंधी बीजा पण दोष बताववा कहे छे के-(१) प्रसिथल-पडिलेहेण वस्त्र शिथीलथी ग्रहण न करे, (२) प्रलंब-पछवाडेथी ग्रहण करे (३) लोला-भूमिपर अडाडे, भूमि पर मूके अगर तो हस्त ऊपर मूके (४) एगा मोसा लेंघया-मूब भामा, सामान्य वस्त्रने बीन्वाभा त्रण आंगळीथी पकडवाने बदले एक आंगळीथी पकडे, (५) अनेकधुणा पप्फाटा करवा वस्त्रने धुणावे, घणा वस्त्रने धुणावे अगर तो एक ज वस्त्रने घणा वखत धुणावे (६) प्रमाणाप्रमाण-पप्फोडा करता शंका करे के-में एक वार कर्या के बे वार-आ प्रमाणेना प्रमादथी शंका थाय अने गणत्री करे आ बधा प्रकारना दोष रहित पडिलेहण करे तो ज ते फळ वती थाय निर्युक्तिकार कहे छे के-१ अन्यून, २ अनाधिक अने ३ अविपरीत-आ त्रिपदीना आठ भांगा थाय छे, ते पैकी प्रथम भांगो शुद्ध अने बाकीना बीजा अशुद्ध जाणवा तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे छे

स्थापना

—	—	—
।	—	—
—	।	—
।	।	—
—	—	।
।	—	।
—	।	।
।	।	।

— आवी लीटी शुद्ध अने । आवी लीटी अशुद्ध समजवी पडिलेहण क्यारे करवी ते संबंधी जुदा जुदा मतो छे एक कहे छे-प्रतिक्रमण करीने, बीजो कहे-सूर्योदय थाय त्यारे, त्रीजो कहे-प्रकाश थाय त्यारे, चोथो कहे-हस्तनी रेखा देखाय त्यारे आ संबंधमां वृद्धसंप्रदाय एवो छे के-खूब देखाय, हस्तनी रेखा देखाय विगेरे हकीकत बराबर नथी आवश्यक कर्या पछी जे थोडा कहीए छीए त्यारे पडिलेहणनो समय आवे तेवी रीत आवश्यक करवा ते समये दश वस्तुओ पडिलेहवी अने ते पडिलेहण पूर्ण करे त्यारे सूर्योदय थाय, दश वस्तुओ नीचे प्रमाणे समजवी-१ मुहपत्ति २ ओघो ३-४ बन्ने निशीथिया, ५ चोलपट्टा, ६ संथारियु, ७ उत्तरपट्टा, ८-१० त्रण कपडा श्वेताम्बर अगियारमो दांडो पण गणाय छे आ समय करता वहेली-मोडी प्रतिलेखना करे तो अविधिजन्य दोष लागे पुरुषविपर्यय पण न करवो, तेनो क्रम नीचे प्रमाणे छे-१ प्रथम गुरुना उपकरण पडिलेहवा, २ तपस्वीना, ३ ग्लान साधुना, ४ अने पछी शिष्यादिकना आ पडिलेहण-सामाचारीमां विराधना करे तो तीर्थंकरनी आज्ञाना विराधक कहेवाय माटे प्रथम पडिलेहण-सामाचारी यथायोग्य समजी लेवी २ [illegible]-पडिलेहण करीने प्रभात वसति पूजवी अने दिवसना चोथा प्रहर प्रथम वसति पूजवी अने पछी पडिलेहणा करवी आ प्रमाणना [illegible]

न करवी पछी काजो बराबर तपासवो जो आ प्रमाणे प्रमार्जना न करे तो लोकमां निंदा थाय, जीवघात थाय, धूळनी वृद्धि थवाथी कपडां मेलां थाय अने प्रक्षालननो आरंभ थवे वि० आत्मविराधना थाय ३ भिक्षा-विधिपूर्वक पात्रा पडिलेहीने गोचरी अर्थे जाय आ विधि पंचवस्तुक ग्रंथमां आपी छे पछी ते स्थळेथी आणी लेवी ४ ईर्यापथिकी-सूत्रना उच्चारपूर्वक कायोत्सर्ग करे आ संबंधी पण विशेष विधि पंचवस्तुक ग्रंथमां जणावेल छे ५ आलोचन-गोचरी लाव्या बाद 'अमुक अमुक स्थळेथी आ भिक्षा मळी छे' ते प्रमाणे गुरुमहाराजने जणाववु ६ भोजन-आ विषय तो प्रसिद्ध ज छे ७ पात्रकधावन-पात्र विगेरे साफ करवा ८ विचार-स्थंडिल विधिपूर्वक जाय ९ स्थंडिल-स्थंडिल जवा माटे जीवरहित तेमज ज्यां बीजानु अनागमन समये तेवी भूमि पसंद करवी १० आवश्यक-प्रतिक्रमण विगेरे आवश्यक अवश्य करवां आवश्यक संबंधी सविस्तर वर्णन पंचवस्तुक ग्रंथमां बीजा द्वारमां जणावेल छे आवश्यक एटले अवश्य करवा योग्य जाय, अथवा आत्माने गुणथी वासित करे आवश्यक संबंधी श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमां स्वरूप वर्णव्यु छे, ते आ प्रमाणे-१ नाम आवश्यक, २ स्थापना आवश्यक, ३ द्रव्य आवश्यक अने ४ भाव आवश्यक १ नाम आवश्यक-कोइ पण जीव अथवा अजीवनु, घणा जीवोनु अथवा अजीवोनु, आवश्यक एवु नाम २ स्थापना आवश्यकना दश भेदो छे (१) काष्ठ(लाकडा)ने कापीने साधु प्रमुखनु स्वरूप दर्शावे, २ चित्रकर्म-साधु प्रमुखनु चित्र आलेखे, (३) पोतकर्म-कपडाना छेडा प्रमुख वाळीने ढींगली प्रमुखना आकार दर्शावे, (४) लेपकर्म-लेप कराने मूर्ति विगेरेना आकार दर्शावे, (५) ग्रंथिम-चतुराइथी गांठीने आकार दर्शावे दाखला तरीके पुष्पनी ज माळा (६) वेष्टिम-पुष्प वींटीने अगर तो एक बे या त्रण वस्त्रो वींटाळीने कोइ स्वरूप दर्शावे (७) पूरिम-भरतचक्रवर्ती विगेरेए भरावेली पीतळनी मूर्ति विगेरेनी स्थापना (८) संघातिम-घणा कपडा टुकडा एकठा करीने बनावायेल कंचुक(चोळी)नी जेम, (९) अक्ष चंदनकनु अक्ष एवु नाम स्थापवु अने (१०) वराटक-कोडियानी स्थापना आ प्रमाणे बीजा स्थापना आवश्यकना दश प्रकार दर्शावेल ■ मतान्तरे दलकर्म विगेरे स्थापना पण जणावल छे आ काष्ठकर्म विगेरे भेदोमां सन्मुख स्थापना स्थापीने जे क्रिया करे ते संबंधमां स्थापना बे प्रकारनी समजवी १ सद्भावस्थापना अने २ असद्भावस्थापना, ते आ प्रमाणे समजवु-काष्ठ प्रमुखमां साधुना आबेहुब-साक्षात् आकार कोतरे ते सद्भावस्थापना कहेवाय अने अक्षमां साधुना अवयवोना आकार नथी तेथी ते असद्भावस्थापना कहेवाय इय प्रतिवादी पूछे छे के-नामआवश्यक अने स्थापनाआवश्यकमां विशेष तफावत शो छे ? तेनो उत्तर ए छे के नाम तो यावत्कथिक एटले सदाकाळ रहेनार छे अने स्थापना तो अल्प समयनी पण होय अने सर्व काळनी पण होय दाखला तरीके-शाश्वती प्रतिमा यावत्कथिक कहेवाय, अने चैत्यमां

रहेली जिनप्रतिमानो तो कालांतरे विलय थइ जाय. बीजुं इत्वर-यावत्कथिक स्थापना स्थापे ते इत्वरिक (अल्प काळनी) अने साधु पोताना गुरुनी स्थापना स्थापे ते यावत्कथिक कहेवाय. हवे त्रीजुं द्रव्यआवश्यक जणावे छे-द्रव्यआवश्यक बे प्रकारनुं छे-(१) आगम अने (२) नोआगम. आगमद्रव्यावश्यक-आवश्यक सूत्रथी प्रारंभीने क्रिया सुधी सर्व शीख्या होय, तेने भूले नहीं, हृदयमां स्थिर थई गयेल होय, अन्य कोई पूछे तो तत्काळ कहे, श्लोक, पद तथा अक्षरनी संख्या पण जाणे आदिथी अंत पर्यंत अने अंतथी आदि पर्यंत पाठ करी शके एटले क्रमोत्क्रम भणी शके, पोताना नामथी कोई बोलाय तो ऊंघमां पण जाणे के मारुं नाम कोईए लीधुं तेम शास्त्र-पाठ तेना हृदयमां जामी गया होय ज्यारे पूछे त्यारे जवाब मळे जेवी रीते गुरु शीखवे तेवी रीते ज बराबर ग्रहण करी ले, एक पण अक्षर रही न जाय तेमज अधिक पण न बोले, एकबीजामां एकबीजा अक्षर मळी जाय तेम न बोले, अस्खलित-धाराबद्ध रीते बोले, सूत्र बोलतां पद भिन्न भिन्न बोले तेमज स्थान अने विरामनो बराबर ख्याल राखीने बोले, बिंदु के मात्रा पण न्यून न थाय तेमज अर्थ अध्याहार न रहे, घोषपूर्वक पण बोले, स्पष्ट रीते बोले अर्थात् मुंगो के बाळक बोले तेम न बोले, गुरु पासे वाचना लइने भणेल होय एटले के कोईनुं सांभळीने अगर तो पोतानी मेळे भणेल न होय, अर्थात् वाचना, पृच्छना, प्रतिपृच्छना, धर्मकथा अने अनुप्रेक्षा-ए पांच प्रकारद्वारा शास्त्राध्ययन कर्युं होय. अहीं अनुप्रेक्षानो अर्थ उपयोगपूर्वक भणवुं ते थाय छे अने उपयोगपूर्वक पठन करवुं ते द्रव्यआवश्यक तथा भावआवश्यक छे तो विरोध नहीं आवे ? आ शंकानो उत्तर आपतां जणावे छे के-उपयोग विना पूर्वे पण था न बधा गुणयुक्त बोले तो पण उपयोग नथी माटे तेने द्रव्यआवश्यक जाणवुं. आ विषयमां सात नयनो प्रसंग घटावी ते कथननी पुष्टि पण करे छे. १ नैगमनयना मते तो एक अनुपयोगी ते एक आगमद्रव्यावश्यक, तेवी रीते बे, त्रण अनुपयोगी ते बे त्रण आगमद्रव्यावश्यक. एवी ज रीते जेटला अनुपयोगी तेटला आगमद्रव्यावश्यक जाणवा. २ एवी ज रीते व्यवहारनयनो पण मत जाणवो. ३ संग्रहनयना मत प्रमाणे एक-बे होय अथवा घणा अनुपयोगी होय तो पण एक ज द्रव्यावश्यक माने. ४ ऋजुसूत्र पण एक ज कहे, तेथी विशेष न माने. ५-७ शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए त्रण नयो तो आगमद्रव्यावश्यक मानता ज नथी, कारण के तेनुं कथन एवुं छे के-जे जाणे छे ते अनुपयोगी होय ज नहीं. आ प्रमाणे आगमद्रव्यावश्यकनुं स्वरूप संक्षिप्तमां जाणवुं. हवे नोआगम-द्रव्यावश्यकनुं स्वरूप दर्शावे छे. तेना त्रण भेद छे-(१) ज्ञायकशरीरद्रव्यावश्यक, (२) भव्यशरीरद्रव्यावश्यक अने (३) ज्ञायकशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त (भिन्न) १ ज्ञायकशरीरद्रव्यावश्यक-आवश्यक सूत्रनुं सुन्दर अध्ययन कर्युं

होय तेवु शरीर, आ शरीर केवु छे ? अचेतन-जीव विनानु, श्वासोच्छ्वास रहित, अहो हाथनी शय्या प्रमाणवाळु अणशण स्वीकारीने मोक्षे पहोंचेल-आवा शरीरने जोईने कोई विचारे के-पौद्गलिक देहद्वारा आत्महित साधी, कर्मनिर्जरा करी भूतकाळमा आ शरीरमा रहेला जीवे आवश्यकसूत्रनु अध्य यन कर्यु, शिष्यने ते सूत्रो शीखवाड्या पडिलेहणादिक क्रिया करी स्व शिष्योने दर्शाव्यु शिष्य काइ अर्थ न समजी शके तो तेना प्रत्ये अनुकम्पा लावी वारवार तेने समजाव्यु-आवा प्रकारनो गुणी आ शरीरनो स्वामी आवश्यकनो ज्ञाता हतो तेम कथन करवु ते ज्ञाणगशरीरद्रव्यावश्यक जाणवु आ संबधमा दृष्टांत आपे छे के-मध के घी भरीने लावेला घडामाथी मध के घी खाली कर्या पछी पण जेम ते मधनो के घीनो घडो कहेवाय छे तेम जीव रहित शरीर होवा छता आवश्यकनो ज्ञाता आ देहमा हतो तेम निरूपी शकाय ■ २ भव्यशरीरद्रव्यावश्यक-' आ घीनो अने आ मधनो घडो थशे ' एम घडाने जोईने भविष्यकाळनी कल्पना करवामा आवे छे तेम आ शरीर पण आवश्यक जाणनार थशे तेवा उपचार करवो ३ ज्ञाणगशरीरभव्य शरीरव्यतिरिक्तना त्रण प्रकार दर्शाव्या छे (१) लौकिक-राजा, कोटवाळ, माडलिक राजा, नगरशेठ, सेनापति, सार्थवाहक विगेरे सुन्दर अने रम्य प्रभातकाळ थये छते मुखप्रक्षालन करे, दतधावन करे केश समारे धूप करे, पुष्पमाळ पहेरे, सुन्दर वस्त्रो धारण करे, विगेर क्रियाओ करी राजसभामा, देवभुवनमा अगर तो उपवनमा जाय-आ लौकिक (२) कुप्रावचनिक-१ जमतां जमता चाले ते चरक, २ मार्गमा पडेला वस्त्रना कटकाओनी कथा पहेरीने चाले ते चारिक ३ चामडाना वस्त्र राखे ते चर्मखडिका, ४ भिक्षा मळे ते खाय तेमज गाय प्रमुखनु दूध ग्रहण करे ते भिक्षोंडा, ५ शरीरे भस्म चोळे ते पाण्डुरागा ६ रानकडा बळदने कोडी-माळा विगेरे करी शीखवीने कौतुकथी चित्त वश करी भिक्षा मागे ते गौतमा ७ गाय चाले तम चाले, तेने अनुसरे गाय ऊभी रहे तो ऊभा रहे, बेसे तो बेसी जाय, गाय तृण, पत्र-पत्रादिक खाय तो ते पण तृणादिक खाय ते गोव्रतिका, ८ 'गृहस्थ धर्म ज सारो छे' एम कहीने तेनी प्ररूपणा करे ते गृहस्थधर्मी, ९ याज्ञवल्क्यादिक ऋषिओए बना वेल धर्मसंहिता प्रमाणे व्यवहार चलावे ते धर्मचिंतका, १० देव, राजा, माता, पिता विगेरेनो विनय साधे, ते वैनयिका, ११ पुण्य, पाप, परलोकादिक नहीं माननारा नास्तिक, १२ तापस इत्यादिक बीजा पण पाखंडीओ पूर्वे कह्यो तथा सुन्दर अने रम्य प्रभातकाळ थये छते इन्द्र, रुद्र, शंकर, वैश्रमण नाग, स्कन्द, विष्णु विगरे देवो तेमज दुर्गा विगरे देवीओना मूर्ति समीपे अहन गधादि छांट, धूप करे, पुष्पमाळा चढावे विगरे क्रिया करे ते कुप्रावचनिक (३) लोकोत्तर-प्रव्रज्या अगीकार कर्या छता साधुना गुण रहित (पासत्था), स्वछद

नी अनुकंपा रहित, लगाम विनाना अश्वना माफक उन्मार्गगामी, निरंकुश हस्ती-नी माफक स्वच्छंदाचारी, केशने तेल तथा पाणीथी मिश्रित करनारा, शीतकाळमां फाटी गयेल ओष्ठप्रमुखने माखण लगावनारा-आवा साधुओ लोकोने देखाडवा माटे ज उभय टंक आवश्यक क्रिया करे परंतु तमने खरेखरी रीत तो आलोचनानु होतु नथी पण ते जिनाज्ञाने माननारने आलोचना करवानी होय परंतु आ पट मराओने तो लोकोने देखाडवा पूरती ज क्रिया करवी छे-आवी क्रिया ते लोकोत्तरद्रव्यावश्यक रूप थाय। भावावश्यक जणाय छे, तेना पण बे प्रकार छे-(१) आगम अने २ नोआगम प्रथम आगमभावावश्यक आगम द्रव्यावश्यकनी जेम जाणी लेवा परंतु आवश्यक सूत्रार्थने जाणवाथी वैराग्य, संवेग, विशुद्ध परिणामवाळो बने छे अने २ नोआगमभावावश्यकना पण द्रव्यआवश्यकनी माफक ज त्रण भेद छे (१) लौकिक-मध्याह्न पहेलां महाभारत वांचे अने मध्याह्न पछी रामायण वांचे, (२) कुप्रावचनिक-पूर्व कथा ते चरकादिक पाखंडियो पूजा करे, होम करे, जाप करे, गायत्रीनो पाठ करे, चन्द्र जेम गाजे तेम महादेवनी मूर्ति समक्ष गान-तान इत्यादिक क्रिया करे (३) लोकोत्तर चारित्रपात्र, तपस्या करनार साधु तथा साध्वी, अने श्रीजिनराजे प्ररूपेल पंचांगी मां कहेल शुद्ध सामाचारी साधु पासे सांभळे ते श्रावक, अने श्राविका आ प्रमाणे चतुर्विध संघ आवश्यक क्रियामां एकचित्त बने शुभ लेश्या-परिणाम वाळो बने, क्रिया करतां वखत क्षणे क्षण आनंदित थाय शरीरथी जिनमुद्रा विगेरे साचवे, रजोहरण(बावन चरवला)थी प्रमार्जना करे, मुहपत्ति मोढे राखीने बोले विगेरे उभय टंक आवश्यक करे आ संबंधमां प्रतिवादी शंका करता कहे छे के-आवी हकीकत तो आगमद्रव्यावश्यकमां जणावी छे तो आ नोआगमना प्रकारमां पुनः केम जणावो छो? तेनो जवाब ए [illegible] के-मुखवस्त्रिका पडिलेहवी, रजोहरणथी सडासा करवा इत्यादिक क्रिया करवानो जे देश छे ते नोआगमपणु छे तेथी नोआगमभावावश्यकमां आ हकीकतनो समावेश थाय छे आने लगती विशेष हकीकत आवश्यकचूर्णी तथा तेना टीकामां विस्तार थी जणावी छे, पण ग्रन्थविस्तारना भयथी अहीं लखता नथी ए

आ प्रमाणे सामाचारीनु स्वरूप दर्शाव्या संयमनु वर्णन करता जणावे छे-

पंचासववेरमण, पंचिंदियनिग्गहो कसायजओ। तिण्हदंडविरमणाओ, सत्तरसहा संजमो होइ ॥१॥"सत्तर प्रकारनो संयम छे-पांच आश्रवनो त्याग करे, पांचे इन्द्रियोनो निग्रह करे-दमे, चार कषायोने जीते अने त्रण दंड (मनदंड, वचन दंड अने कायदंड)थी विरमे आवा प्रकारना गच्छमां रहेल साधु निर्जरा करे

वळी गुरुमहाराज (१) मांथ लागी होता जेथी वेदना थाय तेथी वेदना उपजावनारा खर पाणी वहे (२) पाण लाग्या जेवो कठण पाणी (३) भालाना प्रहार जेवा कर्कश पाणी (४) कागडानो शब्द न गमे तेवी रीत जे पाणी

सांभळवी न गमे तेवी अनिष्ट वाणी (५) क्रोधित थयेल वाघ जेवो भयंकर शब्द करे तथी भय उपजावनारी दुष्ट वाणी (६) पत्थर लागवा जेवी निष्ठुर वाणी-आवा प्रकारनी वाणीवडे निर्भर्त्सना करे, तिरस्कार करे अगर तो गच्छमांथी बहार काढी मूके तो पण जाय नहीं अने मनमां विचारे के-'मारा आत्महित खातर ज गुरु हितशिक्षावचन कहे छे' परन्तु एम विपरीत न विचारे के-'आ गच्छ ऊपर कयुं देवुं कर्युं छे, मने पण बीजे स्थाने रोटला मळी रहेशे' तेम मनमां न लावे वळी अवर्णवाद न बोले, मरणांत कष्ट आवे तो पण शासनहीलना थाय तेवुं कार्य न करे ते ज सुशिष्य कर्मनी निर्जरा करी शके छे आ प्रमाणे सुशिष्यनुं स्वरूप बतावी हवे गच्छनुं स्वरूप दर्शावे छे—

गुरुणा कज्जमकज्जो, खरकक्कसदुट्ठनिट्ठुरगिराए ।
भणिए तहत्ति सीसा, भणंति तं गोयमा गच्छम् ॥५६॥

[गुरुणा कार्याकार्ये, खरकर्कशदुष्टनिष्ठुरगिरा ।
भणिते तथेति शिष्याः, भणन्ति स गौतम ! गच्छ ॥५६॥]

गाथार्थ-करवा लायक अगर न करवा लायक कार्यमां कठोर, कर्कश, दुष्ट अने निष्ठुर भाषाद्वारा गुरुमहाराज जो कइ पण कहे तो "हे प्रभो ! आप कहो छो ते वास्तविक ज छे" ए प्रमाणे ज्यां शिष्यो विनयपूर्वक वर्ते छे ते गच्छ ज हे गौतम ! खरेखर गच्छ छे.

विवेचन-आ गाथा स्पष्टार्थवाळी होवाथी तेना विवेचननी विशेष जरूर नथी छतां, कठण विगरे वाणीना प्रकारना अर्थ उपयुक्त गाथामां आवी गया छे आचार्यना आदेश सामे प्रतिवाद न थाय, रोष न लावे अने सिंह सूरिना शिष्यनी माफक गुरुवचन 'तहत्ति' कहीने अंगीकार करे-एवा शिष्यो ज गच्छमां होय ते गच्छने तीर्थंकर भगवंतो तथा गणधरादिको सुगच्छ कहे छे गच्छनुं विशेष स्वरूप दर्शावता कहे छे के—

दूरुज्झियपत्ताइसु ममत्तए निप्पिहे सरीरे वि ।
जायमजायाहारे बायालीसेसणाकुसले ॥ ५७ ॥

[दूरोज्झितपात्रादिममत्वो निःस्पृहः शरीरेऽपि ।
जाताजाताहारः द्विचत्वारिंशदेषणाकुशलः ॥ ५७ ॥]

गाथार्थ-वस्त्र-पात्रादिकने विषे ममत्व रहित, शरीरने विषे पण स्पृहा विनाना, एषणाना बेंतालीश दोष रहित शुद्ध आहार मळे तो ज ग्रहण करनारा अने तेना अभावमां तपस्या करनार होय ते ज कुशळ मुनि कहेवाय छे.

विवेचन-चारित्रपालन करवामां कुशळ मुनि तो शरीर प्रत्ये पण निर्मोही होय आहार तो फक्त 'धर्मायतन शरीरम्' ए वाक्य विचारीने तेना पोषणार्थे ज ग्रहण करे अने ते पण शुद्ध मळे तो ज "अलब्धे तपसो वृद्धि-र्लब्धे देहस्य धारणे।" शुद्ध गोचरी न मळे तो विचारे के-आजे तपमां वृद्धि थइ, अने मळे तो माने के देह टकशे तो संयम घणा काळ पर्यंत पाळी शकाशे, स्वाध्याय पण सुखे थई शकशे साधुपुरुषने ३२ कवल, साध्वीने २८ अने नपुंसक साधुने २४ कवलप्रमाण आहार होय आटलो आहार करवाथी ते भूख्या न रहे आथी विशेष आहार लेवानो निषेध छे हवे कवल कोने कहेवा ? ते संबंधी वर्णन करता कहे छे के-कुकडीना इंडा प्रमाणने एक कवल कहेल छे कुक्कुटीना बे भेद छे-(१) द्रव्यकुक्कुटी अने (२) भावकुक्कुटी. द्रव्यकुक्कुटीना पण बे विभाग छे-(१) उदरकुक्कुटी अने (२) गलकुक्कुटी उदरकुक्कुटी एटले जे आहार करवाथी साधुनुं उदर न ऊन रहे के न वृद्धि पामे अर्थात् साधुने स्वोदरपूर्ति प्रमाणे ज आहार होय गलकुक्कुटी एटले कवल लेता सरळताथी गळामां प्रवेश करी जाय ते, अथवा बहु मुख फाडीने नहीं तेमज आंख, भ्रकुटी के कपाळ विकृति धारण न करे ते कवळने गलकुक्कुटी कहेवाय भावकुक्कुटी एटले जे आहार करवाथी न भूख्यो रहे के न तो प्रमाद थवे परन्तु उदरने शांति थाय, देहमां निर्बलता न देखाय तेमज ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनामां उमंग रहे-तेटला प्रमाणवाळो जे आहार लेवाय तेने भावकुक्कुटी कहेवाय आ आहारनो बत्रीशमो भाग ते अंडक (कवल) कहेवाय श्रीपिंडनिर्युक्तिनी श्रीमलयगिरिजीकृत टीकामां तेमज श्रीभगवतीसूत्रना सातमा शतकना प्रथम उद्देशानी वृत्तिमां पण कहुं छे के-"कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ताण" कुकडीना इंडा ना प्रमाण जेटलो आहार ते कुक्कुटीअंडगप्रमाण कहेवाय तेनो बीजो अर्थ करता ए पण सूचव्युं के-कुटी एटले नानी झूपडी झूपडी जेम रहेवाना काममां आवे छे तेम जीवने रहेवाने माटे आ शरीररूपी झूपडी 'कु' शब्द कुत्सित अर्थ सूचवे छे के-आ देहरूपी झूंपडी मळ, मूत्र तथा अशुचिथी पूर्ण छे, आ शरीरने इंडाना प्रमाण जेटला आहारथी पोषवुं ते कुक्कुटीअंडक कहेवाय छे

वळी एक अभिप्राय एवो पण छे के-जे पुरुषने जेटलो आहार होय तेनो बत्रीशमो भाग अंडक कहेवाय कोइ पुरुष विशेष आहार करतो होय तो तेने तेटला आहार विना तृप्ति न थाय एटले तेना आहारना बत्रीशमा भागने कवळ कहेवो वळी कोई पुरुष अल्प खातो होय, गळे न उतरतुं होय अने मंद पाचनशक्तिथी अधिक भोजन लइ शकतो न होय तेने तेना आहारना प्रमाणमां बत्रीशमो भाग कवल समजवो अगाउ जे कह्यु के-'गळामां सरल रीते उतरे तेने ज कवल कहेवा' ए वचन प्रायिक समजवुं

जायमजायाहारे (जातमजाताहार०) आनु विशेष स्वरूप दर्शावता थका [illegible] के-साधु ज्ञातापारिष्ठापनिका अने अज्ञातापारिष्ठापनिकानो जाण होय श्रीआवश्यक नियुक्तिमां कह्यु छे के-"आहारम्मि उ जा सा, सा दुविहा होइ आणुपुव्वीए। जाया चेव सुविहिआ, नायव्वा तह अजाया य ॥ १ ॥" आहारने विषे पारिष्ठापनिका बे प्रकारनी छे (१) सदोष आहारने विधिपूर्वक परठववानी क्रिया ते ज्ञातापारिष्ठापनिका अने (२) निरवद्य आहार परठववानी विधि ते अज्ञातापारिष्ठापनिका ज्ञातापारिष्ठापनिकानी विधि जणावे छे के-" आहाकम्मे अ तहा, लोहविसे आभिओगिए गहिए। एएण होइ जाया, वोच्छं से निहीइ वोसिरण ॥२॥" आधाकर्मिक लोभथी अधिक ग्रहण करेला, विषमिश्रित, मक्षिकादि पडेल होय तेवा, कामणटुमणवाळा अथवा अन्य रीते दोषित आहार होय तो तेने वोसराववानी विधि नीचे प्रमाणे करवी " एगंतमणावाए, अचित्ते थंडिले गुरुवइट्ठे। छारेण अक्कमित्ता, तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥ ३ ॥" ज्यां स्त्री, पुरुषनु आगमन न होय तथा एकांत स्थानमां गुरुमहाराजनी बतावेल अचित्त भूमिमां राखथी आहार मिश्रित करे अने पछी ' आहार अमुक दोषवाळो छे, माटे हु तने वोसरावु छु ' आ प्रमाणे त्रण वार उच्चार करे आ विधि खास करीने विषमिश्रित अने कामणटुमणवाळा आहार माटे कराय छे आधाकर्मादिक आहार माटेनु वर्णन ७२ मी गाथामां दर्शावाइ आ प्रमाणे ज्ञातापारिष्ठापनिका जाणवी हवे अज्ञातापारिष्ठापनिका जणावता कहे छे के-"आयरिए अ गिलाणे, पाहुणए दुल्लहे सहसलाभे। एसा उ खलु अजाया, वोच्छं से विहीइ वोसिरणं ॥ ४ ॥" आचार्यने अर्थे, ग्लान साधुने निमित्ते अथवा अतिथि साधुना निमित्ते विशेष आहार ग्रहण कर्यो होय, दुर्लभ पदार्थ मळ्या जेथी वधारे लीधो होय, विविध द्रव्य विशेष लीधु होय तो [illegible] अधिक आहार स्त्री-पुरुष रहित एकांत स्थानमां त्रस-स्थावरादिक जीव रहित भूमि शोधी त्यां शुद्ध आहार होय तो तेना त्रण पुंज करवा मूलगुणदोषित आधाकर्मादिक आहार होय तो एक पुंज करवो अने उत्तरगुणदूषित होय तो बे पुंज करवा पछी 'दोष रहित आहार अगर तो आधाकर्मादिक दोषवाळा आहार हु वोसरावु छु' एम त्रण वार बोलवु हालमां तो भस्ममां मिश्रित करीने आहार परठववानी प्रणालिका प्रचलित छे आ ज प्रमाणे वस्त्र तथा पात्र परठववानी ज्ञाता-अज्ञातापारिष्ठापनिका जाणवी

एषणाना बेंतालीश तथा ग्रासैषणामां पांच-एम सुडतालीश प्रकारना दोष रहित आहार ग्रहण करवामां साधु चतुर होय एषणा चार प्रकारनी [illegible] १ नामैषणा-स्त्री आदिक वस्तुनु नाम, २ ठवणैषणा-एषणाना आकार साधु प्रमुख

स्थापे छे-१ आ एषणा छे २ ते स्थापनैषणा, ३ द्रव्यैषणा-सचित्त, अचित्त अने मिश्र एम त्रण प्रकारे छे, ४ भावैषणा-गवेषण, ग्रहण अने ग्रास-एम त्रण प्रकारनी छे गवेषणा एषणाना ३२ भेद छे-१६ दातारना अने १६ लेनारना आ ३२ दोषोनु वर्णन आ ज ग्रंथमा अगाऊ पृष्ठ १३८ पर आवी गयु छे ग्रहणैषणाना शंकित, म्रक्षित भेदो पण पूर्वे पृष्ठ १४२ पर वर्णवाई गया छे ग्रासैषणाना संयोजनादि पांच दोषो छे

हवे प्रसंगोपात देनार संबंधी दोषोनु वर्णन करता कहे छे के-बालादिक चालीस जणना हाथथी आहार लेवो कल्पे नहीं अपवादथी २८ ना हाथथी लेवा परन्तु पछीना हाथथी तो लेवा ज नहीं, अपवादथी पछीनाना हाथथी लेवानु कह्यु तेमा पण भजना जाणवी, ते भजना आ प्रमाणे-१ बाळक पासेथी आहार न वहोरवो परन्तु बाळक चतुर होय, तेनी मातानी गेरहाजरी होय अथवा तेनी मा पाछळ बेठी होय अने पोते मुनिने वहोरावता होय, वळी आहार थोडो होय अने बीजाने खावाना छे तेना विचार वगर वहोरावे त्यारे साधु तेने कहे के आटलो बधो आहार वहोराव नहीं, बीजाने आहार करवानो हशे ते समये तेनी माता अनुकूळ वचन बोले के-सघळो आहार वहोरावो, आहार घणो छे आ प्रमाणे ज्यां अनुकूळता देखाय त्यां ज गोचरी लेवी कल्पे, नहीं तो न लेवी २ वृद्धना हाथथी आहार न लेवो, परन्तु ते शक्तिशाळी होय अगर ओ न धूजता होय अने तेना हाथ बीजाए पकड्या होय तो लेवो ३ जे लेशमात्र मत्त होय परन्तु अविह्वळ (मन आकुळव्याकुळ न होय तो) होय अने कोई अन्य गृहस्थ आवता न होय तो कल्पे ४ उन्मत्त अने वाचाळ पासेथी न लेवो परन्तु जो ते शुद्ध अने भद्रिकपरिणामी होय तो लेवो कल्पे ५ शरीर-कंपवाळा पासेथी न लेवो परन्तु जो दृढ हस्तथी आपे तो कल्पे ६ तावबाळा पासेथी न लेवो परन्तु ताव उतरी गया होय तो कल्पे ७ अंध पासेथी न लेवो परन्तु बीजाए तेने पकड्या होय अने ते भद्रक होय तो कल्पे ८ कुष्ठी पासेथी न लेवा, परन्तु सामान्य रोगी पासेथी लेवा कल्पे ९ पगरखां पहेरेलो त्यां न ल्यां ऊभा रहीने आपे तो कल्पे १० जेना पग बंधाया होय अगर ना रोगथी अक्कड थया होय परन्तु आमतेम जवामा समर्थ होय अने तेथी पीडा न थती होय तो लेवो कल्पे वळी आघापाछा जवामा अशक्तिमान होय परन्तु त्यां बेठो बेठो ज आपे तो पण कल्पे, पण त्यां कोई बीजा गृहस्थ न होवा जोईए वळी हाथे बांधेलो तो आहार वहोरावी शके ज नहीं, तेमा प्रतिबंध छे-भजना नथी ११ हाथ कापेलो होय परन्तु त्यां बीजा गृहस्थ न होय तो कल्पे १२ पग कापेला होय तेनो आहार लेवो न कल्पे, जो ते बेठा थईने आपे अने अन्य गृहस्थ हाजर न होय तो कल्पे १३ नपुंसकनो न कल्पे परन्तु जो ते लिंग प्रमुखनु सेवन करनार न होय तो कल्पे १४ गर्भवती स्त्रीने नव मास पूरा थया होय

तो न कल्पे परन्तु सात-आठ मासनो गर्भ होय अने ते सुखपूर्वक आपी शके तेम होय तो स्थविरकल्पी साधुओने कल्पे १५ जेनु बाळक स्तनपान करतो होय तेना हस्तथी आहार न कल्पे परन्तु जो ते बाळक आहार पण करता शीखी गयो होय तो कल्पे जो धावता बाळकने त्यजीने वहोरावे तो न कल्पे जिनकल्पी साधुओने तो चौदमा तथा पंदरमा बन्ने प्रकारनो आहार लेवो कल्पे नहीं १६ स्त्री अथवा बेठी होय परन्तु मुखमा कोळिया न नाख्यो होय तो तेना हाथनु कल्पे १७ कोई स्त्री घउं, चणा आदिक शेकती होय अने शेकीने उतारी नाख्या होय अने नवा बीजा घउं, चणादिक लीधा न होय तेवामां साधु आवी पहोंचे तो तेना हाथनो आहार लेवो कल्पे १८ सचित्त मग प्रमुख दळता दळता घंटी छोडी दीधी होय अने ते समये साधु आवी पहोंच्या होय तो तेने आहार लेवो कल्पे अगर तो अचित्त करेले भींजेला अथवा शेकेला मग प्रमुख दळती होय अने ऊभी थइने आहार वहोरावे तो पण कल्पे १९ खांडवा माटे तैयारी करीने खांडेलु उपाडयु होय अने ते खांडेलाने एक पण कण लागेलो न होय ते वखते ते स्त्री जीव रहित प्रदेशमा खांडेलाने मूकी आहार आपे तो कल्पे २० दळणु पूरु थइ रह्यु होय अगर तो अचित्त दळणु करती होय तो पण कल्पे २१ खाळ वहोरनी अन्दरनु दही वलोवती होय तेवी स्त्रीना हस्तनु कल्पे २२ कातती वखते तारने श्वेत करवाने माटे शंखनु चूर्ण हाथे लगाडयु न होय अने लगाडयु होय तो पण तेने अशुद्ध मान्या विना हाथ धोया विना वहोरावे तो कल्पे २३ कपास लोढती, २४ कपासने छूटो पाडती अने २५ कपासने पींजती ऊभी रही होय, तेवामा साधु आवे अने हस्त धोया विना वहोरावे तो पण कल्पे बाकीना पंदरमा छक्कायथी व्याप्त हस्तवाळीनो आहार कदापि-खास अपवाद मार्ग सिवाय-वहोरवो न नहीं आ प्रमाणे ग्रहण एषणानु वर्णन करी हवे ग्रासेषणा संबधी कहे छे—

बेंतालीस दोष रहित आहार लाव्या पछी तेनु भोजन करता ग्रासेषणाना पांच दोष वर्जवा १ संयोजना २ अप्रमाण, ३ इंगाल, ४ धूम अने ५ अकारण भोजन आ पांच पैकी संयोजना तथा अप्रमाण-ए बन्नेनुं वर्णन करे छे १ संयोजना-अतिशय स्वादने माटे दूध, दही, भातमा खांड, मसालो विगेरेनु मिश्रण करवु तेना बे विभाग छे-(१) वसतिमा करे ते अंतःसंयोजना अने (२) वसति बहार करे ते बहिर्संयोजना अंतःसंयोजना त्रण प्रकारे जाणवी (१) पात्र-पात्रमा रोटली घी विगेरे मेळवीने खाय, (२) कवल-ऊपर कहेल वस्तुने हाथमा मेळवीने खाय, (३) वदन-मुखमा कोळिया मूक्या पछी स्वाद माटे शाक, दाळ नाखे अथवा मुखमा रोटली प्रमुख मूक्या पछी गोळ, साकरनु मिश्रण करीने खाय (२) बहिर्संयोजना दूध मळ्या पछी खांडनी प्राप्ति माटे फर्या करे उपकरण संयोजना आवी रीते जाणवी-उपकरणने माटे

परिभ्रमण करता साधुने चोलपट्टादिक मळ्या बाद शोभाने अर्थे अन्तरपट्ट मागीने भोगवे तो ते बहिरुपकरणसयोजना अने ए प्रमाणे समतिमा आवीने ते प्रमाण भोगवटो करे तो अन्तरउपकरणसयोजना जाणवी आ प्रमाणे सयोजनानुं स्वरूप दर्शाव्युं छता टीकाकार कहे छ के-प्रसगे तो सयोजना पण स्वीकारवी पडे छ कह्युं छ के-" रसहेउ सजोगो, पडिसिद्धो कप्पए गिलाणट्ठा। जस्स व अभत्तछंदो, सुहोचिओऽभाविओ जो य ॥ १ ॥ " रसवृद्धिना कारणथी सयोजनानो निषेध छ, परन्तु ग्लान साधुने आहारनी रुचि माटे करवी कल्पे जेने भात खावानी टेव छे तेने तेना विना रुचि न थाय वळी कोई राजपुत्रे दीक्षा लीधी होय अने ते सुखमा उछरेल होवाथी तेने भोजननी रुचि न थती होय तो ते सयोजना करे वळी कोइ नवीन दीक्षित साधुनी रुचिने अर्थे सयोजना करवी कल्पे परन्तु रसगृद्धिथी आ तेम करे तो कर्मबध थाय हवे बीजो अप्रमाण दोष दर्शावे छे-उदरना छ भाग कल्पवा तेमा त्रण भाग जेटलो आ हार करवो, बे भाग जेटलुं पाणी पीवु अने एक भाग वायुना सचालन माटे खाली राखवा काळनी अपेक्षाए तमा पण फेरफार करवा अत्यत शीतकाळमा पाणीनो एक भाग, आहारना चार भाग अने एक भाग खाली, मध्यम शीत काळमा बे भाग पाणी त्रण भाग आहार अने एक भाग खाली अत्यन्त उष्ण काळमा त्रण भाग जळ, बे भाग आहार अने एक भाग खाली अने मध्यम उष्णकाळमा बे भाग जळ, त्रण भाग आहार अने एक भाग खाली राखवो आ प्रमाणे आ ससारषनमी गाथामा कुशळ मुनि निर्दोष आहार स्वीकारे तेम दर्शाव्युं पण आहार रूप, रस विगेरेनी वृद्धि माटे करवानो नथी ते माटे जणावे छे के-

त पि न रूवरसत्थं, न य वण्णत्थं न चेव दप्पत्थं ।
सजमभरवहणत्थं, अक्खोवंग व वहणत्थम् ॥ ५८ ॥

[तमपि न रूपरसार्थं, न च वर्णार्थं न चैव दर्पार्थम् ।
सयमभरवहनार्थं, अक्षोपाङ्गमिव वहनार्थम् ॥ ५८ ॥]

गाथार्थ-उपर कह्यो निर्दोष आहार पण रूप तथा रसने माटे नहीं, शरीर नी कान्ति वधारवा माटे नहीं, काम-विषयवासनानी वृद्धि माटे नहीं परन्तु अक्षोपांगनी माफक चारित्रनो भार वहन करवा निमित्ते शरीरने धारण करवा माटे ग्रहण करे

विवेचन-आहार करवाथी शरीरनी कांति वधशे, इन्द्रियो मजबूत थशे तथी इच्छाथी पण निर्दोष आहार न करे परन्तु शरीर-शक्ति हशे तो इर्या समिति आदि पाळी शकाशे, सयमनु आराधन करी शकाशे एवी इच्छामात्र

थी आहार करे गाडाना पैडानी मध्यमा नाभिनी धरीमां माखण अगर तेल जे तेल मूकवामां आवे छे तेथी गाडु सुखपूर्वक चाली शके छे अने भार वहन थाय छे तेम आ शरीररूप शकटमां संयम-भार वहन करवाने माटे माखण अगर तेलरूप आहार स्वीकार्यां विना चाले नहीं जो देहने आधाररूप आहार न लेवाय तो दशविध सामाचारी न पळाय, स्वाध्याय ध्यान न थाय आ प्रमाणे संयमना निर्वाहार्थे आहार लेवो उचित छे परन्तु रूप, रसनी वृद्धि माटे लेवो नहीं हवे क्या छ कारणथी साधु आहार स्वीकारे ते कहे छे-

वेअण १ वेयावच्चे २, इरिअट्ठाए य ३ संजमट्ठाए ४ ।
तह पाणवत्तिआए ५, छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ५९ ॥

[वेदनावैयावृत्त्ये-र्यार्थं च संयमार्थम् ।
तथा प्राणप्रत्ययार्थम्, षष्ठं पुनो धर्मचिन्तार्थम् ॥ ५९ ॥]

गाथार्थ-क्षुधावेदना शमाववा, गुरु, बाळ, ग्लान, वृद्ध तथा तपस्वी साधुनी वैयावच्च करवा, ईर्यासमिति जाळववा, संयम निर्वहवा, जीवितने राखवा तथा धर्मचिन्तन करवा माटे साधु-आहार ग्रहण करे.

विवेचन-' नास्ति क्षुत्सदृशी वेदना ' जगतमां भूखनी वेदना जेवी बीजी एक पण पीडा नथी कह्यु छे के-" पथसमा नत्थि जरा, दारिद्दसमो अ परिभवो नत्थि । मरणसम नत्थि भय, छुहासमा वेयणा नत्थि ॥ १ ॥ त नत्थि ज न बाहइ, तिलतुसमित्तंपि एत्थ कायस्स । सन्निज्झ सव्वदुहाइ, दिंति आहाररहिअस्स ॥२॥ " चालवु-परिभ्रमण करवु ते समान वृद्धावस्था नथी, दारिद्र्य समान कोई पराभव नथी मृत्यु समान कोई भय नथी अने भूख समान बीजु कोई दुःख नथी, आहार रहित शरीरने तिल-तुस मात्र पण कई नथी जे पीडा न उपजावे अर्थात् भूख्याने सर्व प्रकारना दुःख थाय छे आवा प्रकारनी क्षुधाने निवारवा अर्थे ज साधु आहार करे, आहार करे तो ज स्वगुरु, बाल साधु, ग्लान तेमज तपस्वी मुनिराज विगेरेनी वैयावच्च करी शके. वळी तो ज ईर्यासमिति पाळवापूर्वक सत्तर प्रकारे संयम आराधी शके आहार लेवाय तो ज प्राण टकी शके अने स्वाध्यायादिकमां मन रक्त रहे भूख्या-भूख्या स्मरणशक्ति मंद पडी जाय, धर्मचिंतनमां पण मन आसक्त न बने, आ प्रमाणे [illegible] कारणो माटे साधु निर्दोष आहार करे हवे पन्नगोपात्त कया छ कारणथी साधु आहार न स्वीकारे ते पण जणावे छे-" आयंके १ उवसग्गे, तितिक्खया २ बंभचेरगुत्तीसु ३ । पाणिदया ४ तवहेउ ५, सरीरवोच्छेअणट्ठाए

६ ॥ १ ॥" १ आतङ्क-ज्वरादिक रोगो आव्या होय तो न खाय, २ उपसर्ग-पोताना कुटुम्बीजनो, राजा अथवा देव, तिर्यंचादिक तरफथी उपद्रव थये छते ते सहन करवा माटे आहारादिकनो त्याग करे ३ ब्रह्मचर्यगुप्ति-ब्रह्मचर्यनी नव वाड पाळवा माटे आहार न वापरे ४ प्राणिदया-वर्षाद बहु वरसतो होय, झाकळ-धुम्मस पडती होय, सूक्ष्म देडकीओ उपजी होय, कुंथुआदिकनी घणी उत्पत्ति थई गई होय तो तेनी विराधना टाळवा आहार न करे, ५ तप-तपश्चर्या निमित्ते आहार न वापरे अने ६ शरीरने वोसराववा अर्थे पन्न य आयुनो संबंध जाणी अनशन स्वीकार. हवे गच्छनुं ज विशेष स्वरूप देखाडता कहे छे के—

जत्थ य जिट्ठकणिट्ठो, जाणिज्जइ जिट्ठवयणबहुमाणो ।
दिवसेण वि जो जिट्ठो, न य हीलिज्जइ स गोअमा ! गच्छो ॥६०॥

[यत्र च ज्येष्ठ' कनिष्ठो, ज्ञायते ज्येष्ठवचनबहुमान' ॥
दिवसेनापि यो ज्येष्ठो, न च हीलयते स गौतम ! गच्छ ॥६०॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां नाना-मोटानो तफावत जाणी शकाय, मोटाना वचननुं बहुमान थाय तेमज एक दिवसे पण दीक्षापर्यायथी मोटो होय अने लघुतर छतां गुणवृद्ध होय तेनी हीलना न थती होय तेवो गच्छ हे गौतम ! वास्तविक गच्छ समजवो.

विवेचन—नाना मोटा एटले वयमां नाना-मोटा नहीं परंतु दीक्षापर्याय गुरु-लघु जाणवा बे जणा साथे दीक्षा लेता होय तेमां प्रथम ले ते मोटो अने पछी ले ते नानो समजवो. आ प्रमाणे विनय-वैयावच्चादिकमां नाना-मोटानो तफावत जणातो होय तेमज ज्येष्ठ स्थविर प्रत्ये बहुमानादिक क्रिया करवामां आवतुं होय ते गच्छ सुगच्छ जाणवो. वळी जेम सिंहगिरिना शिष्यो दीक्षापर्यायमां वृद्ध होवा छतां अल्प दीक्षापर्यायी श्रीवज्रस्वामीनुं बहुमान* कर्युं—तेमनी हीलना न करी तेम गुणवान छतां लघुपर्यायी साधु प्रत्ये आदरभाव दर्शावातो होय ते गच्छ ज वास्तविक कहेवाय. हवे साध्वीनो परिचय न करे ते गच्छ छे इत्यादि दर्शाववा माटे क्रमशः दश गाथा कहे छे

जत्थ य अज्जाकप्पो, पाणच्चाएवि रोरदुब्भिक्खे ।
न य परिभुज्जइ सहसा, गोयम ! गच्छं तयं भणियम् ॥६१॥

* श्रीवज्रस्वामीना वृत्तान्त माटे जुओ पृष्ठ ५६.

[यत्र चार्यीकल्पः, प्राणत्यागेऽपि रौरवदुर्भिक्षे ।
न च परिभुज्यते सहसा, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥६१॥]

गाथार्थ—भयंकर दुष्काळ होय तेवा समयमां प्राणत्याग जेवु संकट आवी पडे तो पण साध्वीओए आणेल आहार साधु वगरविचार्ये न वापरे, तेवा गच्छने हे गौतम ! में वास्तविक गच्छ कहेल छे,

विवेचन—महाभयंकर दुष्काळ प्रवर्ततो होय, गोचरी मळती न होय, क्षुधा-वेदनाथी प्राण कंठे आव्या छता होय तो पण साधु वगरविचार्ये साध्वीओए आणेल आहार न स्वीकारे सर्व प्रकारे संयमनी ज रक्षा करवी कही छे आ संबंधमां ओघनिर्युक्तिमां कह्युं छे के-संयममां भंग पडवा छतां पण जो आत्मा रक्षातो होय तो रक्षवो-"सव्वत्थ संजमं संजमाउ, अप्पाणमेव रक्खेज्जा । मुच्चइ अइवायाओ, पुणो वि सोही न याविरई ।१॥" सर्व प्रकारे संयमनी रक्षा करवी परन्तु कोई कष्ट आवी पडे संयम तथा आत्मा उभयनी हानि थती होय तो संयममां दूषण लगाडीने पण आत्मानी रक्षा करवी संयमहानिथी जे दोष लागे ते प्रायश्चित्त लेवाथी दूर करी शकाय, परन्तु एम न विचारवुं के-हुं अविरति थयो मनमां तो सर्वविरतिना भाव होवाथी भावचारित्र तो छे ज अने द्रव्यचारित्रमां जे दोष लागे ते आलोयणद्वारा दूर थाय अर्णिकापुत्र आचार्यनी माफक निरुपाये साध्वीनो लावेलो आहार खाय परन्तु वगर कारणे, पोताथी बनतुं होय त्यां सुधीमां जो साध्वीना लावेलो आहार वापरे तो तेने पासत्थो मानवो वळी पोताना बचावमां अर्णिकापुत्रनुं दृष्टांत रजू करे तेने पण पासत्थो मानवो अर्णिकापुत्रनुं वृत्तांत नीचे प्रमाणे छे—

अर्णिकापुत्र आचार्यनुं वृत्तांत—

उत्तरमथुरामां देवदत्त नामनो वणिक रहेतो हतो ते वाणिज्यार्थे एकदा दक्षिणमथुरामां गयो त्यां तेने जयसिंह नामना वणिकपुत्र साथे मित्रता थई जयसिंहे एक दिवसे तेने भोजन माटे आमंत्रण आप्युं जमती वखते जयसिंहनी बहेन अर्णिका पीरसवा आवी, जेनुं रूप-लावण्य जोता ज देवदत्त तेना प्रत्ये अनुरागी थयो बीजे दिवसे देवदत्ते जयसिंह पासे तेनी भगिनीनी मागणी करी जयसिंहे ते कबूलता पहेला एक शरत मूकी के-अर्णिका मने प्राण करता पण अधिक प्रिय छे जे परणीने मारा घरने विषे रहे तेने हुं परणाववा इच्छुं छुं देवदत्ते ते शरत कबूल करी अने शुभ दिवसे तेओ बने लग्नग्रंथीथी जोडाया

सांसारिक सुख भोगवता ते दंपतीना दिवसो सुखपूर्वक व्यतीत थई रह्या छे तेवामां देवदत्तना वृद्ध पितानो तेने तेडाववा संबंधी पत्र आव्यो पत्र वांचता वने साथोसाथ पोतानी प्रतिज्ञा संभारतां तेना नेत्रमांथी अश्रुधारा

पछी निश्चळी अग्निशाय कारण पूछयुं पण जयसिंह जवाब न आपी शक्या त्यारे स्वयं पत्र वांच्यो अने पोताना भाईने समजाववानुं बीडुं झडपी पतिने आश्वासन आप्युं अग्निकाए पोताना भाईने समजावी श्वशुरगृहे जवानी अनुमति मेळवी लीधी अने शुभ दिवसे सपरिवार प्रयाण पण कर्युं

अग्निका गर्भवती हती रस्तामां ज तेने पुत्रप्रसूति थई अग्निकाए वृद्ध प-पुत्रनुं नाम मारा सासु-ससरा पाडशे परंतु साथेना स्वजनवर्ग तो तेने 'अर्णिकापुत्र' एवा नामथी संबोधवा लाग्यो श्वसुरगृहे आवी पहोंच्या बाद तेओ आनंदथी जीवन व्यतीत करवा लाग्या पुत्रनुं संधीरण एवुं नाम राख्युं पण लोकोमां ता ते 'अर्णिकापुत्र'ना नामथी विशेष प्रसिद्धि पाम्यो अनु क्रमे ते यौवनवय पाम्यो सद्गुरुसंयोग तेनी धर्मभावना विशेष वृद्धि पामी अने छेवटे भोग विलासो दिसो तृणाने तुच्छ मानी संधीरणे जयसिंह नामना सूरिवर्य पासे संयम स्वीकार्युं एक चित्ते सतत शास्त्राभ्यासथी तेओ आगमज्ञान मां पारगत थया गुरुए तेमज आचार्यपदवी आपी तेमनो शिष्यसमुदाय पण वृद्धि पाम्यो पृथ्वीपीठ पर परिभ्रमण करी तेओ जनसमाज ऊपर उपकार करवा लाग्या हवे ते तेमनी वृद्धवय पण थई गई हती तेवामां तेओ विहार करता करता गंगानदीना तट पर आवेल पुष्पभद्र नगरमां आवी पहोंच्या अने त्यां ज रह्या

आ नगरनो राजा पुष्पकेतु हता अने तेनी राणीनुं नाम पुष्पवती हतुं पुष्पवतीए पुत्र-पुत्रीना एक युगलने जन्म आप्यो पुत्रनुं पुष्पचूल अने पुत्रीनुं पुष्पचूला एवुं नाम राखवामां आव्युं बन्ने साथे क्रीडा करतां अने वयमां वृद्धि पामतां रूपमां पण तेओ बन्ने एक बीजाथी चढियाता हता तेओ परस्परनो एक क्षणमा त्रनो वियोग सहन करी शकता नहीं आवी स्थिति निहाळी राजाए विचार्युं के-जो पुष्पचूलाने बीजे परणावीश तो तेओ बन्ने एक-बीजानो वियोग सहन करी शकशे नहीं माटे ते बन्नेना परस्पर विवाह कर्या होय तो ठीक आ प्रमाणे विचारी राजाए बीजे दिवसे राजसभामां पंडितोने पूछ्युं के-" आ पुरमां जे रत्न उत्पन्न थाय तेनो स्वामी कोण ? " राजाना गूढाशयने नहीं समजनारा तेओए जवाब आप्यो के-" स्वामिन् ! समग्र देशना रत्नोना आप स्वामी छो तो आ पुरना रत्न माटे तो पूछवुं ज शुं ? " राजाए तरत ज पोताना पुत्र-पुत्रीना विवाहनो निश्चय जाहेर कर्यो पंडितो दिङ्मूढ जेवा बनी गया राणीए सख्त विरोध जाहेर कर्यो परन्तु राजवी पासे तेनुं कशुं चाल्युं नहीं राजाना तिरस्कारथी राणीए वैराग्य पामी दीक्षा स्वीकारी उग्र तपश्चर्या करी पुष्पवती राणीनो जीव स्वर्गने विषे देवपणे उपज्यो कालक्रमे पुष्पकेतु राजा मरण पाम्यो एटले पुष्पचूल राजा थया

पुष्पवतीनो जीव जे देव थयो हतो तेणे अवधिज्ञानद्वारा पोताना सतानोनुं

अकृत्य जोई तेने प्रतिबोधवा माटे पुष्पचूलाने स्वप्नमां नरकनुं नीचे प्रमाणेनुं स्वरूप दर्शाव्युं साकडा मुखवाळा कुंभोमांथी परमाधामी देवो, जेम लोढाना तारने यंत्रमांथी खेंचे तेम, नारकजीवोने खेंचता हता, केटलाक नारकीओने कूटता हता, केटलाकनी छाती पर शिला मूकता हता, कटलाकने वस्त्र सरखा फाटा भोंकता हता, केटलाकना पग पकडी, धोबी जेम शिला पर वस्त्र पछाडे तेम पछाडता हता, जेम घोलडो पीले अने घाणीमां तल पीले तेम कटलाकने पीलता हता, करवतथी काष्ठने वेरे तेम कटलाकने विदारता हता, केटलाकने तपावेला लोढानी स्त्री साथे आलिंगन करावता हता, केटलाकना देहने कूतरा पासे करडावता हता, केटलाक भूख्या थयेला नारकीने धगधगता अंगारा खवरावता हता, केटलाकने तपावेला तेलनी कडाइमां भजिया पुडीनी माफक तळी रह्या हता, जेम पापड भागे तेम कटलाकने मोगरना मारथी भागी रह्या हता, केटलाकने वैतरणी नदीमां डुबाडी रह्या हता, ते वैतरणी नदी तपावेल तांबु तथा सीसाना उष्ण रस जेवी पाणीवाळी हती—आवा आवा प्रकारनी घोर कष्टदायक यातनाओ अंब विगेरे पंदर प्रकारना परमाधामी देवोने अलग अलग कार्य करवानुं होय छे १ अंब-कटलाक नारक जीवोने दोडावे, लाकडी प्रमुखथी प्रहार करे, दडानी पेठे आकाशमां उछाळे २ अंबर्षी-नारकीना होठ, चामडी विगेरे कातरथी कापे, वेसारीने विदारे ३ श्याम-नारकीओने ऊंचेथी नीचे पछाडे, तेमना हाथ-पग भालादिकथी वींधे ४ सबल-आंतरडाओ काढे, काळजुं तलवारथी कापे, गदा, भाला प्रमुखथी हणे ५ रुद्र-तरवारथी मांसु कापे, गदाथी मारे, त्रिशूलथी कापी सोयना बाणामां प्रवेश करावे ६ उपरुद्र-नारकीना हाथ, पग, प्रमुख अंगोपांग भांगे, कातरथी कापे ७ काल-कुम्भीमां पकावे ८ महाकाळ-सिंहादिकनुं रूप धरीने खाय ९ असि-हाथ, पग, जांघ, बाहु, शिर तेमज अंगोपांगने छेदे १० असिपत्र धनु-कान, नाक, होठ, पग विगेरे कापे, दांत पाडे, नाक छेदे ११ कुंभ-कुंभीमां नारकीओने पकावे लोढीमां पकावीने पछी घाव करे-कापे वळी अग्निमां पण पकावे १२ वालु-नारकीओने अत्यंत उष्ण रेतीमां फेंकी चणानी जेम शेके वळी आकाशमां उछाळीने पछाडे १३ वैतरणी-जेमां मांस, रक्त, केश, हाडका छे अने तपावेला सीसाना उष्ण रस जेवुं पाणी छे तेवी वैतरणी नदीमां डुबाडे, तेमां स्नान करावे १४ खरस्वर-करवतथी कापे, शांमली नामना वृक्ष ऊपर चडावी तेना महाकष्टकद्वारा वेदना पमाडे अने पद रमो १५ महाघोष-भय पामीने नासी जता नारकीओने घेरो घालीने रोके, तेने तर्जना करी बहु कष्ट पमाडे

आवा प्रकारनुं रौद्र स्वप्न निहाळी पुष्पचूला राणी भय पामती जागी उठी तेणे तरत ज पुष्पचूलने स्वप्ननी वात करी पुष्पचूले शान्ति निमित्ते धार्मिक कार्यो

कराव्या देवे तो निरंतर तेने नारकीना भयंकर दुःख देखाडवा शरू कर्या पछी एकदा राजाए सर्व धर्मना आचार्योने बोलावीने नारकीनुं स्वरूप पूछयु कोईके कह्यु-गर्भावास जेवु नारकीनुं दुःख छे, कोईए ,दारिद्रय जेवुं तो कोईए परतंत्रता जेवु कह्यु आ प्रमाणे विविध अभिप्रायो दर्शाव्या परंतु राणीए ते सर्व हकीकत सांभळी पोतानु मुख मचकोडयु-पोतानो आत्मसंतोष दर्शाव्यो नहीं बाद अणिकापुत्र आचार्यने नारकीनु स्वरूप पूछता तेमणे जणाव्यु के—सातें नरकने विषे क्षेत्रवेदना तेमज प्रहरण वेदना विना शरीरथी थयेली अन्योन्यकृत वेदना छे प्रहरणकृत वेदना तो पहेली पांच नरकमां ज छे पहेली त्रण नरकने विषे परधामीकृत,प्रहरणकृत,अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना छे चोथी तथा पांचमी नरकने विषे प्रहरणकृत,अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना छे तेम ज छठ्ठी तथा सातमी नरकमां अन्योन्यकृत अने क्षेत्रकृत वेदना छे पहेली नरकमां जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्टी एक सागरोपमनी, बीजीमां जघन्य एक सागरोपमनी अने उत्कृष्टी त्रण सागरोपमनी, त्रीजीमां जघन्य त्रण सागरोपमनी अने उत्कृष्टी सात सागरोपमनी, चोथीमां जघन्य सात सागरोपमनी अने उत्कृष्टी दश सागरोपमनी, पांचमीमां जघन्य दस सागरोपमनी अने उत्कृष्टी सत्तर सागरोपमनी, छठ्ठीमां जघन्य सत्तर सागरोपमनी अने उत्कृष्टी बावीस सागरोपमनी तेमज सातमी नरके बावीस सागरोपमनी अने उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति छे आ उपरांत परमाधामी विगेरेनुं वर्णन पण यथास्थित वर्णवी बताव्यु

गुरुनुं नरक संबंधी आवु सुंदर न यथास्थित कथन सांभळी राजाए कह्यु के—" शुं आपे पण स्वप्नमां नरक जोई छे ?"आचार्ये कह्यु-"में स्वप्न जोयु नथी, श्रीजिनेश्वर भगवंतना आगमभाषित ज्ञानथी नरकादि स्वरूप यथार्थ समजाय छे " बाद पुष्पचूलाए पूछयु-"हे भगवन्! क्या कर्मथी नरकगति पमाय?" त्यारे अणिका पुत्र आचार्ये कह्यु—"महारंभथी, महापरिग्रहथी, गुरुनी निंदा करवाथी, पंचेंद्रिय जीवना घातथी,मांसना आहार तेमज रौद्र ध्यान करवाथी जीव नरकमां जाय छे "

हवे देवे पुष्पचूलाने देवलोकनु स्वरूप देखाडवा मांडयु मणिमय विमानोमां शोभायमान श्रेणियो, शय्या, कल्पवृक्षोनो समूह विगेरे दर्शाव्या पछी कानमा रत्नना कुंडलवाळा, मस्तक पर मुकुटवाळा कंठमां हीराना हारवाळा, अतिशय कांतिवाळा, सर्व दिशाओने प्रकाशित करता, सदा सुशोभित वस्त्र सहित, निनिमेष नेत्रवाळा, न करमाय तेवी पुष्पोनी माळा पहेरेला, देवीओना परिवार साथे विविध प्रकारनी लीला-क्रीडा करता, विविध संगीतनो लाभ लेनारा, जळ क्रीडा करनारा-आ प्रमाणे विविध विषयसुखो भोगवता देवोने पण तेणे स्वप्नमां दृश्यमान कर्या आवु स्थान जोई पुष्पचूला जागी उठी अने पूर्वनी माफक राजाने जणावता तेणे सर्व दर्शनना पंडितोने बोलावी पुनः तेसंबंधी प्रश्न कर्यो, त्यारे केटलाक कह्यु के-मिष्टान्न आहार करवो ते स्वर्गसुख समान छे, केटलाके उत्तम पटकुलादिनु परिधान, केटलाके उत्तम आसन के वाहनमा बेसवुं इत्यादि

सांसारिक सुखोने स्वर्गसुखनी उपमा आपी आ सांभळी राणीए कह्युं-के "आ सर्व पंडिता मिथ्या छे. 'बाद अर्णिकापुत्र आचार्यने पूछतां तेओए राणीए स्वप्नमां जे प्रमाणे जोयुं हतुं ते ज प्रमाणे सर्व हकीकत जणावी पछी राणी अतीव प्रसन्न थइ बाद राणीए देवलोकनी ऋद्धि अने तेनी प्राप्ति संबंधी प्रश्न करता अर्णिकापुत्रे कह्युं के-"पहेला सौधर्म देवलोकमां बत्रीश लाख विमान छे,बीजा ईशानमां अट्ठावीस लाख, त्रीजा सनत्कुमारमां बार लाख, चोथा माहेन्द्रमां आठ लाख, पांचमा ब्रह्म देवलोकमां चार लाख, छट्ठा लांतकमां पचास हजार, सातमा महाशुक्रमां चालीश हजार, आठमा सहस्रारमां छ हजार, नवमा आनत अने दशमा प्राणत बन्नेमां चारसो अगियारमा आरण अने बारमा अच्युत ए बन्नेमां त्रणसो विमान छे सम्यक् प्रकारे आराधेला बार व्रतरूप श्रावकधर्म अने पांच महाव्रतरूप साधुधर्मना पालनथी स्वर्गसुखनी प्राप्ति थाय छे

आ प्रमाणे वृत्तांत सांभळी राणी पुष्पचूला प्रतिबोध पामी पछी तेणे स्व-स्वामी पुष्पचूल पासे दीक्षा लेवा माटे विनंति करी त्यारे तेणे कह्युं के-"जो तुं दीक्षा ल्ये तो तारो वियोग हुं क्षणमात्र पण सहन करी शकीश नहीं जो तुं दीक्षा स्वीकारीने आ ज नगरमां रहे तो हुं तने आज्ञा आपुं" राजानुं आ वचन अंगीकार करी तेणे दीक्षा लीधी अने बेंतालीश दोष रहित आहार ग्रहण करवा लागी तेमज शुद्ध त्रण योगथी निर्दोष संयम पाळवा लागी

अर्णिकापुत्र आचार्य हवे वृद्धावस्थाना किनारे पहोंची गया हता एवामां तेमणे ज्ञानद्वारा जाण्युं के "महाभयंकर दुकाळ पडशे" तरत ज तेमणे पोतानी अशक्ति छतां समग्र शिष्यसमूहने देशांतर मोकलावी दीधो पुष्पचूला तेमने निरंतर शुद्ध आहार लावी आपती गुरुनी उत्तम प्रकारनी निरंतरनी वैयावच्चने कारणे तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं छतां पण तेणे गुरुनी सेवा त्यजी नहीं केवळज्ञान उत्पन्न थयुं छे एम छद्मस्थ न जाणे त्यां सुधी केवळीए शुद्ध-आहार-पाणी लावी आपी विनयादि करवुं एवी आगमाज्ञा छे साध्वी पुष्पचूला पण आ आज्ञाने अनुसरी आहारादि लावी आपती

एकदा मुशळधार वरसाद वरसतो हतो छतां पण पुष्पचूला साध्वीए आहार आणी आप्यो त्यारे अर्णिकापुत्रे तेमने कह्युं के-"हे वत्साने ! वरसाद वरसवा छतां तमे केम आहार आण्यो?" तेणीए कह्युं-"ज्यां ज्यां अचित्त अप्काय (पाणी) हतुं त्यांथी यत्नपूर्वक हुं आवी छुं" गुरुए पुनः पूछ्युं-"तें अचित्त प्रदेश क्याथी जाण्यो? 'जवाबमां तेणीए कह्युं-"आपना प्रसादथी" गुरुए फरी पूछ्युं-"शुं तमने ज्ञान थयुं छे?" साध्वीए कह्युं-"हा, अप्रतिपाती (केवळज्ञान) थयुं छे" आ वचन सांभळी गुरु शीघ्र ऊभा थई, मिथ्यादुष्कृत आप्युं अने आत्मनिंदा करता कहेवा लाग्या के-'में केवळीनी आशातना करी "बाद साध्वीने तेमणे पूछ्युं के-"हुं सिद्धि पामीश के नहीं?' साध्वीए कह्युं-"धीरज राखो,आपने गंगा नदी

उतरता ज ज्ञान-प्राप्ति थशे" बाद आचार्य घणा लोकोनी साथे गगा नदी पार करवा नावमा बेठा जे जे स्थळे तेओ बेसवा जाय छे त्या नाव नीचे बेसी जवा लाग्यु लोको डुबवा लाग्या एटले लोकोए तेमने उपाडीने पाणीमा नाखी दीधा तेमनी दुर्भागी पूर्वभवनी स्त्री जे मृत्यु पामीने व्यतरी थई हती तेणे ज आ सकट ऊभु कर्यु हतुं पाणीमा पडता ज ते व्यतरीए तेमने शूळीमां परोवी लीधा. तेमना शरीरमाथी रुधिरनी धारा वहेवा लागी पोताने असह्य वेदना थतो हती तेने लक्षमा न लेता तेओ विचारवा लाग्या के-"अहा! मारा रुधिरथी अप्कायना जीवोनी विराधना थशे हु केवो मदभागी छु" आ प्रमाणे पश्चात्ताप ने आत्मनिंदा करवापूर्वक तेओ क्षपकश्रेणी पर आरूढ थया अने सर्व कर्म क्षय पामता केवळज्ञान थयु आयुष पूर्ण थता तेओ तरत ज अतकृत् केवली थई मोक्षे गया देवोए आवी तेमनो केवळज्ञान महोत्सव कर्यो

आ कथानो साराश ए थयो के-कारणे-अपवादमार्गे साध्वीए आणी आपेल आहार करवो उचित छे, परन्तु पोतानी सगवडनी खातर कारण विना साध्वीए लावी आपेल आहार ले तो तेने पासत्थो जाणवो वळी साधु साध्वी साथे समापण न करे तेने ज गच्छ जाणवो, ते कथयी गाथा कहे छे के-

जत्थ य अज्जाहि सम, थेरा वि न उल्लवंति गयदसणा।
न य झायन्ति त्थीण, अगोवगाइ त गच्छम् ॥ ६२ ॥

[यत्र चार्याभिः सम, स्थविरा अपि नोल्लपन्ति गतदशनाः।
न च ध्यायन्ति स्त्रीणा-मङ्गोपाङ्गानि स गच्छः ॥ ६२ ॥]

गाथार्थ-जे गच्छमां युवान तो शु पण जेमना दात पडी गया छे एवा वृद्ध मुनिजनो पण साध्वीओनी साथे निष्कारण वार्तालाप करता नथी तेमज स्त्रीओना अगोपांगने सराग दृष्टिथी जोता नथी ते ज गच्छ वास्तविक छे.

विवेचन-गाथार्थ स्पष्ट छे अगा आठ छे-बे भुजा, बे साथळ, एक पीठ, एक मस्तक, एक हृदय अने एक उदर (पेट) कान, आंख, नासिका, आगळीओ प्रमुख उपागो कहेवाय छे सुगच्छवासी मोक्षार्थी मुनिजन साध्वी साथे समापण न करे तेम तेना अगोपांगनु स्मरण पण न करे स्त्रीओना स्मरणथी चित्त व्याकुळ थाय छ अने स्वधर्म के स्वाध्यायमा स्थिर रही शकातु नथी आ ज सबधमा विशेष सावचेती राखवा शास्त्रकार फरमाव छे के-

वज्जेह अप्पमत्ता !, अज्जासंसग्गि अग्गिविससरिसी।
अज्जाणुचरो साहू, लहइ अकित्तिं खु अचिरेण ॥ ६३ ॥

[धर्मेषणाप्रमत्ता !, आर्यासंसर्गीः अग्निविषसदृशीः ।
आर्यानुचर साधु-र्लभतेऽकीर्तिं खु अचिरेण ॥ ६२ ॥]

गाथार्थ—अरे अप्रमादी मुनिवरो ! तमे अग्नि अने विष(झेर)नी जेवी अनर्थकारी साध्वीओनो संसर्ग त्यजी द्यो, कारण के साध्वीने अनुसरनारो साधु थोडा ज समयमा अवश्य सर्वत्र अपकीर्ति पामे छे.

विवेचन-अप्रमादी मुनिओने पण साध्वी-संगनो निषेध कर्यो छे तो प्रमादी साधुओनी तो वात ज शा माटे करवी ? तेने पण संपूर्णतया निषेध समजी ज लेवो जोइए जेम अग्नि पोताने अने पासे रहेनारने बाळे छे तेम साध्वी-संसर्ग उभयना चारित्रने दग्ध करे छे झेरनु कदापि पारखु करवामा आवतुं नथी, कारण के तेना स्वभाव ज मृत्यु पमाडवानो छे तेम स्त्री-संसर्गनो दीर्घ दृष्टिथी विचार करीने ज शास्त्रकारोए निषेध कर्यो छे पछी स्त्रीने वाघ अने सर्पनी पण उपमा आपवामा आवी छे 'तंदुलवैचारिक प्रकीर्णकमां' कह्यु छे के-" जाओ चिय इमाओ इत्थियाओ अणेगेहिं कइवरसहस्सेहिं विविहपास पडिबद्धेहिं कामरागमोहेहिं वण्णियाओ नि एरिसाओ त जहा-पगइ विसमाओ, पियरूसणाओ, पियनयणरङ्गरीओ, कइअवपेमगिरिस्तिड्डीओ, अवराहसहस्सघरणीओ, पभवो रोगस्स असलिलप्पलावो समुद्दओ ॥" आ पाठथी स्त्रीने बत्रीस विशेषणो आपवामा आव्या छे—१ विषम-कोइने खबर न पडे तेवा स्वभाववाळी, २ मनोहर हसणावाळी-राग, क्रोध करे तो पण भली लाग तवी, ३ मिष्ट वचननी वेल, ४ कृत्रिम प्रेमनी नदी, ५ हजारो अपराधोनी भूमि, ६ रोगोना कारणभूत, ७ बळनो नाश करनारी ८ पुरुषोनो विनाश करनारी होवाथी खाटकी सदृश, ९ लज्जानो नाश करनार, १० अविनयनो आवास, ११ कपटनी खाण, १२ वेरनु निमित्त, १३ शोकनु स्थान, १४ अमर्यादानो आश्रम, १५ रोगनु घर, १६ दुष्ट चारित्री, १७ मोहादिकनी माता, १८ ज्ञानथी चळावनारी, १९ शीलना नाश करनारी, २० धर्ममा विघ्नकारी, २१ साधुओनी शत्रु, २२ आचारशील प्राणिओने दूषित करनार, २३ कर्मरूपी रजना बगीचा समान, २४ मोक्षमार्गमा जनारने रोकवा माटे पाळिया समान, २५ दारिद्रयनु स्थान, २६ सर्प समान अत्यन्त झेरवाळी, २७ कामदेवने परवश, २८ सिंह जेवी दुष्ट हृदयवाळा, २९ घासथी आच्छादित कूवो जेम मालूम न पडे तेम अप्रगट आशयवाळी, ३० कपटोनो माफक सेंकडा वचनोमा बांधनारी, ३१ काचमा पडेल प्रतिबिंब ग्रहण न थइ शके तेम अग्राह्य मानसिक विचारवाळी, ३२ मळतरीया स्वभाववाळी, ३३ पर्वतना मार्गनी पेठे अनेक स्थळे विचरनारा

चित्तवाळी, ३४ खोटा हृदयवाळी, ३५ कृष्ण सर्पनी माफक अविश्वसनीय, ३६ संध्याना रंग जेवी क्षणजीवी प्रीतिवाळी, ३७ समुद्रना तरंग जेवी चपळ स्वभाववाळी, ३८ मत्स्यनी माफक गुप्त छळवाळी, ३९ वानरनी माफक चपळ चित्तवाळी, ४० मृत्युनी माफक विशेषता रहित, ४१ यमराजनी माफक निष्करुण, ४२ वरुणदेवनी जेम वळे हस्तमां पाशवाळी, ४३ नदीनी माफक अधोगमन करनारी, ४४ कृपण जेवी, ४५ नरकनी जेवी त्रासदायक, ४६ गधेडाना जेम दुष्ट आचारवाळी, ४७ दुष्ट अश्वनी पेठे दमनीय, ४८ दुष्ट सर्पनी माफक अस्थिर अंत:करणवाळी, ४९ अंधकारमां जेम प्रवेशी न शकाय तेम न प्रवेश करी शकाय-जाणी न शकाय तेवा विचारवाळी, ५० विषवेलीनी माफक अस्वादनीय, ५१ ग्राह नामना मत्स्यवाळी वावमां प्रवेश न करी शकाय तेम अग्राह्य विचारवाळी, ५२ स्थानभ्रष्ट राजानी जेम अप्रशंसनीय, ५३ किंपाकना फळनी जेम मधुर पण परिणामे दुःखदायक, ५४ जेम खाली मुठ्ठी बाळकने मोहित करे तेम लोभ पमाडनारी, ५५ मांसनी पेशीनी माफक उपद्रव करनारी, ५६ सळगता मसालनी माफक उग्र स्वभाववाळी, ५७ दुष्कर रीते रक्षणीय, ५८ घणो विखवाद करनारी, ५९ दुगंछा उपजावनारी, ६० चाटु चालनारी, ६१ अगंभीर, ६२ अश्रद्धेय, ६३ अस्थिर, ६४-६५ दुःखपूर्वक रक्षाय तेथी तमज रक्षण कराय तेवी, ६६ प्रमाता कारक, ६७ महाकर्म-कठोर, ६८ दुष्ट वेर राखनारी, ६९ रूप तथा सौभाग्यने अंगे उन्मत्त, ७० सर्पनी माफक वक्रगतिवाळी, ७१ अटवीना माफक विषम मार्गवाळी, ७२ स्वजन तथा मित्रमां भेद पडावनारी, ७३ परदोषप्रकाशक, ७४ कृतघ्नी, ७५ वळने शोधनारी तथा छिद्र जोनारी, ७६ पश्चातमां यमराज सरखी, ७७ चपळ, ७८ जातिभ्रष्ट करावनार, ७९ क्षणमां राजी ने क्षणमां रोषित, ८० विपत्तिनुं स्थान, ८१ पुरुषने माटे दोरडा विनानो गळाफांसो, ८२ काष्ठ विनानी अटवी जेवी, ८३ वैतरणी नदी जेवी, ८४ अपूर्व व्याधि, ८५ निरयनुं रुदन, ८६ अदृश्य उपसर्ग, ८७ क्षणमात्र रति-आनंदने उपजावनारी, ८८ चित्तना भ्रम करावनारी, ८९ सर्व प्रकारना दाह स्वरूप, ९० कामने उत्पन्न करावनारा, ९१ वज्र जेवी तीक्ष्ण अग्नि सदृश, ९२ जळ रहित समुद्रना वाव जेवी भयप्रद विगेरे विगेरे

वळी केटलाक स्त्रीवाचक शब्दोना अर्थ पण जाणवा जेवा होइ अत्रे निर्देश्यो छे–

१ नारी=न+अरि–काम, भोग अने स्नेहरागी पुरुषना वध, बंधन विगेरे कष्ट पमाडे तथी तेवी स्त्री पुरुषने माटे अरि एटले शत्रु सदृश छे २ महिला=शिल्प विगेरे अनेक प्रकारनी कळाओद्वारा पुरुषोने मोह उपजावे ३ प्रमदा=पुरुषने मदोन्मत्त करे ४ महिलिया–अत्यंत कलह उत्पन्न करे ५ रामा=हावभावद्वारा पुरुषोने रमकडानी माफक यथेष्ट रमाडे ६ अंगना=प्राणियाने पोतानु अंग देखाडी अनुराग उपजावे, ७ ललना=स्त्रीने अर्थे युद्ध करे, भूखे मरे, तदुक

गुरुए निभर्त्सना करवाथी ते त्यांथी चाल्यो गयो अने स्त्री रहित एकांत स्थाननी शोध करतो एक नदीने सामे किनारे जई आतापना लेवा लाग्यो तेने कोई पण प्रकारे गुरु-वचन मिथ्या करवु हतु तेनी तपश्चर्या तीव्र हती तेना उग्र तपना प्रभावथी नदीनो प्रवाह, तेनी तरफ वहेतो हतो तेने बदले बीजी दिशामां वहेवा लाग्यो एटले लोकोए तेनी 'कुलवालुक' एवा नामनी प्रसिद्धि करी

देव-प्रभावथी श्रेणिक महाराजने दिव्यकुंडल, अढार सरनो हार, दिव्य वस्त्रो अने सेचनक हस्तीनी प्राप्ति थयेल ते तेमणे पोताना पुत्र हल्ल-विहल्लने अर्पण करेल कुणिकनी पत्नी पद्मावती हमेशा तेना मागणी कर्या करती श्रेणिकना मृत्यु बाद कुणिके हल्ल-विहल्ल पासे तेनी मागणी करी कुणिक सत्ताधारी हतो एटले हल्ल-विहल्ल पोताना मातामह चेटक(विशालाना)ना आश्रये चाल्या गया कुणिके तेओने सोंपी देवा कहेवराव्यु चेटक महाराजाए शरणागत दोहित्रोने सोंपवानो इन्कार कर्यो कुणिके विशाला नगरी पर हल्लो कर्यो, अने बाहु विपुल सैन्यसमूह एकत्र थयो बंने महारथी अने समर्थ राजवी होईने एकबीजाथी गांज्या जाय तेवा न हता चेटक महाराजाने देवाए अमोघ बाण आपेल, के जेना प्रहारथी अवश्य मृत्यु थाय अ तेमने हमेशां एक ज बाण मूकवानी प्रतिज्ञा हती शरूआतना दश दिवसना युद्धमां हमेशना एक ए प्रमाणे चेटक महाराजाए कुणिकना काळ, महाकाळ विगेरे दश भाईओने हणी नाख्या आ करुण बनावथी शोकग्रस्त बनी कुणिके अट्ठमतपद्वारा सौधर्मेन्द्र अने चमरेन्द्र आराधन कर्यु तेओए आवी कह्यु के-चेटक महाराजा जैन होवाथी अमारा साधर्मी छे, अमे तेमने मारी शकशु नहीं परन्तु तमारा बचावने माटे वज्रमय कवच करशु. आ प्रमाणे कहीने तेने शिलाकंटक अने रथमूशळ आप्या. तेना प्रभाव ए हतो के शत्रुने मात्र एक कांकरी नाख्यो होय तो ते मोटा शिला जेवो पडने अने एक काडो कामरूप बनाने प्रहार करता तेना आवा प्रभावथी चेडा महाराजाना घणा सुभटो मरी गया. चेडा महाराजाए त्यारे युद्धमां आवा कुणिक उपर बाण छोड्यु पण ते वज्रमय कवचने कारणे निष्फळ गयु बीजे दिवसे पण तेमज थयु एटले त्रीजे दिवसे तेमणे विशाला नगरीना दरवाजा बंध कराव्या

विशाला नगरीना गढ कबजे करवो ते अत्यंत दुष्कर कार्य हतु कुणिके घेरो नाख्यो बार वर्ष सुधी घेरो चाल्यो छतां परिणाममां शून्य कुणिक गहन विचारमां पडी गयो तपासने अंते जणायु के-विशाला नगरीमां जे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनो स्तूप छे तेना प्रभावथी विशालानु पतन थतु नथी, जो ते स्तूपने जडमूळथी खोदी काढवामां आवे तो ज विशालानु पतन थाय पण आ कार्य कोण करी शके ? लोकोनी श्रद्धानो गेरलाभ ले तेवो कोई साधुपुरुष होय तो ज आ कार्य बनी शके, पण समरभूमि पर साधु लाववा क्यांथी ? तेणे पोताना चरपुरुषोने चारे दिशामां तपास करवा मोकल्या तपासने अंते तेने कुलवालुक मुनिनी बातमी मळी तेने पतित करवा अने कोई पण हिसाबे पोतानी पासे लाववा पोतानी चतुर मागधिका नामनी गणिकाने कह्यु

मागधिका पोताना मुश्केल कार्यथी अजाणी नहोती. तेणे साधुने पाशमां पकडवा श्राविकानो स्वांग सज्यो अने जे स्थळे कुलवालुकमुनि आतापना लई रह्या हता त्यां गई. मुनिने वंदना

मुनि पतित थया केटलाय पुरुष पण दुर्गुणी होय छे, तेथी मार्गीय पण तेवाथी सावचेत रहेवु आ संबंधमा +मणिरथनुं दृष्टांत जाणवा योग्य छे आ

करी कह्यु के-हे मुनिवर ! स्थाने स्थाने चैत्यो तथा मुनिओने वंदन करीने मारे भोजन लेवानो नियम छ तो आप कृपा करी, निर्दोष आहार-पाणी स्वीकारी मने कृतार्थ करो कुलवालुक मुनिए तेनी विनंति मान्य राखी आहार ग्रहण कर्यो चतुराईथी मागधिकाए मोदकना आहारमां नेपाळाना चूर्णनी नानी नानी गोळीओ मिश्रित करी दीधी हती तेथी मुनिने ते आरोगता अतिसार(झाडा)नो व्याधि उत्पन्न थयो

मागधिकानी युक्ति बराबर सफल थई तेणे अन्य गणिकाओद्वारा कुलवालुक मुनिनी सेवा-शुश्रूषा शरु करावी मुनि पण आ व्याधिथी अत्यंत पीडाता हता ते आ गणिकाओना उपचारथी प्रमोद अनुभववा लाग्या प्रतिदिनना आ व्यवसायथी कुलवालुक मुनि चारित्रथी भ्रष्ट थया पछी तो त कुणिक पासे गया अने विशालामां कपटथी स्तूप पण खोदावी नखाव्यो विशालानु पतन थयुं कुलवालुक मुनि पण दुर्गतिगामी बन्या आ संबंधे विशेष वृत्तांत जाणवानी इच्छा वाळाए उपदेशप्रासाद ग्रंथना प्रथम स्तंभनुं चौदमुं व्याख्यान वांचवु

+ सुदर्शनपुर नामना नगरमां मणिरथ राजवी हतो तेने युगबाहु नामनो लघु [illegible] हतो ते युवराजने रूपमां रंभा सरखी सौन्दर्यवती मदनरेखा नामनी स्त्री हती तेना अत्यंत रूपराशि-थी मोहित थयेल राजाए मनमां विचार्यु के-" आ मदनरेखाने मारे कोई पण प्रकारे ग्रहण करवी तेना सिवायनो मारो जन्म अने राज्यप्राप्ती वृथा छ " तेणे मदनरेखाने पोताना पाशमां फसाववा माटे एक विचक्षण दासीद्वारा उत्तम तांबूल,वस्त्राभरण, पुष्प विगेरे मोकलाव्या मदन-रेखा राजानो आशय समजी शकी नहीं तेथीए राजानो "प्रसाद" समजी ते स्वीकारी लीधु थोडा दिवस बाद राजाए ते दासीद्वारा पोतानी मदनातुर स्थिति कहेवरावी दासीना मुख थेवा कठोर वचन सांभळी तेणीए कह्यु के-"गणिका प्रमुख स्त्रीओना बंधुजन पण भोग माटे तेओनी पासे जवा समर्थ थता नथी,तो तारा राजाने सुन्दर अंत:पुर छतां ते मूढ मारकी अपावनार पर स्त्रीओ केम राचे छे ? राजाए तो परस्त्रीनी कदी पण इच्छा न करवी, केमके विश्वने विषे लोको तेनुं ज अनुकरण करे छे जो कदाच राजा मारा पर बलात्कार करशे तो हु मारु शरीर आप घाने बदले मारा प्राण ज आपीश ' दासीए आ सर्व हकीकत राजाने कही राजा विशेष कामा तुर थयो, परन्तु युगबाहुनी हयातिमां ते कई करी शकवा समर्थ नहोतो एटले त तेने हणवाना उपायो शोधवा लाग्यो

एकदा युगबाहु मदनरेखा साथे क्रीडा करवा उद्यानमां गयेल जळक्रीडा करी रात्रिना समये ते कदलीगृहमां सूतो एवामां मणिरथ पण युगबाहुने हणवानी बुद्धिथी खड्ग लई त्यां आव्यो युगबाहु साथे कृत्रिम वार्तालाप करी, प्रसंग साधी तेना प्रत्ये तेणे खड्गनो प्रहार कर्यो युगबाहु घायल थई नीचे पडयो मदनरेखाना हाहाकारथी पासेना सुभटो दोडी आव्या,पण युगबाहुए कह्यु के-अरे सुभटो ! मारा सहोदरने हणशो नहीं तेना कई दोष नथी, मारा पूर्व कर्मनुं ज आ परिणाम छ मणिरथ पण पोतानु कार्य सिद्ध थयु जाणी हर्षित थई घरे आव्यो त्यां तेने अक-स्मात् सर्प-दंश थयो. कह्यु छे के-अत्यन्त उग्र पुन्य के पापनु फळ आ लोकने विषे ज त्रण

हकीकतना यथार्थमां पासत्थादिक कोई कहे के-आवा दोषो तो जे अज्ञानी होय तेने लागे, परन्तु बहुश्रुत होय, जेने ज्ञान परिणमी गयुं होय तेने दोषोत्पत्ति नथी, तो तेने जवाब आपता ग्रंथकार कहे छे के-

थेरस्स तवस्सिस्स व, बहुस्सुअस्स व पमाणभूयस्स ।
अज्जासंसग्गीए, जणजंपणय हविज्जाहि ॥ ६४ ॥
किं पुण तरुणो अबहुस्सुओ अ, न य वि हु विगिट्ठतवचरणो ।
अज्जासंसग्गीए जणजंपणयं न पाविज्जा ॥ ६५ ॥

मास, त्रण पक्ष, त्रण दिवस के त्रण अहोरात्रमां ज मळे छे मणिरथ मृत्यु पामी चोथी नरके गयो

युगबाहुने घायल थयेल सांभळी तेनो पुत्र चन्द्रयशा पण त्यां आव्यो तेणे तथा मदनरेखाए तेने सांत्वन आप्युं अंतसमयनी आराधना करावी एटले शुभ ध्यानपूर्वक मृत्यु पामी युगबाहु ब्रह्मदेवलोकमां देव थयो मदनरेखाए विचार्युं के हवे मणिरथ मने छोडशे नहीं, माटे गुप्त रीते ते उद्यानमांथी ज छटकी गई ते समये ते सगर्भा हती त्यांथी कोई महाअटवीमां जतां पुत्र-प्रसव थयो तेने रत्नकंबलमां लपेटी, वड नीचे मूकी सरोवरमां जतां जळहस्तीए तेने आकाशमां उछाळी कोई विद्याधरे तेने पकडी लीधी ते पण तेना रूपथी मोहित थयो छेवटे नंदीश्वरद्वीपे जतां विद्याधर प्रतिबोध पाम्यो मदनरेखाए दीक्षा लीधी प्रसव थयेल पुत्रने पद्मरथ राजा लई गयो तेणे नमि एवुं नाम राख्युं पद्मरथे दीक्षा लेतां नमि राजवी थयो तेना प्रतापथी सर्वे राजाए तेने वश थया एकदा तेनो हस्ती आलानस्तंभ उखेडी नासवाने माटे तेने चन्द्रयशाए कब्जे करी सुदर्शनपुरमां राख्यो नमिए ते सोंपी देवा कहेवराव्युं चन्द्रयशाए न मानता बन्ने वच्चे भयंकर युद्ध मचायुं आ वातनी साध्वी सुव्रता(मदनरेखा)ने खबर पडता ते युद्धस्थान पर आवी अने बन्ने भाईओने समजाव्या छेवटे बन्ने प्रतिबोध पाम्या नमिने राज्य सोंपी चन्द्रयशाए संयम लीधुं आ रीते नमि विशाळ राज्यनो स्वामी बन्यो तेने एक दिवस दाहज्वर थयो तेना उपशमन निमित्ते तेनी राणीओ चंदन घसवा लागी कंकणनो ध्वनि अत्यंत थवा लाग्यो, ते सहन थता तेणे तेनो निषेध कराव्यो छेवटे राणीओना हस्तमां सौभाग्यसूचक एक ज कंकण रहेवा दीधुं, एटले ध्वनि बंध थया तेवारमां तेणे पुनः प्रश्न कर्यो-शुं राणीओ चंदन घसती नथी? जवाबमां मंत्रीए कह्युं के-घसे छे परन्तु एक ज रहेल हस्तमां होवाथी अवाज थतो नथी नमि राजवी आ वचन सांभळी विचारवा लाग्या के-एकमां ज शान्ति छे अनेकमां उपाधि छे जो हुं व्याधिमुक्त थईश तो आ सर्व उपाधिनो त्याग करी दीक्षा लईश भाग्ययोगे आवो विचार करतां ज तेमने ऊंघ आवी गई अने ज्यारे जागृत थया त्यारे व्याधि नाश पाम्यो हता तेमणे तरत ज संयम स्वीकार्युं देवोए तमने रजोहरण आप्युं,अने तेओ नमि राजर्षि तरीके प्रसिद्धि पाम्या चार प्रत्येकबुद्धोमां तेमनो नंबर प्रथम छे आ संबंधी विशेष वृत्तांत जाणवाना इच्छके भरहेसरबाहुबली वृत्ति भाषांतरमां 'मदनरेखानी कथा' तेमज प्रत्येकबुद्ध चरित्र वांचवुं

[स्थविरस्य तपस्विनो वा, बहुश्रुतस्य वा प्रमाणभूतस्य ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता भवेत् ॥ ६४ ॥
किं पुनस्तरुणोऽबहुश्रुतश्च, न चापि हु विकृष्टतपश्चरणः ।
आर्यासंसर्ग्या, जनवचनीयता न प्राप्नुयात् ॥ ६५ ॥]

गाथार्थ-वृद्ध, तपस्वी, बहुश्रुत अने सर्व जनने मान्य मुनिराजने साध्वीनो संसर्ग लोकनिंदानो हेतु थाय छे तो पछी जे युवान, आगमबोध विनाना, विकृष्ट (अट्ठम उपरांत) तप नहीं करनारा एवा मुनि लोकनिंदाने पात्र केम न थाय ?

विवेचन-विधविध प्रकारनी उग्र तपस्या करनार, आगमना ज्ञाता अने पोताना चारित्र-पालनथी तेमज व्याख्यानशैली आदि कुशळताथी बहुमानने योग्य, पूज्य एवा साधु पण जो साध्वी साथे परिचय राखे, तेनो आणेलो आहार वापरे तो लोको निंदा करे छे के-तेओने परस्पर मेळ होवाथी कंईक हशे, स्नेहना कारण विना कोई संबंध थाय नहीं आ प्रमाणे कुशंकाना वमळमां पडी लोको कर्मबंध करे छे अने साधुओ तेमां निमित्तभूत बने छे साध्वीसंगथी आगमज्ञाता अने दीर्घपर्यायी साधु जो निंदाने पात्र बनी शकता होय तो तरुण अने नूतन साधुनी तो वात ज शा माटे करवी ? आ संबंधी विशेष वर्णन जणावता कहे छे के—

जइवि सयं थिरचित्तो, तहवि संसग्गिलद्धपसराए ।
अग्गिसमीवे व घयं, विलिज्ज चित्तं खु अज्जाए ॥ ६६ ॥

[यद्यपि स्वयं स्थिरचित्तस्तथापि संसर्ग्या लब्धप्रसरया ।
अग्निसमीपे इव घृतं, विलीयते चित्तं खु आर्यायाः ॥ ६६ ॥]

गाथार्थ-कदाच साधु दृढ अंतःकरणवाळो होय तो पण साध्वीनो संसर्ग वधवाथी, अग्नि समीपे जेम घी ओगळी जाय तेम तेमनुं चित्त जरूर डगी जाय.

विवेचन-साध्वी साधु पासे वारंवार आवे-जाय के साधु साध्वी पासे वारंवार आवे-जाय त्यारे परस्पर संभाषण थवे, एक बीजाना अवयवो जोवानो प्रसंग प्राप्त थाय अने उभयमांथी कोई पण दृढ मनबळवाळा होय तो स्खलना पामवानो प्रसंग उपस्थित थाय शास्त्रकारोए सर्व व्रतोमां ब्रह्मव्रतने सर्वश्रेष्ठ कह्युं छे तेनुं कारण पण ए ज छे के अग्नि समीपे घी मूकतां तरत ज ते पीगळवा मांडशे तेम मोहराजानी दूती समान स्त्री-संसर्गरूपी अग्नि पासे कोई विरल पुरुषनुं ज मनरूपी घी अक्षय रही शके. तेवा पुरुषो तो चरमकेवली श्रीजंबू

स्वामी, स्थूलभद्रजी, श्रीवज्रस्वामी इत्यादिक आंगळीने टेरवे गणी शकाय तेटला ज होय छे आ संबंधमां राजीमती ने रथनेमिनु दृष्टांत सारं अजवाळु पाडी शके छे बावीशमा तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमिए संयम स्वीकार्या बाद तेना नहाना बंधु रथनेमि राजीमती पासे पोताना पाणिग्रहण संबंधी प्रस्ताव मूके छे राजीमती दृढ मनोबळवाळी होवाथी तेना भोगविलासनी भावना जागृत ज थती नथी रथनेमि वारंवार राजीमती पासे भोगनी इच्छा दर्शाववा लाग्या एटले एक दिवसे तेने प्रतिबोधवा माटे राजीमतीए एक उपाय योज्यो मिष्टान्न आहार करीने ज बेठी हती तेवामां रथनेमि आव्या एटले मदनफळ (मींढोळ) सुंघीने तेणे तरत ज उलटी करी अने रथनेमिने कह्यु के-हे दियर! आ अन्न तमे स्नेहपूर्वक आरोगो रथनेमिए कह्यु के-वमन करेलु धान्य तो कागडा-कूतरा खाय, बीजा तो तेनी इच्छामात्र पण न करे आ जवाब सांभळी राजीमती बोली के— मने तमारा भाई अरिष्टनेमिए वमी छे तो तमे शा माटे मने इच्छो छो! रथनेमि तरत ज प्रतिबोध पाम्या अने नेमि भगवंत पासे दीक्षा लीधी रथनेमि द्वारिकानगरीमां गोचरी लई पाछा वळता हता तेवामां वृष्टि थवाथी तेओए एक पर्वतनी गुफामां आश्रय लीधो राजीमती पण भगवंतने वांदी वसतिमां पाछा फरी रह्या हता तेवामां तेमना पण वस्त्र भींजाई जवाथी तेने सुकववा अने आश्रय लेवा जे गुफामां रथनेमि हता ते ज गुफामां दाखल थया अंधारामां कोई छे के नहीं? तेनी तपास कर्या विना ज वस्त्रो उतारीने सुकवा मांड्या अने पोते नग्न दशामां रह्या

आ दृश्य जोता ज रथनेमिनो पूर्वनो सुषुप्त रहेलो काम उछळी आव्यो तेओए तरतज राजीमती पासे भोगनी प्रार्थना करी राजीमती तरत ज शरमाई गया, वस्त्र परिधान करी तेमणे शांत चित्तथी कह्यु के-"अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥१॥" हुं भोगकुळमां जन्मी छु, उग्रसेन जेवा मारा पिता छे, तुं समुद्रविजयनो पुत्र छे आवा उत्तम कुळमां उत्पन्न थईने आपणे गंधन सर्प जेवा अधम न थवु माटे निश्चयतापूर्वक संयमनु पालन करो बे जातिना सर्प छे-एक गंधन अने एक अगंधन गंधन जातिनो सर्प कोईने डस्यो होय अने जो मंत्रवादी उपचार करे तो पाछो आवीने झेर चूसी जाय अने अगंधन जातिना सर्प वादी गमे तेटला मंत्रोपचार करे तो पण मृत्यु पामवु पसंद करे पण झेर पाछु न चूसे. तेम हे रथनेमि! तमोए पूर्वे जे भोगविलासो वम्या छे तेने फरी वार ग्रहण करवानी वांछामात्र पण करवी उचित नथी राजीमतीना आवा उत्तम बोधदायक वचनथी रथनेमिए परमात्मा पासे आवी प्रायश्चित्त स्वीकार्यु रथनेमि जेवा मुनीश्वर पण ज्यां चलायमान थई गया त्यां आ काळमां सामान्य साधुओनी वात ज शा माटे करवी !

सव्वत्थ इत्थिवग्गंमि, अप्पमत्तो सया अवीसत्थो ।
नित्थरइ बंभचेरं, तव्विवरीओ न नित्थरइ ॥ ६७ ॥

सव्वत्थेसु विमुत्तो, साहू सव्वत्थ होइ अप्पवसो ।
सो होइ अणप्पवसो, अज्जाणं अणुचरंतो उ ॥ ६८ ॥

खेलपडिअमप्पाणं, न तरइ जह मच्छिआ विमोएउं ।
अज्जाणुचरो साहू, न तरइ अप्पं विमोएउं ॥ ६९ ॥

[सर्वत्र स्त्रीवर्गेऽ-प्रमत्तः सदा अविश्वस्तः ।
निस्तरति ब्रह्मचर्यं, तद्विपरीतो न निस्तरति ॥ ६७ ॥
सर्वार्थेषु विमुक्तः, साधुः सर्वत्रात्मवशो भवति ।
स भवत्यनात्मवश आर्याया अनुचरन् तु ॥ ६८ ॥
श्लेष्मपतितमात्मानं, न शक्नोति यथा मक्षिका विमोचयितुम् ।
आर्यानुचरन् साधु-र्न शक्नोत्यात्मानं विमोचयितुम् ॥ ६९ ॥]

गाथार्थ—सर्वत्र स्त्रीवर्गनी अंदर हमेशा अप्रमत्तपणे विश्वास रहित वर्तनार साधु ब्रह्मचर्य पाळी शके छे, विपरीतपणे वर्ते तो ब्रह्मचर्य गुमावी बेसे छे. सर्व पदार्थमां ममता रहित साधु स्वतंत्र—स्वाधीन होय छे परन्तु जो ते साध्वीना पाशमां बंधाय—साध्वीना कथन प्रमाणे अनुसरे तो ते परतंत्र—सेवक बनी जाय छे. जेम मळ(श्लेष्म)मां चोंटी गयेल माखी छूटी थई शकती नथी तेम साध्वीना स्नेहपाशमां झकडायेल साधु तेमांथी मुक्त थई अन्यत्र विहार करी शकतो नथी.

विवेचन—कोई शंका करता पूछे के—स्त्रीनो परिचय वधवाथी स्त्री पुरुषने शुं करे ? तेनो जवाब ए छे के—स्त्री पोते तो कांई करती नथी परन्तु पुरुष तेने देखीने चलित थाय छे पुरुषनी लागणीओ अने चित्तवृत्तिओ चपळ थाय छे, ज्यारे स्त्रीने मैथुननी अभिलाषा विशेष होय छे तेमज तेने मोहनीयकर्मनो उदय अधिक होय छे माटे शास्त्रकाराए डगले ने पगले सावचेत रहेवानो उपदेश आप्यो छे आर्यिका करतां साध्वीनी स्थिति ऊंची छे आदरपात्र छे तेणे जिनेश्वर भगवंतनो वेष धारण कर्यो छे. तेने भ्रष्ट करवाथी तीर्थंकरनी आशातनारूप महादोष उपजे छे, समकितनो नाश थाय छे, संसार परिभ्रमण

वधे छे जेम खेतरनु रक्षण करवा माटे तेने फरती वाड करवामा आवे छे तेम ब्रह्मचर्यरूपी क्षेत्रने सुरक्षित राखवा माटे शास्त्रकारोए *नव वाड उपदेशी छे तेनु जो यथार्थ पालन करवामा आवे तो व्रतशिरोमणि ब्रह्मचर्यथी कदी पण पतित न थवाय

श्लेष्ममा पडी गयेल मक्षिका जेम पोतानी जातने मुक्त करी शकती नथी तेम साध्वीमा अनुरागी बनेल साधु परतत्र बनी जाय छे नवकल्पी विहार के दोष रहित आहारनी गवषणा करी शकतो नथी तेमज मोक्षमार्ग पण साधी शकता नथी मोक्षमार्गना पथिके तो सदैव साध्वी-सगने वर्ज्य ज गणवो

आ सबधमा कोई कहेशे के-साध्वी बधनरूप छे तो पछी तमे दीक्षा ज न देवी, तेने बधा आचारविचार शीखवो छो, अध्ययन अर्थे साधु पासे आवे, साधु तेनी सार-सभाळ लेवा माटे वसतिस्थानमा जाय इत्यादिक कारणोमा साध्वी-ससर्ग करवो पडे छे तो तेमा शो लाभ समजवो ? तेनो जवाब ए छे के-विधिपूर्वक साध्वीओने राखवी तेनी सारसभाळ लेवी ए तो अतीव निर्जरानु कारण छे कहयु छे के—

साहुस्स नत्थि लोए, अज्जासरिसी हु बधणे उवमा ।
धम्मेण सह ठवतो, न य सरिसो जेण असिलेसो ॥ ७० ॥

[साधोर्नास्ति लोके, आर्यासदृशी हु बन्धने उपमा ।
धर्मेण सह स्थापयतो, न च सदृशो जानीह्यश्लेषः ॥ ७० ॥]

गाथार्थ—आ जगतमा साध्वीने अविधिए अनुसरनार साधुने तेना समान बीजु बधन नथी अने साध्वीने धर्ममार्गमा स्थापन करनारने एना समान बीजी कोई निर्जरा नथी

विवेचन—सर्व सावद्यनु प्रत्याख्यान करी सर्वविरति स्वीकारनार साधुने आ जगतमा कोई पण वस्तु बधनकारक नथी, फक्त एक साध्वी ज बधनकर्ता

---

* शीलव्रतनी नव वाडो आ प्रमाणे जाणवी १ स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित स्थानमा रहेवु, २ स्त्रीनी साथे सरागपणे कथा करवी नहीं, ३ स्त्री बेठी होय ते आसने पुरुषे बे घडी पर्यंत बेसे नहीं तेमज पुरुष बेठा होय ते आसने स्त्री त्रण प्रहर पर्यंत बेसे नहीं, ४ सरागपणे स्त्रीना अगोपाग जोवा नहीं, ५ ज्या स्त्री-पुरुष सूता होय तथा कामकथा विषे वातो करता होय त्या भीत प्रमुखने आतरे रहेवु नहीं, ६ पूर्वे स्त्रीनी साथे भोगवेला कामभोग सभारे नहीं, ७ विकार जागे तेवो सरस-स्निग्ध आहार करे नहीं ८ नीरस अधिक आहार [illegible] नहीं तेमज ९ शरीरनी टापटीप-विभूषा पण न करे

छे जो तेने न अनुसरे अने धर्ममां स्थिर करे तो साधुने अतीव निर्जरानुं कारण थाय श्रीनिशीथसूत्रना पदरमा उद्देशाना भाष्य तथा चूर्णिमां कह्युं छे के-" पुच्छ सहुभीअपरिसो, चउभंगे पढमगे अणुण्णातो । सेसतिगे णाणुण्णा, गुरुगा परियट्टणे ज च ॥१॥" शिष्य पूछे छे के-हे गुरु ! साधु तथा साध्वीना धर्मने भिन्न भिन्न स्थानमां राखवानुं आगममां फरमाव्युं छे के जेथी दोष न लागे परन्तु साध्वीओ करीए ज नहीं तो दोषाभाव क्यांथी थाय ? वळी आगममां श्राविकाने दीक्षा देवानो निषेध कर्यो नथी तो पछी तेमोने संभाळवी कई रीते ? आचार्य तेना समाधान आपता कहे छे के—जुदा जुदा क्षेत्रमां ज राखवा एवो नियम नथी दीक्षा लीधा बाद विधिपूर्वक प्रवर्तन करे तो महानिर्जरानो लाभ ज छे. जो अविधिए प्रवर्तावे तो महामोहनीय कर्म बंधाय अने संसारमां चिर काळ पर्यन्त भमे. क्यो साधु संभाळ राखी शके ? साध्वीना पालननी विधि शुं छे ? ते संबंधी हुं तने संक्षिप्तमां समजावुं छुं सहू भीयपरिसो—ना चार भांगा थाय छे १ सहू भीयपरिसो, २ सहू अभीयपरिसो, ३ असहू भीयपरिसो अने ४ असहू अभीयपरिसो प्रथम भंगनो परमार्थ ए छे के-धैर्यवंत, बळवंत, जितेन्द्रिय, संग्रह शील (वस्त्र, पात्रादिकना संग्रह करवामां समर्थ), स्थिरचित्त, अल्पाहारी, उपधिक्षेत्रना गवेषक होय ते सहू कहेवाय, तेमज जेनाथी सर्व साध्वीओ भय पामे, डरने अंग पर पण अकृत्य न करी शके, तेनी सुक्ष्ममतिभाथी धूजती रहे तेने भीयपरिसो कहेवाय आवा साधुना कबजामां साध्वीओ रही शके बाकीना त्रण भांगावाळा साधुओ साध्वीओनुं यथार्थ पालन करी शके नहीं जो तेओ तेम राखे तो चारमासी गुरु प्रायश्चित्त आवे बीजा भांगावाळा साधु पोते धैर्यवंत विगेरे गुणवाळा छे परन्तु साध्वीओने अंकुशमां राखी शके नहीं, त्रीजा भांगावाळा पोते ज समर्थ नथी-शुद्ध चारित्रपात्र नथी तो साध्वीओने कई रीते अंकुशमां राखी शके ? अने चोथा भांगावाळा साधु तो समर्थ नथी तेम भय पण उपजावी शके तेम नथी पहेले प्रथम भंग सिवायना छेल्ला त्रण भांगावाळा साधुओ साध्वीनी सारसंभाळ राखी शके नहीं पहेला भांगावाळा साधुए पाथ समीप साध्वीओने राखवी जोइए. जो न राखी शके तो चारमासी गुरु दंड आवे पहेला प्रकारना साधुए साध्वीने दीक्षा आप्या बाद जो तेनी इच्छा जिनकल्पीपणुं स्वीकारवानी थाय तो अन्य गच्छमां तेवा साधुनी निश्रामां साध्वीने सोंप्या पछी ज ग्रहण करी शके एवो कोइ योग्य साधु न होय तो शास्त्रकार जिनकल्पीपणुं स्वीकारवानो निषेध करे छे जिनकल्पीपणामां जे निर्जरा थाय तेना करतां अधिक निर्जरा साध्वीओना संरक्षणथी थाय छे कह्युं छे के-" जिणकप्पट्ठि अस्स जा निज्जरा तओ विधीए संजतीउ अणुपालेंतस्स विउलतरा णिज्जरा भवति॥"

हवे प्रसंगोपात्त श्रीनिशीथसूत्रना आठमा उद्देशाना भाष्य तथा चूर्णिमा जणावेल साधु साथेना साध्वीविहारने लगतु वर्णन करवामा आवे छे एक क्षेत्रमाथी बीजा क्षेत्रमा साध्वीओने जइ शकी होय अने मार्गमा भय के उपद्रव थवानी शंका न रहेती होय तो साधु पहेलां ते क्षेत्रमां जाय अथवा तो अमुक अमुक आंतरे मुकाम करे मार्गमा भय होय तो साधु आगळ अने पाछळ एम सर्व प्रकारे विचरे साध्वीना संसारी पक्षना कोइ संबंधीए दीक्षा लीधी होय तो तेने साथे राखीने आचार्य बीजा बे त्रण साधुओ साथे विचरे वळी विघ्ननो भय होय तो सार्थनो आश्रय ले सहस्रयोधी सुभटे दीक्षा लीधेल होय तो तेने साथे लइने जाय कोइक आचार्य आ संबंधमा एम पण कहे छे के-साध्वीओ आगळ जाय ते सारु, कारण के लघुशंकादिनु निवारण करवामा हरकत न आवे आ तो सामान्य विहारनी वात थई, विशेष वृत्तांत तो बृहत्कल्पनी टीकाना पहेला उद्देशा प्रांतभागद्वारा जाणवो

श्रीव्यवहारसूत्रना पांचमा स्थानकमा कह्यु छे के-पांच कारणे साधु-साध्वी एकठा रहे तो पण जिनाज्ञानु उल्लंघन थाय नहीं-१ कोई महाअटवीमां साधु-साध्वी साथे रहे, बेसे, सूवे तथा नैषेधिकी करे, २ कोइ गाममा नगरमा नगर तो राजधानीमा जता चातुर्मासमा साधुओने रहेवा वसतिस्थान मळ्यु होय अने साध्वीओने न मळ्यु होय तो साथे रही शके अथवा साध्वीओने रहेवा उपाश्रय मळ्यो होय अने साधुओने न मळ्यो होय तो साथे रहे, बेसे, नैषेधिकी इत्यादि करे, ३ वर्षाद आवतो होय अने बीजी जग्या न मळी शकती होय तो साधु-साध्वी नागकुमार तथा सुवर्णकुमारना मंदिरमां एकत्र रही शके, ४ साध्वीओना वस्त्रो चोराई जवानो भय रहेतो होय तो साधु-साध्वी एकठा रही शके, ५ साध्वीओने युवान तथा रूपवती देखी कोइ कामी पुरुष तेमी साथे मैथुन सेवननी अभिलाषा करे तो बन्ने एकत्र रही शके आ पांच कारणो महामुनिओने सेववा घटे सामान्यकाळे तो भेगा रहेवु महामोहनु कारण छे तेथी ते प्रणालिकानो सर्वथा निषेध करवामा आव्यो छे जिनकल्पी मुनि (जे वस्त्ररहित होय छे ते) पांच प्रसंगोमा वस्त्र सहित साध्वीओनी साथे रही शके-तेमा जिनाज्ञानो भंग थता नथी ते कारणो आ प्रमाणे-१ कोइ साध्वीनु चित्तभ्रम थइ गयुं होय, २ कामातुर होय, ३ भूतादिकनो प्रवेश थयेल होय, ४ उन्मादी बनी गइ होय अने ५ कोइ साध्वीने दीक्षा आपी होय अने बीजी साध्वीओ ते स्थळे न होय आ कारणोमा जो किंचित्मात्र दूषण लगाडे तो महादंडनो भाजन थाय उपर्युक्त वृत्तांतना अनुसंधानमा ज कहे छे के—

वायामित्तेण वि जत्थ, भट्टचरिअस्स निग्गह विहिणा ।
बहुलद्धिजुअस्सावी, कीरइ गुरुणा तयं गच्छम् ॥ ७१ ॥

[वाड्मात्रेणापि यत्र, भ्रष्टचरितस्य निग्रहो विधिना ।
बहुलब्धियुतस्यापि, क्रियते गुरुणा सको गच्छः ॥७१॥]

गाथार्थ—वचनमात्रथी पण चारित्रभ्रष्ट थयेल मुनि कदाच घणी ज लब्धिवाळो होय तो पण ज्यां विधिपूर्वक तेनो निग्रह कराय छे तेने ज खरेखर सदाचारी गच्छ कहेवाय.

विवेचन—शास्त्रकार कहे छे के-शिष्य भले तेवो शक्तिशाळी या तो लब्धि धारी होय परन्तु जो ते व्रतमां दूषण लगाडे तो तेना प्रत्ये अणुमात्र स्नेह राख्या सिवाय तरत ज तेनो त्याग करवो अथवा उचित दंड (शिक्षा) करवो आ संबंधमां एक क्षुल्लक साधुनुं दृष्टांत जाणवा जेवुं छे

वसंतपुरमां देवप्रिय नामनो श्रेष्ठी हतो. तेनी स्त्री युवावस्थामां ज मृत्यु पामी पछी त्यां एक मुनिराज पधार्या तेनी देशना सांभळतां तेने वैराग्य उपज्यो पछी श्रेष्ठिये पोताना आठ वर्षना पुत्र साथे दीक्षा लीधी संयम-पालन करतां थोडा दिवसो पसार थया तेवामां बाळ (क्षुल्लक) साधुए पिताने कह्युं के-पिताजी ! हुं पगरखां पहेर्या विना चाली शकतो नथी, मारा पगमां पीडा थाय छे त्यारे पिताए कह्युं के-ठीक, तुं पगमां पगरखां पहेर थोडा दिवस बाद पुत्रे कह्युं के-हुं ताप सहन करी शकतो नथी पिताए कह्युं-छत्र धारण कर पुत्रे पुन कह्युं-हुं गोचरी लेवा जइ शकतो नथी पिताए गोचरी लावी आपवी शरू करी क्षुल्लके वळी कह्युं-हुं भूमिशयन करी शकतो नथी पिताए सूवा माटे पाटियुं लावी आप्युं पुत्रे पाछुं कह्युं-हुं लोच करावी शकतो नथी पिताए तेनुं मुंडन कराव्युं पछी तो ते सचित्त जळथी स्नान करवा लाग्यो, मलिन वस्त्रो धोवरावबा लाग्यो आ प्रमाणे चाली रह्युं हतुं तेवामां तेणे एक दिवसे तेना पिताने कह्युं के-हुं स्त्री विना रही शकतो नथी,मने परणावो पिताए जाण्युं के-आ अयोग्य छे तेने हवे राखवो उचित नथी, एम विचारी तेने काढी मूक्यो ते पण चारित्र विराधी, मृत्यु पामी पाडो थयो देवप्रिय श्रेष्ठी चारित्र पाळी, स्वर्ग लोकमां गयो अवधिज्ञानथी पोताना पुत्रनी स्थिति जोतां तेने प्रतिबोधवा तेणे सार्थवाहनुं रूप लीधुं अने पाडाने खरीदी लइ तेना पर अत्यंत भार भरवा लाग्यो अतिशय भारथी पाडानी गति मंद पडी गइ, तेने कष्ट थवा लाग्युं ते समये सार्थवाह 'हे पिता ! हुं उघाडे पगे चालवा समर्थ नथी, हुं गोचरी लेवा जइ शकीश नहीं, हुं केशलुंचन करावी शकीश नहीं' विगेरे क्षुल्लकना वचनो शब्दो वारंवार तेने संभळाववा लाग्यो, जे सांभळतां ज पाडाने जातिस्मरण ज्ञान थयुं पछी ते पाडो पश्चात्ताप करी, अनशन स्वीकारी देव थयो दृष्टांतनो परमार्थ ए छे के-पिताए पुत्रमोह न करतां जेम तेनो त्याग कर्यो तेम शक्तिधारी, लब्धिधारी शिष्यनो मोह न करतां तेवा समर्थ शिष्यने पण

यश्चित्त आपवुं अहीं प्रसंगथी लब्धिओनु वर्णन करतां कहे छे के-

> आमोसही १ विप्पोसहि २, खेलोसहि ३ जल्लओसहि ४ चेव ।
> सव्वोसहिसंभिन्ने ५-६, ओही ७ रिउ८ विउलमइलद्धी ९ ॥ १ ॥
> चारण १० आसीविस ११ केवली अ १२,गणधारिणो अ १३ पुव्वधरा१४।
> अरिहंत १५ चक्कवट्टी १६, बलदेवा १७ वासुदेवा १८ य ॥ २ ॥
> खीरमहुसप्पिआसव १९-कोट्ठयबुद्धी २० पयाणुसारी य २१ ।
> तह बीयबुद्धि २२ तेयग २३-आहारग २४ सीयलेसा य २५ ॥ ३ ॥
> वेउव्विदेहलद्धी २६, अक्खीणमहाणसी २७ पुलागा य २८ ।
> परिणामतववसेण, एमाई हुन्ति लद्धीओ ॥ ४ ॥

१. आमर्षौषधिलब्धि-मुनिना हाथ, पग विगेरे अवयवना स्पर्शथी रोगीना सर्व व्याधिओ नाश पामे आ लब्धिधारी मुनिनो स्पर्श ज औषधि जेवो होय छे २. विप्रुडौषधिलब्धि-मळ-मूत्रना स्पर्शथी अथवा व्याधिना स्थाने लगाडवाथी सर्व व्याधिओ नाश पामे ३. खेलौषधिलब्धि-श्लेष्म एटले थूक, बळखा के लींटना स्पर्शथी सर्व रोग नाश पामे ४. जल्लौषधिलब्धि-कर्णनो, दांतनो, नासिकानो, जिह्वानो तथा शरीरनो मेल ते जल्ल, तेनाथी व्याधियो विनाश पामे ५ सर्वौषधिलब्धि-केश, रोम, नख आदि सर्व शारीरिक पदार्थद्वारा रोगो नाश पामे लब्धिवंत मुनिना केश, रोम, रुधिर विगेरे पदार्थो सुगंधी होय छे कलिकालसर्वज्ञ-श्रीमद्हेमचन्द्राचार्ये योगशास्त्रना प्रथम प्रकाशनी वृत्तिमां कह्यु छे के-" योगिनां कायसंस्पर्शः, सिक्त्वमिव सुधारसैः । क्षिणोति तत्क्षणं सर्वा-नामयानामयाविनाम् ॥ १ ॥ योगिनां योगमाहात्म्यात्, पुरीषमपि कल्पते । रोगिणां रोगनाशाय, कुमुदामोदशालि च ॥ २ ॥ तथाहि योग माहात्म्या-द्योगिनां कफबिन्दव । सनत्कुमारादेरिव, जायन्ते सर्वरुक्छिदः ॥ ३ ॥ मलः किल समाम्नातो, द्विविधः सर्वदेहिनाम् । कर्णनेत्रादिजन्मैको, द्वितीयस्तु वपुर्भवः ॥ ४ ॥ योगिनां योगसम्पत्ति-माहात्म्याद् द्विविधोऽपि सः । कस्तूरिका परिमलो, रोगहा सर्वरोगिणाम् ॥५॥ नखाः केशा रदाश्चान्य-दपि योगिशरीरगम् । भजते भेषजीभाव-मिति सर्वौषधिः स्मृता ॥ ६ ॥ तथाहि तीर्थनाथानां, योगभृच्चक्रवर्तिनाम् । देहास्थिशकलस्तोम., सर्वस्वर्गेषु पूज्यते ॥ ७ ॥"
योगीपुरुषनो कायस्पर्श जाणे अमृतथी सिंच्या होय तेवो होय छे. तेनाथी

सर्व प्रकारनी व्याधिओ नाश पामे छे (१) साधुपुरुषना योगना माहात्म्यथी तेमनु स्थंडिल पण कमळ जेवु सुगंधी अने व्याधिविनाशक बनी जाय छे (२) वळी योगप्रभावथी कफना बिंदुमात्रथी *सनत्कुमार चक्रवर्तीनी माफक

---

* एकदा देवसभामा नाटक थई रह्यु हतु देवोना राजा इन्द्र तथा अन्य देवो ते जोई रह्या हता तेवामा एक अत्यन्त तेजस्वी देव त्यां आव्यो तेने जोईने बीजा देवो अंजाई गया थोडी वारे ते देव चाल्या गयो तेना गया पछी देवोए इन्द्रने पूछ्यु—आवो रूपवंत बीजो कोई देव हशे ? इन्द्रे कह्यु—सनत्कुमार चक्रवर्तीना रूप आगळ आ सौंदर्य शा हिसाबमां छे ? इन्द्रवचननी खातरी माटे बे देवो ब्राह्मणनु रूप लई मर्त्यलोकमां आव्या हस्तिनापुर आवी, राजाज्ञा मगावी तेओ राजमहेलमां गया देवो चक्रवर्तीनु रूप जोई चकित थई गया अने मस्तक धूणाव्यु चक्रीए तेमने तेम करवानु कारण पूछ्यु एटले तेमणे कह्यु के—विश्वमां तमारु रूप वखणाय छे ते जोवा माटे अमे आव्या हता खरेखर तमारा यशं वखाण करता पण रूप अत्यन्त मनोहर छे चक्रीने आ शब्दो सांभळी अभिमान उद्भव्यु गर्वना अतिरेकमां ज तेणे तेओने कह्यु—भाइ रूप जोवु हतु तो अत्यारे शामाटे आव्या ? स्नान करी, पोशाक पहेरी हु राजसभामां आवु त्यारे मारु खरेखरु रूप जोजो.

स्नानादि विधि पूर्ण करी चक्री राजसभामां गया देवो पण आव्या परन्तु तेमना वदन उपर उल्लासने बदले उदासीनता छवाई गई चक्री पोतानी प्रशंसा सांभळवा इन्तेजार बनी रह्यो हतो तेवामां तेओना मुख उपर ग्लानि छवाई गयेल जोई तेणे ज सामो प्रश्न कर्यो—केम ब्राह्मणो ! थोडीक पहेला आनन्दमां हता अने हमणा उदास केम थई गया ? ब्राह्मणोए स्पष्ट कह्यु—राजन् ! तमारा देहमां भयानक फेरफार थई गयो छे, तमारु रूप घणु ज विकृत थई गयु जणाय छे अमने लागे छे के तमारा देहमां घणा रोगो उत्पन्न थशे आ प्रमाणे कहीने देवो चाल्या गया

तेमना गया बाद सनत्कुमारे पोताना देह तरफ दृष्टि फेंकी तो शरीरनी कांति क्षीण थयेली जणाई देहनी अशाश्वतता विषे विचार करता कलाको पसार थई गया तेमने क्षणविनाशी देह प्रत्ये खरेखर घृणा उपजी अने संयम स्वीकारी तेओ चाल्या निकळ्या.

संयम-ग्रहण बाद तेमणे आ देहनो जेटलो काम लेवाय तेटलो लई लेवा मांड्यो छट्ठ उपर छट्ठ करवा लाग्या अने पारणाना दिवसे पण मात्र चणा ने बकरीना दूधनी छाश लेवा लाग्या तपश्चर्या ए ज तेमनो जीवन-मंत्र थई पड्यो उग्र तपश्चर्या अने तुच्छ आहारथी तेमना शरीरमां भयंकर सात रोग लागु पड्या आखा शरीरे खस फूटी निकळी, छतां पण तेमनु रुवाडुं य फरक्यु नहीं तेमणे पूर्ववत् तपश्चर्या चालु ज राखी आवा दृढ मनोबळथी अने तपश्चर्याथी तेमने अनेक प्रकारनी लब्धिओ प्राप्त थई हवे पहेलानु अभिमान ओसरी गयु हतु धारे तो तेमना रोगो लब्धिथी दूर करी शकत परन्तु आ निःसार देह प्रत्ये हवे तेमने ममत्वभाव नहोतो रह्यो

एकदा तेओ बेठा हता तेवामां बे वैद्य आवीने कहेवा लाग्या के—अमे धर्मवैद्यो छीए. कंई पण बदलानी आशा वगर मफत दवा करीए छीए आपना आ भयंकर रोगोनी अमने चिकित्सा करवा मागीए छीए सनत्कुमारे तेमने स्नेहभावे जवाब आप्यो—भाई शेनी वात करो छो ? शरीरनी के आत्मानी ? शरीरना रोगो तो हुं मटाडी शकु छु, आत्मना रोगोनो उपचार करी

सर्व रोगो नष्ट थाय छे (३) सर्वदेहधारीओने मल बे प्रकारनो होय छे-एक कान तथा नेत्रादिकथी उत्पन्न थनारो अने बीजो शरीरथी उत्पन्न थनारो (प्रस्वेद) छतां पण योगीओनो बन्ने प्रकारनो मल, योग-प्रभावथी, कस्तूरी जेवो सुगंधी अने व्याधिविनाशक होय छे (४-५) योगीना नख, केश, दांत अने बीजा पण जे अवयवो छे ते औषधिभावने पामेला होय छे (६) तथी ज रीते धर्मचक्रवर्ती तीर्थंकरोना अस्थिओनो समूह देवलोकने विषे पण पूजाय छे ते अस्थिओ पुण्य-परमाणुना निपजेला होय छे तेथी सर्व देवो तेनी पूजा करे छे अने उपद्रव थये छते तेनु न्हवणजल छांटवाथी विशेष शांति थाय छे (७) वळी कहे छे के-जेम मेघवृष्टिनु जळ नदीना जळमां मळवाथी जेम नदीनु पाणी रोग हरनारु थाय छे तेम सर्व लब्धिधारी मुनिना शरीरने स्पर्शीने आवेला वायुद्वारा पण झेरथी मूर्च्छा पामेल प्राणी स्वयमेव सचेत थइ जाय छे विषमिश्रित आहार मुखमां नाखे अथवा कोठामां आव्यो होय तो ते अन्न पण निर्विष थइ जाय छे वळी कोइ पण जातनो विकार होय के वेर होय ते पण तुरत शमी जाय छे हवे ६ सम्भिन्नश्रोतसलब्धि-सांभळवानु काम काननु छे छतां कोइ पण इन्द्रियद्वारा सर्व इन्द्रियोना विषयो जाणवानी शक्ति थाय छे के-"सर्वेन्द्रियाणां विषयान्, गृह्णात्येकमपीन्द्रियम् । यत्प्रभावेण सम्भिन्न-श्रोतोलब्धिस्तु सा मता ॥१॥" जे लब्धिना प्रभावथी एक इन्द्रियवडे सर्व इन्द्रियोना विषयोने ग्रहण करी शके ते सम्भिन्नश्रोतस् नामनी लब्धि जाणवी वळी बार योजनमां पडेला चक्रवर्तीना सैन्यना विस्तारमां सर्व स्थळे एक साथे वाजिंत्रो वागतां होय ते सर्वने जुदा जुदा समजवानी शक्ति पण संभिन्नश्रोतसलब्धि कहेवाय छे ७ अवधिज्ञानलब्धि-इन्द्रियोनी के मननी मदद लीधा विना आत्मा रूपी द्रव्योने आत्मसाक्षात् जाणे अथवा देखे ८ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानलब्धि-इन्द्रिय तथा मननी सहाय विना अढी आंगुल न्यून अढी द्वीपमां रहेला सञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोना मनोगत भावोने जाणे ते मनःपर्यवज्ञानलब्धि कहेवाय परन्तु तेमां जे सामान्यथी अल्प पर्याय जाणे ते ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानलब्धि कहेवाय अढी आंगुल उत्सेधांगुल समजवा ९ विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानलब्धि-संपूर्ण अढीद्वीपना सञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोना मनोगत भावो विशेषपणे जाणे १० चारणलब्धि-आकाशमां गमन करवानी शक्ति,

शकता हो तो करो आम कही तेमणे पोतानी कोही गयेली आंगळी पर मात्र थूंक लगाड्यु के तरत ते आंगळी कनकवर्णी थई गई जेथी तेमनी शक्ति जाई तेमना चरणमां नमी पड्या तेओए कह्यु के-अमे वैद्यना रूपमां देवो छीए पहेला आपनुं रूप जोवा अमे आवेला आपना जेवा आ जगतमां कोई विरला ज होय छे आ संबंधमां विशेष वृत्तांत जाणवाना इच्छुके त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र भाषांतर पर्व ४थुं, सर्ग ७ मो, पृष्ठ १७६-१९१ पर्यंत जोवु

ते बे प्रकारनी छे-(१) जंघाचारण अने (२) विद्याचारण वच्चे विसामो लीधा विना ज तेरमा रुचक द्वीप सुधी जई, त्यां शाश्वत चैत्यने वंदना करी, पाछा वळता एक विसामे आठमा नंदीश्वर द्वीपे आवी, त्यां शाश्वत चैत्योने वांदी, बीजुं उड्डयन करी स्वस्थाने आवे ते जंघाचारण कहेवाय प्रथम उड्डयने मानुषोत्तर पर्वते जई, त्यां शाश्वत चैत्योनी वंदना करी, बीजा उड्डयने नंदीश्वरद्वीपे जई त्यां शाश्वत चैत्योने वांदे अने त्यांथी पाछा वळता एक ज उड्डयने स्वस्थाने आवे आ प्रमाणे तिर्च्छागति संबंधी जाणवुं ऊर्ध्वगतिमां जंघाचारण मुनि एक ज उड्डयनवडे मेरुपर्वतना शिखर पर रहेल पांडुकवन सुधी जई, शाश्वत चैत्योने वंदना करी, पाछा वळता एक उड्डयनथी नंदन वनमां आवी, त्यां शाश्वत चैत्योने वांदी बीजे उड्डयने स्वस्थाने आवे विद्याचरण तो प्रथम उड्डयन भूमिथी ५०० योजन पर आवेला मेरुपर्वतना नंदनवनमां जई, त्यां शाश्वत चैत्याने वांदी, बीजा उड्डयनवडे मेरुना शिखर पर एटले नंदनवनथी ९८५०० योजन ऊपर रहेला पांडुकवनमां आवी, शाश्वत चैत्योने वांदी, पाछा उतरता एक ज उड्डयनथी स्वस्थाने आवे जंघाचारण मुनिनी गति जतां वखत विशेष होय छे अने पाछा वळता ओछी होय छे तेनुं कारण ए छे के जंघाबळ प्रथम वधारे प्रमाणमां होय छे अने पछी थाक लाग तेथी घटी जाय छे विद्याचारणाने प्रथम विद्याभ्यास अल्प होय छे अने पछी जेम जेम विशेष जाप करवामां आव तेम तेम विद्या विशेष अभ्यस्त (ताजी) थवाथी गति वधे छे एटले प्रथम गति विसामावाळी होय छे अने स्वस्थानक तरत पाछा वळता ताजी गति विसामारहित होय छे वळी पद्मासनथी के कायोत्सर्गासनथी शरीरने हलाव्या विना आकाशमां उडवानी शक्तिवाळा व्योमचारण कहेवाय ॥ आ उपरांत बीजा पण घणा भेदो छे कह्यु छे के—जल १ जङ्घा २ फल ३ पुष्प ४ पत्र ५ श्रेण्य ६-ग्निशिखा ७ धूम ८ नीहारा ९ वश्याय १० मेघ ११ वारिधारा ११ मर्कटक-तन्तु १३ ज्योतीरश्मि १४ पवनाद्यालम्बनगतिपरिणामकुशलाः १५ । (१) जळचारण-वाव, नदी, सरोवर अने समुद्र विगेरे जळाशयोमां अप्कायनी विराधना कर्या विना जेम भूमि ऊपर पग उपाडीने मूकीने चाले तेम जळमां (जळनी सपाटी ऊपर) पग उपाडीने चाले (२) जंघाचारण-भूमि ऊपर चार आंगळ ऊंचा रहीने चालवानी शक्ति (३) फळचारण-अनेक प्रकारना वृक्षो ऊपर रहेला फळोने अवलम्बीने चालवा छतां फळना जीवने अंशमात्र बाधा न पहोंचे (४) पुष्पचारण-अनेक वृक्षादिकना फूलो ऊपर पग मूकीने चालवा छतां पुष्पना जीवन कंई पण पीडा न थाय (५) पत्रचारण-पत्रो (पांदडा) ऊपर पग मूकीने चालवा छतां कष्ट न थाय (६) श्रेणिचारण-चार सो योजन ऊंचा निषध अने नीलवंत पर्वतनी [illegible]छिन्न श्रेणिओना अवलम्बनवडे (विषम टेकराओ अने महाशिलाओने अवलम्बीने) पग मूकीने चढे तेमज उतरे (७) शिखाचारण-

अग्निनी ज्वाला पर पग मूकीने आकाशमा गमन करे तो पण अग्निकायना जीवने परिताप न थाय तेमज मुनिने दाह पण न थाय (८) धूमचारण-धूमाडो उंचो जाय, तिर्च्छो जाय तो पण तेनें अवलंबीने आकाशमा अस्खलित गति करी शके (९) नीहारचारण-धूमस के जे जळ्‌नु रूपांतर छे तेने अवलंबीने अप्‌कायना जीवने किलामणा कर्या सिवाय विचरी शके (१०) अवश्याय-चारण-झाकळना पाणीने अवलंबीने दुःख उपजाव्या सिवाय आकाशमा विचरी शके (११) मेघचारण-आकाशमा चढी आवेला पाणीवाळा वादळाना अप्‌कायना जीवोने कष्ट उपजाव्या सिवाय आकाशमा विचरी शके (१२) वारिधारा-चारण-वरसाद वरसतो होय त्यारे पण जळवृष्टिमां अप्‌कायना जीवने उपद्रव कर्या सिवाय विचरी शके (१३) मर्कटतन्तुचारण-वांका-टेढा वृक्षोना आंतराओमा करोळिया जे जाळ गुंथे छे ते जाळ ऊपर पग मूकीने चालवा छतां तेना एक तांतणो पण तूटे नहि-तेवी रीते आकाशमां गमन करी शके (१४) ज्योतिरश्मिचारण-चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने तारा विगेरेना किरणोनुं अव लंबन लइ आकाशमा विचरी शके श्रीगौतमस्वामी आ लब्धिप्रभावथी अष्टा-पद पर्वत ऊपर चढ्या हता ते प्रसिद्ध ज छे (१५) वायुचारण-वायु ऊर्ध्व वातो होय, तिर्च्छो वातो होय, उत्कृष्ट गतिए वातो होय, साधी गतिए वातो होय के कोइ पण दिशामा वातो होय ते दिशानी वायुश्रेणिने अवलंबीने वायुकाय जीवनी विराधना कर्या विना विचरी शके श्रीसमवायांग सूत्रमा कह्युं छे के-चारण मुनिओ कइंक अधिक सत्तर हजार योजन ऊर्ध्व गति करीने पछी तिर्च्छी गति करे एम छ थ-" इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ साइरेगाइं सत्तरसजोअणसहस्साइं उड्ढ उप्पइत्ता तओ पच्छा चा रणाण तिरियगती पवत्तति त्ति० १०" ११ आशीविषलब्धि-मुनिना दांत-दाढामां झेरना जेवी शक्ति उत्पन्न थाय छे अने जेने शिक्षा करवा माटे दातथी करडतां ते मृत्यु पामे छे १२ केवलज्ञानलब्धि-इन्द्रियो अने मननी सहाय विना लोक अने अलोकना सर्व पदार्थोना वतता, वतता अने वतनारा सर्व भावने जाणे १३ गणधरलब्धि-गणधरपणुं प्राप्त थाय १४ पूर्वधरलब्धि-चौदपूर्वरूप श्रुत ज्ञान प्राप्त थाय १५ तीर्थंकरलब्धि-तीर्थंकरपदनी प्राप्ति थाय १६ चक्रवर्ति-लब्धि-चक्रवर्तीपणुं प्राप्त थाय छ खंड राज्य, चौद रत्नो, नवनिधि विगरेनी प्राप्ति थाय १७ बळदेवलब्धि-बळदेवपणुं प्राप्त थाय १८ वासुदेवलब्धि-वासु देवपणुं प्राप्त थाय चक्र वगेरे सात रत्नो तथा त्रण खण्ड भूमिनी प्राप्ति थाय १९ क्षीराश्रवादिलब्धि-आ लब्धि त्रण प्रकारनी छे (१) क्षीराश्रव, (२) मध्वाश्रव अने (३) घृताश्रव क्रोडोना चारो चरनारी एक लाख गायोने दोहीने तेनुं दूध पचास हजार गायोने पाय, तेने पाछी दोहीने तेनुं दूध पचीश हजार गायोने पाय, तेनु दूध पाछुं साडाबार हजार गायोने पाय एम अर्धी अर्धी क्रम करता छेवट एक

गायने पाय अने तेने दोवाथी जे दूध प्राप्त थाय तेनी मिठाश अजोड होय छे आ लब्धिना प्रभावथी मुनिराजनुं आवुं मिष्ट वचन थाय छे एटले श्रोता जो शारीरिक के मानसिक दुःख भोगवतो होय तो ते शीघ्र दूर थई जाय छे अने मिष्टान्न जम्या होय तेवो आनंद उद्भवे छे एवी ज रीते मधु जेवा मिष्ट वचन जणाय ते मध्वाश्रव अने ऊपर जणावेल गायनी मर्यादाना क्रमे छेवट एक गायना दूधनुं घी जेम मिष्ट अने वीर्यवान् थाय छे तेम श्रोताजन पण शक्तिमान् अने संतुष्ट थाय छे उपलक्षणथी इक्षुवाश्रव अने अमृताश्रव नामनी लब्धिओ पण छे जेथी शेरडी अने अमृत जेवा मधुर वचन लागे वळी मुनिना पात्रमां पडेलो तुच्छ आहार पण दूध विगेरेनी जेवा मिष्ट बनी जाय ते पण क्षीराश्रवादि लब्धिओ कहेवाय छे २० कोष्ठबुद्धिलब्धि–धान्य भरवाना मोटा कोठारमां नाखेलुं अनाज जेम वर्षो सुधी विनाश पामतुं नथी अने तेनी ते ज स्थितिमां रहे छे तेम मुनिए शीखेला सूत्रार्थो वर्षो पर्यन्त स्थिर रहे–भुलाय ज नहीं २१ पदानुसारिणी लब्धि–तेना त्रण प्रकार छे–(१) ग्रंथनी शरूआतनुं पद सांभळीने संपूर्ण ग्रंथनो बोध थाय ते अनुश्रोतपदानुसारिणी, (२) छेल्ला पदने सांभळवाथी संपूर्ण ग्रंथनो बोध थाय ते प्रतिश्रोतपदानुसारिणी अने (३) मध्य पदने सांभळवाथी संपूर्ण ग्रंथनो बोध थाय ते उभयपदानुसारिणी २२ बीजबुद्धि लब्धि–जेम सारा क्षेत्रमां वावेल बीज अनेक बीज प्रगटावे तेम बीजभूत एवा एक ज अर्थपदने सांभळीने घणुं सर्व श्रुत यथार्थ जाणी शके कोई कहेशे के तो पछी पदानुसारी लब्धि अने आ लब्धिमां तफावत शो ? तेनो जवाब ए छे के–पदानुसारीमां तो एक पद जाणवाथी बीजां पद जाणी शकाय ज्यारे बीज बुद्धिधारी तो एक पदार्थने जाणवाथी अनेक पदार्थोनो ज्ञाता थाय आ बीज बुद्धि लब्धि गणधर भगवंतोने होय छे एटले तीर्थंकर भगवंतना मुखथी "उप्पन्नेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा" ए त्रिपदी सांभळीने द्वादशांगीनी रचना करी शके छे २३ तेजोलेश्यालब्धि–क्रोध ते कारणने लीधे अनेक योजन प्रमाण क्षेत्रमां रहेल पोताना शत्रु विगेरे पदार्थोने दग्ध करी शके. अग्नि जेवा उष्ण पुद्गलोने फेंकवानी शक्ति ते तेजोलेश्या जे साधु छट्ठने पारणे छट्ठ करे अने पारणाने दिवसे पण एक मुठी अडदना बाकळा खाय अने एक चुलुक मात्र पाणी पीए–आथी विशेष खाय–पीये नहीं–आ प्रमाणे छ महिना पर्यंत तपश्चर्या करे त्यारे तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त थाय छे २४ आहारकलब्धि–चौद पूर्वधर मुनि श्रुतशंका टाळवाने अर्थे अथवा जिनेश्वरनी समवसरणादि ऋद्धि जोवाने माटे पोताना शरीरमांथी एक हाथ प्रमाण शरीर विकुर्वी शके कार्य समाप्ति थये आ देहनुं विसर्जन करे एक भवमां बे वखत आ प्रमाणे

थाय अने जो बीजी वार करे तो अवश्य मरी जाय २५ शीतलेश्यालब्धि—तेजोलेश्याथी बळता जीव प्रत्ये करुणा उत्पन्न थये छते आ लेश्या मूकवाथी बळतो जीवो अगर तो पदार्थो जळना सिंचननी माफक शांति प्राप्त करे छे २६ वैक्रियलब्धि—विविध प्रकारनी क्रियाओ करवानी शक्तिवाळुं वैक्रिय शरीर विकुर्वी शकाय आ लब्धि अनेक प्रकारनी शक्तिवाळी छे (१) अणुत्व—अत्यन्त सूक्ष्म शरीर बनावी, कमळनी नाळना छिद्रमां पण दाखल थई त्यां चक्रवर्तीना जेवा भोगो भोगवी शकाय (२) महत्त्व—मेरुपर्वत जे एक लाख योजन ऊंचो छे तेना करतां पण मोटुं शरीर बनावी शकाय (३) लघुत्व—वायु करतां पण लघु एटले हलकुं शरीर बनावी शकाय (४) गुरुत्व—वज्र करतां पण अत्यंत भारे शरीर बनावी शकाय के जेने इन्द्रादि देवो पण पोताना उत्कृष्ट बळथी उपाडी शके नहीं (५) प्राप्ति—भूमि उपर रहीने पोताना हस्त एटला बधा लंबावे के मेरुपर्वत उपरना शिखरने स्पर्शी शके. (६) प्राकाम्य—जळमां भूमि पर चालवानी माफक चाले तेमज भूमि पर डुबकी मारवानी माफक डुबकी मारतो चाली शके (७) ईशित्व—तीर्थंकर, इन्द्र अने चक्रवर्त्यादिकनी ऋद्धि विकुर्वी शके (८) वशित्व—सर्व जीवोने पोताने आधीन करी शके. (९) अप्रतिघातत्व—खुल्ला मार्गमां जेम अस्खलित गतिए गमन करी शकाय, तेम वच्चे पर्वतादि विघ्नो आववा छतां पण अस्खलित गमन करी शके. (१०) अन्तर्धानत्व—अदृश्य थई जाय के जेथी कोई पण जोई शके नहीं (११) कामरूपत्व—एक साथे अनेक प्रकारना विविध रूपो बनावी शके आ प्रमाणे वैक्रियलब्धि अनेक प्रकारनी समजवी २७ अक्षीणलब्धि—कांई पण पदार्थ खूटे नहीं तेना बे प्रकार छे. (१) अक्षीणमहानसी—पोताना पात्रमां अल्प आहार होय तो पण आ लब्धिना प्रभावथी अनेक माणस जमाडे तो पण खूटे नहीं परन्तु ज्यारे पोते ते आहार करे त्यारे ज खूटे श्रीगौतमस्वामीए अष्टापदथी नीचे उतरतां १५०३ तापसोने आ ज लब्धिना प्रभावथी पारणुं कराव्युं हतुं (२) अक्षीणमहालय—परिमित भूमिमां पण असंख्य देवो तिर्यंचो अने मनुष्यो पोतपोताना परिवार सहित एकबीजाने पीडा उपजाव्या सिवाय सुखपूर्वक बेसी शके जेमके श्रीतीर्थंकरादिकना समवसरणमां असंख्य देवादिक समाई शके छे २८ पुलाकलब्धि—चक्रवर्तीना सैन्यने पण चूर्ण करी नाखे आ प्रमाणे अट्ठावीश लब्धिओनुं स्वरूप जाणवुं

बीजी पण मनलब्धि, वचनलब्धि, कायलब्धि विगेरे लब्धिओ अतिशय शुभ परिणामथी अने तपना प्रभावथी प्राप्त थाय छे ज्ञानावरणीय तथा वीर्यान्तराय कर्मना असाधारण क्षयोपशमथी अन्तर्मुहूर्त मात्रमां सर्व श्रुतसमुद्रनुं अवगाहन करवानी शक्ति ते मनोलब्धि ' श्रुतज्ञानना सर्व वस्तुओने अन्तर्मुहूर्ते

मात्रमा उच्चारवानी जे शक्ति ते वचनलब्धि आ लब्धिथी चौदपूर्वनु परावर्तन (आवृत्ति) थाय छे अथवा पद वाक्य अने अलंकार युक्त वचनो मोटा स्वरे बोलवा छतां वाणीनी धारा अस्खलित रहे, वचमां एक पण अक्षरादि तुटे नहीं तेमज प्रारंभमा कंठ जेवो होय तेवो अंतपर्यन्त शक्तिशाळी रहे-हीन न थाय वीर्यान्तरायना असाधारण क्षयोपशमथी बाहुबलिनी माफक वर्ष सुधी कायोत्सर्गध्यानमां निश्चळ ऊभा रहे अथवा बेठा होय तो पण परिश्रम न लागे तेवी शक्ति कायलब्धि कहेवाय मतिज्ञानावरण अने वीर्यान्तराय कर्मना उत्कृष्ट क्षयोपशमथी प्रगटेल असाधारण महाबुद्धिने अंगे मुनि द्वादशांगी के चौद पूर्व न भण्या होय तो पण चौदपूर्वधरनी माफक दुर्गम भावार्थो जाणी शके ते प्रज्ञाश्रमण कहेवाय अन्य विशेष भणेल होय अने पोते अल्प भणेल होय तो पण विद्यायोगने कारणे बीजाना वशमां न आवे ते विद्याधरश्रमण कहेवाय

ऊपर जणावेल अट्ठावीश लब्धिओ पैकी केटली केटली लब्धि कोने होय ते जणावता कहे छे के-भव्य पुरुषने अट्ठावीश लब्धिओ होय भव्य स्त्रीने (१) तीर्थंकर, (२) चक्रवर्ती, (३) वासुदेव, (४) बळदेव, (५) संभिन्नश्रोतस्, (६) चारण, (७) पूर्वधर, (८) गणधर, (९) पुलाक अने (१०) आहारक शरीरलब्धि-आ प्रमाणे दश लब्धिओ न होय, एटले अढार लब्धि होय छे अनंतकाळे कोई काळे अच्छेरारूपे स्त्री तीर्थंकर थाय छे, जेम के चालु चोवीशीना ओगणीशमा जिनेश्वर मल्लिनाथ, परन्तु तेने आश्चर्यमा गणवाथी स्त्रीने तीर्थंकरलब्धि न होय तेम दर्शाव्युं छे अभव्य पुरुषने १५ लब्धि ज होय छे ऊपर जणावेल दश लब्धिओ उपरांत (११) केवळी, (१२) ऋजुमतिमन पर्यवज्ञान अने (१३) विपुलमतिमन पर्यवज्ञान ए तेर लब्धि सिवायनी पंदर होय अभव्य स्त्रीने १४ चौद लब्धिओ होती नथी अने चौद होय छे ऊपर कहेल तेर लब्धिओ उपरांत (१४) मधुक्षीराश्रवलब्धि पण होती नथी

लब्धिओनुं विशेष स्वरूप प्रवचनसारोद्धार तेमज योगशास्त्रनी टीकामांथी जाणवु आवी लब्धिवाळो शिष्य पण जो चारित्रमां दोष लगाडे तो तेने आचार्य दंड आपे हवे पण शिक्षाप्रदान अने सद्गुणवर्णनवडे गच्छनुं स्वरूप कहे छे

जत्थ य संनिहिउक्खड-आहडमाईण नामगहणे वि ।
पूईकम्मा भीता, आउत्ता कप्पतिप्पेसु ॥ ७२ ॥
मउए निहुअसहावे, हासदवविवज्जिए विगहमुक्के ।
असमंजसमकरंते, गोअरभूमट्ठ विहरन्ति ॥ ७३ ॥
मुणिणं नाणाभिग्गह-दुक्करपच्छित्तमणुचरंताण ।
जायइ चित्तचमक्कं, देविंदाण वि तं गच्छम् ॥ ७४ ॥

[यत्र च संनिध्युपस्कृत-आहृतादीना नामग्रहणेऽपि ।
पूतिकर्मणः भीता, आयुक्ताः कल्पत्रेपयोः ॥ ७२ ॥
मृदुका निभृतस्वभावा, हास्यद्रवविवर्जिता विकथामुक्ताः ।
असमञ्जसमकुर्वन्ता, गोचरभूम्यर्थ (गोचरभूम्यष्टकं) विहरन्ति ॥
मुनीना नानाभिग्रह-दुष्करप्रायश्चित्तमनुचरन्तानाम् ।
जायते चित्तचमत्कारो, देवेन्द्राणामपि स गच्छः ॥ ७४ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां रात्रिए अशनादि राखवामां तेम ज औद्देशिक, अभ्याहृत, पूतिकर्म विगेरे आधाकर्मी उद्गम दोषोनुं नाम लेतां या स्पर्श थई जतां भय उपजतो होय तेम ज कल्प एटले पात्रा ने त्रेपमां-हस्तादिकने साफ करवामां सावधान, विनयवान, निश्चळ स्वभावी, हांसी-मश्करीथी विरमेल, विकथाथी दूर रहेनार, वगरविचार्युं नहीं करनार, गोचरी अर्थे परिभ्रमण करनार, विविध प्रकारना अभिग्रह तथा दुष्कर प्रायश्चित्त आचरनारा मुनिजनो होय छे ते इन्द्रोने पण आश्चर्ययुक्त करे छे. हे गौतम ! तथाप्रकारना गच्छने ज वास्तविक गच्छ जाणवो.

विवेचन—साधु रात्रिए पोता पासे अशनादि राखो मूके ते सनिधि दोष कहेवाय. आ दोषना संबंधमां श्रीनिशीथसूत्रना अगियारमा उद्देशामां कह्युं छे के- " जे भिक्खू असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा दिया पडिगाहेत्ता दिया भुंजइ १, जे भिक्खू असण वा ४ दिया पडिगाहेत्ता राओ भुंजइ २, जे भिक्खू असण वा ४ राओ पडिगाहेत्ता दिया भुंजइ ३, जे भिक्खू असण वा ४ राओ पडिगाहेत्ता राओ भुंजइ ४ । चउसु वि भंगेसु आणादिया य दोसा चउगुरु च पच्छित्त तवकालविसेसिय दिज्जति ॥ " १ जे साधु-साध्वी अशनादिक चार आहार दिवसे ग्रहण करीने दिवसे खाय, २ दिवसे ग्रहण करीने रात्रे खाय, ३ रात्रे ग्रहण करीने दिवसे खाय अने ४ रात्रे ग्रहण करीने रात्रे खाय-आ चार भागामां प्रथम भांगो शुद्ध छे अने त्रण रात्रिभोजनना दोषथी दूषित छे आ प्रमाणे वर्तनारने जिनाज्ञाभंगनो दोष लागे, चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे वळी पण कहे छे के-" जे भिक्खू पारियासिय पिप्पलिं वा पिप्पलिचुण्ण वा मिरिय वा मिरियचुण्ण वा सिंगबेर वा सिंगबेरचुण्ण वा बिल वा लोण उब्भिय वा लोण आहारेइ आहारन्त वा साइज्जइ ॥" जे साधु-साध्वी रात्रिए राखेल आखी पीपर के पीपरनुं चूर्ण, आखा तीखा के तीखानुं चूर्ण, सूंठ अथवा सूंठनुं चूर्ण जे देशमां समक (मीठुं) न होय ते देशमां

खारो पकवे छे तेनुं लूण (मीठुं) थाय छे ते, समुद्रमां उत्पन्न थनारुं लूण (सिंधव) विगेरे बीजा रात्रे राखीने बीजे दिवसे वापरे अगर तो वापरनारने मारी नाखे ते आज्ञाभंगने पात्र थाय. श्रीबृहत्कल्पना पांचमा उद्देशामां पण कह्युं छे के-दिवसे लावीने रात्रिए राखी मूकेलो आहार अणुमात्र कल्पी शके नहीं पण अपवादरूपे व्याधिग्रस्तने कल्पी शके, परन्तु आ वने तो सर्वथा निषेध ज जाणवो. निर्युक्तिकार आ संबंधमां विशेष अजवालुं पाडतां कहे छे के-अशनादिक रात्रिए राखेला जोईने नूतन शिष्य तथा कोई श्रद्धावान् मिथ्यात्व पामे तेना पापभाजन साधु थाय. वळी उपहासनुं कारण थाय. जेमके 'जुओ आ निष्परिग्रही साधु रात्रिए आहार राखी मूके छे, पाणीना घडा भरी राखे छे, घृतादिकना संग्रह करे छे अने पाछा कहे के अमे तो अपरिग्रही-संचय विनाना छीए.' वळी संयमविराधना तथा आत्मविराधना पण थाय. रात्रे आहार राखी मूकवाथी कीडी आदि प्राणियोनी उत्पत्ति थाय, रोटली आदिकमां लालिया जीवो उपजे, उंदरो तेना भक्षण माटे आवे, तेने वळी बिलाडी प्रमुख मारी जाय, वळी जळ राखी मूक्युं होय तो तेमां कीडिया डूबी मरी जाय-आ प्रमाणे पापना भागीदार थवाथी संयमविराधना थाय. वळी रात्रिए आहारमां सर्प तथा उंदरा लाळ नाखी जाय-आवो झेरी आहार वापरवाथी आत्मघात पण थाय. आ प्रमाणे सन्निधि दोषनो विचार करी तेनो त्याग ज करवो.

हवे उद्देशकनुं स्वरूप दर्शावतां कहे छे के-तेना बे भेद छे (१) ओघ-उद्देशिक अने (२) विभाग-उद्देशिक. पोताने अर्थे रसोइ पकावतो थको कोइ आवशे तेने आपवाने माटे कंइक आहारनी कल्पना करी राखे ते ओघ-उद्देशिक. बीजा विभाग-उद्देशिकना त्रण मूळभेद अने बार उत्तरभेद छे (१) उद्दिष्ट, (२) कृत अने (३) कर्म ए त्रण मूळभेद छे. ते दरेकना उद्देश, समुद्देश, आदेश अने समादेशरूप चार-चार भेद छे. पहेले १ उद्दिष्टोद्देश, २ उद्दिष्टसमुद्देश, ३ उद्दिष्टादेश, ४ उद्दिष्टसमादेश, ५ कृतोद्देश, ६ कृतसमुद्देश, ७ कृतादेश, ८ कृतसमादेश, ९ कर्मोद्देश १० कर्मसमुद्देश, ११ कर्मादेश अने १२ कर्मसमादेश एम बार भेद थाय. सर्वने उद्देशीने जे अशनादिक कराय ते उद्देश कहेवाय, ते गृहस्थ, भिक्षु अने पाखंडी विगेरेने निमित्ते करायेल. चरक, परिव्राजकादिने निमित्ते करेल अशनादिक समुद्देश कहेवाय. निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गैरिक, आजीविकोने निमित्ते करेल अशनादिक आदेश कहेवाय अने साधुओने निमित्ते करेल समादेश कहेवाय. हवे चार पेटाभेद वर्णवता कहे छे के-विवाहादिक सारा प्रसंगे स्नेही संबंधीओ सर्व जमी गया पछी अशनादिक वधे त्यारे गृहस्थ मनमां चिंतवे के-'आ सर्व राखीने शुं काम छे? भिक्षु विगेरेने आपशुं' आ प्रमाणे विचारीने जो भिक्षुओने माटे राखे तो (१) उद्दिष्टोद्देशिक, पाखंडीओने माटे राखे तो (२) उद्दिष्टसमुद्देशिक, साधुओने देवा माटे राखे तो (३) उद्दिष्टादेशिक अने निर्ग्रन्थोने माटे राखे तो (४) उद्दिष्टसमादे-

शिक कहेवाय आवी ज रीते अशनादिक बन्या पछी मोदक विगेरेमां नवो गोळ भेळववो पडे तो भेळवे, घी भेळवे, सेकवु विगेरे क्रिया करे, भातमा दहीं विगेरे नाखे अने पछी पूर्वनी माफक संकल्प करे त्यारे आ भिक्षुओने आपवु एम कहे ते (५) कृतोद्देशिक, पाखंडीओने आपवानु कहे ते (६) कृतसमुद्देशिक, साधुओने माटे कहे ते (७) कृतादेशिक अने निर्ग्रन्थोने अर्थे कहे ते (८) कृतसमादेशिक कहेवाय आवी ज रीते विवाहादिक शुभ प्रसंगे अशनादिक बन्या पछी ते वधेला लाडु, भात, मग विगेरे पदार्थोने अग्नि पर पुनः तपाव, मोदकमा गोळ नाखे, मग वगेरेने पुनः राय-जीरा-मसालाथी वघारे इत्यादि क्रिया करीने पूर्व प्रमाणे संकल्प करे त्यारे भिक्षुओ माटेनो संकल्प ते (९) कर्मोद्देशिक, पाखंडीओने माटेनो (१०) कर्मसमुद्देशिक, साधुओने माटे (११) कर्मादेशिक अने निर्ग्रन्थोने माटे (१२) कर्मसमादेशिक कहेवाय.

अभ्याहृत दोषना बे प्रकार छे-(१) आचीर्ण अने (२) अनाचीर्ण आचीर्ण अभ्याहृतना त्रण प्रकार छे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट मोटा जमण समये सेंकडो माणस बेठा होय अगर तो मोटु घर होय अथवा परिचय त्रण घरो माथे होय तेवा प्रसंगे सो हाथनी अंदरना आंतरामांथी आहार वहोरावे ते उत्कृष्ट आचीर्ण, एक हाथ प्रमाणथी वहोरावे ते जघन्य अने ते बने वच्चेनु प्रमाण ते मध्यम आचीर्ण अभ्याहृत जाणवु आ त्रणे प्रकार कल्पी शके कारण के तेमा उपयोग रहेवानो संभव छे अनाचीर्ण अभ्याहृत तो सो हाथ उपरांत दूरना स्थळेथी आहार आवेल होय तो कल्पे नहीं, कारण के तेमा संयमविराधना अने आत्मविराधना बने थाय छे कोइ गृहस्थ अन्य ग्रामादिकथी अशनादिक आहार लावता जो जळमार्गथी आय तो अप्कायनी तेमज छकायनी विराधना थाय स्थळमार्गे आवे तो पण छकायनी विराधना थाय, चोर हरण करी जाय, शिकारी पशु फाडी खाय, मार्गना परिश्रमथी ज्वरादिक रोगोद्भव थाय, आ प्रमाणे दूषित होवाथी अनाचीर्ण अभ्याहृत आहार कदापि ग्रहण करवो नहीं

हवे पूतिकर्मनु स्वरूप जणावे छे-आधाकर्मी, उद्देशिकना छेल्ला त्रण भागा, मिश्रजात, अध्यवपूरक, पूतिबादर अने प्राभृतिक आ बधा अविशुद्ध कोटिना छे जेम क्षीरमा मूत्रनो छांटो पडी जता सब क्षीर अशुद्ध थइ जाय, शुद्ध आहारमा अविशुद्ध आहारनु एक बिंदु जो आवी जाय तो सर्व शुद्ध आहार पण अशुद्ध बनी जाय ते पूतिकर्म कहेवाय छे, तेना बे भेद छे-(१) सूक्ष्मपूतिकर्म-आधाकर्मी हींग प्रमुख अशनादिकनी गंध, आधाकर्मी अग्निनो उघाडो तथा धूमाडो शुद्ध आहारने लागे ते ते सूक्ष्मपूतिकर्म कहेवाय परन्तु ते आधीन छे-साधुने वहोरवा योग्य छे कारण के आ दोषो अशक्यपरिहार छे (२) बादरपूतिकर्म-तेमा बे प्रकार छे एक उपकरण-चूलो, कडछी, तावडो, चमचा विगरे रसोइ करवाना साधनो तेमज घटी, सांबेलु विगेरे

उपकरणो होय तेमाथी प्राप्त थयेल अशनादिक आहार शुद्ध होय तो पण दूषित छे बीजो भक्तपानपूतिकर्म-आधाकर्मी वघार, हींग, निमक, जीरु विगेरेथी व्याप्त आ बन्ने प्रकार साधुओने कल्पे नहीं

हवे कल्पना अधिकार दर्शावे छे-भोजन कर्या बाद पात्रा साफ करवा ते कल्प सामान्यपणे सात वखत धोवानो कल्प छे विशेषथी तो तेना जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण भेद दर्शाव्या छे (१) भात, मगदली, मग, वाल, गाळ, चणा, तुर विगेरेनो आहार पात्राने विशेष लेप न करे एटले ते जघन्य कल्प तेमा पात्रा त्रण वार धोवा, एक वार अंदर, बीजी वार बहार अने त्रीजी वार अंदर अने बहार (२) मग तथा अडदनी दाळ, कांजी, दही विगेरेना अल्प लेप लागे ते मध्यम कल्प, तेमा पात्रा पांच वार धोवा बे वार बहार, बे वार अंदर अने एक वार अंदर अने बहार (३) दूध, दहीं, क्षीर, घी विगेरेना विशेष लेप लागे ते उत्कृष्ट कल्प, तेमा पात्रा सात वार धोवा त्रण वार अन्दर, बे वार बहार अने बे वार अन्दर अने बहार धोवे

लेप एटले हस्तने मणिबंध(पहोंचा) सुधी जळादिकथी धोवा स्थंडिल तथा मात्रादिक प्रसंग हस्त धोवा पडे तथा श्रीनिशीथसूत्रना चोथा उद्देशामां आ संबंधी वर्णन करता जणाव्युं ■ के-' जे भिक्खू २ साणुप्पाए उच्चारपासवणभूमिं ण पडिलेहेइ न पडिलेहंत वा साइज्जइ । जे भिक्खू २ तओ उच्चारपासवणभूमिओ ण पडिलेहेइ न पडिलेहंत वा साइज्जइ । जे भिक्खू २ खुड्डागंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं परिठवइ परिठवंत वा साइज्जइ ॥ " साधु या साध्वीए दिवस ना चोथा भागना बाकी विभाग जेटलो दिवस रहे त्यारे स्थंडिल तथा मात्रानी भूमि प्रमार्जवी जोइए ते प्रमाणे न पडिलेहे अने न पडिलेहनारनी अनुमोदना करे तो ते प्रायश्चित्तने पात्र बने छे जे साधु या साध्वी त्रण उच्चारपासवण भूमि न प्रमार्जे तेमज न पडिलेहनारने सारो कहे ते पण दंडने पात्र थाय छे जे साधु या साध्वी क्षुल्लक स्थंडिलभूमिमां उच्चारपासवण वोसरावे अने वोसरावनारने सारो कहे ते पण प्रायश्चित्तने योग्य गणाय जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट-एम त्रण प्रकारनुं स्थंडिलप्रमाण छे त्रसादिक जीवथी रहित भूमि ते स्थंडिलभूमि एक हाथ लांबी-पहोळी अने चार आंगळ ऊंडी अचित्त स्थंडिल-भूमि जघन्य कहेवाय आ प्रमाणथी एक आंगळ न्यून भूमिमां स्थंडिल-मातरु परठवता दोषभाजन थाय आ प्रमाण करता विशेष भूमि ते मध्यम मान जाणवुं उत्कृष्ट स्थंडिलप्रमाण बार योजननुं होय, कारण के चक्रवर्तीनी सेना बार योजन विस्तार वाळी होय छे जे साधु या साध्वी ठल्ला या मातरु अविधिपूर्वक परठवे तो एक मास लघुदंड अने आज्ञाभंगना दोषपात्र बने तेनी विधि दर्शावता कहे छे के-गृहस्थ प्रमुखना स्थानुं निवारण करवुं अने ते माटे आवं, अथवा अने तिरछी सब

दिशामा अवलोकन कर्या पछी ठल्लो मातरु परठववुं जे लोको ते कार्य करता जोय तो तेओ हांसी करे अने आत्माने कलुषितता प्रगटे वळी स्थंडिल प्रमुख वास राखीने यतना करवाथी गुह्याग जो साफ न करे तो प्रायश्चित्त लागे, पण जो घासथी, घासना तृणादिकथी, आंगळीथी अथवा लाकडाना सळीथी साफ करे अथवा साफ करनारने सारो माने तेने एकमासी लघुदंड आवे वळी जो कोई साधु या साध्वी स्थंडिल प्रमुख परठवीने पछी जळद्वारा हस्त साफ करे नहीं ये न करना रने सारा जाणे तो दंडपात्र बने वळी स्थंडिल परठव्यानो अपवाद साधु या साध्वीए आचमन न लेवु आचमन ले के लेनारनी अनुमोदना करे तो प्रायश्चित्त लागे परंतु तो हाथना आंतरामा तप करी शकाय, तथा विशेष दूर आचमन करे तो पण दोषभागी थाय स्थंडिल-मातरु परठवी त्रण खोबा प्रमाण जळथी शुद्धि करवी विशेष जळ न वापरवु विशेष जळ वपराय तो कीडी प्रमुख जीवोनी विराधना थाय, त्रसजीवने पीडा उपजे, तृणना फूल-पत्रादिक तेमा पडे अने पृथ्वीकायादिकनी पण विराधना थाय, केटलाक आचार्यो एम पण कहे छे के-अंजलिना त्रण भाग करवा, पहेला भागथी मळद्वार साफ करे, बीजा भागथी अवयवो साफ करे अने त्रीजा भागथी सर्व शुद्धि करे जेने थोडे थोडे समयने आंतरे स्थंडिल जवु पडतु होय, 'हरस' जेवो व्याधि होय तेवा आपवादिक मार्गमा विशेष जळ वापरी शकाय सचित्तमा परन्तु समजवानु के-दुर्गंध न रहे, मळनो लेप न रहे तेटला प्रमाणमा मळनो उपयोग करवो कारणप्रसंगे मूत्रथी पण मळशुद्धि करी शकाय छे बृहत्कल्पना पांचमा उद्देशामा कह्यु छे क-प्पो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अण्णमण्णस्स मोयं आइयत्तए वा आ-यमित्तए वा णण्णत्थ गाढेसु अगाढेसु वा रोगायंकेसु ॥ साधु या साध्वीने परस्परना मूत्रनो उपयोग करवो न कल्पे परंतु विशूचिका (उलटी) थई होय सर्प करड्यो होय, ज्वरादिक रोगोद्भव थयो होय तो तेवा अनिवार्य प्रसंगोमा मूत्रनु आचमन लेवु या मळशुद्धि माटे ग्रहण करवुं कल्पे आ विषयमा कांई शंका करता कहे के-आ मूत्रनु आचमन या ग्रहण अशुचिकारक न कहेवाय? तो तेने जवाब आपता ग्रंथकार कहे छे के-वैद्यकशास्त्रमा पण मूत्र-पान उपयोगी मान्यु छे वळी गोमूत्र तो पवित्र मनाय छे अने औषधमा पण वपराय छे साधु तो कारण विना रात्रिए पाणी राखे ज नहीं, परन्तु कोई नूतन दीक्षित होय, विवाहित न होय तेने मूत्र ग्रहण करवामा दुगंछा थाय माटे तेने अर्थ रात्रिए अचित्त जळ राखे, परंतु जे मातरानो विधिना जाण होय, साधुपणु बराबर परिणम्यु होय तेने अर्थे पछी पाणी राखवानो जरूर नथी कोई शिष्य घणा वखत स्थंडिल जाय अने मूत्रथी शुद्धि करवामा अशक्त होय तेने माटे जळ राखवु पडे कारण के आ जळ न राखवामा आवे तो तथा शिष्यने स्थंडिलनी शंका थवा छतां दुर्गंछाथी स्थंडिल जाय नहीं अने मळना अवरोध करवाथी

परिताप पामे, मृत्यु पण पामे माटे तेवा प्रसंगमां अकालनो लोप राखवो कोई कोई आचार्य कल्पग्रंथनो अर्थ चैत्र मासनी असज्झाय उतर्या पछी कर्तव्य करवानु सूचन छे कोइक पण कहे छे के-आ परंपरागम्य छे अने सदैव कर्तव्य छे वळी साधु विनयशाली होय, निश्चल-गंभीर स्वभाववाळा होय, जेथी प्रायश्चित्तादिकनो अन्य पासे प्रकाश करे नहीं हास्य-मोजानो उपहास न करे चार प्रकारनी विकथा(जुओ पृष्ठ २०)थी विरमेल होय गुरुनी आज्ञा शिरोधार्य गणे-वगरविचार्यु स्वमतिथी विरुद्ध वर्तन न करे वळी गोचरी अर्थे योग्य भूमिमां परिभ्रमण करे आठ प्रकारनी गोचरभूमि कहेल छे, ते आ प्रमाणे-
१ ऋज्वी, २ गत्वाप्रत्यागतिका, ३ गोमूत्रिका, ४ पतंगवीथिका, ५ पेटा, ६ अर्द्धपेटा, ७ अभ्यंतरशंबूका अने ८ बहिःशंबूका वळी अनेक प्रकारना अभिग्रहना धारक तेमज महाकठिन प्रायश्चित्तने रगती तपश्चर्या करनारा होय आवा आचार-परायण अने संयमी साधुवर्योने जोइने इन्द्र सरखा पण चमत्कार पामे तो अन्य जननु शु कहेवु ?

अभिग्रह चार प्रकारना छे १ द्रव्याभिग्रह, २ क्षेत्राभिग्रह, ३ कालाभिग्रह अने ४ भावाभिग्रह १ द्रव्याभिग्रह—आज मारे लेपवाळा मग विगेरे अथवा रूप(रस) विनाना वाल, चणा विगेरे मळे तो ग्रहण करवा, आजे रोटली के तेना भाडा मळे तो ज भिक्षा ग्रहण करवी, कडछी, चमचो अथवा तो भालाना अणीद्वारा कांइ वहोरावे त्यारे ज वहोरवु श्रीमहावीरस्वामीए जेम सुपडाना खूणामां रहेल अडदना बाकळा ग्रहण कर्या हता तेम विविध प्रकारना अभिग्रहो धारण करवा अने ते प्रमाणे ज जो भिक्षा मळे तो ग्रहण करवी, ते द्रव्याभिग्रह कहेवाय २ क्षेत्राभिग्रह-पूर्वे कही ते आठ गोचरभूमिमां तथा जे गाममां होय तेमां अगर परगाममां अमुक मर्यादा बांधी गोचरी ग्रहण करवी ते क्षेत्राभिग्रह कहेवाय हवे आठ गोचरभूमिनु विशेष वर्णन करतां जणाय छे के-
१ ऋज्वी-एक दिशाना अभिग्रह करीने उपाश्रयमांथी नीकळ्या बाद सीधे मार्गे समश्रेणीमां आवता गृहोने विषे भिक्षार्थे जता ते पंक्तिना छेल्ला गृह सुधी जाय तटला गृहोमां जो उचित भिक्षा मळी जाय तो ग्रहण करे अने न मळे तो तेज गतिए पाछा आवे २ गत्वाप्रत्यागतिका-एक पंक्तिमां भिक्षार्थे फरता तेना छेल्ला गृह सुधी जाय अने तेम करता उचित गोचरी न मळे तो पाछा फरता बीजा घरोनी श्रेणीमां परिभ्रमण करे. ३ गोमूत्रिका—जमणा घरनी पंक्तिमांथी डाबी पंक्तिमां अने डाबीमांथी पाछी जमणी पंक्तिमां तेम एक बीजी पंक्तिमां गोचरी अर्थे फरवु चालती गाय अने बळदना मूत्रना आकारे आ गोचरी थती होवाथी तेने गोमूत्रिका कहेवाय छे ४ पतंगवीथिका-त्रण चार घर मूकीने वहोरे, वळी त्रण-चार घर आगळ जइने वहोरे पतंगियु उछळी उछळीने

अनिश्चित गति करे छे तेनी माफक आ गोचरी थती होवाथी तेने पतंगवीथिका कहेवाय छे ५ पेटा-पेटीना आकारे गोचरी करे ते पेटा पेटीना चार खूणानी माफक चारे दिशाना गृहोने विषे जाय परन्तु ते दिशाना मध्यमां रहेला गृहोने विषे न जाय ६ अर्द्धपेटा-चार दिशाने बदले बे दिशाने निश्चित करीने भमे पण तेनी मध्यमा आवता गृहोमा न जाय ७-८ अभ्यंतरशम्बूका ने बहि शम्बूका-शंखनी पेठ जे गोचरी करवी ते शम्बूका शंखना मध्य भागना आवर्तनी माफक गोचरी करवी एटले मध्य घरोमां भमता भमता क्षेत्रना बहारना भागमा आववु ते अभ्यंतरशम्बूका अने क्षेत्रना बहारना भागमांथी गोचरी ग्रहण करता करता मध्य भागमां आववु ते बहि शम्बूका वळी 'घरना उंबरा मध्यमा होय तो मारे गोचरी लेवी' एवा जातनो पण अभिग्रह लेवो तेनो क्षेत्राभिग्रहमा समावेश थाय छे. श्रीमहावीर परमात्माए आवो अभिग्रह धारण कर्यो हतो अने एक पग उंबरमां अने एक पग बहार राखेल राजपुत्री वसुमती उर्फे चंदनबाळाए आ अभिग्रह पूर्ण कर्यो हतो वळी पोताना गाम संबंधी पण धारवु के-मारे अमुक लत्ताना घरमां ज गोचरी माटे जवु, अगर तो बीजे गाम भिक्षार्थे जवु आ सर्व प्रकार क्षेत्राभिग्रहना जाणवा ३ कालाभिग्रहना त्रण प्रकार छे आदि, मध्य अने अंत गोचरीना समय पहेला पर्यटन करवु ते आदि, भिक्षा मळे तेवा समये गोचरी करवा जवु ते मध्य अने गोचरीनो समय व्यतीत थई गया पछी वहोरवा जवु ते अवसान-अंत आ सबंधी गुण-दोष दर्शावता कहे छे के-आदि अने अंत ए बे प्रकारनी गोचरी अर्थे न जवु, कारण के वखत विना आवेल साधु माटे वहोरावनार गृहस्थादिकनी अप्रीति थाय वळी साधुने पुरः-कर्म अने पश्चात्कर्म इत्यादि दोषो पण लागे माटे मध्य कालाभिग्रह ज उचित छे ४ भावाभिग्रह-जे वासणमा राख्यु होय ते भोजनमांथी बीजाने माटे पूर्वे काढीने राखेल होय तेवा ज आहार लेवो, अमुक गणत्रीवाळो ज आहार लेवो, जेवी सामे नजर पडे ते ज आहार लेवो-आवी जातनो विविध प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करवो ते भावाभिग्रह कहेवाय अथवा तो गायन गाता गाता वहोरावे तो लेवु,बेठो बेठो आपे तो लेवु,आभूषण पहेरेल व्यक्ति आपे तो ज आहार ग्रहण करवो इत्यादिक अभिग्रह धारवा ते पण भावाभिग्रह ज छे तीर्थंकर भगवंतोए पण आवा अभिग्रहो धारण करेल छे, माटे तपी-संयमी साधुए अवश्य अभिग्रहो धारण करवा (आ चार प्रकारना अभिग्रहनु स्वरूप प्रकारांतरे अगाउ पृष्ठ १२८ ऊपर आवी गयु छे)

हवे दश प्रकारना प्रायश्चित्तनु स्वरूप दर्शावे छे-१ आलोचना-आहारादिक ग्रहण करता, स्थंडिल मात्रु करता, देहरे उपाश्रये जता, पीठफलकादिक पाछा आपता, उपाश्रयथी सो हाथ दूर जता जे दोष लागे ते गुरुने जणाववो, तेओ जे प्रमाणे प्रायश्चित्त जणावे ते आलोचना. २ प्रतिक्रमण-मिच्छादुक्कडं आपवाद्वारा दोषथी छूटे ते अकस्मात् तथा उपयोगशून्यपणे पांच समिति तथा त्रण गुप्तिने विषे प्रमाद थाय, गुरुआज्ञा-भंग थाय, इच्छाकारादिक दश प्रकारनी सामा

चारोमां दूषण लागे, लघुमृषावाद, अदत्तादान तथा परिग्रहनी मूर्छा थाय, अविधिपूर्वक श्वास ले, छींक आय, बगासु आय, हास्यादिक विकथा करे इत्यादिक जे दोषो लागे ते माटे प्रतिक्रमण करवु लघुमृषावादना पदर प्रकार श्रीनिशीथसूत्रनी पीठिकामा दर्शाव्या छे अनिकाचितपणे (अचोक्कसपणे) बोले ते लघुमृषावाद अने निकाचितपणे बोले ते बादरमृषावाद कहेवाय आज्ञा विना तृण, राख, लेप प्रमुख ग्रहण करे ते लघुअदत्तादान अने कपडा, सारा पात्रा, वसति, संथारो इत्यादिकने विषे ममत्वभाव राखे ते लघुपरिग्रह कहेवाय छे प्रतिक्रमणद्वारा आ दोषो दूर थाय छे ३ तदुभय-सहसात्कार एटले अचानक, अनाभोग-उपयोग रहितपणे, सभ्रम-भूलथी तेमज सिंहादिकना भयथी व्रतमा जे अतिचार लागे तेमज खोटु चितववाथी अने ते प्रमाणे खोटु वर्तवाथी जे प्रायश्चित्त लागे ते आलोचना अने प्रतिक्रमण उभयद्वारा नाश पामे माटे तदुभय ४ विवेक-अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार, वस्त्र, पात्र, उपधि, शय्या ग्रहण कर्या पछी 'आ तो अशुद्ध छे, काळा प्रात छे एटले सूर्य ऊग्या पहेला अथवा तो सूर्यास्त पछी ग्रहण करेल छे' एम विचारी ते अशन प्रमुखने यथायोग्य स्थळे वोसरावे ते विनयप्रायश्चित्त ५. काउसग्ग-उपाश्रयथी सो हाथ करता विशेष दूर जाय के आवे, नावमा बेसे, नदी पार करे, सावद्य स्वप्न देखी जागी उठे—आ सर्वथी लागेल अतिचार कायोत्सर्गथी दूर थाय ६ तप-छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो अभ्यतर एम बार प्रकारना तपथी अतिचार दूर थाय ते तप प्रायश्चित्त (आनुं वर्णन अगाऊ पृष्ठ १२६ ऊपर आवी गयेल छे) ७ छेद-'आटलो तप करवो ए शु मात्र छे ? ' एम गर्वोन्मत्त बनेलने अथवा तप करवामा असमर्थ साधुने पाच दिवसनी दीक्षानो छेद करवो ते ८ मूल-पचेंद्रियनो वध करे, मैथुन सेववानी अभिलाषा करे अगर तो सेवे, अभिमानथी पाचे महाव्रतोनो भग करे तेने फरीथी दीक्षा आपवी ९ अनवस्थाप्य-दुष्ट वर्तन करे, द्रव्यादिकनी इच्छाथी अशाग निमित्त प्रकाशे, ज्योतिष जोई आपे, कोईने विघ्न करवा अथवा विघ्न होय त दूर करवा, धनादिकनी इच्छाथी मत्रप्रयोग करे तेने आ प्रायश्चित्त अपाय छ आ प्रायश्चित्तना भागी उपाध्याय ज होय छे ज्या सुधी आपेल आलोचना पूण न करे त्या सुधी तेना चारित्रपर्याय न गणाय १० पाराचित-तीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याया दिकनी आशातना करनार, राजानो वध करनार, चोरन्दि निद्रावाळाने, आ दशमु पाराचित नामनु प्रायश्चित्त होय छे आ प्रायश्चित्तना भागी आचार्य ज होय छे अनवस्थाप्य अने पाराचित ए बे प्रायश्चित्तो तो वज्रऋषभनाराच सघयणवाळाने अने चौदपूर्वीने होय छे हालमा तो तेवा अभाव होवाथी विच्छेद समजवा लिंगक्षेत्रवाळअनवस्थाप्य अने लिंगक्षेत्रवाळपाराचित तो ज्या सुधी श्रीवीरशासन प्रवर्तशे त्या सुधी समजवा आ दश प्रायश्चित्तनु स्वरूप अगाऊ प्रकारातरे अहे पृ १३० ऊपर जणाव्यो गया छीए

आ प्रमाणे जे गच्छमा साधु स्वच्छंदे न घालता आचार्यना आदेशने आधीन रही दूषण लाग तो प्रायश्चित्त अंगीकार करे तेवा गच्छने ज सुगच्छ कहेवो प्रायश्चित्त संबंधी विशेष वर्णन श्रीजीतकल्पमांथी जाणवु हवे छकायनी रक्षा संबंधी शिक्षा आपता जणावे छे के—

पुढविदगअगणिमारुअ–वाउवणस्सइतसाण विविहाणं ।
मरणंते वि न पीडा, कीरइ मणसा तयं गच्छम् ॥ ७५ ॥

[पृथिवीदकाग्निमारुत–वायुवनस्पतित्रसानां विविधानाम् ।
मरणान्तेऽपि न पीडा, क्रियते मनसा सको गच्छः ॥ ७५ ॥]

गाथार्थ–पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय अने बेइंद्रियादिक त्रसकायने ज्यां मरणांते पण मनद्वारा पीडा करवामां न आवे–सर्व जीवोने स्वात्मा समान गणवामां आवे तेवा साधुसमुदायवाळो गच्छ ज सुगच्छ छे.

विवेचन–अर्थ सुगम छे पटले तेना विशेष विवेचननी आवश्यकता नथी चारित्रनी साचो खपी आत्मा तो त्रिकरण त्रिकरणथी कोई पण जीवनी हिंसा चितवे ज नहीं तो करे तो क्याथी ? यज्ञादिक हिंसक क्रियाकांड करनारा अन्य दर्शनीयो माटे आ गाथा बोधरूप छे पाषाण, रत्न, पारो, सर्व प्रकारनी माटी ते पृथ्वीकाय, पाणीना जीवो ते अप्काय, अग्नि, तणखा, विद्युत, अंगारा व तेउकाय, झझावात, मदवायु, उद्भ्रामक वायु विगेरे वायुकाय कहेवाय छे वनस्पतिकायना बे भेद छे साधारण अने प्रत्येक, एक शरीरमा अनंता जीवो होय ते साधारण वनस्पतिकाय, कोमळ फळ, अंकुर, गाजर, बटाटा, मूळानी भाजी विगेरे कंदमूळ साधारण वनस्पति कहेवाय छे एक शरीरमा एक ज जीव होय ते प्रत्येक वनस्पतिकाय छे, काष्ठ, फळ, फूल, छाल, पांदडां विगेरे शंख, कोडा, जळो, अळसीया विगेरे बेइंद्रिय (स्पर्श अने रसेंद्रिय), कीडी, माकड, धनेडा, इयळ विगेरे तेइंद्रिय (स्पर्श रस अने घ्राणेंद्रिय), वींछी, भमरो, माखी, तीड विगेरे चौरेंद्रिय (स्पर्श, रस घ्राण अने नेत्र) तेमज मनुष्य, नारक, देव अने तिर्यंचो (गाय, बळद, भेंस, पक्षी, सर्प, नोळीयो, मत्स्य) पचेंद्रिय (स्पर्श, रस, घ्राण, नेत्र अने श्रोत्रेंद्रिय) त्रसकाय कहेवाय छे त्रस पटले जे पोतानु रक्षण करवा हलन–चलन करी शके ते पृथ्वीकायादिक एकेंद्रियो स्थावर कहेवाय छे, ते स्थिर होय छे, ते पोतानु रक्षण करवा हलन–चलन (गति) करी शकता नथी आ प्रकारना सर्व जीवो विषे अणुमात्र वैरभाव न दाखवे तेवा साधुवाळो गच्छ ज सुगच्छ छे विशेष वर्णन करता कहे छे के—

खज्जूरिपत्तमुंजेण, जो पमज्जे उवस्सयम्।
नो दया तस्स जीवेसु, सम्मं जाणाहि गोअमा ! ॥७६॥

[खर्जूरीपत्रेन मुंजेन, य उपाश्रय प्रमार्जयति ।
न दया तस्य जीवेषु, सम्यग् जानीहि गौतम ! ॥ ७६ ॥]

गाथार्थ-खजूरीनी के मुंजनी सावरणीवती जे साधु उपाश्रयने साफ करे प्रमार्जे तेने जीवो प्रत्ये बिलकुल दया-अनुकंपा नथी, एम हे गौतम ! तु बराबर समजी ले.

विवेचन-मुनिओ माटे खजूरीनो के मुंजनी सावरणी वापरवानो सदतर निषेध छे, कारण के तेनी तीक्ष्ण अणीथी त्रसजीवोनो घात थाय छे त्रसजीवोना संरक्षण माटे पुंजणीथी अथवा तो दंडासन(मोटी डांडीवाळा लांबा चरवळा)थी काजो लेवो जोइए अने ते पण पूर्णतया तपासीने ज्यां कोईनो विशेष पदरव-हालचाल न होय तेवा एकांत स्थानमां जयणाथी परठववो जैनोनी आवीआवी प्रत्येक क्रिया जीवो प्रत्येनी अनुकंपानो अने अहिंसा धर्मनो आविष्कार करे छे वळी विशेष जणावे छे के—

जत्थ य वाहिरपाणिअ-विंदूमित्तंपि गिम्हमाईसु।
तण्हासोसिअपाणा, मरणे वि मुणी न गिण्हन्ति॥७७॥

[यत्र च बाह्यपानीय-बिन्दुमात्रमपि ग्रीष्मादिषु ।
तृष्णाशोषितप्राणा, मरणेऽपि मुनयो न गृह्णन्ति ॥७७॥]

गाथार्थ-जे गच्छमां ग्रीष्मादिक ऋतुओने विषे तृषाथी पीडित थयेला मुनिओ प्राणान्ते पण तळाव, कूवा, वाव के नदी प्रमुखनुं एक बिंदुमात्र सचित्त जळ क्षुल्लक साधुनी माफक ग्रहण करता नथी ते ज गच्छ साचो जाणवो.

विवेचन-बावीश परीषहो पैकी पिपासा-तृषा परीषह बीजो छे शास्त्रकार कहे छे के-ग्रीष्मऋतु होय, मध्याह्न थयो होय, सूर्य अत्यंत तपतो होय, कंठे शोष पडतो होय छतां पण साधु सचित्त जळना बिंदुमात्रनी पण आकांक्षा न राखे-मरणांत कष्ट आवे तो पण स्वनियमथी चलायमान न थाय तेवा सुविहित साधुवाळो गच्छ ज सदाचारी गच्छ जाणवो क्षुल्लक साधुए आवो परीषह सहन कर्यो हतो, तेनुं वृत्तांत नीचे प्रमाणे जाणवुं

क्षुल्लक साधुनी कथा—

मालवदेशनी उज्जैनी नगरीमां धनमित्र नामनो व्यवहारी हतो तेने धन धर्म नामनो पुत्र हतो व्यवहारीनी पत्नी मरण पामता तेने वैराग्य उपज्यो तेवामा एक मुनिवर त्यां आव्या, एटले तेमनी पासे पुत्र सहित प्रव्रज्या ग्रहण करी एकदा आ च मुनिवरोनी साथे विहार करता तेओ एलगच्छ नगरना मार्गे चाल्या मध्याह्न समय हतो, सूर्य पोतानी संपूर्ण कळाथी प्रकाशी रह्यो हतो, रणनो प्रदेश हतो, तृषा सर्व मुनिवरोने पीडा उपजावी रही हती, अत्यंत तृषाथी क्षुल्लक धनधर्मनुं मुख करमावा लाग्युं, गति मंद पडी गइ अने वारंवार स्खलना थवाथी ते क्षुल्लक मुनि पाछळ रही जवा लाग्या. धनमित्रे जाण्यु के-पुत्रने तृषा पूरेपूरी सतावी रही छे, पण थाय शुं ? तेओ तेनी साथे रहेवा लाग्या बीजा मुनिवरो धीमे धीमे आगळ वधता सहेज आगळ निकळी गया धनमित्र ने धनधर्म मंद गतिए पाछळ पाछळ चाल्या जाय छे तेवामा एक नदी आवी नदी आवतां ज धनमित्रने पुत्र प्रत्ये स्नेहभाव प्रगट्यो पुत्र परत्वेना वात्सल्यभावथी प्रेराइ तेणे तेने कह्यु-" हे पुत्र ! अत्यार सुधी तें परीषह सारी रीते सहन कर्यो छे, पण भाग्ययोगे जळ आवी मळ्यु छे तो तुं नदीमांथी यथेच्छ जळ पी ले ज्यारे राजमार्ग चोक्खो थई गयो होय त्यारे लोको केडी(पगदंडी)नो आश्रय ले छे तु सचित्त जळ पी ले प्राण टकशे तो चारित्रनु पालन थशे अने आ व्रतभंगनी आलोयण पण कराशे " आ प्रमाणे धनमित्रे पुत्रने कह्यु छतां ज्यारे तेणे नदीनु जळ पीधु नहीं त्यारे तेणे विचार्युं के-मारो एक्षाने कारणे पुत्र जळ-पान करता अचकाय छे तेथी हु दूर जतो रहु आ प्रमाणे निर्णय करी, नदी उतरी थोडे दूर जई बेठो पण क्षुल्लक साधुए जळपान न कर्युं अने त्यां ज शुभ ध्यानमां मृत्यु पाम्यो

केटलाक आ प्रसंगमां एम पण कहे छे के-धनमित्रना गया पछी धनधर्म विचार्युं के-पिताए कह्यु ते सत्य छे प्राण हशे तो चारित्र पळाशे, प्रायश्चित्त पण लेवाशे अने अन्य धार्मिक अनुष्ठानो पण थशे, माटे पाणी तो पीउं आम विचारी जळनो खोबो भर्यो के तरत ज अन्य विचार उद्भव्यो के-माराथी अप्कायना जीवोनो नाश केम कराय ? एक जीवना रक्षण माटे असंख्य जीवोनो विनाश करवो ए कोई पण प्रकारे उचित नथी श्रीतीर्थंकर भगवंतोए जेनो निषेध कर्यो होय तेनु आचरण माराथी थाय ज केम ? न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः । धीरपुरुषोए कदापि पोताने स्वप्रतिज्ञाथी अंशमात्र पण चलायमान न ज थवुं कह्यु छे के-"एकम्मि उदगबिंदुम्मि, जे जीवा जिणवरेहिं पण्णत्ता । ते पारेवयमित्ता, जंबुदीवे न माएज्जा ॥ १ ॥" पाणीना एक बिंदुमा जेटला जीवो छे तेटला जीवो पारेवा जेवडु रूप धारण करे तो समग्र जंबूद्वीपमा न समाय एम तीर्थंकर भगवंतो जणावे छे वळी कह्यु छे के-"जत्थ जलं तत्थ वणं, जत्थ वणं तत्थ निच्छओ तेऊ।

तेऊ वाउसहगओ, तमाय पचसया चेव॥ २ ॥ ता हंतुण परपाणे, अप्पाण जो करेइ सप्पाण । अप्पाण दिवसाण, कएण नासेइ अप्पाण ॥३॥" ज्या जल होय त्या वनस्पति होय, वनस्पतिकाय होय त्या जरूर अग्निकाय होय ज अग्निनी साथे हमेशा वायु होय ज अने त्रसकाय तो प्रत्यक्ष जणाय छे माटे सचित्त जलना पानथी विराधनाना पार ज न आवे जे छकायना जीवोने हणीने पोताना आत्माने पुष्ट करे छ तेनो आत्मा पण थोडा दिवसमा ज विनाश पामे छे अहो ! शु हु असख्य जीवोने हणीने मारा आत्माने ससारमा भमाडु ? आत्मान माटे हिंसा करवी ते अतीव दु.खदायी छ अहिंसा ज परमेश्वर भगवती-पूज्य अने सुखदाता छ ते भगवती अहिंसाने अपरिमित ज्ञान-दर्शन धारण करनार, शीलवत, शुद्ध सयम पालक १ श्रीतीर्थंकर भगवतीय रुडे प्रकारे जोई छे, २ अवधिज्ञानीए भला प्रकारे जाणी छ, ३ ऋजुमतीमन पर्यवज्ञानीए जोई छे, ४ विपुलमतिमन पर्यवज्ञानीए रुडा प्रकारे जाणी छे, ५ चौदपूर्वधरे पठित करी छे, ६ वैक्रियलब्धिधारीए प्ररूपी ■ तेम ज ७ मतिज्ञानी, ८ श्रुतज्ञानी, ९ मन पर्यवज्ञानी, १० केवलज्ञानी, ११ आमर्षोषधिलब्धिधारी, १२ खेलौषधिलब्धिधारी, १३ जल्लौषधिलब्धिधारी, १४ विप्रुडौषधिलब्धिधारी, १५ सर्वौषधिलब्धिधारी, १६ बीजबुद्धिलब्धिधारी, १७ कोष्ठबुद्धिलब्धिधारी, १८ पदानुसारीलब्धिधारी, १९ सभिन्नश्रोतलब्धिधारी, २० श्रुतधर, २१ मनबली, २२ वचनबली, २३ कायबली, २४ ज्ञानबली, २५ दर्शनबली, २६ चारित्रबली, २७ क्षीराश्रवलब्धिधारी, २८ मध्वाश्रवलब्धिधारी, २९ सर्पिराश्रवलब्धिधारी, ३० अक्षीणमहानसलब्धिधारी, ३१ चारणलब्धिधारी, ३२ *विद्याधर, ३३ चतुर्थ भक्त (एक उपवास) करनार, ३४ छ मासी तपश्चर्या करनार, ३५ उत्क्षिप्तचर, ३६ निक्षिप्तचर, ३७ अतचर, ३८ पतचर, ३९ रूक्षचर, ४० समुदानचर, ४१ अन्लान, ४२ मौनचर, ४३ ससक्तकल्पी, ४४ तज्जातससक्तकल्पी, ४५ उपनिधिया, ४६ शुद्धैषणक, ४७ सख्यादत्ती, ४८ दृष्टलाभी, ४९ अदृष्टलाभी, ५० पुष्टलाभी, ५१ आयबिल करनार, ५२ पुरिमड्ढ करनार, ५३ एकासन करनार, ५४ निवि करनार, ५५ भिन्नपिण्डधारी, ५६ परिमित पिण्डधारी, ५७ अताहारी, ५८ पताहारी, ५९ अरसाहारी, ६० विरसाहारी, ६१ रूक्षाहारी, ६२ अतजीवी, ६३ पन्तजीवी, ६४ रूक्षजीवी, ६५ तुच्छजीवी, ६६ उपसतजीवी ६७ पसतजीवी, ६८ विविक्तजीवी, ६९ अक्षीणमधुसर्पी, ७० असयमासमासी, ७१ पठाणा, ७२ प्रतिमा स्थापनारा, ७३ एक स्थानक रहेनारा, ७४ वीरासन रहेनारा, ७५ निषधाए रहेनारा, ७६ लाकडानी माफक रहेनारा, ७७ लगडानी माफक सूनारा, ७८ एक पडखे सूनारा, ७९ आतप लेनारा, ८० अप्पा, ८१ खखार (श्लेष्म) नहीं करनारा, ८२ खाज नहीं खणनारा, ८३ मस्तक, दाढी, मूछ, कापडी विगेरेना वाळ न वधावनार तथा न धोनार इत्यादि अनेक

* आ लब्धिओनु वर्णन पृष्ठ २३८ उपर थवाई गयु छे

महापुरुषोए "अहिंसा" भगवतीने रूडी कही छे, रूडी जाणी छे अने हिंसाने मिथ्या ज वर्णवी छे तो मारा अल्प जीवितने माटे आवी घोर हिंसा हुं केम करु ? आ अल्प जीवितव्यने अर्थे हिंसा करी भवोभवनु परिभ्रमण कोण वधारे ? आ प्रमाणे विचारी, समभावी थई, विशिष्ट वैराग्यवंत बनीने हाथमा ग्रहण करेल जळ पाछु नदीमा मूकी दीधु पछी नदी उतरी, साम कांठे जई, तृषाथी पीडित बनीने अणशण स्वीकार्युं अने नवकार मन्त्रमा पदमात्र स्मरणपूर्वक काळ करी स्वर्गवासी थया देवशय्यामा उपजता ज तेणे अवधिज्ञानद्वारा जोयु तो पोताना पूर्वभव दीठा तरत ज क्षुल्लकना पडेला देहपिंजरमा दाखल थई जे साधुओ आगळ जई रह्या हता तेमा साथे थई गयो. पछी ते साधुओनु तृषा तथा क्षुधा संबंधी कष्ट विचारी तेना निवारण माटे ते प्रदेशमा थोडे दूर पोतानी शक्तिथी एक गोकुळ विकुर्व्युं साधुओ ते गोकुळ जोई त्या भिक्षार्थे गया अने छाश विगेरे शुद्ध आहार वहोर्यो ते स्थळमा एक साधुनो संथारानो वींटो देव पोतानी शक्तिथी भूलावी दीधो थोडे दूर गया पछी ज्यारे सर्व साधुओ आसन पाथरी बेसवा लाग्या त्यारे ते साधुने पोताना संथारो याद आव्यो तरत ज तेओ गोकुळवाळा स्थळे आव्या अने संथारानो पडेला वींटो लई लीधो परन्तु जुए छे तो गोकुळ ज न मळे साधु आश्चर्यमा गरकाव थई गया थोडा समय पहेला जे गोकुळमाथी छाश विगरे आहार ग्रहण कर्यो हतो ते गोकुळ क्या गयु ? ते विचारमा ने विचारमा तेओ पोताना साधु-संघ पासे पहोंच्या अने वृत्तांत कही संभळाव्यो आ कथन सांभळी सर्व साधुओ चमत्कार पाम्या एवामा ते देव प्रत्यक्ष थया अने धनमित्र सिवायना सर्व साधुगणने वंदन कर्युं धन मित्रने वंदन केम न कर्युं ? एम पूछता देवे पोतानो पूर्वभव कही संभळावी जणाव्यु के-तमणे मने सचित्त जळ पीवानु सूचव्यु हतु ए मारा पिता छे, पण मने खोटा उपदेश आपनार जाणी तेमने में वंदन न कर्युं में पाणी न पीधु तो देव थयो पण व्रतभंग करी दूषण लगाड्यु होत तो मारे संसारमा केटलु य परिभ्रमण करवु पडत खरेखर भगवती अहिंसानो प्रभाव चमत्कारी छे तेना अल्प पालनथी हु देवऋद्धि प्राप्त करी शक्यो आ प्रमाणे कही देव अंतर्धान थई गयो धनमित्रे पण पोताना कथननी आलोचना लीधी हे गौतम ! आवा गच्छ होय ते ज सुविहित गच्छ जाणवो

इच्छिज्जइ जत्थ सया, बीयपएणा वि फासुयं उदयम् ।
आगमविहिणा निउणं, गोअम ! गच्छं तयं भणियम् ॥७८॥

[इष्यते यत्र सदा, द्वितीयपदेनापि प्रासुकमुदकम् ।
आगमविधिना निपुण, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥७८॥]

गाथार्थ–जे गच्छमा साधुओ अपवाद प्रसंगे पण शुद्ध (निर्जीव) जळ

॥ श्रीबृहत्कल्पना प्रथम उद्देशाना भाष्यमां कह्युं छे के-“तुवरे फले अ पत्ते, रुक्खसिलातप्पमद्दणाईसु । पासंदणे पवाए, आयवतत्ते वहेयवहे ॥ १ ॥” अटवीमां विचरण करता साधुने शुद्ध जळनो योग न थयो होय, छाशी प्रमुख प्रासुक जळ उपलब्ध थई शके तेम न होय त्यारे जे जंगलमां हरडाना फळ के पांदडां, खाखराना पांदडां पड्यां होय ते जळने परिणत करे प्रासुक मानवुं वळी वृक्षना कोटरमां पडेलां फळ के पांदडावडे अचित्त थयेल जळ ग्रहण करवुं अने तेवुं पण जळ न मळे तो शिला(पत्थर)ना पथरा खाडामां सूर्यना तडकाथी तपी गयेल जळ पण ग्रहण करवुं श्रीनिशीथसूत्रना भाष्यनी पीठिकामां पण आ वात जणावी छे. परन्तु महान् कारण उपस्थित थाय त्यारे ज आ पद्धतिनो उपयोग करवो आ हकीकत गीतार्थ साधुने माटे जणावी छे, अगीतार्थ के कोई अन्य प्रकारनो साधु, आवी छूट आपेल छे एम जाणी ते प्रमाणे वर्तन करे तो संसार-परिभ्रमण वधारशे खरी वात ए छे के-प्राण जाय तो पण सचित्त जळ ग्रहण न करवुं अने ते संबंधी हकीकत आपणे उपरनी गाथामां जोई गया छीए. अहीं तो प्रसंगथी आपवादिक मार्ग दर्शाव्यो छे हवे अग्निकाय संबंधी वर्णन करता कहे छे के—

जत्थ य सूलविसूइय, अन्नयरे वा विचित्तमायंके ।
उप्पण्णे जलणुज्जालणाइ, कीरइ न मुणि ! तयं गच्छम् ॥७९॥
बीयपएण सारूविगाइ–सड्ढाइमाइएहिं च ।
कारिंती जयणाए, गोयम ! गच्छं तय भणियम् ॥ ८० ॥

[यत्र च शूले विशूचिकायां, अन्यतरस्मिन् वा विचित्रातङ्के ।
उत्पन्ने ज्वलनोज्वालनादि, क्रियते न मुने ! सको गच्छः ॥ ७९ ॥
द्वितीयपदेन सारूपिकादि–श्राद्धादिआदिभिश्च ।
कारयन्ति यतनया, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥ ८० ॥]

गाथार्थ–शूळ, विशूचिका के अन्य अनेक प्रकारना प्राणघातक व्याधिओ उत्पन्न थये छते जे गच्छमां मुनियो अग्निनी आरंभादिक क्रिया करता ज नथी अने अपवादरूप आवश्यक प्रसंगे यतनापूर्वक अग्निनो आरंभ साधुवेषधारी सारूपिक पासे, तेना अभावमां सिद्धपुत्र पासे, तेना अभावमां चारित्रभ्रष्ट पश्चात्कृत पासे, तेना अभावे व्रतधारी श्रावक पासे, तेना अभावे भद्रिक परिणामी अन्य दर्शनीय गृहस्थ पासे करावे तेने हे गौतम ! वास्तविक गच्छ जाणवो.

तलद्वारा प्रासुक करेल, ५ तुषोदक-जुदी जुदी जातनी डांगरनु धोवणजळ, ६ जवोदक, ७ आचाम्लादक-ओसामणनु जळ, ८ सौवीर-काझीनु जळ काझी मरुधरमा प्रसिद्ध छे सोनी सुवर्ण, लोढु विगेरे धातु तपावीने जे जळमा बोळे ते जळने पण काझी कहेवाय छे ९ शुद्ध विकट-त्रण वार उकाळेल पाणी, १० अंबपानक-आंबाना धोवणनु जळ, ११ कविट्ठपानक, १२ बीजोरानु धोवण जळ, १३ द्राक्षना धोवणनुं जळ, १४ दाडमनु धोवण जळ, १५ खजूर विगेरे नु धोवण जळ, १६ नालियेरनु धोवण जळ, १७ केरडानुं जळ, १८ नाना तथा मोटा बोरनु जळ, १९ आमळानु जळ तथा २० आंबलीना धोवणनुं जळ-आ प्रमाणे कुल बीश प्रकारना जळ दर्शाव्या छे आ उपरांत बीजा प्रकारो पण छे आवु पवणीय जळ जोया पछी श्रावक या श्राविकाने साधु कहे-'मने आ जळ वहोरावो' ज्यारे ते गृहस्थ अथवा गृहस्थिनी वहोरावे त्यारे ग्रहण करवु अथवा तेओ एम कहे के-' हे साधो! आ जळ तमे तमारा पात्रा वडे अथवा लघु पात्रीवडे तेम ज पाणीनु वासण उपाडीने तमारी इच्छा प्रमाणे ग्रहण करो ' आ प्रमाण गृहस्थनी आज्ञाथी पण जळ ग्रहण करी शकाय आ वीश प्रकारो पैकी द्राक्ष, बोर तथा आमळाना धोवणनु जळ शीघ्र अचित्त थइ जाय छे ज्यारे आवा विगरेनु जळ बे-त्रण दिवसे प्रासुक थाय छ वळी जे पाणीमा छाल, बीज विगेरे मिश्रित होय ते पाणी श्रावक साधुना निमित्ते चाळणी तथा वस्त्रप्रमुख उपकरणोथी गाळे, वारवार गाळे, बीजादिकने दूर करे तेवु पाणी साधु समीपे लावीने वहोरावे तो ते पाणी कल्पे नहीं, कारण के ते उद्गमादि दोष युक्त छ श्रीआचारांग सूत्रना चूर्णिकार आ संबधमा लखे छे के-गोल नामना देशमा आम्रफळना फाडिया करीने तेने सूकवे छे ते फडीआनुं धोवण ते दशमु अंबपानक कहेवाय छे आ विधि साधारण विधि जाणवो कारण के सदा काळ आ विधि प्रवृत्तिमा आवे छे, परन्तु श्री कल्पसूत्रमां वर्षाऋतुने आश्रयीने विशेष विधि कहेल छे पर्युषण करीने रहेल तथा नित्य भोजन करनारा साधुने सर्व प्रकारना (उष्ण तथा धोवण जळना एकवीश प्रकार तेम ज अन्य) जळ कल्पी शके उपवास करनारने १ उत्स्वेदिम, २ संस्वेदिम, ३ चावलोदक, छट्ठ करनारने १ तिलोदक, २ तुषोदक अने ३ जवोदक, अट्ठम करनारने १ आचाम्लोदक, २ सौवीर अने ३ शुद्ध विकट, अट्ठम उपरांत पहेले चार उपवासथी प्रारम्भी छ मास पर्यंत तप करनारने फक्त उकाळेलु अने ते पण गळेलु जळ ज कल्पे अणशण करनारने गळेलुं ने एक वखत उकाळेलु पाणी कल्पे त्रण उपवास उपरांत तप करनारनुं शरीर देवाधिष्ठित होय छे तेणे गळेलु जळ थोडु थोडु पीवु विशेष पीवाथी अजीर्णादिक व्याधिओ थाय वळी पाणीमां हरडे प्रमुख फळ नाखवाथी पण जळ प्रासुक बने

छे श्रीबृहत्कल्पना प्रथम उद्देशाना भाष्यमां कह्युं छे के-"तुवरे फले अ पत्ते, रुक्खसिलातप्पमहणाईसु । पासंदणे पवाए, आयवतत्ते वहेपवहे ॥ १ ॥" अटवीमां विचरण करता साधुने शुद्ध जळनो योग न थयो होय, पाणी प्रमुख प्रासुक जळ उपलब्ध थई शके तेम न होय त्यारे जे जळमां हरडाना फळ के पांदडां, खाखराना पांदडां पडया होय ते जळने परिणित थएले प्रासुक मानवुं पछी वृक्षना कोटरमां पडेलां फळ के पांदडाथी अचित्त थयेल जळ ग्रहण करवुं अने तेवुं पण जळ न मळे तो शिला(पत्थर)ना उपला भागमां सूर्यना तडकाथी तपी गयेल जळ पण ग्रहण करवुं श्रीनिशीथसूत्रना भाष्यनी पीठिकामां पण आ वात जणावी छे, परन्तु महान् कारण उपस्थित थाय त्यारे ज आ पद्धतिनो उपयोग करवो आ हकीकत गीतार्थ साधुने माटे जणावी छे, अगीतार्थ के कोई अन्य प्रकारनो साधु, आवी छूट आपेल छे पण जाणी ते प्रमाणे वर्तन करे तो संसार-परिभ्रमण वधारशे खरी वात ए छे के-प्राण जाय तो पण सचित्त जळ ग्रहण न करवुं अने ते संबंधी दृष्टांत आपणे उपरनी गाथामां जोई गया छीए. अहीं तो प्रसंगथी आपवादिक मार्ग दर्शाव्या छे हवे अग्निकाय संबंधी वर्णन करता कहे छे के—

जत्थ य सूलविसूइय, अन्नयरे वा विचित्तमायंके ।
उप्पण्णे जलणुज्जालणाइ, कीरइ न मुणि ! तयं गच्छम् ॥७९॥
बीयपएण सारूविगाइ-सड्ढाइमाइएहिं च ।
कारिंती जयणाए, गोयम ! गच्छं तयं भणियम् ॥ ८० ॥

[यत्र च शूले विशूचिकाया, अन्यतरस्मिन् वा विचित्रातङ्के ।
उत्पन्ने ज्वलनोज्वालनादि, क्रियते न मुने ! सको गच्छः ॥ ७९ ॥
द्वितीयपदेन सारूपिकादि-श्रद्धादिआदिभिश्च ।
कारयन्ति यतनया, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥ ८० ॥]

गाथार्थ-शूळ, विशूचिका के अन्य अनेक प्रकारना प्राणघातक व्याधिओ उत्पन्न थये छते जे गच्छमां मुनियो अग्निनी आरंभादिक क्रिया करता ज नथी अने अपवादरूप आवश्यक प्रसंगे यतनापूर्वक अग्निनो आरंभ साधुवेषधारी सारूपिक पासे, तेना अभावमां सिद्धपुत्र पासे, तेना अभावमां चारित्रभ्रष्ट पश्चात्कृत पासे, तेना अभावे व्रतधारी श्रावक पासे, तेना अभावे भद्रिक परिणामी अन्य-दर्शनीय गृहस्थ पासे करावे तेने हे गौतम ! वास्तविक गच्छ जाणवो.

विवेचन-उत्सर्ग मार्ग तो एवुं सूचवे छे के-कोईपण विषम व्याधिओ थाय तो पण साधु पोताना निमित्ते अग्निकायना आरंभ करावे नहीं. कारण साधु जाणे छे के-जे वस्तु आपणे आपी शकता ज नथी ते अन्य पासेथी लई लेवानो आपणने अधिकार नथी. प्राणो दरेक जीवने छे के जे आपणे कोईने पण आपी शकता नथी तो पोताना निमित्ते अन्य जीवोनी हिंसा करवानो आपणने कयो अधिकार छे ? आषाढाचार्य आ नियमनो भंग कर्यो हतो तथी तेमनी अवहेलना थई हती. वेदनीय कर्मना उदयथी व्याधिओ थाय तो तेने समभावे सहन करी ते कर्म खपाववुं ए ज श्रेष्ठ मार्ग छे, छतां पण शास्त्रकार कहे छे के-क्याइ साधुनी सहनशक्ति सविशेष न होय, शूळ, विसूचिका जेवो अत्यंत दुःसह व्याधि थयो होय अने आत्मा आर्त्त के रौद्रध्यानने वश थतो होय तेवा प्रसंग अपवादरूपे अग्निकायना उपयोग करवो, परन्तु ते पण खप पूरतो ज अने यतना पूर्वक तेना संघट्टमां व्यवहार करे छे के-तेवा प्रसंगमां कोनी कोनी सहाय लेवी तेना क्रम नीचे प्रमाणे जाणवो के-१ सारुपिक-माथु मुंडावे, श्वेत वस्त्र पहेरे, चोळपट्टो राखे, स्त्रीनो त्याग करे अने भिक्षा मागीने खाय ते सारूपिक कहेवाय, २ सिद्धपुत्र-चोटी राखे अगर न राखे, सफेद वस्त्रो पहेरे, माथु मुंडाय पण चोटली(शिखा) राखे, पात्रा न राखे पण त्रांबाना गृहने विषे थाळे भोजन करे, ३ पश्चात्कृत-प्रथम चारित्र ग्रहण कर्या पछी तेनो त्याग कर्यो होय तेमज वय पण त्यजी दीधेल होय, ४ श्राद्ध-अणुव्रत स्वीकार्या होय तेवो समकिती श्रावक, ५ भद्रिक परिणामी अन्यलिंगी गृहस्थ-आ प्रमाणे एक-एकना अभावमां अन्यनी अग्निकाय संघट्टमां सहाय लेवी. आ क्रिया पण यतना पूर्वक करे, पहेले अग्नि जो बीजेथी मळी आवे तो त्यांथी लावे, अने न मळे तो ज जाते सळगावे, इत्यादि यतनानी सविशेष विधि ओघनिर्युक्तिनी पीठिकामां दर्शावेल छे. हवे वनस्पतिकायना संघट्टना वर्णवतां कहे छे के—

पुप्फाण बीयाण, तयमाईणं च विविहदव्वाणं ।
संघट्टणपरिआवण, जत्थ न कुज्जा तयं गच्छम् ॥ ८१ ॥

[पुष्पाना बीजानां, त्वगादीनां च विविधद्रव्याणाम् ।
सङ्घट्टन परितापन, यत्र न कुर्यात् स गच्छः ॥ ८१ ॥]

गाथार्थ-पुष्प बीज तथा वृक्षादिकना मूळ, पत्र, अंकुर, फल, छाल प्रमुख सचित्त वस्तुनो संघट्ट के परिताप आदि जे गच्छमां मुनिओ न करे ते ज गच्छने प्रमाण मानवो.

विवेचन—बे प्रकारना पुष्पो होय छे एक जळमां अने बीजा स्थळमां

उत्पन्न थनारा कमळ विगेरे जळमां अने कोरंटकादिक स्थळमां थाय छे स्थळमां थनारा पुष्पोना पण बे प्रकार छे-(१) अतिमुक्तादिक वृंतबद्ध अने बीजा (२) नालबद्ध पुष्पोमां नालबद्धमां संख्याता अने वृंतबद्धमां असंख्याता जीवो होय छे स्नुही ना प्रमुख पुष्पमां अनंता जीवो होय छे शालि(डांगर), गोधूम (घउं) अने जव विगेरे बीजो कहेवाय वळी छाल, मूळ, अंकुरा अने फळ (बोर प्रमुख) तेमज अनेक प्रकारनी वनस्पतिकायनो साधुए स्पर्श करवो घटे नहीं, तेमज ते प्रकारना वनस्पतिकायना जीवोने लेशमात्र पीडा पण न उपजावे आवा मुनिश्री जे गच्छमां होय ते गच्छ सुगच्छ कहेवाय आ उत्सर्ग मार्ग दर्शाव्यो प्रसंगे अपवाद मार्गनुं सेवन करी शकाय श्रीआचारांगसूत्रना बीजा स्कंधना तृतीय अध्ययनना बीजा उद्देशामां कह्युं छे के-" से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोर-णाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा गड्डाउ वा दरीउ वा सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा, केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा से तत्थ पयलमाणे पवडमाणे वा रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाउ वा वल्लीउ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय २ उत्तरेज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाएज्जा, ततो संजयामेव अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा, ततो संजयामेव गामाणु-गामं दूइज्जेज्जा ॥" साधुने विचरतां मार्गमां किल्लो, गढ, रण, खाडा, गुफा आवे त्यारे ते मार्गनो त्याग करीने बीजे मार्गे जवुं, कारण के अन्य मार्गे न जाय तो खाडामां पडतां के गुफामां जतां वृक्ष प्रमुखनो आश्रय लेवो पडे, परन्तु जो बीजो मार्ग ज न होय तो ते मार्गे जवुं अने तेमां पोतानी जातने पडती अटकाववा माटे वेल, वृक्ष प्रमुखनो आधार लेवो वळी कोइ पथिकजन मळी जाय तो तेना हस्तनुं अवलंबन लेवुं आ संबंधमां कोई शंका करता कहेशे के- आ सूत्रनो आवो अर्थ न करवो वनस्पतिनो संघट्टो थतां हिंसा थाय माटे तेवा मार्गे गमन ज न करवुं ते हितावह छे टीकाकार तेने समाधान आपता कहे छे के- हिंसानी पहेली गणत्री करीए तो नदी उतरतां पण अप्कायनी विराधना थाय छे छतां आज्ञा आपी छे तेम आ संबंधमां पण आपवादिक छूट समजवी हवे हास्यादिकना त्यागनुं वर्णन करे छे—

हासं खेड्डा कंदप्पं, नाहियवाय न कीरए जत्थ ।
धावणडेवणलंघण–ममकारावण्णउच्चरणम् ॥ ८२ ॥
[हास्य खेला कान्दर्पी, नास्तिकवादो न क्रियते यत्र ।
धावन डेपनलङ्घन, ममकारोऽवर्णोच्चारणम् ॥ ८२ ॥]

गाथार्थ-हास्य, बाळक्रीडा, कामकथादिक कुचेष्टा, नास्तिकवाद, अकाले (जयोकल्प) कारण वगर लुगडा धोवां, वडी तथा खाडादिक ठेकवा, साधु या श्रावक प्रत्ये क्रोधादिकथी लाघण करवी, वस्त्र-पात्र ऊपर ममता राखवी तेमज पूज्य वडील जनना अवर्णवाद बोलवा-आ बधी क्रियाओ जे गच्छमां न थती होय ते गच्छ सम्यग् गच्छ जाणवो.

विवेचन-सोगठा रमवा, कोडीथी रमवुं ते क्रीडा कहेवाय. कोई कहे के-हानधाजी रमवामां हरकत शी छे? तेनो पण शास्त्रकार निषेध करता कहे छे के-ते पण जुगारनो एक प्रकार छे, माटे तेवी क्रीडा न ज करवी इन्द्रजालादिक क्रिया पण कौतुकरूप छे, माटे तेवी पण क्रीडा न ज करवी कामकथादिक कुचेष्टा पांच प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ कन्दर्पी, २ आभियोगिकी, ३ किल्बिषिकी, ४ आसुरी अने ५ मोही (१) कन्दर्पी-श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमां प्राते कह्युं छे के-"कद्दप्पकोक्कुयाइ, तह सीलसहावहासविगहाहि। विम्हावितो अ परं, कद्दप्प भावण कुणइ ॥ १ ॥" अत्यंत हसवुं, निरर्थक बोलवुं, गुरु प्रमुख वडील जन प्रत्ये निष्ठुर वचन बोलवुं, कामभोगनी वातो करवी, तेमी प्रशंसा करवी ते कन्दर्प कहेवाय हसतो हसतो आंख या भृकुटी वगी करे जेथी अन्य जनो हसे ते कायकौकुच्य कहेवाय अने जे वाणी वदवाथी लोको हसी पडे अथवा बिलाडी, गाय, बकरी प्रमुखनी भाषा बोली अन्य जनोने हसावे ते वचनकौकुच्य कहेवाय छे उपहास, ठठ्ठा-मश्करी करी लोकोने हसावे तेवा साधु तेवा अभ्यासने अंगे काळ करीने हलकी कोटिनो पहेले कन्दर्प जातिनो देव थाय (२) आभियोगिकी-"मंताजोग काउं, भूईकम्म च जे पउंजति। सायरसइड्ढिहेउं, अभिओग भावण कुणइ ॥ २ ॥" वशीकरण आदि मन्त्र साधे, चूर्णद्वारा सुवर्णादिक सिद्धि करे, रक्षार्थे राखडी बांधे, मिष्ट भोजनार्थे या अन्य सुखाभिलाषाथी कौतुक करे ते आभियोगिक चेष्टा जाणवी अने तेना अभ्यासथी साधु काळ करी आभियोगिक (किंकरस्थानीय) देव थाय ऊपरना श्लोकमां मन्त्रादिकनो प्रयोग पोताना सुखने अर्थे करवानो निषेध कर्यो छे, आपवादिक प्रसंगे शासनाघातना कार्यमां मन्त्रप्रयोग करवानो निषेध न जाणवो (३) किल्बिषिकी-"नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं। माई अवण्णवाई, किब्बिसिय भावण कुणइ ॥ ३ ॥" ज्ञान, केवळी, धर्माचार्य (पोताने धर्म पमाडनार) तथा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध धर्मनो अवर्णवाद (निंदा) ते किल्बिषिकी तेज काया (शरीर) छे, तेज मती छे, प्रमाद अने अप्रमाद विगेरे पण तेज छे तो मोक्षाभिलाषीए योनि तथा ज्योति विगेरेनुं ज्ञान प्राप्त शा माटे करवुं? वळी ज्ञान भणीने शुं करवुं छे? अज्ञानी होय तेने पाप न लागे अने घणुं भणेल घणुं अभिमान करे माटे ज्ञाननी जरुरियात नथी

आ प्रमाणे कहे ते ज्ञाननिन्दा, केवळज्ञान ने केवळदर्शनमां क्रमे क्रमे उपयोग थाय छे एटले ज्यारे ज्ञाननो उपयोग होय त्यारे दर्शननुं आवरण अने दर्शननो उपयोग होय त्यारे ज्ञाननुं आवरण थाय वळी जो बन्ने एक साथे थाय तेम मानशो तो ज्ञान ने दर्शन एक थइ जशे तो, तेने बे केम मानवा ? आ प्रमाणे बोले ते केवळीनी निन्दा, आ आचार्य हलका कुळमां जन्मेल छे, आधार विचारनुं तेमने भान नथी, नीच जातिमां जन्मेला विशेष शुं जाणे ? इत्यादिक प्रकारे कहे ते धर्माचार्यनिन्दा, घणा शियाळोनो समूह सिंहने शुं करी शके ? तेम आ सघ मने शुं करवानो छे ? एम विविध प्रकारे संघनी विडंबना करे ते संघनिन्दा, साधुओ परस्पर खमीने रही शकता नथी माटे जुदी जुदी दिशामां चाल्या जाय छे, वळी वाम्बामां घणा समर्थ होय छतां वगरानी पेठ कपट राखीने मंद गतिए चाले छे-आ प्रमाणे विविध प्रकारे साधु संबंधी विपरीत वर्णन करवुं ते साधुनिंदा, एवी ज रीते साध्वी, श्रावक अने श्राविकानी निन्दा पण जाणी लेवी आवा प्रकारनो निंदाखोर माणस काळ करीने अस्पृश्य जाति जेवा किल्बिषीया देवोमां उपजे छे (४) आसुरी-" अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी । एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ॥ ४ ॥ " हमेशां क्रोधी रहेनारो अने कारण विना पण अतीत, अनागत अने वर्तमान ए त्रणे काळनां निमित्तो कह्या करे ते आसुरी भावना कहेवाय, अने आवी भावनावाळो साधु काळ करीने असुर देवनिकायमां उपजे छे (५) मोही-"सत्थग्गहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो अ । अणयारभंडसेवा, जम्मणमरणाणि बंधन्ति ॥ ५ ॥" खड्गादिक शस्त्रथी, विषभक्षणथी, अग्निमां झंपापात करवाथी, जळमां डूबी मरवाथी पोताना आत्मानो घात करे तेमज शास्त्रमर्यादामां न रहेलां उपकरण प्रमुख भोगवे तो सन्मार्ग मूकी उन्मार्गनुं सेवन कर्युं कहेवाय अने तेथी घणा भवो अनंता भवो करवा पडे मोही भावनानुं लक्षण कह्युं छे के-" उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ, मग्गविप्पडीवत्ती । मोहेणं य मोहित्ता, सम्मोहं भावणं कुणइ ॥१॥ " मिथ्या मार्ग एटले हिंसादिना मार्गे ग्रहण करे अने सन्मार्गनो नाश करावे-तथा वळी तेमज मोहथी मोहित थया होय तेने मोही भावनावाळो कहेवाय हवे आ बाबतमां कांई शंका करतां पूछे छे के-पूर्वे भावनानुं फळ देवगति जणावी छे अने पाछळथी अन्य (भवभ्रमण) फळ दर्शाव्युं छे तो परस्पर विरोध नहीं आवे ? तेनो खुलासो आपतां ग्रंथकार जणावे छे के-अनंतर फळ देवगति जाणवी, परंपर फळ तो अनंत संसार परिभ्रमण ज जाणवुं साधुपणामां किंचित् द्रव्य क्रिया करे तेथी नीच देवपणुं प्राप्त थाय अने ते पापानुबंधी पुण्य खलास थइ जाय त्यारे परंपर फळ पामे कह्युं छे के-" एयाउ भावणाओ, भावित्ता देव-दुग्गइं जंति । तत्तोय चुया संता, पडंति भवसागरमणंतम् ॥ १ ॥ " आवा

प्रकारनी भावना भावीने साधु देवरूप दुर्गतिमां जाय एटले नीच देव थाय अने त्यांथी च्यवीने अनंत जन्म-मरणरूप भवसागरमां भटके आवी भावना वाळा साधुओ जे गच्छमां न होय ते सुगच्छ जाणवो

जीवाजीवादिक पदार्थने न माने ते नास्तिक कहेवाय तेओ कहे छे के-
"सन्ति पंच महब्भूया, इहमेगेसिमाहिया। पुढवी १ आऊ २ तेऊ ३, वाऊ ४ आगासपंचमा ५ ॥ १ ॥" १ पृथ्वी-कठिनतारूप, २ पाणी-द्रव (पातळापणा) रूप, ३ तेज-अग्नि उष्णतारूप, ४ वायु-हलनचलनरूप अने ५ आकाश-पोलाण, शून्यरूप-आ पांच प्रकारना महाभूतो सर्वत्र व्यापी रहेल छे आ पांचे महाभूतो सर्व बाल-गोपालमां प्रत्यक्ष नजरे पडे छे, माटे कोई पण आ महाभूतोनो निरास करी शके तेम नथी आ पांचे महाभूतो एकत्र थाय त्यारे शरीर, जीव यथा आत्मा थाय छे आ भूतोथी भिन्न बीजो कोई पदार्थ नथी तेम आत्मा पण नथी आ प्रमाणे नास्तिकवादीनुं कथन छे, तेमां कोई शंका करी तेमने पूछे छे के-जो तमो एम कहेशो तो कोई जीव मरण पामे छे त्यारे तमे कोने मरण पामेला मानशो? तेना जवाबमां नास्तिकवादी कहे छे के-कोईनुं देवदत्त एवुं नाम होय अने ते मरण पामे त्यारे पांच महाभूतो पैकी अग्नि के वायुनो नाश थयो होय त्यारे शरीरधारी देवदत्तनो नाश थयो एम कहे छे अने तेथी देवदत्त मरी गया एम जणाय छे जीव मरीने परलोकमां जाय एवो कोई जीव ज नथी आवा प्रकारनुं नास्तिक मतवादीनुं कथन श्रीसुयगडांगसूत्रमां विस्तारथी दर्शावेल छे तेनो सचोट उत्तर ते ते स्थळे आपवामां आव्यो छे वळी श्रीदशवैकालिक सूत्रनी निर्युक्तिमां पण कह्युं छे के—

अत्थि त्ति दारमहुणा, जीवो अत्थि त्ति सिज्झए नियमा।
लोगाययमयवायत्थ-सुवणए तत्थिमो हेऊ ॥ १ ॥

जो चिंतेइ सरीरे, नत्थि अहं स इव होइ जीवु त्ति।
न हु जीवम्मि असंते, संसयउप्पायओ अन्नो ॥ २ ॥

जीवस्स एस धम्मो, जा ईहा अत्थि नत्थि वा जीवो।
थाणुमणुस्साणुगया, जह ईहा देवदत्तस्स ॥ ३ ॥

सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं, सद्दादेवाणुमीयए।
नासओ भुवि भावस्स, सद्दो होइ केवलो ॥ ४ ॥

अत्थि त्ति निव्विगप्पो, जीवो नियमाउ सद्दओ सिद्धो।
कम्हा सुद्धपयत्ता, घडखरसिंगाणुमाणाओ ॥ ५ ॥

सुद्धपयत्ता सिद्धी, जह एव सुन्नसिद्धि अम्हंपि ।
तं न भवइ संतेण, ज तुन सुम्हणेह व ॥ ६ ॥
मिच्छा भवे उ सव्वत्था, जे केइ पारलोइया ।
कत्ता चेवोपभुत्ता य, जइ जीवो न विज्जइ ॥ ७ ॥
पाणिदया तव नियमा, बंभ दिक्खा य इंदियनिरोहो ।
सव्वनिरत्थयमेयं, जइ जीवो न विज्जइ ॥ ८ ॥
लोइआ वेइआ चेव, तहा सामाइआ विऊ ।
निच्चो जीवोपि हु देहा, इइ सव्वे ववत्थिया ॥ ९ ॥
लोए अन्तिउत्तभिन्नो, वेए सपुरीसदड्ढगसिपालो ।
समए अहमासि गओ, तिविहो दिव्वाइसंसारो ॥ १० ॥
अत्थि सरीरविधाता, पइनिअआकारओ घडस्सेव ।
कुंभस्स जह कुलालो, सो मुत्तो कम्मसंजोगा ॥ ११ ॥
फरिसेण जहा वाऊ, गिज्झइ कायसंसिओ ।
नाणाईहिं तहा जीवो, गिज्झइ कायससिओ ॥ १२ ॥
अणिंदियगुण जीवं, दुन्नेय मंसचक्खुणा ।
सिद्धा पासंति सव्वण्णू, नाणसिद्धा य साहुणो ॥ १३ ॥

इय आस्तिकद्वार पहेलं जीव चोक्कस विद्यमान छे ते जणावे छे नास्तिक मतना खंडन अर्थे जीवनी विद्यमानता जणाय छे (१) जे कहे 'हुं शरीरमां नथी' एवुं चिंतवे छे ते चिंतवनारो कोण छे? ते ज जीव जाणवो जीव विना संशय उपजावनार बीजो कोई नथी, कारण के भूतोमां तेवी शक्ति नथी ज (२) 'विचार करवो' ए ज जीवनो धर्म छे, कारण के छता पदार्थनो विचार अजीव करी शके ज नहीं हा ते दूरथी झाडनुं ठूंठुं देखीने विचार थाय छे के आ पुरुष छे के ठूंठुं? आवा (ईहा) विचार पुरुषने थया पण ठूंठाने न थयो तेथी जीवनो स्वभाव 'विचार' छे (३) 'जीव' एवा शब्द वापर्यो ज जीवनुं अस्तित्व साबित थाय छे आ अनुमान खोटुं नथी कारण के जे अविद्यमान छे तेना स्वतंत्र शब्द छे ज नहीं. जे केवळ शब्द छे ते पदार्थ अवश्य छे हा !! खरविषाण-गधेडाना शींगडा आ वस्तु एक साथे घटी शके नहीं, कारण के गधेडाने शींगडा होता ज नथी, पण जो खर=गधेडो अने विषाण=शींगडा भिन्न भिन्न शब्दो लईए तो घटी शके आ असंजोगी शब्द छे, एटले तेनी विद्यमानता न होय तेथी ज रीते आकाशपुष्प आकाशनुं फूल आकाश अवकाशरूप होई त्यां कदापि पुष्पोत्पत्ति

कोई शब्द न नहीं आकाश अने पुष्प भिन्न भिन्न मनाय तो बने घटी शके जीव शब्द एकलो ज छे तेथी ते घटी शके छे (४) शुद्ध घट, पट, रथ इत्यादि शब्दोना अनुमानथी जीव छे, तेमां काई पण विकल्प नथी घट, पट इत्यादि शब्दो छे तेम निश्चयथी शब्दद्वारा जीवनी सिद्धि थाय छे (५) आ संबंधमां नास्तिक-वादी शंका करतां प्रश्न उठावे छे के-शुद्ध शब्द छे माटे जीवनी सिद्धि करो छो तो पण अमारा शून्य, नष्ट वगेरे शब्दो पण शुद्ध ज छे, माटे अमारु कथन पण सत्य ज छे तेना जवाब आपता कहे छे के-शून्यने शून्य के नष्टने नष्ट कहीए ते बराबर कहेवाय परन्तु जे विद्यमान होय तेने शून्य के नष्ट केम कही शकाय? देवदत्त घरमां न होय त्यारे ते गृह शून्य कहेवाय परन्तु ते गृहमां बेठो होय तो तेने शून्य केम कहेवाय? कोई पण पट स्थळे घडा न होय तो तेने नष्ट कहेवाय परन्तु छता घडे नष्ट न कहेवाय आ नयथी जीव शब्दनुं छता पणु होवाथी तेनुं नास्तिपणुं केम कहेवाय? जो जीव न होय तो नास्ति कहेवाय पण वाच्यवाचकभाव छते ते नास्ति न कहेवाय (६) जो जीव नथी एम मानीए तो परलोकादिक सर्व असत्य ठरे अने ते जूठां होय तो कर्ता अने भोक्ता कोई पण निर्णीत नहीं थाय (७) जो जीव नथी तो जीवदया पाळवी, विवेक आचरवो, तपश्चर्या करवी, ब्रह्मचर्यनुं पालन करवु, दीक्षा ग्रहण करवी तथा इन्द्रियोनो निरोध करवो इत्यादि सर्व निरर्थक ज नीवडे (८) पुराणना रचनाराओ, वेदो तथा वैदिकमतिओ त्रिपिटकादि मतधारो अने शैव धर्मी पंडितो कहे छे के-जीव नित्य छे, अनित्य नथी केटलाक एम पण अभिप्राय धरावे छे के-शरीरथी जीव भिन्न छे जो जीव न मानो तो ते सर्वना मतमां बतावेल नीचे प्रमाणनुं जीवनुं लक्षण निष्फळ नीवडशे (९) भगवद्गीतामां जीवने आम कह्युं छे के—अच्छेद्योऽयमभेद्योऽय-मनिकार्योऽयमुच्यते। नित्यः सततगः स्थाणु-रचलोऽयं सनातनः॥ वेदमां पण कह्युं छे के—शृगालो वै एष जायते यः सपुरीषो दह्यते—जे पुरीष सहित बळे छे ते मरीने शियाळ थाय छे वळी त्रिपिटकमां कह्युं छे के—अहमासीत् गजः। एटले हुं हाथी हतो वळी केटलाक अन्य मतिओ त्रण प्रकारना (देव, तिर्यंच अने मनुष्य) अने केटलाक चार प्रकारना (देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक) संसार माने छे जो जीव न मानीए तो उपर कहेल सर्व दृष्टांतो निष्फळ जाय (१०) शरीरनो कर्ता अने शरीरथी भिन्न रहनार कोई जीव छे जेम कुंभार घडानो कर्ता छे पण ते बने एक ज नथी तेवी रीते जीव ज्यारे कर्मथी मुक्त थाय छे त्यारे सिद्ध बने छे (११) कोई कहेशे के ते केवी रीते जाणी शकाय? अमने जीव तथा शरीर जुदा करी देखाडो तेनो जवाब आपता कहे छे के-जेम वायुने आपणे जोई शकता नथी छतां स्पर्श द्वारा जाणी शकीए छीए के वायु छे तेम ज्ञानादिक गुणोए करीने जीव जाणी शकाय छे. (१२) जीव अतीन्द्रिय छे एटले नेत्रथी जोवामां

न आवे परंतु केवळी भगवंत तथा ज्ञानी साधु तेना स्वरूपने जाणे-देखे छे तेथी ते प्रत्यक्ष सिद्ध छे आपणी तो चर्मचक्षु छे तेथी आपणे जीवने प्रत्यक्ष जोई शकीए ज नहि, पण अनुमानथी जाणी शकाय (१३) जेओ आ प्रमाणे जीवनी मान्यता स्वीकारता नथी ते नास्तिकवादी छे तेओ पण विशेष बुद्धि माटे संपूर्ण जीवस्थापन-कुलक जणावे छे—

जीवो अणाइनिहणो, अविणासी अक्खओ धुवो निच्चं ।
दव्वट्ठयाइनिच्चो, परियायगुणेहि य अणिच्चो ॥ १ ॥
जह पज्जराउ सउणी, घडाउ पयराणि कुसुआ पुरिसो ।
एवं न चेव भिन्नो, जीवो देहाउ संसारी ॥ २ ॥
जह खीरोदगतिलतिल्ल-कुसुमगंधाण दीसइ न भेओ ।
तह चेव न जीवस्सवि, देहाइघनिओ भेओ ॥ ३ ॥
संकोअविकोएहि अ, जहक्कम देहलोअमित्तो वा ।
हत्थिस्स व कुंथुस्स व, पएससंखा समा चेव ॥ ४ ॥
कालो जहा अणाई, अविणासी होइ तिसु वि कालेसु ।
तह जीवो वि अणाई, अविणासी तिसु वि कालेसु ॥ ५ ॥
गयणं जहा अरूवी, अवगाहगुणेण घिप्पई तं तु ।
जीवो तहा अरूवी, विन्नाणगुणेण घित्तव्वो ॥ ६ ॥
जह पुढवी अविणट्ठा, आहारो होइ सव्वदव्वाणं ।
तह आहारो जीवो, नाणाईण गुणगणाणं ॥ ७ ॥
अक्खयमणंतमतुलं, जह गयणं होइ तिसु वि कालेसु ।
तह जीवो अविणासी, अवट्ठिओ तिसु वि कालेसु ॥ ८ ॥
जह कणगाओ कीरंति, पज्जवा मउडकुंडलाईया ।
दव्वं कणगं तं चिय, नामविसेसो इमो अप्पो ॥ ९ ॥
एवं चउगईए, परिब्भमंतस्स जीवदव्वस्स ।
नामाइं बहुविहाइं, जीवदव्वं तयं चेव ॥ १० ॥
जह कम्मयरो कम्मं, करेइ भुंजेइ सो फलं तस्स ।
तह जीवो वि अ कम्मं, करेइ भुंजेइ तस्स फलं ॥ ११ ॥
उज्जोवेउ दिवसं, जह सूरो वच्चई पुणो अत्थं ।
नय दीसइ सो सूरो, अन्नं खित्तं पयासंतो ॥ १२ ॥

जह सूरो तह जीवो, भवंतरं वधए पुणो अन्नम् ।
तत्थ वि सरीरमन्न, सिच व रवी पयासेइ ॥ १३ ॥
फुल्लुप्पलकमलाण, चदणअगरूण सुरहिगधीणम् ।
घिप्पइ नासाइ गुणो, नय रूव दीसए तेसिं ॥ १४ ॥
एव नाणगुणेणं, घिप्पइ जीवो वि बुद्धिमतेहिं ।
जह गधो तह जीवो, न हु सक्खा कीरए भिन्नम् ॥ १५ ॥
भभामउद्दमद्दल-पणवमकुदाण सरसमधाणम् ।
सद्दोचिय सुव्वइ, केवलु त्ति न हु दीसइ रूवम् ॥ १६ ॥
पचक्ख गहगहिओ, दीसइ पुरिसो न दीसइ पिसाओ ।
आगारेहि मुणिज्जइ, एव जीवो वि देहट्ठिओ ॥ १७ ॥
हसइ विरूसइ रूसइ, नचइ गाएइ रूयइ सुहदुक्खम् ।
जीवो देहमइगओ, विविहपयार पयसेइ ॥ १८ ॥
जह आहारो भुत्तो, जिआण परिणमइ सत्तभेएहिं ।
वस १ सोणिय २ मस ३-ट्ठिअ ४, मज्जा ५ तह मेय ६ सुक्केहिं ७ ॥१९॥
एव अट्ठविह चिअ, जीवेण अणाइसहगय कम्मम् ।
जह कणग पाहाणे, अणाइसजोगनिप्फन्नम् ॥ २० ॥
जीवस्स य कम्मस्स य, अणाइम चेव होइ सजोगो ।
सो वि उवाएण पुढो, कीरइ न बलाउ जह कणगम् ॥ २१ ॥
ज(इ)ह पुव्वपर कम्म, जीवो वा जइ हविज्ज वइ कोइ ।
सो वत्तव्वो कुक्कुडि-अडाण मणसु को पढमो ॥ २२ ॥
जह अडसभवा, कुक्कुडि त्ति अड च कुक्कुडिहभव ।
नय पुव्वावरभावो, जह तह कम्माण जीवाणम् ॥ २३ ॥
अणुमाणपहे सिद्ध, छउमत्थाण जिणाण पचक्खम् ।
गिण्हसु गणहर ! जीव, अणाइय अक्खयसरूवम् ॥ २४ ॥
कत्थ य जीवो बलिओ, कत्थ य कम्माइ हुन्ति बलियाइ ।
जीवस्स य कम्मस्स य, पुव्वनिबद्धाइ वेराइ ॥ २५ ॥

इति जीवस्थापनकुलकम् ॥

जीव अनादिअनत छे, एटले तनी आदि नथी तेम अत पण नथी,

अविनाशी, अक्षय, ध्रुव-अचलायमान अने द्रव्यार्थनयवडे नित्य अने पर्यायनयवडे अनित्य छे ज्यारे गतिमां जन्म, मरणादिक पर्यायो करे छे ते हेतुथी पर्यायार्थिकनयवडे अनित्य दर्शाव्या छ (१) प्रतिवादी शंका करता कहे छे क-तो तमे जीवने जुदा करी बतावो, तेनो उत्तर ए छे के-जेम पांजरामां पक्षी, घडामां चोर अने कंचुक(चोळी)थी माणसो भिन्न छ तेम शरीरथी जीव भिन्न नथी तो कयी रीते देखाडी शकाय ! अनुमानप्रमाणथी ज ते जाणी शकाय (२) दूध अने पाणी, तिल ने तेल, पुष्प ने सुगंध साथे होवाथी जेम ते भिन्न भिन्न देखाता नथी तेम जीव अने शरीरनो भेद देखातो नथी (३) जीवना संकोच-विकोच एटले ह्रस्व, दीर्घ थाय छ जरूर पडये ते चौदर राजलोक प्रमाण विशाळ थइ शके छे कुंथुआना शरीरमां तेना जेवडा ह्रस्व अने हस्तिना देहमां तेना जेवडो दीर्घ थाय तो पण बने शरीरमां प्रदेश तो असंख्याता ज छे (४) जेम काळ अनादि अने अविनाशी छ छतां त्रणे काळ-अतीत, अनागत अने वर्तमान-मा सदा काळ छे तेम जीव अविनाशी अने अनादि होवा छतां हमेशा छे (५) कोइ कहे के-जीव अरूपी छे, तेने ज्ञान गुणद्वारा जाणी शकाय दा त जेम आकाश अरूपी छे छता तेनो गुण अवकाश छे तेम जीवनो गुण ज्ञान छे (६) जेम पृथ्वी सर्व द्रव्यना आधारभूत छे एटले रूपी द्रव्यनो आधार पृथ्वी छे तेम ज्ञानादिक गुणसमूहनो आधार पृथ्वी छे (७) जेम अक्षय, अनंत ने निर्मळ आकाश त्रण काळने विषे छे, छे ने छे ज तेवी ज रीते त्रण काळने विषे अविनाशी, अवस्थित एवो जीव छे, छे ने छे ज (८) जीव मृत्यु पामीने जुदा जुदा प्रकारनो केम थाय छे ? तेना खुलासामां जणावे छे के-कोइ सुवर्णना घडा, मुकुट, कुंडल विगेरे विविध प्रकारना घाट घडावे पण ते सर्वमां सुवर्ण तो तेनु ते ज छे पण रूप-पर्याय नवा थया ते प्रमाणे जीव मृत्यु पामीने नरक गतिमां, तिर्यचपणामां, मनुष्यमां, देवमां, स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय-एम विविध प्रकारे उपजे ते तमाम पर्यायो समजवा जीव द्रव्य जे छे ते तो तेनु ते ज छ, तेमां कई पण फेरफार थता नथी (९-१०) जे प्राणी जेवु कार्य करे ते तेवु कर्मफळ भोगवे तेम जीव पण कर्म बांधे तेनां रस-फळ भोगवे (११) जेम सूर्य दिवसे प्रकाश करीने अस्त थाय अने पछी बीजा क्षेत्रमां प्रकाश करे पण नाश न पामे तेम जीव पण भवान्तरमां जइने बीजा शरीर धारण करे छे, पण नाश पामतो नथी (१२-१३) कोइ कहे के-जीवनुं स्वरूप तो देखातु नथी तेनु केम ? तेना जवाब ए छे के-कमळ प्रमुखना पुष्पमां, चंदन तथा अगुरु धूपमां सुगंध होवा छतां ते जणातो नथी पण नासिकाद्वारा ते जाणी शकाय छे के-आ अमुक पुष्पनो सुगंध छे तेम बुद्धिवंत पुरुष ज्ञान-गुणद्वारा जीवने जाणी शके. जेम नेत्रथी सुगंध न पारखी शकाय तेम अज्ञानी प्राणी जीवने जाणी शकता नथी (१४-१५) भेरी, मृदंग, वीणा, ढोल विगेरे वाजिंत्रोना शब्द संभळाय छे, पण जोवाता नथी वळी कोई माणसने भूत

वळगु होय त्यारे ते माणसने आपणे जोइए छीए, भूत-पिशाचने जोई शकता नथी पण मानीए छीए के पुरुषना शरीरमां पिशाच छे तेम हलन, चलन श्वासोश्वास विगेरे कारणोथी आपणे जाणी शकीए के शरीरमां जीव छे जे दृष्टिथी देखातो नथी (१६-१७) वळी कोई प्राणी क्रोध करे, नाचे, गाय, रोवे, सुख दुःख अनुभवे-आ प्रकारना लक्षणोद्वारा शरीरमां रहेलो जीव जाणी शकाय छे (१८) जे आहार आपणे करीए छीए ते सात प्रकारे-१ चरबी, २ लोही, ३ हाडका, ४ मांस, ५ मज्जा, ६ मेद अने ७ वीर्यरूपे परिणमे छे तेवी रीते जीवने आठे कर्म लागेला छे जेम सुवर्ण अने पाषाणना संजोग अनादि छे तेम जीव अने कर्मनो संजोग पण अनादि छे (१९-२०) जो अनादि संजोग छे तो तेने केम दूर करी शकाय ? ते प्रश्ननो उत्तर आपता जणाय छे के-जेम पाषाण ने सुवर्णनो अनादि संयोग अग्निद्वारा छूटी जाय छे तेम तप-जपादिद्वारा कर्मनो जीव साथेनो अनादि संयोग पण नाश पामी जाय (२१) कोई प्रश्न करे के-जीव पहेलो के कर्म ? तेना जवाबमां तेने पूछवुं के-कुकडी पहेली के इंडु ? तेना जवाबमां ते कहेशे के-तेमां पहेलु अने पछी जेवु कंई नथी ते ज रीते जीव ने कर्ममां पण पूर्वापर जेवु कंई नथी (२२-२३) छद्मस्थ प्राणिओ जीवने अनुमान प्रमाणथी जाणे अने केवळी भगवंत तो प्रत्यक्ष देखे छे माटे जीव छे तेवुं सिद्ध वचन ग्रहण करवुं (२४) कोइक प्रश्न करे के-जीव बलवान के कर्म ? तेनो खुलासो ए छे के-कोइक स्थळे जीव बळवान अने कोइक स्थळे कर्म बळवान जाणवुं जीवने कर्मनो संबंध पूर्व काळनो छे, नवो संयोग नथी (२५) जीवस्थापनाकुलक-मांहेनो विचार जाणी कदापि नास्तिकवाद ग्रहण न करवो

नास्तिकवादनो बीजो अर्थ ए पण छे के-धूर्तनी माफक असंबद्ध के निरर्थक वचन उच्चारवा ते संबंधमां धूर्तोनुं दृष्टांत आपता जणावे छे के-

अवंती देशनी उज्जेनी नगरीनी उत्तर दिशामां जीर्ण नामना उद्यानमां घणा धूर्तो (ठगारा) भेगा थया तेमां १ शशक, २ एलासाढ, ३ मूलदेव अने ४ खंडपाणा स्त्री-आ चार मुख्य हता पहेला त्रण पांच सो धूर्तोना उपरी हता अने खंडपाणा पांच सो स्त्रीनी स्वामिनी हती एकदा अतिवृष्टि थवा लागी सात दिवस पसार थइ गया छतां वृष्टि चालु ज रही एटले चारे धूर्तो विचारवा लाग्या के-आपणने भूख लागी छे आ अतिवृष्टिना समयमां कोण खवरावे ? त्यारे मूळदेव बोल्या के-जेणे जेवु देख्युं के सांभळ्युं होय तेनी वार्ता कहे ते कथा सांभळीने जे तेने जूठी कहे ते सर्व धूर्तोने भोजन करावे कथा सांभळीने बाकीना तेने उपनयथी घटावे-सत्य समजावे तो कांइ पण भोजन न करावे धूर्तोए मूळदेवनुं कथन स्वीकार्युं अने पहेली कथा एलासाढे शरू करी-हुं एकदा केटलीक गायोने लइने अटवीमां गयो तेवामां त्यां केटलाक चोरो आव्या एटले में मारी कांबळी पाथरीने तेमां सर्व गायोने बांधी लीधी पोटकुं माथे मूकी हुं

चाली नीकळ्यो नजीकना गाममा गयो त्या केटलाक गोवाळो रमता हता तेनी रमत जोवा ऊभो रह्यो तथामा खिलकिलाट करता ते चोरो पण मारी पाछळ त्या आवी पहोंच्या एटले गोवाळो, गाम गायो अने हु एक चीभडामा पेसी गया ते चीभडाने एक बकरी गळी गई [illegible] बकरीने एक अजगर गळी गया अजगरने ढोंकण नामनुं पक्षी गळी जईने उड्यु अने वडनाना मोटा झाड ऊपर जई बेठु एक वखत झाड नीचे [illegible] राजाए पोताना [illegible] हाथी ते झाडनी नीचे पडाव नाख्यो पक्षीना [illegible] पगने पकडाई [illegible] त्या हाथी बांध्यो तथामा ढोंकण पक्षी उड्यु एटले हाथी पण आकाशमा उछळ्यो आ प्रमाणे जोई सैनिकोए राजाने वात करी राजाए शब्दवेधी बाण चलावनारने हुकम कर्यो एटले तेणे बाण चलाव्युं पक्षी मृत्यु पामी भूमि ऊपर पड्युं राजाए तेनु पेट चीराव्युं तो अजगर नीकळ्यो अजगरने फाड्यो तो बकरी नीकळी, बकरीमाथी चीभडु नीकळ्यु चीभडामांथी गाम, गोवाळो, गायो अने हु नीकळ्या एम [illegible] पोतपोताना स्थाने गया अने हु पण आपोने मळीने अहीं तमारा साथ [illegible] कहो भाओ, मारी वात साची के नहीं? सर्व धूर्तोए कह्यु के-तारी वात साची, [illegible] छे, तेमा कांई पण असत्य नथी एटले फलाशाढे पुनः कह्यु के-मारा [illegible] एम समाई अने आखु गाम चीभडामा केम रही शके? त्यारे [illegible] धूर्तो बोल्या-भाई, तेमा शु आश्चर्य छे? तें महाभारत सांभळ्यु नथी? [illegible] कह्यु छे के-पहेला आ जगत् जळमय हतु तेमां एक इंडु उत्पन्न थयु [illegible] पर्वत, वन, नगर सर्व उपज्यु जेम इंडामा सघ समायु तेम तारी [illegible] गायो समाई वळी तु कहे छे के-ढोंकणना पेटमा अजगर, अजगरना [illegible] बकरी, बकरीना पेटमा चीभडु अने चीभडामा गोवाळ, गाय विगेरे केम [illegible] शके? तेनुं कारण ए छे के-विष्णुना पेटमा सुर, असुर, तिर्यंच, वन, [illegible] सघ समाणा, ते विष्णु देवकीजीना उदरमा रह्या, देवकी पण [illegible] आ सर्व पुराण कथा साची होय तो तारी वात पण असत्य [illegible]?

बाद शशक कहेवा लाग्यो के-अमे खेतरमा तल वाव्या [illegible] आसो मासमा अमे तल वापवा गया त्यारे जोयु तो तलनुं एक [illegible] के-कुहाडाथी कापीए तो पण कपाय नहीं तथी हु ते झाडनी [illegible] लाग्यो तथामां एक हाथी त्यां आव्यो अने मने मारवा [illegible] नासवा लाग्यो, परन्तु कोई पण आश्रयस्थान न मळवाथी हु ते [illegible] चढी गयो हाथी त्या आव्यो पण हु ऊपर होवाथी कांई करी शक्यो नहीं [illegible] थडन तलना झाडने सूंढमा पकडीने धूजाववा लाग्यो [illegible] मेघवृष्टिनी जेम नीचे खरवा लाग्या अने तेमा हाथी [illegible] पीलाय तेम तल पीलाई गया तेलनी महानदी [illegible] नासी गया तेमा हाथी खुची गया अने मृत्यु [illegible] हाथीनुं चर्म लई लीधु, तेनो एक दडो बनाव्यो [illegible]

प्रमाण (पुष्कळ) खोळ खाधो अने दश घडा तेल पीधु पछी तेल भरेलो दडो खमा ऊपर लइने हु गाम तरफ चाल्यो गाम बहार झाड ऊपर ते दडो मूकीने हु घरे गयो पुत्रने कह्यु के-गाम बहार झाड ऊपर दडो मूक्यो छे ते लई आव मारो पुत्र गयो तो खरो पण तने दडो मळ्यो नहीं एटले आखु झाड उपाडीने घरे आव्यो ते तलनो दडो घरमा मूकीने अने ते झाड जोईने चाल्यो आवुं हु बोलो भाइओ, आ वात साची के नहीं ? बधा धूर्तोए कह्यु के-तें कह्यु ते सत्य छे त्यारे तेण पुन कह्यु के-कई रीते साची ते जणावो बधा धूर्तोए कह्यु के-आवी घटना पूर्वे बनी गई छे महाभारत तथा रामायणमा अमे सांभळी छे कह्यु छे के-" तेषां करतटभ्रष्टै र्गजाना मदबिन्दुभिः । प्रावर्तत नदी घोरा, हस्त्यश्वरथवाहिनी ॥ १ ॥ " अर्थात् राम ज्यारे युद्ध करवा उद्युक्त थया त्यारे सैन्यनी साथे जे हाथीओ हता तेना गंडस्थळमाथी पडेला बधो मद बन्यो के तेनी नदी वहेवा लागी अने तेना प्रवाहमा हाथी, घोडा तथा रथो तणाई गया आवी रीते मदजळनी नदी वही हती तो तें जे तलना तेलनी नदी वहेवानी वात करी तेमा आश्चर्य जेवु शु छे ? वळी ते कह्यु के-में मार प्रमाण खोळ खाधो अने दश घडा तेलना पीधा, परन्तु तेमा कई विस्मयजनक नथी भीमे बक राक्षसने हण्यो त्यारे तेना बलि निमित्ते आवेल एक गाडा, सोळ गाडी अनाज अने मदिराना एक हजार घडा पाधा हता वळी रावणना भाई कुम्भकर्ण मदिराना एक हजार घडा पीतो अने अनेक मनुष्य तथा पशुओनु भक्षण करी जतो तो तें कहेली वात खोटी केम कहेवाय ? वळी तें तलना झाडनी वात करी पण पुराणमा तो अडदना वृक्षना ताळ कर्यानो उल्लेख छे एटले तेमा पण कई आश्चर्यकारक नथी वळी त दडो उपाड्यो अने तारो पुत्र झाड उपाडी लई आव्यो तो तेमा पण कई विशेषपणु नथी, कारण के पुराणमां कह्यु छे के-श्रीकृष्णे गोवर्धन पर्वत पोतानी कनिष्ठा आंगळी ऊपर उपाडी लीधा हता एटले तें कहेली ते वात सत्य छे

बाद बीजा मूळदेवे पोतानी कथा आरम्भता कह्यु के-हु ज्यारे युवान हतो त्यारे मने स्त्री परणवानी उत्कंठा थई एटले सासरे प्रसन्न करवा हु चाल्यो मारा एक हाथमा छत्र, बीजा हाथमा कमंडळ तथा माळा लईने चाल्यो जतो हतो तेवामा एक पर्वत जेवो महान् हाथी सामो मळ्यो तेने जोतां ज हु डरी गयो अने कोई पण स्थळ सन्ताई जवा हु स्थान शोधवा लाग्यो, पण मने तेवु एक पण स्थान न मळ्यु एटले कमंडळना नाळचामा [illegible] प्रवेश्या गयो ते हाथी पण मने मारवा माटे मारी पाछळ ते नाळचामा दाखल थई गयो [illegible] भयथी पाछो कमंडळमा भराया तो हाथी पण मारी पाछळ आव्यो एटले में आमतेम दोडी-दोडीने [illegible] मास पर्यन्त ते हाथीने भमाड्यो, पण [illegible] हाथमा न आव्यो छेवटे हु नाळचामा थईने बहार निकळी गयो पण ते हाथी पण नाळचामांथी

बहार निकळवा लाग्यो, तेवामां ते आखो निकळी गयो पण तेना पूछडाना एक वाळ तेमां भराई गयो हुं बहार निकळी आगळ चाल्यो तो सामे ज गंगा नदी आवी ते नदी हुं सहेलाईथी तरीने उतरी गयो अने शंकरना मंदिरमां गयो मने अत्यंत भूख अने तरस लागी हती छतां हुं त्यां छ मास सुधी रह्यो अने गंगा पडती हती तेने मारा मस्तक पर धारण करी आ प्रमाणे छ मास सुधी करी, मारा स्वामी शंकरने नमस्कार करीने हमणां ज हुं चाल्यो आवुं छुं कहो भाईओ, मारी वात साची के नहीं? साची होय तो दाखला आपो अने नहीं तो बधा भूख्या धूर्तोने भोजन करावो त्यारे चारेना धूर्तोए कह्युं के-भाई मूलदेव! तारी वात साची ज छे ब्रह्माना मुखथी ब्राह्मण, हाथथी क्षत्रियो, साथळमांथी वैश्यो अने पगमांथी शूद्रो निकळ्या छे जो आटला देशाना देशो भराय तेटला ब्राह्मणादिक ब्रह्माना उदरमां समाया हता तो पछी तुं अने हाथी कमंडलमां रह्या तेमां शुं आश्चर्य? ब्रह्मा अने विष्णु महादेवना लिंगनुं माप करवा निकळ्या अने एक हजार वर्ष पर्यंत चाल्या ज कर्या तो पण शिवना लिंगनो अंत ज न आव्यो अने छेवटे ते लिंग पार्वतीनी योनिमां समायुं तो तुं अने हाथी कमंडळमां छ मास सुधी चाल्या कर्या तेमां शुं अधिक छे? वळी तुं पूछशे के-हाथी निकळी गयो अने वाळ केम भराई गया? तेनुं पण पुराणमां कथन छे जगतना कर्ता विष्णु समुद्रमां शयन करीने रह्या तेनी नाभिमांथी कमळनाळ प्रगटयुं अने तेमांथी ब्रह्मा उत्पन्न्या. आ प्रमाणे ब्रह्मा आदि सर्व निकळ्या अने कमळ तो नाभिने वळग्युं रह्युं तेम तुं अने हाथी निकळी गया अने हाथीना पूछडानो वाळ अटकी गयो ए वात बराबर छे वळी तें कह्युं के-हाथपगे हुं गंगा नदी तरी गयो, तो तेमां पण कंई असत्य नथी रामचंद्रनो दूत हनुमान सीताने शोधवा निकळ्यो हतो त्यारे समुद्र तरीने लंका गयो हतो अने सीतानी खबर लई पाछा राम पासे आव्या हता सीताए हनुमंतने तेना आगमननो मार्ग पूछ्यो त्यारे हनुमंते पोते कह्युं के-समुद्र तरीने हुं आव्यो छुं आ संबंधी श्लोक छे के-"तव प्रसादात् वचसः प्रसादात्, भर्तुश्च ते देवि! तव प्रसादात्। साधुप्रसादात् च पितुः प्रसादात्, तीर्णो मया गोपदवत्समुद्रः ॥ १ ॥" हे देवि! तारी कृपाथी, तारा वचनना प्रभावथी, तारा स्वामी रामचन्द्रना प्रभावथी, साधुपुरुषना प्रभावथी, तारा पिता जनक राजाना प्रभावथी आ समुद्रने हुं गायना पगलानी माफक तरी गयो आवा पुराणमां उल्लेख छे तो गंगा नदीने तरवी तेमां शुं आश्चर्य? वळी ते गंगाने छ मास पर्यंत धारण करी ते पण सत्य छे कारण के पुराणमां कथन छे के-हजारो वर्षो सुधी तपश्चर्या करता एवा लोको पर देवो तुष्टमान थई गंगाने कहेवा लाग्या के-हे गंगादेवि! तमे पृथ्वी पर जई लोकोने सुखी करो त्यारे गंगाए कह्युं के-

तेमने अंशमात्र पण चिंता न हतो भगवान् ते आश्रममां पहोंच्या अने यक्ष-मंडपमां काउस्सग्गध्याने रह्या पीडा ये वखते तो तेओ गणता ज न हता ते चंडकौशिक सर्प पूर्वभवमां क्षपक हता ते तपस्वी साधु-पूर्वे ते मासखमणने पारणे मासखमण करनार उत्तम मुनि हतो आ तपस्वी मुनि एकदा मासखमणने पारणे गोचरी जता हता तेवामां मार्गमां तेमना पग नीचे एक देडकी चंपाईने मरी गई साथे रहेल क्षुल्लक चेलाए तेमनुं ध्यान खेंच्युं के-तमारा पग नीचे देडकी मरी गई तपस्वी साधुने क्रोध चढयो पण ए समये तो एटलुं ज कह्युं के-लोकोए मारी नाखी जणाय छे, छतां जो मारा पगथी मरी गई हशे तो सांजे प्रतिक्रमण समये आलोयण लई लईशुं सांज पडी, छतां तपस्वी साधु आलोयणा कर्या विना ज प्रतिक्रमणमां बेठा एटले क्षुल्लक साधुए देडकी संबंधी आलोयणा लेवानुं स्मरण कराव्युं, जेथी तेने अत्यंत क्रोध चढयो अने तेने मारवा दोडयो क्षुल्लक साधु ऊभा थईने नासवा लाग्या तेमनी पाछळ दोडतां थांभला साथे तपस्वी साधुनुं मस्तक अथडायुं अने त्यां ज काळधर्म पामी ज्योतिषी देव थयो त्यांथी च्यवीने पांचसो तापसोना कुलपति, जे कनकखल आश्रममां रहेतो हतो तेना पुत्र तरीके उत्पन्न थयो तेनुं कुळ कौशिक होवाथी कौशिक एवा नामथी ज ख्याति पाम्यो कालांतरे कुलपति मरण पाम्यो एटले कौशिक आश्रमपति बन्यो. ते अतिशय क्रोधी होवाथी तापसोए तेनुं चंडकौशिक एवुं नाम राख्युं तेने पोताना आश्रम प्रत्ये अत्यंत आसक्ति हती. कोईने पण ते फळफूल लेवा देतो नहीं, एटले धीमे धीमे सर्व तापसो चाल्या गया एकदा चंडकौशिक लाकडां लेवा जंगलमां गयो तेवामां श्वेतांबिका नगरीना राजकुमारो तेना आश्रममां आवी चडया अने फळफूल विगेरे लई पाडीने भांगी नाखवा लाग्या आ हकीकत कोईए चंडकौशिकने जणावतां तेने अत्यन्त क्रोध चढयो अने कुहाडो लई ते कुमारोने मारवा माटे दोडयो तेने आवतो जोई राजकुमारो नासी गया अने चंडकौशिक पण रस्तामां एक खाडो आवतां तेमां खपडयो अने पोतानो ज कुहाडो पोताना मस्तकमां वागतां त्यां ने त्यां ज मृत्यु पाम्यो मरीने ते ज स्थळे दृष्टिविष सर्प थयो तेनी ज्वाळा एवी उग्र हती के नजरे चडनारने पोतानी विषज्वाळाथी दग्ध करी नाखतो तेना त्रासथी कोई पशु, पक्षी के मनुष्य पण ते स्थळमां आवी शकतुं नहीं घणा काळे भगवानने आवेला जाणीने सर्प विस्मय पाम्यो के-शुं आ पुरुष मारुं सामर्थ्य जाणतो नथी के अहीं आवीने ऊभा रह्या छे? पछी तेणे सूर्य सामे नजर करी भगवान प्रति पोतानी विषज्वाळा फेंकी पण तेनी कंई असर न थई सर्प अचंबो पाम्यो अत्यार सुधी पोतानी ज्वाळाथी कोई पण बच्युं नथी अने आ शुं? तेणे वारंवार सूर्य सामे जोई-जोईने विषज्वाळाओ परमात्मा प्रत्ये फेंकवी शरू करी पण जेम मृगथी सिंह पराजय न पामे तेम भगवन्त अचल रह्या एटले ते निर्दयीए दोडीने परमात्माना चरणमां डंख मार्यो अने विषथी व्याप्त थयेल परमात्मा मरण पामीने

पोताना ऊपर न पडे तेम विचारी थोडे दूर जइ ऊभो रह्यो परन्तु महावायुथी जेम मेरु पर्वत चलायमान न थाय तेम प्रभु तो अकंप रह्या हमणा विषनी असरथी भगवाननो देह पडी जशे तेम विचारतो सर्प वारंवार परमात्माना मुख प्रत्ये जोइ रह्यो छता भगवन्तनी मुखमुद्रा तो अमृत भरेली शान्त अने सूर्य जेवी तेजस्वी हती बाद परमात्माए सर्पने उद्देशीने कह्यु के-हे चण्डकौशिक ! प्रतिबोध पाम, मुंझा मा परमात्माना वचन सांभळता ज सर्पने ईहा प्रगटी अने छेवटे जातिस्मरण ज्ञान पण थयु पोतानो पूर्वभव जाण्यो पछी पोताना कृत्योनी, अपराधनी निन्दा करता अने परमात्माने खमावता त्रण प्रदक्षिणा दइने तेणे अणशण स्वीकार्यु अने पोतानु मुख बिलमा राख्यु, रखेने कोइ पण जीव पोतानी विष-ज्वाळाथी मृत्यु पामे भगवंतने घणा समय सुधी त्यां रहेला जाणी गोवाळो त्यां गया तो परमात्माने निश्चळ काउस्सग्ग ध्यानमा ऊभेला जोया सर्प पण अवळुं मुख राखी बिलमा रह्यो हतो गोवाळोने आ दृश्य निरखी अचबो थयो तेओए थोडा पथरना घा कर्या तो पण सर्प न हाले के चाले छेवटे तेओ धीमे धीमे नजीक गया अने लाकडीओथी हलाववा लाग्या तो पण सर्पने निश्चळ जोई तेओ गाममा गया अने लोकोने वात करी सर्वत्र वात प्रसरी जता लोकोना टोळेटोळा त्यां आव्या लोको परमात्मानो प्रभाव जाणी विस्मय पाम्या केटलाक लोकोए घीवडे सर्पनी पूजा करी पछी सुगंधथी आकर्षायेली कीडीओ सर्पना शरीरने करडवा लागी सर्पने अतिशय वेदना थवा लागी तो पण ते समये तेना भावो बदलाइ गया हता ते विचारवा लाग्यो के-मारा कर्म-क्षयमा आ कीडीओ मने मदद करी रही छे आ प्रमाणे समभावपूर्वक वेदना सहन करतो सर्प पंदर दिवसनु अणशण पाळी, मृत्यु पामी आठमा सहस्रार नामना देव-लोकमां देव थयो अतिशय वेगथी चालवाथी कौशिक तापस दुःख पाम्यो तेथी जे गच्छमा साधुओ संयमपूर्वक गति करनारा होय ते गच्छ ज सुगच्छ जाणवो

लंघन पछी लाडु, खाजा, मांडे विगेरे उत्कण्ठा थवी लंघननो बीजो अर्थ ए छे के-क्रोधना कारणथी अन्य साधु या तो श्रावकने उद्देशीने लांघण करवी-अन्नपाननो त्याग करवो जे गच्छमा आ लंघन वर्ज्य होय ते सुगच्छ जाणवो आ संबंधमा नीचेनुं दृष्टांत उपयोगी छे—

अर्हन्मित्र साधुनु वृत्तांत—

क्षितिप्रतिष्ठित नगरने विषे अर्हन् अने अर्हन्मित्र नामना बे भाइओ रहेता हता मोटा भाइनी स्त्री पोताना दियर अर्हन्मित्र प्रत्ये अनुरागवाळी थइ अर्हन्मित्रे विचार्यु के-मोटा भाइनी स्त्री साथे भोगविलास केम कराय ! पछी ते तेणीना हावभावथी चळ्यो नहीं त्यारे अर्हन्नी स्त्रीए जाण्यु के-पोताना भाई हैयात होय त्यां सुधी लघु बंधु अनुचित आचरण केम करे ! माटे जो हु

आत्मा अधःपात करवा तैयार थया. कर्मनी गति खरेखर विचित्र छे! जेम साधुनो वेशनो त्याग करी ते गृहस्थो बनी गया. कहेवत छे के-प्राण ने प्रकृति साथे ज जाय अर्थात् प्रकृति (स्वभाव) कदापि न बदलाय. कह्युं छे के-"प्रकृत्या शीतलं नीर-मुष्णं तद् वह्नियोगतः। पुनः किं न भवेच्छीतं, स्वभावो दुस्त्यजो यतः ॥ १ ॥" प्रकृतिथी पाणी शीतळ छे, परन्तु अग्निना संसर्गथी ते उष्ण बने छे, पण शुं पाछुं ते शीतळ नथी बनी जतुं? अर्थात् ठंडुं थई जाय छे. खरेखर शुभाशुभ पहेलां स्वभावनो त्याग करवो ते दुष्कर छे.

हवे वराहमिहिरे पोते बनावेल सूर्यप्रज्ञप्ति प्रमुख ग्रंथोमांथी उद्धरीने सवा लाख श्लोकप्रमाण "वाराहीसंहिता" बनावी पोते ज्योतिषवेत्ता बन्या. लोकोने कहेवा लाग्या के-हुं बार वर्ष सुधी सूर्यमंडळमां रह्यो हुं. सूर्ये मारा ऊपर महेरबानी करी मने ज्योतिषना प्रचारने माटे पृथ्वी ऊपर मोकल्यो छे. ब्राह्मणोए तेनुं वचन स्वीकारी लीधुं अने धीमे धीमे तेनी प्रतिष्ठा वधी, कारण के अज्ञानी लोकोने भोळववा ए कंई मोटी वात नथी. ते मंत्र-तंत्रादिकथी अने मोहनीय विद्याथी लोकोने चमत्कार बताडतो. राजा पर्यंत तेनी कीर्ति प्रसरी गई. राजाए तेने पोताना पुरोहित बनाव्या. तेवामां श्रीभद्रबाहुस्वामी पोताना परिवारयुक्त प्रतिष्ठानपुरना उद्यानमां समवसर्या.

राजा तथा प्रजाजन तेमने वांदवा गया. राजानुं मान साचववा वराहमिहिर पण साथे गयो. राजा भद्रबाहुनी देशना सांभळी रह्यो हतो तेवामां राजपुरुषे वधामणी आपी के युवराजनो जन्म थयो छे. राजाने वृद्धवय थया छतां पुत्र नहोतो तेथी आ वधामणी सांभळी तेने अतीव हर्ष थयो. तरतज पासे बेठेला वराहमिहिरने राजाए कह्युं के-राजकुमारनी जन्मकुंडली बनावो अने ते कयो विद्यावंत, बुद्धिमान अने आयुष्यवाळो थशे ते जणावो. भद्रबाहुस्वामी पण ज्योतिषना ज्ञाता छे, तमो पण विचक्षण छो, तो तमे बंने विचार करीने मने कहो. वराहमिहिरे गणत्री करी जणाव्युं के-राजपुत्र सो वर्षना आयुवाळो, अढार विद्यानो पारगामी अने पुत्र-पौत्रादिकने पूजनिक थशे.

बाद राजाए श्रीभद्रबाहुस्वामी प्रत्ये जोयुं. भद्रबाहुस्वामी जाणता हता के-जिनमतमां निमित्त कहेवानो निषेध छे, छतां राजा प्रमुख लोकोमां जैन शासननी प्रभावना करवा माटे तेमणे कह्युं के-आ राजपुत्रनुं आयु सात दिवसनुं छे अने सातमे दिवसे बिलाडाद्वारा मृत्यु पामशे. बने ज्योतिर्विदोना कथनमां महद् अंतर जाणी राजा विस्मय पाम्यो. पोताना कथनथी विरुद्ध भद्रबाहुस्वामीनुं सूचन जाणी वराहमिहिर क्रोधथी रक्त बनी गयो अने रोषावेशमां ज राजाने कह्युं के जो भद्रबाहुस्वामीनुं कथन असत्य निवडे तो तेमने महा दंड आपवो. राजा सहित वराहमिहिर राजमहेले गयो अने राजपुत्रने तथा धाव

मातांने गुप्तावासमां मूकी चोकी पहेरा मूकी राख्या दरवाजे वराहमिहिर पोते पहेरो भरवा लाग्या, अने कोई पण बिलाडाने आववा देतो नहीं

परन्तु कर्मनी गति विचित्र छे तेनी पासे बळवानमां पण बळवान सत्तानुं कशुं जोर चालतुं नथी चक्रवर्ती अने तीर्थंकर जेवाने पण कर्मने वश थवुं पडे छे तो पामर प्राणीनुं शुं गजुं ? बराबर सातमे दिवसे बारणाना काष्ठनो आगळियो अकस्मात् राजकुमारना मस्तक ऊपर पड्यो अने तत्काल तेनुं मृत्यु नीपज्युं, धावमाता हाहाकार करवा लागी अंतःपुरमां तरत ज वीजळीवेगे समाचार प्रसरी गया सर्वत्र हाहाकार थवा लागी वराहमिहिर पण विलाप करवा लाग्यो राजा विचक्षण हता ज्ञानीनुं कदापि मिथ्या थतुं ज नथी वळी पूर्ण श्रद्धाळु हता धावमाताने बोलावी कया कारणथी पुत्रमृत्यु थयुं ते पूछ्युं तेणे लाकडानो आगळियो बताव्यो राजाए बारीकाईथी जोयुं तो तेना अग्रभाग ऊपर बिलाडानी आकृति कोतरेली हती श्रीभद्रबाहुस्वामीना वचनमां तेने पूरेपूरी श्रद्धा उत्पन्न थई बाद विलाप करता वराहमिहिरने कह्युं के-तमे भण्या छो पण गण्या नथी राजाना आ तिरस्कारथी वराहमिहिर वनमां चाल्यो गयो अने परिव्राजक थई, तापसी दीक्षा पाळी, मृत्यु पामी अल्प ऋद्धिवाळो व्यंतर देव थयो

राजाए तरत ज श्रीभद्रबाहुस्वामी पासे जई, वंदन करी वराहमिहिरनुं वचन असत्य नीवडवानुं कारण पूछ्युं गुरुए जणाव्युं के-वराहमिहिर गुरुप्रत्यनीक छे गुरुना अवर्णवाद बोलता तेने लगार मात्र पण शरम नथी आवी एटले तेनुं वचन असत्य नीवड्युं छे राजाए तरत ज मिथ्यात्वनो त्याग करी समकितमूळ जैनधर्म अंगीकार कर्यो

व्यंतर थयेला वराहमिहिरे पोताना पूर्वभवना वैरनो बदलो लेवा माटे साधुओनां छिद्रो जोवा शरू कर्यां, तेमां पण ते नाहीपास थयो अप्रमत्त साधु-साध्वीओ पर कंई पण चाल्यो चालवा ते समर्थ न थयो त्यारे खेदयुक्त बनतो ते श्रावकोने विविध प्रकारना उपसर्गो करवा लाग्यो अग्रेसर श्रावकोए एकत्र थई विचार कर्यो के-सिंह विना हाथीनो नाश नहीं थाय, सूर्यप्रकाश विना अन्धकार दूर न थाय, माटे श्रीभद्रबाहुस्वामीनी सहाय विना आपणुं आ कष्ट विनाश नहीं पामे तेओए एकमत थई आ हकीकत जणाववा अने कष्ट निवारणार्थे विज्ञप्ति करवा केटलाक मुख्य श्रावकोने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासे मोकल्या. श्रीभद्रबाहुस्वामीए ज्ञानद्वारा वराहमिहिरनुं आ कृत्य जाण्युं एटले तेमणे " उवसग्गहरं " नामनुं श्रीपार्श्वनाथनुं अति चमत्कारिक स्तोत्र रची आपी प्रतिदिन तेनो पाठ करवानुं कह्युं. आ प्रभाविक स्तोत्र-स्मरणथी, जेम वायुथी वादळां विखराई जाय तेम वराहमिहिरकृत उपसर्गो नाश पाम्या त्यारथी प्रतिदिन ते स्तोत्रनो जाप करवा लाग्या अद्यापि पण ते स्तोत्र श्रीसंघमां प्रचलित छे

बाद श्रीभद्रबाहुस्वामीए १ आचारांग, २ सुयगडांग, ३ आवश्यक, ४ दशवैकालिक, ५ उत्तराध्ययन, ६ दशाकल्प, ७ बृहत्कल्प, ८ व्यवहारसूत्र, ९ सूर्य प्रज्ञप्ति, १० ऋषिभाषित, ए दश सूत्रोनी निर्युक्तिओ रची, अने जैनशासननी अपूर्व प्रभावना करी. चरम श्रुतकेवली थईने भगवंतनुं बिरुद पण प्राप्त कर्युं. छेवटे आयुष्य नजीक जाणी, अणशण स्वीकारी समाधिमरणे स्वर्ग सिधाव्या. वराह मिहिरनी माफक ज गुरुना अवर्णवाद बोले ते गच्छ सुगच्छ न कहेवाय एवुं पण सुगच्छना विशेष लक्षणो दर्शावता कहे छे के—

जत्थित्थीकरफरिसं, अंतरियं कारणे वि उप्पन्ने ।
दिट्ठिविसदित्तग्गी–विसं व वज्जिज्जए गच्छे ॥ ८३ ॥
बालाए वुड्ढाए, नत्तुअदुहियाइ अहव भइणीए ।
न य कीरइ तणुफरिसं, गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥८४॥

[यत्र स्त्रीकरस्पर्शः, अन्तरितः कारणेऽपि उत्पन्ने ।
दृष्टिविषदीप्ताग्नि–विषमिव वर्जयेत् गच्छे ॥ ८३ ॥
बालाया वृद्धाया नप्तृकाया दुहितायाः अथवा भगिन्याः ।
न च क्रियते तनुस्पर्शः, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥८४॥]

गाथार्थ.–कारण उत्पन्न थये सते पण वस्त्रादिकनुं अन्तर करीने स्त्रीना हस्तादिकनो स्पर्श दृष्टिविष सर्प, प्रज्वलित अग्नि के हलाहल झेरनी जेम जे गच्छमां तजी देवातो होय ते गच्छने ज सुगच्छ जाणवो. ८३

वळी बालकुमारी, वृद्धा, पुत्री, पौत्री के बहेन, विगेरेना शरीरनो पण स्पर्श जे गच्छमां न करातो होय ते गच्छने हे गौतम ! सुगच्छ जाणवो. ८४

विवेचन–वस्त्र प्रमुखथी ढांकेला स्त्रीना हस्तादिकना स्पर्श करवानो निषेध कर्यो छे तो उघाडा अंगोपांगने माटे तो कहेवुं ज शुं ? पगमां कांटो वागी गयो होय, महाविषम व्याधि थयो होय छतां पण स्त्री–स्पर्श वर्ज्य वर्णव्यो छे तो विना कारणना स्पर्श माटे तो कहेवुं ज शुं ? ग्रंथकारे स्त्रीना स्पर्शने दृष्टिविष सर्प, प्रज्वलित अग्नि अने कालकूट झेरनी उपमा आपी छे. उपर्युक्त त्रणे वस्तुथी प्राणी दूर रहे छे तेम साधुए स्त्रीस्पर्शथी सदंतर वेगळा ज रहेवुं. लघुवयवाळी बालिकानो स्पर्श पण निषेध्यो छे तो यौवनवती स्त्री माटे तो कहेवापणुं ज क्यां रह्युं ? वृद्धानो पण निषेध छे तो अनतिक्रान्त यौवनवाळी एटले के लगभग सोळ वर्षनी आदि लई चालीश वर्षनी स्त्री माटे तो कहेवुं शुं ? आ करतां पण आगळ वधी ग्रंथकर्ता महापुरुष कहे छे के–पोतानी पुत्री, पौत्री, बहेन विगेरे

स्वजननो स्पर्श न करवो पोताना कुटुंबीजनो साथे अकार्य करवानी कोई कल्पना पण न करी शके तेवा पण शास्त्रकारे तेवी व्यक्तिओना करस्पर्शादिकनो निषेध फरमाव्यो छे तो बीजा माटे तो पूछवानुं ज क्यां रह्युं? आटला कथन ऊपरथी साबित थशे के आज्वल्यमान अग्निनो स्पर्श करवो सारो परन्तु स्त्री स्पर्श तो प्राणान्ते पण न करवो, कारण के तेथी व्रतभंगनो महादोष आवी पडे छे श्रीनिशीथसूत्रना पहेला उद्देशकमां ब्रह्मचर्याधिकारमां कह्युं छे के-स्वादिष्ट वस्तु अने सुगंधथी पुरुष तेमज स्त्री उभयने सरखो मोह उपजे छे जेम मधुरता पानथी पुरुषनी इन्द्रियो चलायमान थाय छे तेम स्त्रीनी इन्द्रियो पण चंचळ थने छे तमज शब्द, रूप, रस विगेरे पण उभयने माटे सरखी असर उत्पन्न करे छे आ नयथमां पुरुषपक्षे अने स्त्रीपक्षे भजना जाणवी एटले के पुरुषने पुरुष स्पर्श करे तो मोहोदय थाय अगर न पण थाय अथवा थाय तो मंद थाय, परंतु जो पुरुषने स्त्री स्पर्श तो अवश्य मोहोदय थाय एवी रीते स्त्रीने स्त्री स्पर्श करे तो मोहोदय थाय किंवा न पण थाय अथवा अल्प थाय, परन्तु जो पुरुष स्पर्श करे तो अवश्य मोहोदय थाय. आवी रीते शब्द, गंध इत्यादि संबंधी पण जाणवुं श्रीनिशीथचूर्णीना अगियारमा तथा आठमा उद्देशामां स्पर्श संबंधी नीचेनुं दृष्टांत आप्युं छे

अनंग राजपुत्र तथा सुकुमारिकानुं वृत्तांत—

आनंदपुर नामना नगरमां जितारी नृपने विमलथा नामनी राणीथी अनंग नामनो पुत्र जन्म्यो बाळवयमां ज ते राजपुत्रने नेत्र-रोग थयो तेथी महेश रुदन ज कर्या करे एकदा राणी नग्नावस्थामां हती तेवामां ते रुदन करवा लाग्यो त्यारे तात्कालिक तेने साथळ ऊपर बेसाडी चांप्यो एटले गुह्यप्रदेशना स्पर्शथी राजपुत्र रोतो बंध थइ गयो राणीए विचार्युं के-राजपुत्रने छानो राखवानो उपाय आ ज छे बाद ज्यारे ज्यारे पुत्र रोवा माडे त्यारे त्यारे राणी नग्न थइने तेम छानो राखे चापती आम करता पुत्र मोटो थयो तो पण राणी तेम ज करती जितारी नृप मृत्यु पाम्यो, पोते राजा थयो तो पण अनंग पोतानी माताने पूर्वनी पेठे ज भोगवतो आ कथानो उपनय ए छे के-पोतानी माताना स्पर्शथी पण जे कामी थया ते बीजी स्त्रीना स्पर्शथी विषयाभिलाषी थने तेमां शी नवाई?

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाई जराकुमारना पुत्र जितशत्रुने शशक अने भसक नामना बे पुत्रो अने सुकुमारिका नामनी एक पुत्री हती. एकदा मरकीनो उपद्रव थवाथी तेनुं समग्र कुळ नाश पाम्युं फक्त बे भाइयो अने एक बहेन आ त्रण जीव ज बच्या वैराग्य पामी त्रणे जणाए दीक्षा लीधी सुकुमारिका यौवनवती थइ त्यारे तेनुं रूप अत्यंत खील्युं निकळ्युं गोचरी जाय त्यारे पण युवान पुरुषो तेनी पाछळ-पाछळ भमवा लाग्या प्रवर्तमान आ वात गुरुने कही गुरुए तेना रक्षण माटे शशक ने भसक बने भाइयोने भलामण करी शशक अने भसक बंने

महायोद्धा हता. एकला एक हजार सुभटने पूरा पडे तेवा हता. एक जण उपाश्रयमां सुकुमारिकानुं रक्षण करतो अने एक जण गोचरीए जतो. जे कोइ युवान पुरुषो आवता तेने रखडतो मूकतो. आवी रीते घणा माणसोने मार मारीने तेओ त्रणे ए विराधना करी. बाद तेओ त्यांथी विहार करी सुदगिणी नगरीमां गया. त्यां रहेला तापसो साधुओने उपद्रव करवा लाग्या. एटले शसक ने भसक तेनी साथे क्लेश करवा लाग्या. पोताना भाई प्रत्येनी अनुकंपाथी सुकुमारिकाए अणसण कर्युं. घणा दिवसना उपवासथी तेने मूर्छा आवी गइ अने जाणे मृत्यु पामी गइ होय तेवी देखावा लागी. बने भाइओए जाण्युं के सुकुमारिका मरी गइ छे एटले एके तेने पोताना खभे उपाडी अने बीजाए तेनां उपकरणो उपाड्यां. ते समये पुरुषना स्पर्शथी तेमज शीतळ वायुना संचारथी सुकुमारिका सचेत थई. पुरुषनो स्पर्श थयो जाण्यो पण सुखानुभवथी कंई पण बोली नहीं. अरण्यमां तेनो त्याग करीने बन्ने भाइओ तो गुरु पासे गया. तेओना गया बाद सुकुमारिका पण सचेत थईने बेठी तेवामां एक सार्थ निकळ्यो. सार्थवाहे सुकुमारिकाने अतिशय रूपवंत जोइने पोतानी साथे लीधी अने तेने पोतानी स्त्री करी. काळ जतां विचरता विचरता शसक ने भसक बने ते सार्थवाहने गृहे गोचरी गया. सुकुमारिकाए ऊभी थइ तेओने गोचरी वहोरावी पण ए बन्ने जणा विस्मय पामी तेने जोवा लाग्या.

सुकुमारिकाए पूछ्युं-शुं जुओ छो? तेओए कह्युं-अमारी बहेन जेवी तुं जणाय छे पण ए वात केम संभवी शके? कारण के अमे तो तेने वनमां मरणावस्थामां त्यजी दीधी छे. सुकुमारिकाए कह्युं-हुं तमारी बहेन ज छुं. पछी सर्व वृत्तांत कही समजाव्यो. एटले तेओए सार्थवाह पासेथी पोतानी बहेनने मुक्त करावीने दीक्षा अपावी. बाद अणशण स्वीकारीने स्वर्गमां गइ. आ कथानो सार जाणी कदापि साधुए स्त्रीस्पर्श करवो नहीं. आ ज हकीकतनी पुष्टि करता विशेष कहे छे के—

जत्थित्थीकरफरिसं, लिंगी अरिहोवि सयमवि करिज्जा ।
तं निच्छयओ गोयम !, जाणिज्जा मूलगुणभट्ठं ॥ ८५ ॥
कीरइ बीअपएणं, सुत्तमभणिअं न जत्थ विहिणा उ ।
उप्पन्ने पुण कज्जे, दिक्खाआयंकमाईए ॥ ८६ ॥

[यत्र स्त्रीकरस्पर्शं, लिङ्गी अर्होऽपि स्वयमपि (स्वयमेव)कुर्यात् ।
तं निश्चयतो गौतम !, जानीयात् मूलगुणभ्रष्टम् ॥ ८५ ॥
क्रियते द्वितीयपदेन, सूत्राभणितं न यत्र विधिना तु ।
उत्पन्ने पुनः कार्ये, दीक्षाऽऽतङ्कादिके ॥ ८६ ॥]

गाथार्थ—साधुवेषधारी अने आचार्य पदवीथी विभूषित एवा मुनि पण जो स्वयं स्त्रीनो कर-स्पर्श करे तो हे गौतम! जरूर जाणवु के ते गच्छ मूळगुणथी भ्रष्ट छे अपवाद मार्गथी पण स्त्रीनो करस्पर्श करवानो निषेध कर्यो छे परन्तु दीक्षानो नाश थाय तेवु गभीर कारण आवी पडे तो जे गच्छमा आगमोक्त विधि जाणनारा द्वारा ज स्पर्श कराय तेवा गच्छने सुगच्छ जाणवो. ८५-८६

विवेचन—स्त्रीस्पर्श केटलो नामोसेमन छे ते आपणे पूर्वे जोई गया छीए पटले शास्त्रकारे आचार्यपदवी विभूषित तेमज प्रौढ विचारशील साधुने पण तेना स्पर्शनो निषेध कर्यो छे श्रीमदनिशीथ सूत्रना पांचमा अध्ययनमा कह्यु छे—"जत्थित्थीकरफरिसं, अतरिया कारणे वि उप्पन्ने। अरिहावि करिज्ज सयं, तं गच्छं मूलगुणमुक्कम् ॥ १ ॥" जे गच्छमा पदवीधर साधु वस्त्रादिकथी आच्छादित स्त्रीनो हाथ, कारण उत्पन्न थये सते पण स्पर्शे तेने चारित्र गुणरहित जाणवो ते ज अध्ययनमा विशेष कह्यु छे के— "जण्णं गोयमा! मेहुणं तं एगतेणं ३ णिच्छयओ ३ बाढं ३ तहा आउतेउसमारंभं च सव्वहा सव्वप्पयारेहिं सयय विवज्जेज्जा।" अर्थात् हे गौतम! मैथुन अने अप्काय तथा अग्निकायना आरंभने सर्व प्रकारे निश्चयपूर्वक हमेशां वर्जवो शास्त्रकार विशेषमा फरमावे छे के-दीक्षा पे रोगनु कष्ट आवी पडे त्या पण आगम विधि जाणनार ज स्त्री-स्पर्श करी शके आगमनो ज्ञाता होय, प्रौढ होय, पदवीधर होय तेवा प्राप्त पुरुषने माटे पण आगम विधि मुजब स्पर्शनु फरमान छे तो जेओ अज्ञानी छे तेओने माटे कहेवु ज शु? श्रीबृहत्कल्पना छठ्ठा उद्देशामा आगमविधि शु छे? तेनु वर्णन आपेल छे के— "निग्गंथस्स य अहे पादंसि खाणू वा कटंए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथे नो सचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निग्गंथस्स य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथे नो सचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥ २ ॥ निग्गंथीए अहे पादंसि खाणू वा कटए वा हीरए वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथी नो सचाइज्जा नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, तं निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ ॥ ३ ॥ निग्गंथीए अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा जाव निग्गंथे नीहरमाणे वा नाइक्कमइ ॥ ४ ॥" (१) कोई निर्ग्रंथने पगमा काष्ठनी सळी, कांटा, हीरो कांकरा के तेवी पेसी गइ होय

अने ते कांटा प्रमुखने काढवा पोते समर्थ न होय त्यारे साध्वी पासे विशुद्धि करावे तो ते बन्ने भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करता नथी, एटले आ कारण-प्रसंगथी साधु-साध्वीनो स्पर्श थाय तो पण ते बन्ने आज्ञा-धारक ज छे (२) बीजा सूत्रमां दर्शाव्युं छे के-कोई साधुनी आंखमां मच्छर प्रमुख सूक्ष्म जीव, सूक्ष्म बीज, सचित्त अचित्त पृथ्वीनी रज (धूळ) पडी होय अने ते जीवादिकने काढवा समर्थ थाय तो साध्वी सहाय करी शके आम करवामां श्रीतीर्थंकर भगवंतनी आज्ञा उल्लंघाती नथी (३-४) जेवी रीते साधु संबंधी कह्युं तेवी ज रीते साध्वीना पगमां कंटक प्रमुख पेसी गया होय अने आंखमां सूक्ष्म जीवादिक प्रवेशी गया होय तो साधु तेमने सहाय करी शके, ए वात त्रीजा-चोथा सूत्रमां दर्शावी छे-आ चार अपवादो उत्कृष्ट कारण आवी पडे त्यारे ज सेववाना छे, कारण के निर्युक्तिकार कहे छे के-" पाए अच्छि वि लग्गे, समणाण संजईहिं कायव्वं । समणीण समणेहिं, वोच्चत्थे होंति चउगुरुगा ॥१॥" जे साधुने पगमां कंटकादिक लाग्या होय अथवा आंखमां सूक्ष्म जीवादिक प्रवेश्यां होय तो बीजा साधु तेनी विशुद्धि करे अने जो न करे तो चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे वळी ज रीते साध्वीना पगमां कंटकादिक पेसी गया होय त्यारे बीजी साध्वी तेनी विशुद्धि करे अने जो न करे तो तेने पण चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे आ उपरथी समजी शकाय छे के-उत्कृष्ट कारण आवी पड्या सिवाय उपर दर्शावेला चार अपवादनो आश्रय न लेवो जो ते प्रमाणे न वर्ते तो कई रीते दोषापत्ति थाय छे ते नीचेना श्लोकोथी जणाशे " अण्णत्तो चिअ कुट्टसि, अन्नत्तो कंटओ खयं जात । दिट्ठं पि हरवि दिट्ठिं, किं पुण अदिट्ठइअरस्स ॥ २ ॥ कंटककणुए उद्धर, धणियं अवलंब मे भमति भूमी । मूलं च वत्थिसीसे, पेल्लेहि घण थणो फुरति ॥ ३ ॥" साध्वी पासेथी कांटो कढावता साधु धूर्तताथी तेमज स्वभावथी पोताना वस्त्रादिक बराबर ढांक्या विना बेसे तो साध्वी तेने जेम होय तेम देखवाथी चलित चित्त वाळी बने अने कांटो काढवानुं स्थान मूकी अन्य स्थळे खोतरे त्यारे साधु 'अहीं खोतर, अहीं खोतर' एम अन्य अन्य स्थान दर्शावता बन्नेनो परस्पर वधतो वार्तालाप छेवटे चारित्रभ्रष्टतामां परिणमे जे भुक्तभोगी स्त्री होय ते पण अन्यनुं लिंग देखी विह्वळ थई जाय छे तो जेणे कदापि लिंग देख्युं ज नथी तेवी स्त्री मन चलित बने तेमां आश्चर्य शुं ? जो साध्वी साधु पासे कंटकादिक कढावे के आंखमांथी रज दूर करावे तो स्पर्श मात्रथी विह्वळता वधे अने पछी साध्वी कहे के-मने चक्करी आवे छे, पृथ्वी फरती जणाय छे, मारा मस्तकमां पीडा थाय छे, मारा स्तन धडकवा लाग्या छे माटे मने अवलंबन आपो आ प्रमाणे कथा-परिचय वधता तत्काळ चारित्रनो नाश थाय बीजा पण घणा दोषो आवा प्रकारना वर्तनथी उपजे छे तेनुं विस्तृत विवेचन श्रीसुयगडांगसूत्रना

" ओपरिज्ञा " नामना अध्ययनमां आपेल छे ते पैकी रोहा नामनी तापसीनी कथा जाणवा योग्य छे, जे नीचे प्रमाणे—

रोहा तापसीनी कथा—

कोई एक अजापालक (भरवाड) जांबूना वृक्ष ऊपर बेठो हतो तेवामां रोहा नामनी तापसी त्यां आवी चढी भरवाडनुं सुंदर रूप अने मरावदार चहेरो जोईने तेने पसन्द पडवाथी पहेलुं विचार्युं के—आ भरवाड केवो चतुर छे तेनी परीक्षा करुं आ प्रमाण विचारी तेणे तेनी पासे जांबूडा माग्या, एटले अजापालके कह्युं के—ऊना आपुं के ठंडा ? रोहाए कह्युं के—ऊना आप एटले भरवाडे पाकेला जांबुडा नीचे धूळमां नाख्या त्यारे तापसी तेने फूंकी फूंकीने खावा लागी अने पूछ्युं के—आ जांबुडा ऊना क्यां छे ? त्यारे भरवाडे कह्युं के—जे ऊना होय ते फूंकीने ठंडा करीने खवाय आ सांभळी रोहाए जाण्युं के—भरवाड छे तो चतुर पछी कपट करी तेने कहेवा लागी के—मारा पगमां कांटो वाग्यो छे ते तुं काढ भरवाड नीचे उतरी कांटो काढवा लाग्यो त्यारे रोहा खड् हसी, पण पगमां कांटो क्यां हतो के निकळे ? चाहीथार आम तेम तपास कर्या बाद अजापालके कह्युं के—तारा पगमां कांटो देखातो नथी बाद रोहा ते भरवाडने पुठ दईने बेठी अने हावभाव दर्शाववा लागी छेवटे तेनी साथे भोग भोगवी चाली गई आ प्रमाणे रोहाए कंटकना मिषथी अजापालकने भ्रष्ट कर्यो तेम साधु या साध्वीए परस्पर कंटकादि न कढाववा

आ कथन अनुलक्षीने विशेष वर्णन करता टीकाकार कहे छे के—

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणा फासभावसंबन्धो ।
पडिगमणादी दोसा, भुत्तमभुत्ते य णेयव्वा ॥ ५ ॥
दिट्ठे संका भोइय–घाडिगणातीयगामबाहियाए ।
चत्तारि छच्च लहुगुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥ ६ ॥
आरक्खियपुरिसाणं, तु साहणे पावती भवे मूलं ।
अणवट्ठप्पो सेट्ठीणं, दसमं च निवस्स कधितम्मि ॥ ७ ॥
एए चेव य दोसा, असंजतीमादि पच्छकम्मं च ।
गिहिएहिं पच्छकम्मं, तम्हा समणेहिं कायव्वं ॥ ८ ॥
एवं सुत्तं अफलं, सुत्तनिवातो तु असति समणाणं ।
गिहि १ अण्णतित्थि २ गिहिणी ३–परउत्थिगिणी तिविहभेदो ॥ ९ ॥
जतिसीमम्मि न पुच्छति, वणुपोत्तेसु व न वासि पप्फोडे ।
तो से अभेसिंऽसति, दव दलती उ मा दगं धावे ॥ १० ॥

थयते ये साधु या ता साध्वी पासे बेसे (१५) जेवी रीते पगना कांटादिक काढवाना उत्सर्ग अने अपवाद मार्ग कह्या तेवी ज रीते आंखनी रज संबंधी पण जाणवु (१६) साधुनी आंखमां पडेल तृणना संबंधमां सुभद्रानु दृष्टांत छे, जे नीचे प्रमाणे—

सती सुभद्रानु वृत्तांत—

वसंतपुरमा जिनदास नामनो जैनधर्मरक्त श्रेष्ठी हतो तेने तत्त्वमालिनी धर्मपत्नीद्वारा सुभद्रा नामनी पुत्रीनी प्राप्ति थइ सुभद्रा जेवी रूपवान हती तेवी ज गुणवान सती पण हती जिनदासे पण पोतानी एकनी एक पुत्रीने लाडकोडमा उछेरी जिनदास शेठना धार्मिक संस्कारो पण सुभद्राए झील्या अने ते शुद्ध सम्यक्त्वधारिणी बनी सुभद्राए यौवनवयमा प्रवेश करतां जिनदासने तेने योग्य पति माटे चिंता उत्पन्न थइ तेनी इच्छा सुभद्राने योग्य जैनधर्मी कुळमा परणाववानी हती

आ अरसामा चंपानगरीनो बौद्धधर्मी बुद्धदास नामनो व्यापारी वसंतपुर आव्यो एकदा जिनदास श्रेष्ठीना महेल पासेथी पसार थतां तेणे सुभद्राने जोइ पोताने तन अनुभव थयो के—आ युवती वादळामांथी छूटी पडेली वीजळी तो नहीं होय? सुभद्राना रूपराशिए बुद्धदासनु चित्त आकर्षी लीधुं पण तेने प्राप्त करवा शुद्ध जैनधर्मी थया सिवाय छूटको नहोतो, कारण के जैन धर्मीने ज पोतानी कन्या परणाववानी जिनदासनी मान्यता अचळ हती पोताना कार्यनी सिद्धि माटे बुद्धदासे जैन शास्त्रोनो अभ्यास करवा मांड्यो अने आवश्यकोचित करणी सामायिक, प्रतिक्रमण, जिनपूजा, व्याख्यानश्रवण, गुरुवंदन अने नवकारसी आदिक प्रत्याख्यान पण करवा लाग्यो सुभद्राना रूप तेमज गुण ऊपर मुग्ध थयेला बुद्धदासे जिनदास पासे तेनी पुत्रीना पोतानी साथे लग्न करवानी मागणी करी अनुकूळ समये बुद्धदास अने सुभद्रा लग्नग्रंथीथी जोडाया

सांसारिक जीवन शरू कर्या बाद बुद्धदासने पोतानी मातृभूमिनु आकर्षण थयु, पण जिनदास श्रेष्ठी पोतानी कन्याथी जुदा पडवा तैयार न हता वळी सुभद्राने जैनधर्मी नहीं पण एक चुस्त बुद्धधर्मी कुटुम्बमा वसवानु हतु आ कारणथी बुद्धदास पण मनमा मूंझातो जिनदास शेठ जमाईनी मुंझवण समजता हता आ समय धर्म धर्म वच्चे तीव्र स्पर्धा चालती हती परन्तु जिनदास जेवा चुस्त जैन पोतानी कन्याने इतरधर्मी कुटुम्बमा वसवा माटे परवानगी आपे ए असंभवित हतु छेवटे सुभद्राए समजाववाथी अने जमाईना आग्रहथी जिनदासे रजा आपी अने सासरेथी जुदा घरमा वसवानो अने सुभद्राना धर्म-विचार अने आचार-स्वतंत्रता सरक्षवानो बुद्धदासने भलामण करी

चंपानगरीमा आवी सुभद्रा पण नित्यनियम मुजब वर्तन करवा लागी तेनु सौभाग्य सुख अन्यने आंखना कणानी जेम खूंचवा लाग्यु तेना सासु-ससराने बुद्धदास छीना दास जेवा जणावा लाग्यो, परन्तु तेओना कशो उपाय न चाल्यो

धीमे धीमे धुंधवातो आ ईर्ष्याग्नि घरना आंगणामां आवी पहोंच्यो. पोताना कुटुंबमां एक जैनधर्मी स्त्री पोताना धर्मनुं यथार्थ पालन करे ते तेना सासु-ससराथी सहन न थयुं. तेओ तेनो उघाडो विरोध करवा लाग्या, पण तेनी सुभद्राए कंई दरकार न करी.

हवे तेना सासरियाओए सुभद्राना छिद्रो जोवा शरू कर्या. एकदा तेओनी धारणा फळीभूत थई. एटले मासक्षमणने पारणे कोई तपस्वी मुनि सुभद्राना गृहे गोचरी अर्थे पधार्या. तेमनी आंखमां पवनना वेगथी एक तणखलुं पडेलुं, पण देह प्रत्ये उदासीन भाववाळा ते मुनिवरने तेनो दरकार न हतो. सुभद्राए गोचरी वहोरावतां मुनिश्रीने थती व्यथा निहाळी. एटले लघुलाघवी कळाद्वारा पोतानी जीभवडे आंखमांथी तणखलुं चपळताथी कई लीधुं परन्तु तेम करतां पोताना भाल प्रदेशमां करेल ताजा तिलकनुं कंकु पण मुनिश्रीना कपाळमां चोंटी गयुं. दूरथी आ दृश्य तेनी सासुए जोयुं. एटले तेना अत्यार सुधी महामहेनते दबावेला क्रोध-दावानळ भभूकी उठ्यो. तेणे पोताना पुत्रने बोलावी सर्व हकीकत जणावतां कह्युं- जो, तारी स्त्रीना चरित्र! ज्यां सुधी वात बहार नथी गई त्यां सुधी सारुं छे पण आवी वात प्रसरतां शहेरमां तारी लाखनी प्रतिष्ठा राखमां मळवानी थशे, माटे पाणी पहेलां ज पाळ बांध अने कोई समय बळतामां घी होमवानी माफक बुद्धदासने माताना वचननी असर थई. तेणे सुभद्रा साथेना वहेवार बंध करी दीधो. बुद्धधर्मी भक्तोए आ हकीकतनो शहेरमां वायुवेगे प्रचार कर्यो, जैन श्राविका सुभद्रानी स्थळे स्थळे निंदा थवा लागी. आ बाजु सुभद्रा तो मेघाच्छादित सूर्यनी माफक निर्विकार अने प्रतापी ज हती. कलंक, निंदा अने अपवादनी मध्यमां पण तेने अणुमात्र क्रोध के आवेश स्पर्शी शक्या नहीं. शासन हिलनाथी तेणे आ कारण माटे शासनदेवीनी सहाय मागी अने तेनी आराधना माटे कायोत्सर्ग कर्यो. अट्ठमनी अंते शासनदेवीए पण प्रत्यक्ष थई तेनुं कलंक दूर करवा वचन आप्युं. सुभद्राए कायोत्सर्ग पारी पारणुं कर्युं.

बीजा दिवसनो प्रातःकाळ थतां ज नगरमां हाहाकार प्रवर्ती गयो. शहेरना चारे दिशाना दरवाजा ओचींता (आपमेळे ज) बंध थई गया. बहारनी दुनिया साथेना व्यापारीओनो वहेवार तूटी गयो. आ दरवाजा न खुले तो समग्र नगरी क्षुधा-तृषाना संकटमां सपडाय. नगरवासीओनी व्याकुळता वधी गई. राजा पासे वात पहोंची. राजाए द्वारपाळोने बोलाव्या. द्वारपाळोए कह्युं के-दैवकृत उपसर्ग सिवाय अमने बीजुं कशुं कारण जणातुं नथी, माटे देव-प्रार्थना कराय. धूप-दीप-पुष्पादिना बलि समर्पीने राजवीए देवने सद्भावपूर्वक प्रार्थना करतां ज देव-वाणी थई के-"आ नगरनी कोई पण साची सती स्त्री काचा सुतरना तांतणाद्वारा चाळणी बांधी ते चाळणीद्वारा कूवामांथी पाणी सींची बारा ऊपर छांटशे त्यारे ज ते दरवाजा उघडशे." राजाए आवी सती स्त्रीनी शोध माटे नगरीमां पडह वगडाव्यो.

आंख मींचीने उघाडीए तेटला समयने निमेष कहेवामां आवे छे आटला सूक्ष्मकाळ पर्यंत पण जेनो निषेध कर्यो छे तेना संसर्गनी तो वात ज शामाटे करवी ? शास्त्रकार आ संबंधमां अपवाद मार्ग पण दर्शाव्यो छे श्रीनिशीथसूत्रमां परिग्रहना अधिकार छे त्यां दर्शाव्युं छे के—"गिलाणमंगीकृत्य घेज्जहुताय हिरण्णपि गेण्हेज्जा उत्सर्गस्यापवाद, विसे कणगं ति विषग्रस्तस्य कनक-सुवर्णं तं घेत्तु घसिऊण विसणिग्घायणट्ठा तस्स पाणं दिज्जति, अतो गिलाणट्ठा उरालियग्गहणं मनेज्ज त्ति ॥" ग्लान साधुना उपचारने माटे, जेमने झेरवा माटे अने कोई साधुने विस्फोटक थयुं होय त्यारे सोनुं घसीने पावा माटे उपयोगमां लेवुं पडे तेटला समय सोनुं ग्रहण करे परन्तु कार्य परिपूर्ण थये अर्ध निमेष मात्र समय पर्यन्त पासे राखी शकाय नहीं.

आ प्रण गाथामां धन, धान्य विगेरेने लगती जे मर्यादा बतावी छे ते मर्यादाने साचव-पाळे ते ज सुगच्छ कहेवाय. हवे साध्वी संबंधी गच्छमर्यादा वर्णवे छे-

जत्थ य अज्जालद्धं, पडिगहमाईवि विविहमुवगरणम् ।
परिभुज्जइ साहूहिं, तं गोयम ! केरिसं गच्छम् ? ॥ ९१ ॥

[यत्र चार्यालब्धं, पतद्ग्रहाद्यपि विविधमुपकरणम् ।
परिभुज्यते साधुभिः, स गौतम ! कीदृशो गच्छः ? ॥ ९१ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां साध्वीओए मेळवेल पात्रादिक उपकरणोनो साधुओ वगरकारणे उपभोग करता होय तेने हे गौतम ! केवो गच्छ कहेवो ? अर्थात् ते सुगच्छ नथी ज.

विवेचन—साध्वीए आणेल पात्रादिक उपकरणो पण साधुए स्वीकारवाना निषेध छे तो पछी तेमनो लावेल आहार तो केम ज कल्पी शके ? श्रीयतिजीत कल्पमां कह्युं छे के-" गुरुउवहिअपडिलेहे, छप्पइअअसोहिकंमि तद्ग्गहणे । लहुया गुरुगज्जाणं, सयमेव य वत्थपायगहे ॥१॥ " गुरुनी उपधि पडिलेहे नहीं, तेमां जू विगेरेनी तपास न करे तो लघुचारमासी दंड आवे अने गृहस्थ पासे वस्त्र, पात्रादिक ग्रहण करे तो चारमासी गुरुदंड लागे साध्वीने गृहस्थ पासेथी वस्त्रादिक ग्रहण करतां घणा घणा दोषो उद्भवे छे जणावता कहे छे के-साध्वीओने ए प्रमाणे ग्रहण करता कोई नूतन श्रावक जुए तो मिथ्यात्वी बने, वळी 'साध्वीओ तो पात्रादिकना मिषथी भाडुं ले छे' तेवी शंका करीने उपजे, स्त्रीजाति स्वभावथी चपळ होय छे तेथी तेनी साथे मैथुन-सेवननी इच्छाथी गृहस्थ वस्त्र-पात्रादिक वहोरावे अने आ तेना

इच्छानो अनादर थाय तो लोकमां हांसी करे, वळी स्त्रीजातिनुं सत्त्व (धैर्य) अल्प होय छे एटले मारा वस्त्रादिकथी लोभाई जाय छे अने तेने अंग अकार्य करवा प्रेराय छे वळी रूपवती साध्वीने जोईने मोह पामेल कोई गृहस्थ वशीकरणद्वारा तेने व्यामोह पण पमाडे-इत्यादिक अनेक कारणोथी शास्त्रकारे साध्वीने वस्त्र-पात्रादिक ग्रहण करवानो निषेध फरमाव्यो छे

साध्वीने वस्त्रादिक तो जोइए ज, तो तेमणे क्यांथी मेळववा ? ते प्रश्नना जवाबमां जणाववामां आवे छे के-तेणे पोतानी जरूरियात पोताना आचार्यने जणाववी अने आचार्य पण विधिपूर्वक साध्वीने आपे ते विधि कई छे ? ते जणावता कहे छे के-आचार्य साध्वीने योग्य उपधि मगावीने सात दिवस पोतानी पासे राखे, बाद वहण करीने स्थविराने पहेरावे अने विकार न थाय तो सुन्दर रीते परीक्षा करीने ते उपधि प्रवर्तनीने आपे अने ते पण योग्य विधिपुरस्सर साध्वीने आपे जो परीक्षा कर्या विना उपधि आपे अगर तो सीधेसीधा साध्वीने आपे तो आचार्यने चारमासी गुरु प्रायश्चित्त लागे प्रवर्तनीने सोंप्या सिवाय कोई साध्वीने आचार्य सीधा उपधि आदि आपे तो अन्य साध्वी विचारे के-साध्वी युवान ने रूपवती छे तेथी आचार्य तेने वस्त्र-पात्रादिक सीधा आप्या आवी रीते कुशंका करवानुं कारण मटे उपधि आपवा संबंधी विस्तृत अधिकार श्रीनिशीथसूत्रना पंदरमा उद्देशानी चूर्णिमां छे.

अपवादमार्ग दर्शावता कहे छे के-साधुना अभावमां साध्वीए वस्त्रादिक उपकरणो ग्रहण करवां पण तेमां स्थविराने क्रम साचववो जो स्थविरा साध्वी न होय तो युवती साध्वी अन्य साध्वी साथे जईने आपे आ संबंधमां विशेष पुष्टि करता कहे छे के—

अइदुल्लहभेसज्जं, बलबुद्धिविवड्ढणपि पुट्ठिकरम् ।
अज्जालद्ध भुंजइ, का मेरा तत्थ गच्छम्मि ? ॥ ९२ ॥

एगो एगित्थिए सद्धिं, जत्थ चिट्ठिज्ज गोयमा ! ।
सजइए विसेसेणं, निम्मेरं तं तु भासिमो ॥ ९३ ॥

दढचारित्तं मुत्तं, आइज्जं मयहरं च गुणरासिं ।
इक्को अज्जावेई, तमणायारं न तं गच्छम् ॥ ९४ ॥

[अतिदुर्लभभैषज्य, बलबुद्धिविवर्धनमपि पुष्टिकरम् ।
आर्यालब्ध भुज्यते, का मर्यादा तत्र गच्छे ? ॥ ९२ ॥

एक एकाकिस्त्रिया सार्धं, यत्र तिष्ठेत् गौतम ! ।
संयत्या विशेषेण, निर्मर्याद तं तु भाषामहे ॥ ९३ ॥
दृढचारित्रा निर्लोभा, आदेया महत्तरा च गुणराशिम् ।
एकाकी अध्यापयति, सोऽनाचारः न स गच्छ ॥ ९४ ॥]

गाथार्थ-जे गच्छमां साधुओ साध्वीए आणी आपेल, बळ ने बुद्धि वधारनारा पुष्टिकारक, अति दुर्लभ औषध-भेषजनु सेवन करतां होय ते गच्छमां मर्यादा क्याथी होय ? एकलो साधु एकली स्त्री अथवा साध्वी साथे रहे तेने हे गौतम ! अमे विशेष प्रकारे मर्यादा विनानो ज गच्छ कहीए छीए वळी दृढ चारित्रशील, निर्लोभी, आदेय वचनवाळी, महामतिवंत अने गुणना निधान रूप महत्तरा (सर्व साध्वीओनी स्वामिनी) साध्वीने साधु एकलो भणावे तो ते पण अनाचार ज छे.

विवेचन—चाणुमी गाथामां आपेल मेरा शब्द देशी छे अने तेनो अर्थ मर्यादा थाय छे जे गच्छ मर्यादावाळो नथी ते तीर्थंकरनी आज्ञा बहार छे दुष्प्राप्य, बुद्धि वधारनार, शक्ति-दाता एवु औषध पण जो साध्वीथी लवायेल होय तो साधुथी वापरी शकाय नहीं

साधुने एकली स्त्री साथे वात करवामां पण निषेध कर्यो छे, तो एकली साध्वी साथे वास के वार्तालाप तो थाय ज क्याथी ? एकान्तवास बहु बुरी चीज छे एकांतमां रहेता मनुष्योना अंग-प्रत्यंगो जोवाय छे अने परस्परना विशेष वार्तालापथी मन चलित थई जाय छे एकदा श्रेणिक महाराजा अने राणी चेलणाने भगवाननी पर्षदामां जोईने तेमज तेओना रूपादिकना विचार करीने श्रीमहावीर भगवंतना साधु तथा साध्वीए भवान्तरमां तेवा थवानु नियाणु कर्युं हतुं श्रीमहावीर परमात्मानां दृढ अने क्रियापात्र साधु-साध्वीनु मन चलित थई गयु तो पछी बीजा सामान्य साधु या साध्वी माटे तो शु कहेवु ? माटे ज शास्त्रकारे एकान्तमां तो स्त्री साथे वार्तालाप करनार साधुने मर्यादाहीन अने साध्वी साथे वास करनारने विशेष प्रकारे मर्यादाहीन कहेल छे

चारित्रना स्थिर परिणामवाळी, स्पृहा रहित, गुणवान अने महत्तरा (सर्व साध्वीओनी स्वामिनी) पदने प्राप्त थयेल एवी वृद्ध साध्वी पण जो साधु पासे एकांतमां भणवा बेसे तो ते गच्छ अनाचारी छे साधुओना समूहमां जे स्थान आचार्यनु छे तेनु ज स्थान (प्रतिष्ठा) महत्तरा(आचार्याणी)नु छे महत्तरा पदवी क्यारे प्राप्त थाय ते संघ धर्मां कह्यु छे के-" सीलत्था वयकरणा, कुलजा परिणामिया य गंभीरा । गच्छाणुमया वुड्ढा, महत्तरय लहइ अज्जा ॥ १ ॥"

शियळवती, सुद्रुस्त करनारी, कुलीन, वृद्धा, गंभीर अस्त करणवाळी, गच्छमां मान्य एवी साध्वी महत्तरा पदने प्राप्त करे ने हजु पण आ संवन्धमां विशेष वर्णन करता कहे छे के—

घणगज्जियहयकुहए–विज्जूदुग्गिज्झगूढहियियाओ ।
अज्जा अवारियाओ, इत्थीरज्जं न त गच्छम् ॥ ९५ ॥
[घनगर्जितहयकुहक–विद्युद्दुर्ग्राह्यगूढहृदया ।
आर्या अनिवारिता , स्त्रीराज्य न स गच्छः ॥ ९५ ॥]

गाथार्थ—मेघनो गर्जारव, अश्वना उदरमा रहेलो वायु अने वीजळीना चमकारानी जेम जेमना हृदय कळी न शकाय एवी साध्वीओ ज्या स्वेच्छा मुजब गमनागमन करे ते स्त्रीराज्य छे पण गच्छ नथी.

विवेचन—मेघ गर्जे त्यारे निश्चित न कही शकाय के–आ वरसशे के नहीं वरसे वळी घोडो दोडे त्यारे तेना पेटमा एक प्रदेशमां समूर्च्छिम वायु उपजे छे अने तेथी तेना उदरमां खड–खड थवा अवाज थाय छे पण ते मालूम पडतो नथी कलिकालसर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्राचार्ये परिशिष्ट पर्वमा कह्यु छे के–
" दक्षो च स्वर्णकारोऽपि, चरित योषितामहो ! । अश्वाना कुहकाराव–मिन को वेत्तुमीश्वरः ॥ १ ॥" ज्ञाता पुरुषो सोनी, स्त्रीनु चरित्र अने अश्वना उदरमा थतो 'कुहक' एवो शब्द जाणवाने कोण समर्थ छे ? अर्थात् ते सर्व जाणी शकाता ज नथी एटले कहवानु तात्पर्य ए छे के–स्त्री ए कपटमा करंडिया छे तेना स्वभाव चपळ होवाथी तेनु हृदय न कळी शकाय तेनु दोष छे आवी स्त्रीओ (साध्वीओ) जे गच्छमां अंकुश विना वरती होय ते गच्छने गच्छ न कहेवाय पण स्त्रीराज्य ज कही शकाय लौकिक शास्त्रोमां पण स्त्री–चरित्र संबंधी कह्यु छे के—

अश्वप्लुत माधवगर्जितं च, स्त्रीणां चरित्र भवितव्यता च ।
अवर्षण चाप्यतिवर्षणश्च, देवा न जानन्ति कुतो मनुष्याः ? ॥ १ ॥
जलमज्झे मच्छपय, आगासे पक्खियाण पयपत्ति ।
महिलाण हिययमग्गो, तिन्नि वि लोए न दीसन्ति ॥ २ ॥
यदि स्थिरा भवेद्विद्युत्, तिष्ठन्ति यदि वायवः ।
दैवात् तथापि नारीणा, न स्थेम्ना स्थीयते मनः ॥ ३ ॥

घोडाना पेटमां खड–खड एवा थतो ध्वनि, गाजता मेघ वर्षशे के केम ? स्त्रीनु चरित्र, भविष्यमा शु थवानु छे अने शुं थवानु नथी ? आ वात देवो

पण जाणी शकता नथी तो पछी मनुष्योनी शक्ति कई गणत्रीमां ? जळमां माछलानो पग, आकाशमां उडता पक्षीओना पगनी पंक्ति तेमज स्त्रीनुं हृदय-आ त्रणे बाबत जगतमां देखी शकाता नथी कदाच दैवयोगथी वीजळी स्थिर बनी जाय, पवनो पण एक जग्याम रहे परन्तु स्त्रीनु मन तो कदापि स्थिर रहे ज नहीं

साध्वी पण स्त्रीजाति ज छे तेथी ते पण चपळ ने चंचळ स्वभाववाळी होय छे जो तेने लगाम विनाना अश्वनी माफक छूटी मूकवामा आवे तो ते कल्याण साधवाने बदले उलटु हानिकर ज वर्तन आचरे स्त्रीजातिने केटला अंकुशनी जरूर छे ते नीचेना श्लोकथी बराबर स्पष्ट समजाशे कह्यु छे के—

" पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने । पुत्रस्तु स्थविरे भावे, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥१॥ " बाल्यवयमा कुमारी होय त्यां सुधी स्त्रीनु रक्षण पिता करे छे, बाद युवती थाय त्यारे धणी पोषण करे अने वृद्धा थाय त्यारे पुत्रादिक तेनु रक्षण करे, पण स्त्री स्वतंत्र न रहे स्त्रीनु चित्त केटलुं दुष्ट होय छे ते विषयमा रेवतीनु वृत्तान्त सारो प्रकाश फेंके छे—

रेवतीनु दृष्टान्त–

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता नगरनी बहार गुणशील नामना यक्षनु मंदिर हतु ते नगरीमा महाशतक नामनो धनाढ्य गाथापति वसतो हतो तेना आठ क्रोड सोनैया भंडारमा हता, आठ क्रोड व्यापारमां हता अने आठ करोड सोनैयानु घरेणुं हतु आ उपरांत दश-दश हजार गायोनु एक गोकुल एवा आठ गोकुल एटले एंशी हजार गायोनो ते स्वामी हतो तेने तेर पत्नीओ हती, तेमा रेवती मोटी हती रेवती पोताना पियरथी आठ क्रोड सोनैया अने आठ गोकुल कन्यादानमा लावी हती ज्यारे बाकीनी बार पत्नीओ एक एक क्रोड सोनैया अने एक-एक गोकुल लावी हती आ रीते महाशतकनी संपत्ति अने ऋद्धि अढळक हती

भगवान महावीर विहार करता करता राजगृहीना गुणशील उद्यानमा समवसर्या सर्व लोकोनी साथे महाशतक पण वंदनार्थे गयो प्रभुनी अमृतमय देशना सांभळी समस्त पर्षदा आनंदित बनी सर्व पोतपोताने स्थाने गया बाद महाशतके परमात्माने विज्ञप्ति करी के-हे प्रभो ! हुं पंचमहाव्रतरूप सर्व विरति ग्रहण करवा अशक्त छु, परन्तु मने समकितमूळ श्रावकना बार व्रतरूप धर्म उच्चरावो भगवते कह्यु के-'धर्मस्य त्वरिता गतिः' धर्मना सारा कार्यमा कदापि ढील न करवी महाशतके श्रावकना व्रतो अंगीकार कर्या आणंद श्रावक करतां विशेष ए ग्रहण कर्यु के-चोवीश क्रोड सोनैया उपरांत संपत्ति वधे तो तेनो धर्ममार्गमा व्यय करवो अने प्रतिदिन व्यापार करता बे कांसाना पात्र भराय तेटलु रूप उपार्जन [illegible]

तेर स्त्रीओ उपरांतनो पण त्याग. धीमे धीमे महाशतक जीवाजीवादिक नव तत्त्वना ज्ञाता थया. महावीर भगवंत पण अन्यत्र विहार करी गया.

एकदा रात्रिसमये रेवती जागृत थइ गइ अने कुटुम्ब संबंधी विचारणा करवा लागी. तेयामां तेने विचार आव्यो के-आटली बधी सम्पत्ति अने ऋद्धि होवा छतां हुं महाशतक साथे यथेच्छ भोगविलासो भोगवी शकती नथी. वळी मारी शोक्यो अंतरायभूत (वच्चमां आवे) छे माटे तेने अग्निना उपद्रवथी, शस्त्रप्रहारथी के विषप्रयोगथी मारी नाखुं. आ प्रमाणे दृढ विचार करी पोतानी शोक्योना छिद्रो जोवा लागी. सर्वो वच्चे परस्पर अंतर पडायां. रेवतीए छ शोक्याने शस्त्रप्रहारथी अने छने झेर आपीने मारी नाखी. तेना बार क्रोड सोनैया अने बार गोकुलो पण पाने लइ लीधां.

बाद रेवती महाशतक साथे यथेच्छ भोगो भोगववा लागी. विशेष भोग भोगववानी लालसाओ ते मांसलोलुपी थइ अने प्रतिदिन तळेलां, अग्निमां शेकेलां विगेरे प्रकारनां मांस खावा लागी. मांसनी साथे मदिरानुं व्यसन पण थयुं.

एकदा राजगृही नगरीमां पर्वना दिवसोमां अमारी पडह वाग्यो. पटले रेवतीने मांसने माटे मुश्केली ऊभी थइ. राजाज्ञानुं उल्लंघन थाय तो शिक्षापात्र थवाय. एटले मांसना अभावमां रेवतीए पोतानां गोकुलना माणसने बोलावीने कह्युं के-तारे हमेशां बे वाछडाओने मारीने तेनुं मांस मने मोकलाववुं. आ प्रमाणे आवतां मांसने शेकीने, तळीने रेवती प्रतिदिन खावा लागी.

महाशतक श्रावक व्रत-पालन करतां चौद वर्ष व्यतीत थयां. एकदा पाछली रात्रे धर्म-जागरिकामां विचार कर्यो के-गृहव्यवस्थामां में आटलां वर्षो गाळ्यां, हवे तो प्रात:काळे पुत्रने सर्व कारभार सोंपी हुं श्रावकनी प्रतिमा धारण करुं. प्रात:काळमां कुटुम्बीजनोने जमाड्या, पुत्रने भार सोंप्यो, जिनेश्वरे कहेल [illegible] अंगीकार करीने तेणे पौषधशाळामां वास कर्यो. आ अवसरे मांस तथा [illegible] मदोन्मत्त बनेल रेवती पोतानां केश छूटा मूकी, ओढणाना छेडाओ [illegible] करती पौषधशाळामां ज्यां महाशतक बेठा छे त्यां आवीने कहेवा लागी के- हे श्रावक! तुं चारित्र धर्मनी इच्छा करे छे, पुण्य बांधे छे, मोक्षनी [illegible] छे पण ते धर्म, पुण्य, स्वर्ग अने मोक्ष विगेरे शुं छे? धर्म [illegible] थवाना तारी इच्छा छे पण मारी साथे यथेच्छ भोग-विलासमां [illegible] सुख तो अहीं ज तने देखाशे. मोक्षमां तो स्त्री नथी, तने [illegible] शुं फळ? वळी परलोक कोणे जोयो छे? माटे मारी साथे [illegible] भोगव. रेवतीना आवां कष्टदायक वचन सांभळ्यां छतां [illegible] चलायमान न थया त्यारे रेवती जेवी आवी हती तेवी चाली गई.

बाद महाशतक श्रावके क्रमश: श्रावकनी [illegible] पहेली प्रतिमा-जिन धर्मने विषे रुचि, मिथ्यात्व [illegible], [illegible]

विगेरे न करे परन्तु सम्यक्त्व शुद्ध रीते पाळे. बीजी त्याग न करे. बीजी प्रतिमा-सम्यक्त्व होय, श्रावकना बार व्रतो शुद्ध रीते पाळे पण सामायिक तथा देशावगासिक न करे. त्रीजी-सर्व प्रकारे सम्यक्त्व पाळे, श्रावकना बार व्रतो पाळे, सामायिक तेमज देशावगासिक करे परन्तु आठम, चौदश, पूनम के अमावास्याने दिवसे पोषह न करे. चोथी-समकित, बार व्रत, सामायिक विगेरे करे, आठम-चौदश विगेरे दिवसोने विषे पोषध करे परन्तु रात्रिने विषे काउस्सग्ग-ध्यान करे. पांचमी-चोथीमां दर्शाव्या प्रमाणे सर्व क्रिया करे, उपरांत रात्रिभोजननो त्याग करे, रात्रिप्रतिमा करे-काउस्सग्ग करे, स्नान न करे, रात्रि भोजन न करे, धोतियु मोकळु पहेरे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाळे, रात्रिए मान-प्रमाण करे-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी पांच मास पर्यन्त विचरे. छट्ठी-पांचमीमां दर्शाव्या उपरांत रात्रिमैथुननो पण त्याग करे, परन्तु सचित्तनो त्याग न होय. आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी छ मास पर्यन्त विचरे. सातमी-छट्ठीमां दर्शाव्या उपरांत सचित्तनो त्याग होय परन्तु आरम्भनो त्याग न करे, आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी सात मास पर्यन्त विचरे. आठमी-सातमीमां दर्शाव्या उपरांत पोते आरम्भ न करे परन्तु बीजा पासे कराववानो त्याग नथी-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी आठ मास पर्यन्त विचरे. नवमी-आठमीमां दर्शाव्या उपरांत पोताना अर्थे पण बीजा पासे आरम्भ न कराय पण बीजा कोई पोताना अर्थे आरम्भ करता होय तो तेनो त्याग नथी-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी नव मास पर्यन्त विचरे. दशमी-नवमीमां दर्शाव्या उपरांत पोताना अर्थे करेल भोजननो त्याग करे, मस्तक मुंडाय, चोटी राखाय, कोई वस्तु माटे पुत्रादिक पूछे तो जो खबर होय तो कहे. जाणता होय तो हा कहे अने न जाणता होय तो ना कहे-आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी दश मास पर्यन्त विचरे. अगियारमी-दशमीमां दर्शाव्या उपरांत मस्तक मुंडावे के लोच करे, साधुनो वेष पहेरे अने पात्रादिक राखे तेम राखे, साधुनी माफक इर्यासमितिपूर्वक चाले, गोचरी अर्थे गृहस्थने घेर जाय त्यारे भात के दाळ रंधाई गया होय तो बने कल्पे, भात रंधाईने उतरी गया होय अने दाळने उतारवानो बाकी होय तो भात कल्पे. गृहस्थना घरमां जइने कहे छे के-हुं श्रावकनी पडिमा अंगीकार करेलो श्रावक छुं माटे मने भिक्षा आपो. आ प्रमाणे मार्गमां विचरता पण कोई प्रश्न करे के-तमे कोण छो? तो कहे के-हुं पडिमाने वहन करनारो श्रावक छुं. आ प्रमाणे जघन्यथी एक, बे के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी अगियार मास पर्यन्त विचरे. आ बाबत कोई प्रश्न करे के-तो पछी तेओ साधु केम थई जता नथी? कारण के छल्ली अगियारमी पडिमामां तो साधुना जेवा ज आचरणो छे. आ प्रश्नना खुलासामां के छे के-हजी स्वजनवर्गनो स्नेह तूटयो नथी एटले सर्व

विरति न ग्रही शके महाशतक श्रावक आ अगियारे प्रतिमानुं वहन कर्युं अने तपश्चर्यादिकने कारणे तेनो देह दुर्बळ थतो गयो लोही तथा मांस सुकाई गया अने नाडीमां श्वासमात्र रह्यो आ प्रमाणे कायाकष्ट सहन करता एकदा पाछली रात्रिमां धर्म-जागरण करता तेने विचार उद्भव्यो के-देह दुर्बळ थयो छे, लोही-मांस क्षीण थई गया छे अने नाडीमां श्वास छे तो हुं अणशण स्वीकारुं बाद चार आहारना त्यागपूर्वकनुं अणशण स्वीकारी विचरता तेमने शुभ अध्यवसायोने अंगे अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं पूर्वदिशामां लवणसमुद्रना हजार योजन, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां पण हजार-हजार योजन पर्यन्त अने उत्तर दिशामां चुल्लहिमवंत पर्वत पर्यन्त जाणवा-देखवा लाग्या ऊर्ध्वदिशामां सौधर्म देवलोक पर्यन्त अने अधोलोकमां रत्नप्रभा नारकीना लोलुप नामना पाथडामां चोराशी हजार वर्षना आयुष्य प्रमाणने जाणवा-देखवा लाग्या

एकदा महाशतक पोताना पौषधशाळामां छे तेवामां रेवती पूर्वनी माफक मदिरा-मस्त बनीने तेमनी पासे आवी अने केश छूटा मूकी, ओढणानुं वस्त्र आघुं-पाछुं करती, हावभाव बतावती विषयसेवन माटे याचना करवा लागी रेवतीए एक वार, बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए ज प्रमाणे कह्युं एटले महाशतकने क्रोध उद्भव्यो अने अवधिज्ञानथी जोई तेने कह्युं के-"हे रेवती! तारा अकृत्य अने दुष्ट आचरणथी तुं आजथी सातमी रात्रिए अलस रोगना व्याधिथी मृत्यु पामी, रत्नप्रभा नारकीना लोलुप नामना पाथडामां चोराशी हजारना आयुष्यवाळा नारकी तरीके उपजीश" महाशतकना आवा कठोर वचन सांभळता ज रेवतीने भान आव्युं ते जणायुं के-महाशतक मारा ऊपर रूठ्या छे अने मने धीरे धीरे मारी नाखशे वळी मने श्राप दीधो छे तो मारुं शुं थशे? एम भयभ्रांत थती पोताना आवासे गई अने आर्तध्यानना योगथी प्रतिदिन झूरवा लागी तेना परिणामे तेने अलस रोगनो व्याधि थयो अने बराबर सातमे दिवसे मृत्यु पामी नारकीमां गई

आ बाजु पृथ्वी उपर उपकार करता करता भगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते नगरीमां समवसर्या पर्षदा एकत्र थई अने भगवंत उपदेश आप्या पर्षदाना विसर्जन बाद भगवंते गौतमस्वामीने कह्युं के-"हे गौतम ! आ नगरीमां महाशतक श्रावक अणशण स्वीकारीने पोतानी पौषधशाळामां रहेल छे तेणे पोतानी पत्नी रेवतीने कठोर वचन कह्युं हतुं. अणशण स्वीकार्या पछी साचुं होय तो पण अनिष्ट अने अप्रिय वचनो कोईने पण न कहेवा जोईए, क्रोध पण न करवो घटे, माटे तमे तेमनी पासे जाओ अने प्रायश्चित्त आपी तेनी शुद्धि करो भगवंतनुं वचन स्वीकारी गौतमस्वामी महाशतकनी पौषधशाळा तरफ चाल्या गौतमस्वामीने आवता जोई महाशतक श्रावक अतीव आनंदित थया बाद गौतमस्वामीए भगवंत कहेल सर्व वृत्तांत जणावीने तेमने आलोयणा आपी.

वीस वर्ष पर्यन्त श्रमणोपासकपणुं धारण करी, छेवटे साठ दिवसनी मार-णान्तिक संलेखना स्वीकारी, कालधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां अरुणावडिंस नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्ये देव थया. त्यांथी च्यवी, महा-विदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थई मोक्षे जशे. आ कथानो सारांश एज छे के-स्त्रीजातिनो स्वभाव ज चपळ होय छे. माटे साध्वीनो संसर्ग न करवो तेमज तेना पासे बेसवुं नहि. स्त्री-चरित्र माटे पातालसुंदरीनुं कथानक पण वांचवा जेवुं छे, जे आ प्रमाणे-

पातालसुंदरीनी रसिक कथा—

विशालापुरीना जयसेन राजाए पोताना मंत्रीओ तथा सभासदोने पूछ्युं के-स्त्री चरित्र कोई जाणे छे? अथवा हुं निपुण न होउं? राजसभामां 'हाजी हा' कहेवावाळा घणा हता छतां एक सत्यशाळी पुरुषे जणाव्युं के—राजन्! आप हजी स्त्रीचरित्रनो पत्तो जाणी शक्या नथी. स्त्रीचरित्र अगम्य हुवा, दानवो, मंत्रतंत्रवादीओ विगेरे मुग्ध बन्या छे. लोखंडी भोंयरामां राखीने रक्षकोथी रक्षण करवा छतां पण ते व्यभिचारी थई हती. राजा आ वात सांभळी आश्चर्य तो पाम्या पण तेनो निर्णय करवा एक मास पण शुद्ध शिशुकन्यानी साथ परणुं अने तेने भोंयरामां राखुं, हुं तेना रक्षण करीश एम कहीने सामंतराजनी तरतनी जन्मेली एक स्वरूपवान कन्या साथे ते परण्या. राजमहेलना एक गुप्त भोंयरामां राखी, त्यां तेने दासी अने धावमाताए पण तेनुं पालन कर्युं. मोटी थया पछी विविध भाषा-व्याकरणो तथा वेशभूषामां निपुण करी. अनुक्रमे ते यौवनावस्था पामी अने भोंयरामां रहेवाथी राजाए तेनुं पातालसुंदरी एवुं नाम राख्युं. राजा तेनी साथे यथेच्छ विषयसुख भोगवे छे अने तेना निर्मळ शियळथी संतोष पामे छे, बीजी राणी करतां तेनुं अधिक सन्मान साचवे छे, राजकाजमां विशेष ध्यान आपता नथी, राजसभामां पण मोडो आवी वहेला चाल्या जाय छे.

एक समये रत्नद्वीपनो अनंगदत्त नामनो व्यापारी विशालापुरी आव्यो अने राजाने आमळा जेवडां मोतीनो एक महामूल्यवान हार भेट कर्यो. राजाए तेनुं दाण माफ कर्युं. परदेश व्यापार करतां तेने करोडो सोनैयानो लाभ थयो. ते नगरीमां तेणे पोतानुं मणिगृह बंधाव्युं अने राजानी कामपताका नामनी वेश्याने घणुं द्रव्य आपी वश करी. एकदा सायंकाळे कामपताकाने पूछ्युं के—हमणां राजा राजकार्यमां शिथिल थयेला केम जणाय छे? कामपताकाए कह्युं के—हुं कंई विशेष जाणती नथी, परन्तु अंतःपुरमां एवी वात चाले छे के—राजा भोंयरामां राखेली एक रूपवती राजकन्याना मोहमां पड्या छे, बीजी राणीओनी खबर पण लेता नथी अने तेथी राजकाजमां पण मंदता आवी जणाय छे.

अनंगदत्तने पण पातालसुन्दरी जोवानुं मन थयुं. जेम सूर्यने पण देवयो

नथी. पछी ते राजकन्या केवी गुणवंती ने रूपाळी हशे ? लाग मळे तो मारे प्रेम पण करवा, एवो निर्णय करी अनंगदेवे प्रतिदिन विविध भेटणां धरी राजानुं मन वश करी लीधुं अने अंतःपुरमां पण एकलो आव-जाव करी शके तेवो विश्वास संपादन करी लीधो. क्रमे क्रमे भोंयरानुं स्थान विगेरे जाणी लीधुं बाद पोताना महेलथी भोंयरा सुधी एक सुरंग पण खोदावी. एक दिवसे राजाना पाताळसुन्दरी पासेथी गया बाद अनंगदेव सुरंगद्वारा त्यां गयो. जुए छे तो पाताळसुन्दरी सूवे छे. तेनुं स्वरूप जोई अनंगदेव घडीभर तो जाणे चित्रित होय तेम स्थिर थई गयो. बाद तेनी पासे जई, कोमळ वचनथी बोलावी तेने जाग्रत करी.

कोई पण वखत राजा सिवाय अन्य पुरुषने जोयेल नहीं होवाथी पाताळ-सुन्दरी अनंगदेवने जोतां ज विस्मय पामी. धीमे धीमे परिचय अने वार्तालाप थतां अनुराग थयो अने बन्ने परस्पर प्रेमी पण थया. धीमे धीमे गाढ प्रेम जामतां अनंगदेवनुं मन शंका रहित बन्युं. हमेशां पहेलां राजाना जवा बाद ते प्रतिदिन पाताळसुन्दरी पासे जवा लाग्यो. एकदा पाताळसुन्दरीए कह्युं के-मने तारा प्रासादे लई जई नगररचना देखाड. अनंगदेव तेने पोताना आवासे लई गयो. पाताळसुन्दरी गवाक्षमां बेसी नगररचना जुवे छे. तेवामां राजा पण हस्ती उपर बेसी आडम्बरपूर्वक उद्यानमां गया. तेने जोई पाताळसुन्दरी विचारवा लागी के-मने बंदीनी माफक भोंयरामां छानी राखे छे अने पोते यथेच्छ विहार करे छे. राजाने पण हुं मारी चतुराई बतावुं तो ज खरी. आ प्रमाणे दृढ निर्णय करी पाताळसुन्दरीए सार्थवाहने कह्युं के-राजाने तारा घरे जमवानुं आमन्त्रण आप. हुं बधी रसोई तेने जाते ज पीरसीश. तेनुं वचन सांभळी अनंगदेव तो दिग्मूढ ज थई गयो अने अनंगदेव बोल्यो के-राजाने आमन्त्रण आपी तारे मने यमदेवनो अतिथि बनाववो छे के महाअनर्थ उत्पन्न करवो छे ? तेम पूछतां पाताळसुन्दरीए कह्युं-तुं शा माटे भय पामे छे ? वाणियानी जात डरपोक कही छे ते खोटुं नथी. हुं कहुं छुं तेम कर, नहिं तो तने पण मारे हाथ बताववो पडशे. राजाने हुंशियारीनुं बहु ज अभिमान छे, माटे तेनुं अभिमान उतारवुं छे. छेवटे सार्थवाहे राजाने आमन्त्रण आप्युं.

पछी भोजनसमये पाताळसुन्दरी पोतानी हमेशनी साडी पहेरी राजाने पीरसवा लागी. राजानी तेना तरफ नजर जतां ते विचारमां पडी गया के-आ पाताळसुन्दरी अहीं क्यांथी ? हमणां ज हुं भोंयरामांथी चाल्यो आवुं छुं अने अहीं पण तेने ज देखुं छुं तो आ शुं ? पण आ तो पाताळसुन्दरी जेवा स्वरूपवाळी अनंगदेवनी स्त्री हशे एम विचारी मन वाळ्युं. घणी वार पण ते ज पीरसवा आवी अने राजानुं मन चकडोळे चड्युं. जमतां जमतां स्खलना थवा लागी. पाताळसुन्दरीथी कशुं अजाण्युं न रह्युं. छेल्ली वार ते पीरसवा आवतां राजाए तेनी साडी ऊपर निशानी माटे कढीनो छांटो नाख्यो. पाताळसुन्दरी राजानी

कपटकळा समजी गई, पण जाणे कंई जाणती ज न होय तेम पीरसवा लागी हवे पातालसुन्दरीए राजानी पूरेपूरी मश्करी करवानो उपाय रच्यो

पोते एक पत्तो लई राजानी बाजुमां बेठी अने कहेवा लागी-हे राजन्! आ जमवानी वस्तु केम जमता नथी साची वात तो ए छे के-वाणियाना घरनु भोजन राजाने क्याथी गमे? वळी अनंगदेवनी सामु जोई कहेवा लागी-तमारा घरमां कंई पण वस्तु छे के-राजा तेने जोईने आश्चर्यमां डूबी गया छे! राजा बराबर जमता नथी अने विचारमा बराबर तल्लीन थई गया होय तेम जणाय छे. पीरसेलु भोजन पण हजु तेमनु तेम ज पडेल छे पण हा, हु खरेखर भूली गई मोटा पुरुषने भूख ज बहु अल्प होय छे आ प्रमाणे मीठी मश्करी करी शीतळ जळ आप्युं राजा पण मुखवास लईने पातालसुन्दरीना तपासना विचारमां ने विचारमा सद्दी अन्त पुरमां गया

पातालसुंदरी पण कढीना छाटावाळी साडी बदलावी, तेना जेवी ज बीजी साडी पहेरी, सुरंगद्वारा भोंयरामां आवी सूई गई राजाए आवी जोयु तो पातालसुदरी घोर निद्रामा ऊंघती हती साडीमा पालव जोयो तो कढीनो डाघो पण न मळे पहले निर्णय कर्यो के-पातालसुदरी जेवी अनंगदेवनी पत्नी पण हशे पछी पातालसुदरीने जगाडतां ते पण कपटपूर्वक जाणे गाढ निद्रामांथी उठी होय तेम आळस मरडी, राजानी साथे पूर्वनी पेठे भोगविलास करवा लागी खरेखर पण जगतमां स्त्रीचरित्रनो पार कोण पाम्यु छे?

बाद पातालसुन्दरीए सार्थवाहने कह्यु के-आपणे हवे आ देशमां रहेवु नथी, माटे स्वदेश जवानी तैयारी करो, हु पण साथे आवु छु सार्थवाह तो पातालसुदरीनी वात सांभळी डरवा लाग्यो पातानो प्रपंच खुल्लो थई जवानी अने साथोसाथ मृत्युदंडनी भीति पण जणाई पातालसुदरीए कह्यु के-तमे डरो नहीं हु कहुं तेम करो सर्व लेण-देण सकेली ल्यो, व्यापार ओछो करी नाखो अने वहाणो तैयार राखो तमारा पिताना घरथी पत्र आव्यो छे एम जणावी अत्यारथी ज राजा पासे रजा मागो निरुपाये अनंगदेवे ते प्रमाणे कर्यु राजाए घणा आग्रह कर्या परन्तु अनंगदेव तो पातालसुंदरीना वचनथी बंधायेल हतो अतीव स्नेहना बदलामां राजाए कंईक मागवानु कहेता तेणे जणाव्यु के-मारी पासे धन, धान्य विगेरे अखूट छे जो तमे समुद्रकांठा सुधी मने वळावा आवो तो आ देशमां अने परदेशमां पण मारी प्रतिष्ठा वधे राजाए ते कबूल कर्यु

पछी शुभ मुहूर्ते प्रयाण नक्की थयु राजा, अनंगदेव अने पातालसुंदरीनी त्रणे पालखीओ समुद्र तरफ रवाना थई पातालसुंदरीए पोतानी पालखी राजानी पालखी पासे रखावी अने तेनी साथे वातचीत शरू करी हे राजन्! आपना प्रतापथी मारा स्वामीए घणु धन पेदा कर्यु छे अमे रातदिवस आपने भूलवाना नथी, पण कोई वखत आ सेवकने संभारजो राजाने अमारा जेवा वाणिया

याद न आवे परन्तु अमे तो आपने कदी विसरवाना नथी अमारो अविनय-अपराध थयो होय तो माफ करजो पातालसुंदरी एम अनेक प्रकारे वात करती जाय छे, पण राजा तो पोताना विचारमां गरकाव छे आ ते पातालसुंदरी के कोण ! घडी तेने विचार आव्यो के धिक्कार छे मने ! अनंगदेवनी पत्नीने में पहेलां पण पातालसुंदरी धारी लीधी हतो

थोडा वखतमां पाल्खीओ समुद्रकिनारे आवी पहोंची राजाए विदाय आपी वहाण नजरे पडयां त्यां सुधी राजा पातालसुंदरी तरफ जोई रह्यो बाद राजाए स्वस्थाने आवी तपास करी तो पातालसुंदरी न मळे तेना हृदयमां धास्को पडयो प्रधान विगेरेने पोलावयां तेओए तपास चालु करी भोंय रामां सुरंग मालूम पडी राजाए कोइपण उपाये पातालसुंदरीने पकडी लाववा कह्यु पण ते निरर्थक हतु तेवामां त्यां चारणमुनि पधार्या तेनी पासेथी सर्व वृत्तांत सांभळी राजा वैराग्य पाम्यो अने दीक्षा अंगीकार करी, स्वहित साध्यु

आ बाजु पातालसुंदरी वहाणमां अनंगदेवना माई सुकंठ साथे ममर्म पडी कपट करी, अनंगदेवने दरियामां नाखी दीधो सुकंठ साथे यथेच्छ भोगवि-लासो भोगववा लागी अनंगदेवने भाग्ययोग पाटियु मळी गयु अने तरता तरतां ते सिंहलद्वीपे निकळ्यो मुनिनो योग मळतां दीक्षा लीधी सुकंठ पण सिंहलद्वीपे आवी पहोंच्यो कांठे उतरी उद्यानमां विहार करता ते यतिरूप अनंग देवने साधुवेषमां जोया तेने जाता ज सुकंठ तेनी पासे गया पातालसुंदरीए विचार्यु के-पति भाई मळी गया छे अने मने हेरान करशे माटे तरत ज पाछी वळी अने समुद्रकांठे आवी जहदी वहाण हकार्यां त्यांथी अन्य द्वीपे जई वेश्या थई अते मरण पामी दुर्गतिए ग. सुकंठे पश्चात्ताप करी प्रव्रज्या लीधी अने बने भाई मुक्तिपद पाम्या पातालसुंदरीनु दृष्टांत स्त्रीचरित्र माटे प्रख्यात छे

जत्थ समुद्देसकाले, साहूणं मडलीइ अज्जाओ ।
गोअम ! ठवंति पाए, इत्थीरज्जं न त गच्छम् ॥ ९६ ॥

[यत्र समुद्देशकाले, साधूनां मण्डल्या आर्याः ।
गौतम ! स्थापयन्ति पादौ, स्त्रीराज्य न स गच्छः ॥ ९६ ॥]

गाथार्थ–जे गच्छनी अंदर भोजनसमये साधुनी मडळीमां साध्वीओ आवे छे ते हे गौतम ! गच्छ नथी पण स्त्रीनु राज्य छे.

विवेचन—सर्व साधुओनी मडळीमां भोजन करवाना समयने समुद्देशकाळ कहेवामां आवे छे आवा समये साध्वीओ साधुमडळीमां आवी शके नहीं,

स्कंदक मुनिना क्रोध मर्यादामां न रह्या तेमणे नियाणुं कर्युं के-मारा चारित्रनुं फल होय तो हुं राजा प्रमुख सर्व नगरनो नाश करनार थउं छेवटे पालके तेमने पण पीली नाख्या स्कंदक मुनि मृत्यु पामी अग्निकुमार देव थया

एकदा बपोरना समये पुरंदरयशा विचारवा लागी के-मुनिओ हजु गोचरी माटे केम न निकल्या ? तेवामां स्कन्दक मुनिना लोहीथी खरडायेलो ओघो, कोई पक्षीए मांस समजीने उपाडेल ते वमन न उपाडी शकवाथी, महेलनी अगाशीमां ज पडतो मूक्यो पुरंदरयशा आ दृश्य निहाळी रडवा लागी सर्व हकीकत जाणतां तेणे राजाने कह्युं के-तमारो विनाश नजीक छे हवे मारे तो चारित्र स्वीकारवुं ए ज श्रेयस्कर छे तेवामां अग्निकुमार देव त्यां आव्या अने पोतानी बहेनने, श्री मुनिसुव्रत पासे परिवार सहित मूकी आखा नगरमां संवर्तक वायु ने अग्नि प्रगटाव्या सर्व नगर बळीने भस्म थई गयुं आज पण ते दंडकारण्यना नामे प्रसिद्ध छे ते जमीनमां कंई पण फळ-झाड ऊगतां नथी आ कथानो सार ए छे के-स्कन्दक मुनि विराधक थया पण तेमना पांच सो शिष्यो आराधक थया तेम साधुए साधना निमित्तो मळे तो पण कदी पण कषायभाव धारण करवो नहीं

अर्जुनमालीनी कथा—

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करता चेलणा नामनी तेमनी राणी हती अर्जुन नामनो माळी ते नगरीमां वसतो. तेने पण बंधुमती नामनी पत्नी हती नगरीनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य हतुं बंधुमती रूपवंत अने सुकुमाळ हती अर्जुन पण संपत्तिशाळी अने ज्ञातिमां प्रतिष्ठापात्र हतो नगरीनी बहार तेनो एक मोटो बगीचो हतो ते बगीचाथी बहु नजीक नहीं तेमज बहु दूर पण नहीं तेवा स्थानमां मोगरपाणी नामना यक्षनुं देवळ हतुं आ यक्ष तेना गोत्र देव हता पेढी दर पेढीथी तेना पूर्वजो तेनी पूजा-मानता करता अर्जुनमाळी पण पुष्पना मोटा करंडिया भरी, यक्षना देरे आवी, भक्तिथी पुष्प चढावी, पंचांग प्रणिपात करी नगरमां जतो अने पुष्पो वेची आजीविका चलावतो

ए राजगृही नगरीमां ललित नामनी गोठी (धूर्त) वसती हती ते मद-छिक तेम ज कोईथी गांज्या न जाय तेवा हता. एकदा नगरीमां महामहोत्सव शरू थवानो पडहो वाग्यो, जे सांभळी अर्जुनमाळीए विचार्युं के—हवे फूलोनी घराकी सारी रहेशे एटले मोटा मोटा करंडिया लई, बंधुमती पत्नीने साथे लई ते पोताना बगीचे गयो मोटा मोटा पुष्पो एकत्र करी, करंडिया भरी ते मोगरपाणी यक्षना मंदिर तरफ आववा लाग्यो आ बाजु पेली ललित पोताना छ मित्रो साथे यक्षना मंदिरमां आवी रमत रमी रह्या छे तेवामां पेला छ मित्रोए अर्जुनने पोतानी भार्या साथे आवतो जोयो. बंधुमतीने निरखता ज ते छए मन विह्वळ बनी गया अने परस्पर विचारवा लाग्या के-आपण बधाए अर्जुनने बांधीने तेनी स्त्री साथे सारी पेठे भोग भोगवशुं, एम विचार करी तेओ

द्वारनी पाछळ संताई गया. अर्जुने मंदिरमां दाखल थई, पुष्प चढावी जेवो प्रणाम कर्यो के तरतज ते छ मित्राए पाछळथी आवी तेने मजबूत बांधीने बाजु मूकी दीधो. पछी बंधुमती साथे ते मंदिरमां ज विषयसुख भोगव्युं. आ दृश्य निहाळी अर्जुनने अतीव घृणा उपजी. ते विचारवा लाग्यो के–आ यक्षने हाजराहजुर अने प्रभाविक मानी हुं अत्यार सुधी भक्तिभावथी पूजतो हतो परंतु मने जणाय छे के आ मूर्ति तो पत्थर सदृश छे. कांई पण चमत्कारिक नथी. जो यक्षमां देवत्व होत तो मारी नजरनी हाजरीमां आवुं कष्ट केम पडे? मोगरपाणी यक्षे अर्जुनना विचार जाणी लीधो पछी ते तरत ज तेना शरीरमां दाखल थई गयो. तडतड करता तेना बंधनो तूटी गया अने हजार पल प्रमाण मोगर(गदा)-वडे ते छ मित्राने अने सातमी पोतानी स्त्रीने मारी नाखी. बाद ते यक्षाधिष्ठित अर्जुनमाळी हमेशां छ पुरुष अने एक स्त्री एम सात जणने नगरीनी बहार मारी नाखवा लाग्यो. नगरीमां त्रास फेलाई गयो. हमेशां आ प्रमाणे मृत्यु थतां होवाथी राजाए नगरमां पडह वगडाव्यो के कोईए पण तृण, पाणी के काष्ठ माटे नगरीनी बहार जवुं नहीं, जशे ते यमना अतिथि बनशे.

ते नगरीमां सुदर्शन नामना श्रेष्ठी वसता हता. ते जीवाजीवादि नव तत्त्वना ज्ञाता हता. शुद्ध देव, गुरु अने धर्म उपर अत्यंत श्रद्धावाळा हता. ते नगरना गुणशील नामना उद्यानमां श्रीमहावीर परमात्मा समवसर्या. परमात्मानुं नाम सांभळवा मात्रथी पाप नाश पामे तो तेओनी देशना सांभळवाथी केवो अपूर्व लाभ थाय? एम विचारी सुदर्शन श्रेष्ठीए परमात्माने वांदवा जवा माटे तैयारी करी. ते जाणी सुदर्शनना मात–पिताए नगरीनी बहार जवा माटे घणा आग्रहपूर्वक निषेध कर्यो, कारण के अर्जुनमाळीनो भय हतो. सुदर्शने घणो समजाव्या छतां तेम पोतानो निश्चय त्यज्यो नहीं, पछी मातपिताए निरुपाये आज्ञा आपी, त्यारे स्नान करी, शुद्ध वस्त्र पहेरी, पगे चालता सुदर्शन नगरनी बहार निकळी गुणशील उद्यान तरफ चालता चालता मोगरपाणी यक्षना मंदिर नजीक आव्या. आ यक्षना त्रासथी नगरीनी बहारनी भूमि उज्जड थई गई हती, कारण के यक्षनी नजरे ज कोई चढतुं ते पोताना नाशने नोतरतुं. थोडा समय पछी सुदर्शनने आवता जोई यक्ष पोतानी गदा उछाळता–उछाळता सुदर्शन तरफ आव्यो. यक्षने आवता जोई सुदर्शन आत्मा अंशमात्र भय के कंप अनुभव्या सिवाय उपसर्ग-सहन करवानी तैयारी करी अने ते स्थळे ऊभा रह्या, सागारिक अणशण स्वीकार्युं 'आ उपसर्गमांथी बचुं त्यारे ज कायोत्सर्ग पारु, नहीतर मारे यावज्जीव चारे आहार तेमज प्राणातिपातादि अढारे पापस्थानकोनां पच्चक्खाण छे.' सुदर्शननी श्रेष्ठ भावनाथी यक्ष तेने कंई पण उपद्रव करवा शक्तिमान थयो नहीं. हजार पल प्रमाण गदा लईने कायोत्सर्गमां रहेला श्रेष्ठीनी आसपास

चारे बाजु फरवा लाग्यो श्रेष्ठी काउसग्ग-ध्यानमां दृढ ज हता छेवटे यक्ष कटाळी, अर्जुनमालीना शरीरमांथी निकळी, पोतानी गदा लई जे दिशामांथी आव्यो हतो ते दिशामां चाल्यो गयो, एटले अर्जुनमालीनो देह तरत ज भूमि ऊपर पडयो त पछी मुहूर्त पछी सचेतन थयो उपद्रव नाश पाम्यो जाणी सुदर्शने काउस्सग्ग पार्यो त्यारे अर्जुने तने कह्यु के-हे देवानुप्रिय ! तमे कोण छो ? क्यांथी आव्या ? अने कई तरफ जाओ छो ? त्यारे सुदर्शन सर्व हकीकत आदिथी कही संभळावतां अर्जुने पण कह्यु के-चालो, हु पण तमारी साथे भगवंत पासे आवु छु भगवन्तनी ते अमृतवाहिनी ने वैराग्यवासिनी धर्मदेशना सांभळी अर्जुनने पोताना कृत्यनो पश्चात्ताप थयो देशना सांभळी सर्व लोको यथास्थान गया पछी तेणे भगवन्त पासे आवी नम्रतापूर्वक दीक्षा आपवा प्रार्थना करी बाद उत्तर दिशामां जई पंचमुष्टि लोच कर्यो अने साधु-जीवन शरू कर्यु प्रभुए तने साधु-धर्म उचित शिक्षा आपी

दीक्षा स्वीकारी त दिवसथी ज अर्जुनमालीए परमात्मा पासे अभिग्रह धारण कर्यो के-छट्ठ-छट्ठनी तपश्चर्या करवी आ प्रमाणे यावज्जीव महातपश्चर्या शरू करी छट्ठना पारणाना दिवसे पहली पोरसीमां स्वाध्याय करे, बीजीमां ध्यान धर अने त्रीजीमां पात्रानी पडिलेहणा करी, गौतमस्वामी तथा भगवन्तनी आज्ञा लई इर्यासमितिपूर्वक नगरीमां गोचरीए जाय नगरीमां गोचरी अर्थ परिभ्रमण करता लोको कहेता के-आ मुनिए मारा पिताने हण्या छे, कोई कहेता के मारी स्त्रीने हणी छ, एवी रीते विविध लोको पोतानी पुत्री, बहेन, पौत्र, भाई विगेरे स्वजनना नामो दर्शावी तेना घातक तरीके अर्जुनमाली मुनिने आळखावता घडलोक दुर्वचन तथा उछाछळा पुरुषो, एवु बाळकोद्वारा मुनिनो पाछळ पत्थरो पण उछळावता, छता अर्जुनमाली मुनिवर सर्व समभावे सहन करी गोचरी अर्थे परिभ्रमण करता शुद्ध एषणीय गोचरी मळती ते लावीने, भगवन्तने के गौतमस्वामीने बतावीने आहार करता अने पाछा पोताना स्वाध्यायमां तल्लीन बनी जता जो गोचरी न मळता तो तप करता आ प्रमाणे प्रतिदिनना व्यवहारथी अर्जुनमालीनु चारित्र शुद्ध अने निष्कलंक बन्यु थोडा समय पछी परमात्मा अन्यत्र विहार करी गया अर्जुनमाली मुनि पण छ मास पर्यन्त शास्त्राचार पाळी छल्ले पन्दरदिवसनु अणशण स्वीकारी अंतकृत्केवळी थई मोक्षवासी थया

जेवी रीते अर्जुनमालीए पौरजनानो अपवाद सहन कर्यो, अने परीषह पण सारी पेठ सहन कर्या तेवी ज रीते जे मुनिवर प्रसंग पण कषायने उपशमावे तेवा साधुवाळा गच्छने ज सुगच्छ जाणवो

दमदत्त राजर्षिनी कथा—

हस्तिशीर्ष नगरमां दमदत्त नामना राजवी हता तेमना अतुल प्रतापथी तेमनी कीर्ति दिगंतमां फेलाणी हती संग्राममां पोताना शत्रु राजाओना हस्तीओना गण्डस्थळ फाडी नाखवाथी तणे पोतानु नाम सार्थक कर्यु हतु. एक वखतमां

अधिपति प्रतिवासुदेव जरासंधे तेने सेवामां बोलाव्यो होवाथी ते राजगृही नगरीए गया तेवामां लाग जोईने पांडवोए तेना राज्यप्रदेश लूटी लीधो आ समाचार दमदत्तने मळता ज तेणे मोटुं सैन्य लई, लवणसमुद्र जेम जम्बूद्वीपने फरी वळे तेम हस्तिनापुर नगरने घेरी लीधुं पांडवो सामे युद्ध करवा आवी शक्या नहीं दमदत्ते दूत मोकली कहेवराव्युं के-तमे तो कायरना जेवुं काम कर्युं छे, कारण के कह्युं छे के-" छलमुचिय कीराण, कीराणन घणियविरहिए ठाणे। बलवताण नराण, न एस मग्गो सुरसाण ॥ १ ॥ " स्वामी विनाना प्रदेशमां आवी तने लूटवु ए कायरोनुं काम छे जे शूरवीर होय छे अने श्रेष्ठकुळमां उत्पन्न थयेल छे तेना आ माग नथी-ते तो सिंह सामे वाघ मोरचे मारी गेरहाजरीमां तमे मारो प्रदेश लूट्या ते तो शियाळना जेवु काम कर्युं खरेखर शूरवीर हो तो मारी सामे संग्राम करो पांडवो पहेला बधा भयभीत बनी गया हता ने नगरनो किल्लो बंध करीने अंदर बेसी गया

दमदत्ते घणा वखत सुधी घेरो घाल्यो, छेवटे तेओना राज्यप्रदेशमां आण वर्तावीने पोताना नगरे पाछो वळ्यो नीतिपूर्वक राज्य चलावता केटलाक समय बाद ते नगरमां श्रीनेमिनाथ भगवंतना शिष्य श्रीधर्मघोषसूरि पधार्या तेमनी सुरम्य वैराग्यमय अने असरकारक देशना सांभळी दमदत्त राजर्षीने ज्ञानगर्भित वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी तेमणे दीक्षा लीधी शास्त्राभ्यास करी तेओ गीतार्थ बन्या तपश्चर्या तपी शरीरे कृश थया तपस्वी पण बन्या तेमनो समभाव परा काष्टाए पहोंच्यो हतो तेओ विहार करता करता एकदा हस्तिनापुर नगरनी बहारना उद्यानमां आवी काउसग्ग ध्याने ऊभा रह्या

एवामां पांडवो रथवाडीना अर्थे निकळ्या दमदत्त मुनीश्वरने जोता ज युधिष्ठिर हस्ती उपरथी नीचे ऊतर्या अने भावपूर्वक वंदन कर्युं थोडा वखत बाद दुर्योधन पण पोताना परिवार साथ त्यां आव्यो मुनिने जोता ज तेने द्वेष उत्पन्न थयो 'आ मुनिए ज मारा बाप-दादानो आबरु नष्ट करी हती' एम विचारीने रोषमां ते गुस्सामां तेणे पोताना हाथमां रहेल बीजोरुं फेंक्युं तेनु अनुसरण करीने बीजा कौरवोए तेमज सैनिकोए ते मुनि प्रत्ये पत्थर आदि फेंक्या ते बधाना पत्थरो मोटा ढग थई गया के दमदत्त राजर्षि तेनी आथे अदृश्य जेवा बनी गया थोडो समय थया बाद युधिष्ठिर ए ज रस्ते पाछा फर्या दमदत्त राजर्षिना स्थाने तेमने न जोता युधिष्ठिरे पोताना सैनिकने प्रश्न पूछ्यो के-अहीं राजर्षि काउसग्ग ध्यानमां ऊभा हता ते क्यां गया? अने आ पत्थरादिना ढगला क्यांथी? सैनिके दुर्योधन संबंधी सर्व हकीकत समजावी जे सांभळतां ज युधिष्ठिरने अतिशय दुःख थयु तेमणे तरत ज पोताना सेवकगणने ते पत्थरादि दूर करवा आदेश फरमाव्यो बाद अत्यंत चतुर अंग मसळनाराओने सूचना आपी, मुनिना शरीरे मर्दन करावी तेमने सज्ज कर्या बाद मुनिने खमावी, वंदन करी पांडवो स्वस्थाने गया

पाण्डवो अने कौरवोए पोतपोताने उचित वर्तन कर्युं परन्तु दमदत्त राजर्षिने न पाण्डवो ऊपर राग प्रगट्यो के न कौरव प्रत्ये द्वेष उपज्यो तेओ तो विचारता हता के-" एस मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १ ॥ " मारो आत्मा शाश्वत छे, ज्ञान-दर्शनथी युक्त छे, आ देह मारो नथी, ए तो सर्व संजोग लक्षण छे, कर्मना कारण छे आ प्रमाणे विशुद्ध आत्मभाव भावता, संवेग रसमां निमग्न थता क्षपकश्रेणीए आरूढ थई केवलज्ञान पामी शिवगतिमां सुखभाजन थया

दमदत्त राजर्षिनी पेठे जेओ समभावमां रहे, शत्रु प्रत्ये द्वेषभाव न धरे अने मित्र प्रत्ये अनुराग न दर्शावे तेवा मुनिओवालो गच्छ ज सुगच्छ कहेवाय वळी पण कहे छे के—

धम्मंतरायभीए, भीए संसारगब्भवसहीणं ।
न उदीरन्ति कसाए, मुणी मुणीणं तयं गच्छम् ॥९८॥

[धर्मान्तरायभीताः, भीताः संसारगर्भवसतिभ्यः ।
नोदीरयन्ति कषायान्, मुनयो मुनीनां सको गच्छः ॥ ९८ ॥]

गाथार्थ-सर्वज्ञकथित धर्मना अंतरायथी बीता तेमज संसारभ्रमण अने गर्भावासना त्रासथी भयभीत बनता मुनिजनो जे गच्छमां कषायोने उदीरता नथी-जागृत करता नथी ते गच्छ ज सत्य जाणवो.

विवेचन-अगाउना विवेचनथी आपणे जाणी शक्या छीए के-आ संसार-भ्रमणनुं मूल कारण क्रोधादि कषायो छे कषायो एवा छूपा चोर छे के तेने जाणी शकवा पण मुश्केल छे चोर कोई पण जातनी चोरी करी जाय तो तरत ज खबर पडे छे के-आपणा अमुक पदार्थोनी चोरी थई, पण आ कषायो एवा गूढ चोर छे के-आपणुं भेगुं करेलुं आत्मधन तेओ चोरी गया तेनी खबर ज पडवा देता नथी, तेथी ज शास्त्रकार फरमावे छे के-आवा छूपा चोरथी सर्वदा सावचेत रहो क्रोधना विषयमां चंडकौशिक सर्पनुं दृष्टान्त अगाउ (पृ २६७) आपणे जाणी गया छीए मान मानना संबंधमां अच्चंकारी भट्टानुं वृत्तान्त जाणवा योग्य छे

क्रोध-मानविषये अच्चंकारी भट्टानी कथा—

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां जितशत्रु नामनो राजा हतो सुबुद्धि नामनो तेनो प्रधान हतो धारणी नामनी राणी हती धन नामनो ते नगरीनो श्रेष्ठी हतो तेने भद्रा नामनी पत्नीथी लक्ष्मीभट्टा नामनी पुत्री थई लक्ष्मीभट्टा श्रेष्ठीने अतीव प्रिय हती तेथी तेणे पोताना स्वजनवर्गने कह्युं के-लक्ष्मीभट्टाने कोईए

कोई पण कहेवु नहीं, ते कहे ते प्रमाणे सर्वथा वर्तवु कोइए तेने टपको पण न आपवो. ईत्यादि धनश्रेष्ठीए तेने संपूर्ण लाडकोडमां उछेरी तेनु रूप ने गुण अतिशय हता एटले लोको तेने 'अच्चंकारी भट्टा' एवा नामथी ओळखवा लाग्या युवानवय आवता भट्टानु सौंदर्य पूर्ण रूपमां खिल्यु घणा युवको तेनी मागणी तेना पिता पासे करता पण धनश्रेष्ठी कहेतो के-जे कोई तेना हुकम प्रमाणे वर्तवा तैयार होय तेमज तेनो गमे तेवो अपराध थयो होय तो पण लेश मात्र पण तिरस्कार न करे तेवी व्यक्तिने हु मारी पुत्री परणाववा मागु छु परन्तु युवको आ आकरी शरत स्वीकारवा कोई पण तैयार न थया दिवसे दिवसे अच्चंकारी भट्टा वयमां वधवा लागी तेवामां एकदा ते ज नगरनिवासी सुबुद्धि प्रधाननी तेना पर नजर पडी तेना लावण्य अने सौन्दर्यथी आकर्षा. प्रधाने तेनी मागणी करी धनश्रेष्ठीए पोतानी शरत जणावी प्रधाने कबूल करी अने तेओ बने लग्नग्रंथीथी जोडाया प्रधान पण अच्चंकारी भट्टाना कह्या प्रमाणे सर्व काम बराबर अनुसरवा लाग्या शु करवु? तेना आदेशने शिरसा वंद्य गणवा लाग्या

एकदा भट्टाए प्रधानने कह्यु-तमे राज्यमां बहु मोडा आवो छो, माटे हवेथी प्रहर रात्रि वीत्ये तरत ज आवजो प्रधाने राजसभामांथी वहेलु आववु शरू कर्यु कामकाज ऊपर पूरतु ध्यान अपातु नहीं, कामकाज बिगडवा लाग्यां एटला राजाए प्रतिहारीने कारण पूछ्यु प्रतिहारीए प्रधाननी स्त्रीनो आदेश कही समजाव्यो एटले राजाने कुतूहल थयु एकदा तेणे प्रधानने कह्यु गुपचुप काम नांख्यु के-प्रधान अड्यु माथु न करी शके राजा पण हाजर रह्यो एटले प्रधानथी ऊठवानीवात बनाणु नहीं तो पण जेम तेम काम शीघ्र पतावी न शके, पण घणो ज समय वीती जवाथी भट्टाने रोष चढयो. तेणे घरना बारणा बंध करी दीधां प्रधाने घरे आवी घणी बूम पाडी पण बारणा कोई उघाडे? प्रधाने बहु कालावाला कर्या त्यारे भट्टाए रोषपूर्वक बारणा उघाड्या अने तेणे साथ कलह करी, सर्व अलंकारो लई ने पोताना पिताना घर तरफ चाली निकळी रस्तामां ता रस्तामां चोरो मळ्या तेने लूटी लई ने मारकूट करी ते चोरो पोताना स्वामी पासे लई गया चोरपतिए तेने पोतानी पत्नी करवा इच्छ्यु भट्टाए इन्कार कर्यो एटले तेण तेने कोईएक वेपारीने वेची दीधी पण तेना कहेवा माहिती थई पोतानी पत्नी बनवा कह्यु भट्टाए तेनो इन्कार कर्यो एटले कोपे भरायेला वेपारीए तेने हुकम कर्यो के-पाणीमांथी जळो पकडी लाव. जळो पकडवी ते सहेलु काम न हतु छतां शीलनी रक्षा माटे भट्टाए ते कबूल करी शरीरे माखण चोपडीने ते जळमां प्रवेशती जळो तेना रुधिरनो स्वाद लेवा आवती तने भट्टा पकडी लेती एवे आ प्रमाणे भट्टानु रूप निचोवाई गयु तेथी ते अति कदरूपी बनी गई

एवामां तेनो भाई तेनी शोध करवा अर्थे त देशमां आव्यो तेणे भट्टाने पोतानी बहेन सदृश जाणीने तेने पूछ्यु के-'तु कोण छो!' त्यारे तेणे पोतानी

भाई आणी सर्व हकीकत कही एटले वैद्यने द्रव्य आपी, पोतानी बहेनने मुक्त करावी, पोताना नगरे लावी, अनेक औषधोपचार करावी पूर्ववत् बनावी प्रधान पण तेने पोताने घरे तेडी गयो अने तेने गृहस्वामिनी बनावी पूर्ववत् गृहस्थाश्रम शरू कर्यो

अचंकारी भट्टाए क्रोध तथा माननुं प्रत्यक्ष फळ अनुभव्यो हतो पण क्रोध के मान न करवानो अभिग्रह कर्यो व्रत-नियमनी परीक्षा-कसोटी थाय त्यारे ज तेनी निश्चळता जणाय छे भट्टाए लक्ष औषधियालु अने लक्ष द्रव्यना मूल्य वाळुं लक्षपाक तेल बनाव्युं हतुं एक घडो लाख-लाख द्रव्यनी किंमतना हता दैवयोगे बे साधुओ औषधार्थे ते लेवा तेना गृहे आव्या भट्टाए पोतानी दासीने लक्षपाक तेलना घडो लाववा आदेश कर्यो दासी लइने आवे छे तेवामां घडो [illegible] पडयो अने तेल ढोळाइ गयुं भट्टाए बीजो लाववा कह्युं तो बीजो पण फूटी गयो, त्रीजो पण फूटी गयो छतां भट्टाए लेशमात्र दासी ऊपर क्रोध न कर्यो, केमके क्रोधना परिणाम ते स्वयं अनुभवी चूकी हती. छेवटे ते पोते ऊभी थइ, चोथो घडो लावी मुनिराजोने तेल वहोराव्युं

आ कथानो सारांश ए छे के-अचंकारी भट्टा जेवी श्राविकाए क्रोध तथा मानने हण्या तो साधुओए तो सर्वथा क्रोध मानने त्यजवा ज जोइए

माया संबंधी पांडुर आर्यानी कथा—

एक पासत्थी साध्वी विशेष उपकरण राखी शरीरनी शोभा करती धोळां श्वेत वस्त्र पहेरे एटले लोकोए तेनुं पांडुर आर्या एवुं नाम स्थाप्युं ते आर्या मंत्र, तंत्र, वशीकरण विगेरे विद्या जाणती लोकोने दोरा-धागा पण करी आपती, तेथी लोकोमां तेनी ख्याति विशेष हती लोको तेनुं बहुमान करता अने मस्तक पण नमावता तेनी पासे लोको स्वार्थ साधवा माटे वारंवार आववा करता एटले लोकोना मनमां सारा प्रमाणमां रहेती' आ कार्य करतां घणां वर्षो व्यतीत थइ गया ते वृद्धा बनी गइ तेने वैराग्य उत्पन्न थयो एटले गुरु पासे गइ गुरु पासे तेणे पोताना दुष्कृत्यनी आलोचना मागी गुरुए कह्युं के-जो तुं मंत्र-तंत्र विद्यादिक सर्वनो त्याग करे तो तने आलोयण आपुं पांडुर आर्याए कह्युं के-हुं दीर्घ समय दीक्षा पाळी शकीश नहि त्यारे गुरुए अमुक साधु-साध्वीने तेनी पासे राखी अणशण कराव्युं थोडा साधु-साध्वीने पोतानी पासे निहाळी ते आर्तध्यान करवा लागी पूर्वे सेंकडो माणसोने पोतानी पासे आवेला अने ए रीते समय व्यतीत करेला एटले तेने आ स्थितिमां आनंद न आव्यो जेथी मानसिक रीते वशीकरण विद्यानुं आह्वान कर्युं विद्याना प्रभावथी अल्प काळमां ज गाम-परगामना हजारो माणसो धूप, दीप लइ, आभूषणो तथा स्वच्छ वस्त्रो परिधान करी पांडुर आर्या पासे आववा लाग्या गुरुए पासे राखेला साधु-साध्वीने पूछ्युं-शुं तमे लोकोने पांडुरना अणशणनी वात करी पोतानुं तेओए ?

अज्ञानपणुं दर्शाव्युं त्यारे गुरुए आर्याने पूछ्युं तेणे जेवी हती तेवी हकीकत कही एटले गुरुए कह्युं–भद्रे ! एम न करवुं आर्याए शिष्या दुन्दूत आव्या, परन्तु पाटुरथी लावाना आदर-सत्कार विना रही शकायुं नहीं एटले बीजी वार, त्रीजी वार वशीकरण विद्यानुं आह्वान कर्युं. गुरुए निषेध करवाथी त्रण वार आलोचना लीधी चोथी वार पाछो विद्यानो उपयोग कर्यो अने गुरुए कारण पूछ्युं त्यारे गुरु हवे जरूर ठपको आपशे तेवा भयथी कपट करी पाछुं रे स्वभाव आव्या व-ळाशा ते पूर्वना अभ्यासथी चाल्या आवे छे हुं कई विद्यानो प्रयोग करती नथी आ प्रमाणे माया करी, आलोचना कर्या सिवाय काळधर्म पामवाथी सौधर्म देवलोकमां ऐरावण नामना देवनी अग्रमहिषी थई एक वख्त आई श्रीमहावीर भगवन्तने वांदवा आवी अने देशनाने अन्त भगवान महावीर पासे हाथणीरूपे थई मोटा मोटा शब्दपूर्वक वातचीत करवा लागी आ दृश्य जोई श्रीगौतम स्वामीए भगवानने कारण पूछ्युं एटले भगवन्ते तेनो पूर्वभव कही समजावी मायानो निषेध उपदेश्यो।

लोभ संबंधमां आर्य मंगुसूरिनी कथा—

आर्य मंगु सारा शास्त्रज्ञाता हता आ उपरांत तेमनी उपदेशक–शक्ति पण सारी हती विहार करता करता तेओ पोताना शिष्यपरिवार साथे मथुरा नगरीमां आव्या समृद्ध साधु जाणी श्रावको तेमने घृत विगैरेथी स्वादिष्ट आहार वहोरावया लाग्या प्रतिदिन रसयुक्त आहार मळवाथी मंगुसूरिनी रसगृद्धि वृद्धि पामी अन्यत्र विहार करवानो विचार पण तेमने न आव्यो साथेना शिष्यो गुरुनी आसक्ति जाणी गया एटले अन्यत्र विहार करी गया गुरु एकला रह्या तेमनुं वर्तन साधुधर्मने उचित न हतुं छेवट आलोचना विना काळधर्म पामवाथी अधोलोकमां व्यन्तर निकायमां उपज्या मथुरा नगरनी खाळना अधिष्ठायक देव थया

काळयोग तेमना शिष्यो विहार करता करता पुन मथुरा नगरीमां आव्या तेओने यक्षमंदिर पासे थईने स्थंडिल भूमिए जवानुं हतुं तेओ प्रातःकाळे स्थंडिल जवा निकळ्या त्यारे यक्षे पोतानी प्रतिमामां प्रविष्ट थई जीभ बहार काढी हलाववा मांडी प्रतिमामां जीभ हालती जोई साधुओ आश्चर्य पाम्या तेओए तेनुं कारण पूछता यक्षे पोतानो पूर्वभव कही समजाव्यो अने कह्युं के–मारा जिह्वाना लोलुपीपणाथी हुं महोत्तम नरभव हारी गयो अने व्यन्तर थयो तेम तमो पण जो रसगृद्धिमां आसक्त थशो तो मारी माफक पस्ताशो आ दृष्टांतथी आपणने लोभनुं दुष्परिणाम यथार्थ समजाशे

गच्छमां कोई साधु कोईनी साथे क्लेश-कंकास करता होय तो बीजा साधुए तेने रोकवा-समजाववा, समजाववा छतां न माने तो ते साधुने काढी मूकवा पण उपेक्षा न करवी. आ संबंधमां नीचेनुं दृष्टांत आपवा योग्य छे—

एक महाअटवीमां सुन्दर सरोवर हतुं. सरोवरमां पाणी पण पुष्कळ हतुं. ते सरोवरनी आसपास सुन्दर वन हतुं. जळमां मत्स्यादिक जळचरो अने वनमां स्थळचरो तथा पंखी विगेरे खेचरो रहेता हता. हाथीओनुं मोटुं टोळुं पण ते वनमां वास करतुं. ग्रीष्म ऋतुना सतत तापथी अकळाई हाथीओनुं टोळुं सरोवरमांथी नीकळी वृक्षनी छायामां सूतुं हतुं. एवामां बे काचीडा (करकेटिया) थोडे दूर लडवा लाग्या. ते वखते वनदेवताए बधा पशु-पक्षीओने उद्देशीने कह्युं के-आ बन्ने काचीडाने लडता निवारो, पण देवनुं कांइ सांभळ्युं नहीं. पक्षीओए विचार्युं के-आपणने शुं ? आपणने क्यां मारवा आववाना छे ?

लडता लडता एक काचीडो भाग्यो अने नासीने सूतेला हाथीनी सूंढमां पेसी गयो. तेनी पाछळ बीजो पण दाखल थई गयो. हाथीनी सूंढमां पण बन्ने लडवा लाग्या. तेथी हाथी अकळामणी वेदना थवाथी ते हाथी पण क्रोधा-न्वित थयो. वृक्षने मूळमांथी उखेडी नाखवा लाग्यो. बीजा हाथी पण भया-न्वित बनी तेम करवा लाग्या, जेथी घणा वनचर जीवोना नाश थया. पछी सरोवरमां हाथीओ पडया अने तेनी पाळ तोडी नाखी. तेथी पण घणा जळचर जीवो नाश पाम्या.

आ दृष्टान्तनो उपनय आ प्रमाणे जाणवो. तळाव, वृक्ष विगेरेनी शोभा सरखो गच्छनो आचार, जळचरादिक जीवो समान बाळ, वृद्ध तथा ग्लानादिक साधुओ, हस्ति समान मर्यादायुक्त गीतार्थादिक साधु, काचीडा समान नीच के तुच्छ साधु, वनदेव समान आचार्य के गीतार्थादिक सज्जन कहे छे के-कषाय-कलह न करवो. सरोवरनी पाळ समान गच्छ-मर्यादा जाणवी. काचीडाने कांइ थायुं नहीं तो परिणाम महाहानिकारक आव्युं अने जळचर, स्थळचर अने खेचर प्रमुख घणा प्राणीओ विनाश पाम्या तेम बे लडता साधुने निवारवामां न आवे तो गच्छ-मर्यादानो नाश थाय अने चारित्र विनाश पामे.

आ उपरांत (१) साधुओ आ परस्पर लडे तो लोकोमां गच्छनो अपयश थाय, (२) गच्छभेद थाय, बन्ने पक्षना साधुओ पैकी कोई राज-फरियाद करे तो राजदंड थाय (३) कलह कर्या पछी मन संतापमां पडे, चिंता रह्या करे, (४) समकितनी हानि थाय, (५) स्वाध्यायादिकनो भंग थतो जाय तेम तेम चारित्रनो नाश थाय. आ संबंधी विशेष विस्तार श्रीनिशीथचूर्णिमां दशमा उद्देशामां छे.

कारणमकारणेण अह, कहवि मुणीण उट्ठहि कसाए ।
उदएवि जत्थ रुंभहि, खामिज्जहि जत्थ तं गच्छम् ॥ ९९ ॥

[कारणेन अकारणेनाथ, कथमपि मुनीनां उत्तिष्ठन्ति कषायाः ।
उदयेऽपि यत्र रुन्धन्ति, क्षमयन्ति यत्र स गच्छः ॥ ९९ ॥]

गाथार्थ—गुरु-ग्लानादिकनी वैयावच्चादिक कारणे के वगर कारणे पण मुनिओने जो कषायनो उदय आवे अने उदय आव्या पछी तेने रोके अने तदनन्तर खमावे तेने हे गौतम ! गच्छ जाणवो.

विवेचन—कषायो थवाना बे कारणो छे एक बाह्य कारण अने बीजुं आन्तरिक एटले कर्मोदय बाह्य कारणमां कोइना वहेवारथी के विरुद्ध वर्तनथी कषायो थाय छे क्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चार मुख्य कषायो छे तेना अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान अने संज्वलन ए चार प्रकारे दरेक कषायो गणतां सोळ कषायो थाय छे तेमां हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा (निंदा), पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद—ए नव नोकषाय मेळवतां कुल पचीश कषाय थाय छे ग्रन्थकार कहे छे के—कषायोदय थवो ते स्वाभाविक छे पण उदयमां आव्या पछी तेने अटकाववा मिच्छामि दुक्कडं मागवा अने क्षमापना मागवी ए ज दरेकनुं कर्तव्य छे

क्षमापनानुं महत्त्व—

आत्मा अंगारा जेवो सदा प्रज्वलित छे अंगारा सळगावी मूकी—तेना उपर राख छवाइ गइ होय त्यारे जो थोडो पवन नाखीए तो धीमेथी अंगारा उपरनी राख दूर थाय छे अने अंगारा पुनः सतेज बने छे कषायो ए आवरण (राख) सदृश छे जो तेने क्षमापनारूप पवन नाखीए तो ते कषायरूपी राख दूर थइ आत्मारूपी अंगारानो अग्नि सतेज बने छे आ छे क्षमापनानुं मूल्य ने महत्त्व जो राखने दूर करवामां न आवे तो धीमे धीमे अंगारो बुझाइ जाय छे तेवी रीते आ कषायरूपी राख दूर करवामां न आवे तो आत्मा सदन्तर कषायोथी अवराइ जाय, माटे कषायनो सहेज पण प्रवेश थाय के तरत ज तेने हाकी काढवानो प्रयत्न करवो मात्र छूटीछवाइ रज के मेल ज्यां लाग्या होय त्यां सहेज सावरणी फेरववाथी ते धूळ के रज शीघ्र दूर करी शकाय छे तेम कषायोदयनी कल्पना थतां ज तेने दूर करवा प्रयास करशो तो तमने बहु महेनत नहीं पडे

श्रीआराधनापताकामां अने ते उपरथी उपाध्याय श्रीविनयविजयजी महाराजे रचेला 'श्रीपुण्यप्रकाशना' स्तवनमां खामणानी अगत्य जणावी छे शिवगति प्राप्त करवाना तेमणे दश प्रकारो ते स्तवनमां जणाव्या छे, ते पैकी बीजुं स्थान क्षमापनाने आप्युं छे तेओश्री ते स्तवनमां कहे छे—

जीव सवे खमावीए साहेलडी रे, योनि चोराशी लाख तो,
मनशुद्धे करो खामणा साहेलडी रे, कोइशुं रोष न राखवो. १

વળી મહાઅટવીમાં સુન્દર મનોહર હતું, તલાવડીમાં પાણી પણ સુન્દર હતું, તે તલાવડીના આસપાસ સુન્દર વન હતું. વનમાં મનોહર ઝરણાઓ અને વનમાં સ્વચ્છંદપણે તથા ઘણો નિર્ભય રીતે રહેતા હતા. હાથીઓનું ટોળું ત્યાં પણ તે વનમાં વાસ કરતું. ગ્રીષ્મ ઋતુના તાપ લાગવાથી અત્યંત હાથીઓનું ટોળું તલાવડીમાંથી [illegible] (તલાવડીમાં) થોડે દૂર રહેવા લાગ્યા [illegible] [illegible] નહીં [illegible] આનંદથી રહેતા હતા.

[illegible] હાથીઓનો સમૂહ [illegible] તલાવડીના હાથીઓ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

આ દૃષ્ટાંતનો ઉપનય આ પ્રમાણે જાણવો [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] આચાર, મહાઅટવી [illegible] સમાન [illegible], વૃક્ષ તથા [illegible] સાધુઓ, હાથી સમાન [illegible] [illegible] [illegible] સાધુ, [illegible] સમાન [illegible] [illegible] [illegible] સાધુ [illegible] સમાન આચાર [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] તલાવડીના [illegible] સમાન ગચ્છ-મર્યાદા જાણવી. [illegible] [illegible] [illegible] નહીં તો પરિણામ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] સાધુને [illegible] [illegible] [illegible] તો ગચ્છ-મર્યાદાનો નાશ થાય અને ચારિત્ર વિનાશ પામે.

આ ઉપરાંત (૧) સાધુઓ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] થાય, (૨) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] સાધુઓ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (૩) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], (૪) [illegible] હાનિ થાય, (૫) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ચારિત્રનો નાશ થાય. આ સઘળા વિષય વિસ્તાર [illegible] [illegible] ઉદ્દેશામાં છે.

कारणमकारणेण अह, कहवि मुणीण उट्ठहि कसाए ।
उदएवि जत्थ रुंभहि, खामिज्जहि जत्थ तं गच्छम् ॥ ९९ ॥

[कारणादकारणेनाथ, कथमपि मुनीना उत्तिष्ठन्ति कषाया ।
उदयेऽपि यत्र रुन्धन्ति, क्षमयन्ति यत्र स गच्छः ॥ ९९ ॥]

गाथार्थ-गुरु-ग्लानादिकनी वेयावच्चादिक कारणे के वगर कारणे पण मुनिओने जो कषायनो उदय आवे अने उदय आव्या पछी तेने रोके अने तदनन्तर खमावे तेने हे गौतम ! गच्छ जाणवो.

विवेचन-कषायो थवामां बे कारणो छे. एक बाह्य कारण अने बीजुं आन्तरिक. पहेलुं कर्मोदय. बाह्य कारणमां कोइना कहेवाथी के विरुद्ध वर्तनथी कषायो थाय छे. क्रोध, मान, माया अने लोभ-ए चार मुख्य कषायो छे. तेना अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान अने संज्वलन ए चार प्रकारे दरेक कषायो गणतां सोळ कषायो थाय छे. तेमां हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा (निंदा), पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद-ए नव नोकषाय मेळवतां कुल पचीस कषाय थाय छे. गच्छाचार कहे छे के-कषायोदय थवो ते स्वाभाविक छे पण उदयमां आव्या पछी तेने अटकाववा, मिच्छामि दुक्कडं मागवा अने क्षमापना मागवी ए ज श्रेयस्कर कर्तव्य छे.

क्षमापनानुं महत्त्व—

आत्मा अंगारा जेवो सदा प्रज्वलित छे. अंगारा ओलवावा माटे-तेना उपर राख छवावा माटे. त्यारे आ बाह्य पवन नाखीए तो धीखता अंगारा उपरनी राख दूर थाय छे अने अंगारा पुनः सतेज बने छे. कषायो ए आवरण (राख) सदृश छे. आ रीते क्षमापनारूप पवन नाखीए तो ते कषायरूपी राख दूर थइ आत्मारूपी अंगारानो अग्नि सतेज बने छे. आ छे क्षमापनानुं मूल्य ने महत्त्व. जो राखने दूर करवामां न आवे तो धीमे धीमे अंगारा बुझाइ जाय छे. तेवी रीते जो कषायरूपी राख दूर करवामां न आवे तो आत्मा सदंतर कषायोथी अवराइ जाय, माटे कषायनो स्हेज पण प्रवेश थाय के तरत ज तेने हांकी काढवानो प्रयत्न करवो. वस्त्र उपर छूटीछवाइ रज के मेल ज्यां लाग्या होय त्यां स्हेज साबरणो फेरववाथी ते धूळ के रज शीघ्र दूर करी शकाय छे तेम कषायोदयनी कल्पना थतां ज तेने दूर करवा प्रयास करशो तो तमने बहु महेनत नहीं पडे.

श्रीआराधनापयन्नामां अने ते उपरथी उपाध्याय श्रीविनयविजयजी महाराजे रचेला 'श्रीपुण्यप्रकाशना' स्तवनमां खामणानी अगत्य जणावी छे. शिवगति प्राप्त करवाना तेमणे दश प्रकारो ते स्तवनमां जणाव्या छे, ते पैकी त्रीजुं स्थान क्षमापनाने आप्युं छे. तेओश्री ते स्तवनमां कहे छे—

जीव सवे खमावीए साहेलडी रे, योनि चोराशी लाख तो,
मनशुद्धे करो खामणा साहेलडी रे, कोई शुं रोष न राखतो. १

सर्व मित्र करी चिंतवो साहेलडी रे, कोई न जाणो शत्रु तो,
राग द्वेष इम परिहरी साहेलडी रे, कीजे जन्म पवित्र तो. २
साहमी संघ खमावीए साहेलडी रे, जे उपजी अप्रतीत तो,
सज्जन कुटुम्ब करो खामणा साहेलडी रे, ए जिनशासन रीत तो. ३
खमीए ने खमावीए साहेलडी रे, एही ज धर्मनो सार तो,
शिवगति आराधनतणो साहेलडी रे, ए त्रीजो अधिकार तो. ४

चारे गाथा सरळ छे तथी तेना विशेष विवेचननी आवश्यकता नथी उपर चोटया-मात्र देखाव पूरती मन विनानी क्षमापनाने आमां स्थान नथी एटला माटे ज "मनशुद्धे करो खामणा" एम स्पष्ट कहेवामां आव्युं छे आपणा महामान्य श्रीकल्पसूत्रमां पण कहेवामां आव्युं छे के—"खमियव्वं खमावियव्वं उवसमियव्वं उवसमावियव्वं सुमइसंपुच्छणा बहुलेण होयव्वं। जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं। से किमाहु भंते! उवसमसारं खु सामण्णं" अर्थात् साधुए पोते खमवुं अने बीजाने उपशांत करवा निर्मळ चित्तथी बीजाने सुखशाता पूछवी, रागद्वेष रहित बुद्धि ते सुमति, ने सुमतिपूर्वक सूत्रार्थ संबंधी विशेष प्रकारे पूछपरछ करवी अथवा सुखशाता पूछवी एटले के जेनी साथे कलह के कंकास थयो होय तेनी साथे निर्मळ चित्तथी वातचीत करवी कलह करनार बेमांथी एक पण न खमावे तो शुं? तेना जवाब ए छे के-जे उपशांत थाय छे-जे क्षमाशील बने छे तेने आराधना छे जे नथी खमावतो तेने आराधना नथी श्रामण्य उपशमप्रधान ज छे आ संबंधमां लौकिक अने लोकोत्तर बे दृष्टांत आपे छे—

कुंभारनुं वृत्तान्त—

'आरिय' जनपद पासेना गामडामां एक कुंभार रहेतो हतो ते वासणोनुं गाडुं भरीने वेचवा माटे पासेना दुब्बग नामना गाममां गयो ते गामना लोको लुच्चा हता तेओए कुंभारनो एक बळद लई लेवानो विचार कर्यो जेवामां कुंभार गाम नजीक आव्यो तेवामां तेओ कपटपूर्वक बोल्या के-अरे भाईओ! एक आश्चर्य तो जुओ आ कुंभार एक ज बळदथी गाडुं हांके छे कुंभारे विचार्युं के-आ गामना लोक बहु ज कपटी अने नीच छे बे बळद छे छतां एक कहे छे पछी ते कुंभार गामना बजारमां गयो गाडामांथी वासणो उतारी वेचवा लाग्या तेवामां लाग जोईने ते कपटी लोको कुंभारनो एक बळद लई गया वासण वेची रह्या बाद कुंभार जुए तो एक बळद न मळे कुंभारे गाममां

मुग्ध माणसने फरियाद करी त्यारे तेणे कह्यु-में पण सांभळ्युं हतुं के कुमार पण बळदथी ज गाडुं चलावतो हतो कुमारे वारंवार कह्या छतां पण बळद न मळ्यो एटले रोषे भराइने ते पोताने गाम चाल्यो गयो

वर्षाऋतु बाद खेतरमां धान्यना खळा तैयार थई रह्या हता त्यारे कुमारे दुरुयग गाममां जई रात्रिना ते बधाना खळा बाळी नाख्या आ प्रमाणे सात वर्ष सुधी खळा बाळी नाख्या दुरुयग गामना लोको विचारमां पडी गया, पण कई कारण न समजायु. आठमा वर्षे ते गाममां मल्लयुद्धनो महोत्सव थयो ते समये घणा गामना लोको एकत्र थया कुमार पण गयो गामना डाह्या माणसे ते वखते पोताना माणसद्वारा घोषणा करावी के-अमोए कोईनो कई पण अपराध कर्यो होय तो तेणे क्षमा आपवी अने अमाए कोईनुं कंई पण लीधु होय तो तेने पाछुं आपीशुं अमारु धान्य कोईए बाळवुं नहीं घोषणा सांभळी कुमारे ते हाल पीटनारने कह्यु के-तु आ प्रमाणे घोषणा कर-

"अप्पिणह त वइल्लं, दुरुयगा! तस्स कुमरुगस्स। मा भे दहिही गामं, अन्नाणि सत्त वासाणि ॥ १ ॥" जो कुमारना बळद न सोंपो तो सात वर्ष सुधी तमारु धान्य न बळत जो हजु पण बळद नहीं आपो तो बीजा सात वर्ष सुधी धान्य बाळीश गामना लोको समजी गया ते कुमारने खमाव्यो अने बळद पण पाछो आपी दीधो

आ दृष्टान्तनो साराश ए छे के-असंयती-अज्ञानी लोकोए खमाव्यो अने कुमार खम्यो तो जेओ साधु छे, चारित्र लीधु छे तेओए तो अवश्य क्षमापना करवी ज जोईए

द्रुमकनुं दृष्टान्त—

कोईएक दरिद्रीना छोकराए आसो मासमां धनिकना घरमां खीरनुं भोजन थतुं निहाळी पोताना पिता पासे खीर मागी दरिद्री गाममां जई दूध तथा चोखा मागी लाव्यो तेनी स्त्रीए खीर राधवा मांडी, दरमियान खडनो भारो लाववा ते खेतरे गया एटलामां गाममां चोर लोकोनी धाड पडी तेओए गाम लूटी लीधु आ दरिद्रीना घरे आवी खीरनी हांडी लई जई पोताना सेनापतिने आपी दरिद्री खेतरथी पाछो फरतां विचारे छे के-आज तो छोकरा साथे बेसी खीर खाइश घरे आव्यो के तरत ज छोकरो रोवा लाग्यो तेनी पत्नीए सब हकीकत कही एटले ते माथे भराणो खडनो भारो नीचे नाखी तरत ज ते चोरना सेनापति पासे गया चोर लोको पाछा गाममां गया हता सेनापति एकलो ज हतो पासे ज खीरनी हांडी पडी हती दरिद्रीए तरवारथी सेनापतिनुं माथु कापी नाख्यु चोर लोकोने आ खबर पडतां तेओ गाममांथी नाठी गया पल्लीमां आवी सेनापतिना अग्निसंस्कार

कर्यो पछी तेना स्थाने तेना नाना भाईने स्थाप्यो त्यारे तेनी बहेन, मा विगेरे स्वजनो कहेवा लाग्या के-तु सेनापति थवा छतां ते दरिद्री जीवता रहे ते बने ज केम ? धिक्कार छे तारा सेनापति पदने ! आ प्रमाणे बान्धव-बोल चढाववाथी ते सेनापति गाममां गयो ने दरिद्रीने बेडी नांखी पल्लीमां पकडी लाव्या पछी तेने मारवा माटे खड्ग हाथमां लीधु अने दरिद्री ब्राह्मणने पूछ्युं के-बोल, तने केवी रीते मारु ? त्यारे समयसूचकता वापरी तेणे कह्यु के-शरणे आव्या ज्ञान जे रीते मराय तेवी रीते मारो तेनु आवु वचन सांभळी सेनापति पोतानी मा बहेन सामुं जोवा लाग्या तेनी मा विगेरे तेनो भाव समजी गया, अने कह्यु के-भाई ! शरणे आवेलाने मारवा ए आपणो धर्म नथी त्यारे ते ब्राह्मणने छोडीने, तेनी पूजा करीने दक्षिणा आपीने रजा आपी

आ दृष्टान्तनो सार ए छे के-अज्ञानी एवा चोरे पण माफी मागवाथी दरिद्री ब्राह्मणने छोडी मूक्यो, तो परलोकभीरु साधुओए तो पोतानी जेवा सर्व जीवोने जाणी वात्सल्यभाव दर्शाववो घटे

उदायन राजर्षिनी कथा—

चंपा नगरीमां *अनंगसेन नामनो सोनी वसतो हतो ते अति विषयी मिजाजी हतो जे रूपवती कन्या देखे तेने घणु धन आपीने पत्नी करतो आ प्रमाणे ते पांच सो स्त्रीनो स्वामी थयो

पंचशैल नामना द्वीपना विद्युन्माली नामनो यक्ष च्यवी गयो त्यारे हासा ने प्रहासा नामनी मुख्य देवीओए विचार्युं के-कोईने लोभमां पाडीए तो ते आपणो स्वामी थाय अने तेनी साथे यथेच्छ भोग भोगवी शकीए अनंगसेनने स्त्रीनो लोभी जाणीने बन्ने तेनी अशोक वाटिकामां आवी सामी तेना रूप तथा हावभाव आदि मोहित बनी गयो मानवी स्त्री पण जो सुंदर होय छे तो तेना रूपराशि ऊपर पतंगीया मानव-भ्रमर मोहित थाय छे तो आ तो देवीओ तेना रूप पासे अनंगसेन जेवो कामी पाणी-पाणी थई जाय तेमां शु आश्चर्य ? हासा तथा प्रहासाए पण तेने बराबर पोताना पाशमां फसाववा हावभाव दर्शावी कटाक्ष फेंक्या कामातुर सोनी जेवो तेओना मस्तके हाथ मूकवा जाय छे तरत ज तेणीए कह्यु-जो तारे खरेखर अमने मळवु ज होय तो पंचशैल द्वीपे आवजे आ प्रमाणे कहीने बन्ने चाली गई

कामांध सोनी पंचशैल जवानी तैयारीमां पड्यो पंचशैल द्वीपे जवु एटले मृत्युने आमंत्रण आपवु कोई पण नाविक तेने लई जवा तैयार न थयो त्यारे उद्घोषणा करावी के-मने जे कोई पंचशैल द्वीपे पहोंचाडशे तने क्रोड सोनैया आपीश एक वृद्ध नाविक पटह स्वीकार्यो नाविके विचार्युं के-हवे वृद्ध थयो छु, मृत्युने किनारे बेठो छु तो क्रोड सोनैया मेळवी पुत्रने तो सुखी करता जाउ

* केटलेक स्थळे कुमारनंदी एवु पण नाम जणावेल छे

सोनी पासेथी क्रोड सोनैया लइ पोताना पुत्रने आप्या अने वहाण हंकारी मूक्युं.

केटलाक दिवसो पसार थया बाद पंचशैल द्वीप नजीक तेनुं वहाण आव्युं त्यारे वृद्ध नाविके सोनीने सूचना करी के—हवे आगळ जतां समुद्रनुं वमळ आवशे ते वमळमां—भमरमां जतां ज नाव चमारे चडशे अने तमारुं तज्जाई आ वहाण नाश पामशे, हुं पण मृत्यु पामीश. जो तमारे बचवुं होय अने पंचशैल द्वीपे जवुं होय तो सामुं जे वडलानुं झाड देखाय छे तेनी नीचेथी वहाण आगळ जाय के तरत ज तेनी शाखा पकडी लेजो. आ विशाळ वटवृक्ष ऊपर रात्रिना पंचशैल द्वीपना पक्षीओ आश्रय लेवा आवशे अने प्रातःकाळ थतां उडी जशे ते समये भारंड पक्षीना पग कटशीने तमे त्यां जइ शकशो. स्वार्थ सिद्ध करवा माटे मानवी शुं न करे? सोनीए ते प्रमाणे कर्युं अने पंचशैल द्वीप पहोंच्यो पण हासा ने प्रहासाने क्यां जइ शोधवी?

ते उद्यानमां आमतेम भटकवा लाग्यो तेवामां हासा प्रहासा तेनी नजरे चडी. पोतानी महेनत अने साहस सफळ थया जाणी तेणे संपूर्ण संतोष अनुभव्यो. बन्ने देवीओने तरत ज पोताने आवासमां लई जवा कह्युं. नीतिकारे खरेखर साचुं ज कह्युं छे के—

दिवा पश्यति नो घूकः, काको नक्तं न पश्यति ।
अपूर्वः कोऽपि कामान्धो, दिवानक्तं न पश्यति ॥ १ ॥

घूवड दिवसे जोई शकतुं नथी, कागडो रात्रे जोतो नथी, परन्तु कामान्ध पुरुष तो दिवसे के रात्रे पण कंइ जोइ शकतो नथी, अर्थात् सारासारनो सर्वथा विवेक ज भूली जाय छे.

बन्ने देवीओए तेना उत्कट कामाग्नि ऊपर शीतळ जळ रेडवुं शरू कर्युं, जे सांभळतां ज अनंगसेनना होशकोश उडी गया. पोतानी मूर्खाईनुं तेने हवे बराबर भान थयुं, पण हवे थाय शुं? बन्ने देवीओए तेने कह्युं—

" प्रिय अनंगसेन! तारी आ साहस-कथा जरूर प्रशंसापात्र छे, पण अमारा देहनुं आलिंगन सामान्य अने सस्तुं नथी. अमारुं प्रथम दर्शन तो तने लोभावनारुं छे; कामी मानवीना हाथमां अमे रमकडां नथी बनतां. जो तने अमारा संगनी खरेखर उत्कट इच्छा ज होय तो बीजी परीक्षा पसार—पास कर. 'आवता भवमां हुं हासा-प्रहासानो पति थाउं' एवा नियाणापूर्वक मरण स्वीकारो. तेम करवाथी तमारो देवयोनिमां जन्म थशे अने तमने आ सात धातुमय औदारिक शरीरने बदले अमारा जेवुं मनोहर वैक्रिय शरीर प्राप्त थशे."

हासा-प्रहासानुं वचन सांभळतां ज अनंगसेनना गात्रो गळी गया, कामाग्निनो तीव्र ताप शमी गया. आ मनुष्य देहथी कंइ सुखकार बनानो नथी

चवा विचारथी तेना मुख ऊपर निराशा फरी वळी तेना मुखमांथी सहसा बोलाई जवायु के-" मारी दशा धोबीना श्वान जेवी थई न रह्यो घरनो न रह्यो घाटनो देवांगनाओ मळी नहीं अने मानवललनाओ हतो ते पण अळगी थई गई "

हासा-प्रहासाए तेनो व्याकुळता पारखी लई कह्यु " सुवर्णकार ! तमारे मात्र हमारे निराश थवानो जरूर नथी अमो तमने तमारा नगरमा क्षणभरमां सुखपूर्वक पहोंचाडी दइशु तमारा अमारा पर साचो स्नेह होय तो अमे जणा वेला मार्गे चालजो साचा स्नेह विना समागमनु सुख नहीं माणी शकाय "

देवशक्तिने शु अशक्य छे ! आंख उघाडता ज सोनीए पोताने चंपा नगरीमां पोताना आवासमा सूतेलो जाण्यो दरियानी मुसाफरी, भारंड पक्षीना पग वळगवु, हासा-प्रहासाना दर्शन, सुंदर उपवन, मनोहर वार्तालाप विगेरे इन्द्रजाळनी माफक तेनी नजर समक्षथी सरी गयु तेनो अनुभव हजी ताजो ज हतो हासा-प्रहासाए चडावेल नशो तेनो स्मृतिमा हता तेणे अग्निप्रवेश करवानो निर्णय कर्यो आ वातनो तेना मित्र नागिलने खबर पडता ते त्यां आव्या अने अनंगसेनने अनेक प्रकारे समजाव्यो नागिल दृढ जैनधर्मी अने समजु हतो देवांगनाना संयोग पाछळ आत्माना केटलो अधःपात थाय छे ते सघ समजाव्युं, पण ते बधु छार पर लींपण समान निरर्थक निवडयु बाद ते जीवतो बळी मुओ अने नियाणाना प्रभावे पंचशैल द्वीपमा देवी-युगलनो विद्युन्माली नामे देव थया

मानु ज्यां सुधी मुग्धिवाळी किंमत समजातु नथी त्यां सुधी मीठा ईना बदलामा ते काढी आपे छे, पण केहानी कीमत समजतां ते कदी छेतरातु नथी तेम आ प्राचीन अनुभवे ज खरेखर ज्ञान प्राप्त थाय छे अनंगसेन मरी व्यंतरनिकायमा देवत्वनी प्राप्ति थवा छतां तेने संतोष न थयो देवी साथे समागमना दिवसो पाणीना रेलानी माफक चाल्या गया जीवन हमेशनु बनी रहता पहेलानी देवीओ प्रत्येना मोह पण अदृश्य बनी गयो

एक वार नंदीश्वर द्वीपनी यात्रानो प्रसंग आव्या तरतज देवेंद्र तरफथी हासा-प्रहासाने नृत्य करवानो अने विद्युन्माळीने मृदंग वगाडवानो आदेश थयो आ हुकम सांभळतां ज अनंगसेनना जीवने उचाट थ आव्यो पण देवराजनी आज्ञा अलंघनीय हतो दरेक यात्राप्रसंगे हासा-प्रहासानु नृत्य अने विद्युन्मा ळीनु मृदंग-वादन आचाररूप हता तेनी अनिच्छा छता मृदंग तेना गळे बंधाई गयु दुःख ने ग्लानि अनुभवथा छता तेने मृदंग वगाडता वगाडता आगळ चालवु पडयु आ बाजु तेना मित्र नागिल उत्तरावस्थामां चारित्र पाळी अच्युत देवलोकमा देव थयो तेणे आ स्थिति निहाळी तेने पोताना मित्र माटे दुःख थयु ते तरतज तेनी पासे आव्यो नागिल देवना देदीप्यमान तेज आगळ विद्युन्माळीनु मुख सूर्य आगळ तारा दृष्टा जणाया लाग्यु अत्यंत तेजस्वी मुख

न जोई शकवाने कारणे विद्युन्मालीए पोतानो हाथ मुख आगळ आडो धरवा मांडयो. नागिले तेने पूछ्युं—ओळखे छे ? विद्युन्मालीए नकार जणावतां नागिले कह्युं—हुं तारो मित्र नागिल. तारुं अज्ञानतामर्युं बाळमरण निरखी मारुं मन वैराग्य तरफ वळ्युं. निरतिचार चारित्र पाळी, शेष जीवनमां तप तपी हुं बारमा देवलोकमां देव थयो छुं. अवधिज्ञानवडे तारी शोचनीय स्थिति जाणी तारी पास आव्यो छुं.

विद्युन्मालीए तेने संबोधीने कह्युं—मित्र ! तारी हितशिक्षा अवगणी तेनुं आ परिणाम आव्युं छे, पण हवे पश्चात्ताप करवाथी शो लाभ ? हवे तो आ जीवनमांथी छूटवानो कोई सुमार्ग होय तो बताव. नागिल देवे तेने आश्वासन आपतां कह्युं—मित्र ! निराश थवानी जरूर नथी. पुरुषार्थीने सर्व कांई सुलभ छे. चरम जिनपति श्रीमन्महावीरदेवनी गोशीर्षचन्दननी मूर्ति भरावी, तेनी सारा आचार्यद्वारा प्रतिष्ठा करावी तेनी हरहमेश पूजा कर. ए प्रकारनी जिनभक्तिथी तारा अशुभ कर्मो नाश पामशे. तारा आयुना अंतभाग तने सारा नगरमां पहोंचती करजे के ज्यां ते प्रतिमानी सारी रीते पूजा थाय.

अट्ठाई महोत्सव पूर्ण थया बाद विद्युन्माली देव क्षुल्लहिमवंत पर्वत ऊपर जई गोशीर्ष चन्दननी प्रतिमा बनावी अने तेने रत्नना सर्व आभरणोथी अलंकृत करी घणा काळ सुधी तेनी पूजा थया बाद तेने सुयोग्य स्थळे पहोंचाडवानो ते विचार करे छे तेवामां समुद्रमां एक वणिकनुं नाव छ महिनाथी तुफाने चढेलुं मालूम पड्युं. छ महिनाना प्रयास छतां नाव न निकळ्युं परंतु वणिक पण मूंझायो नहि. तेणे धूप, दीप विगेरे पूजन सामग्री धरी इष्टदेवनुं स्मरण कर्युं. विद्युन्माली देवे त्यां आवी ते वणिकने कह्युं—हे वणिक ! महाशय ! अहीं आ हुं काष्ठनी पेटीने वीतभय नगरे महाराजा उदायनने पहोंचाडवानुं कबूल करे तो तारुं वहाण सहीसलामत वीतभय नगरे पहोंची जशे अने तारो आपत्ति-काळ दूर थशे. वणिके ते कथन स्वीकार्युं. विद्युन्माली देवे काष्ठनी पेटीमां श्रीमहावीरस्वामीनी मूर्ति मूकीने तेने सोंपी. देवप्रभावथी बीजे ज दिवसे वहाण वीतभयनगरे पहोंची गयुं.

वणिके राजा पासे भेटणुं धरी सर्व हकीकत कही संभळावी अने देवाधिदेवनी पेटी हाजर करी. पेटीना देखाव ज मंत्रमुग्ध करे तेवा हता. एनी कारीगरीमां, एना प्रत्येक आलेखनमां दैवी शक्तिनो चमत्कार जणातो हतो. वायुवेगे वात नगरमां प्रसरी गई अने मानवसागर उभराया. राजाए जेनामां शक्ति होय तेने पेटीना द्वार खोलवा आमन्त्रण आप्युं. जनतामां द्वार उघाडवा संबंधी स्पर्धा चाली, पण सघळाय हाथोने निराशा मळी. समय वधवा लाग्यो अने मानवमेदनी विखरावा लागी. राजाना धीरज खूटवा लागी, पण पेटीना द्वाराए कोईने अंश मात्र पण खुलवानी आशा न आपी परन्तु आदरेला समारंभ

पूर्ण कर्या विना राजाथी ऊभा पण केम थवाय? राजानी मुंझवणमां पण हवे वधारो थवा लाग्यो.

आवा बधा प्रयास छतां पेटी न खुली त्यारे लोकोने दैवी करामतनी कल्पना आववा लागी. कोइए शंकरना नामे, कोइए विष्णुना नामे, कोइए गजाननना नामे स्तुति करी पण सर्व व्यर्थ. राजानो भोजनना समय पण वीती गयो. राणी प्रभावतीए बे वार दासीने आमन्त्रण आपवा मोकली पण राजाथी उठाय तेम ज न हतुं. दासीमुखथी देवाधिदेव संबंधी हकीकत जाणी प्रभावती देवी पण घडीभर आश्चर्यमुग्ध बनी गई. ते खरी जैनधर्मिणी हती. तेने स्वाभाविक विचार आव्यो के 'देवाधिदेव' तो राग-द्वेषादि अढार दूषण रहित श्रीजिनेश्वर ज होइ शके. बाद स्नान करी, शुद्ध वस्त्रोमां सज्ज थइ, पूजननी सामग्री साथे प्रभावती पेटी समीप आवी. भक्तिभाव करती स्तुतिना सुन्दर स्वरनी साथे ज पेटीना द्वार आपमेळे खुली गया अने गोशीर्षचंदननी महावीर भगवंतनी मूर्ति सौ कोइनी नजरे पडी. सर्वत्र आनंद छवाइ गयो, राजवीनी चिंतानो अंत आव्यो. सुंदर प्रासाद बनावी तेनी प्रतिष्ठा करी. प्रभावती प्रतिदिन तेनी पूजा करती. राजा पण पूजनसमये वाजिंत्र वगाडी राणीना भक्तिभावने वधारता.

एक प्रसंगे स्नान करी राणीए दासी पासे पूजामां श्वेत वस्त्रो माग्यां. दासीए ते लावी हाजर कर्यां छतां भ्रमवश राणीने ते राता जणाया, एटले आवेशमां ने आवेशमां तेनाथी बोली जवायुं के-आ शृंगारने योग्य वस्त्रो शा माटे लावी? गुस्सामां तेणे ते दासी तरफ दर्पण फेंक्युं, जे तेना मर्मस्थळमां वागतां ते मृत्यु पामी. पछी तो श्वेत हता ते राणीने जणातां ज पोताना अविचारी कृत्य माटे घणो ज संताप थयो. आवो ज एक बीजो प्रसंग बनी गयो. राणी पूजन बाद नृत्य करी रही हती अने राजा वाजिंत्र वगाडी रह्या हता, तेवामां राजाने राणीनुं शिर-विहूणुं मात्र धड ज जाणे नाचतुं होय तेम जणायुं. तेना गात्र ढीलां पडी गया अने वाजिंत्र अटकी गयुं. राणीना नृत्यमां भंग पडतां तेणे कारण पूछ्युं. अतिशय आग्रह बाद राजाए सत्य हकीकत कही. एटले दासीना मरण बाद ज वात भुलाइ गइ हती ते पुनः ताजी थइ. राणीए निश्चय कर्यो के-हवे पोतानुं आयु अल्प छे. तेणे राजा पासे आत्मकल्याणना पंथे जवा रजा मागी. राजाए एक शरते रजा आपी के-जो तुं काळ करीने देव थाय तो मने प्रतिबोध पमाडजे. प्रभावतीए चारित्र पाळी स्वर्गप्राप्ति करी.

देव थया पछी प्रभावतीए राजाने प्रतिबोधवा अने जैनधर्मी बनाववा केटलाय प्रयासो कर्या पण राजा तो तापसभक्त बन्या. प्रभावती देव तेने प्रतिबोधवा तापस वेश ग्रहण कर्यो अने राजाने एक अत्यंत मनोहर फळ आप्युं. तेना स्पर्शथी राजाने आनंद थयो, तेनो गंध पण उत्तम हतो अने तेनो स्वाद तो अमृत फळ जेवो जणायो. एटले राजाए ते तापसने पूछ्युं के-आवां

फळो क्यां मळे छे ! तापसे कह्यु–मारी साथे तमे चाल्या आवो तो देखाडुं राजा तेम ने तेम अलंकार युक्त तापसनी पाछळ पाछळ गयो थोडे दूर गया पछी एक वन देखाड्यु, तेमां प्रवेश करतां थोडे दूर एक तापसाश्रम देखायो राजाने आवता जोइ घणा तापसो एकत्र थइ गया अने राजाने सर्व वस्त्राभूषणथी सज्ज जोइ, तेने मारी नाखी तेना सर्व अलंकार लइ लेवानो विचार करवा लाग्या तेओना तेवा विचार जाणी राजा भय पामी त्यांथी नाठवा लाग्यो थोडे दूर जता ते ज वनमां मनुष्योनो विशाळ समूह जोयो पोताने शरण मळशे तेवा हेतुथी राजा त्यां गया तो कामदेव जेवा स्वरूपवान, सौम्यमूर्ति, बृहस्पति समान विद्वान् साधुसमूहने अने तेमनी पासे उपदेश सांभळतां चतुर्विध संघने जोया आचार्ये राजाने निर्भय थवा कह्यु राजा त्यां बेठो अने स्थिर चित्तथी उपदेश सांभळ्यो जैनधर्मनो अंगीकार पण कर्यो राजानी जैनधर्ममां दृढ श्रद्धा थई जाणी प्रभावती देवे पोतानी सर्व माया संहरी लीधी पछी राजाए पोताने पोताना सिंहासन उपर बेठेलो जोयो जाणे हुं क्यांइ गयो नथी तेम आव्यो नथी आ शुं थयु ? तेम विचारे छे तेवामां प्रभावती देव प्रत्यक्ष थई कह्यु के–आ सर्व में ज तमने प्रतिबोध पमाडवा विकुर्व्युं हतुं हवे तमे जैनधर्मनुं यथार्थ पालन करजो अने भविष्यमां कइ पण विघ्न उपस्थित थाय त्यारे मारुं स्मरण करजो

आ बाजु प्रभावती राणीना चारित्र-स्वीकार पछी पूजनादिनुं कार्य एक कुब्जा दासीए स्वीकार्युं तेना मनमां चमत्कारिक बिंबरत्न साथ हता पहेले देवदत्तावी पूजारिणी पद स्वीकार्युं धाम धाम आ प्रतिमानुं माहात्म्य देश-देशावरमां प्रसरी गयु हतु

गंधार देशना कोई एक श्रावक शाश्वता तीर्थोनी भावनावाळो थया दीक्षा लीधा पहेला तेने तीर्थंकरोना जन्म, दीक्षा, केवळ अने निर्वाणभूमिओना दर्शन करवानी इच्छा थइ ए प्रमाणे परिभ्रमण करतां ते घणा मुनिओना सत्संगमां आव्यो एकदा कोइ मुनिराज पासे सांभळ्युं के–वैताढ्य पर्वतनी गुफामां श्रीऋषभदेव आदि चोवीस तीर्थंकरोनी रत्नमय मूर्तिओ अलौकिक अने चमत्कारिक छे. ते प्रतिमाओनां दर्शन करवानी भावनावाळा गंधार श्रावक महामुश्केलीथी त्यां गया देवाराधन कर्यु, तेणे ते स्फटिक रत्नमय प्रतिमाओना भावपूर्वक दर्शन कर्यां ते स्थळमां रत्नोना अतिशय ढगला छतां तेनुं मन लेश मात्र चलायमान न थयु तेथी देवे तुष्टमान थई तेने 'वर' मागवा कह्यु निर्लोभी गंधार श्रावके पोतानी अनिच्छा दर्शावी त्यारे 'अमोघ देवदर्शनम्' एम जणावी देवे तेने पन्नोश गुटिकाओ आपी अने कह्यु के–आ गुटिकाओना प्रभावथी मनचिंतित दरेक कार्य सफळ थशे त्यांथी पाछा वळतां वीतभयनगरना श्रीमहावीर जिनबिंबनी प्रभाविकता सांभळी ते त्यां आव्यो थोडा दिवस त्यां रही प्रभुभक्तिनो अपूर्व लाभ लीधो

अचानक गधार श्रावकनु स्वास्थ्य बगडयु ते मांदो पडयो परदेशमां तेनुं स्वजन कोण होय ? कुबडी दासीए तेनी सेवा-चाकरी करी सगी बहेन चाकरी करे तेवा भक्तिभावथी दासीए गधारनी सेवा-शुश्रूषा करी, तेथी गधारने आराम तो न थयो, परन्तु तेनो दुःखभार ओछो थयो असाध्य रोगे गधारनो प्राण लीधो ते पूर्वे तेणे कुबडा दासीने पोतानो गुटिकासंग्रह आपी दीधो अने साथोसाथ तेना फायदा पण समजाव्या

गधारना मृत्यु पछी दासीने गुटिकानो चमत्कार जोवानी तालावेली लागी तेणे एक गुटिका खाइ स्वरूपवान थवानी इच्छा करी ता गुटिकाना प्रभावथी देवांगना समी बनी गई एक गुटिकाना चमत्कारे जणायो के तरत ज दासीए मनोरथना किल्ला चणवा मांडया अत्यार सुधी भोगसुखथी वंचित रहेल तेणीनी विलासनी वासना वृद्धि पामी, पण उदायन राजा द्वारा तेनी तृप्ति थवी अशक्य जणाता तेनी नजर उज्जैनीना राजवी चंडप्रद्योत ऊपर पडी तेनु नाम पण हवे सुवर्णगुटिका तरीके प्रसिद्धि पाम्यु

चंडप्रद्योत पोताना दूतने उदायन राजा पासे सुवर्णगुटिकानी मागणी करवा मोकल्यो उदयने दूतनो तिरस्कार करी काढी मूक्यो उदायन साथे वाद मांडवी चंडप्रद्योतने माटे अशक्य हतु, कारण के उदायनना सामर्थ्यथी ते सारी रीते परिचित हतो तेणे युक्तिथी काम लेवानो निर्णय कर्यो एक रात्रिए पोताना अनिलगिरि नामना गंधहस्ती ऊपर बेसी, थोडा माणसो साथे ते वीतभयनगरे आव्यो सुवर्णगुटिकाने तैयार थई जवा कह्यु, पण सुवर्ण गुटिकाए कह्यु क-आ चमत्कारी प्रतिमा विना माराथी अहींथी एक पगलु पण न खसाय, माटे आना जेवी ज महावीरनी बीजी प्रतिमा बनावी, तेने अहीं स्थापन करी, आ प्रतिमा आपणे साथे लई जवी जोइए चंडप्रद्योतने सुवर्ण गुटिकानु वचन स्वीकार्या सिवाय छूटको नहोतो

उज्जैनीमां आवी चंडप्रद्योते तेवी प्रतिमा करावी पछी अनुकूळ समय जोइने वीतभयपट्टणे गया मूळ प्रतिमाने स्थाने बीजी प्रतिमा स्थापी ते सुवर्णगुलिका साथे पोताना नगरे पहोंची गया अनिलगिरि गंधहस्तीना वासथी उदायन राजाना हाथीओ आलानस्तंभ उखाडी नाखवा प्रयास करवा लाग्या हता, कारण के गंधहस्तीनी गंध सामान्य हस्तीओ सहन करी शकता नथी हाथीओना धमसाणने कारणे महावतो जागी गई कारण तपासवा लाग्यां ते वामां तो चंडप्रद्योतना आगमनना अने सुवर्णगुलिकाना अपहरणना समाचार उदायन राजाने मळ्या, राजाए जिनप्रासादमां जइने जोयु तो जे पुष्पमाळा कदी करमाती नहीं तेने चीमळायेली नीहाळी उदायनने अतीव क्रोध चडयो दश मुकुटबद्ध राजाओ साथे तेण उज्जैनी ऊपर चढाइ करी उदायने चंडप्रद्योतने कहेवराव्यु के-आपणे द्वन्द्व युद्ध करीए, निरर्थक शा माटे शस्त्रास्त्रो अने

सेनानो विनाश करवो ? चंडप्रद्योत अनिलगिरि हस्ती ऊपर बेसी अने उदायन रथमां बेसी तुमुल युद्ध करवा लाग्या युद्धकुशल उदयने अनिलगिरि हस्तीना चारे पगो शरथी वींधी नाख्या अने चंडप्रद्योतने पकडी लीधो तेना ललाट ऊपर 'दासीपति' एवा शब्दो लखी यशोगान तरीके तेने साथे लीधो

जीवतस्वामीनी प्रतिमा पाछी लई जवा माटे उदायने प्रयास कर्यो, पण मूर्ति अंशमात्र चली नहीं उदायनने शंका थई के-शुं परमात्मा फरमान थया हशे ? तेवामां अंतरिक्षमां वाणी थई के-वीतभयपट्टण थोडा ज समयमां धूळथी दटाई जशे, माटे आ प्रतिमाने पुनः त्यां लई जवाना प्रयास पडता मूक राजा उदायन खिन्न हृदये पाछा फर्या

वीतभयनगर तरफ प्रयाण करतां करतां वच्चे वर्षाऋतु आवी पडले माह स्थळ जोई राजा उदायने पोताना सैन्यनी छावणी नाखी वर्षाऋतुमां जीवोनो संहार न थाय ते हेतुथी एक ज स्थळे चातुर्मास गाळवानो निर्णय कर्यो, अने पर्युषण पर्वाधिराजनुं आराधन करवानु पण ते स्थळे निर्णीत थयु जे स्थळे दश मुकुटबद्ध राजाए पडाव नाख्यो ते स्थळ एक नगरना देखाव समु शोभी उठ्यु ते स्थळ त्यारबाद 'दशपुर' तरीके प्रसिद्धि पाम्यु हाल तेने मंदसोर तरीके ओळखवामां आवे छे

पर्युषणना अंतिम दिवसे रसोइयो राजवी उदायनने रसोई माटे पूछवा गया तेणे कह्यु-आजे मारे उपवास छे चंडप्रद्योतने पूछीने तेमने रुचे तेवी रसवती करी जमाडजे रसोइयो चंडप्रद्योतने रसोई माटे पूछवा गयो काई दिवस नहीं अने आजे रसोया रसोई माटे पूछवा आवतां चंडप्रद्योतना मनमां अनेक शंका-कुशंकाओ पेदा थई गई छूपी रीते पोताना अन्नमां विष भेळवी देशे तो ? ए वहेमे तेना मनमां मजबूत स्थान कर्यु आ रीते छूपी रीते दगानो भोग थवा करतां उपवास करवो शुं खोटो ? एम विचारी तेणे रसोयाने कह्यु के-मारे पण आजे उपवास छे राजवी उदायनने आ समाचार मळतां ज तेमणे विचार्यु के-चंडप्रद्योत तो मारो साधर्मी बंधु, ज्यां सुधी एक पण स्वामी भाई साथे वैमनस्य होय, ज्यां सुधी ए वैमनस्य निवारण करी तेनी साथे साची क्षमापना न करी होय त्यां सुधी मारु पर्युषण-पर्वाराधन अपूर्ण ज गणाय जिनाज्ञाना आराधक थवा माटे मारे चंडप्रद्योत साथे पण साची क्षमापना करी लेवी जोईए. तरत ज पोते स्वयं कारागृहना द्वार खोली नाख्या अने चंडप्रद्योतने भेटी पोताना स्वामीभाईनी आज सुधी जे कदर्थना करी ते माटे पश्चात्ताप जाहेर कर्यो तेना ललाट ऊपर लखायेला 'दासीपति' शब्दने ढांकवा माटे सुवर्णपट्ट बंधाव्यो अने सुवर्णमुद्रिका तेने पहेरावी तेनु राज्य तेने पुनः पाछु आप्यु आ रीते चंडप्रद्योतने प्रथम उपवास पण लाभप्रद थयो

राजवी उदायन तो श्रावक हता चंडप्रद्योत जेवो गुनेगार शत्रु हतो छतां

कषायने उपशमावी क्षमापना करी तो पंच महाव्रतधारी साधुए अवश्य करवी ज जोईए, कारण के चारे कषाय संसाररूप विशाळ महेलना मजबूत पाया छे तेने शिथिल करशो तो संसारी महेलातने धराशायी थता वार नहीं लागे मोहराजाना ए चण पीत्रो अने मायारूपी पौत्रीथी सदा सावधान रहेवु ते पण गुप्त चोर छे के तेना आगमननी अने लूटनी आपणने खबर पडती नथी आ त्रणे दृष्टान्तो श्रीनिशीथचूर्णीना दशमा उद्देशामां आपेला छे सुगच्छना लक्षणो बतावता हजु पण ग्रन्थकार जणावे छे के--

सीलतवदाणभावण-चउविहधम्मंतरायभयभीए ।

जत्थ बहू गीअत्थे, गोअम ! गच्छं तयं भणिअम् ॥ १०० ॥

[शीलतपोदानभावना-चतुर्विधधर्मान्तरायभयभीताः ।

यत्र बहवो गीतार्थाः, गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥१००॥]

गाथार्थ-दान, शील, तप अने भाव-आ चार प्रकारना धर्मना अंतरायथी भय पामेला गीतार्थ साधुओ जे गच्छमां घणा होय तेने हे गौतम ! तु सुगच्छ जाण.

विवेचन-चार कषाय ए जेम संसाररूपी महेलना पाया छे तेम दानादि चार धर्मो धर्मरूपी महेलना आधारभूत चार स्थंभो छे श्रीमाद्धदिनकृत्य वृत्तिमा त्रण प्रकारना दान कह्या छे दानशीलतपोभावैः स तु धर्मश्चतुर्विधः। दानं तावत् त्रिधा ज्ञानाऽभयोपग्रहभेदतः ॥ १ ॥ बोजाने भणावे, श्रुत संभळावे, तीर्थंकरप्ररूपित आगमनु मुमुक्षु जीवोने अध्ययन करावे ते १ ज्ञानदान, २ अभय दान-स्वभावथी ज दुःख पामेला जीवोने पीडा न करे अने ३ उपकरणदान-ज्ञान तथा अभय आपनाराने आहारादिक आपीने उपष्टंभ करे ते, अथवा जे वस्तुना दानथी चारित्रने सहाय थाय ते पण धर्मोपकरण दान कहेवाय छे

दाननी माफक शीलना पण त्रण प्रकार छे १ शुद्ध आचार-निरवद्य (निष्पाप) श्रावक या साधुधर्मनु पालन करवुं, २ *अढार हजार शीलांग रथनु पालन-तेमां

* ३ योग, ३ करण, ४ संज्ञा, ५ इन्द्रियो, १० पृथ्वीकाय आदि (५ स्थावर, ४ त्रस अने १ अजीव) अने १० यतिधर्म-आ सवने परस्पर गुणतां १८००० भेद थाय छे, ते नीचे प्रमाणे—

क्षांतियुक्त, पृथ्वीकायसंरक्षक, श्रोत्रेंद्रियने संवरण करनार अने आहारसंज्ञा रहित मुनि मनथी पाप-व्यापार न करे एवी रीते क्षांतिना स्थाने मार्दव आर्जव आदि नव यतिधर्म कहेवाथी १० भेद थया आ दश भेद 'पृथ्वीकायसंरक्षक' पदना योगथी थया, तेवी रीते अप्कायथी मांडीने अजीव सुधी प्रत्येकना दश-दश भेद करवाथी १०० भेद थया आ सो

लेशमात्र पण दोष न लगाडवो अने ३ ब्रह्मचर्य पाळवु

तप बार प्रकारनो छे छ बाह्य अने छ अभ्यंतर आ तपने लगतु विस्तृत विवेचन अगाउ पृष्ठ १२६ ऊपर आवी गयेल छे आ संबंधमा विशेष वक्तव्य ए छे के-१ मघा, २ भरणी, ३ पूर्वाफाल्गुनी, ४ पूर्वाषाढा अने ५ पूर्वाभाद्रपद आ पांच उग्र नक्षत्रमा वास करीने तप करवो गुरुगुणषट्त्रिंशिकावृत्तिमा शरीर, वचन अने काया ए त्रण प्रकारनो तप कह्यो छे १ शरीर तप-देव, साधु, गुरु, सिद्धांतनी पूजा-बहुमान करे, शौच पाळे, ब्रह्मचर्य पाळे, सरळता राखे कपट न करे तेमज हिंसा न करे ते शरीर तप कहेवाय, २ वचनतप-बीजाने उद्वेग थाय तेवु न बोले, सत्य प्रिय हित ने मित वाक्य ज बोले, स्वाध्याय करे, सुवाक्यान वधारे ते वचन तप जाणवो ३ मन तप-मनने आमंत्रित राखे, मौनपणु राखे दुर्ध्यान न करे, मन निर्मळ राखे आ त्रण प्रकारना तप अनुक्रमे वधारी वत उत्कृष्ट समजवा सात्त्विक, राजस् अने तामस्-ए त्रण प्रकारनो पण तप होय छे फळनी वाछा विना कराती तप सात्त्विक, पूजा, सत्कार अने बहुमाननी इच्छाथी करातो तप ते राजस् अने आत्माने पीडीने बीजाना नाश माटे जे तप कराय ते तामस् कहेवाय छे

भावना बार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ अनित्य भावना-तारो वैभव, तारा संयोगो, तारी बीजा नित्य तारी पासे रहेवानी नथी, तारु शरीर पण सदाने माटे तारु नथी २ अशरण भावना-तने व्याधि थाय तो पीडामा कोइ भाग पडावे तेम नथी, दु खमां कोई टेको आपी शके तेम नथी, तारे तारो ज आधार छे ३ संसार भावना-समग्र संसारमा कर्म राजा जे नाटक करावी रह्या छे अने आपणे आ भवप्रपंच चाली रह्यो छे तेनो विवेक पूर्वक ऊंडा रही विचारणा करवी ४ एकत्व भावना-आ प्राणीनो आत्मा एकलो ज छे, तेनु कोई नथी, ते पण कोईनो नथी, ए पोतो पोतानो ज मालिक छे ५ अन्यत्व भावना-आपणो आत्मा सर्वथी अन्य छे-भिन्न छ एनु काइ सगु नथी एनु पोतानु शरीर पण एनाथी अन्य छे आ स्वपरभाव विचारणा करवी ६ अशुचि भावना-मांस, रुधिर, मेद, हाडका, लोही अने चामडु-ए बनेलु आ शरीर अपवित्रतानी पोटली छे, एना ऊपर मोह करवा जेवु नथी, तेनो खरेखरो उपयोग करी लेवा जेवु छे ७ आश्रय भावना-जीव अप्रतीपणाथी, मिथ्यात्वथी, कषायोथी अने मन-वचन-

---

भेद 'श्रोत्रेंद्रिय' पदना संयोगथी थया, तेवी रीते चक्षु आदि अन्य चार इंद्रियोना संबंधथी चारसो भेद करवाथी कुल ५०० भेद थया आ पाचसो भेद 'आहारसंज्ञा' ना संबंधथी थया, अन्य त्रण संज्ञाओना संबंधथी पदरसो थवाथी कुल बे हजार थया आ बे हजार 'करण' पदनी योजनाथी थया तेवी रीते 'करावण अने अनुमोदन' पदथी बे-बे हजार मेळवता ६००० थया आ छ हजार भेद मन संबंधी थया तेवी रीते वचन अने कायाना संबंधथी छ-छ हजार मेळवतां कुल १८००० भेद थाय छे

कषायने उपशमावी क्षमापना करी तो पण महाव्रतधारी साधुए अवश्य करवी ज जोईए, कारण के चारे कषाय संसाररूप विशाळ महेलना मजबूत पाया छे तेने शिथिल करशो तो संसारी महेलातने धराशायी थता वार नहीं लागे मोहराजाना ए त्रण चोरो अने मायारूपी चोरीथी सदा सावधान रहेवु ते पण छुपा चोर छे के तेना आगमननी अने लूंटनी आपणने खबर पडती नथी आ त्रणे दृष्टांतो श्रीनिशीथचूर्णीना दशमा उद्देशामां आपेला छे सुगच्छना लक्षणो बतावता वळी पण ग्रन्थकार जणावे छे के—

सीलतवदाणभावण–चउविहधम्मंतरायभयभीए ।

जत्थ बहू गीअत्थे, गोअम ! गच्छं तयं भणिअम् ॥ १०० ॥

[शीलतपोदानभावना-चतुर्विधधर्मान्तरायभयभीताः ।

यत्र बहवो गीतार्थाः; गौतम ! गच्छः सको भणितः ॥१००॥]

गाथार्थ-दान, शील, तप अने भाव-आ चार प्रकारना धर्मना अंतरायथी भय पामेला गीतार्थ साधुओ जे गच्छमां घणा होय तेने हे गौतम ! तु सुगच्छ जाण.

विवेचन-चार कषाय ए जेम संसाररूपी महेलना पाया छे तेम दानादि चार धर्मो धर्मरूपी महेलना आधारभूत चार स्थंभो छे श्रीश्राद्धदिनकृत्य वृत्तिमां त्रण प्रकारना दान कह्या छे दानशीलतपोभावैः स तु धर्मश्चतुर्विधः। दानं तावत् त्रिधा ज्ञानाऽभयोपग्रहभेदतः ॥ १ ॥ योग्याने भणावे, श्रुत समजावे, तीर्थंकरप्ररूपित आगमनु मुमुक्षु जीवोने अध्ययन करावे ते १ ज्ञानदान, २ अभय दान-स्वभावथी ज दुःख पामेला जीवोने पीडा न करे अने ३ उपकरणदान-ज्ञान तथा अभय आपनाराने आहारादिक आपीने उपग्रह करे ते, अथवा जे वस्तुना दानथी चारित्रने सहाय थाय ते पण धर्मोपकरण दान कहेवाय छे

दाननी माफक शीलना पण त्रण प्रकार छे १ शुद्ध आचार-निर्दोष (निष्पाप) श्रावक या साधुधर्मनु पालन करवुं, २ *अढार हजार शीलांग रथनुं पालन-तेमां

* ३ योग, ३ करण, ४ संज्ञा, ५ इंद्रियो, १० पृथ्वीकाय आदि (५ स्थावर, ४ त्रस अने १ अजीव) अने १० यतिधर्म-आ सवने परस्पर गुणतां १८००० भेद थाय छे, ते नीचे प्रमाण—

क्षांतियुक्त, पृथ्वीकायसंरक्षक, श्रोत्रेंद्रियने संवरण करनार अने आहारसंज्ञा रहित मुनि मनथी पाप-व्यापार न करे. एवी रीते क्षांतिना स्थाने मार्दव, आर्जव आदि नव यतिधर्म कहेवाथी १० भेद थया आ दश भेद 'पृथ्वीकायसंरक्षक' पदना योगथी थया, तेवी रीते अप्कायथी प्रारंभी अजीव सुधी प्रत्येकना दश-दश भेद करवाथी १०० भेद थया आ सो

लेशमात्र पण दोष न लगाडवो अने ३ ब्रह्मचर्य पाळवुं

तप बार प्रकारनो छे छ बाह्य अने छ अभ्यंतर आ तपने लगतुं विस्तृत विवेचन अगाउ पृष्ठ १२६ उपर आपी गयेल छे आ तपमां विशेष वर्णवता कहे छे के-१ मघा, २ भरणी, ३ पूर्वाफाल्गुनी, ४ पूर्वाषाढा अने ५ पूर्वाभाद्रपद आ पांच उग्र नक्षत्रमां खास करीने तप करवो गुरुगुणषट्त्रिंशिकावृत्तिमां शरीर, वचन अने काया ए त्रण प्रकारनो तप कह्यो छे १ शारीर तप-देव, साधु, गुरु, सिद्धांतनी पूजा-बहुमान करे, शौच पाळे, ब्रह्मचर्य पाळे, सरळता राखे कपट न करे तेमज हिंसा न करे ते शारीर तप कहेवाय, २ वचनतप-बीजाने उद्वेग थाय तेवुं न बोले सत्य प्रिय हित ने मित वाक्य ज बोले, स्वाध्याय करे, सूत्राभ्यास वधारे ते वचन तप जाणवो ३ मन तप-मनने आनंदित राखे, शीतळपणुं राखे दुर्ध्यान न करे, मन निर्मळ राखे आ त्रण प्रकारमां तप अनुक्रमे चडती एक उत्कृष्ट भावनाथी सात्त्विक, राजस् अने तामस्-ए त्रण प्रकारनो पण तप होय छे फळनी वांछा विना करातो तप सात्त्विक, पूजा, सत्कार अने बहुमाननी इच्छाथी कराता तप ते राजस, अने आत्माने पीडीने बीजाना नाश माटे जे तप कराय ते तामस् कहेवाय छे

भावना बार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ अनित्य भावना-तारो वैभव, तारा संयोगो, तारी चीजो नित्य तारी पासे रहेवानी नथी, तारुं शरीर पण सदाने माटे तारुं नथी २ अशरण भावना-तने व्याधि थाय तो पीडामां कोई भाग पडावे तेम नथी, दुःखमां कोई टेको आपी शके तेम नथी, तारे तारो ज आधार छे ३ संसार भावना-समग्र संसारमां रंक राजा जे नाटक करावी रह्या छे अने आखो आ भवप्रपंच चाली रह्यो छे तेना विषय पर्यंते ऊंडा रही विचारणा करवी ४ एकत्व भावना-आ प्राणीनो आत्मा एकलो ज छे, तेनुं कोई नथी, ए पण कोईनो नथी, ए पोतानो ज मालिक छे ५ अन्यत्व भावना-आपणो आत्मा सर्वथी अन्य छे-भिन्न छे, धन तो कांई सगुं नथी, पण पोतानुं शरीर पण पोताथी अन्य छे आ स्वपरभाव विचारणा करवी ६ अशुचि भावना-मांस, रुधिर, मेद, हाडकां, नसो अने चामडानुं बनेलुं आ शरीर अपवित्रतानी पोटली छे, एना उपर मोह करवा जेवुं नथी, तेनो खरेखरो उपयोग करी लेवा जेवुं छे ७ आश्रव भावना-जीव अव्रतीपणाथी, मिथ्यात्वथी, कषायोथी अने मन-वचन-

---

भेद 'श्रोत्रेंद्रिय' पदना संयोगथी थया, तेवी रीते चक्षु आदि अन्य चार इंद्रियोना संबंधथी चारसो भेद करवाथी कुल ५०० भेद थया आ पांचसो भेद 'आहारसंज्ञा' ना संबंधथी थया, अन्य त्रण संज्ञाओना संबंधथी पंदरसो वधवाथी कुल बे हजार थया आ बे हजार 'करण' पदनी योजनाथी थया तेवी रीते 'कराववुं अने अनुमोदन' पदथी बे-बे हजार मेळवतां ६००० थया आ छ हजार भेद मन संबंधी थया तेवी रीते वचन अने कायाना संबंधथी छ-छ हजार मेळवतां कुल १८००० भेद थाय छे

कायाना योगोथी कर्म बांधे छे, कर्मथी भारे थाय छे अने संसारमां रखडे छे ८ संवर भावना-क्षमादि दश यतिधर्मो, आठ प्रवचनमाता, बार भावनाओ, बावीश परिषहो विगेरे द्वारा आवता कर्मो रोकी शकाय तेवी विचारणा ९. निर्जरा भावना-वृत्ति ऊपर अंकुश, अनशनादि बाह्य तपस्या तथा विनय-वैयावच्चादि आंतर तपस्याथी लागेलां कर्मोनो मुक्ति वगर भोगवे शक्य छे तेवी विचारणा १० धर्मसुकृता भावना-आत्मानु स्वरूप, धर्म स्वरूप, धर्मनो संबंध, मुक्तिमार्ग, तेना उपाय अने तेनु उपादेयपणु धर्ममां रहेलुं छे तेनी बुद्धिरूप विचारणा ११ लोकपद्धति भावना-लोकाकाशनु स्वरूप, लोकनु स्वरूप, तेमां थतां आत्माना जन्म मरणनी स्थिति अने रखडपाटाना स्थानोनी विचारणा *१२. बोधिदुर्लभभावना-साचा मार्गनी ओळखाण, प्राप्ति अने संरक्षण मुश्केल छे पण ए रत्नत्रयीनी प्राप्ति करवी ए खास कर्त्तव्य छे तेवी विचारणा आ बार प्रकारनी भावना उपरांत मैत्री, प्रमोद, कारुण्य अने माध्यस्थ्य-ए चार भावना गणतां सोळ भावना पण थाय छे

' भाव्यते इति भावना ' अर्थात् संसार प्रत्ये वैराग्य प्रगट करवा माटे मनमां वारंवार जेनु स्मरण करवामां आवे अने ते द्वारा आ संसारबंधनथी आत्माने मुक्त करवामां आवे अगर तो आत्माने मोक्ष सन्मुख करवामां आवे ते भावना कहेवाय छे

भावनानुं क्षेत्र आपणा सर्व संबंधोनु पृथक्करण करवानु छे अने ते रीते ए भूमिकानी शुद्धि करे छे शुद्ध करेली भूमिका ऊपर सुन्दर चित्रामण थाय तेम भावनाभावित आत्मा ऊपर वैराग्यनी सुन्दर भूमिका रचाय छे समजण अने ज्ञान वगर कोइ पण क्रिया तेना वास्तविक स्वरूपमा थती नथी ' आपणे कोण छीए ? क्यां छीए ? शा माटे छीए ? आ संसार-परिभ्रमणना हेतु शो ?' ए बराबर विचारवानु क्षेत्र भावना छे भावना आपणने अन्दर जोता शीखवाडे छे अने तेटला ज खातर कहेवामा आव्यु छे के-भावना भवनाशिनी ।

हवे त्याग करवा योग्य गच्छनु स्वरूप जणावता कहे छे के—

जत्थ य गोयम पंचण्ह, कहवि सूणाण इक्कमवि हुज्जा ।
त गच्छ तिविहेण, वोसिरिअ वइज्ज अन्नत्थ ॥ १०१ ॥

---

* भावनानु विशेष स्वरूप समजवा माटे उपाध्याय श्रीविनयविजयजीकृत " शांत सुधारस" ग्रन्थ वाचवो ते संस्कृत पद्य ऊपर श्रीयुत मोतीचन्द गिरधरलाल कापडियाए गुजराती भाषामां " शांत सुधारस "ना लखेल बन्ने भागो खास वांचवा लायक छे. विवेचन बहु ज सुन्दर अने सरल भाषामां समजी शकाय तेवु छे

सूणारंभपवत्तं, गच्छं वेसुज्जलं न सेविज्जा ।
जं चारित्तगुणेहिं, तु उज्जलं तं तु सेविज्जा ॥ १०२ ॥
जत्थ य मुणिणो, कयविक्कयाइ कुव्वंति संजमब्भट्ठ ।
त गच्छं गुणसायर !, विस व दूर परिहरिज्जा ॥ १०३ ॥

[यत्र च गौतम ! पञ्चाना, कथमपि सूनानामेकमपि भवेत् ।
तं गच्छ त्रिविधेन, व्युत्सृज्य व्रजेदन्यत्र ॥ १०१ ॥
सूनारम्भप्रवृत्त, गच्छ वेशोज्ज्वल न सेवेत ।
यश्चारित्रगुणैः तूज्वलस्त तु सेवेत ॥ १०२ ॥
यत्र च मुनयः, क्रयविक्रयादि कुर्वन्ति संयमभ्रष्टाः ।
त गच्छ गुणसागर !, विषमिव दूरतः परिहरेत् ॥ १०३ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! जे गच्छमा १ घटी, २ उखल-खाणीयो, ३ चूलो, ४ पाणीयारु अने ५ सावरणी-आ अनेक असख्य जतुओना वधस्थानो पैकी एक पण होय ते गच्छनो मन-वचन-कायाथी त्याग करीने अन्य सारा गच्छनो आश्रय लेजे जीवहिंसाना कारणभूत खाणीया विगेरेना आरभमा प्रवर्तेला अने उज्ज्वळ वेश धारण करनारा दभी साधुओना गच्छनी सेवा न करवी, परन्तु समिति-गुप्तिरूप चारित्र गुणोथी विभूषित गच्छनी वैयावच्चादिक सेवा करवी. वळी जे गच्छनी अदर मुनियो क्रय-विक्रय आदि करे, करावे के अनुमोदे ते साधुओ सयमभ्रष्ट जाणवा. हे गुणना सागर समान गौतम ! तेवा साधुओने तो हलाहल झेरनी माफक दूरथी ज तजी देवा.

विवेचन—घटी प्रमुख जीवहिंसाना हेतुभूत छे साधुआने त्रिविधे त्रिविधे हिंसानु प्रत्याख्यान होय छे. अन्य दर्शनीय ग्रथोमा पण हिंसाना हेतुभूत आ कारणोना निषेध फरमाव्या छे ओघुकसवादमा कह्यु छे के-"खडनी १ पेषणी २ चुल्ली ३ जलकुम्भ ४ प्रमार्जनी ५ । पञ्चसूना गृहस्थस्य, तेन स्वर्गं न गच्छतीति ॥" अर्थात् खाडणो, घटी, चूला, कळना घडा (पाणीयारु) अने सावरणी-आ पाच वस्तुना गृहस्थोए त्याग करवा, कारण के तेथी स्वर्गे जवातुं नथी. आ पाच प्रकारोमा आसक्ति धरावता होय तेवा श्वेतवस्त्रधारी साधुओना पण शीघ्र त्याग करवो, कारण के तेवा उज्ज्वळ वस्त्रधारक साधु नथी पण दभो

जाणवा उज्ज्वळ वस्त्रो विभूषा थाय छे, विभूषाथी चीकणा कर्म बंधाय छे अने चीकणा कर्मबंधथी संसार-भ्रमण वधे छे श्रीदशवैकालिक सूत्रमां कह्यु छे के- "विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ १ ॥" उज्ज्वळ वेष-परिधानथी ब्रह्मचर्यनो नाश थाय छे कदरूपो प्राणी होय ते पण श्वेत वस्त्रविभूषाथी रूडो जणाय छे, तेने तेवा प्रकारनो देखी स्त्रीओ तेने क्रीडा योग्य जाणी तेना प्रत्ये आकर्षाय छे तेमा वळी जो गात्र रमणीय होय तो स्त्रीओना कटाक्षादिकथी क्षोभ पाम्यो छतो ब्रह्मचर्यथी भ्रष्ट थशे वळी लोकोने विषे पण तेवा साधु निंदाने पात्र थाय छे, कारण के तेवा प्रकारना साधु जोईने लोको कहे छे के मुनि चोक्कस कामी जणाय छे, नहीं तो संसारनो त्याग कर्या पछी वळी वस्त्रनी टापटीप शा माटे करे ? हे गौतम ! आवा गच्छनो त्याग करी सुगच्छनो आश्रय लेवो

कोई शंका करता पूछे के-काळना प्रभावथी अत्यारे निरतिचार चारित्र पालन दुष्कर छे तो तेनो जवाब ए छे के-जे दोष लागे तेनी गर्हा-निंदा करे ते निरतिचार चारित्री जाणवो जेम वस्त्र मलिन थाय तने धोवाथी ते मेल रहित थाय छे तेम अतिचार लाग्या होय तेनी गर्हा-निंदा करवाथी निरतिचार चारित्र पळाय छे

वळी जे साधुओ पात्रादिकनो, औषधनो, पुस्तक, पोथीनो क्रयविक्रय करता होय, करावता होय अगर तो तेवु कार्य करनारनी अनुमोदना करता होय तेवा साधुओने छेद करता पण विशेष हानिकर जाणवा छेद साधु छतु एक वखत ज प्राणनो नाश करे छे पण आवा संयमभ्रष्ट साधुना संसर्गथी तो अनेक भवो मां भटकवु पडे छे हे गौतम ! आवा गच्छना वचन पण न साभळो वळी पण आ संबंधमां विशेष कहेवाता कहे छे के—

आरंभेसु पसत्ता, सिद्धंतपरंमुहा विसयगिद्धा ।
मुत्तुं मुणिणो गोयम !, वसिज्ज मज्झे सुविहियाणम् ॥ १०४ ॥
[आरम्भेषु प्रसक्ताः, सिद्धान्तपराङ्मुखा विषयगृद्धाः ।
मुक्त्वा मुनीन् गौतम ! वसेत् मध्ये सुविहितानाम् ॥ १०४ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! आरंभ-समारंभोमां रक्त बनेला शास्त्र-सिद्धांतना वचनोथी विरुद्ध वर्तनारा, कामभोगमां गृद्ध-लंपट बनेला एवा दुष्ट साधुओनो संग सर्वथा त्यजीने सुविहित साधुओना समुदायमां वास करवो.

विवेचन—पृथ्व्यादिकना आरंभमां रक्त होय, काचु पाणी तथा अग्निकाय विगेरेना आरंभे प्रवर्तता होय, गृहस्थ पासे भार उपडावता होय,

शरीरनी शोभा-विभूषा करता होय, वारंवार हाथ-मुख धोता होय तेवा साधु ओनो सत धर्मथी कारण के तेथी संसार सागर तरवाने बदले तेमा पतित थवाय छे शब्दादिक विषयो पण प्राणीने हेरान करी मूके छे तो सिद्धांत विरुद्ध आचरणो माटे तो पूछवु ज शु ? शब्दादिक पंच विषयोने अंगे राम, चपलाक्ष, गंध प्रिय कुमार, मधुप्रिय कुमार अने महेंद्र राजकुमार ए पांचेना वृत्तांतो जाणवा योग्य छे

श्रोत्रेंद्रियना विषयमा रामनी कथा—

ब्रह्मस्थळ नामना नगरमा भुवनचंद्र नामना राजा हतो तेने राम नामनो पुत्र हतो ते पुरुषनी बोंतेर कलामा निपुण हतो राजाए तेने योग्य उमरनो जाणी एकदा प्रधानने पूछयु के-आपणे रामने युवराजपदे स्थापीए प्रधाने कह्यु-हे राजन् ! आ राम राजा थवा लायक नथी राजाए कारण पूछता प्रधाने जणाव्यु के-ते परवश छे, कारण के ते श्रोत्रेंद्रियना विषयमा आसक्त छे तेने हमेशा संगीत प्रिय छे ते कारणे तेने युवराज पद आपवु योग्य नथी तेनी पछी जे बीजो राजपुत्र छे ते राजाना बधा लक्षणोथी युक्त छे माटे तेने युवराजपद आपो राजाए कह्यु-प्रधानजी ! संगीत ए तो राजानु भूषण छे, तेने दोष न कहेवाय एटले प्रधाने जणाव्यु के-" जह अग्गीइ लवो वि हु, पसरंतो दहइ गाम-नगराइं । इक्किक्कमिंदियंपि हु, तह पसरंत समग्गगुणे ॥ १ ॥ " मतलब के अग्निना कणियो आ पछाडी गाम के अनेक गाम तथा शहेरो बाळी नाखवा समर्थ थाय छे तेम इंद्रियना विषयो वृद्धि पामे तो सर्व गुणनो नाश करी नाखे प्रधानना निषेध छता राजाए रामने युवराज पद आप्यु थोडा समय बाद राजा मृत्यु पामता राम राजा थया अने पोताथी नाना भाइने युवराज स्थाप्यो

राम नित्य संगीत सांभळे, पोते पण वाजिंत्र वगाडे अने संगीत शीखे डुंब जातिना लोक संगीतमा घणा हुशियार होय छे तेने बोलावडावी अने तेना पासे नित्य संगीत गवरावे श्रवणेंद्रियना आसक्तिमा ते राज्यकारभार अने न्यायादिकने माटे पण अवकाश मळवी शकता नहीं तेनामा एक डुंबडी तेना लोकोमां आवी ते बहु ज मिष्ट गाती तेनो कंठ कोयल जेवो सुमधुर हतो रामे तेने पोता पासे राखी, तेना रूप उपर ते मोहित थया अने छेवट पोतानी मर्यादा छोडी तेनी साथे भोग भोगववा लाग्या मंत्री प्रमुखे विचार करी तेने राज्य उपरथी उठाडी मूक्या तेना नाना भाइ महाबळने गादीए बेसार्यो राम देशांतरमा भमी मृत्यु पाम्या मरीने मृग थया तेवामा शिकारीए संगीतथी लोभावी, तेने पकडीने मारी नाख्या त्याथी ते महाबळ राजाना पुरोहितना पुत्र तरीके उपज्या त्यां पण संगीतनो विलासी थयो राजानी सेवामा रह्यो महाबळ राजा पासे एक परदेश डुंब लोको गाता आव्या त्यारे राजाए आ पुरोहित पुत्रने कह्यु

चन्द्र निद्रावश थउं त्यारे आ डुंबने विदाय आपजे थोडा वखतमां राजा उंघी गया, परन्तु पुरोहित पुत्रने संगीतमां रस आववाथी तेओने रजा न आपी चोथे प्रहरे महाबळ अचानक जागी जतां तेणे डुंबोने गाता जोया एटले पुरोहित-पुत्र ऊपर पोताना आदेश-भंग माटे क्रोध चढ्यो सवारे तेल ऊनुं करी तेना कानमां रेडाव्युं, जेनी वेदनाथी ते तरत ज मृत्यु पाम्यो

आ अविचारी कार्य कर्या पछी महाबळने घणो ज पश्चात्ताप थयो तेवामां विचरता विचरता केवळी भगवंत आवी चढ्या तेने वांदीने राजाए पुरोहित-पुत्रनी वात पूछतां केवळी भगवंते रामना भवथी मांडी सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो, जे सांभळी महाबळ राजाने तीव्र वैराग्य थयो बाद निरतिचार चारित्र पाळी ते मोक्षे गयो

चक्षुइन्द्रियना विषयमां चपलाक्षनी कथा—

विजयपुर नगरमां विश्वम्भरी नामनो राजा हतो तेने कुशाग्र नामनो प्रधान हतो ते नगरमां यशोधर नामनो श्रेष्ठी हतो आ बन्नेने परस्पर घणी प्रीति हती एकदा ए बन्नेने एकी साथे पुत्रो थया ए बन्ने युवान थया एकदा प्रधाने श्रेष्ठीने कह्युं के-तमारो पुत्र सदाचारी नथी शेठे पूछ्युं केम ? प्रधाने कह्युं के-राजमार्गमां राजाना अंतःपुरनी राणीओ प्रत्ये कुदृष्टि करे छे राणीओने जोवा माटे वारंवार ते मार्ग पर फर्या करे छे, माटे भविष्यमां ते विनाशने नोतरशे तथी तेने तुं समजावजे श्रेष्ठीए पुत्रने घणो समजाव्यो पण तेणे पोतानुं कुव्यसन तज्युं नहीं एकदा राजाए श्रेष्ठीपुत्रने राणीओने सरागदृष्टिथी जोतां जोया एटले राजाए तेने काढी मूक्यो अने पोताना महेलमां आववानो निषेध कर्यो श्रेष्ठीने पण पोताना पुत्रना दुराचारथी घणुं दुःख थयुं लोकोए पण तेनुं चपलाक्ष एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं

श्रेष्ठीए तेना दुर्व्यसनथी कंटाळी पोताना नोकर साथे परदेश मोकल्यो त्यां पण ते चक्षुइन्द्रियनी आसक्तिथी नगरना प्रासादो, गवाक्षो, हवेलीओ जोतो फरे छे बाग, बगीचा तथा वावडी ने तळावमां पण भटक्या करे छे आ प्रमाणे फरतां फरतां तेणे एक महेलमां अत्यन्त सुन्दर पाषाणनी पूतळी जोई तेने जोईने ते त्यां ज बेसी रह्यो भोजन करवानुं पण न सांभर्युं नोकर तेने तेडवा आव्या तो पण ते न उठ्यो पछी नोकरे पाषाणनी पूतळी जेवी मीणनी पूतळी करावी अने ते पाषाणनी पूतळीने ठेकाणे स्थापी थोडी वार पछी ते पूतळी लईने पोताना उतारा तरफ चाल्या एटले चपलाक्ष पण ते पूतळीने साची पूतळी मानीने तेनी पाछळ-पाछळ उतारे आव्यो, नोकरे हवे पोताना नगर प्रति प्रयाण कर्युं एटले चपलाक्ष पण तेनी साथे चाल्यो रस्तामां चोर लोकोए धाड पाडी सर्वस्व लूंटी लीधुं पूतळी लुंटाई जवाथी चपलाक्ष गांडो थई गयो अटवीमां भमवा लाग्यो तेवामां राजाना राणीने त्यां क्रीडा करती निहाळी तेनी सामे एक दृष्टिथी जोई

रह्यो पछी राजपुरुषोए तेने मारी नाख्यो मरीने ते पतंगीयो थयो ते भवमां पण दीवामां पडी पडी मुओ आ प्रमाणे चक्षुरिंद्रियना वशपणाथी अनेक भवमां तेणे भ्रमण कर्युं

घ्राणेंद्रियना विषयमां गंधप्रियनी कथा—

पद्मखंड नामना नगरमां राजा प्रजापतिने एक पुत्र हतो तेने सुगंध ऊपर घणो ज प्रेम जे कांइ वस्तु होय तेने सुंघे तेथी लोकोए तेनुं गंधप्रिय एवुं नाम पाड्युं एकदा ते राजपुत्र नदीमां क्रीडा करवा गयो लाग जोइने तेनी अपर माताए चूर्णयोगनी पटीको करीने नदीना प्रवाहमां वहेती मूकी आ चूर्णनी गंध महारौद्र होय छे अने तेने सुंघतां ज मृत्यु थाय राजकुमारे ते पटीको आवती जोइ एटले तरत ज तेने लइ लीधी साथेना राजपुरुषोए तेने तेम करतां वार्यो छतां राजपुत्रे ते पटीको उघाडीने सूंघो के तरत ज चूर्णना तीव्र गंधथी मृत्यु पाम्यो मरीने भमर थयो त्यां पण गंधनी आसक्तिथी कमळमां पेठो तेवामां हस्तीए आवीने ते कमळ खाधुं त्यांथी मृत्यु पामीने ते अनंत संसार रखड्यो

रसनेंद्रियना विषयमां मधुप्रियनी कथा—

सिद्धार्थपुर नगरमां विमल नामनो शेठ हतो तेने रसनेंद्रियमां आसक्त एक पुत्र हतो तीखा, मधुर, खाटा विगेरे भोजन हमेशां खाय हमेशां नवी नवी वस्तुओनी शोध कर्या करे पण व्यापारमां चित्त न परोवे आ प्रमाणे घणी नवीन चीजो खाधा पछी तेने विचार आव्यो के-में घणी नवी नवी चीजो खाधी हवे मांस-मदिरानो स्वाद करुं पछी ते मांस खावा लाग्यो मदिरा पण पीवा लाग्यो लोकोए तेनुं मधुप्रिय एवुं नाम राख्युं तेवामां तेना पिता मृत्यु पामतां लोकोए तेनो तिरस्कार कर्यो एटले ते देशांतरमां गयो परदेशमां मांस ना लोलुपीपणाथी गामलोकोना छोकरा मारी नाखीने खावा लाग्यो कोटवाळे तेने पकडीने फांसीए चडाव्यो मरीने नरकादिकमां अनंत संसार रखड्यो

स्पर्शेंद्रियना विषयमां महेन्द्र राजपुत्रनी कथा—

विष्णुपुर नगरमां धरणेंद्र राजाने महेन्द्र नामनो पुत्र हतो तेने नगरशेठ-ना पुत्र मदन साथे मित्राचारी हती मदनने चंद्रवदना नामनी सुन्दर स्त्री हती एकदा महेन्द्र तेना घरे गयो त्यारे मदन घरे नहोतो चंद्रवदनाए तेनो सत्कार करी तेने तांबूल आप्युं ते वखते तेना स्पर्शथी राजपुत्रने सुख उपज्युं तेनो कोमळ स्पर्श अनुभवी ते तेना प्रत्ये आसक्त थयो पण मदनने मार्या विना चंद्रवदना मळे तेम न हतुं एटले मदनने मारी नाखवा माटे तेणे गुप्त पुरुषो रोक्या तेमाए प्रसंग साधी मदनने पकड्यो अने मार मारवा लाग्या तेवामां ते स्थळे कोटवाळ आवी चढ्यो तेणे तेओने पकडीने राजा समक्ष रजू कर्या. राजाए पूछतां तेओए महेन्द्रकुमार संबंधी सर्व हकीकत जणावी राजाए महेन्द्रकुमारने देशवटो आप्यो बाद नाना राजपुत्रने राज्य आपी दीक्षा लइ मोक्षे गयो मदनने

वैद्ये औषधद्वारा साजा कर्यो महेन्द्र चन्द्रवदनाने ए परदेश चाल्यो गयो. मदन पण स्त्री-चरित्र जोई वैराग्यवासित थइ, चारित्र पाळी देवलोकमा गयो परदेश भमतां महेन्द्र तथा चन्द्रवदनाने चोरोए लूटी लीधा अने बर्बरकूळमां वेची दीधा त्यांना लाकोए तेनु रुधिर काढवु परत्ते तेनो महापदशाथी मरीने अनत ससार भम्यो

आ प्रमाणे एक एक इन्द्रियना परवशवर्त्तीपणाथी जीवो कष्ट पामे छे तो जेओ पांचे इन्द्रियोना विषयो भोगवे छे तेनो पीडानु तो पूछवु ज शु ? वाचकवर उमा स्वातिरचित श्रीप्रशमरतिमा कह्यु छे के-

कलरिभितमधुरगांधर्व-तूर्ययोषिद्विभूषणरवाद्यैः ।
श्रोत्रावबद्धहृदयो, हरिण इव नाशमुपयाति ॥ १ ॥
गतिविभ्रमेङ्गिताकार-हास्यलीलाकटाक्षविक्षिप्तः ।
रूपावेशितचक्षुः, शलभ इव विपद्यते विवशः ॥ २ ॥
स्नानाङ्गरागवर्त्तिक-वर्णकधूपाधिवासपटवासैः ।
गन्धभ्रमितमनस्को, मधुकर इव नाशमुपयाति ॥ ३ ॥
मृष्टान्नपानमांसौ-दनादिमधुररसविषयगृद्धात्मा ।
गलयन्त्रपाशबद्धो, मीन इव विनाशमुपयाति ॥ ४ ॥
शयनासनसम्बाधन-सुरतस्नानानुलेपनासक्तः ।
स्पर्शव्याकुलितमति-र्गजेन्द्र इव बध्यते मूढः ॥ ५ ॥
एवमनेके दोषाः, प्रनष्टशिष्टेष्टदृष्टिचेष्टानाम् ।
दुर्नियमितेन्द्रियाणाम्, भवन्ति बाधाकरा बहुशः ॥ ६ ॥
एकैकविषयसङ्गा-द्रागद्वेषातुरा विनष्टास्ते ।
किं पुनरनियमितात्मा, जीवः पञ्चेन्द्रियवशार्त्तः ॥ ७ ॥

पादाहतः प्रमदया विकसत्यशोकः, शोकं जहाति बकुलो मुखसीधुसिक्तः ।
आलिङ्गितः कुरबकः कुरुते विकाश-मालोकितः सतिलकस्तिलको विभाति ॥ ८ ॥

मनोहर स्वर, सुन्दर सगीत, वाजिंत्रनो नाद अने स्त्रीना नूपुरादि आभूषणोना ध्वनि-आ प्रकारना सुन्दर स्वर तथा तालना मिश्रणथी श्रोत्रेन्द्रियमां आसक्त थयेला प्राणी हरिण माफक मृत्यु पामे छे (१) स्त्रीओना हावभाव, अंगविकार, हास्य, नेत्रकटाक्षादिथी चलित अने रूप-लावण्यमां मुग्ध थयेल प्राणी नेत्रेन्द्रियना परवशपणाथी पतगनी माफक विनाश पामे छे (२) चन्दनरस, अगर, धूप, कस्तूरी, पटवास, अत्तर विगेरे सुगन्धी वस्तुओने विषे जे आसक्त थाय छे ते प्राणी भ्रमरनी माफक घ्राणेन्द्रियना परवशपणाथी नाश पामे छे (३) स्वादिष्ट भोजन, मद्य-मांस तथा मिष्ट रसपानमां लुब्ध थयेला रसनेन्द्रियना वशथी गळामां यत्रपाशबद्ध माछलीनी माफक मृत्यु पामे छे (४)

सुकोमळ शय्या, रेशमवाला सुन्दर बिछाना, सुन्दर सिंहासनादिक तेमज शरीर मसळाववुं, पोठी चढाववी, स्नान करीने चन्दनादिकनु विलेपन करावयु, अत्तर लगाडवु विगेरे स्पर्शेन्द्रियना विलासमां पडेलो प्राणी *हाथीनी माफक वध पामे छे (५) आ प्रमाणे उपर दर्शावेल इन्द्रियोना वश जेओ केवळी भगवते दर्शावेल मार्गने स्वीकारता नथी तेओने अनेक प्रकारे दुःखदायक थाय छे (६) एक-एक इन्द्रियना प्रसगथी प्राणी राग-द्वेषने अगे विनाश पामे छे, तो जेओ पांचे इन्द्रियोमा लुब्ध थया छे तेओने माटे तो कहेवु ज शु ! अर्थात् एक इन्द्रियनी आसक्ति प्राणीने हणवामा समर्थ छे तो पांचेनो जे उपभोग करे छे ते अवश्य विनाश पामे ज (७) वस्त्रालंकारथी सुशोभित युवान स्त्री अशोक वृक्षने पादप्रहार करे त्यारे ते विकस्वर थाय छे, मोढामा मदिरानो कोगळो भरी स्त्री बकुल ऊपर छांटे त्यारे ते शोक रहित थाय अर्थात् विकस्वर बने, कुरबक नामना वृक्षने ज्यारे स्त्री आलिंगन करे छे त्यारे ते प्रफुल्लित थाय छे अने तिलक वृक्षने स्त्री कटाक्ष युक्त निहाळे त्यारे विकास पामे छे एकेन्द्रियमां पण इन्द्रियनो रस प्रबळ होय छे आवा आवा प्रकारना इन्द्रियना रसने जीते छे ते ज गच्छ सुगच्छ जाणवा हवे आ चालु साधुस्वरूप अधिकारनो उपसहार करतां कहे छे के—

तम्हा सम्म निहालेउ, गच्छं सम्मग्गपट्ठियम् ।
वसिज्ज पक्खमासं वा, जावजीवं तु गोयमा ! ॥ १०५ ॥

खुड्डो वा अहवा सेहो, जत्थ रक्खे उवस्सयम् ।
तरुणो वा जत्थ एगागी, का मेरा तत्थ भासिमो ॥ १०६॥

[तस्मात् सम्यग् निभाल्य गच्छं सन्मार्गप्रस्थितम् ।
वसेत् पक्षं मासं वा, यावज्जीवं तु गौतम ! ॥ १०५ ॥
क्षुल्लो वाथवा शैक्षो, यत्र रक्षेत् उपाश्रयम् ।
तरुणो वा यत्र एकाकी, का मर्यादा तत्र भाषामहे ? ॥ १०६ ॥]

---

* हाथी महाबळवान होवाथी तेने वश करवा माटे युक्ति करवी पडे छे हाथी स्पर्शमां बहु ज आसक्त होय छे तेथी तेने पकडवामां कुशळ माणस प्रथम मोटो खाडो खोदे छे, तेना ऊपर तृण वगेरेनु आच्छादन करी तेने ढांकी दे छे पछी कागळनी चितरेली के कोतरेली हाथणी ते खाडा ऊपर गोठवे छे, जेने जोईने हस्ती दूर-दूरथी खेंचाई त्यां आवे छे जेवो हाथणीनो स्पर्श करवा जाय छे तेवो खाडामा पडे छे केटलाक दिवसो सुधी तेमा तेने भूख्यो राखी, पछी वश बनावी आलानस्तंभे लई जाय छे

गाथार्थ-सन्मार्गे प्रतिष्ठित गच्छने कुशळ बुद्धिथी तपासीने तेवा गच्छमां पक्ष, मास अथवा जीवन पर्यन्त हे गौतम ! वसवु.

जे गच्छनी अंदर बाळवयवाळो अथवा नवदीक्षित साधु अथवा तो युवान यति उपाश्रयनो सारसंभाळ करतो होय ते गच्छमां तीर्थंकर भगवंत तेमज गणधर महाराजानी आज्ञारूपी मर्यादा क्यांथी होय ?

विवेचन-जेने दीक्षा लीधा छ महिना थया होय तेने शैक्ष अथवा नव दीक्षित जाणवो बाळवयवाळा शिष्यने उपाश्रये एकलो मूकी जतां दोषोत्पत्ति थाय, जेमके-एकलो रहे तो रमत करवा लागे, अन्य रमता छोकराने जोइ तेनी साथे रमवा जाय तो धूर्त पुरुषो तेनी उपधि आदि लई जाय, कोइनो लालचमां लपटाई जाय, नाटक-प्रेक्षणक वगेरे होय ते जोवा चाल्यो जाय, एकलो रहेवाथी तेना परिणाम फरी जाय तो उपधि विगेरे लइने चाल्यो पण जाय, माटे बाळ के नवदीक्षितने उपाश्रये एकलो मूकवा नहीं युवान साधुने उपाश्रये एकाकी राखवाथी क्या दोषो लागे ते जणावता कहे छे के-मोहनीय कर्मना उदयथी ते हस्तकर्म करवा प्रेराय, अंग मरोडे, लिंगलेपन करे, कोई स्वरूपवती स्त्रीने देखीने चोथा महाव्रतनो भंग करे, तेनी साथे हास्यादिक चेष्टा करे, विशेष मोहनीयना जोरथी गच्छनो त्याग करीने जतो रहे इत्यादिक अनेक दोषोनो संभव जाणी कदी पण बाळ, नवदीक्षित के युवान साधुने उपाश्रये एकला राखवा नहीं आ संबंधी विशेष वर्णन श्रीनिशीथचूर्णिमां आपेल छे

यतिस्वरूप नामनो आ बीजो अधिकार संपूर्ण थाय छे आ बीजा अधिकारनो सारांश ए छे के-जे आचार विना फक्त गच्छनु नाम धारण करी विचरे छे, मठ गच्छनी सामाचारी आचरे छे एकलविहार करे छे, आचार्यनी आज्ञा उल्लंघे छे, शरीरनी टाप-टीप करे छे, गादी तकीया मूकीने बेसे छे, गृहस्थो पासे काम करावे छे, हाथ-पग-मुख विगेरेनु प्रतिदिन प्रक्षालन करे छे, साबुथी वारंवार कपडां धोवे छे, आवा प्रकारना यतनायुक्त साधुवाळा गच्छने ग्रंथकार कहे छे के-आमे गच्छ कहेता ज नथी आवा दुःशीलने जो साधु तरीके स्वीकारीए तो मिथ्यात्व लागे



॥ साध्वीस्वरूपनिरूपणो तृतीयोऽधिकारः ॥

हवे, नवदीक्षिता अथवा युवती साध्वीने उपाश्रयमां एकाकी राखतां शु दोषापत्ति थाय ? ते दर्शावता कहे छे के—

जत्थ य एगा खुड्डी, एगा तरुणा उ रक्खए वसहिं ।
गोयम ! तत्थ विहारे, का सुद्धी बंभचेरस्स ? ॥ १०७ ॥

[यत्र चैकाकिनी क्षुल्लिका, एकाकिनी तरुणी तु रक्षति वसतिम् ।
गौतम ! तत्र विहारे, का शुद्धिः ब्रह्मचर्यस्य ? ॥ १०७ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! जे गच्छमा बाळ वयवाळी, नवदीक्षित युवान साध्वी एकली उपाश्रयमा रहेती होय त्या ब्रह्मचर्यनी निर्मळता क्याथी जळनाय ?

विवेचन—ऊपर १०६ टी गाथामा बाळ, नवदीक्षित के युवान साधु माटे जे जे दोषो दर्शाव्या ते बधा बाळ, नवदीक्षित व युवान एकाकी साध्वीने पण घटी शके छे. विशेष ए के—लघु साध्वीने एकाकी जवाथी कोई बळात्कारे तेनी साथे भोग भोगवे, तेनुं रूप-लावण्य देखी बळात्कारे अपहरण करी जाय, ब्रह्मचर्यनो भंग थता युवती साध्वीने गर्भ रहे तो तेने औषधोपचारथी पडावे, जो न पडावे अने गर्भ वृद्धि पामे तो शासननी हीलना थाय. पूर्वे भोगवेली क्रीडा याद आवी जाय तो गच्छनो त्याग करवा पण मन ललचाय अने प्रांते वेश्या जेवी स्थिति भोगवी महादुःखी थाय, माटे साध्वी समुदाये उपाश्रयमा बाळ, नवदीक्षित व युवती साध्वीने एकली मूकवी नहीं.

हवे पण साध्वी-मर्यादा संबंधी जणावता कहे छे के—

जत्थ य उवस्सयाओ, बाहिं गच्छे दुहत्थमित्तंपि ।
एगा रत्तिं समणी, का मेरा तत्थ गच्छस्स ? ॥ १०८ ॥

जत्थ य एगा समणी, एगा समणो य जपए सोम ! ।
निअबंधुणावि सद्धिं, त गच्छं गच्छगुणहीणं ॥ १०९ ॥

जत्थ जयारमयार, समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खम् ।
पच्चक्ख ससारे, अज्जा पक्खिवइ अप्पाणं ॥ ११० ॥
जत्थ य गिहत्थभासाहिं, भासए अज्जिआ सुरुट्ठावि ।
त गच्छं गुणसायर !, समणगुणविवज्जिअं जाण ॥ १११ ॥
गणिगोअम ! जा उचिअं, सेअवत्थ विवज्जिउ ।
सेवए चित्तरूवाणि, न सा अज्जा विआहिया ॥ ११२ ॥

[यत्र चोपाश्रयात् बहि-र्गच्छेद् द्विहस्तमात्रामपि ।
एकाकिनी रात्रौ श्रमणी, का मर्यादा तत्र गच्छस्य ? ॥ १०८ ॥
यत्र च एकाकिनी श्रमणी, एकाकी साधुश्च जल्पते सौम्य ! ।
निजबन्धुनाऽपि सार्धं, त गच्छ गच्छगुणहीनम् ॥ १०९ ॥
यत्र जकारमकार, श्रमणी जल्पति गृहस्थप्रत्यक्षम् ।
प्रत्यक्ष ससारे, आर्या प्रक्षिपति आत्मानम् ॥ ११० ॥
यत्र च गृहस्थभाषाभिः, भाषते आर्या सुरुष्टाऽपि ।
त गच्छ गुणसागर !, श्रमणगुणविवर्जित जानीहि ॥ १११ ॥
गणिन् गौतम ! या उचित, श्वेतवस्त्र विवर्ज्य ।
सेवते चित्ररूपाणि, न सा आर्या व्याहृता ॥ ११२ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छनी अदर रात्रिये एकली साध्वी बे हाथप्रमाण भूमि उपाश्रयनी बहार जाय ते गच्छनी मर्यादा केवी होय ? अर्थात् न ज होय. हे सौम्य गौतम ! जे गच्छनी अदर एकाकी साध्वी पोताना बधु मुनि साथे चाले अथवा तो एकलो साधु पोतानी भगिनी साध्वी साथे वातचीत करे ते गच्छने तारे गुणहीन समजवो. जे गच्छनी अदर साध्वी गृहस्थ सामळता जकार, मकार विगेरे (शासननी हीलना थाय तेवा) असभ्य शब्दो बोले, ते वेष विडंबक साध्वी पोताना आत्माने चतुर्गतिरूप ससारमा भमाडे छे. वळी जे गच्छमा अतिशय क्रोधाग्निथी प्रज्वलित थयेली साध्वी गृहस्थना जेवी सावद्य भाषा बोले छे–कलेश करे छे ते गच्छने हे गौतम ! तारे साधुगुणथी रहित जाणवो. हे गौतम ! जे साध्वी योग्य श्वेत–मानोपेत वस्त्र तजीने विविध-

रंगी, भरत विगेरेथी विभूषित वस्त्र वापरे छे ते साध्वी नहीं पण शासननी हीलना करावनारी वेषविडंबिनी जाणवी.

विवेचन—साध्वीने रात्रिए उपाश्रयथी बहार नीकळवानो निषेध कर्यो छे तेनुं कारण ए छे के परस्त्रीरमण करनारा लोको साध्वीने एकली देखीने हरी जाय, राजा एकलो नगरचर्या जोवा नीकळ्यो होय अने साध्वीने उपाश्रय बहार एकली जुए तो तेने कुशंका थाय. वळी चौरादिक नीकळ्या होय तेओ पण तेना वस्त्रादिक लई जाय, पूर्वना भोग याद आव्या होय तो गुंडा के बदचाल साध्वीने पुरुषो विना एकांतमां चाली जाय, परिणामे शासननी अपभ्राजना थाय माटे हे गौतम ! रात्रे एकली साध्वी उपाश्रयनी बहार नीकळे ते गच्छनी मर्यादावाळी कहेवाती नथी.

सगा भाई बहेन पण जो दीक्षित थया होय तो भाई पोतानी बहेन साथे के बहेन पोताना भाई साथे एकांतमां वातचीत करे तो तेने पण भ्रष्ट समजवा, कारण के परस्पर वार्तालापथी दोषोत्पत्ति थाय छे. कंदर्प महादुष्ट छे, ते प्राणीना छिद्रो शोध्या करे छे अने लाग मळतां पोतानुं शस्त्र नबळा मनना प्राणी ऊपर अजमावे छे. परस्पर वार्तालापथी क्या दोषो थाय ते कथन कर्युं छे के—

मदसणेण पीई, पीईउ रई रईओ वीसभो ।
वीसभाओ पणओ, पचविह वड्ढए पिम्म ॥ १ ॥
जह जह करेमि नेहं, तह तह नेहो भिवड्ढइ तुममि ।
तेण नडिओ मि बलिय, जं पुच्छसि दुब्बलतरोसि ॥ २ ॥
भित्ति मम इय सदसणसमासणेण, संदीविओ मयणवण्ही ।
धमाई गुणरयणे, डहइ अणिच्छं पि पमायाओ ॥ ३ ॥
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामो, पण्डितोऽप्यत्र मुह्यति ॥ ४ ॥

सारी रीते जोवाथी प्रीति थाय छे, प्रीति थवाथी रति उपजे छे, रति (अभिलाषा) थवाथी विस्रंभ थाय—एटले भोगमां विश्वास थाय, विश्वासथी मन स्नेहमां परिणमे अर्थात् मळवानी इच्छा थाय—आ पांच प्रकारे प्रेम वधे छे. (१) जेम जेम स्नेह करवामां आवे छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे. बळवानने पण आ स्नेह (प्रेम) पतित कर्या छे तो पछी दुर्बळ एवा तारी तो वात ज क्यां रही ! (२) मित्राई कोने कहेवाय ? 'आ मारो छे' एवी ममता उपजे तेने मित्राई कहेवाय. पछी तेने जुए, बोलावे, स्नेह-सलाप करे त्यारे कामदेव-रूपी अग्नि जागृत थवाथी प्रमादथी अनिच्छाए (तेने न इच्छे तो पण) बाळे

धर्यरूपी गुणरत्न चली जाय-विनाश पामे (३) पोताना माता, बहेन के दीकरी पासे पकला न बेसवु, कारण के इन्द्रियोना विषयो महाबलिष्ठ छे तेना चक्कर मां ज्ञानी अने पंडितजनो पण मुंझाइ जाय छे (४)

साध्वीए क्रोधवशमां आवी जइ गृहस्थ समक्ष गाळो-वचन बोलवां न जोइए, कारण के तेनो आचार तो समता भावनो छे. गाळो प्रमुख वचन क्रोध कषाय ना हेतुभूत छे. गृहस्थनी भाषा पण साध्वीथी न बोलाय 'तारु घर बळो, तारी आंखो फुटी जाय, तारा पग भांगी जाय, तु ठुंठो था, तु बहेरो था' इत्यादिक श्रापना वचनो पण साध्वी न बोली शके. कारण के ते तेने उचित नथी, केमके ते बधा आक्रोश वचनो कषायो ज छे. कोइ पण प्रसंग साध्वीए पोताना मननुं समतापणुं न गुमावबुं जोइए. गृहस्थनो क्रोध होय, ते द्वेषपूर्वक साध्वीने उतारी पाडवा कलह करता होय तो पण साध्वीए समभाव राखी स्वपर श्रेय न इच्छवु, ए जिनाज्ञाना साचा मर्म छे.

साध्वीए श्वेत वस्त्रो पहेरवां जोइए लाल के पीळा वस्त्र वापरवानो निषेध छे छतां तेवा वस्त्रो वापरे तेने गच्छभ्रष्ट जाणवी. आवी विचित्र वेषधारिणी साध्वीने साध्वी तरीके मानवामां आवे तो पण मिथ्यात्वनुं दूषण लागे. आ बाबतमां शंका करतां कोइ कहे के-आवरणोथी रंगेल वस्त्र पहेरे तो शो बाधो? तेनो जवाब ए छे के-आचरणा जो सावद्य होय तो तेनुं फळ संसार-भ्रमण छे. आचरणा पर्थी होवी जोइए के जेनो जिनागममां निषेध न होय. जो साध्वी मनगमता चित्रविचित्र रंगेला वस्त्रो पहेरे तो ते गृहस्थिणी माफक देखाय, लोकोमां निंदा थाय माटे रंगेला वस्त्रोना तथा उपलक्षणथी पात्रा, दांडा प्रमुख उपकरणोना त्याग ज करवो बहु पण साध्वीना आचार संबंधी कहे छे के—

सीवण तुन्नण भरणं, गिहत्थाण तु जा करे ।
तिल्लउव्वट्टण वा वि, अप्पणो अ परस्स य ॥ ११३ ॥
[सीवन तुन्नन भरण, गृहस्थाना तु या करोति ।
तैलोद्वर्तन वापि, आत्मनोऽपरस्य च ॥ ११३ ॥]

गाथार्थ-जे साध्वी गृहस्थ विगेरेनुं सीववुं, तुणवुं के भरवुं विगेरे क्रिया करे अथवा पोताने के बीजाने तेल आदिथी उद्वर्तन करे तेने साध्वी न जाणवी.

विवेचन—साध्वीए गृहस्थना के अन्यतीर्थीना वस्त्र, कांबळ, रेशमी वस्त्रादिक सीवी आपवा नहीं, तेमां भरतादिक चित्रामण पण करवुं नहीं. शरीरे तेल चोळाय, दूधनो तरबडे पीठी चोळाय, नाबु लगावी स्नान करे,

आवे काजल आंजे तेमज गृहस्थाश्रितना छोकराने आभूषणो पहेरावे, तेना हाथ, पग, मुख विगेरे धोवे, तथा गाले के कपाले तिलक करे, तथा अंग पीठी चोळे, इत्यादिक काया जे मात्र स्वच्छ करतो होय तेने साध्वी न लागवी पण वेष विडंबिका तेमज पासत्थी जाणवी तेनु मुख पण जोवु लायक नहीं आ संबंधमां निरियावलि उपांग सूत्रमां सुभद्रानु अने श्रीज्ञाताधर्मकथा सूत्रमां कालीनु उदाहरण आप्यु छे

सुभद्रानी कथा—

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राज्य करतो हतो तेने चेलणा नामनी अति सुकुमार राणी हती नगरीनी बहार गुणशील नामनु चैत्य हतु परमात्मा श्री महावीर विहार करता करता ते चैत्यमां समवसर्या श्रेणिक राजा तथा पौरजनो वांदवा आव्या पर्षदा समक्ष परमात्माए अमृतधारावर्षिणी देशना आपी पर्षदाना लोको पोतपोताना स्थाने गया तेवामां 'बहुपुत्रिका' नामनी देवी पोताना परिवार सहित भगवानने वांदवा आवी

सौधर्म देवलोकमां 'बहुपुत्रिका' नामनु विमान छे तेमां सुधर्मा नामनी सभा छे तेमां बहुपुत्रिका नामनु सिंहासन छे ते ऊपर बेसनारी आ बहुपुत्रिका नामनी देवी जाणवी चार हजार सामानिक देव, चार सपरिवार महत्तरिका त्रण पर्षदा, सात सेनापति, सोळ हजार आत्मरक्षक देवो वगेरे तेनो परिवार छे आटला परिवार उपरांत ते विमानवासी बीजा देव-देवीओनी साथे ते देवी वीणा, हस्तताल, घनवाद्य, मृदंग, ढोल विगेरे प्रकारना वाजिंत्र नादपूर्वक दिव्य देवताई भोगो भोगवती हती एकदा अवधिज्ञानद्वारा जंबूद्वीपने जोतां तेणे भगवान महावीरने राजगृही नगरीमां समवसरेला जाण्या एटले पोताना सिंहासनथी उठी, सात-आठ पगलां आगळ गई, जेम सूर्याभदेवे शक्रस्तवपूर्वक वंदना करी हती तेम परमात्माने नमस्कार कर्या बादीने पोताना सिंहासन ऊपर पूर्वाभिमुख बेसीने, पोताना आभियोगिक देवने बोलावीने, जेम सूर्याभदेवे सुघोषा घंटा वगडावीने घोषणा करावी हती तेम बहुपुत्रिका देवीए पण उद्घोषणा करावी के-श्रमण भगवान महावीरने वंदन करवा जवु छे माटे सर्व देव देवीओ सज्ज थईने आवो बाद देवीए सूर्याभदेवना विमाननी माफक एक हजार योजन विशाळ एक विमान विकुर्व्युं, तथा सर्व देव-देवीओनी साथे उत्तर दिशामांथी असंख्याता द्वीप समुद्रनु उल्लंघन करीने, सूर्याभनी माफक भगवन् पासे आवी विधिपूर्वक प्रदक्षिणा आपीने वांदीने बेठी एटले भगवंते धर्मकथा कही ते सांभळीने हर्षित बनेली देवीए देशनाने अंते ऊभा थई पोतानो जमणो हाथ लांबो करी तेमांथी १०८ देवकुमार विकुर्व्या अने डाबो हाथ लांबो करी १०८ देवकुमारीओ विकुर्वी त्यारबाद घणा लघु बाळक-बालिका विकुर्व्या पछी भगवंतनी समक्ष सूर्याभदेवनी माफक दिव्य नाटक कर्युं.

आ प्रमाणे दिव्यसंगीत, नृत्य तथा नाटक दर्शावी, पोतानी ऋद्धि बतावी बहु-पुत्रिका देवी जेवी आवी हती तेवी चाली गई त्यार बाद श्रीगौतमस्वामीए पर मात्मान प्रश्न कर्यो के-हे भगवन्त ! देवीए आटली बधी विकुर्वेली ऋद्धि क्यां गई ? परमात्माए जवाब आप्यो के-एक मोटी धर्मशाळामांथी बहार निकळता हजारो माणसो जोई शकाय, पण ते पाछा धर्मशाळामां दाखल थतां एक धर्मशाळामां समाय तेम ते देवीए पोताना शरीरमांथी विकुर्वेला घणा कुमार-कुमारिकाओ बनाव्या ते सब पाछा तेना वैक्रिय शरीरमां समाई गया आटलुं समाधान पछी श्रीगौतमस्वामीए बीजो प्रश्न कर्यो के-हे भगवन्त ! आ बहुपुत्रिका देवीने आटली बधी ऋद्धि शाथी प्राप्त थई ? पूर्वभवमां ते कोण हती अने तेणे कयुं पुण्य कर्युं हतुं ? भगवन्त बहुपुत्रिका देवीनो पूर्वभव वर्णवतां कह्युं के—

वाणारसी नगरीमां अंबसाल नामनुं चैत्य हतुं ते नगरीमां भद्र नामनो सार्थवाह हतो तेने सुभद्रा नामनी पत्नी हती भद्र श्रेष्ठी बहु ऋद्धिवाळो, प्रसिद्ध अने दरेक वातमां निपुण हतो सुभद्रा पण स्वरूपवान, सुकुमाळ ने सारा रूप वाळी हती, परन्तु तेने एक पण संतान थयुं नहोतुं तेना हृदयमां हमेशा वांझीयापणानो संताप रह्या करतो एकदा रात्रिना पाछला पहोरे जागी उठतां सुभद्रा कुटुंबचिंता करवा लागी तेना मनमां विचार आव्यो के-हुं भद्र सार्थवाह साथे मनगमता भोगविलास भोगवुं छुं छतां अत्यार सुधी मने संतानसुख सांपडयुं नहीं खरेखर मने धिक्कार छे ! हुं हीन पुण्यशाळी छुं धन्य छे ते स्त्रीओने जे पोताना खोळामां बीकाने वेमाईने रमाडे छे, तेनुं लालनपालन करे छे, पोतानी छातीए चांपी स्तनपान करावे छे, तेने स्नानादिक करावे छे, तेने मस्तक चुंबन करे छे, खोळामां बेसाडीने रमाडे छे, बाळकना कालाकाला वचन सांभळी हर्षित थाय छे, तेने प्रिय वचनथी बोलावी राजी थाय छे आ प्रमाणे संतान संबंधी दुःखी चिंता करती सूती हती

एवामां पांच समिति अने त्रण गुप्तिनुं पालन करनारी, ब्रह्मचारिणी, आगम नी ज्ञाता सुव्रता साध्वी सपरिवार ग्रामानुग्राम विहार करतां करतां वाणारसी नगरीमां आवी पहोंच्या शुद्ध स्थानक तपासी त्यां वास कर्यो एकदा तेना संघाडानो बे त्रण साध्वीओ गोचरी माटे परिभ्रमण करती सुभद्राना आवासमां गई तेओने आवती जोई सुभद्रा पोतानं धन्य समजती आसन उपरथी उठी, सात-आठ पगलां सामा जई, वंदन करीने चारे प्रकारनो आहार भावपूर्वक वहोराव्यो पछी साध्वीओने नम्र वाणीमां विनति करवा लागी के-हे आर्याओ ! हुं भद्र सार्थवाह साथे उत्तम प्रकारना भोग भोगवुं छुं छतां मने संतान प्राप्ति थई नथी, माटे जे स्त्रीओ पोताना उत्संगमां पुत्रादिकने रमाडे छे ते खरेखर धन्य छे अने हुं हीणभागी छुं हे पूज्य ! तमे विचक्षण छो शास्त्रकुशळ छो, घणा ग्राम-नगरादिकमां तमे विचरण कर्युं छे राजा, कोटवाळ, प्रधान, श्रेष्ठीओ

विगेरे अनेक व्यक्तिना समर्गमां आव्या छो, मोटा-मोटा सार्थवाहना घरे [illegible] गयेला छो तो हुं नमन विज्ञप्ति करुं छुं के-पनी कोई विद्या, मंत्र तमारी [illegible] होय तो ते मने जणावो अगर तो कोई औषध होय ता ते आपो के जेथी मारी मनोवांछा पूर्ण थाय. पण कोई पण उपाय होय ते बतावो के जेथी मारे [illegible] पुत्र अने पुत्री थाय. सुभद्रानुं आवुं कथन सांभळी साध्वीओए कह्युं [illegible] प्रिया ! अमे निर्ग्रंथीणीओ छीए. पांच समिति, त्रण गुप्ति ए अष्टप्रवचन [illegible] अमारा धर्म छे. त जे कहे छे ते अमारे सांभळवुं पण कल्पे नहीं [illegible] उपाय बताववानी वात तो क्यां रही ? आवी वातनी अनुमोदना [illegible] अमाराथी न थाय तो तने अमारे आ बाबतमां शुं कहेवुं ? अमारी [illegible] केवळी भगवंत प्ररूपित धर्मनो उपदेश करवानो छे. हे सुभद्रा ! [illegible] इच्छा होय तो अमे तने धर्म समजावीए. ते धर्मना आराधनथी [illegible] सुख मळे छे.

सुभद्राना कहेवाथी साध्वीए जैनधर्मनुं स्वरूप संक्षिप्तमां समजाव्युं [illegible] ते अत्यंत प्रमुदित बनी. तेणे कह्युं-हे पूज्य साध्वीओ ! तमारा [illegible] करुं छुं, प्रतीति करुं छुं, रुचि करुं छुं. तमोए मने जे धर्म कह्यो [illegible] छे. हुं श्रावकधर्म अंगीकार करुं छुं. साध्वीओए पण तेने [illegible] जहा सुहं अर्थात् तमने सुख उपजे तेम करो. सुभद्राए पुन [illegible] साध्वीओ त्यांथी चाली गई. सुभद्रा श्राविका धर्मनुं ग्रहण [illegible] बाद ते जीवाजीवादिक नव तत्त्वनी जाण थई. धर्म प्रत्ये तेमना [illegible] गई. पूर्वनी जेनो दिनचर्यामां पण महत्त्वना फेरफार थई गया [illegible] चिंतामणि रत्नने साचववा जे काळजी राखवी पडे तेवी [illegible] श्राविका धर्मनुं पालन करवा लागी. साधु-साध्वीने [illegible] अने तेमनी वैयावच्च करवानी पण तक सुभद्राना [illegible]

एकदा सुभद्रा पाछली रात्रिए जागी उठतां विचार [illegible] बाद साथे भोग भोगवतां घणां वर्ष व्यतीत थयां [illegible] न थयुं तो हवे हुं मारुं आत्मकल्याण साधुं. प्रभात [illegible] सुव्रता साध्वी पासे दीक्षा ग्रहण करुं. हवे आ [illegible] रहे ? आवा विचार करी, प्रात:काळे सार्थवाह पासे [illegible] करी के-हे सार्थवाह ! तमारी साथे यथेच्छ भोग [illegible] पण हजी मने संतानसुख प्राप्त न थयुं. हवे [illegible] साध्वी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं. सार्थवाहे [illegible] हमणां तो श्राविका धर्म पाळो, मारी साथे जे [illegible] भोग-विलासो माणो. पछी कालांतरे भुक्तभोगी [illegible]

पणु दुष्कर छे सुभद्राए श्रेष्ठीनु वचन अणसांभळ्यु करी फरी वार पोतानी इच्छा दर्शावी एटले सार्थवाहे तेने अनेक प्रकारे समजावी छता सुभद्राए पोतानो दृढ निश्चय जणाव्यो त्यारे श्रेष्ठीए तेने चारित्र-स्वीकारनी संमति आपी

यथावसरे पोताना स्वजन-संबंधी वगने भोजनार्थ निमंत्रण आपी भद्र सार्थवाहे सौने जमाड्या अने तेओना सत्कार कर्यो बाद सुभद्राने स्नान करावी, विलेपन करी आभूषणो पहेरावी, उत्तम वस्त्रो परिधान करावी, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामा बेसाडी, सगाँओना साथे गीतवाजिंत्रना नादपूर्वक भद्र सार्थवाह वाणारसी नगरीनी मध्यमा थइने सुव्रता साध्वीना उपाश्रय पासे आव्यो सुभद्राने आगळ करीने भद्र श्रेष्ठी साध्वी पासे जइ कहेवा लाग्या-हे पूज्य ! आ मारी भार्या मने अत्यंत वल्लभ छे तेने वात पित्तादिकनो व्याधि न थाय ते माटे मैं तेनी घणी काळजी राखी छे तेने हवे भागवती दीक्षा स्वीकारवानी जिज्ञासा थइ छे तो तमे तेने दीक्षा आपो श्रेष्ठीनु कथन सांभळी सुव्रता साध्वीए कह्यु—जहा सुहं, मा पडिबंधं करेह । अर्थात् जेथी तमने सुख उपजे तेम करो सारा कार्यमा विलंब न करो साध्वीना वचनथी हर्ष पामेली सुभद्राए स्वहस्ते ज अलंकारोने त्याग करीने पंचमुष्टी लोच कर्यो अने साध्वी पासे आवी, त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने चारित्र ग्रहण कर्यु पांच समिति अने त्रण गुप्तिपूर्वक संयम धर्मनु आराधन करवा लागी सुव्रता साध्वी साथेना सहवासथी सुभद्रानु ज्ञान पण वृद्धि पाम्युं

परन्तु लोकोना नाना नाना छोकराओने जोइने सुभद्रानो अत्यार सुधी सुषुप्त रहेलो संतानमोह जागृत थयो वासनानो सर्वथा नाश ज करवो जोइये नहीं तो ते घडियाळनी लोलक माफक प्रसंग आवता छटकी जाय छे सुभद्राना संबंधमा पण एवु ज बन्यु तेणे चारित्र स्वीकार्यु हतु परन्तु संतानमोह निर्मूळ थयो न हतो ते नाना छोकराओने तेल चोळती, पीठी मसळती, अचित्त पाणीथी स्नान करावती, तेओना केश ओळती, आंखमा काजळ आंजती, हाथ-पग अळतायी रंगती, चंदनादिकनु विलेपन करती, रमवाना घुघरा प्रमुख रमकडाथी रमाडती, खीर प्रमुख खावानी वस्तुओ चखाडती, इत्यादिक अनेक प्रकारोथी छोकराओ साथे चेष्टा करती छोकराओ पण खीर, मोदक प्रमुखना प्रलोभनथी तेनी पासे वारंवार आवता दिनप्रतिदिन बाळको साथेनी चेष्टाथी तेना चारित्र पालनमा शिथिलता आववा लागी हवे ते सुभद्रा साध्वी बाळकोने काखमां बेसाडवा लागी, खोळामां रमाडवा लागी, जुदी जुदी दिशाओमा बेसाडी तेमनी साथे क्रीडा करवा लागी कटलाकने जांघ ऊपर, केटलाकने छाती ऊपर, कटलाकने खभा ऊपर, कटलाकने मस्तक ऊपर बेसाडवा लागी बाळकना हाल रडा गाइ तेमने रंजित करवा लागी तेना आवा प्रकारना आचरणनो सुव्रता साध्वीए निषेध कर्यो निर्ग्रंथीओना धर्म समजाव्यो सुभद्राने कह्यु के-नगरजनोना

छोकराओ रमाडवा ते अनाचार छे तेनी आलोयणा लेईने निर्विकार मनथी चारित्रनु पालन कर. सुभद्राए सुव्रता साध्वीनु वचन स्वीकार्यु नहीं कारण के तेने तो बाळ-क्रीडाना रंग लाग्या हता. सुव्रता साध्वीनु वचन सुभद्राए न मानतां पोतानो पूर्ववत् करणो चालु राख्यो त्यारे अन्य साध्वीओ तेनी निंदा ने तिरस्कार करवा लागी त्यारे सुभद्राने मनमा विपरीत विचार आव्या. खरेखर हठाग्रहीओ पोताना पाक न आता सामानो दोष ज जुए छे. पण पोताना नेत्रनो विचार न करतां छुपप्रकाशने ज दोषित गणे छे. कडवा छतां हितकर वाक्य कहेनार प्रत्ये कदापि क्रोध न करवो, कारण के तेमां तेने कशो लाभ नथी. तेनो हेतु तो हितशिखामण आपवानो छे परन्तु आ प्राणीनो ए स्वभाव छे. विचित्र छे के पोताना इच्छित मार्गमां कइपण अंतराय के विघ्न आवे तो लाभालाभनो विचार कर्या विना ▪ पोताना आग्रहने ज पकडी राखे छे, एटला माटे ज कह्यु छे के—अप्रियस्यापि पथ्यस्य, वक्तरि च मित्रे ऽप्यलम्। सुभद्रा साध्वीने पण पोताना बाळकोनी साथमां रमतना निषेधथी विपरीत विचार आव्या ते विचारवा लागी के–ज्यारे हुं आगारिका हती त्यारे तो आ साध्वीओ मारु बहुमान करती, मारा आदर-सत्कार करती, मने मारा सारा वचनथी बोलावती, वळी ते वखते हुं स्वतंत्र हती, हवे हुं साध्वी थई त्यारे तेओ मारी निंदा करे छे, मारी इर्ष्या करे छे माटे हवे तो आवती कालथी आ गच्छनो त्याग करी अन्यत्र चाली जाउं.

बीजे दिवसे तो विचारने तेणे अमलमां पण मूक्यो. सुव्रता साध्वीना मठनो त्याग कर्या बाद तो ते निरंकुश बनी, कारण के अटकावनारु न रह्यु. स्वच्छंद वर्तनथी ते घणा लोकोना छोकराओ उपर मूर्छित बनी पूर्ववत् नवरावणानी, पाठी चोळवानी, तेल मसळवानी, कंठ शणगारवानी विगेरे बधी क्रियाओ करवा लागी. आ प्रमाणे लांबा समय सुधी पाळी पणा प्रमाणे संयम पाळी, ते मार्गनी आलोयणा कर्या विना, अनाचारनु मिथ्यादुष्कृत आप्या सिवाय पन्दर दिवसना अनशनपूर्वक मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमा बहुपुत्रिका विमानमा देवी तरीके उपजी.

गौतमस्वामीए भगवंतने पूछ्यु के–हे भगवन्! तेनु नाम बहुपुत्रिका केम पड्यु? भगवंते जवाब आप्यो के–इन्द्रनी उत्सव सभा थाय त्यारे आ देवी आठ नव वर्षना कुमार कुमारीओ विकुर्वीने दिव्य नाटक बतावे छे ए कारणथी तेनु बहुपुत्रिका एवु नाम छे. बाद गौतमस्वामीना प्रश्नना जवाबमां भगवंते कह्यु के–तेनु आयु चार पल्योपमनु छे, एटले गौतमस्वामीए पुनः प्रश्न कर्यो के–हे स्वामी! ते देवी अहींथी च्यवीने क्यां उपजशे? तेना जवाबमां भगवंते तेना आगामी भव गणावतां कह्यु के—

जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां विंध्याचळ पर्वतना तळटीमां बेभेल ग्राममां सनि पद्मना ब्राह्मणकुळने विषे आ देवी उपजशे बारमा दिवसे तेना मातपिता तेनुं 'सोमा' नाम पाडशे सोमा यौवनवय पामतां तेनुं सौंदर्य खीली निकळशे. सोमा विनयी, विवेकी ने बुद्धिशाळी थशे सोळ वर्षनी थये तेना मातापिता पोताना भाणेज राष्ट्रकूट साथे तेने परणावशे राष्ट्रकूट पण तेनी रत्नकरंडिया अथवा तेलना घडानी माफक सारसंभाळ राखशे तेने वात, पित्तादिक व्याधि न थाय तेम पण राष्ट्रकूट पूर्ण काळजी राखशे राष्ट्रकूट साथे भोग भोगवतां सोमाने प्रतिवर्ष एक-एक जोडलुं जन्मशे ए प्रमाणे सोळ वर्षमां तेने बत्रीश संतानो थशे आ प्रमाणे तेने केटलाक छोकराओ, केटलीक कुमारीओ, केटलाक बाळको थशे तेमांथी केटलाकने सुवाडशे, केटलाकने खोळामां लेशे, केटलाकने स्तनपान करावशे, वळी कोइने चालतां शीखवाडशे, कोइने स्नान करावशे, वळी कोई दूध मागशे, कोइ खावा मागशे, कोइ रमवा रमकडां मागशे, कोइ लाडु, खीर प्रमुख मागशे, कोइ पाणी मागशे, वळी कोइ सामान ताडन करशे, कोइ रोसाइ जशे, कोइ रुदन करवा लागशे, कोइ लात मारशे, कोइ मारामारी करशे, कोइ रोदो पाडशे, कोइ पछाडी खाशे, कोइ वडीनीत करशे, कोइ लघुनीत करशे आ प्रमाण विविध प्रकारनी क्रियाथी सोमा रात्रिदिवस काममां ज रहेशे राष्ट्रकूट पासे भोग भोगववा माटे असमर्थ बनशे वळी पुत्रादिकने कारणे सोमा अशुचिमय रहेवाथी तेनो देखाव पण मलिन लागशे राष्ट्रकूटने तेनी पास जवानुं मन नहीं थाय

एकदा रात्रिने विषे जागृत थतां ते विचारशे के-हुं आटलां बधां पुत्रपरिवार वाळी होवाथी मळ-मूत्रमां ज लिप्त रहुं छुं पति साथे मनगमता भोगविलास पण भोगवी शकती नथी, माटे जेओने पुत्र-पुत्री नथी ते ज खरेखर धन्य छे एवामां सुव्रता साध्वी विहार करतां करतां ते विभेल सन्निवेशमां आवी पहोंचशे तेना उपाश्रयनी बे-त्रण साध्वीओ गोचरी अर्थे भमतां भमतां सोमाने त्यां जशे साध्वीओने आवतां जोइ सोमा आसन उपरथी ऊभी थशे आदर सत्कारपूर्वक वंदन करी चार प्रकारनो आहार वहोरावी कहेशे के-हे पूज्य आर्याओ ! मारे पति साथे भोग भोगवतां सोळ वर्षमां सोळ जोडलां संतान थयां छे तेना मळ-मूत्रादिक साफ करतां अने अन्य सारसंभाळ करतां हवे हुं कंटाळी गई छुं माटे मने धर्म समजावो साध्वीओ जिनेश्वरभाषित धर्म समजावशे, जे सांभळी सोमाने भवथी उद्वेग थशे प्रातःकाळे पति पासे दीक्षित थवा माटे आज्ञा मागशे, पण राष्ट्रकूट ना पाडी भुक्तभोगी थया पछी दीक्षा लेवानी रजा आपशे पछी दीक्षा-ग्रहणनो विचार पडतो मूकी, सुव्रता साध्वी पासे उपाश्रये [illegible] जशे त्यां श्राविका धर्म स्वीकारशे सुव्रता साध्वी अन्यत्र विहार करी जशे सोमा श्राविका धर्मनुं रूडी रीते पालन करशे

पाछा समय थाय सुव्रता साध्वी फरीथी ते सन्निवेशमां पधारशे त्यारे आज्ञा मेळवी मोटा दीक्षा लेशे छठ्ठ, अठ्ठमनी तपस्या करशे निरतिचार चारित्र पाळी, प्रांते एक मासनुं अणशण करी, काळधर्म पामी शक्रनो सामानिक देव थशे त्यां बे सागरोपमनुं आयुष्य पाळी, च्यवी, महाविदेह क्षेत्रमां जन्मीने, सर्व विरति चारित्र स्वीकारीने मोक्षे जशे

कालीनी कथा—

राजगृही नगरीने विषे श्रेणिक राजा हतो तेने चेलणा नामनी राणी हती ते नगरीमां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं तेमां भगवान महावीर स्वामीने समवसर्या पर्षदा वांदवा आवी वांदीने ते गया बाद काली नामनी देवी सपरिवार आवी प्रभुनी समक्ष दिव्य नाटक कर्युं काली देवीनो परिवार विगेरे हकीकत ऊपरनी सुभद्रानी कथामां दर्शावेल बहुपुत्रिका देवीना माफक जाणवी काली देवी चमर चंचा राजधानीमां कालवतंसक नामना भुवनने विषे काल नामना सिंहासनने शोभावती हती भगवंतने समवसर्या जाणी, पोताना सिंहासन ऊपरथी उठी, सात-आठ पगलां आगळ आवी, हस्तसंपुटपूर्वक चरणवंदन कर्युं पछी बहु पुत्रिकानी माफक विचारीने, आवीने भगवंत समक्ष नाटक कर्युं नाटक करीने गया तथा बाद श्रीगौतमस्वामीए तेना पूर्वभव पूछयो एटले भगवंते जणाव्युं के—

आ जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां आमलकल्पा नामनी नगरी हती ते नगरीमां अंबशालवन नामनुं चैत्य हतुं जितशत्रु राजा हतो ते ज नगरीमां काल नामनो गाथापति हतो तेने कालश्री नामनी पत्नी द्वारा काली नामनी पुत्रीनी प्राप्ति थई तेने परणाववाना योग न मळवाथी काली वृद्ध थई गई वृद्ध थई जवाथी वर मळवानी आशा नाश पामी गई तथा ते मनमां ने मनमां ज संताप अनुभववा लागी स्वाभाविक रीते ज तेना स्तन मोटा नमी गया, अंगोपांग शिथिल थई गया, गाल ऊपर करचलीओ पडी गई लोको तेने "जूनी कुमारी ' एवा नामथी ओळखवा लाग्या

एवामां त्रेवीसमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ अंबशालवनमां समवसर्या तेमनी काया नव हाथप्रमाण ऊंची हती सोळ हजार साधु तथा आडत्रीस हजार साध्वीओनो परिवार हतो पुरुषादाणी एवा तेमने समवसरेला जाणी पौरजनो तथा राजा आडंबरपूर्वक वांदवा चाल्या काली पण मातपितानी आज्ञा मेळवी, स्नान करी, शुद्ध वस्त्रालंकार पहेरी, घणी दासीओना परिवारयुक्त धर्मरथमां बेसीने आडंबरपूर्वक वंदनार्थे गई परमात्माने त्रण प्रदक्षिणा आपी, वंदन करीने बेठी एटले परमात्माए धर्मकथा कही ते देशना सांभळी कालीने संसार ऊपर अनासक्ति थई भगवंतने कह्युं के–मारी दीक्षा लेवानी भावना थई छे हुं मारा मातपितानी आज्ञा लई आवुं त्यां सुधी आप अहीं ज स्थिरता करशो

बाद ते ज धर्मरथमा बेसी काली स्व-आवासे आवी अने मात-पिताने पोतानी इच्छा जणावी एटले तेओए संमति आपी अने स्वजन-संबंधीओने भोजनार्थे निमंत्र्या पछी कालीने सोना रूपाना कळशवडे स्नान करावीने, रत्नमय आभूषणो पहेरावीने, रेशमी वस्त्रो परिधान करावीने, हजार पुरुषो उपाडे तेवी शिबिकामां बेसारीने सर्व परिजन वर्ग सहित महोत्सवपूर्वक भगवंत समीपे आव्या अने पंचमुष्टी लोच करीने परमात्मा पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी काली पांच समिति अने त्रण गुप्तिपूर्वक साध्वीधर्मनुं पालन करवा लागी पुष्पचूला आर्या पासे अगियार अंगनो अभ्यास कर्यो छठ्ठ, अट्ठम आदि तपश्चर्याओ पण अनेक विध करी आ प्रमाणे संयम धर्मनुं पालन करती पृथ्वी उपर विचरवा लागी

एकदा कर्मसंयोगे ते काली साध्वी शरीरनी शोभा करवा लागी, वारंवार हाथ-पग धोवा लागी स्तनना आंतरा, काखना अंतरप्रदेश, गुह्यप्रदेश वारंवार धोवा लागी ज्यां ज्यां बेसे त्यां त्यां पाणी छांटीने बेसे सूए तो पण पाणी छांटीने, पछी ज शयन करे आ प्रमाणे तेम करती जाईने पुष्पचूला साध्वीए तेने कह्युं के-आपणे तो श्रमणी ब्रह्मचारिणी आपण निर्ग्रंथीओने आम करवुं न शोभे-न कल्पे, माटे तमे आलोचना करो कालो साध्वीए तेमनुं कथन न स्वीकार्युं अने पूर्ववत् पोतानी करणी चालु ज राखी एटले अन्य साध्वीओ तेमनी निर्भर्त्सना-निंदा करवा लागी काली पोतानी भूल कबूल न करता विपरीत विचार करती के-साध्वी थई एटले आ लोको मारी निंदा, ईर्ष्या विगेरे करे छे हुं गृहस्थिनी हती त्यारे तो स्वतंत्र हती हवे तो हुं आ गच्छनो त्याग करी जउं बीजे दिवसे ते गच्छनो त्याग करी चाली गई हवे तो ते निरंकुश रीते हस्त-पाद, शरीरना अंगोपांग धोवा लागी छेवटे पंदर दिवसनुं अनशन करी, आलोचना के प्रतिक्रमण कर्या वगर मृत्यु पामी एक पल्योपमना आउखे काली नामनी देवी थई बाद गौतमस्वामीए तेना भविष्य संबंधी पृच्छा करतां भगवंते कह्युं के-त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां उत्तम कुळमां जन्मशे अने त्यांथी चारित्र धर्मनुं सम्यग् रीते आराधन करी मोक्षे जशे

हे गौतम ! काली नामनी साध्वीनी माफक बीजी प्रमुख २०६ साध्वीओ भगवंत पार्श्वनाथनी हती ते पैकी ११८ भवनपतिमां गई, ६४ व्यंतरेन्द्रो थई, ४ सूर्यनी ने चार चन्द्रनी अग्रमहिषी थई, आठ सौधर्मेन्द्रनी अने आठ ईशानेन्द्रनी अग्रमहिषी थई आ बधी साध्वीओ त्यांथी च्यवी, महाविदेहमां उत्तम कुळमां जन्मी, चारित्र ग्रहण करी मोक्षे जशे

आ प्रमाणे सुभद्रा ने काली प्रमुख साध्वीनी माफक जे संतानमोह राखे ▮ अगर तो शरीर-शुद्धि पर आसक्ति धरावे छे ते पोतानुं श्रेष्ठ संयम-फळ गुमावी बेसे छे अने कोटी मूल्यनुं रत्न एक कोडीमां वेची नाखवा जेवुं आचरण करे छे; माटे साध्वी वर्गे पण पासत्थीओनो योग्य वर्तन कदापि पण न करवुं इवे

कई साध्वी गच्छ-शासनने शत्रुरूप छे ते दर्शावे छे—

गच्छइ सविलासगई, सयणीअ तूलिअ सविब्बोअं ।
उव्वट्टेइ सरीर, सिणाणमाईणि जा कुणइ ॥ ११४ ॥
गेहेसु गिहत्थाणं, गंतूण कहा कहेइ काहीआ ।
तरुणाइ अहिवडंते, अणुजाणे साइ पडिणीआ ॥ ११५ ॥

[गच्छति सविलासगतिः, शयनीय तूलिका सबिब्बोकम् ।
उद्वर्तयति शरीर, स्नानादीनि या करोति ॥ ११४ ॥
गृहेषु गृहस्थानां, गत्वा कथा कथयति काथिका ।
तरुणादीन् अभिपततः, अनुजानाति सा प्रत्यनीका ॥११५ ॥]

गाथार्थ—विलासयुक्त गतिथी वेश्यानी माफक भ्रमण करे, रु आदिथी भरेली तळाईमां ओशीकापूर्वक शयन करे, तेलादिकथी शरीरनु उद्वर्तन (पीठी) करे, स्नानादिकथी शरीर-शोभा वधारे, गृहस्थोना घेर जई इच्छानुसार कथा करे, सामा आवता युवान पुरुषोने सत्कारे-वचनना आडंबरथी अभिनंदे-आवा वर्तनवाळी साध्वीने शासननी शत्रु जाणवी.

विवेचन—अंगनो मरोड करवो, लटकापूर्वक नेत्रकटाक्ष करवो, वांकी नजर करी जोवु-ए बधा विलासना लक्षण छे केटलाक आचार्यो नेत्रना विकारने (कटाक्षने) विलास कहे छे पींजेला रुना भरेला गादलानो तेमज ओशीकानो शयनसमये उपभोग करवो ते बेसतां सुवाते पण रुथी भरेली नानी-नानी गादलीनो उपयोग करवो ते चारित्रपात्र साध्वी माटे उचित नथी पीठी चोळी स्नान करवाथी शरीर उपरनो मळ दूर थाय छे अने देहशांति थये छे परन्तु साध्वीने माटे ते बधा निषिद्ध छे जो ते तेवु वर्तन करे तो तेने साध्वी नहि परंतु शासननी शत्रु जाणवी

साध्वीए गृहस्थना घरे जईने के उपाश्रयमां पण रहीने संयमयोग सिवायनी बीजी कथा न करवी स्वाध्यायादि करवाने बदले देशकथादि चार विकथा करे ते साध्वीधर्मने उचित नथी वळी आहारादिने अर्थे, वस्त्र पात्रने निमित्ते, पोतानो यश फेलाववाने अर्थे के पोताना बहुमान-पूज्यभावने अर्थे जो धर्मोपदेश करे तो पण ते साध्वीधर्मने लायक नथी आ बाबतमां वादी प्रश्न करतां पूछे छे के-भगवंते तो पांच प्रकारनी वाचना (सज्झाय) कही छे-[illegible] वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा ने परावर्तना स्वाध्यायमां धर्मकथानो समावेश [illegible]

छे अने तेनाथी भव्य जीव प्रतिबोध पामे छे, तीर्थनी वृद्धि थाय छे, धर्म कथाथी निर्जरा थाय छे तो तेनो तमे निषेध शा माटे फरमावो छो? आचार्य भगवंत तेनो जवाब आपता कहे छे के-धर्मकथा ए स्वाध्यायनु पांचमुं अंग छे ते बराबर छे, परंतु दिवस ने रात आठे पहोर धर्मकथा न करवी वधो समय धर्मकथामां व्यतीत करवाथी हानि थाय पडिलेहणादिक चारित्रना योग छे माटे ते करवाना समये स्वाध्याय न करवो, सूत्र, अर्थनी पोरिसीने समये स्वाध्याय न करवो कमके तेथी शिष्यादिकने भणाववाना अंतराय पडे, वळी आचार्य, उपाध्याय के ग्लान साधुनी वैयावच्चमां खामी आवे आ प्रमाणे धर्मकथानी खामी समजवा उपरांत धर्मकथा करवामां खूब काळजी राखवी जोइए (१) क्षेत्र जोइने विचारवु के-आ क्षेत्रमां साधु-साध्वीनो निर्वाह थशे, लोको भद्रिक होवाथी धर्म समजशे धर्मनी रुचि वधशे, श्रद्धावाळा थशे, साधु-साध्वीने उपकारक थशे-आवो विचार करी योग्य क्षेत्र होय तो ज धर्मकथा करवी (२) राजादिक महर्द्धिक पुरुष आवे तो धर्मोपदेश करवो (३) उत्तम कुळनी कोई व्यक्ति आवे तो उपदेश आपवो कारण के तेनी साथोसाथ नगरजनो पण प्रतिबोध पामे आ प्रमाणे पूर्वापरनो विचार कर्या वगर जे साधु या साध्वी धर्मकथा कर्या करे छे ते काथिक-कथा करनार जाणवो श्रीनिशीथ-चूर्णीना तेरमा उद्देशाना सातमा भागमां कह्यु छे के-"जे भिक्खू काहिअं वंदइ वदंत वा साइज्जति" जे साधु काथिकने वांदे छे, अन्य पासे वंदावे छे अने वंदन करनारने सारो कहे छे ते प्रायश्चित्तने पात्र थाय छे

युवान तरुण पुरुषने आवता जोई कहे के—"तमे भले आव्या, वळी पण वारंवार आवजो, कंई काम होय तो कहजो" आ प्रमाणे आदर-सत्कार करता वचन उच्चारे ते साध्वी न जाणवी पण श्रमणनी शत्रु जाणवी कारण के ते भगवंतनी आज्ञा लोपनारी छे आ विषयने वधु स्पष्ट करता कहे छे के—

वुड्ढाणं तरुणाण, रत्तिं अज्जा कहेइ जा धम्म ।
सा गणिणी गुणसायर !, पडिणीआ होइ गच्छस्स ॥ ११६ ॥
जत्थ य समणीणमसं-खडाइं गच्छम्मि नेव जायंति ।
तं गच्छं गच्छवरं, गिहत्थभासा उ नो जत्थ ॥ ११७ ॥

[वृद्धानां तरुणानां, रात्रौ आर्या कथयति या धर्मम् ।
सा गणिनी गुणसागर !, प्रत्यनीका भवति गच्छस्य ॥ ११६ ॥
यत्र च श्रमणीनां-मसंखडानि गच्छे नैव जायन्ते ।
स गच्छो गच्छवरः, गृहस्थभाषास्तु न यत्र ॥ ११७ ॥]

गाथार्थ—हे इंद्रभूति गौतम ! रात्रिसमये जे मुख्य साध्वी वृद्ध के तरुण वयवाळाने धर्मकथा संभळावे छे तेने गच्छनी वैरिणी जाणवी

जे गच्छमां साध्वीओ परस्पर क्लेश–कजीआ करती नथी तेमज गृहस्थना जेवी सावद्य के खुशामतभरी वाणी बोलती नथी ते गच्छ सर्व गच्छोमां श्रेष्ठमा श्रेष्ठ जाणवो.

विवेचन—साध्वीने रात्रिने विषे युवान तेमज वृद्ध पुरुषोनी समक्ष, उप लक्षणथी स्त्री के पुरुषोनी संयुक्त सभा समक्ष ने दिवसे पुरुषो समक्ष धर्मकथा करवानो निषेध छे अहीं मूळमां 'गणिणी' एवो शब्द आप्यो छे तेनो अर्थ मुख्य साध्वी छे तेनो परमार्थ ए छे के–गच्छना वडील साध्वीने पण रात्रिने विषे धर्मकथा करवानो निषेध छे तो बीजी साध्वीओनी वात पूछवुं ज शुं ?

अहीं वादी प्रश्न करतां पूछे छे के–पुरुषोनी सभामां साध्वी धर्मोपदेश करे तेमां शो दोष ? तेना जवाब ए छे के–जेम साधुने एकली स्त्रीओनी सभामां उपदेश करवानो निषेध छे तेम केवळ पुरुषोनी सभामां साध्वीने उपदेश आपवानो निषेध छे श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमां कह्युं छे के–" नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति ? आयरियाह–निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं भवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कहं कहेज्जा " त्यां कह्युं छे के–स्त्रीओनी कथा करतां साधुने ब्रह्मचर्यमां शंका थाय अर्थात् मन चलित थाय ब्रह्मचर्यनुं फळ शुं हशे ? एम विचिकित्सा थाय छे, तो विषयसेवन करवानी कांक्षा थाय, चारित्रनो भंग थाय, उन्माद प्रगटे, दीर्घकालीन रोगोत्पत्ति थाय, केवलीप्ररूपित धर्मथी भ्रष्ट थवाय माटे साधुए केवळ स्त्रीओनी समक्ष धर्मकथा न करवी आवी ज रीते साध्वीए केवळ पुरुषो समक्ष कथा न करवी, नहीं तो ब्रह्मचर्यना दश स्थानो पैकी चोथा स्थानको भंग थाय छे

वळी श्रीस्थानांग सूत्रमां पण कह्युं छे के–" नो इत्थीणं कहं कहेत्ता हवइ " एवी रीते साधुओ बीजी ब्रह्मचर्यगुप्ति आराधे छे तेम साध्वीए पण पाळवी जोईए तेथी जेम साधुने स्त्रीओने मध्ये कथा करवानुं वर्जन कर्युं तेम स्त्रीने पुरुषोने विषे धर्मकथन करवानुं निषिद्ध छे जे साध्वी आ आज्ञानुं उल्लंघन करे छे तेने शासननी शत्रुभूत जाणवी

जे गच्छमां साध्वीओ परस्पर कलह-कजीआ के इत्यादि न करती होय निंदा-कुथली-गृहस्थकथनी न करती होय, 'आ मारो मामो, आ मारो भाई, आ मारा पिता, आ मारी माता' इत्यादि गृहस्थोचित भाषा बोलती न होय तेमज गृहस्थ साथे 'आवो, अमुक वस्तु लावजो, आ काम करजो' ए प्रमाणे सावद्य भाषापूर्वक वातचीत न करती होय तेमज 'तमारा जेवा दानवीर क्याय छे ! तमे ज शासनने शोभावनार छो, तमो धर्मात्मा छो' तेवी खुशामत भरी माया न बोलती होय ते गच्छ ज श्रेष्ठ गच्छ जाणवो स्वेच्छाचारी साध्वीना विशेष कुलक्षणो जणावता कहे छ के—

जो जत्तो वा जाओ, नालोअइ दिवसपक्खिअं वावि ।
सच्छंदा समणीओ, मयहरिआए न ठायंति ॥ ११८ ॥
विंटलिआणि पउजति, गिलाणसेहीण नेव तप्पंति ।
अणगाढे आगाढ, करंति आगाढि अणगाढ ॥ ११९ ॥
अजयणाए पकुव्वंति, पाहुणगाण अवच्छला ।
चित्तलयाणि अ सेवंते, चित्ता रयहरणे तहा ॥ १२० ॥
गइविब्भमाइएहिं, आगारविगार तह पगासंति ।
जह वुड्ढगाण मोहो, समुईरइ किं नु तरुणाणं ? ॥ १२१ ॥
बहुसो उच्छोलिंती, मुहनयणे हत्थपायकक्खाओ ।
गिण्हेइ रागमंडल, सोइंदिअ तहय कव्वट्ठे ॥ १२२ ॥

[यो यावान् वा जातः, नालोचयन्ति दैवसिक पाक्षिक वापि ।
स्वेच्छाचारिण्यः श्रमण्यः, महत्तरिकाया न तिष्ठन्ति ॥ ११८ ॥
विटलिकानि प्रयुञ्जन्ते, ग्लानशैक्ष्यान् नैव तर्पयन्ति ।
अनागाढे आगाढ, कुर्वन्ति आगाढे अनागाढम् ॥ ११९ ॥
अयतनया प्रकुर्वन्ति, प्राघूर्णिकाना अवत्सला ।
चित्रलानि च सेवन्ते, चित्राणि रजोहरणानि तथा ॥ १२० ॥
गतिविभ्रमादिभिः, आकारविकार तथा प्रकाशयन्ति ।
यथा वृद्धाना मोहः, समुदीर्यते किं पुन. तरुणानाम् ? ॥ १२१ ॥

मुखं उज्झोलयन्ति, मुखनयनानि हस्तपादकक्षा ।
गृह्णन्ति रागमतलं, श्रवणेन्द्रियं तथैव करपस्याः ॥ १२२ ॥]

गाथार्थ—दैवसिक, रात्रि, पाक्षिक, चातुर्मासिक अथवा सांवत्सरिक जे अतिचार जेटलो थयो होय तेटलो न आलोचे, मुख्य साध्वीनी आज्ञामां न रहे, अष्टांग निमित्तादिक अथवा मंत्रतंत्रादिकनो प्रयोग करे, ग्लान के नव दीक्षितनी औषध, वस्त्र, पात्रादिकवडे सारसंभाळ न करे, खास न करवा जेवुं कार्य होय ते, अवश्य करवा लायक जेवुं लेखी करे अने खास करवा जेवुं कार्य वेदकारी रागी न करे, संयमकरणी पेठ उतारवानी माफक यतना रहित करे, ग्रामांतरथी आवेल थाकेला, भूख्या के तरस्या साध्वीओनी निर्दोष अन्न-पाणी वडे भक्ति-बहुमान न करे, विविधरंगी वस्त्रो वापरे तेमज विचित्र रचनावाळा रजोहरण वापरे, गति-विलासादिकवडे स्वाभाविक एवा हावभाव देखाडे के-वृद्ध स्थविर साधुओने पण तत्काळ मोह [वेदोदय] जागे, वगर कारणे वारंवार मुख, नेत्र, हाथ, पग अने कक्षादिक धोवे अने वसंत के मल्हारादिक राग-रागिणीओ शीखी लई एवी रीते ललकारे के जेथी तरुण पुरुषोनी के बाळकोनी श्रवणेन्द्रियने आकर्षित करे हे गौतम ! आवी साध्वीओने अनार्या, नटडी तेमज स्वच्छंदाचारिणी जाणवी

विवेचन—गच्छमां घणेरी साध्वीओ महत्तरिका वडेरीमां आवे छे तेम पुत्रे विनानी, शिष्ये गुरुनी जिकरे शेठनी आज्ञामां रहेवुं जोइए तेम साध्वीए महत्तरिकानी आज्ञामां रहेवुं जोइए, कारण के आज्ञा ए अंकुश छे अंकुश विनानो प्राणी क्यारे भूल करी बेस ते न कहेवाय तेवी वात छे छद्मस्थ जीव मात्र भूलने पात्र छे, तो शास्त्रकारे बुद्धिमान साध्वीओने पण आज्ञारूपी अंकुशमां रहेवा फरमाण करी छे तेथी साध्वी महत्तरिकानी आज्ञा उत्थापे अने दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक के छेवट सांवत्सरिक अतिचार न आलोचे ते साध्वी आर्या नथी पण अनार्या ज छे

निमित्त के मंत्र-तंत्रादिकनी वात करवी नहीं तेमज तेनो उपयोग पण न करवो, कारण के तेमां रक्त रहेवाथी रोगी के तो नवीन साध्वीनी औषधादिकथी सारसंभाळ लई शकाती नथी तेमज अध्ययन कराववा योग्य साध्वीने अभ्यास कराववामां खामी आवे छे वळी निमित्त के मंत्र-तंत्रनुं कार्य एक वार शरु कर्या पछी तेनी मर्यादा बंधाती नथी निमित्तकार्यमां प्रावीण्य प्राप्त थया पछी कीर्ति न घटाडी पाछा पडे ■ अने चारित्ररक्षाना नियमो आळसमां शिथिल

रता आवे छे आटला खातर ज श्रीपुष्पमालवृत्ती(सूत्रस्तव)मां कह्युं छे के-सीमाधरस्स वंदे । अवश्य करवा योग्य क्रिया आगाढ कहेवाय छे योगवहनादि क्रियामां वधतुं-ओछुं आचरण करे ते साध्वी धर्मने लायक नथी

जेम माता पुत्र या पुत्रीनुं रूडी रीते पालन करे तेम पांच समिति अने त्रण गुप्तिरूपी अष्ट प्रवचन माता संयमधर्मनुं रक्षण करे छे साध्वीए गमना गमनमां इर्यासमिति अने बोलवामां भाषासमिति विगेरेनुं पूर्ण लक्ष राखवुं जोइए, तेने बदले वठ* उतारवानी माफक अयतनापूर्वक-उपेक्षाभावथी करणी कराय ते कदापि फलदायक बनी नथी गृहस्थाश्रममां पण अतिथि आवे तो तेनी आगता-स्वागता करवानो रिवाज (फरज) छे तेम अन्य कोइ साध्वी ग्रामान्तरथी आवी होय तो तेमनो सत्कार करवो, तेना श्रम दूर करवानो प्रयास करवो अने शुद्ध अन्नपानादिकथी बहुमान करवुं, जो आ प्रमाणे न वर्ताय तो साध्वी पोताना संयमधर्मथी भ्रष्ट थाय छे रंगेला वस्त्र के डाघो वापरे, किनारवाळा भरेला ओघा राखे ते साध्वी स्वच्छंदाचारी जाणवी.

मुख मचकोडे, नेत्र वांका करे, स्तन ऊंचा बांधे, हाथणीनी पेठे गति करे, चालतां चालतां आडुं अवळुं जोया करे-आ बधा विकारना लक्षणो छे आवी रीते वर्तन करती साध्वी वृद्ध वयवाळाने पण मोहित करे, कामज्वर प्रगटावे तो अन्य युवान वयवाळाने माटे तो पूछवुं ज शुं ? तेओने तो मोह प्रगटे ज आवी रीते मोहोदय प्रगटाववाथी परिणाम विपरीत आवे अने परिणामे शासननी निंदा थाय माटे आवी भ्रष्टाचारी साध्वीथी गच्छनुं रक्षण करवुं.

जे साध्वी निरंतर वगर कारणे हस्त-पादादिनुं प्रक्षालन कर्या करे, जुदी जुदी राग-रागणिओ शीखवा करे ते पोते स्वच्छंदथी चूके छे अने अत्यन्त मोह प्रमाद [illegible] गीतादिक कारण मोहना छे अने ए रीते एक वार तेनी शरूआत थइ के पछी क्रम चूकाइ जवाय छे अने जेम पर्वतना शिखर ऊपरथी पडेलो प्राणी नीचे तळेटीए ज पहोंचे छे तेम साध्वी आ रीते पतित थइ ते अधःपतनने पामे छे पछी तेने मोढा ऊपर शणगार करवानो, नेत्रमां अंजन करवानो, मस्तकमां सिंदूर पूरवानो, कपाळमां तिलक करवानो, गळामां पुष्पमाळा पहेरवानो, मुखमां तांबूल राखवानो, शरीरे चंदनादिकथी विलेपन करवानी इच्छा थाय छे

१२८मी गाथाना उत्तरार्ध पाठान्तरमां आ प्रमाणे पण आपेल छे-गेण्हणरामण मंडणमोयति य चा उ कव्वडे । आ उत्तरार्धनो अर्थ ए [illegible] छे-गृहस्थना बाळकने

---

* राजा अगर तो अधिकारीओ पोताना कार्य माटे हलकी वर्णना लोकोने बोलावे छे अने तेनी पासे काम करावी लइ पण बदलो आपता नथी तेने 'वेठ' कहेवामां आवे छे दबाण अने ए लोकोने काम करवुं पडे छे पण तेमना मनमां काम करवानो उत्साह होतो नथी

ग्रहण करे, तेने विविध क्रीडापूर्वक रमाडे अने तने मोटा करे है नथी पण नरही जाणवो गृहस्थोना बालकोने रमाडवाथी, [illegible] थय करवाथी केवु विपरीत परिणाम आवे छे ते माटे [illegible] बहुपुत्रिका(सुभद्रा)नी कथा आपी गइ छे हवे केवी [illegible] करवु ते जणाय छे—

जत्थ य थेरी तरुणी, थेरी तरुणी अ [illegible]
गोअम ! त गच्छवर, वरनाणचरित्तआहारं [illegible]

[यत्र च स्थविरा तरुणी, स्थविरा तरुणी च [illegible]
गौतम ! त गच्छवर, वरज्ञानचारित्राधारं [illegible]

गाथार्थ—जे गच्छमा स्थविरा (वृद्ध) साध्वी [illegible] पछी स्थविरा एम अंतरे सूवे छे ते गच्छने हे गौतम [illegible] ना आधाररूप जाणवो.

विवेचन—वे वृद्ध साध्वीओनी वच्चे एक तरुण [illegible] कारण के जो युवान साध्वीओ पासे पासे सूवे [illegible] इत्त थाय स्तन के योनी अवयवान स्पर्शे ते [illegible] आवता मन विकृत बनी जाय परन्तु जो वृद्ध [illegible] आवी स्थिति न बने माटे जे गच्छमा [illegible] ज्ञानदर्शनने माटे आधारस्तंभ समान छे

हवे वर साध्वीओ फक्त मुंडित छे एम [illegible] गाथावडे जणावे छ—

धोयंति कंठिआओ, पोअंति तह [illegible]
गिहिकज्जचिंतगाओ, न हु अज्जा [illegible] ॥ १२४
खरघोडाइट्ठाणे, वयंति ते वा [illegible]
वेसत्थीसंसग्गी, उवस्सयाओ [illegible] ॥ १२५
सज्झायमुक्कजोगा, धम्मक [illegible]
गिहिनिस्सिज्जं वाहिंति, स[illegible] ॥ १२६

[धोवन्ति कण्ठिका, मातयन्ति तथा च ददति वस्त्राणि ।
गृहिकार्यचिन्तिकाः, न हु आर्या गौतम ! ताः ॥ १२४ ॥
खरघोटकादिस्थाने, व्रजन्ति ते वापि तत्र व्रजन्ति ।
वेश्यास्त्रीसंसर्गिः, उपाश्रयः समीपे ॥ १२५ ॥
स्वाध्यायमुक्तयोगा, धर्मकथाविकथाप्रेषणगृहिणाम् ॥
गृहिनिषद्यां वाधन्ते, संस्तवं तथा कुर्वन्त्यः ॥ १२६ ॥]

गाथार्थ—जे साध्वी वगरकारणे जळथी कंठप्रदेशने धोवे, गृहस्थोना मोती आदि परोवी आपे, बाळको माटे वस्त्र-औषधादि आपे-आ प्रमाणे गृहस्थोचित कार्य करवामां तत्पर रहे ते साध्वीने हे गौतम ! साध्वी न कहेवी.

*जे साध्वी हाथी, घोडा, गधेडा आदिना स्थाने जाय अथवा तेओ साध्वीना उपाश्रय पासेथी निकळे त्यारे खुशी थाय, वेश्या स्त्रीनो संग करे अथवा तो जेना उपाश्रयनी नजीक वेश्यागृह होय तेने साध्वी न कहेवी

वळी स्वाध्याय योगथी रहित होय, धर्मकथाने स्थाने विकथा करे, गृहस्थोने विविध प्रकारनी प्रेरणा करे, गृहस्थना आसन ऊपर बेसे अने गृहस्थोनो परिचय करे तेने फक्त उदरभरी साध्वी जाणवी.

विवेचन—जे साध्वी वगर प्रयोजन कंठप्रदेश धोय, गृहस्थना मोती परोवी आप, घरबाळाओनी माळा करी आप, मायना दाणा परोवी आपे, तथा आभरणादिक स्वच्छ करी आप, बाळकने माटे वस्तुदान करे, तेने दूध आपे, मांदा बाळकनी माबजत माटे पोतानी पासेथी औषधादि आपे, अडोशुडो वापरे, प्रसववादिकने लुछवा माटे जळथी आर्द्र(भीना) करेला वस्त्रो शरीर ऊपर वार वार घस्या करे, "आ गृहस्थने घरे छोकरो थाय तो सारु, अमुक गृहस्थ व्यापारमां सारु कमाय तो ठीक, अमुक गृहस्थ स्त्रीने परस्पर प्रेम वृद्धि पामे तो सारु" ए प्रमाणे गृहस्थोचित चिंताओ वारंवार कर्या करे तेथी साध्वीने हे गौतम ! तारे आर्या न समजवी पण गृहस्थनी चाकरडी मात्र जाणवी

गधेडा, बळद, घोडा, हाथी, बकरा विगेरे तिर्यंचो जडबुद्धिवाळा होय छे तेओ पोताना स्थानमां गमे ते स्थितिमां रहेता होय छे तेथी साध्वीने तेवा

* १२५ मी गाथाना पूर्वार्धनो अर्थ बीजी रीते पण आवेल छे, जे नीचे प्रमाणे-"ज्यां दास-दासी जेवा तेमज कुगोरो जेवा मूर्खजनोनी पासे काळे-अकाळे साध्वीओ जाय त्यां तो तेवा शठ लोको साध्वीना उपाश्रये आवे" आ अर्थ उचित लागे छे

स्थाने अथाय नहि कारण के स्त्रीओ चित्तविभ्रमवश जोता कामोद्दीपक थाय माटे शास्त्रकारोए तथा तुच्छ स्थानमां जवानो निषेध फरमाव्यो छे खरनो अर्थ दास दासी अने घोडनो अर्थ उथा माणस पण थाय छे तेना परमार्थ ए छे के-दास दासी जेवा तुच्छ ने जुगारी, मार, नचावा जेवा धूतजनो ज्या वसता होय तेवा स्थळे साध्वीए जवु नहीं तेमज तेवा लोकोने साध्वीए स्वसमीप पटले के उपाश्रये आववा देवा नहीं कारण के तेवा लोको छिद्र शोधनारा होय छे प्रसंग मळे तो मन चळाववा पण समर्थ थाय छे तथी तेवा दुर्जनोनो ससर्ग इच्छवो ज नहीं श्रीव्यवहारभाष्यना सातमा उद्देशामा कह्यु छ के—"तह चेर हरिय साला-घोडगमालाण चेर आमन्ने । जति तह जतमाला, काहीयत्त च कुव्यति ॥ १ ॥" जे साध्वी हस्तिशाळा, अश्वशाळा के शस्त्रागार पासे थईने जाय तेमज कथिकपणु करे ते साध्वी नथी

वेश्या के पण्यांगनाओ कदापि साध्वीए ससर्ग न करवो तेनी पासे तो विश्वास अने मोजशोखनी ज कथा होय छे वळी उपाश्रयनी नजीक वेश्या लोकोनो वास होय तो तेवा स्थाननो त्याग करवो कारण के वेश्या स्त्रीने त्या अनेक छळप्रपंच, विलासी लोकोनी आवजाव विशेष थाय छे अने तेओनु आवागमन उपाश्रयनी पासे थाय पटले पण ब्रह्मचर्यनी गुप्तिमा खामी आवे वळी वेश्या स्त्रीने त्या संगीत के नृत्यादिक थाय त्यारे चपळ चित्तने लीधे स्वाध्यायमां, पडिलेहणादि आवश्यक क्रियामां तेमज यथार्थ चारित्र पाळवामा स्खलना थाय माटे तेवा स्थाननो तो अवश्य त्याग ज करवो वेश्यानी साथोसाथ तेनी दासीना, जोगणी प्रमुख वेषधारिणीना पण परिचय न राखवा हे गौतम ! जे साध्वीओ उपर कह्या तथा प्रकारनो आश्रय लेती होय तो ते साध्वी ज नथी पण फक्त भ्रष्टाचारिणी समजवी

स्वाध्याय पटले भणवु भणाववु, ते कायथी मळती रहे अर्थात् प्रथम पद "सज्झायमुक्कजोगा"ने स्थाने पाठान्तरमा "छक्कायमुक्कजोगा" एवो पाठ छे तेना अर्थ ए छे के-षड्जीवनिकायनी यतनामा बेदरकार रहे, भमकथाने स्थाने परस्पर के विधवादिक स्त्रीओनी साथे राजकथा, भक्तकथादिक चार प्रकारनी विकथा करे, गृहस्थना कामसबधी चिंता राखे, गृहस्थ आवे तो तेने बेसवा आसन आपे, पोते गृहस्थने घर आय त्यारे बाजठ, गादी प्रमुख उपर बेसे, गृहस्थना घरमा आटो फेरा मारे, गृहस्थनी रूबरूमां के पाछळ खुशामत करे, तेना स्वजननी प्रशसा करे, गृहस्थनी साथे रातदिवस वाता ज कर्या करे 'हु पाछ तमे आ कार्य करो, तमारे आम करवु जोईए' ए प्रमाणे गृहस्थोचित कार्यमा आसक्ति धरावे तेवी साध्वीने हे गौतम ! तारे उदरभरी-फक्त पेट भरनारी ज जाणवी

कई साध्वी गणिनी पदने योग्य छे ते बे गाथावडे दर्शावे छे-

समा सीसपडिच्छीण, चोअणासु अणालसा ।
गणिणी गुणसंपन्ना, पसत्थपुरिसाणुगा ॥ १२७ ॥
संविग्गा भीयपरिसा य, उग्गदंडा य कारणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ता य, संगहे अ विसारया ॥ १२८ ॥

[समा शिष्यप्रतीच्छिकाना, चोदनासु अनलसा ।
गणिनी गुणसम्पन्ना, प्रशस्तपुरुषानुगता ॥ १२७ ॥
संविग्ना भीतपर्षद् च, उग्रदंडा च कारणे ।
स्वाध्यायध्यानयुक्ता, सङ्ग्रहे च विशारदा ॥ १२८ ॥]

गाथार्थ—पोतानी शिष्याओने तथा प्रतीच्छिकाओने समान गणनार, चोयणा, पडिचोयणादिकमा आळस रहित, प्रशस्त पुरुषोने अनुसरनारी अने ज्ञान-दर्शन-चारित्रगुणसंपन्न साध्वीने महत्तरिका-गणिनीपद योग्य जाणवी. वैराग्य रंगमा लीन चित्तवाळी, भवभीरु परिवारवाळी, अपराध आव्ये सख्त शिक्षा करनारी, सज्झाय ध्यानमा सावधान सुसाध्वीओना उपकारार्थे वस्त्र-पात्रादिकनो संग्रह करवामा कुशळ एवी साध्वी गणिनी पदने लायक छे.

विवेचन-महत्तरिका-वडेरी साध्वीना लक्षणो दर्शावता कहे छे के-ते समभावी होय पोतानी शिष्याओ तेमज ज्ञान या वेयावच्चादिक कारणोने अंगे आवली अन्यगच्छीय साध्वीओ प्रत्ये समानभाव राखे अेथी काळजी पोतानी शिष्याओना वस्त्र-पात्रादिक के औषध-भेषजनी राखे तेवी ज काळजी प्रतीच्छिका-अन्य शिष्याओ माटे राखे चोयणा-पडिचोयणादिकवडे तेने प्रेरणा कर्या करे, तेमा कोई पण प्रकारनो प्रमाद न दर्शाय जेम वहेतु जळ निर्मळ रहे छे तेम चोयणा, पडिचोयणादिकवडे संयम शुद्ध रीते पळाय छे चारित्र पालनमा कईक प्रमाद थतो जोवाय के मुख्य साध्वी प्रेरणा करे पंचम गणधर श्रीसुधर्मास्वामीए प्ररूपलो शास्त्रविहित मार्ग ज शुद्ध छे एम मानीने जैन धर्मनु यथार्थ पालन करनारी, तथा तेमणे दर्शावेल विधि-निषेधने अनुसरनारी तेमज ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना गुणोथी युक्त साध्वी गणिनी पदने योग्य छे

'यथा राजा तथा प्रजा' ए सूत्रने अनुसारे मुख्य पुरुषनु जेवु वर्तन होय छे तेवु आचरण तेनी नीचेना माणसो आचरे छे गच्छमा वडेरी साध्वीनो वर्ताव संवेगरंगमा न होय तो तेनी प्रतिमा अन्य साध्वीओ उपर न पडे तेटला खातर

जे शास्त्रकारे पहेलुं विशेषण ए आप्युं के-ते वैराग्य रंगमां लीन होवी जोइए साथे वसनारी साध्वीओने तेमां डर-भय लागवो जोइए, कारण के तेवो भय होय तो लघु शिष्यादिक कंइ पण अकार्य करतां संकोच पामे आवां भयभीत परिवार होय ते बीजुं लक्षण कह्युं, छतां पण कोइ साध्वी भूलने पात्र बनी तो तेने उग्र प्रायश्चित्त आपतां संकोच न राखे जो ए प्रमाणे वारंवार अपराधनी शिक्षा न करे तो देखादेखीथी या तो गुरुणीनी नबळाइ जाणी जइने अन्य साध्वीओ भूल करवा प्रेराय माटे मुख्य साध्वीए कारण प्रसंगे पोतानी सत्तानो उपयोग करवो जोइए, पछी के आलोचना आपवी गच्छनी सारसंभाळ करतां जे शेष समय रहे तेमां पांच प्रकारनो स्वाध्याय करे अने चार प्रकारना ध्यान पैकी बे धर्म अने शुक्ल ध्यावे जेम एक गृहस्थ पोताना कुटुंबना पालनार्थे सर्व प्रकारनी चिंता धरावे छे तेम मुख्य साध्वीए पण पोताना परिवारनी साध्वीओना उपकारार्थे निर्दोष वस्त्र, पात्र, औषध, ज्ञानोपकरण विगेरे वस्तुओनो संग्रह करी राखवो जोइए वळी पोतानो परिवार वधारवामां-नवीन शिष्याओ करवामां पण ते कुशळ होवी जोइए आ प्रमाणेना लक्षणो जे साध्वीमां होय ते महत्तरिका पदने लायक गणाय छे

वचनगुप्तिने आश्रयीने साध्वीए केवुं वर्तन करवुं जोइए ते त्रण गाथाथी बतावे छे—

जत्थुत्तरपडिउत्तर, वडिआ अज्जा उ साहुणा सद्धिम् ।
पलवंति सुरुट्ठावी, गोअम ! किं तेण गच्छेण ? ॥ १२९ ॥

जत्थ य गच्छे गोयम !, उप्पण्णे कारणंमि अज्जाओ ।
गणिणीपिट्ठिठिआओ, भासंती मउअसद्देण ॥ १३० ॥

माऊए दुहिआए, सुण्हाए अहव भइणिमाईणम् ।
जत्थ न अज्जा अक्खइ, गुत्तिविभेयं तयं गच्छम् ॥१३१॥

[यत्र उत्तर प्रत्युत्तर, वृद्धा आर्याः साधुना सार्धम् ।
प्रलपन्ति सरोषा अपि, गौतम ! किं तेन गच्छेन ? ॥ १२९ ॥
यत्र च गच्छे गौतम !, उत्पन्ने कारणे आर्याः ।
गणिनीपृष्टिस्थिता, भाषन्ते मृदुकशब्देन ॥ १३० ॥
मातुः दुहितुः स्नुषायाः, अथवा भगिन्यादीनाम् ।
यत्र न आर्या आख्याति, गुप्तिविभेदं सको गच्छः ॥ १३१ ॥]

गाथार्थ—जे गच्छमां मुख्य या तो वृद्ध साध्वी कलह के खेदवश थईने उत्तर-प्रत्युत्तर करे तेमज क्रोधवश थईने जेम तेम प्रलाप करे तेवा गच्छथी हे गौतम ! शु प्रयोजन अथवा तेवा गच्छने हु गच्छ कहेतो नथी.

हे गौतम ! जे गच्छमां कार्य प्रसगे लघु साध्वीओ मुख्य साध्वीनी पाछळ रहीने स्थविर गीतार्थ प्रमुखनी साथे सहज, सरळ अने निर्विकार वाक्योवडे मृदु वचन बोले ते ज वास्तविक गच्छ जाणजे. वळी वगरकारणे स्वपरवर्गमां 'आ मारी माता छे, आ मारी पुत्री के पौत्री छे, आ मारी बहेन छे' इत्यादि जाहेर न करे अथवा मातादिकनी गुह्य वात होय तो ते मर्म प्रकाशित न करे आवी वचनगुप्तिवाळा गच्छने ज हे गौतम ! ॥ साचो गच्छ जाणजे

विवेचन—गृहस्थ घरमां पण कहेवत प्रचलित छे क–"कलहकंकासथी तो गोळाना पाणी पण सुकाय छे" अर्थात् क्लेशथी सुखसंपत्ति नाश पामी जाय छे जेओ संसारनो त्याग करी संयमना मार्गे चढ्या छे तेओए तो कदापि पण क्लेश-कलह न करवो जोइए. क्लेशथी कर्मबंध थाय छे, आर्त्त के रौद्र ध्यान थाय छे अने आवी रीते कलह करतां स्वपरनुं शुभ त्यारे शासननी अपभ्राजना थाय क्रोधादिक कषायो छूपा चोर छे. ते क्यारे आपणा मनमां प्रवेश करी कब्जो करी वाळे छे तेनो आपणने ख्याल रहेतो नथी, माटे क्रोधादिक करवाना प्रसगो उपस्थित थाय त्यारे अ यत सावचेत रहेवु हे गौतम ! आवा प्रसग जेओ आत्मभान भूली जेम फावे तेम बोले छे ते गच्छने हु साचो गच्छ कहेतो नथी

शास्त्राभ्यास करवाने अंगे तो गमे ते शकादिनी पृच्छा करवा माटे साधु समीपे जवु पडे त्यारे पण मुख्य साध्वीने आगळ करीने, तेमनी पाछळ रहीने साध्वीए पृच्छा करवी उचित छे एकाकी साधु पासे जवु घटतु नथी साधु साथे वातचीत करवामां पण मृदु अने मिष्ट भाषा वापरवी जोइए बोलवामां पण विवेक राखवो विवेक ए मंत्र वशीकरण छे विवेकथी सघळा काय सिद्ध थाय छे श्रीमद्‌यशोविजयजीए विवेक सबंधे कह्यु छे के—

हृदयघर विवेके प्राणी जो दीप वासे, सकळ भवतणो तो मोह-अंधार नासे ।
परम धरम वस्तु तत्त्व प्रत्यक्ष भासे, करम भरम पतगा सर्वांग तेता विनाशे ॥
विकळ नर कहीजे ते विवेके विहीना, सकळ गुण भर्या ते जे विवेके विलीना ।
जिम सुमति पुरोधा भूमिगेहे वसते, युगति जुगति कीधी जे विवेके उगते ॥

गच्छमा साध्वीओए परस्पर कौटुंबिक संबंध पण न दर्शाववा कारण के तेथी वचनगुप्तिनो भंग थाय छे श्रीदशवैकालिक सूत्रमां कह्युं छे के-"अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिअ त्ति अवि। उसिए भायणिज्ज त्ति, धूए नत्तुणिइ त्ति अ ॥ १ ॥ अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउत्ति अ। माउला भाउणिज्जत्ति, पुत्ता नत्तुणिइत्ति अ ॥२॥" हे माता, हे दादी, हे भाणेज, हे पुत्री, हे बहेन, हे काकी, हे आर्या, हे मामी इत्यादि सांसारिक संबंध सूचवता शब्दो साधु या साध्वीए बोलवा नहीं हुं अमुकनी माता छुं, हुं अमुकनी पुत्री छुं, हुं अमुकनी स्त्री छुं विगेरे संबंध दर्शावता वाक्यो पण न बोलवा वळी मातादिकनो गुप्त वात होय तो तेनो प्रकाश न करवो जेम बने तेम वचनगुप्तिनु यथार्थ पालन करनार गच्छने हे गौतम! हुं गच्छ कहुं छुं

हवे विनाशक मार्गनु उल्लंघन करनार साध्वीओने शुं प्राप्त थाय ते दर्शावे छे-

दंसणियार कुणई, चरित्तनास जणेइ मिच्छत्तम्।
दुण्हवि वग्गाणज्जा, विहारभेय करेमाणी ॥ १३२ ॥
[दर्शनातिचार करोति, चारित्रनाश जनयति मिथ्यात्वम्।
द्वयोरपि वर्गयोः आर्याः, विहारभेद कुर्वाणाः ॥ १३२ ॥]

गाथार्थ-जे साध्वी दर्शनातिचार लगाडे, चारित्रनो नाश करे अथवा मिथ्यात्व उत्पन्न करे, बन्ने वर्गना (साधु तेमज साध्वीना) मास कल्पादि विहारनी मर्यादानु उल्लंघन करे ते साध्वी खरेखरी आर्या नथी

विवेचन-पूर्वाचार्योना जे सिद्धान्तोक्त प्रमुख आगमो छे, तेमां दर्शाव्या प्रमाणे विधिपूर्वक जे साध्वी चारित्र पाळे ते साची आर्या छे जो ते मर्यादानु उल्लंघन करे तो समकितमां दूषण लगाडे छे, चारित्रनो नाश करे छे अने मिथ्यात्व उपजावे छे आवी उन्मार्ग चालनारी साध्वी गच्छमा न राखवी विहारनी मर्यादा संबंधी त्रेवीसमी गाथामां वर्णन थई गयु छे छतां पण अहीं कईक विशेष दर्शावे छे

श्रीबृहत्कल्पना चोथा उद्देशामां कह्युं छे के-"नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानदीओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुरुत्तो वा तिरुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा त जहा-गंगा जउणा सरऊ कोसिया मही।" जेमां विपुल जळ छे तेमज घणो ऊंडो छे तेथी नदीओ महार्णव एटले समुद्र तुल्य जाणवी तथी नदीओ-

ગંગા, યમુના, સરયુ, કાશિકા અને મહી-આ પાંચ નદીઓ મહિનામાં બે વાર કે ત્રણ વાર ઉતરવી યોગ્ય નથી આ સૂત્ર ઉપર નિર્યુક્તિકાર વિસ્તારથી સમજણ આપતા કહે છે કે-"પંચણ્હ ગહણેણ, સેસાવિય સૂઇયા મહાસલિલા। તત્થ પુરા વિહરિંસુ, નય તાઉ કયાઇ સુક્કંતિ ॥૧॥" ઉપર જે પાંચ નદીઓ જણાવી તેવી રીતે બીજી પણ તેવી મોટી નદીઓ કે જેમાં અગાધ જળ હોય અને હમેશા વહેતી હોય તેના પણ સમાવેશ જાણી લેવો આ બાબતમાં પ્રતિવાદી શંકા કરતા પૂછે છે કે-સર્વ નદીઓ શા માટે ગણવી ? જો તેમજ હોય તો સૂત્રકાર પાંચ નદીના જ નામો શા માટે જણાવે ? તેનો ઉત્તર એ છે કે-ગંગાદિક પાંચ મહાનદીઓ જે દેશોમાં છે તે સ્થળોમાં પૂર્વે સાધુઓ વિચર્યા હતા અને તે નદીઓ કદી પણ શુષ્ક બનતી નથી તેથી તેઓના નામો જણાવ્યા છે, પરંતુ ઉપલક્ષણથી તેના જેવી વિશાળ, દીર્ઘ પુષ્કળ જળવાળી અને ઊંડી નદીઓ પણ સાથોસાથ સમજી લેવી

વળી પણ શ્રીબૃહત્કલ્પના ચોથા ઉદ્દેશામાં કહ્યું છે કે-" અહ પુણ એવં જાણિજ્જા એરવઈ કુણાલાએ જત્થ ચક્કિયા એગં પાદં જલે કિચ્ચા એગં પાયં થલે કિચ્ચા એવણ્હ કપ્પઇ અંતો માસસ્સ દુક્ખુત્તો વા તિક્ખુત્તો વા ઉત્તરિએ વા સંતરિત્તએ વા, એવં નો ચક્કિયા એવણ્હ નો કપ્પઇ અંતો માસસ્સ દુક્ખુત્તો વા તિક્ખુત્તો વા ઉત્તરિત્તએ વા ।" ઐરાવતી નામની નદી કુણાલા નગરીની પાસે વહે છે તે અર્ધ જંઘાપ્રમાણ ઊંડી છે તે નદી તથા તથા પ્રકારની બીજી નદી વિધિમાં દર્શાવ્યા પ્રમાણે ઉતરી શકાય એક પગ જળમાં અને એક પગ થળમાં (આકાશમાં) ઉંચો રાખવાના ક્રમથી સાધુ યા સાધ્વી ચાલી શકવા સમર્થ હોય તો એક માસમાં બે કે ત્રણ વાર નદી પાર ઉતરે અને પાછા આવી શકે ઐરાવતી નદી કુણાલા નગરી પાસે બે ગાઉના પહોળા પટ(વિસ્તાર)વાળી અને અર્ધ જંઘા પ્રમાણ ઊંડાઇવાળી છે ગોચરીના નિમિત્તે પાત્રાદિકના લેપનાદિકને નિમિત્તે સાધુ યા સાધ્વી માસમાં બે ત્રણ વખત જયણાપૂર્વક નદી પાર કરી શકે આ વચનથી ઉપર જે પાંચ નદીના ગ્રહણથી તેવા પ્રકારની સર્વ નદીઓના સ્વીકાર જણાવ્યા તેને પુષ્ટિ મળે છે

ઐરાવતી નદીમાં પરલીક અગ્રામાં જ્યારે પાણી સુકાઇ જાય છે ત્યારે તે નદી પાર કરીને ગોચરી અર્થે જવામાં આવે ત્યારે ઋતુબદ્ધ કાળમાં જળનો ત્રણ સંઘટ્ટા થાય, પણ વળતા પણ ત્રણ થાય એટલે છ સંઘટ્ટા થાય ચોમાસામાં સાત સંઘટ્ટા થાય અને પાછા આવતાં સાત થાય કુલ ચૌદ સંઘટ્ટા થાય જ્યાં સુધી તે ક્ષેત્રમાં ચાતુર્માસ હોય ત્યાં સુધી આટલા સંઘટ્ટા કરી શકાય, તેથી વિશેષ સંઘટ્ટો થાય તો દોષ લાગે વળી જ્યાં વિશેષ જળ-સંઘટ્ટા લાગે ત્યાં ઉતરવાના પણ નિષેધ છે માસકલ્પ પૂર્ણ થયા પછી બીજો માસકલ્પ કરવા માટે તે નદી ઉતર્યા સિવાય બીજા સ્થળે જઇ શકતા હોય તો તેમ કરવું ચાતુર્માસ પણ

ते नदी उतर्या सिवाय चाली शकातु होय तो तेम न करवु. कोई पण बीजो उपाय न होय तो नदी उतरवी, ए जिनाज्ञा छे. संघट्टा संबंधमां कह्यु छे के—
"सत्त उ वासासु भवे, दगसंघट्टा तिण्णि हुंति उडुबद्धे। ते तु न हणंति खित्तं, भिक्खायरियं च न हणंति ॥ २ ॥ जह कारणंमि पुण्णे, अंतो तह कारणंमि असिवादी। उवहीगहणे लिंपण, नावा य गते वि जयणाए ॥ ३ ॥" वर्षा कालमां सात अने मासकल्पमां पण आठना संघट्टा साधु करी शके. आ रीते क्षेत्रमां रहे तो ते क्षेत्र हणाय नहीं तेमज भिक्षाचर्या पण निषिद्ध न जाणवी अर्थात् ए रीते ते क्षेत्रमां रही शके अने गोचरी अर्थे जई शके. कोई पण कारण उत्पन्न थये छते मासकल्प बाद तेमज चोमासा पछी तुर्त बीजु क्षेत्र न मळे तो नदी उतरे. मासकल्पमां पण कोई उपद्रव थाय, मारी-मरकी अथवा व्याधि उत्पन्न थाय, वस्त्रादिक उपकरणोनी जरूरत उत्पन्न थाय तो नदी उतरीने पण त्यां जवु पडे. नावमां बेसीने पण जई शके, परन्तु तेमां जयणा तथा विधि साचववा जोइए.

नाव उतरवा संबंधी दकावत्त नाव प्रमाण जाणवा—"नावथललेवहेट्ठा, लेवो वा उवरिं ए व लेवस्स। दोण्णि दिवड्ढमेक्कं, अद्धं नावाइ परिहाति ॥ ४ ॥" जे स्थळे नावमां बेसवानु होय ते स्थळे जावु ए गमनस्थळे चक्रमार्गे अथवा अने बे योजनमां फेर थतो होय तो शास्त्रकार कहे छे के—बे योजनना फेरा थाय परन्तु नावमां न बेसवु १, तेवीज रीते स्पर्श लेप न लागे तेवु जळ उतरवानु होय, परन्तु दोढ योजनना फेरावा स्थळमां जवानु होय तो तेम करवु पण नावमां न बेसवु २, तथा जे रीते छाती लागे तेवु जळ उतरवानु होय परन्तु एक योजनथी स्थळमार्गे जवातु होय तो तेम करवु पण नावमां न बेसवु ३, एथी ऊपर जळ लागे तथा मार्गमां पण अर्ध योजनना फेरो थतो होय पण नावमां न बेसवु ४, आ प्रमाणे तपास करतां छतां पण बीजो कोई मार्ग ज न होय त्यारे साधु नावमां बेसी शके, परन्तु निष्कारण कदी न करवु.

श्रीनिशीथचूर्णिना बारमा उद्देशाना प्रांतभागमां नाव संबंधी वर्णन करतां कह्यु छे के—

जंघातारिमकत्थइ, कत्थइ बाहाहि अप्पणा न तरे।
कुंभे दतिए तुंबे, नावा उडुपे य पण्णीए ॥ १ ॥
समासतो जलसंतरणं, दुविहं थाहमथाहं च।
जं थाहं तं तिविहं, संघट्टो लेवो लेवोवरिं च ॥ २ ॥

एचो एकतेरणं, तरिअव्व कारणमि जातंमि ।
एतेसि विवचासे, चाउम्मासा भवे लहुगा ॥ ३ ॥
नयानने निभासा उ, भाविताभाविए वि य ।
तद्दण्णभाविए चेव, उल्लाणोल्ले य मग्गणा ॥ ४ ॥
असती य परिरयस्सा, दुविहे तेणे य सावते दुविहे ।
सघट्टलेवुवरी, दुलोयणा हाणिजा नावा ॥ ५ ॥
जघट्टा सघट्टो १, नाभिलेवो २ परेण लेवुवार ३ ।
एगो जले थलेगा, निप्पगलणतीरमुस्सग्गो ॥ ६ ॥
निभए गारत्थीण तु, मग्गतो चोलपट्टमुस्सारे ।
सभए अत्थग्घे वा, उत्तिण्णेसुं घण पट्ट ॥ ७ ॥
दगतीरे ता चिट्ठे, निप्पगलो जाव चोलपट्टो ।
उ सभए पलम्बमाण, गच्छति काएण अफुसतो ॥ ८ ॥
असति गिहि णालियाए, आणक्खेउ पुणो वि पडिअरण ।
एगा भोगपाडिग्गह, केई सव्वाणि नो पुरओ ॥ ९ ॥
ठाणतिय मोत्तूण, उवउत्तो तत्थ ठाति णावाहे ।
दातिओड्ढ य तुंबेसु वि, एस विही होति संतरणे ॥ १० ॥

जे नाव द्वारा जळ उतराय ते नावद्ध तारिमा कहेवाय छ. सक्षेपथी जळ उत रवाना बे प्रकार छे-(१) थाह (थोडु) अने (२) अथाह (अगाध) थाहना त्रण प्रकार छे-(१) सघट्ट, (२) लव अने (३) लेपापरि काइक नदीमा थोडु जळ होय, अने काइक नदीमा पुष्कळ जळ होय. अगाध जळवाळी नदीमा धने भुजा द्वारा तरवु नहीं, कमक तेम करवाथी घणा अपकाय जीवोनी हिंसा थाय, आठ अळमा तरवाना साधना दर्शाव्या छ, ते प्रमाण आचरण करवु प्रथम तो घडा होय तो तनाथी तरवु, घडो न होय तो दत्तीथी तरवु अने ते पण न मळो शाक तो तुंबाथी नदी उतरवी ते पण न मळे तो उडुप (लघुनाव)थी तरवु अने ते पण न मळे तो पणीथी तरवु अने छवटे नावनु ग्रहण करवु आ आज्ञा विरुद्ध आचरण करे तो लघु चारमासी प्रायश्चित्त लागे कुभ मळवा छता कुभथी न तरतां दत्तीथी तरे तो आज्ञानु खडन कर्यु कहेवाय पचो रीते पककने अभाव तरे तो दड न समजवा

नाव बे प्रकारना छ ऋजु अने वक्र ऋजु नाव उतरवाना उपयोगमा न लेवु कारण के तेनाथी कष्ट उपजे अने सयोगवशात् दूरो अता बूडी जवाय नदी नावना पण बे प्रकार छ (१) भावित अने (२) अभावित भावित पटले

जळमां गति करेल, तेवा भावित नावथी नदी उतरवी, परन्तु अभावित थी नहीं, केमके अभावित नवु नाव जळमां नाखतां घणा जीवोनी हिंसा थाय भावित नाव जळमां वारंवार गति करेल होवाथी नवीन विराधना थती नथी तेना पाटिया, पाचडा विगेरे रूढ थई गयेल होय छे, परन्तु नवा नावने जळना संसर्ग थतां घणी ज विराधना थाय छे भावित नावना पण बे प्रकार छे ते ज जळमां भावित थयेल अने अन्य जळमां भावित थयेल जे ते ज जळमां भावित होय तेवी नाव द्वारा उतरवु श्रेयु छे, कारण के एक जळ बीजा जळने माटे शस्त्ररूप छे आपणामां पण प्रचलित रिवाज छे के-एक कूवा या तो वावनो सच्चारो तेना कूवा या तो वावमां नाखवा जो भूलथी पण अन्य स्थळे नाखवामां आवे छे तो ते अप्कायना जीवोनी हिंसा थाय छे मीठा कूवानु पाणी खारा कूवामां जळमां नथी नाखवामां आवतु तेमां पण आ ज हेतु समायेलो छे आ प्रमाणे दर्शावेल भावित नावना पण बे प्रकार समजवा—(१) सुकायेली अने (२) आर्द्र तेमां सूकी भावित नावथी न उतरवु, कारण के तेने जळमां प्रवेश करावतां ज ते जळ चूसवा मांडे छे अने ए रीते अप्कायना जीवोनी विराधना थाय छे, माटे आर्द्र भावित नावनो ज उपयोग करवो अने ते प्रमाणे करतां जयणानो पूरेपूरो उपयोग राखवो

पिंडी सुधी जळ होय अने तेमां उतरे तेने संघट्ट कहेवाय, नाभि सुधी जळ ऊंडु होय ते लेप कहेवाय अने नाभि उपरांत जळ होय अने तेमां उतरे तो लेपोपरि जाणवु संघट्टमां केवी रीते उतरवु ते जणाववा कहे छे के-एक पग जळमां मूकवो अने एक पग अधर (आकाशमां) राखवो-ए प्रमाणे जयणापूर्वक उतरवु परन्तु जळनु डोळाण न करवु कांठे आव्यां पछी ऊतरवु पाणी नीतरवा देवु पाणी सर्व सुकाई जाय त्यारबाद कांठे इरियावहिया पडिक्कमे अने काउस्सग करे आ संघट्टनी जयणा जाणवी

लेप प्रमाणनु जळ उतरवानो विधि दर्शावे छे-जो चोरादिकना भय न होय तो ज रस्ते गृहस्थ उतरतां होय ते मार्गे नदी उतरवी अने जेम जेम जळमां आगळ वधाय तेम तेम विशेष ऊंडु जळ आवे पहेलां चोळपट्टो ऊंचो ऊंचो करवो चोळपट्टो ऊंचो लेवाथी अप्कायना घणा जीवोना विनाश अटकी जाय छे कारण के चोळपट्टो भींजावाथी घणा अप्कायना जीवोनी विराधना थाय चोरादिकनो भय होय अने बीजा गृहस्थनो योग होय त्यारे गृहस्थ जळमां अडधा पर्यन्त पहोंचे त्यारे पोतानो चोळपट्टो बांधीने जळमां उतरे अने ते प्रमाणे उतरतां चोळपट्टो भींनो थाय तो जयणापूर्वक नदीना कांठा उपर आवीने ऊभा रहेवु अने ज्यां सुधी चोळपट्टानु जळ नीतरी न जाय त्यां

सुधी कांठा ऊपर ऊभा रहेवु जो भय होय तो चोळपट्टो लांबो करीने पहले केड-हाथमां लांबो करीने जाय अथवा माथा ऊपर राखीने जाय, पण ते भीना चोळपट्टाने पोताना शरीर साथे स्पर्श न करावे आ गृहस्थ साथे न होय तो आ विधि प्रमाणे वर्तवु परन्तु गृहस्थ होय तो जेम करवु ते पण दर्शावता कहे छे के-जे स्थळे बीजा घटेमाणु उतरता जणाय ते स्थळेथी उतरवु, अने कोई पण घटेमाणु न होय तो जे स्थळेथी पूर्वे लावो गया होय तथी पगरखा ओथी अने पोताना देहप्रमाण करता चार आगळ अधिक दंड होय तेने "नालिया" कहे छे ते नालिया ग्रहण करीने जळनु प्रमाण तपासता तपासता नदी उतरवी नालिया पासे न होय तो अन्य तरवावाळानी राह जोवी आ लेप प्रमाण जळ उतरवानी विधि दर्शावी

हवे अथाह-अथाग पाणी उतरवानी विधि कहे छे, तेमां नाव संबधी हकीकत आ विवेचनमां पूर्वे जणावी दीधी छे हवे नावमां कई रीते बेसवु ते जणावता कहे छे के-सर्व पात्रादिक उपकरण एकत्र करीने बांधवा, पछी डोकामां ऊर्ध्व मुखे राखीए तेम राखवा केटलाक आचार्यो आ संबधमां एम पण जणावे छे के-महोपकरणने पडिलेहीने, मस्तकथी ते पग पर्यन्त शरीरनी प्रतिलेखना करीने नावमां बेसवु नावमां पण आगळ न बेसवु केम के तेथी प्रवर्तन दोष पहेले नाव चालवाना दोष लागे नावना पाछळना भागमां पण न बेसवु कारण के अतिशय जळप्रमाणने कारणे भय उपस्थित थाय, माटे नावना मध्यभागमां ज बेसवु नमां पण त्रण स्थान-१ देवस्थान, २ कूपस्थान अने ३ निर्यामकस्थान वर्जीने बेसवु नावना अग्रभाग ते देवस्थान, मध्यमां कूप स्थान अने पाछळ तोरणस्थान-आ त्रण जग्या पण वर्जवी जे स्थळे बीजु कोई न बेसे ते स्थळे उपयोगपूर्वक, नवकारमंत्रनु स्मरण करीने बेसवु साकार पच्चक्खाण पण करवु के-जो कई पण उपद्रव थाय अने कालधर्म पमाय तो मारे सर्वथा त्याग छे नाव अळगान पमार करीने कांठे आवे त्यारे पण सौ प्रथम आगळना भागे न उतरे तेमज पाछळना भागे पण न उतरे, जेम मध्य भागमां बेसे तेथी ज रीते मध्य भागे उतरे पछी कांठे उतरीने इरियावही पडिक्कमी कायोत्सर्ग करे जळनो संघट्ट न थयो होय तो पण आ प्रमाणे विधि करवो ज हतो, उडुप अने तुंब विगेरेनो विधि पण आज प्रमाणे जाणवो विशेष ए के नीचे मूकीने पछी इरियावहियादि क्रिया करवी आ प्रमाणे नावद्वार जाणवु

हवे विहार संबधी वर्णन जणावे छे श्रीनिशीथसूत्रना दशमा उद्देशानी चूर्णिमां कह्या छे के-

उणाइरित्तमासे, अट्ठ विहरिऊण गिम्हहेमंते ।
एगाह पचाह, मासं च जहा समाहीए ॥ १ ॥

काऊण मासकप्पं, तत्थेव उवागयाण जयणाए ।
चिक्खल्लगामरोहेण, वा वि तेण ठ्ठिया ऊणा ॥ २ ॥
वासाखित्तालभे, अद्धाणाईसु पत्तमहिगाओ ।
साहगवाघाएण, अपडिक्कमिउ जइ वयंति ॥ ३ ॥
पडिमा पडिवण्णाण, एगाहं पंचहो तहा लंदे ।
जिणसुद्धाण मासो, निक्कारणओ य थेराण ॥ ४ ॥
ऊणाइरित्तमासा, एव थेराण अट्ठ नायव्वा ।
इयरे अट्ठ निहरिउ, नियमा चत्तारि अच्छन्ति ॥ ५ ॥

चार मास हेमंत ऋतुना एटले शियाळाना अने चार मास ग्रीष्म ऋतुना एटले उनाळाना आ आठ मास दरमियान ओछो या अधिक विहार कर्यो होय केवी रीते विहार करवो ? ते सबंधे जणावता कहे छे के-प्रतिमाधारीए विहार करता करता आ आठ मास दरमियान गाम या नगरमां एक अहोरात्रि स्थिर रहेवु यथालंदक कल्पवाळा साधुओ एक स्थळे पांच अहोरात्रि रहे १ जिनकल्पी, २ शुद्ध परिहारिक अने ३ स्थविरकल्पी-ए साधुओ एक मास पर्यंत एक स्थळे वास करी शके आ प्रमाणे ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए रत्न त्रयीनी समाधि थाय-सुखशातिपूर्वक आराधना थाय तेवी रीते विहार करीने वर्षा समये चातुर्मास योग्य स्थाने जवु

आठ मासथी ओछो के अधिक विहार केवी रीते थाय ते जणावतां कहे छे के—कोई एक स्थळमां आषाढ मासकल्प कर्यो एटले के आषाढ मासमां मास कर्या अने पछी ते ज स्थळमां चातुर्मास रह्या एटले आषाढ मासने गण त्रीमा ? जेता सात मास विहारमां थया आवी रीते ऊण आठ मास कहीए बीजी रीते पण ऊण आठ मास थई शके छे, ते आ प्रमाणे-जे स्थळे चातुर्मास रह्या होय त्याथी विहार करवामा मार्गमा कादव होय, वर्षाद वरस्या करतो होय, पासेना गाम-नगरादिकने घेरो घलायो होय अगर तो मारी-मरकी आदिक उपद्रव थयेल होय इत्यादिक कारणोथी मागशर मास पछी विहार थाय तो ऊण आठ मास थाय आठ मासथी अधिक कवी रीते थाय ? ते जणावतां कहे छे के-आषाढ मासमा चातुर्मास योग्य स्थळ न मळ्यु होय तो पछी एक मास अने वीश दिवस पर्यंत क्षेत्र मेळवी शकाय छे भादरवा शुदि पाचमने दिवसे पर्युषण कल्प करवानो होय आ प्रमाणे नव मास ने वीश दिवस पर्यंत विचरण थई शके साथवाहनी साथे विहार करवो पडे त्यारे मन-इच्छित विचरण न थवाथी चातुर्मास माटे आषाढ मास व्यतीत थई गया उपरात पांच अहोरात्रि यावत् एक मास ने वीश अहोरात्रि व्यतीत

वई जाय पछी दैववशात् वृष्टि ज न थई होय तो आश्विन या कार्तिक मासमां विहार करवो पडे त्यारे पण अष्ट मास अधिक थाय कोइ पण विघ्न आव्यो पडवानुं होय, उपद्रव थवानो होय, कार्तिकी पुर्णिमा पछी विहार करवानुं मुहूर्त ज न आवतुं होय, नगर तेमज पाडु पट माफक न होय अथवा अन्य कोइ पण कारणे कार्तिकी पुर्णिमा पछी विहार करवानो दिवस ज न आवतो होय तो चउमासी प्रतिक्रमण कर्या पूर्वे ज विहार करवो पडे-आवी रीते भिन्न भिन्न कारणोने लीधे आठ मास उपरांत पण विहार करवो पडे

प्रतिमाधारी एक अहोरात्रि स्थिरवास करे अने यथालन्दक पांच अहोरात्रि रहे शेष काळमां विहार चर्या करे शुद्ध परिहारिक शब्दथी प्रायश्चित्त पामेला परिहारविशुद्धिक साधुनो निर्देश दर्शाव्यो छे १ जिनकल्पी, २ शुद्ध परिहारिक अने ३ स्थविरकल्पी साधुओने माटे मासकल्पी विहार दर्शाव्यो छ जो कोइ पण प्रकारनो व्याघात होय अथवा तो अन्य कोइ पण कारण उपस्थित थयु होय तो स्थविरकल्पी मासमां ओछु या अधिक करी शके छे एटले ए रीते स्थविरकल्पीने माटे ऊण अष्ट मास या तो अधिक अष्ट मास विहार कह्यो छे परन्तु १ प्रतिमाधारी, २ यथालन्दक, ३ शुद्ध परिहारिक अने ४ जिनकल्पीने माटे तो जेम आठ मास सुधी विहार कह्यो छे तेम विहार करीने चातुर्मासना चार मास एक क्षेत्रमां ज व्यतीत करे

चोमासु केवा क्षेत्रमां रहेवु तेमज ग्राम-नगरादिकमां केवी रीते प्रवेश करवो ते सघळी हकीकत जणावता कहे छे के—

आसाढपुण्णिमाए, वासावासम्मि होइ ठायव्वम् ।
मग्गसिरबहुलदसमीं उ, जाव एगम्मि खित्तम्मि ॥ ६ ॥

बाहिट्ठियवसभेहिं, खित्तं गाहित्तु वासपाउग्गम् ।
कप्पं कहित्तु ठवणा, सावाण सुद्धदसमीए ॥ ७ ॥

इत्थ य अणभिग्गहियं, वीसइरायं सवीसइं मासम् ।
तेण परमभिग्गहियं, गिहिणाय कत्तिओ जाव ॥ ८ ॥

असिवाइकारणेहिं, अहवा वासं न सुट्ठु आरद्धम् ।
अहिवड्ढियम्मि वीसा-इयरेसु सवीसई मासो ॥ ९ ॥

एत्थ उ पणगं पणगं, कारणियं जा सवीसई मासो ।
सुद्धदसमीठियाण, आसाढी पुण्णिमोसरणम् ॥ १० ॥

आषाढ पूर्णिमाए चातुर्मास रहेवु एटले के जे स्थळे चातुर्मास करवु होय ते स्थानमां आषाढ पूर्णिमाए प्रवेश करवो अने कार्तिकी पूर्णिमा सुधी

वास करवो अपवाद तरीके कार्तिक वदि दशम (मारवाडी मागशर वदि दशम) सुधी पण रही शकाय केटलाको आ दश दिवसनी वृद्धिने अंगे वे दश रात्रि (वीश दिवस) अधिक गणीने मागशर मास पर्यंत रहेवानी छूट माने छे

केवी रीते गाम या नगरमां प्रवेश करवो ते संबंधी हकीकत जणावता कहे छे के-जे स्थळमां आषाढ मासकल्प कर्यो त्यां अथवा अन्यत्र सामाचारी भावता वर्षेवी पछी पर्युषणा कल्प कहीने आषाढ शुदि दशमीए वर्षास्थापना करवी केटलाक आषाढ वदि पांचम (मारवाडी श्रावण वदि पांचम) वर्षाकाळ सामाचारी स्थापवानु कहे छे आ प्रमाणे आषाढ मासनी पूर्णिमाए अगर तो आषाढ वद पांचमे पर्युषणा कल्प करीने रहे तो पण जो कोई गृहस्थ चातुर्मास संबंधी पूछे तो संदिग्ध उत्तर आपवो, एटले के "हजी अमारे चातुर्मास रहेवानु निश्चित नथी" आ प्रमाणे जवाब आपे आ प्रमाणे एक मास ने वीश दिवस पर्यंत संदिग्ध उत्तर आपवा आवी रीते संदिग्ध उत्तर आपवानु कारण शु? ते जणावता कहे छे के-ते स्थळमां अथवा कोई उपद्रव उपस्थित थाय, वरसाद सारो न वरसे, एक मास ने वीश दिवसमां कई अमांगलिक थाय, राजा दुष्ट होय, पाखंडीओनु जोर होय इत्यादिक अनेक कारणो होय छता पण जो साधु चातुर्मास रहे तो जिनआज्ञानो भंग कर्यो कहेवाय 'अमे अहीं चातुर्मास रह्या छीए' आ प्रमाणे गृहस्थने जणाव्या बाद उपर्युक्त कारणो आवी पडवे छते विहार करवो पडे तो लोकोमां जैनशासननी हीलना थाय अने मिथ्यात्वी लोको उपहास करता कहे के-साधुओ जणावता हता के अमे तो सर्वज्ञ-पुत्र छीए तो तमनु सर्वज्ञपणु क्यां गयु? पहेला कह्यु के-अमे चोमासु रह्या छीए अने हवे संकट आवता चाल्या गया-तेओनु मृषावादीपणु तो जुओ वळी निश्चित रीते कहे के-अमे चोमासु रहेवाना छीए तो पण मुश्केली आय कारण के-लोको जाणे के-साधु चोमासु रह्या छे माटे वधारे सारो आवशे, नवु धान्य घणु पाकशे एम धारी जूनु धान्य वेची नाखे, छापरां चळावे, खेडूतो हळ विगेरे तैयार करे, व्यापारीओ तेल पालीओ तल कढाय-इत्यादि घणा आरंभ-समारंभवाळां कार्यो थाय तेना निमित्तभूत साधुओ थाय अने दोषभागी बने

जो अभिवर्द्धित वर्ष होय तो वीश रात्रि गये छते गृहस्थने कहे अने चंद्र वर्ष होय तो एक मास ने वीश रात्रि गये छते गृहस्थने कहे जे वर्षमां अधिक मास होय ते अभिवर्धित वर्ष कहेवाय अधिक मास युगना मध्यमां के अंतमां थाय छे जो अंतमां होय तो बे आषाढ मास होय अने मध्यमां होय तो बे पोष मास होय

शिष्य शंका करतो पूछे के-आ अभिवर्द्धित वर्षमां आषाढ अने पोष ए

जे जे मास वधे छे ते अभिवर्धित वर्षमां वीश रात्रि अने चंद्र वर्षमां एक मासने वीश दिवस एम कहेवानो शो हेतु छे? ए बने मास चातुर्मासमां तो आवता नथी. गुरु तेनो प्रत्युत्तर आपता जणावे छे के-आषाढ मास ग्रीष्म ऋतुमां वधे छे तेथी ते मास ग्रीष्म ऋतुमां गयो जाणवो अने तेथी ज अभिवड्ढियवरिसे वीसरातिय। एवो पाठ छे. आषाढी पूर्णिमाए डगलादिक ग्रहण करे, पर्युषण करवा रहे अने पांच दिवस बाद आषाढ वदि (मारवाडी श्रावण वदि) पांचमे पर्युषण करे. एम कारण कारणे पांच-पांच दिवस वधारे आ रीते वधारतां-वधारतां भादरवा शुदि पांचमने दिवसे पर्युषण करे. आषाढ पूर्णिमाए पर्युषण करे ते उत्सर्ग मार्ग कहेवाय अने आषाढ वदि पंचमी वगेरे अन्य दिवस करे ते अपवाद मार्ग कहेवाय. भादरवा शुदि पंचमीए तो अवश्य पर्युषणपर्व करवुं ज. एक मास ने वीश दिवसमां पण जो चातुर्मास योग्य क्षेत्र न मळे तो छेवटे वृक्ष हेठळ पण पर्युषण करवां, पण भादरवा शुदि पंचमी उल्लंघवी नहीं.

शिष्य पुनः शंका करतां पूछे छे के-हालमां अपर्वतिथि भादरवा शुदि चोथने दिवसे पर्युषणा केम करवामां आवे छे? आचार्य महाराज जवाब आपे छे के-कारणिया चउत्थी। कारणे चतुर्थीए पर्युषणा करवा पडे छे. शिष्य पूछे छे के-हे भगवंत! एवुं ते शुं कारण आवी पड्युं के जेथी पांचमनी चोथ करवी पडी? गुरु उत्तर आपे छे के-श्रीमान कालकाचार्ये ते प्रवर्तावेल छे. शिष्य पुनः प्रश्न कर्यो के-कोण कालकाचार्य अने तेमणे शा माटे पंचमीनी चतुर्थी करी? गुरुए जणाव्युं के-

श्रीमान् कालकाचार्य विहार करतां करतां उज्जैणी नगरीमां आव्या. त्यां चातुर्मास रह्या. ते नगरीमां बलमित्र नामना राजा हता अने तेना लघु बंधु भानुमित्र युवराज हता. तेने भानुश्री नामनी बहेन हती अने बलभानु नामनो भाणेज हतो. बलभानु भद्रक स्वभाववाळो अने विनयी हतो. साधु आदिनी वैयावच्च करवामां सदा तत्पर रहेतो. एकदा आचार्ये ते बलभानुने उपदेश आप्यो, धर्मनुं यथार्थ स्वरूप समजाव्युं, भविष्यना योगे ते उपदेश बलभानुना हृदयमां सचोट उतरी गयो. तेने संसारनी स्वार्थता अने असारता समजाणी अने तेणे आचार्य श्रीकालकसूरि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. बलमित्र तथा भानुमित्रने आ समाचार मळतां ज तेओ क्रोधे भराया अने चातुर्मास होवा छतां आचार्यने नगरी बहार काढी मूक्या.

बीजा पक्ष एम कहे छे के-बलमित्र अने भानुमित्र कालकाचार्यना संसारी पणाना भाणेज हता. तेओ प्रतिदिन तेमना व्याख्यानमां जता अने तेनुं बहुमान करता. श्रावकमां पुरोहितने आ पसंद न पड्युं. तेणे राजाना कान भंभेरवा मांड्या के-आ लोको तो पाखंडी छे, वेद धर्मने मानता नथी. तेमना

आचार्य विहारमां वन्दु उठाणुं नथी तेमनु धर्माचरण तो धर्मीन छे राजाए परस्पर वाद-विवाद गोठव्या अने सूर्य समीप जेम आगियो (खद्योत) झांखो थई जाय तेम पुरोहितनी हार थई पुरोहितजीनो पराजय थया पण तेमणे पोताना मनमांथी द्वेष न मूक्यो तेणे राजाना कान भंभेरवा शरू कर्या एकदा तेणे कह्यु के-हे राजन्! जे मार्ग आ साधुओ चाले छे ते मार्ग चालवाथी राजा के सैन्यनो नाश थाय छे चालाक राजाए आ हकीकत साची मानी लीधी अने आचार्यने नगरी बहार काढी मूकवा रस्ताओ वध छे के-आचार्य समर्थ तेम ज पोताना गृहस्थावस्थाना मामा होवाथी तेमने सीधी रीते चाल्या जवानो आदेश तो न आप्यो, पण समस्त नगरीमां शुद्ध आहार न मळे तेवो प्रबन्ध कराव्यो जेथी आचार्यश्री चगाठीन अन्यत्र विहार करी गया

विहार करीने तेओ प्रतिष्ठान नगर गया त्यांना लोकोने अगाउथी कहेवराव्यु के-हु आवीने पछी पर्युषणा करीश त्यांनो राजा शालिवाहन जैनधर्मी हतो तेने कालकाचार्यना आववाथी अत्यंत हर्ष प्राप्त थयो अने महोत्सव तेमज बहुमानपूर्वक गुरुने प्रवेश कराव्यो गुरुए फरमाव्यु के-भादरवा सुदि पांचमने दिवसे पर्युषणापर्व करवानु छे ते समये राजाए विनंति करी के-मारे प्रजाना आग्रहथी ते दिवसे मारे इन्द्र महोत्सव करवानो छे, तेथी हु साधुवंदन अने चैत्यपरिपाटी करी शकु नहि तो आप छट्ठनो पर्युषणा करावो गुरुमहाराजे जणाव्यु के-भादरवा सुदि पांचम ओळंगवी नहीं तथा शास्त्राज्ञा छे राजाए पुनः विनंति करी के-तो चोथनु पर्व राखो गुरुए ते कबूल कर्यु श्रीकालकाचार्य युगप्रधान होवाथी तेमणे प्रवर्तावेल चतुर्थी सौए कबूल राखी अने ते प्रमाणे हालमां पण चतुर्थीए ज पर्युषणापर्वनी आराधना कराय छे

शालिवाहन राजाए पोतानी सर्व राणीओने आदेश आप्यो के-तमे सर्व अमावस्याना उपवास करो अने प्रतिपदाने दिवसे (भादरवा सुदि १ ने दिवसे) साधुओने वहोरावीने, पारणु करावीने पछी पारणु करजो बीज, त्रीज ने चोथ-ए त्रण दिवसनु तलाधर पण करजो राणीओए राजाना आज्ञानु पालन कर्यु अने प्रतिपदाने दिवसे साधुओने भक्तिपूर्वक पारणा कराव्या ते दिवसथी ते प्रदेशमां "साधुपूजा"नु पर्व प्रवर्त्यु छे

हवे पांच-पांच दिवसनी हानि कयी रीते करवी ते संबंधी काळ गणपद पटल रहस्यानु प्रमाण दर्शावे छे

इय सत्तरी जहन्ना, असीइनउईदसुत्तरसय च ।
जइ वासइ मग्गसिरे, दस राया तिण्णि उक्कोसा ॥ ११ ॥

काऊण मासकप्पं, तत्थेव ठियाण जाव मग्गसिरो ।
सालंबणाण छम्मा-सिओ उ जिट्ठुग्गहो होइ ॥ १२ ॥
जइ अत्थि पयविहारो, चउपाडिवयंमि होइ निग्गमणम् ।
अहवावि अणिंताणं, आरोवणपुव्वनिद्दिट्ठा ॥ १३ ॥
राया सप्पे कुंथू, अगणिगिलाणे य थंडिलस्सऽसई ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होइ निग्गमणम् ॥ १४ ॥
काइयभूमी संथारए अ, संसत्त दुल्लहे भिक्खे ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होइ निग्गमणम् ॥ १५ ॥
वासं वा नोवरमई, पंथा वा दुग्गमा सचिक्खल्ला ।
एएहिं कारणेहिं, अइक्कंते होइ निग्गमणम् ॥ १६ ॥
असिवे ओमोदरिए, रायदुट्ठे भये व गेलन्ने ।
एएहिं कारणेहिं, अइक्कंते होइ निग्गमणम् ॥ १७ ॥

आषाढ चतुर्मासथी एक मास ने वीस दिवस गये छते पर्युषणा करे तो ते सित्तेर दिवसनुं जघन्य चातुर्मास थयुं, कारण के चार मासना एकसो वीस दिवस पैकी पचास दिवस जतां ७० दिवसनुं जघन्य चातुर्मास थयुं जो श्रावण वदि (मारवाडी भाद्रवा वदि) दशमे पर्युषणा करे तो ८० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय जो श्रावण सुदि पूनमनुं पर्युषण पर्व करे तो ९० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय जो आषाढ वदि (मारवाडी श्रावण वदि) दशमे पर्युषणा पर्व करे तो ११० दिवसनो मध्यम वर्षाकाळ थाय अने जो आषाढ पूर्णिमाथी करे तो तेने १२० दिवसनो उत्कृष्ट वर्षाकाळ थाय आ प्रमाणे वचला आंतरा पण समजी लेवो

आ प्रमाण वर्षाकाळ व्यतीत करीने कार्तिक वदि एकमने दिवसे तो विहार करी जवा, परन्तु जो मागशर मासमां पण वरसाद होय, रस्तो कादववाळो होय, रस्तामां जळ भरेल होय तो अपवाद सहीत पण, ते जघन्य उत्कृष्ट पणथी दश रात्रि पर्यन्त स्थिरता करे अथवा उग्र कारण मागशर मासनी पूर्णिमा सुधी रहे त्यारबाद जो मार्ग कादव-कीचडवाळो होय, रस्तामां जळ भरेलु होय, जळ उतरवानो प्रसंग प्राप्त थता होय तो पण अवश्य विहार करवो जे जो विहार न करे तो चार गुरुमासी प्रायश्चित्त आवे आ प्रमाणे पांच मासनुं उत्कृष्ट चोमासुं कह्युं

आषाढ मासना कल्प कर्यो होय अने पछी चातुर्मास योग्य अन्य क्षेत्र न मळ्या तेने ॥ ए स्थानमां चातुर्मास करीने, वर्षादिकने कारणे मागशर मासमां

विहार करवो पडे तो चोमासानो छ मासनो उत्कृष्टकाळ जाणवा जो कादव अने वृष्टि प्रमुखनुं कारण न होय अने रस्ता चोक्खा थइ गया होय तो कार्तिक (मारवाडी मागशर) वदि १ ने दिवसे अवश्य विहार करवो जोइए जो न करे तो पूर्वे कहेल प्रायश्चित्त आवे

कारण उपस्थित थये चार पडवाआ पहेला पण अन्यत्र विहार करी जवा पडे ते कारणो नीचे प्रमाणे जाणवा १ राजा दुष्ट होय, २ उपाश्रयमां सर्पनो प्रवेश थयो होय, ३ उपाश्रयमां कुंथुआनो उपद्रव थयो होय, ४ अग्नि लागवाथी उपाश्रय भस्मीभूत थई जाय, ५ ग्लान साधुनी वैयावच्च करवा जवुं पडे, ६ ग्लान साधुना औषधार्थ अन्यत्र जवुं पडे ७ स्थंडिल ज्यानी मारी जाणा न होय वळी कारण उपस्थित थये चार पडवाना दिवसे पण विहार करी जवा पडे, ते कारणो नीचे प्रमाणे–१ स्थंडिल-मातरादिकनी जग्या जीवाकुल होय, २ संथारामां आवादिक होय, ३ दु:खपूर्वक गोचरी मळती होय, ४ पासत्थ के अन्यने माहात्म्य थयो होय, ५ मरकी प्रमुख रोगोना उपद्रव उपस्थित थया होय

चार पडवा व्यतीत थइ गया होय छता पण नीचेना कारणोथी आगळ विहार करवानो निषेध फरमाव्यो छे, ते कारणो आ प्रमाणे छे–१ विहार करवानो मार्ग कठिन विषम होय, २ विहारना मार्गमा स्थळे स्थळे जळ भरेलु होय ३ मार्गमा अतिशय कादव होय, ४ वरसाद वरसतो बंध न रहेतो होय [illegible] थया कारणे विहार न थाय ते जणावता कहे छे के–१ मरकी प्रमुखना [illegible] उपद्रव चालतो होय ते अशिव, २ भिक्षा आछी मळती होय, ३ राजा दुष्ट [illegible] ४ रोगादिक व्याधिओ उत्पन्न थई होय अने ५ चार जातिनो भय होय [illegible] गाढ पांच कारणोने अंगे चोमासा पछी पण साधु विहार न करे

आ बधा श्रीबृहत्कल्पनी निर्युक्तिना चूर्णिमा तेमज श्रीनिशीथ [illegible] दशमा उद्देशानी चूर्णिमा पण करेल छे आ प्रमाणे आगमोक्त [illegible] विचरे ते गच्छ जे साध्वी आ प्रमाणे विचरण न करे ते विहार [illegible] समजे मिथ्यात्व वधारनारी समजवी

हवे साध्वीए केवुं वचन अने भाषा बोलवी ते आ गाथाद्वारा [illegible]–

तम्मूल ससार, जणेइ अज्जा वि गोयमा ! [illegible]

तम्हा धम्मुवएसं, मुत्तुं अन्न न भासिज्जा । [illegible]

मासे मासे उ जा अज्जा, एगसित्थेण पारए,

कलहे गिहत्थभासाहिं, सव्व तीइ निरत्थयं [illegible]

[तन्मूल ससार जनयति, आर्याऽपि गौतम ! [illegible]

तस्मात् धर्मोपदेश [illegible] न भाष[illegible] १३३ ॥

मासे मासे तु या आर्या, एकसिक्थेन पारयेत ।
कलहे गृहस्थभाषाभिः, सर्वं तस्याः निरर्थकम् ॥ १३४ ॥]

गाथार्थ—हे गौतम ! धर्मोपदेश सिवायनु वचन संसार-भ्रमण करावे तेवु छे तेथी साध्वीओए धर्मोपदेश सिवाय अन्य वचन बोलवुं नहीं. मासक्षमण जेवा उग्र तपने पारणे कुशादिक रूक्ष एक सिक्थ(दाणा)वडे पारणु करनारी साध्वी पण जो परमर्मप्रकाशन, आल के मकार चकारादिक गाली प्रदानरूप गृहस्थ योग्य सावद्य (दोषित) भाषा बोले तो तेनु सघळु तप निष्फळ जाणवु.

विवेचन—धर्मोपदेश सिवायना वचनोच्चार ए केवळ विकथा ज गणाय. राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथा-ए विकथाना चार प्रकार अगाउ पृ ६४ ऊपर वर्णवाई गया छे. ज्यारे वाणी-व्यापार पटला बधा मूर्छित थया छे के बोलनारने पोताने पण भान नथी के शु बोले छे ? कई जातनी विकथा करी रह्या छे तेनु भान रहेतु नथी. शास्त्रकार तो त्यां सुधी कहे छे के-बीजाने कडवु लागे, दुःख लागे तेवु वचन न बोलो. ते पण एक प्रकारनी भाव हिंसा ज छे. भाषासमिति अने वचनगुप्तिनो यथार्थ मर्म समजनार कदापि धर्मोपदेश सिवाय अन्य कुथली (निंदा) न करे. श्रीवंदित्तासूत्रनी छेंतालीसमी गाथामां पण एज भाव भर्यो छे के-चिरसंचियपावपणासीइ, भवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ अर्थात् अनेक भवमां उपार्जन करेला पापराशिने नष्ट करनारी, लाखो भवोनो अंत करनारी एवी चोवीश तीर्थंकर परमात्मानी कथा वरणावडे करीने मारो दिवस व्यतीत थाओ ! आवा अतुल लाभ आपनार धर्मकथा छोडीने साध्वीए अन्य विकथामां शा माटे आसक्त थवु घटे ?

मासखमण-मासखमणनी उग्र तपश्चर्या करनारी अने पारणाने दिवसे मात्र एक दाणो रूक्ष आहार करनारी साध्वी पण जो भाषासमिति न पाळवे, गृहस्थ योग्य सावद्य भाषा बोले, पारकाना मर्म प्रकाशे, अन्यने आल आपे, कोईना पर क्रोधित थनी श्राप आपे तो शास्त्रकार कहे छे के तेथी साध्वीनी तीव्र तपश्चर्या निरर्थक जाणवी कह्यु छे के-" क्रोधे क्रोड पूरवतणु, संयमनां फळ जाय । " मात्र क्रोधना अविरत्यनथी कौशिक तापस मरीने चंडकौशिक सर्प थयो अने पूर्वभवना तीव्र संस्कारने कारणे दृष्टिविषद्वारा अनेकना प्राणो हरवा लाग्यो आ माटे ज शास्त्रकार कहे छे के-साध्वीए कदापि क्रोधावेशमां आवीने गृहस्थोचित सावद्य भाषा बोलवी नहीं।

॥ इति साध्वीस्वरूपनिरूपणस्तृतीयोऽधिकार ॥

उपसंहार–

आ गच्छाचार प्रकीर्णक कया कया सूत्र-सिद्धांतमांथी उद्धरेल छे ते दर्शावतां ग्रन्थकार कहे छे के —

महानिसीहकप्पाओ, ववहाराओ तहेव य ।
साहु साहुणि अट्ठाए, गच्छायारं समुद्धिओ ॥ १३५ ॥
पढतु साहुणो एय, असज्झाय विवज्जिउ ।
उत्तम सुअनिस्संद, गच्छायार सुउत्तमम् ॥ १३६ ॥
गच्छायार सुणित्ताण, पढित्ता भिक्खुभिक्खुणी ।
कुणतु ज जहा भणिय, इच्छन्ता हियमप्पणो ॥ १३७ ॥

[महानिशीथकल्पात्, व्यवहारात् तथैव च ।
साधुसाध्वीनामर्थाय, गच्छाचार समुद्धृत ॥ १३५ ॥
पठन्तु साधव एतद्, अस्वाध्यायिक विवर्ज्य ।
उत्तम श्रुतनिस्यन्दम्, गच्छाचार सूत्तमम् ॥ १३६ ॥
गच्छाचार श्रुत्वा, पठित्वा भिक्षव. भिक्षुण्यः ।
कुर्वन्तु यद्यथा भणित, इच्छन्तो हितमात्मन ॥ १३७ ॥]

गाथार्थ – श्रीमहानिशीथ, श्रीबृहत्कल्प अने व्यवहारभाष्यमांथी तेमज निशीथादिक(छेद)ग्रंथोमांथी साधु—साध्वीओने माटे आ गच्छाचार प्रकीर्णक उद्धृत करेल छे.

श्रीस्थानांगसूत्रमां दर्शावेल दश प्रकारनी असज्झाय वर्जीने महानिशीथ, बृहत्कल्पादिक प्रधान श्रुतना निचोडरूप–तत्त्वसाररूप आ गच्छाचार पयन्नानु साधु तेमज साध्वीओए भणवु, गणवु तथा परिशीलन सुविचार करवु.

श्रेष्ठ साधु–साध्वीओनी मर्यादारूप आ गच्छाचार पयन्नो सद्गुरु पासे अर्थरूपे सांभळी तेमज योगोद्वहनरूप विधिवडे सूत्ररूपे ग्रहण करी आत्मानु कल्याण इच्छनारा साधु–साध्वीओए जेम आ गच्छाचार पयन्नामां वर्णव्यु छे तेनु समाचरण करवु.

विवेचन—आ गच्छाचारपयन्नो श्रीमहानिशीथ, बृहत्कल्प अने व्यवहार भाष्य जेवा प्रमाणभूत सूत्रोमांथी उद्धरीने बनावेल छे एटले ते प्रामाणिक अने माननीय छे वळी प्रकीर्णकोनी रचना प्रत्येकबुद्ध मुनिवर के तीर्थंकर भगवंतना विशिष्ट शिष्यद्वारा थाय छे एटले पण प्रकीर्णकोनी समुद्धरता स्वयमेव ज साबित थई जाय छे

आवा पयन्नानु पठनपाठन-परिशीलन अस्वाध्याय वर्जीने करवु श्रीस्थानांग सूत्रना दशमा स्थानकमा दश प्रकारनी असज्झायो नीचे प्रमाणे जणावी छे—
दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए पन्नत्ते तं जहा—उक्कावाए १, दिसिदाहे २, गज्जिए ३, विज्जुए ४, निग्घाए ५, जुवए ६, जक्खालित्तए, ७, धूमिआ ८, महिआ ९, रयउग्घाए १०, आकाशथी दश प्रकारनी असज्झाय उत्पन्न थाय छे १ उल्कापात—तारानु खरवु विगेरे, २ दिग्दाह—कोईपण दिशामां मोटा नगर बळे तेनो आकाशमां जे उद्योत थाय ते, ३ गर्जना—अकाळे मेघनी गर्जना थाय, ४ विद्युत—अकाळे आकाशमां विजळी थाय, ५ निर्घात—वादळयुक्त के वादळ रहित आकाशमां व्यंतरदेवोना करेला महाध्वनि, ६ जुवक—चन्द्रमानी प्रभा अने संध्यानी प्रभा ए बन्ने साथे थई जाय, एटले मिश्र थई जाय चन्द्रनी प्रभाथी ढंकायेल संध्या ज्यां सुधी जाणवामां न आवे त्यां सुधी शुक्ल प्रतिपदादिकमां संध्यानो छेद जाणता छतां काळ न जणाय माटे त्रण दिवस प्रादोषिक काळ ग्रहण न करवो, वळी कालिक सूत्रनो स्वाध्याय न थाय, ७ यक्षादीप्त—आकाशमां यक्षदीप्त थाय एटले उजाश थई जाय, ते समये स्वाध्याय करे तो क्षुद्र देव छळवा आवे, ८ धूमिका—महिकाना भेद, ते वर्णथी धूम्र वर्णादि छे, ९ महिका—झीणा झाणा वरसाद, १० रजोघात—विस्रसा परिणामथी चारे दिशामां धूळ वरसवा माटे

बीजी रीते पण दश प्रकारनी असज्झाय कही छे, ते आ प्रमाणे—
दसविहे ओरालिए असज्झाइए पन्नत्ते तं जहा—अट्ठी १ मंसे २ सोणिए ३ असुइ सामंते ४ सुसाणसामंते ५ चंदोवराए ६ सूरोवराए ७ पडणे ८ रायवुग्गहे ९ उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरे १० । औदारिक शरीरनी असज्झाय दश प्रकारनी छे १-३ अस्थि एटले हाडका मंस एटले मांस, शोणित एटले रुधिर—लोही अने चर्म विगेरे औदारिक शरीरना आ चारे पदार्थो साठ हाथनी अंदर पड्या होय तो जे काळमां पड्या होय त्यारथी त्रण पहोरनी असज्झाय बिलाडीए उंदर प्रमुख मार्यो होय तो एक अहोरात्रनी असज्झाय आ तिर्यंचना हाड—मांसनी माफक मनुष्यना हाड—मांस विगेरेनी असज्झाय जाणी लेवी आ मनुष्यादिकना हाड—मांस सो हाथनी अंदर पड्या होय तो जे काळे पड्या होय त्यारथी अहोरात्रिनी असज्झाय जाणवी स्त्रीना ऋतुकाळनी त्रण दिवसनी

असज्झाय, पुत्रजन्मनी सात दिवसनी, पुत्रीजन्मनी आठ दिवसनी भूमिमां दाटेला प्राणीनी पण असज्झाय जाणवी ५ अशुचि-स्थंडिल तथा मातरु प्रमुख नजीक होय तो असज्झाय, ६ श्मशानसमीपम्-श्मशान अर्थात् मसाण पासे बेसी स्वाध्याय न करवो ६-७ चन्द्र के सूर्यनुं ग्रहण होय तो असज्झाय जो चन्द्र अने सूर्य ग्रहणावस्थामां ज अस्त थाय तो ते रात्रि के दिवस पछी अहोरात्रिनो त्याग करवो अने जो ग्रहण थया बाद चन्द्र या सूर्यनो उदय थाय तो चन्द्र ग्रहणथी ते रात्रिनो काळ अने सूर्यथी ते दिवस तथा रात्रि ग्रहणथी बार पर्यंत असज्झाय जाणवी सूर्य तेमज चन्द्रने औदारिकमां गणवानो हेतु ए छे के-तेओना विमान औदारिक छे ८ पतन-मरण नगरमां राजा, प्रधान, सेनापति के कोटवाळ विगेरेनुं मृत्यु थयुं होय तो तेने स्थाने बीजो न बेसे त्यां सुधी अस्वाध्याय जाणवो निर्भय थया पछी पण अहोरात्रि वर्जवी गामनो नगर शेठ के बहु कुटुम्बनो धणी, शय्यातर के सात घरनी अंदर कोइनुं मृत्यु थाय तो एक अहोरात्रिनी असज्झाय जाणवी कदाच स्वाध्याय करवो ज होय तो गुप्त रीते करे जो तेम न करे तो लोकोमां निंदा थाय के-आ लोको केवा निर्दय छे, कोइनी पीडा पण समजता नथी विगेरे ९ राजविग्रह-राजानो संग्राम होय, सेनापति विगेरे मोटा माणसनी लडाइ होय, तथा गलीकमां चोर स्त्री-पुरुष लडता होय, सुभट सुभट वच्चे झगडो थयो होय तो अस्वाध्याय कारण के त्यां देवता छळवानो भय रहेलो छे १० उपाश्रयमां मनुष्यादिकना, शरीरनुं छेदन भेदन थयुं होय तो १०० हाथ सुधीमां असज्झाय जाणवी कदाच छेदन-भेदन न थयुं होय परन्तु कुत्सितपणाथी १०० हाथ सुधीमां होय तो पण असज्झाय जाणवी तेने दूर मूकी आवे अने स्थानशुद्धि करे तो असज्झाय न रहे

आ प्रमाणे चोत्रीश प्रकारनी असज्झायो जाणवी अस्वाध्याय संबन्धी विशेष वर्णन श्रीनिशीथसूत्रना ओगणीशमा उद्देशानी चूर्णिमां तथा आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रन्थोमांथी जाणवुं

आ पयन्नाने उत्तम कहेवानो भाव ए छे के-आ ग्रन्थमां कहेला आचार-विचारनुं सारी रीते पालन करवामां आवे तो माणसना मन, वचन अने काया पवित्र बने अने चार पुरुषार्थपैकी उत्तम साधन मेळववा समर्थ थइ शके वळी आ पयन्ना सर्व सिद्धांतना सारभूत छे तेने हे साधुओ ! तमे भणो

हवे वादी शंका करतो कहे छे के-आ पयन्ना साधुए जाणवा तेम तमे कहो छो तो शुं श्रावके न ज भणवो ? तेना उत्तरमां शास्त्रकार जणावे छे के-आगमोने विषे श्रावकोने वांचना देवानो निषेध कर्यो छे श्रीनिशीथसूत्रना ओगणीशमा उद्देशाना प्रतिभागमां कह्युं छे के-जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णउत्थिय वा

सागारियं वा साहइ वायंत वा साइज्जइ । इत्यादि० आ वाक्यनी चूर्णिमां जणाव्युं छे के-जे साधु-साध्वी अन्यमतिने, अन्यतीर्थियाने, स्वधर्मी गृहस्थने वाचना आपे या तो वाचना आपनारने सारो कहे तो चार लघुमासी प्रायश्चित्त पात्र थाय वळी जो पासत्थाने, ओसन्नाने, कुशीलीयाने, संसक्तने, सूत्रनी वाचना आपे तो पण चारमासी लघु दंड अने अर्थनी वाचना आपे तो चारमासी गुरु दंड आवे यथाच्छंदकने सूत्रवाचना आपे तो चारमासी गुरुदंड अने अर्थनी वाचना आपे तो छमासी लघु दंड आवे आ संबंधमां अपवाद दर्शावता कहे छे के-कोई श्रावक दीक्षा लेवा तैयार थयो होय तो तेने छजीवणिया अध्ययनथी पिण्डेषणा सुधी वाचना आपवी, उत्सर्ग मार्ग तो श्रावकने वाचना आपवानो नथी

आ गच्छाचार पयन्नाना श्रवणथी, तेना मननथी अने परिशीलनथी साधु साध्वीओ जो पोताना आचार सम्यग्रीतिमां परिणमावे तो स्वकल्याणकारक थवा उपरांत परहित करवामां पण समर्थ बने

आ गच्छाचारपयन्नानी टीका तपागच्छरूपी गगनमां सूर्य समान भट्टारकपुरंदर श्रीआणंदविमलसूरीश्वरजीना चरणकमलसेवी (शिष्य) श्रीविजयविमलगणिए करेल छे गच्छाचार टीकानुं प्रमाण ५८५० श्लोक छे श्रीविजयविमलगणिए वि सं १६३४ मा वर्षे आ टीकानी रचना करी हती अने तेमनी विस्तृत पट्टपरम्परा ग्रन्थवृद्धिना भयथी त्यजी दईने फक्त अमारी मान्य राखेल पट्टपरंपरानो क्रम नीचे प्रमाणे जणाव्यो छे

१ चरमजिनपति श्रीवर्द्धमानस्वामीजी
२ श्रीसुधर्मस्वामीजी
३ श्रीजम्बूस्वामीजी
४ श्रीप्रभवस्वामीजी
५ श्रीशय्यंभवसूरिजी
६ श्रीयशोभद्रसूरिजी
७ श्रीसंभूतिविजयजी अने श्रीभद्रबाहुस्वामीजी
८ श्रीस्थूलिभद्रजी
९ श्रीआर्यमहागिरिजी ने श्रीआर्यसुहस्तिसूरिजी
१० श्रीसुस्थितसूरिजी श्रीसुप्रतिबद्धसूरिजी
११ श्रीइन्द्रदिन्नसूरिजी
१२ श्रीदिन्नसूरिजी
१३ श्रीसिंहगिरिजी
१४ श्रीवज्रस्वामीजी
१५ श्रीवज्रसेनसूरिजी
१६ श्रीचन्द्रसूरिजी
१७ श्रीसामन्तभद्रसूरिजी
१८ श्रीवृद्धदेवसूरिजी
१९ श्रीप्रद्योतनसूरिजी
२० श्रीमानदेवसूरिजी
२१ श्रीमानतुंगसूरिजी
२२ श्रीवीरसूरिजी
२३ श्रीजयदेवसूरिजी

२४ श्रीदेवानंदसूरिजी
२५ श्रीविक्रमसूरिजी
२६ श्रीनरसिंहसूरिजी
२७ श्रीसमुद्रसूरिजी
२८ श्रीमानदेवसूरिजी
२९ श्रीविबुधप्रभसूरिजी
३० श्रीजयानंदसूरिजी
३१ श्रीरविप्रभसूरिजी
३२ श्रीयशोदेवसूरिजी
३३ श्रीप्रद्युम्नसूरिजी
३४ श्रीमानदेवसूरिजी
३५ श्रीविमलचन्द्रसूरिजी
३६ श्रीउद्योतनसूरिजी
३७ श्रीसर्वदेवसूरिजी
३८ श्रीदेवसूरिजी
३९ श्रीसर्वदेवसूरिजी
४० श्रीयशोभद्रसूरिजी }
श्रीनेमिचद्रसूरिजी }
४१ श्रीमुनिचद्रसूरिजी
४२ श्रीअजितदेवसूरिजी
४३ श्रीजयसूरिजी
४४ श्रीसोमप्रभसूरिजी }
श्रीमणिरत्नसूरिजी }
४५ श्रीजगच्चद्रसूरिजी
४६ श्रीदेवेंद्रसूरिजी }
श्रीविद्यानदसूरिजी }
४७ श्रीधर्मघोषसूरिजी
४८ श्रीसोमप्रभसूरिजी
४९ श्रीसोमतिलकसूरिजी
५० श्रीदेवसुन्दरसूरिजी
५१ श्रीसोमसुदरसूरिजी
५२ श्रीमुनिसुदरसूरिजी
५३ श्रीरत्नशेखरसूरिजी
५४ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजी
५५ श्रीसुमतिसाधुसूरिजी
५६ श्रीहेमविमलसूरिजी
५७ श्रीआनदविमलसूरिजी
५८ श्रीविजयदानसूरिजी
५९ श्रीहीरविजयसूरिजी
६० श्रीविजयसेनसूरिजी



प्रशस्तिः-

श्रीमत्सौधर्मगच्छः प्रवरमतियुतः कल्पवृक्षः प्रतीतो,
गच्छाचारैकचारप्रथमरसधरः सूरिमुख्यो विशालः।
संसारोन्मूलनेभश्रमणगणशुभः शान्तिचारुः प्रफुल्लः,
सोऽय सौधर्मगच्छो जयति जगति वो बोधिबीजं तनोतु ॥१॥
तद्गच्छे सूरिराजा वरचरणधरा भूरिभूता यतीशाः,
पारम्पर्येण जातस्तपविरुद्धरो विश्वसौभाग्यरूपः।
पश्चचन्द्राभचन्द्रस्तपगणगगनेऽभूज्जगचन्द्रसूरि,
कस्मिंश्चित्पट्टयाते यवनवरपतिज्ञानहीराख्यसूरिः ॥ २ ॥
केचित्पट्टाश्च जाताः प्रकटसुरसमो देवसूरिर्बभूव,
तस्माच्छ्रीरत्नसूरिः सकलमतविदो यक्षनाथैः प्रपूज्यः।
तच्छिष्यो निष्कलङ्को विविधतपधरः श्रीक्षमासूरिरासीत्,
तत्पट्टे लोकशास्ता सुविहितमुनिराट् प्राज्ञदेवेन्द्रसूरिः ॥ ३ ॥
ततः कल्याणसूरिर्यो, मुनीशो मोहनाशकृत्।
प्रमोदविजयाचार्यः, साधुसम्पत्सुशोभितः ॥ ४ ॥
शिष्येणाखिलबोधाय, कृता राजेन्द्रसूरिणा।
गच्छाचारस्य भाषेयं, सञ्चरेद्धि सतां हृदि ॥ ५ ॥
सुशोधिता सुभिर्षैषा, धनविजयादिमुनिवरेण तथापि हि।
दोषस्थापनपटुभिः, शोधनीया समयसुविज्ञैः ॥ ६ ॥
वेदवेदाङ्कचन्द्रेऽब्दे, पौषशुभ्रे तथोत्तमे।
पञ्चमीविधुवारे च, सम्पूर्णाऽभूदियं शुभा ॥ ७ ॥

सुद्रणे सुश्रमोऽकारि, चास्य ग्रन्थस्य शोधने ।
विजयाद्यगुलाबादि-चतुष्टयेन साधुना ॥ ८ ॥

हस्ताग्रे द्विसहस्राब्दे, वैशाखे चार्बुदोपरि ।
प्रसादादादिनाथस्य, ग्रन्थोऽय पूर्णमाप्तवान ॥ ९ ॥

जे सौभाग्यशाळी सौधर्मगच्छ विशिष्ट बुद्धिवाळो, कल्पवृक्ष समान, गच्छना आचारोनु पालन करवामा ने प्रशमरस-समताभावने धारण करवावाळो, उत्तम सूरिमहाराजाओना परिवारवाळो, विशाळ, ससाररूपी वृक्षनु छेदन करवामा हस्ती समान, साधु-श्रमण समूहनी शोभावाळो, मनोहर शातरस प्रधान अने विकस्वर छे तेमज विश्वमा विजयवत वर्ते छे ते श्रीसौधर्मगच्छ तमारा बोधिबीज(समकित)ने निस्तार करो. १

ते गच्छमा श्रेष्ठ चारित्रने पाळनारा घणा आचार्य थई गया. तेओनीज परपरामां 'तपस्वी' एटले तप बिरुदवाळा, विश्वने विषे सौभाग्यशाळी, तपगच्छ रूपी गगनप्रदेशमा चद्रनी जेम प्रकाशित श्रीजगचद्रसूरि थया. त्यार बाद केटलाक पट्टधरो थया बाद यवनराज(मोगल शहेनशाह अकबर)ने प्रतिबोध देनार श्रीविजयहीरसूरीश्वर थया २

त्यारबाद केटलाक पट्टधरो थया पछी साक्षात् देवसमान स्वरूपवाळा श्री विजयदेवसूरि थया. तेमनी पाटे सकल मतोने जाणनार अने यक्षराजोथी पूजायेल श्रीविजयरत्नसूरि थया तेमना पाटे निर्मळ चारित्रवाळा, विविध प्रकारनी तपश्चर्या करनारा शिष्य श्रीविजयक्षमासूरि थया. तेमनी पाटे लोको ऊपर प्रभाव पाडनारा, सुविहितोमां अग्रणी पडित श्रीविजयदेवेन्द्रसूरि थया. ३

त्यारबाद मोहराजानो पराभव करनार (निर्मोही) श्रीविजयकल्याणसूरि थया, तेमनी पाटे साधुगुणरूप सपत्तिथी विभूषित श्रीविजयप्रमोदसूरि थया ४

ते श्रीविजयप्रमोदसूरिजीना शिष्य आचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरि थया जेमणे समस्त लोकना बोधने माटे आ गच्छाचार प्रकीर्णकनु विवरण कर्युं के जे सज्जन पुरुषोना हृदयमां सचार पामो-सारी रीते प्रवेश पामो ५

आ ग्रथनु वाचनाचार्य बुद्धिमान् श्रीधनविजयादि मुनिवर्गे सशोधन कर्युं छे, तो पण दोष निकालवामा अने दोषोनी स्थापना करवामां पण चतुर अने सिद्धांतोने जाणनारा एवा विज्ञ पुरुषोए आ ग्रन्थमां कई पण स्खलना-दोष जणाय तो सुधारी लेवा कृपा करवी ६

वि. स. १९४४ ना पोष शुदि पांचम ने सोमवारना दिवसे आ सुदर भाषाग्रथ पूर्ण करवामा आव्यो ७

आ ग्रथनु प्रूफ आदि सशोधन करवामां तेमज मुद्रणकार्य कराववामां श्रीगुलाबविजयादि चार मुनिवरोए सारो प्रयास करेल छे ८

सवत् २००२ ना वैशाख मासमा श्रीअर्बुदाचल ऊपर विराजमान आदि तीर्थपति भगवान श्रीआदिनाथजीनी कृपाथी तेमनी यात्रामां ज आ ग्रथनु मुद्रणकार्य सपूर्ण थयुं छे. ९

इति श्रीगच्छाचारप्रकीर्णस्य टीकानुसारेण श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरिणा भाषा कृता वाच्यमाना श्रेयस्करी भूयात् ॥

सर्वत्र श्रीशुभ भवतु ॥

